

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रादयः प्रसिद्धास्तु

सुविद्या श्री १०८ श्री श्री श्री

सुविद्या प्रथमश्री गणिः

॥ श्री १ ॥

पंक्ति सुविद्यास्तु सुविद्या

सुविद्या सुविद्या सुविद्या

( १०८ )

॥ श्री १ ॥ सुविद्या ॥ सुविद्या ॥

सुविद्या सुविद्या सुविद्या सुविद्या सुविद्या सुविद्या

॥ श्री १ ॥ सुविद्या ॥ सुविद्या ॥

सुविद्या सुविद्या सुविद्या सुविद्या सुविद्या सुविद्या

॥ श्री १ ॥ सुविद्या ॥ सुविद्या ॥

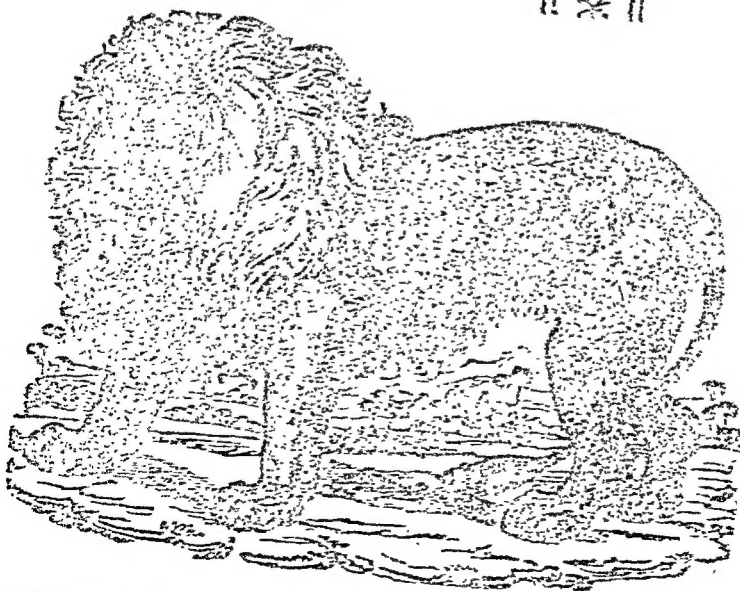


॥ ✽ ॥ प्रशस्तिः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ श्री मवीर जिनैत्र तीर्थनिद्रकः सद्वृत्तः संप  
 त्रिभिः । संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मगणन सत्यान्वये सवतः ।  
 पुण्येचांद्रकुक्षेऽनवत्सुविहिते पद्मेसदाचारवान् । सव्यः शो  
 चन धीमतां सुमति मानुष्योत्तमः सुरिगट् ॥ १ ॥ आत्मी  
 तरपदपंकजैक मधुकृत् श्रीवर्द्धमानाश्रितः । सुगुणैर्य जिते  
 श्वराख्य नष्टानृजातो विनयोत्तमः । यः शापत् नष्ट नि  
 क्षि पंक्ति शरदि ( १००० ) श्री पत्तनेषादिना । जित्वा  
 सत्रिहवं कृती खरतरे त्याख्यं नृपादे मुखात् ॥ २ ॥ ✽ ॥  
 ॥ ✽ ॥ गच्छे चाम्तरे वृद्धखरतरे श्री चंद्र सूरिभवाः ।  
 राजते मनुजैत्र लेखितपदाः । शाचार्यं वालीश्वराः । स्तव्य  
 वाक्ज परागपान मधुपा ददर्मीग्रधानावराः । महीदादि  
 गुणैर्युता सुगुरुः संतीह सञ्जीवनाः ॥ १ ॥ ✽ ॥  
 ॥ ✽ ॥ तेषां विनयेन सुमोहनेन । सत्यक्त पूजादि दि  
 चार गच्छां । संकीर्तितेयं खलु बाह्यशिखा । सिद्धान्ताराध  
 विदां मुदेवै ॥ २ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥

॥ ३ ॥



कलिकत्ता.

मुंबई.



॥ प्रथम भाग सूचीपत्र ॥

जैन  
विद्या शाला.

जैन  
पाठ शाला.

॥॥ संख्या ॥॥ :	॥॥ प्रकरण ॥॥	॥ पत्रांक ॥
॥ १ ॥ उंकार वर्णन पंच परमेष्ठी नमस्कार । ....	१	१
॥ २ ॥ गुरु नमस्कार, दीर्घाक्षरैः सरस्वती नमस्कार । ....	२	२
॥ ३ ॥ स्वर, व्यंजन, युकादि वर्ण माला । ....	३	३
॥ ४ ॥ शिष्यावाक्य दूहा. ( वाक्यमंजरी ) ....	४	४
॥ ५ ॥ संधिसुत्र, सिद्धोवर्णः समान्नायः । ....	५	५
॥ ६ ॥ हितोपदेश, अर्कतो जगवंतं अर्धसहित ....	६	६
॥ ७ ॥ त्रिजुं जिन नाम । ....	७	७
॥ ८ ॥ श्री नवकार मंत्र, जयन्तामि प्रतिक्रमण सर्वपाठ ....	८	८
॥ ९ ॥ साधु प्रतिक्रमण, चत्वारि मंगल सुत्र । ....	९	९
॥ १० ॥ श्रावक प्रतिक्रमण, वंदितु सुत्र । ....	१०	१०
॥ ११ ॥ नवकारस्यादि १० पञ्चखाण । ....	११	११
॥ १२ ॥ दश पञ्चखाण आगारार्थः । ....	१२	१२
॥ १३ ॥ दश पञ्चखाण आगारसंख्या गाथा ....	१३	१३
॥ १४ ॥ मुहपत्ती पन्थिलेहण, सुत्र अर्थ साचो सरदज्ज । ....	१४	१४

॥ १६ ॥ थापनाचार्यकी १३ पन्विलेहण वोल । ....	३७
॥ १७ ॥ आलोयण, आजूणा चौपहर रात्री तथा दिवस । ....	३७
॥ १८ ॥ पक्खी, चौमाशी, संवत्तरी, वृद्ध अतीचार । ....	३८
॥ १९ ॥ जयतिज्जण वत्तीशी, श्रीअजय देवसूरी कृत । ....	४९
॥ २० ॥ परकीसुत्र, तित्थंकरेय तित्थे । ....	५३
॥ २१ ॥ पाक्षिक खामणा पाठ । ....	६९
॥ २२ ॥ (साते स्मरण) अजियंजिय सवन्नयं १ ....	७१
॥ २३ ॥ उद्धासिकम नक्ख निग्गय पहा ० १ ....	७४
॥ २४ ॥ नमिज्जण पणय सुरगण, स्तोत्र ३ । ....	७५
॥ २५ ॥ तंजयत्त जए तित्थं ० ॥ ४ ॥ ....	७६
॥ २६ ॥ मय रहियं गुण गण रयण सायरं ५ ....	७८
॥ २७ ॥ सिग्घ मवहरत्त विग्घं ० स्तोत्र ६ । ....	७९
॥ २८ ॥ उवसग्ग हरं पासं ० स्तोत्र ७ । ....	७९
॥ २९ ॥ लघुशांति, शांति शांति निशांत । ....	८०
॥ ३० ॥ वमी शांति, ओओ नव्याः शृणुतवचनं ० । ....	८१
॥ ३१ ॥ वमी नवकार, किंकप्पत्तरु रेअयाण ० ....	८४
॥ ३२ ॥ तिजयपज्जत्त पयासं ० स्तोत्र । ....	८६
॥ ३३ ॥ दोसा बहार दक्खो ०, स्तोत्र । ....	८७
॥ ३४ ॥ जगद्गुरु, ए ग्रह शांति स्तोत्र ....	८७
॥ ३५ ॥ धम्मोमंगल मुक्किठं ० स्वाध्याय ....	८८
॥ ३६ ॥ जिन पंजर, आत्मरक्षास्तोत्र । ....	८८
॥ ३७ ॥ लघु जिनसहस्रनाम, स्तोत्र । ....	९०
॥ ३८ ॥ सकल मंगल केलिनिवेशनं ०, स्तोत्र । ....	९२
॥ ३९ ॥ पार्श्वजिनस्तोत्र, विशदगुण विचित्रं । ....	९२
॥ ४० ॥ यस्यज्ञानदया सिंधो, शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र. ....	९२
॥ ४१ ॥ लक्ष्मीनिदानं ० । श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र । ....	९३
॥ ४२ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तोत्र । ....	९३
॥ ४३ ॥ विशद सज्जुण ० श्री पार्श्वजिनस्तोत्र । ....	९३

॥ ४४ ॥ श्री गोमी पार्श्वजिन स्तोत्र ।	....	....	ए४
॥ ४५ ॥ आद्यश्री कृपज्ञः ०, १४ जिनस्तोत्र ।	....	....	ए४
॥ ४६ ॥ श्रीमन्नमुरासुरेन्द्र ०। मंगलाष्टकस्तोत्र	....	....	ए४
॥ ४७ ॥ शिवंगुहबुद्ध ०। परमात्मास्तोत्र ।	....	....	ए५
॥ ४८ ॥ दर्शनदेवदेवस्य ० । नमस्कारस्तोत्र ।	....	....	ए६
॥ ४९ ॥ आद्यताक्षर संलक्ष ० । कृपिमंमलस्तोत्र ।	....	....	ए७
॥ ५० ॥ जक्तामर प्रणतमौलि मणिप्रज्ञाणा ० स्तोत्र ।	....	....	ए८
॥ ५१ ॥ कल्याण मंदिर मुदार मवद्यजेदी ० स्तोत्र ।	....	....	१०३
॥ ५२ ॥ रुद्र सेतुंजरासः श्रीरिसहेसर पायनमी ०।	....	....	१०६
॥ ५३ ॥ श्री शिखरजी को मोटो रास ।	....	....	११२
॥ ५४ ॥ श्री गौतम स्वामीको रास ।	....	....	११९
॥ ५५ ॥ श्री गौतम स्वामीके श्लोक ।	....	....	१२४
॥५॥ पनरैतिथकी थूई सरू ॥ ५॥	....	....	१२४
॥ ५७ ॥ महीमंमणं पुन सोवन्न देहं ।	....	....	१२४
॥ ६० ॥ पंच विदेह (समदमोत्तम ०) वरं मुत्तिय ० ।	....	....	१२५
॥ ६१ ॥ पंचानंतक सुप्रपंच पंचमी स्तुति ।	....	....	१२५
॥ ६३ ॥ वीरं, देवं, नित्यं वंदे ० । ( यदंज्ञि नमनादेव, )	....	....	१२६
॥ ६४ ॥ विश्वनायक लायक ०, अजितजिन स्तुति ।	....	....	१२६
॥ ६४ ॥ चौबीशे जिनवर, अष्टमी स्तुति ।	....	....	१२७
॥ ६६ ॥ मूरति मनमोहन कंचनकोमल काय ।	....	....	१२७
॥ ६७ ॥ अश्वसेन नरेसर वामादेवीनंद ।	....	....	१२७
॥ ६८ ॥ अरस्य प्रव्रज्या ० नमिजिनपते, ११ स्तुति ।	....	....	१२८
॥ ६९ ॥ सुखसमकित दायक कामित सुरतरुकंद ।	....	....	१२८
॥ ७० ॥ मित्र चौविह सुरंवर विरचै त्रिगमोसार ।	....	....	१२८
॥ ७१ ॥ त्रैलोक्य धपमप धुधुमि धोंधों ० (१४) स्तुति ।	....	....	१२९
॥ ७२ ॥ सेतुंज गिरिनमिथै कृपज्ञदेव पुंडरीक ।	....	....	१२९
॥ ७३ ॥ निरुपम सुखदायक, नवपद स्तुति ।	....	....	१३०
॥ ७४ ॥ वलि वलि ऊं ध्याऊं, पर्युण पर्व स्तुति ।	....	....	१३०

॥ ७५ ॥ सुरअसुर वंदिय पायपंकज नेमिजिन स्तुति ।	....	१३१
॥ ७६ ॥ श्री देवार्थ, विश्वेवर्थ पूर्णानंद ।	....	१३१
॥ ७७ ॥ त्रिभुवन जन नायक दायक ।	....	१३१
॥ ७८ ॥ श्री सर्वज्ञ ज्योतीरूप विश्वाधीश देवेन्द्र ।	....	१३२
॥ ७९ ॥ पापायां पुरिचारु, दीपमाला स्तुति ।	....	१३२
॥ ८० ॥ सिद्धारथताता ० दीपमाला स्तुति ।	....	१३२
॥ ॐ ॥ पनरै तियके मोटे ठोटे स्तवन सरू ॥ ॐ ॥		
॥ ८१ ॥ सुगण सनेही साजन श्री सीमंधर स्वामि ।	....	१३३
॥ ८२ ॥ श्रीशंखेश्वर पाश जिनेसर नेटियै ।	....	१३४
॥ ८३ ॥ सफलसंसार अवतार ए ऊं गिणुं ।	....	१३४
॥ ८४ ॥ मनमोहन महाराज । तीन भुवन सिरताज ।	....	१३६
॥ ८५ ॥ जय श्री जिनराज । जगजनअंतरजामी ।	....	१३६
॥ ८६ ॥ प्रणमंश्री गुरु पाय ० पंचमीवृद्ध स्तवन ।	....	१३७
॥ ८७ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी ।	....	१३८
॥ ८८ ॥ भविका श्री जिन बिंव जुहारो ।	....	१३९
॥ ८९ ॥ अंतर जामी सुण अलवेसर ।	....	१३९
॥ ९० ॥ जयकारी जिनराज पुरसा दानीरे ।	....	१४०
॥ ९१ ॥ अमल कमल जिमधवल विराजै ।	....	१४०
॥ ९२ ॥ सुण सुण शेरुंजागिर स्वामी ।	....	१४१
॥ ९४ ॥ घर अगण सुरतर फल्योजी ।	....	१४१
॥ ९५ ॥ पास जिनेसर जगतिलोए	....	१४२
॥ ९६ ॥ पूजानो तूं वेपरवाही ।	....	१४३
॥ ९७ ॥ सम वसरण वैठा जगवंत ।	....	१४४
॥ ९८ ॥ तुं मेरे मनमें प्रभु तुं मेरे दिलमें ।	....	१४४
॥ ९९ ॥ मोरा साहिवहो श्री शीतलनाथकि ।	....	१४५
॥ १०० ॥ चौराशी ८४ आशातना, वृद्ध स्तवन ।	....	१४६
॥ १०१ ॥ चौबीश जिन देहमान स्तवन ।	....	१४७
॥ १०२ ॥ चौबीश जिन आयु प्रमाण स्तवन ।	....	१४८

॥ १०३ ॥ (६३) त्रैलोक्य शिलाका पुरुष स्तवन ।	....	....	१४९
॥ १०४ ॥ मंगल कमलाकंद ए, अजित शान्ति स्तव ॥	....	....	१५०
॥ १०५ ॥ मुहपत्नी पमिलेहण स्तवन ।	....	....	१५१
॥ १०६ ॥ श्री. विमलाचल शिरतिलो ।	....	....	१५३
॥ १०७ ॥ कृपञ्ज जिनेसर दिनकर साहव ॥	....	....	१५४
॥ १०८ ॥ वीरसुणोमोरी वीनती । करजोमीहो ॥	....	....	१५५
॥ १०९ ॥ पुरमनोरथ पाश ०, १४ दंमकस्तवन ।	....	....	१५६
॥ ११० ॥ इरियावही मित्रामि डकमसंख्या स्तव ॥	....	....	१५९
॥ १११ ॥ पांचसमवायस्तवन, सिद्धारथसुत ।	....	....	१६१
॥ ११२ ॥ १४ गुणगणा वृक्ष स्तवन ।	....	....	१६४
॥ ११३ ॥ नवतत्त्व ज्ञापा गर्भित स्तवन ।	....	....	१६७
॥ ११४ ॥ दंमक ज्ञापा गर्भित स्तवन ।	....	....	१७०
॥ ११५ ॥ जीवचार ज्ञापा गर्भित स्तवन ।	....	....	१७३
॥ ११६ ॥ समवसरण विचार गर्भित स्तवन ।	....	....	१७६
॥ ११७ ॥ यात्रीडाजाई आबूजीनी जात्रकरेजो ।	....	....	१७८
॥ ११८ ॥ नविजिन पूजारे, शीतल जिनपतीरे ।	....	....	१७९
॥ ११९ ॥ अढीवीप, बीस विरहमान स्तवन ।	....	....	१८०
॥ १२० ॥ सकल शाश्वता चैत्य संख्या नमस्कार स्तवन ।	....	....	१८३
॥ १२१ ॥ शाश्वता अशाश्वता जिन विंव नमस्कार स्तवन ।	....	....	१८४
॥ १२२ ॥ हारे हारै धर्म जिनंद सुं लागो पूरण प्रीतजो ।	....	....	१८५
॥ १२३ ॥ समकित द्वार गुंजारै पैसतांजी ।	....	....	१८६
॥ १२४ ॥ मनमो अष्टा पद मोक्षो माहरोजी ।	....	....	१८६
॥ १२५ ॥ अजित जिन तारजोरे । तारजोदीन दयाल ०	....	....	१८७

॥ ❀ ॥ सिधायमाला ॥ ❀ ॥

॥ १२६ ॥ ढंढण रिपजीनें वंदना झुंवारी ।	....	....	१८७
॥ १२७ ॥ धनाकृपि सिधाय, श्रीजिनवाणीरे धना ।	....	....	१८८
॥ १२८ ॥ देव दानव तीर्थकर गणघरण कर्मसिधाय	....	....	१८९
॥ १२९ ॥ शीतासिधाय, जलजलती मिलती घणीरे ।	....	....	१९०

॥ १३० ॥ अनाथी ऋषि सिध्दाय ।	....	....	....	१९१
॥ १३१ ॥ प्रतिक्रमण सिध्दाय ।	....	....	....	१९२
॥ १३२ ॥ सप्तव्यसन सिध्दाय ।	....	....	....	१९२
॥ १३३ ॥ उपदेश सिध्दाय ।	....	....	....	१९३
॥ १३४ ॥ श्री बाहु वलजी स्वाध्याय ।	....	....	....	१९४
॥ १३५ ॥ चेलणाजी महासती स्वाध्याय ।	....	....	....	१९४
॥ १३६ ॥ झूलोमनन्तमरा, वैराग्य सिध्दाय ।	....	....	....	१९५
॥ १३७ ॥ बाहुवलजी सिध्दाय, राजतणा अतिलोभिया ।	....	....	....	१९६
॥ १३८ ॥ अरणकमुनी सिध्दाय ।	....	....	....	१९६
॥ १३९ ॥ सचित्त अचित्त विचार सिध्दाय ।	....	....	....	१९७
॥ १४० ॥ कावसग १९ दोष सिध्दाय ।	....	....	....	१९८
॥ १४१ ॥ आलोयण स्वरूप सिध्दाय ।	....	....	....	१९९
॥ १४२ ॥ कडुवारेफलोठ क्रोधना, क्रोध सि० ।	....	....	....	२०१
॥ १४३ ॥ रेजीव मान न कीजियै, मान सि० ।	....	....	....	२०२
॥ १४४ ॥ समकितनूं मूल जाणियैजी, माया सि० ।	....	....	....	२०२
॥ १४५ ॥ तुमे लक्षण जो ज्यो लोचनारेः । लोचन सि० ।	....	....	....	२०२
॥ १४६ ॥ भरत चक्रवर्ति सिध्दाय ।	....	....	....	२०३
॥ १४७ ॥ उत्पति जोय जीव आपणी ।	....	....	....	२०३
॥ १४८ ॥ विजयसेठ विजया सेठाणी चौढालियो ।	....	....	....	२०७
॥ १४९ ॥ इखुकार राजा नृगुप्रोहत, सि० ।	....	....	....	२०९
॥ १५० ॥ जगचूनामणिभूत, उपदेश माला सि० ।	....	....	....	२१२
॥ १५१ ॥ निस्सिहीश, राई संधारा स्वाध्याय ।	....	....	....	२१४
॥ ❀ ॥ सामायक पोशादि श्राव अहो रात्र कृत्य ॥ ❀ ॥				
॥ १५२ ॥ प्रज्ञात सामायक विधिः ।	....	....	....	२१५
॥ १५३ ॥ राई प्रतिक्रमण विधिः ।	....	....	....	२१६
॥ १५४ ॥ सामायक पारण विधिः ।	....	....	....	२२०
॥ १५५ ॥ संध्याकाल सामायक करण विधिः ।	....	....	....	२२१
॥ १५६ ॥ देवरी प्रतिक्रमण विधिः ।	....	....	....	२२२

॥ १५७ ॥ अठपहरी पोशह विधिः ।	....	२२४
॥ १५८ ॥ पांच शक्रस्तवे देववन्दन विधिः ।	....	२२६
॥ १५९ ॥ पञ्चखाण पारण विधिः ।	....	२२७
॥ १६० ॥ राई संथारा विधिः ।	....	२२९
॥ १६१ ॥ पोसह पारणेंकी विधिः ।	....	२३०
॥ १६२ ॥ दिवश चौपहरी पोपध विधिः	....	२३१
॥ १६३ ॥ रात्री संवंधी चौपहरी पोपध विधिः ।	....	२३२
॥ ३६४ ॥ चौवीश २४ यंमिला पडिलेहण पाठ ।	....	२३३
॥ १६५ ॥ यंडिला २४ कहां २ करना ।	....	२३४
॥ १६६ ॥ पक्खी, चौमाशी, संवत्तरी प्रतिक्रमण विधिः	....	२३४
॥ १६७ ॥ रात्री प्रतिक्रमणमें ठमाशी तपचिंतन विधिः।	....	२३७
॥ १६८ ॥ साधू, श्रावक, प्रतिक्रमण हेतू, अर्थ, कारण,।	....	२३८

## ॥ ॐ ॥ अथ श्री जिन पूजा संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ १६९ ॥ श्रीदेवचंदजी कृत सात्रपूजा ।	....	२४१
॥ १७० ॥ श्री देवचंदजी कृत अष्टप्रकारी पूजा ।	....	२४७
॥ १७१ ॥ शक्रो यथा जिनपते, वस्त्र पूजा ।	....	२५१
॥ १७२ ॥ अहपमिन्नग्गापंसरं, निमक उत्तरण पूजा।	....	२५१
॥ १७३ ॥ पुष्प (तथा) पुष्पमाला चढावण पूजा ।	....	२५१
॥ १७४ ॥ सत्तरजेदी पूजांकी विधि ।	....	२५२
॥ १७५ ॥ साधुकीरतिजी कृत, सत्तरजेदी पूजा ।	....	२५२
॥ १७६ ॥ आरती करणविधि ।	....	२६३
॥ १७७ ॥ जैजै आरती शांति तुमारी तोराचरण ।	....	२६३
॥ १७८ ॥ देवचंदजी, जशविजैजी कृत, नवपद बन्नी पूजा ।	....	२६४
॥ १७९ ॥ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो ।	....	२७३
॥ १८० ॥ नवपद पूजन ( तथा ) कलश ढालन विधि ।	....	२७४
॥ १८१ ॥ नवपद वाशक्केप पूजा ।	....	२७५
॥ १८२ ॥ शिवचंदजी कृत, रूपमंमल २४ प्रकारी पूजा	....	२७७
॥ १८३ ॥ जयजग जन वंछित पूरण, (नवपद आरती)	....	२८९



॥ २३८ ॥ धन धनरे दीवाली हारै आजनीरे । ....	५१०
॥ २३९ ॥ आजहारै दीवाली अजुवाली । ....	५३४
॥ २४० ॥ हारै दीवालीरे थई आज, जिन मुख जोवाने । ....	५३५
॥ २४१ ॥ कार्तिक सुद ग्यान पंचमी पर्वाधिकारः । ....	३९३
॥ २४२ ॥ ग्यान पंचमी देववंदन विधिः । ....	३९३
॥ २४३ ॥ ग्यानको वमो चैत्य वंदन । ....	३९४
॥ २४४ ॥ श्रीआचारंग सुत्र सिध्दाय १ । ....	३९५
॥ २४५ ॥ श्रीसुयगमांग सुत्र सि० २ । ....	३९६
॥ २४६ ॥ श्रीठांणांग सुत्र सि० ३ । ....	३९६
॥ २४७ ॥ श्रीसमवायांग सुत्र सि० ४ । ....	३९८
॥ २४८ ॥ श्रीजगवती सुत्र सि० ५ । ....	३९८
॥ २५० ॥ श्रीउपाशकदशा सुत्र सि० ७ । ....	३९९
॥ २५१ ॥ श्रीअंतगम दशांग सि० ८ । ....	४००
॥ २५२ ॥ श्रीअणुत्तरो वाई अंग सि० ९ । ....	४००
॥ २५३ ॥ श्रीप्रश्नव्याकरण सुत्र सि० १० । ....	४०१
॥ २५४ ॥ श्रीविपाक सुत्र सिध्दाय ११ । ....	४०१
॥ २५५ ॥ इग्यारै अंगवर्णन सि० । ....	४०२
॥ २५६ ॥ मेरैरे मन मानी ग्यानजरी । ग्यानस्त० । ....	४०२
॥ २५७ ॥ श्रुत अतिह जलो०, जिनागम स्तवन । ....	४०३
॥ २२८ ॥ कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार । ....	४०३
॥ २५९ ॥ कार्तिक १५ पर्वाधिकार । ....	४०३
॥ २६० ॥ ( सिद्धगिरीस्त० ) ते दिनक्यारे आवश्ये । ....	४०३
॥ २६१ ॥ आज आपै चालो सहियो सिद्धाचल गिर जइये । ....	४०५
॥ २६२ ॥ नमोरे नमो सेतुंज गिरीरे । ....	३४६
॥ २६३ ॥ अंग उमाहो मोने अतिघणो । ....	३४७
॥ २६४ ॥ यात्रा निनाणुं करियै, विमल गिरी, यात्रा० । ....	३४८
॥ २६५ ॥ सिद्धगिरी जेटो जवि जावै । ज्युंसुख० । ....	३४९
॥ २६६ ॥ आजपुंडर गिरि जेटिया० । ....	३४९

॥ २६७ ॥ शेवुंजरास(ढाल५) आदिजिनंद दिनंदसम ।	....	४०८
॥ २६८ ॥ सिद्धाचल गिरिजेठ्यारे, धन्यभागहमारा ।....	....	४१४
॥ २६९ ॥ नावधरिष्य दिन आज सफलो गिण्यो ।....	....	४१४
॥ २७० ॥ मार्गशीर्षमासे, मोन एकादशी पर्वाधिकार ।	....	४१५
॥ २७१ ॥ (मोन ११) दैठसै(१५०) कल्याणक गुणनो ।	....	४१६
॥ २७२ ॥ पोपमासे, वद १० पर्वाधिकार । ....	....	४२१
॥ २७३ ॥ श्री पार्श्व प्रभु जन्म कल्याणक स्तवन । ....	....	४२१
॥ २७४ ॥ वाणी ब्रह्मावादिनी, श्रीगौमी पार्श्व दृष्ट स्तव ।	....	४२२
॥ २७५ ॥ माघ मासे (मेरु तेरस) पर्वाधिकारः । ....	....	४२५
॥ २७६ ॥ फाल्गुनमासे, पर्वाधिकारः । ....	....	४२६
॥ २७७ ॥ चैत्रमासे, नावहोली, अधिकार । ....	....	४२७
॥ ॐ ॥ नावहोली खेलन विचार स्तवन संग्रह ३८ ॥ ॐ ॥		
॥ २७८ ॥ होरी खेलियै० ( जयबोलोपाशजिने० ) ।....	....	४३०
॥ २७९ ॥ मधुवनमें जायमची होरी ( यादवमनमेरो० ) ।	....	४३०
॥ २८० ॥ इकसुणलै० ( शांवरु सुखदाई० ) नैना हरखाई० ।....	....	४३१
॥ २८१ ॥ मनमोहन गज० ( रंगलंग्यो गुरुग्यान ) ।	....	४३२
॥ २८२ ॥ चिदानंद खेलै फाग० ( होरीआई मेरोमन० ) । ....	....	४३२
॥ २८३ ॥ होरीखेलो नेमसैं धाय२, (मेरै घटकी गगरिया रंगसे०) ।	....	४३३
॥ २८४ ॥ मेनै देखी अनोखी होरीरे ( तुमे ध्यावोरे अंतरीक० ) ।	....	४३३
॥ २८५ ॥ वावो रूप० ( नेम नजाणैं मोरी पीर० ) ।	....	४३४
॥ २८६ ॥ जिनराजको हमारी वंदनारे ( जिन० ) ।	....	४३४
॥ २८७ ॥ दर्शन कियो आज० ( सिद्धगिरीजीको दर्शन० ) । ....	....	४३५
॥ २८८ ॥ मेरो चेतन खेलैहोरी० ( अनंतानंत प्रभु० ) ।	....	४३५
॥ २८९ ॥ मोहे अपनै रंगमें० ( मेरै पाश प्रभुजीके रंग० ) ।	....	४३६
॥ २९० ॥ रंगमच्यो जिनवार, चालो खेलियै होरी । ....	....	४३६
॥ २९१ ॥ नेमजीसैं कहियो० ( श्री चिंतामणिपाश प्रभुजी० ) ।	....	४३७
॥ २९२ ॥ श्री चिंतामणिपाश, प्रभुजी तोरी अंगीयां बनी० ) ।	....	४३७
॥ २९३ ॥ चिंतामणि चित्तव्यावोरे० ( मतहासे पिचकारी० ) ।....	....	४३८

॥ ३०८ ॥ हारे तुंतो प्रज्जुज्ज विलंब न करहो ॥ । ....	४३८
॥ ३१० ॥ नेम मिलैतो वातां कीजीये. ( आतम तत्व विचार ॥ ) ।	४३९
॥ ३११ ॥ लालतेरे नयनों की ॥ ( दर्शन विनजीव ॥ ) । ....	४३९
॥ ३१४ ॥ मत ठोसो ह्मानें युंहीरे ॥ ( अटक्यो चित्त हमारे ॥ ) ।	४४०
॥ ३१६ ॥ मंगल राजै गिरनार ॥ ( मंगल कलश ) । ....	४४०

## ॥ ❀ ॥ तपश्या विधि स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ३१७ ॥ पांच कल्याणक टीप । ....	४४१
॥ ३१८ ॥ पांच कल्याणक तपश्या विधि । ....	४४४
॥ ३१९ ॥ पखवासे तपश्याको स्तवन । ....	४४५
॥ ३२० ॥ पखवासै तपश्याकी विधि । ....	४४६
॥ ३२१ ॥ दशपञ्चक्खाण तप स्तवन । ....	४४७
॥ ३२२ ॥ दशपञ्चक्खाण तप विधि । ....	४४९
॥ ३२३ ॥ वीश स्थानक तप स्तवन । ....	४४९
॥ ३२४ ॥ वीशस्थानक तप करण विधि । ....	४५०
॥ ३२५ ॥ वीशस्थानक गुणनो, कानुसंग प्रमाण । ....	४५१
॥ ३२६ ॥ रोहणी तपस्या स्तवन । ....	४५३
॥ ३२७ ॥ रोहणी तपस्या विधि । ....	४५६
॥ ३२८ ॥ ठम्माशी तप स्तवन । ....	४५६
॥ ३२९ ॥ ठम्माशी तप विधि । ....	४५७
॥ ३३० ॥ बारैमाशी तप स्तवन । ....	४५७
॥ ३३१ ॥ बारैमाशी तप विधि । ....	४५८
॥ ३३२ ॥ १८ लब्धी तप स्तवन । ....	४५९
॥ ३३३ ॥ १८ लब्धी तप विधि । ....	४६०
॥ ३३४ ॥ १४ पूर्व तप स्तवन । ....	४६०
॥ ३३५ ॥ १४ पूर्व तपश्या विधि । ....	४६०
॥ ३३६ ॥ तिलक तपश्या स्तवन । ....	४६०
॥ ३३७ ॥ तिलक तपश्या विधि । ....	४६०
॥ ३३८ ॥ १६ कषाय गंजन स्तवन । ....	४६०

॥ ३३ए ॥ १६ शोलिया तपकी विधि । ....	४६६
॥ ३४० ॥ पेंतालीश आगम तपकी विधि । ....	४६६
॥ ३४१ ॥ ४५ आगमका नामको गुणनो । ....	४६६
॥ ३४२ ॥ इग्यारै गणधर तप विधि: । ....	४६८
॥ ३४३ ॥ ११ गणधर नाम, गुणनो । ....	४६८
॥ ३४३ ॥ श्रीनवकार मंत्र तपश्या विधि । ....	४६९
॥ ३४४ ॥ सर्व तपश्या (प्रथम) गुरूके पाशग्रहण विधि । ....	४७०
॥ ३४५ ॥ सर्व तपश्या गुरूके पाश पारण विधि । ....	४७१
॥ ३४६ ॥ जन्म, मरण, कृतवती, का सूतक विचार । ....	४७२
॥ ३४७ ॥ दिन प्रति, (१४ नियम) चितारण विधि । ....	४७३
॥ ३४८ ॥ वारै व्रत, गुरूके पाश ग्रहण विधि । ....	४७६
॥ ३४ए ॥ कृषन् प्रमुख जिन पाय युग प्रणमं, साधुवन्दना । ....	४७ए
॥ ३५० ॥ वर्त्तमान चौबीशी वंङ्ग, (त्रिबुं जिन स्तवन) । ....	४८३
॥ ३५१ ॥ उपधान तप वर्णन विधि संयुत, स्तवन । ....	४८४

### ॥ ॐ ॥ शरस रागरागणी प्राचीन स्तवन संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ ३५४ ॥ टुक निजर० (लोक चवदके०) सविसखी वन० । ....	४८६
॥ ३५६ ॥ होजिनतेंमे दरश० (ह्यारारिषजाजिनंदन०) ....	४८७
॥ ३५८ ॥ मनलीनो हमारो० (अजित१ जिनध्यान) । ....	४८७
॥ ३६१ ॥ यह अरजी० (मुजरो मानी लीजै) तुमेंमा प्रनु०) । ....	४८८
॥ ३६३ ॥ हम जाणतहें तुम० (पंथीमा पंथचलेगो) । ....	४८८
॥ ३६५ ॥ तेवीशमा जिनराज० (कैसें काज सरै०) । ....	४८९
॥ ३६७ ॥ राजरी ववाई वाजैठै (मोतिनकीमाला०) । ....	४८९
॥ ३६ए ॥ रहे तुम आजक्युं० (हेमाय वांकमी करम०) । ....	४९०
॥ ३७१ ॥ ह्यानें प्यारो लागे० (मेरो पिया परसंग०) । ....	४९०
॥ ३७३ ॥ वरपत वचन ऊरी० (याघमीमें रंग०) । ....	४९१
॥ ३७४ ॥ चिंज और वदरिया० (मोरवा पपइया बोलै०) । ....	४९१
॥ ३७७ ॥ समऊनरजीवन० (मतकर मान गुमान) । ....	४९२
॥ ३७ए ॥ निसदिन जोवें थारी० (आजतो हमारे जाग०) । ....	४९२

॥ ३८१ ॥ वावरोरे आजमन० ( कृष्ण विहारी थारी० ) । ....	४९३
॥ ३८३ ॥ सुणमन होणहार० ( सहियोरी मिलचालो० ) । ....	३९३
॥ ३८६ ॥ मनवाजिनंद० ( चालो देखोरी० ) मेरोमन० । ....	४९४
॥ ३८८ ॥ जिनराज नाम तेरा० ( सुणो सुजाण नेमजी० ) । ....	४९४
॥ ३९० ॥ तेरै दरसको चाह० ( थारे मुखमारीहो० ) । ....	४९५
॥ ३९२ ॥ ऐसी विधतेनै पाईरे० ( मोहे अपनोकर० ) । ....	४९५
॥ ३९४ ॥ नेम जिनंद जीसै० ( आजप्रभुतोरेचरण० ) । ....	४९६
॥ ३९७ ॥ रातगईअब० ( तुमबिनदीना० ) जोरज्यो० । ....	४९६
॥ ४०० ॥ जागेरेसब० ( शांवरो सलूनो० ) आज कृष्ण० । ....	४९७
॥ ४०२ ॥ अंगण कलपफल्यो० ( ऊठोनेमोरा आतम० ) । ....	४९८
॥ ४०४ ॥ नजमन नाजिनंदन० ( आवोनेम रहजावो० ) । ....	४९८
॥ ४०६ ॥ अधम जग काम० ( आयो सही अब० ) । ....	४९९
॥ ४०८ ॥ घमी२ पल२ तिन२ निश० ( तुमतो नले विराजो० ) । ....	४९९
॥ ४१० ॥ सिखर गिरेंद्र जुहारो० ( शांवरियामें दीगो० ) । ....	५००
॥ ४१२ ॥ चरम प्रभु अरज० ( मेंमुखदेख्यो गोमीपा० ) । ....	५०१
॥ ४१५ ॥ कृपा करो० ( सुजरासाहव २ ) घंटाजैघन० । ....	५०२
॥ ४१७ ॥ निरंजन सांझ्यांरे० ( ऐसे सहर बिचै कोन० ) । ....	५०२
॥ ४१७ ॥ आयरहोदिल० ( रहो२ रे यादव० ) विराजो बंगला० । ....	५०३
॥ ४२२ ॥ कीनै देखा हमारा० ( अबधू सो जोगी गुरु० ) । ....	५०३
॥ ४२४ ॥ अबधू ऐसो ज्ञान० ( वेर २ नहिं आवै० ) । ....	५०४
॥ ४२७ ॥ ए जिनके पाये० ( चित्तमें धरो प्यारे० ) अबधू निर० । ....	५०५
॥ ४२९ ॥ चालणा जरूरजाकुं० ( समऊपरी मोहैसम० ) । ....	५०६
॥ ४३१ ॥ राजुल पोकारे नेम० ( जगत में कौन किसी० ) । ....	५०६
॥ ४३३ ॥ वाजत रंग बधाई० ( चलांजीमेरो नेम चल्यो० ) । ....	५०७
॥ ४३४ ॥ आदीशर जिन राज० ( रशना सफल चई० ) । ....	५०७
॥ ४३६ ॥ गौडीगाइयै मन रंग० ( हारे ऊंतो मोह्योरे लाल० ) । ....	५०८
॥ ४३८ ॥ प्रभुजी सुं लागो ह्यारो० ( रेजीव जिनध्रम की० ) । ....	५०८
॥ ४४० ॥ सोइ२ सारीरैन गमाई० ( चंद्रा प्रभुजीसैं ध्यान० ) । ....	५०९

- ॥ ४४२ ॥ ते मुक्ति पुर गए रहेरे० (खतरा दूरकरना २, एक०) । ५०९  
 ॥ ४४४ ॥ पानीमें मीन पियासी० ( धनरे२दीवाली ह्यारे० ) । ... ५१०  
 ॥ ४४६ ॥ धन२ आजूणोदिन० ( ह्यारे आज आनंद० ) । ... ५१०  
 ॥ ४४७ ॥ सवालाखटकानी जाये एक घनी । ... ५११

### ॥ ॐ ॥ जिनदाशादि कृत लावण्या संग्रह ॥ ॐ ॥

- ॥ ४४८ ॥ अगड्डं २ बाजे चौधमा सवाई मंका साहवका । ... ५११  
 ॥ ४४९ ॥ नेमनाथ मोरी अरजसुणीजै, मैं झं दाशी० । ... ५१३  
 ॥ ४५० ॥ जिन दाशजी कृत, (१०) धन, लावणी सरू । ... ५१३  
 ॥ ४६१ ॥ चलचेतन अव उठ० ( तुम जजो जिनेसरदेव० ) । ५१५  
 ॥ ४६२ ॥ हारे तुं कुमति कलेशन नारलगी क्युं केमै० । ... ५१६  
 ॥ ४६३ ॥ तुमतजो जगतकाख्याल इसका गाना । ... ५१७  
 ॥ ४६५ ॥ देगया दगा दिलदार० ( मुखकवीच मकशी० ) । ... ५१८  
 ॥ ४६७ ॥ सुणजो वातां राव सदा० ( स्वर नहीं हे युगमें० ) । ५१९  
 ॥ ४६९ ॥ अरज हमारी सुनो० ( मुक्ति जाणेंकी डिगरी० ) । ... ५२०  
 ॥ ४७० ॥ अनुभव पदपानेंकी मिगरी । ... ५२२  
 ॥ ४७१ ॥ सुरुतकी वाततेरे० ( तुम तजकर राजुल० ) । ... ५२३  
 ॥ ४७३ ॥ आप समझका घर नहीं पाया, दूजैकों० । ... ५२४  
 ॥ ४७५ ॥ नमुं २ मैं गुरु निग्रंथकुं० ( तजुं२में उनकु० ) । ... ५२५  
 ॥ ४७६ ॥ जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां० । ... ५२५  
 ॥ ४७८ ॥ श्रीकेशरिया नाथजी ( मोटी ) लावणी । ... ५२६  
 ॥ ४७८ ॥ नेमकी जानवनी ज़ारी, देखनकों आवे० । ... ५३१  
 ॥ ४८० ॥ आरती करूं श्री पार्श्व० ( आदिजिनेसरकीयो पारणो । ५३२  
 ॥ ४८१ ॥ छई घटा गगनमें कारी० ( अजितनाथ महाराज० ) ५३३  
 ॥ ४८३ ॥ पोढोपोढोजी रूपन विहारे, निद्रावश० । ... ५३४  
 ॥ ४८४ ॥ योजिनदाशकूत्रे कूत्रे, याने लेई लाकमी कूटो । ... ५३५

### ॥ ॐ ॥ नवरसो चोढालियादि स्तवन संग्रह ॥ ॐ ॥

- ॥ ४८६ ॥ कीजैमंगल चार० ( श्रीनेमनाथजी नवरसो० ) । ... ५३६  
 ॥ ४८७ ॥ दान, शील, तप, ज्ञाव, चौढालियो । ... ५४०

॥ ४८९ ॥ पंचतीर्थ आरती ( चक्रेश्वरी आरती ) ।	....	५४६
॥ ४९० ॥ (वीकानेर) श्रीकुंथुजिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ।	....	५४७
॥ ४९१ ॥ कलिकत्ता श्री शीतल जिन (१) स्तवन । ....	....	५४८
॥ ४९४ ॥ वीरप्रभुतेरी ( सदासहाई शांतिजिनेसर ) ।	....	५४९
॥ ४९५ ॥ प्रभुजीकीमहमा अजववनी, श्रीशांति स्तवन ।	....	५५०
॥ ४९६ ॥ सर्वोत्तम कलकत्ता, कार्तिक महोत्सववधाई ।	....	५५०
॥ ४९७ ॥ हमारै आज आनंद वधाई ( श्रावककी करणी ) । ....	....	५५१
॥ ५०० ॥ सुण अरदाशा ( चौपड खेलन सिषाय ) ।	....	५५२
॥ ५०१ ॥ शेत्रुंज खेल खिलारी ( महावीर स्वामी पारणो ) ।	....	५५३
॥ ५०३ ॥ बेकरजोडी बीनवुंजी, आलोयण स्त ।	....	५५५
॥ ५०४ ॥ हिवैराणी पदमावती पाप आलोयण सि ।	....	५५७

### ॥ ॐ ॥ तपगह समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥ ॐ

॥ ५०५ ॥ पुन्यप्रकाश, आलोयण वृक्ष स्तवन ।	....	५५९
॥ ५०६ ॥ नरहेसर बाजवली, अन्नैकुमारो सिषाय ।	....	५६५
॥ ५०७ ॥ मन्ह जिणाणं आणं, सिषाय ।	....	५६५
॥ ५०८ ॥ सकल तीर्थ वंडं कर जोडण । ....	....	५६६
॥ ५०९ ॥ सकलार्हत् प्रतिष्ठान, ( पख्खी वृक्ष स्तोत्र ) ।	....	५६७
॥ ५१० ॥ संतिकरं संतिजिणं ( शांतिकरस्तोत्र ) । ....	....	५६८
॥ ५११ ॥ सीमंधर परमात्मा ( श्री सीमंधर जगधणी ) ।	....	५६९
॥ ५१४ ॥ श्री परमात्मा ( विमल कमल ) श्रीशेत्रुंजय, चैत्य ।	....	५७०
॥ ५१७ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर ( आंखनियैरेमें आज ) ।	....	५७१
॥ ५१९ ॥ शेत्रुंजा द्वितीय स्तवन ( पंचतीर्थ स्तुति ) ।	....	५७२
॥ ५२० ॥ पिनुजीरै नाम जपुंदिनरातियां, नेमराजुल सि ।	....	५७२
॥ ५२१ ॥ आऊखो तूटानें सांधोको नहीरे, सि । ....	....	५७३
॥ ५२४ ॥ पंचतीर्थ चै ( १ तिथको चै ) पंचमीकोचै ।	....	५७४
॥ ५२६ ॥ अष्टमीको ( तथा ) एकादशीको चैत्यवंदन ।	....	५७५
॥ ५२८ ॥ श्रीसीमंधर जिनकी ( १ ) दोय स्तुति ।	....	५७६
॥ ५२९ ॥ दिन सकल मनोहर, बीजकीस्तुति ।	....	५७६

॥ ५३० ॥ श्रावण सुदि दिन०, पंचमी स्तुति । ....	५७७
॥ ५३१ ॥ मंगल आठकरी०, (८) अष्टमी स्तुति । ...	५७७
॥ ५३२ ॥ एकादशी अतिरूवमी । (११) एकादशी स्तुति । ....	५७८
॥ ५३३ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे०, (१४) स्तुति । ....	५७८
॥ ५३४ ॥ कल्याणकंदं पढमं जिणंदं, सर्व दिन स्तुति । ....	५७९
॥ ५३५ ॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, स्तुति । ....	५७९
॥ ५३६ ॥ महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी०, स्तुति । ....	५८०
॥ ५३७ ॥ सत्तर जेदी जिनपूजा०, पर्यूपण स्तुति । ....	६२१
॥ ५३८ ॥ पंचेदिय संवरणो०, स्थापना गाथा । ....	५८०
॥ ५३९ ॥ सामाज्य वयजुत्तो, सामायक पारवा गाथा । ....	५८०
॥ ५४० ॥ सागर चंदोकामो, पोषध पारवा गाथा । ....	५८०
॥ ५४१ ॥ जग चिंतामणि चै० ( अतीचारनी ८ गाथा ) । ....	५८१
॥ ५४२ ॥ विशाल लोचन० ( सुयदेव्या ए थुई ) । ....	५८२
॥ ५४४ ॥ जीते खिते साज्ज, क्षेत्र देव स्तुति । ....	५८२
॥ ५४६ ॥ सामायक लेवा विधि । ....	५८२
॥ ५४७ ॥ सामायक पारवा विधि । ....	५८३
॥ ५४८ ॥ संध्याकाल, देवशी प्रतिक्रमण विधि १ । ....	५८३
॥ ५४९ ॥ प्रजातकाले, रात्रीप्रतिक्रमण विधि २ । ....	५८५
॥ ५५० ॥ पक्खी प्रतिक्रमण विधि ३ । ....	५८६
॥ ५५२ ॥ चौमाशी ४ ( संवत्तरी प्रतिक्रमण विधि ) । ५ । ....	५८८
॥ ५५३ ॥ पम्पिलेहण करवानो विधि । ....	५८८
॥ ५५४ ॥ पच्चक्खाण पारवानो विधि । ....	५८९
॥ ५५५ ॥ पांच शक्रस्तवे देववंदन विधि । ....	६०२
॥ ५५६ ॥ ( २४ ) जिनचै०, थुई, स्त०, (चौमाशी देव वंदन)....	६०३

॥ ॐ ॥ अथ ठंद स्तवन संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ ५५७ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां० । महावीर ठंद । ....	५८९
॥ ५५८ ॥ वंजित पूरे विधिघपरं, श्री नवकार ठंद । ....	५९०
॥ ५५९ ॥ सुखकारण नविषण०, श्री नवकार ठंद । ....	५९२



॥ ६३० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरिसरू, सुगुरु स्हांरा ।	....	....	६५७
॥ ६३१ ॥ एहवा सगुरु वांदीयै, जविकजन, एहवा० ।	....	....	६५८
॥ ६३२ ॥ खरतर गच्छ प्रजाकर बधावो ।	....	....	६५८
॥ ६३३ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरि बधावो ।	....	....	६५९
॥ ६३३ ॥ मोतीयमे मेह वरसियो, सखि आज ऊवोआ० ।	....	....	६५९
॥ ६३५ ॥ जिन शाशन जयकारी, जगगुरु गौतम गणधार० ।	....	....	६६०
॥ ३३६ ॥ श्रीकोटिक गच्छ (१०८०) खरतर पदप्राप्त समाचारी ।	....	....	६६०
॥ ६३७ ॥ संग्रह कर्ता, स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्ताधिकारः	....	....	६६४

## ॥ ॥ परममंगल श्री दादाजीके काव्य सर्वईया ॥ ॥

॥ ॥ दाशानुदाशा इव सर्वदेवाः । यदीय पादाब्ज तले लुठति । मरु स्थली कल्पतरुः सजीया । ज्जुगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको । कुर्वन्ति नव्याः किमु कामगव्या । प्रसीदतः श्री जिनदत्त सूरिः । सर्वेपदा हस्ति पदे प्रविष्टाः ॥ १ ॥ ॥

॥ ॥ नोयोगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नो वेत्ताल पिशाच राक्षसगणाः नो रोग शोगौ नयं । नो मारी नच विग्रहः प्रचृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः । यस्ते श्री जिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥

## ॥ ॥ अथ सर्वईया लि० ॥ ॥

॥ ॥ बावन बीर कीयै अपणें वस, चौसठ जोगण पाय लगाई । माइण शाइण व्यन्तर खेचर नूतर प्रेत पिशाच पुलाई । बीज तमक कम क नटक अटक रहैजु खटक न काई । कहै धर्मसीह लंघै कुणलीह दीयै जिनदत्त की एक डहाई ॥ १ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ राजै थुंन ठौर ठौर, ऐसो देवनही और, दादौ दादौ नाम सैं, ज गत्र जस्स गायो है । आपणेंही जाव आय, पूजै लक्खलोक पाय, प्यासनकुं रांन मांजि, पांणी आंन पायो है । बाट घाट शत्रु दाट, हाट पुरपाटणमें, देह गेह नेहसूं, कुशल करतायो है । धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे साचो श्री कुशल गुरु नामयुं कहायो है ॥ १ ॥ ॥

॥ ॥ कुशल अंग उबरंग कुशलविणजै व्यापारे । कुशल देव देहरै ।

कुशल धन राजकुवारे । पुन्य पसायें कुशल कुशल श्रीसंव जणी जे । बाहण  
आवै कुशल कुशल घर घर गाई जै । श्री जिनचंद्र सूरि पुहपट्टधर । नाम मंत्र  
आरति ठलै । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां । नवनिधान लक्ष्मी मिलै ॥१॥

॥ ५ ॥ कुशल बमो संसार । कुशल सज्जन घर चाहै । कुशलै मङ्गल  
माल । ललितर-कुशलै आवै । कुशलै धन वरसंत । कुशल धन धन रुचनो ।  
कुशलै घोमा थट । कुशल पहिरीय सुबनो । ए रसो नाम सदगुरु तणो ।  
कुशलै जगरलीया मणो । चंदारक श्री जिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी ।  
घरघर होत बधावणो ॥ १ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

## ॥ ५ ॥ जैन पाठशाला ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग विज्ञापन ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ शुचि चिंतक, धर्म रागी, गुणग्राही, (सर्व जैनी) सज्जन पुरषोंके,  
पढ़नें, पढ़ानेके निमित्त ( वज्रत पुस्तकोंसें ) वज्रत रत्नवस्तुका संग्रह करके  
(प्रथम) कलकत्ता मध्ये, हमारी जैनविद्याशाला खातै, पुस्तक १००० ठाके  
प्रशिक्ष करनेमें आयाथा ( तिके ) संपूर्ण पुस्तक खपजाएँसें (और) विद्या  
शालामें देश देशावरके, संघकी मांगणी वज्रत आएँसें (दूसरी आवृत्ती) ठ  
पानेका इरादा किया (परंतु) संप्रतिकाले, मुंबईका ठापा, संघकों अत्यंत प्रिय  
समयके (तथा) जिनमंदरोंकी अंगीरचना । संघकी नत्ती । संघकी उत्तती।  
संघको समूह, अन्तो देखकें (सं । १९४४ मि। माह सुद ५ दिन) मुंबईमें पा  
इयै रूप पाठशाला स्थापन करी ( तदुपरांत ) सं । १९४५ मि। दूजा चैत्र  
सुद ५ दिने । ग्यानका मोटा उठव करके । पाठशालाके बंधानका, (जाहर  
खबर पत्र) संघमें दिया गया(और)देरासरजी स्थापन किया (तिस पीठे) वि  
गर, फी लिये । संघकों धर्म कृत्य पढ़ानेका (तथा) नवीन जैन लिपीका, सुं  
दर ठापा दूरफ बनवाके (पुस्तक) रत्नसागर ठपानेका काम प्रचलित किया  
(परंतु) मुंबई मध्ये, नवीन पणालें (प्रथम) संपूर्ण कार्यकी जमावट करनेमें । सं  
घकी मदत प्रातीतो कमजुई (और) खरचा वज्रत लगा (तिसपरजी) आगे  
की पुस्तकसें अत्रकै वज्रत जाणवा जोग ग्रंथ बचानें में आया हें ( इससे  
ती) यह पुस्तक ठपनेमें दोबहार आसरे लगगया (और) सरचानी आगेकी

पुस्तकसें दूणा लगगया (तथापि) पुस्तकका निगरावल, सामान्य गत्तेदारका रुपिया पांच ५ ) आगै के मुजब रखनेमें आयाहै (अब) संपूर्ण ठपके तैयार जुवा है ॥ ❀ ॥ (इस पुस्तक में) खरतरा, तपादि, (संपूर्ण) जैन धर्मियोंके बारै माशमें करने लायक । प्रज्ञावीक, प्रमाणीक, पूर्वाचार्योके रचित (संपूर्ण) धर्म कृत्य, संग्रह करने में आया है । एक पुस्तकसें, पचीस पुस्तकका काम ले सक्ते है (और) बारमाशी धर्मकृत्य, संपूर्ण करसक्ते है ॥ ❀ ॥ ( इसमें )

॥ ❀ ॥ १ ॥ नवकारादि, प्रतिक्रमणपाठ, साधु, श्रावक, अतीचार । पद्मी सुत्र, अक्तामर, रुषिमंडल, कल्याणमंदर, अजीसंतादि नवस्मरण, बन्नी शांत, बन्नी नवकार, जिनपंजर(आदि)संस्कृत, प्राकृतमई. (अनेक) प्रज्ञावीक आचार्यकृत, स्तोत्र संग्रह ॥ ❀ ॥ पृष्ठ (ए) से १२४ तक ॥ ❀ ॥

- ॥ २ ॥ पनरै तिथकी नवी नवी थुई संग्रह । १२४ (सें) १३२ तक  
 ॥ ३ ॥ पनरै तिथका मोटा, ठोटा स्तवन संग्रह । १३३ (सें) १८७ तक  
 ॥ ४ ॥ ढंडण, शीता, चेलणा, दि सि० संग्रह । १८७ (सें) २१४  
 ॥ ५ ॥ खरतर गच्छ सामायक, पोशादि विधि संग्रह । २१५ (सें) २४१  
 ॥ ६ ॥ स्नात्र, सत्तर जेदी, नवपदादि पूजा संग्रह । २४१ (सें) ३४१  
 ॥ ७ ॥ नवपद चै०, स्त०, थुई, जैती (आदि) ओली० । ३४१ (सें) ३७५  
 ॥ ८ ॥ द्वादश माशस्य सकल पर्वाधिकार संग्रह । ३७६ (सें) ४४०  
 ॥ ९ ॥ पंचकल्याणक (आदि) अनेक तपस्याधिकार ४४० (सें) ४८४  
 ॥ १० ॥ कल्याण, काफी, (आदि) राग रागणी स्तवन । ४८६ (सें) ५११  
 ॥ ११ ॥ जिनदाशादि कृत, मनोरंजक लावण्यां संग्रह । ५११ (सें) ५३६  
 ॥ १२ ॥ श्रीनेमनवरसो, दानशील चौढालियादि सं० । ५३६ (सें) ५५७  
 ॥ १३ ॥ (तपगच्छ) पांच प्रतिक्रमण, देववंदन, जरहेसर, शांतिकरा, सकलार्जुन, (पांच तिथ) थुई, । स्त० । सि० । ५५९ (सें) ५८९  
 ॥ १४ ॥ नवकार, आत्मरक्षा, पार्श्व, बीरादि, छंद । ५८९ (सें) ५९८  
 ॥ १५ ॥ ज्ञान विमलजी, आनंद घनजी (आदि) कृत, चैत्यवंदन स्तवन, बार माशा, श्लोका, संग्रह । .... ५९९ (सें) ६३५  
 ॥ १६ ॥ श्रीदादाजी पूजा, आरती, स्तवन, संग्रह । .... ६३७ (सें) ६४६  
 ॥ १७ ॥ देशना, बंधावा, गुंढली, समाचारी, संग्रह । ६४६ (सें) ६६४

(इत्यादिक) वज्रत रत्नवस्तुका संग्रह किया है ( प्रगटपणें ) यह पुस्तक धर्म रत्नोंका समुद्र तुल्य है (इसीसे) इसका गुण निष्पन्न ॥ ❀ ॥ रत्नसागर, नाम रक्खा है ॥ ❀ ॥ (और) जो इस पुस्तकमें रत्नवस्तु है (सो) आत्मा के मोहन गुण । ज्ञान, दर्शन, चारित्र्यादिकों, प्रगट करनेकी एक श्रेणीवत् है ( जिससे ) इस पुस्तकका (दूसरा) मोहन गुणमाला, नाम रक्खा है ॥ (और) सर्व स्थानक, जैन विद्या शाला, पाठशालायोंमें, जैन पाठक गण कों, (प्रथम) अपना नित्य नेम, अवश्य शीखना, शिखाना चाहिये (इसी से) सर्व जैन पाठकगणके उपगारार्थ, जाण, विधि संयुक्त । वारमाशी संपूर्ण, अवश्य धर्मकृत्यका संग्रह किया है (इससे) प्रथम जाग नाम रक्खा है ॥ ❀ ॥ (और) इसका दूसरा जाग जी अब वज्रतसा ठपके तैयार होने आया है (जिसमें) आचार दिनकरादि, आचार ग्रंथोंसे । जैन गृहस्थों का, जन्मसे लेके, मरण पर्यंत, १६ संस्कार, उपदेश, आचार, विधि स्वरूप ज्ञापक, प्रथम प्रकाश (तथा) संक्षिप्त जैन इतिहास, । वाचन ५९ बोल ग र्जित २४ महाराजका दृष्टान्तरूप इतिहास । श्रीमहावीर स्वामीसे आजतक गठ मतादिकका संक्षिप्त स्वरूप ( इस उपरांत ) सर्वोपयोगी वज्रत जैन आचार रत्नोंका संग्रह करनेमें आवेगा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अब) इसका तीसरा, चौथा, जाग (जिसमें) सर्वोपयोगी (आत्म प्रबोधादि ग्रंथोंसे) सम्यक्, आवक । साधु । परमात्मादिकका । यथावस्थित स्वरूप, ( तथा ) चित्तकों आनंदकारी अष्टी अष्टी धर्मकथा (तथा) सर्वके धार न करने योग्य, बोल विचारादिक, वज्रत रत्नवस्तु संग्रह करके प्रशिष्य कर नेका उमेद है ( परंतु ) जब ग्यानवृद्धीकारक उत्तम जैन सज्जनोंकी मदद मिलेगा ( तब ) प्रशिष्य करनेमें आवेगा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (और) वज्रत विनयनम्रतासे ( सर्व ) जैनसज्जनोंसे प्रार्थना करनेमें आवे है ( कि ) इस पुस्तककों वज्रत विवेकसे यत्न करके रखना जिसमें ग्यानकी आशातना न होय ( क्युंकि ) क्या लिखाऊवा, क्या ठपा ऊवा, आत्म धर्मोपगारी दोनों पुस्तक समान है । अग्यानी जीव, अनेक तरैसे जिनप्रतिमा ( तथा ) जिन धर्मपुस्तकका, अनादर, आशातना करै ( तथापि ) विवेकी ग्यानी पुरुषोंकों । जिन प्रतिमा ( तथा ) धर्म पुस्तककी कच्ची आशात

ना न करनी चाहिये (जिके) जिनप्रतिमाकों पाखाणादिककी जाणके (और) पुस्तककों लिखा ऊवा, ठपा ऊवा, जाणके। अनादर करैगा। निंदन करैगा (सो) अपना एकांत हठवादसैं। सदाकाल, एकेंद्रियादिक अज्ञान दिशामें परिभ्रमण करता रहैगा ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (और) में मेरीजाणमें दो महिना ज्यादा लगएँका (तथा) खरच ज्यादा लगनेका विचार ठेम्के (और) वज्रत परिश्रमसैं सुध करके ठपाया है (तथापि) ठक्कस्थ, अल्प बुद्धियाऊं (इससैं) निजर, दिलका, चरोसा न देसक्ताऊं (इसकों) पढते, पढाते, जो कोई स्थानक, प्रमादादिकसैं (वा) ठापेके दूषणसैं। ईकार, ऊकार, अक्षरादिककी जूल मालुम होय (तो) अपना विघज्जन गुरूसैं जाणके। शुध करके पढणा (और) कोई मेरा कसूर होय सो माफ करना। श्रेणकराजाकेतुल्य गुणग्राही पणा धारन करके। इस पुस्तकका गुणग्रहण करना (इस पुस्तकसैं) वज्रत काल तक, वज्रतजीवोंके सधर्म प्राप्ती होगा (इससैं) यह पुस्तक धर्मरूपी कल्पवृक्ष का बीज है ॥ (इसकों) सेवन करनेवालोंकै मनोवांछित फल प्राप्ती होगा ॥ (और) इस पुस्तककों, मुख्य अपनैं (तथा) परके, विद्यावृद्धी उपगारके अर्थ (जो) गुणग्राही जैनसज्जन एकेक पुस्तक लेवैगा (तथा) कोई ज्ञान खातै। पांच पचीस पुस्तक, इकठी लेके। मंदर, उपाशरामें (तथा) ज्ञानर्ज मारोंमें (तथा) साधु, श्रावक, गरीब विद्यार्थियोंको। धर्मोपगारार्थ देवेगा (और) तन, मन, धनसैं, ज्ञानवृद्धीके अर्थ पाठशालाकों मदत देवेगा। जिन उत्तम पुरषोंका वज्रत धर्म उपगार मानके (पाठशालाकी) पुस्तकमें नाम ठपाके। प्रशिक्ष करनेमें आवेगा ॥ॐ॥ (और) दिन प्रमाण साठ घन्टी होता है (जिसमें) दो चार घन्टी तो इस पुस्तकको जरूर वाचनो पढनो रखना ॥ॐ॥ (और) सिधांत विरुद्ध, कषाय, प्रमादादिक के वस। कोई उठो, अधको, हरफ, कानो, मात, लिखनेमें आये होय (तो) सर्व संघके सन्मुख, में, मिठा मि डक्कड़ देता ऊं ॥ इत्यलंविस्तरेण ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ जैन सेवक पंडित मोहनलाल जयचंद यती ॥ॐ॥

॥ॐ॥ जैन पाठशाला, रत्नसागर तंत्री ॥ॐ॥

## ॥ रत्नसागर अंत मंगलाचरण ॥

॥५॥ तीन तत्वकों नमण कर । सेऊं सद्गुरु पाय । देवी जगवती सा  
निधै । वचन अमृत रस थाय ॥ १ ॥ चौरासी लक्ष जोनिमें । जे रक्षा  
जीव अनन्त । मोह मिथ्यात वसे पड्या । पायो दुःख नही अन्त ॥ २ ॥  
परम देव परमात्मा । चिदानन्द गुणचंग । ज्य जीवके हित जणी । जेद  
कह्या सज्ज अंग ॥ ३ ॥ गणधर गौतम आदि सज्ज । रचिया अंग अनूप  
त्रिकरण जुं प्रणमुं सदा । ज्ञान आत्मं गुण जूप ॥ ४ ॥ आचारज ज्व  
जाय मुनि । जगवन वचन उपेत । जाप्य टीका निर्युक्ति कर । प्रगट कीया  
संकेत ॥ ५ ॥ जगवती सुत्र मांहे कह्या । आगमना पंच अंग । सरधै जे  
जवि प्राणिया । पामें नित उग्रंग ॥ ६ ॥ जैवता वरतो सदा । सज्ज जग  
पंमत्र ज्ञान । पिण उपगारी ज्यकों । ए श्रुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ डटकर्म  
संयोगसैं । चित बैठे नही ज्ञान । पिण जाणुं सुरतरु समो । ए हीज धर्म  
प्रधान ॥ ८ ॥ प्रवल जाग्य संयोगसैं । पारश दरसन पाय । पारश फर  
स्यां लोह सज्ज । गुणकंचन समथाय ॥ ९ ॥ मनमोहन पारश मिल्यो । मो  
हन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनंद ॥ १० ॥  
पारश प्रजुकेनामसैं । सज्ज संकट मिटजाय । इतउपइव जयटलै । मोहनगुण  
प्रगटाय ॥ ११ ॥ जिन दर्शन मुज मनवस्यो । जे प्रगटै चित आय । कर्मशशु  
दल जीवकै । शिवरमणी वरुं जाय ॥ १२ ॥ शिवपुर जोवा कारणें । समकित  
दढकै हेत । वाल अज्ज मोहन जणी । रत्नसागर गुण देत ॥ १३ ॥

॥५॥ यह पुस्तक । इंग्रेजी १८६७ सालके, २५ अंनके कायदेसैं । रजटर  
किया गया । इस पुस्तकपर मालकनैं अपना दक्ष रक्खा है । मालकके  
दोकम बिगर कोई ठापैगा (वसकों) सरकारके अंन माफक दंन होगा ॥५॥

## ॥ ॐ ॥ रत्नसागर, मोहन गुणमाला ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शासनके नायक, श्रीमहावीर स्वामी ( तत्पदे ) १ । श्रीसुधर्मा स्वामी ( तत्पदे ) ३ । श्रीजंबू स्वामी, ( तत्पदे ) । ४ । श्रीप्रज्ञव स्वामी, । ५ । श्री सज्यंनव स्वामी, । ६ । श्रीयशोन्नद्र स्वामी । ७ । श्रीसंभूतविजय स्वामी । ८ । श्रीनद्रवाहू स्वामी, । ९ । श्रीथूलन्नद्रस्वामी ॥ ( तत्पदे ) १० मा । श्री आर्यमहागिरी ( तत्पदे ) ११ मा । लघुभ्राता, श्रीआर्य सुहस्ति सूरि ऊए ( सो ) श्रीवीर जगवानसें, १३५ वरशे, संप्रति राजा ( तथा ) ऐवंती सु कमालनें प्रतिबोधके, धर्मका वज्रत उद्योत किया ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( तत्पदे ) १२ श्रीसुस्थित सूरि, १ क्रोम सूरि मंत्रका जापकिया, इससें कोटिक गह्व प्रशिध ऊवा ॥ इसी तरै पदानुक्रमे १६ में पाटे । श्री वज्र स्वामी दश पूर्व धर, वमे प्रज्ञावीक, विद्यागामी ऊए ( इहांसें ) वज्र शाखा प्रवर्तन नई ॥ ( तथा १८ में पाटे ) श्री जिनचंद्र सूरि ऊए ॥ ( इहांसें ) चंद्र कुल प्रशिध ऊवा । ( इसीतरै पद परं परायें ) जगवानसें ( ३८ में पाटे ) श्रीउद्योतन सूरजी ऊए । ( सो ) एक निज शिष्य ( अन्य ८३ ) साधु शिष्योंकों आचार्य पद देके । चौराशी गह्व प्रशिध किये ॥ ॐ ॥ यह ८४ गह्वके आचार्य बडे प्रमाणीक, प्रज्ञावीक, धर्मोद्योतक ऊए ( श्रीउद्योतनसूरि ) पदे । आ बूजी तीर्थ प्रगट कारक, विमल मंत्री प्रतिबोधक, वमे प्रज्ञावीक ( ३९ में पाटे ) श्री वर्धमान सूरि ऊए ॥ ॐ ॥ ( ४० में पाटे ) श्रीजिनेश्वर सूरि ऊए ( सो ) अणहल पुर पदणमें । दुर्लभ राजाकी सन्नामें । चैत्यवासियों कों, विवाद करके जीते ( इस सेती ) सं ॥ १०८ ॥ ( खरतर विरुद ) पाटणके राजानेंदिया । अतिशयपणें सिद्धांत मार्गसें सच्चाऊवा ( इससें ) खरतरगह्व प्रशिध ऊवा ( इहांसे ) कोटिक गह्व । चंद्रकुल । वज्र शाखा ( और ) खरतर विरुदका । नवाशिष्योंकों भेद कहनें लगा ॥ ॐ ॥ ( ४१ में पाटे ) दिल्लीके बादशाहकों व रदेनें वाले । जीवहिंसा ठोमानें वाले । श्रीमाल, महतियाण गोत्र, प्रति बोधक । श्रीजिन चंद्र सूरि ऊए ॥ ॐ ॥ ( तथा ) इनोंके लघु भ्राता ( ४२ में पाटे ) स्थंनणा तीर्थ, नवांगी वृत्ति, प्रगट कर्ता, श्री अन्नयदेव सूरि ऊए, ( तत्प दे ) दशहजार, वागमी श्रावक प्रतिबोधक ( ४३ में पाटे ) श्री जिन वल्लभ सूरि ऊए ॥ ॐ ॥ ४३ ( तत्पदे ४४ में ) महाप्रज्ञावीक, युगप्रधान,

चीतोमके मंदर स्थंजसे । विद्यान्नाय पुस्तक प्रगट कारक, । ५२ वीर,  
 ६४ योगणी, आदि देवी देव्यांकों प्रतिबोधक । (सवालाख रजपूत) बाह्य  
 णादिकों प्रतिबोधके । सावण सुक्खा, गोलन्ना, ठजेम (आदि) अनेक गोत्र  
 आवक कुल स्थापक । सवाक्रोम झीकारजीका जाप करनेवाले, श्रीजिन  
 दत्तसूरजी ऊए (सो) आजतक मोटा दादाजीके नामसे । देशावरोमें प्रशिष्य  
 हैं ॥ तत्पदे ४५मा॥ मणिवारक, दिल्लीके पातसाहकों, अनेक चमत्कार देखा  
 के । धर्म उद्योत करनेवाले । श्रीजिनचंद्र सूरजी ऊए (जिनोका) दिल्लीके नरव  
 जारमें दाग ऊवा (और) बड़ा चमत्कार देखके संपूर्ण वादशाहादिक लोक  
 पूजन मानने लगे । (यह दूसरा दादाजीऊवा) इहांसे अनुक्रममें (५० में पाटे)  
 महा प्रजावीक, श्रीजिन कुशल सूरजी ऊए (सो) आचार्य पद पायके, व  
 ऊत जिन धर्मका उद्योत करनेवाले ऊए (अंतमें) सं । १३८ए, फागुणवद  
 अमावश दिन, देव लोक गए (तडपरांत) फागुण सुद १५ सोमवारनें (प्र  
 थम) दरशण संघकों दिया (तिस पीठै) अनेक गांव, नगरोंमें, नक्ति धर संघका  
 उपगार करने लगे (इससेती) संघ अपना, उपगारी आचार्योंको, इष्टदेव समऊ  
 के। सर्व देश गांव नगरोंमें चरण, स्तंभ, मंदर, स्थापन करके (दादाजीके नामसे)  
 अनेक प्रकारसे। पूजन, वंदन, करने लगे । सर्व स्थानक दादाजीका नाम प्रशि  
 ष्य ऊवा (आजतक) सर्व स्थानक, प्रत्यक्ष परचा दैनेवाले, संघकों मालूम  
 हो रहे हैं (ऐसे) महा उपगारी (यह) तीसरा दादाजी ऊए ॥५॥ ऐसे महा प्र  
 जावीक उत्तम आचार्योंके पाठानुपाटे (६४ में) महोपगारक, तेजश्वी, श्रीजिन  
 चंद्र सूरजी सूरेश्वरासं । १७११ आचार्य पदवारक ऊए ॥ इनोके दो शिष्य ऊए  
 ॥ १ प्रथम आचार्य पदधारक ॥ २ उपाध्याय पदधारक

॥५॥ पट्ट श्रेणी महाराजनामः ॥५॥ प्रवर पुज्य श्रेणी नामः ॥५॥

॥६६॥ श्रीजिन सुक्खसूरिः ॥६६॥ पुज्य श्रीनन्दयतिलकजी गणिः

॥६७॥ श्रीजिन नक्तिसूरिः ॥६७॥ पुज्य श्रीअमरशीजी गणिः

॥६८॥ श्रीजिन लानसूरिः ॥६८॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीचंदजी गणिः

॥६९॥ श्रीजिन चंद्रसूरिः ॥६९॥ पुज्य श्रीविजमालजी गणिः

॥७०॥ श्रीजिन हर्षसूरिः ॥७०॥ पुज्य श्रीसुगुणप्रमोदजी गणिः

॥७१॥ श्रीजिन सौभाग्यसूरिः ॥७१॥ पुज्य श्रीविद्याविशालजी गणिः



॥ॐ॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥ॐ॥

॥७२॥ श्रीजिन हंशसूरिःपदे

॥७२॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीप्रधानजी गणिः

॥७३॥ श्रीजिनचंद्रसूरजी

वर्तमान पुज्यादेशेन

॥ॐ॥ वर्तमान विजय राज्ये ॥ॐ॥

॥ॐ॥ तत्शिष्य मुख्य ॥ॐ॥

॥ॐ॥ जैन सेवक, पंडित मोहनलाल मुनिः(तथा) अपर नाम । पंक्ति मुक्तिकमलमुनिना (अपना शिष्य वर्ग) पं।खेमचंद । पं।जयचंद । पं।रावतमल । कल्याणचंदादि । सर्व जैन पाठकगण हितार्थ । मुंबई, कलकत्ता । जैन पाठशाला स्थापन ( तथा ) रत्नसागर पुस्तक प्रवर्तन किया ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ रत्नसागर, प्रथम भागकी दूसरी आवृत्ती प्रशिष्ट करते । (जो) धर्मरागी, जैन सज्जनोंने । प्रथम पुस्तकों लेके मदत दीवीहै ( जिनोंका ) ग्यानवृद्धी उपकारार्थ मान्यसें नाम प्रकाश करते हैं ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥पुस्तक॥ॐ॥

॥ॐ॥मान्यवर नाम॥ॐ॥

॥ॐ॥मुकाम॥ॐ॥

५१ तत्व दीपक मोहन मंमली

कलकत्ता

५१ डा। श्रीअमरचंदजी मूल चंदजी

नाशक

५५ शे। श्रीमांगीलालजी पूनमचंदजी

कलकत्ता

५१ बाबुराय श्रीप्रतापसिंहजी धनपतिसिंहजी बहाडुर

मुर्शिदाबाद

५१ बा। सो। श्रीजुहारमलजी ठोगमलजी

उदयपुर

१० पं। प्र। श्रीमोतीचंदजी (शिष्य) पनालालजी मुनिः

वीकानेर

१० मु। बाबुराय श्रीवदरीदाशजी बहाडुर

कलकत्ता

१० सा। सो। श्रीजुहारमलजी समेरमलजी (हस्ते) ठगनमलजी

वीकानेर

१० डा। श्रीकेशरीचंदजी मगनमलजी (हस्ते) सिवलालजी

फलोधी

५ पं। श्रीरामरतनजी मुनिः

वीकानेर

५बो। श्रीमूलचंदजी डलीचंदजी(हस्ते)को। श्री जन्मालालजी

इंदोर

५ श्रीयुक्त कनइया लालजी मागा

जयपुर

॥ श्रीः ॥

## ॥ रत्नसागर ॥

( वा )

### ॥ मोहनगुणमाला ॥

॥ प्रथम भाग ॥

॥ मंगलाचरण ॥

॥ उँकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।

कामदं मोक्षदं चैव । उँकाराय नमो नमः ॥ १ ॥

॥ उँकार उदार अगम् अवार संसारमें सार पदारथ नामी,  
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपनयो सबही सिरनूप सुधामी,  
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-  
इष्ट वसे परमिष्ट सदा ध्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥

नमो निसदीस नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता,  
जाकी जगत्तमें कीरति जागत प्रागतिहे सब ईति असाता  
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी  
धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे ध्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वान्नीष्टार्थ दायिने ।

सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ २ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा शक

ग्यान नगीनो, दूरप्रग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास  
नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नाहि  
खजीनो, ऐसो पसाय कियो गुरुरायतिणें धर्मसी पदपंकज  
लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

॥ सरस्वती महाभागे । वरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी विशा-  
लाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । वीणा-  
पुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकीसेवा रागे आए  
लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी वीणा वावे रागे सारे  
रागे गावे हावे नावै सोनापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी  
कैसी चाली चाले पूजीबंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले  
सुधी बुधी दाई है, सोहेवानी नीकीबानी जाकुंग्यानी प्राणी  
जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

( स्वरवर्णः )

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ  
ए ऐ ओ औ अं अः

( व्यञ्जनवर्णः )

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड  
ढ रु ह ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ल व । श ष स ह । कः ङः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

कृ गृ तृ दृ ष्टृ मृ रृ शृ सू हृ

क्य ख्य ग्य घ्य च्य ठ्य ज्य व्य ष्य ऐय त्य थ

ध्य न्य प्य ज्य म्य र्य ल्य र्य प्य स्य ह्य क्ष्य

क्र ग्र ब्र ज्र त्र द्र प्र ब्र ख्र ब्र श्र स्र ज्ञ

कृ ग्व एव त्व द्व ध्व न्व स्त्व श्व ष्व स्वं कृ

मृ घृ तृ प्र मृ श्र णृ स्तृ क्षृ क्म ग्म घ्म च्म

एम द्र न्म इम प्म स्म ह्य क्ष्म ॥ कं खं गं घं

अङ्क उरु उच उछ एट एठ एम एढ एण न्त न्यन्द

न्ध न्र म्म ण्क स्क स्ख श्र श्छ ष्ट ष्ठ स्त स्य स्प

प्प स्फ क्क क्त्व ग्ग ख्ख छ्छ ज्ञ ज्ञ हृ तृ

त्य हृ हृ प्प ल्क ल्प ल्म ल्छ ज्ञ वृ ग्द न्ध व्द

व्य ल्म क्त त्त ल्क ल्प त्त ॥

न्य न्य न्य न्य क्ष्य न्य म्व्य ल्य्य छ्य द्य

क्ष्य स्त्य स्त्य न्य्य क्य्य ज्य्य त्य्य ।

क्क छ्छ न्त्र न्द्र ष्टृ स्त्र त्र ज्व ष्टृ त्व स्त्व

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ( १० १०० १००० १०००० )

॥ स्वस्तिश्री कृष्णब्रह्मस्था, ऐन्द्राका स्युश्च स्वस्करा,

पृथ्वीभृवल्लु श्रेष्ठात्म, त्रम्पास्ते हृद्यज्ञप्तिदा ॥ १ ॥

( शिक्षा वाक्य )

॥ गुरु शुश्रूषयाविद्या । पुष्कलेन घनेन वा । अथवा विद्याया विद्या । चतुर्थ

नैव कारणं ॥ १ ॥ विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे  
 पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे  
 दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्खे सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
 नक्षत्रभूषणं चन्द्रो । नारीणां भूषणं पतिः । पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या  
 सर्वस्यभूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । वालो येन न पाठितः । न  
 शोचते सन्ना मध्ये । हंस मध्ये वको यथा ॥ ५ ॥ लालयेत्पञ्च वर्षाणि ।  
 दशवर्षाणि ताम्रयेत् । प्राप्तेतु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रं वदाचरेत् ॥ ६ ॥  
 वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्ख शतान्यपि । एकचन्द्र स्तमो हन्ति । न च  
 तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा ।  
 पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वं शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ न च विद्या समो बंधु  
 र्न च व्याधि समो रिपुः । न चापत्य समः स्नेहो । न च दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥  
 किं तथा क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन ।  
 यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न  
 शान्तये । पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारा-  
 श्व । परद्रव्याणि लोष्ट्रवत् । आत्मवत् सर्वभूतानि । विह्वलं धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिभ्यै नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं  
 चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं ।  
 परमेश्वरस्य पूजा विधेया ( देवः पूज्यः ) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं  
 नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्तते । धर्मशास्त्र मत्यंतं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं  
 सवीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः  
 प्रत्यय कारकं भवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरु-  
 समीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति ।  
 तस्मादादौर्बल्यं ज्ञानं सम्पादनीयं ॥ सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य  
 प्रियो भवति ॥ विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन  
 कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभाय श्रमो  
 यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामा-  
 करः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां

चिरमेव दुःखं । तस्मादात्मस्य परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति ।  
सोऽस्माकं परम गुरुः । स हि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता ज-  
न्मदाता च ह्येव समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् ।  
क्रोधवशेन परुषं ज्ञापते । ततः प्रहरेत् । क्रोधो हि महान् शत्रुः ॥ सर्वं पर-  
वशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ पराहिं-  
सायां परापकारे च बुद्धिर्नकार्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्ति-  
परेषां मुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्मः ॥ अहंकारं परिहरेत् ।  
नाहंकारात् परोरिषुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विजेत् ।  
सन्तोषमूलं हि सुखम् ॥

॥ अथ सन्धिसूत्रम् ॥

सिद्धो वर्णः । समाम्नायः । तत्र चतुर्दशादौ स्वराः दशसमाना । तेषां  
धी क्षात्र्यो । अन्यस्य सवर्णः । पूर्वो ह्रस्वः । परो दीर्घः । स्वरो वर्णः  
वर्जो नामी । एकारादीनि संध्यक्षराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गा ।  
पञ्च पञ्च । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शपसाश्च घोषाः । घोषवन्तोऽन्ये । अ-  
नुनासिकाः ङञ्णनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः । उष्माणः शपसहाः । अः  
इति धिसर्जनीयः । कः इति जिह्वा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इ-  
त्यनुस्वारः । पूर्वपरयो र्योपलवधौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् ।  
अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहणं सिद्धिः ॥ इति संधी-  
सूत्रतः प्रथमश्रवणः समाप्तः ॥

॥ द्वितीयपदेसः ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता । आ-  
चार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसि-  
द्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राघवाः । पञ्चैते परमेष्ठिनः  
प्रति दिनं कुर्वन्तु वो मंगलं ॥ १ ॥

॥ अर्थः ॥

( एते पञ्चपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः शुभाकं मंगलं कुर्वन्तु ) । यद्

पंचपरमेष्टि निरन्तर श्रीसंघप्रते मंगलकरो । ( कैसे है पंचपरमेष्टि ) ( अ  
 र्जन्तो जगवंत इन्द्रमहिता ) । प्रथम परमेष्टि । श्रीअरिहंत देवः । अष्ट-  
 कर्म शत्रुकुंहरणं ( सो ) अरिहंत कहियै । अरिहंत कैसे है । ( जगवंत-  
 ज्ञानवंत है । केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है । ( तथा ) जगशब्द-  
 के १४ अर्थ हैं ॥ जगोऽर्क ( सूर्य ) १ । ज्ञान २ । महात्म ३ । यश  
 ४ । वैराग्य ५ । मुक्ति ६ । रूप ७ । वीर्य ८ । प्रयत्न ९ । इच्छा १० ।  
 श्रीलक्ष्मी ११ । धर्म १२ । ऐश्वर्य १३ । योनि १४ । यह चवदै अर्थोंमेंसे।  
 सूर्य १ योनि २ । दो अर्थ वर्जकर । १२ अर्थ जग शब्दका मिलै ( जि-  
 ससे ) जगवंत कहियै ( पुनः किंविशिष्ट ) फेर अरिहंत कैसे है ( इन्द्र-  
 महिता ) चौसठ इन्द्रोंके पूजनीक । द्वादशगुणें करी विराजमान हैं ( सो  
 द्वादश गुण कैसे ) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रोगादि रहित । प्र-  
 स्वेद मलादि रहित । सुगंध शरीर होय ॥ १ ॥ सासोस्वासकी कमलजैसी  
 सुगन्ध होय ॥ २ ॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय ॥ ३ ॥ आ-  
 हारनीहारकी विधि अदृश्यहोय । प्राणी देख सक्ते नहिं ॥ ४ ॥ ए चार  
 अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय । ( शेषआठगुण ) केवल ज्ञान उत्पन्न  
 होणेंसे प्रगट होय । ( अशोकवृक्षः ) जगवन्तके शरीरसे । वारै गुणो नं-  
 चो अशोकवृक्ष होय । जिसकी गायवैठणेंसे रोगसोगादिक दूर होय ॥ १ ॥  
 ( सुरपुष्पवृष्टिः ) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै । आका-  
 ससें पडता सीधापडै । विंठनोंचै रहै । पंखड़ी ऊपर रहै ॥ २ ॥ ( दिव्य-  
 ध्वनि ) योजनपर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यच । सब जीव । अपनी २  
 ज्ञाषामें । यथावस्थित समजै ( जाणें ) जगवंत मेरी ज्ञाषामें उपदेस देते  
 हैं ॥ ( कहावी है ) एगाई गिराएगे । संदेह देहिणें समंठित्ता । तिहुअण  
 मणुंसा संता । अरिहंता हुंतिमे सरणं ॥ १ ॥ ३ ॥ ( श्यामर ४ ) जग-  
 वंतके दोनुं पासे इन्द्रचामर ढालता रहै ॥ ४ ॥ ( आसनच ५ ) जगव-  
 न्तके बैठणेंको । इन्द्रादिक रचित । फिटक रत्नमई सिंहासण रहे ॥ ५ ॥  
 ( जामंमल ६ ) जगवन्तके पिठामी जामंमल रहै ( जिसमें ) जगवंतके  
 चार मुख । चारुंदिश तरफ मालुम होय । जगवंत तो पूर्वदिशा मुख  
 कर बैठै । और तीन दिशमे । जगवन्तके प्रतिविंब इन्द्रादिक स्थापन

करै । परंतु जगवन्तके अतिशयसैं । च्याखंदिशे । वारैई परपदाकों । अपणेसन्मुख उपदेश देता मालुम होय ॥ ६ ॥ (डुंडुजी ७) आकाशमें देव डुंडुजी वाजित वाजै ॥ ७ ॥ (रातपतं) जगवन्तके विहार कालै । वा स्थिति कालै । हमेसां मस्तकपर । तीन ठत्र रहै ॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये होय) ऐसे अरिहंत । देवाधिदेव । चौतीस अतिशय विराजमान । पैंतीस वचनगुण शोभित । एक हज्जार आठ लक्षणांलंकृत । अठारै दूषण रहत । शांत दांत । रुपासागर । त्रैलोक्यनाथ । जगत्रयके गुरु (वर्तमानकालै) महाविदेह खेत्रे । केवलज्ञान । केवलदर्शनसैं । लोकालोकका जाव देखते थके । पृथ्वीमंजलपर जव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके । विचरते है (ऐसे) अनंतगुणें सुसोभित । अरिहंत देव श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरै पदै) सिद्ध महाराजकों नमस्कार हुवो । (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टकों । शुक्लध्यान रूप अग्निसैं जस्मकर । सिद्धगतिकों प्राप्तये (ऐसे) अनंत ग्यान । अनंतदर्शन । अनंत चारित । अनंत तप । अनंत वीर्यसंयुक्त । जन्म जरा मरण रोग सोक जयादिकसे विप्रमुक्त । चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत जाव । एक समयमें जाणते थके । देखते थके पिण । आत्मगुणों में मग्न रहे है (ऐसे) सिद्ध महाराज । श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति कराः) (तीसरा परमेष्टि) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो । (सो कैसे है) (ठतीस गुण करी विराजमान । मुक्तिमार्गके साधक । कर्म शत्रुके विराधक । अवुध जीव प्रतिबोधक । कृपागुण जंमार । समदृष्टी । तरण तारण । धर्मके धोरी । जिन सासनकी उन्नतिके करण हार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका) चौथा परमेष्टि । श्रीउपाध्याय महाराजकों नमस्कार हुवो (सो कैसे है) बादशांजी सुत्रार्थके जाणकार । नय निक्षेपा गमां पर्याय युक्त । सिद्धांतको पढाएँवाले । ज्ञानचक्षु देणैवाले । (ऐसे) २५ गुण करी विराजमान । श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमे सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ (मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः) (पंचम परमेष्टि)



सब साधु मुनिराज (सो कैसे है) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन रत्नके आराधक है । पांचे सुमते सुमता । तीने गुप्तेगुप्ता । ठकायके पीहर कुक्खी संबल । चारित्रपात्र । मोक्षमार्गके साधक । (ऐसे) सब साधु मुनिराज । सत्ताईस गुणें करी सोभित । श्रीसंवमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥ इति हितोपदेशः उभय श्रेयार्थम् ॥

## ॥ त्रिंशजिन नामः ॥

( अतीत चौबीसी. )

- १॥ श्री केवलज्ञानीजी । ए॥ श्री दामोदरजी । १७॥ श्री अनिलनाथजी ।
- २॥ श्री निर्व्वर्णीजी । १७॥ श्री सुतेजनाथजी । १८॥ श्री यशोधरजी ।
- ३॥ श्री सागरजी । ११॥ श्री स्वामीजी । १९॥ श्री कृतार्घजी ।
- ४॥ श्री महायशजी । १२॥ श्री मुनिसुव्रतजी । २०॥ श्री जिनेश्वरजी ।
- ५॥ श्री विमलदेवजी । १३॥ श्री सुमतिनाथजी । २१॥ श्री शुद्धमतीजी ।
- ६॥ श्री सर्वानुभूतिजी । १४॥ श्री शिवगतिजी । २२॥ श्री शिवकरजी ।
- ७॥ श्री श्रीधरजी । १५॥ श्री अस्तागजी । २३॥ श्री स्पन्दनजी ।
- ८॥ श्री दत्तस्वामीजी । १६॥ श्री नमीश्वरजी । २४॥ श्री संप्रतिजी ।

इति अतीत चतुर्विंशति तिर्यं करेज्यो नमः ॥

( वर्त्तमान चौबीशी )

- १॥ श्री कृष्णदेवजी । ए॥ श्री सुविधिनाथजी । १८॥ श्री कुंथुनाथजी ।
- २॥ श्री अजितनाथजी । १७॥ श्री शीतलनाथजी । १८॥ श्री अरनाथजी ।
- ३॥ श्री संजवनाथजी । ११॥ श्री श्रेयांसजी । १९॥ श्री महिनाथजी ।
- ४॥ श्री अन्ननन्दनजी । १२॥ श्री वासुपुज्यजी । २०॥ श्री मुनिसुव्रतजी ।
- ५॥ श्री सुमतिनाथजी । १३॥ श्री विमलनाथजी । २१॥ श्री नमिनाथजी ।
- ६॥ श्री पद्मप्रभुजी । १४॥ श्री अनन्तनाथजी । २२॥ श्री नेमनाथजी ।
- ७॥ श्री सुपार्श्वनाथजी । १५॥ श्री धर्मनाथजी । २३॥ श्री पार्श्वनाथजी ।
- ८॥ श्री चंद्राप्रभुजी । १६॥ श्री शान्तिनाथजी । २४॥ श्री महावीरजी ।

( अनागत चौवीसी )

- १॥ श्री यद्वेनाथजी । ए॥ श्री पोटिलप्रभुजी । १७॥ श्री समाधिनाथजी ।  
 २॥ श्री सूरदेवजी । १०॥ श्री शतकीर्त्तिजी । १८॥ श्री संवरनाथजी ।  
 ३॥ श्री सुपार्श्वजी । ११॥ श्री सुव्रतनाथजी । १९॥ श्री यशोधरजी ।  
 ४॥ श्री स्वयंप्रभुजी । १२॥ श्री अममनाथजी । २०॥ श्री विजयनाथजी ।  
 ५॥ श्री सर्वानुभूतिजी । १३॥ श्री निष्कषायजी । २१॥ श्री मल्लिप्रभुजी ।  
 ६॥ श्री देवश्रुतजी । १४॥ श्री निष्पुलाकजी । २२॥ श्री देवप्रभुजी ।  
 ७॥ श्री उदयप्रभुजी । १५॥ श्री निर्ममनाथजी । २३॥ श्री अनन्तजी ।  
 ८॥ श्री पेढालप्रभुजी । १६॥ श्री चित्रगुतिजी । २४॥ श्री जट्टकरजी ।

इति जविष्यच्चतुर्विंशति तिर्यकरेण्यो नमः ॥

( वीसविह्वरमान नामानि )

- १॥ श्री सीमन्धरजी । ८॥ श्री अनन्तवीर्यजी । १५॥ श्री नेमप्रभुजी ।  
 २॥ श्री युगमन्धरजी । ए॥ श्री सूरप्रभुजी । १६॥ श्री ईश्वरजी ।  
 ३॥ श्री बाहुजी । १०॥ श्री विमलजी । १७॥ श्री वयरसेनजी ।  
 ४॥ श्री सुबाहुजी । ११॥ श्री वज्रधरजी । १८॥ श्री महानद्रजी ।  
 ५॥ श्री सुजातजी । १२॥ श्री चंद्राननजी । १९॥ श्री देवजसजी ।  
 ६॥ श्री स्वयंप्रभुजी । १३॥ श्री चंद्रबाहुजी । २०॥ श्री अजितवीर्यजी ।  
 ७॥ श्री कृपज्ञाननजी । १४॥ श्री भुजंगजी ।

इति विंशति विह्वरमान तिर्यकरेण्यो नमः ॥

( चार सास्वतानामः )

- १॥ श्रीकृपज्ञाननजी । ३॥ श्रीवार्षिणजी ।  
 २॥ श्रीचंद्राननजी । ४॥ श्रीवर्द्धमानजी ।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवेरेण्यो नमः ॥

॥ प्रतिक्रमणसूत्र ॥

श्रीपंचपरमेष्ठिने नमः॥ एमो अरिहंताणं ॥ नमो सिद्धाणं ॥  
 एमो आयसियाणं ॥ एमो उवज्जायाणं ॥ एमो लोए सब-

साहूणं ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ सबपाव ण्णासणो ॥ मंग-  
लाणंच सबेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥१॥ पद ए ॥ संपदा ७ ॥  
अक्षर ६७ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६३ ॥

॥ अथ सकल तिर्थंकर नमस्कार लिप ॥

॥❖॥ श्रीऽष्टदेवाय नमः ॥❖॥ जयउसामिहि ॥ १ ॥ रिस-  
ह सेंतुंजि उज्जितं पहू नेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरमंरुण ।  
भरवहहि मुणि सुवय । महुरिपास डह डुरिअ खंरुण । अवर  
। वदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणाग-  
यसंपयं । वंडुं जिण सब्बेवि ॥१॥ कम्मभूमिहि १॥ पढमसं-  
घयण उक्कोसन सत्तरिसन । जिणवराण विहरंतल्लभइ । नव-  
कोडी केवल्लिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवरवी  
समुणि । डइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसडइ । थुणिजइ  
निच्चविहाण ॥२॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लकरवा षण्ण अठ्ठको-  
डीओ । चउसय णयासीआ । तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥३॥ वंदे नव-  
कोडिसयं । पणवीसंकोडि लकरवतेवन्ना । अठ्ठावीससहस्सा ।  
चउसय अठ्ठासिआ पडिमा ॥३॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपा-  
यालेमाणुसेलोए । जाइंजिणविंबाइं । ताइं सवाइ वंदामि ॥४॥  
णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थग-  
राणं सयंसंवुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर  
पुंरुरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग-  
नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥  
अन्नयदयाणं चक्रवुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहि-  
दयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं ।  
धम्मसारहीणं धम्मवरचानरंत चक्रवटीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिह-

यवरणाण दंसणधराणं विअट्ठवमाणं ॥ ७ ॥ जिन्नाणं जा-  
वयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअ-  
गाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं सब्बदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत म-  
क्खयमद्वावाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइनामधेयं ण्हाणंसंपत्ताणं  
णमोजिणाणं जिअन्नयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ  
न्नविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्ठमाणा सब्बेतिविहेणवं-  
दामि ॥ १ ॥ पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ९ ॥ अद्धर ॥ १९७ ॥  
गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४ ॥ जावंति चेइआइं । उट्ठेअ अ-  
हेअतिरिअलोएय । सव्वाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥  
इत्तामिखमा ० । इत्तका ० नगवत् । जावंति केविसाहू । नरहे  
खए महाविदेहेअ । सब्बेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंरु  
विरआणं ॥ २ ॥ अद्धर ॥ ८२ ॥ नमो ऊंत सिद्धाचार्योपा  
ध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ ॥ नवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि  
कम्मघण मुक्कं । विसहर विसन्निवासं । मंगल कल्लाण  
आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया  
मणुओ । तस्सगहरोगमारी । डुळ्जराजन्ति नवसामं ॥ २ ॥  
चिळ्ठ दूरे मंतो । तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ । नरति-  
रिए सुवि जीवा । पावंति नडुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते  
लद्धे । चिंतामणि कप्पपाय बल्लहिए । पावंति अविग्घेणं ।  
जीवा अयरामरं णाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस । नत्ति-  
ब्बरनिब्बरेण हिअएण । तादेव दिज्ज बोहिं । नवे नवे पास  
जिणचंद ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥

॥ जय वीयराय जगगुरु । होउममं तुहपन्नावओ । नयवं  
नवनिब्बेओ । मग्गाणुसारिआ इठ्ठलसिद्धी ॥ १ ॥ लोग

विरुद्ध चात्रो । गुरुजण पूज्या परत्यकरणंच । सुह गुरुजोगो  
तब्बयण सेवणा आन्नवमखंमा ॥ २ ॥ ॥ अरिहंत  
चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोका-  
वसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहै ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहि आए  
मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्कमाश्रमणादंरुकः ॥ गुरु ३ लघु २५॥  
( इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ) इरिआवहिअं पम्किमामि,  
इच्छं इच्छामि पम्किमित्तं । इरिआवहियाए विराहणाए ।  
गमणा गमणे पाण क्कमणे वीअक्कमणे हरिअ क्कमणे । नं सान-  
त्तिंग पणग दग मट्ठी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा  
विराहिआ । एणिदिआ वेइदिआ तेइदिआ चणुरिदिआ पं-  
चिदिआ । अग्निहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्ठिआ ।  
परिआविया किलामिआ न्हविआ ठाणा उठाण संकामिआ  
जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिउक्कमं ॥ ७ ॥ ॥ तस्स  
उत्तरी करणेणं । पायच्चित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली  
करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणघाए । ठामिकानसग्गं  
॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु २७५ एवं ॥ १ एए ॥ ॥  
अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंन्नाइएणं  
नुहुएणं वाय निसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं  
अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठ्ठि  
संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारोहिं । अन्नग्गो  
अविराहिओ हुज्ज मे कानसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भ-  
गवंताणं एमोक्कारेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं ऊाणे-

एं अण्णाणं वोसरामि ॥ ४ ॥ \* लोगस्स उज्जोअगरे । धम्म-  
 तित्थयेरे जिणे । अरिहंते कित्तइसं । चत्तवीसंपि केवली ॥ १ ॥  
 उसंन मज्झिअं च वंदे । संनव मज्झिनंदणं च । सुमइच्च पणम  
 प्पहं सुपासं । जिणं च चंदण्हं वंदे ॥ २ ॥ सुविहं च पुप्फदंतं ।  
 सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं  
 संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं न  
 मि जिणं च । वंदामि रिठ्ठनेमिं । पासं तह वच्चमाणं च ॥ ४ ॥  
 एवं मए अग्निधुआ । विहुअ रयमत्ता पहीण जर मरणा ।  
 चत्तवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ  
 वंदिअ महिअ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग वोहि  
 लाभं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयर ।  
 आइच्चेसु अहिअं पयासयरां । सागर वर गंभीरा । सिद्धा सिद्धिं  
 मम दिसंतु ॥ \* ॥ ७ ॥ \* पद २७ संपदा २७ गुरु २७ लघु २२७  
 [ एवं सर्वअक्षर ॥ २५६ ] सबलोए अरिहंतचेइआणं करेमिका  
 उस्सग्गं ॥ \* ॥ १ ॥ \* ॥ पुक्खवरवर दीवहे । धायइ  
 संनेअ जंबुदीवेअ । अरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसा-  
 मि ॥ १ ॥ तम तिमिर पणल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिंद  
 महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोन्निअ मोहजालस्स  
 ॥ २ ॥ जाई जरा मरण सोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल  
 विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंद गणच्चिअस्स ।  
 धम्मस्ससार मुवलंअकरेपमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेओपयनं एमो-  
 जिणमए नंदीसयासंजमे । देव आग सुवन्न किन्नर गण स्स-  
 व्भूअ प्रावच्चिए । लोगो जत्थ पयडिओ जगमणं ते लोक्क  
 मच्चासुरं । धम्मो वद्धन सासओ विजयनं धम्मोत्तरं वद्धओ ॥ ४ ॥

णं । सत्तएहंपिमेसणाणं । अट्टएहं पवयणमाईणं । नवएहंबं-  
 न्नचेरगुत्तीणं । दसविहेसमणधम्ममे । समणाणं जोगाणं । जं-  
 खंमिअं जं विराहिअं । तस्समिह्णामिडुकमं ॥ १० ॥

॥ श्रावकआलोचना ॥

॥ १० ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । देवसियं आलोएमि  
 इच्छं आलोएमि । जोमे देवसिअो अश्यारोकअो । काईअो  
 वाईअो माणसिअो । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो  
 डुज्जाअो डुव्विचिअिअो । अणाधारो अणह्वियवो । असावग-  
 पावग्गो । नाणेत्तहं दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाशए ति-  
 एहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुव्वयाणं । तिहं  
 गुणव्वयाणं । चउएहं सिकखावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-  
 म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिह्णामिडुकडं ॥ १० ॥

॥ १० ॥ ठाणेकमणे चंकमणे आनत्ते अणानत्ते । हरिअकाय  
 संघट्ठे बीयकायसंघट्ठे थावरकायसंघट्ठे उप्पश्यासंघट्ठे । सब्बस्स  
 वि देवसिअ । डुच्चितिय डुप्पासिय डुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेण  
 संदिसह । इच्छंतस्समिह्णामिडुकडं ॥ १ ॥ ॥ १० ॥ संथारानुवट्ठण-  
 की । आनुवट्ठणकी । परिअट्ठणकी । पसारणकी । उप्पश्यासं-  
 घट्ठणकी । अच्चक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराशअ । डुच्चि-  
 तिअ डुप्पासिअ डुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेणसंदिसह । इच्छं-  
 तस्स मिह्णामिडुकमं ॥ १ ॥ ॥ १० ॥ इच्छाकारेणसंदिसह भगवन्  
 अन्नूठ्ठिअोमि अश्रितर । देवसिअंरवामेणं । इच्छंरवामेमि देव-  
 सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । नत्ते पाणे विणए वेया-  
 वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे समासणे । अंतरप्पासाए उ-  
 वरिप्पासाए । जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुष्टेजाणह् अहंनजाणामि । तस्स मिहामिडुक्कडं ॥ \* ॥  
॥ इति गुरुवंदणा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ करेमि भंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ।  
जावनियमं पज्जुवासामि । डुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए  
काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि । निंदा-  
मि । गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥ \* ॥ करेमि भंते पोसहं । आ-  
हार पोसहं, देसणं । सब्बं वा । सरीरसक्कार पोसहं । सब्बं बंनचेर  
पोसहं । सब्बं अद्वावार पोसहं । सब्बं चण्विहे पोसहे । साव  
ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरातिं वा पज्जु वासा-  
मि । डुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न  
कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पा-  
णं वोसिरामि ॥ \* ॥ आयरियउवज्जाए । सीत्तिसाहम्मिए कुल-  
गणेवा । जेमे कयाकसाया । सधे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥  
सव्वस्स समणसंवस्स । भगवणं अंजलिं करिय सीत्ते । सव्वं  
खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरा  
सिस्स । जावणं धम्मनिहियनियचित्तो । सव्वं खमावइत्ता ।  
खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ \* ॥ सुवर्णशालिनी देयाद् ।  
वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदामह्य । मसेपश्रुतसंपदं  
॥ १ ॥ चतुवर्णायसंधाय । देवी भवनवासिनी । निहत्य दुरि-  
तान्येषा । करोतुसुखमद्गतं ५ ॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । सा-  
धवः श्रावकादयः । जिनाज्जां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेव-  
ताः ॥ ३ ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जय महावश २ जय महानाग जय चित्तिय  
सुहफल्य । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु



गरिम गुरु । जय डुहत्तसत्ताणताणय । यंन्नणयठिय पासजि-  
ण ॥ नवियहन्नीमन्नवत्थु । नय अवणित्ताणंतणुण । तुज्ज-  
तिसंज नमोत्थु ॥ १ ॥ ॥ \* ॥

। अथ सामायक पोसहपारवागाथा ।

॥ \* ॥ नयवं दसन्नन्नदो । सुदंसणो थूलन्नद्वयरोय । स-  
फलीकयगिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंद-  
णेणं । नासइ पावं असंकिंयाप्तावा । फासुअदाणे निज्जर ।  
अग्निग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ ठुमत्थो मूढ मणो । कित्तिथ-  
मित्तंपि सन्नरइजीवो । जंचन सन्नरामि अहं । मिहामेदुक्कडं  
तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चित्तिथ । मसुहं वायाइप्तासियं किं-  
चि । असुहं काणणकयं । मिहामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सा-  
माइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो  
बोधवो । सेसो संसारफलहेज्ज ॥ ५ ॥ \* ॥ सामायकविधै ली-  
धी विधै कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय  
दसमनका दस वचनका बारै कायाका । वत्तीसं दूषणां मांह  
जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंक  
री मिहामिदुक्कडं ॥ \* ॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ सिरियंन्नणयठियपाससामिणो । सेसत्तित्थसामी  
णं । तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सवेसिं ॥ १ ॥ एस  
महंसरणत्थं । कानुसग्गं करेसि । सत्तीए नत्तीए गुणसुठि-  
यस्स । संवरस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ \* ॥ नमोस्तु वर्ध  
मानाय । रुपर्धमानाय कम्मणा । तज्जया व्याप्त मोह्ताय ।  
परोह्ताय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्या-  
यः क्रमकमलावलिं दधत्या । सद्वैशैरिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापाद्वैत  
जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोक्तः । सशुक्रमासोद्भव  
वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥  
श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्रंविभ्रती  
याविभ्रति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा । सकल-  
सुखविधात्रा प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ \* ॥ इति वीरस्तुतीः ॥

॥ \* ॥ परसमयतिमिरतरणिं । भवसागरवारितरणवरत-  
रणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध  
संसारविहारकारि । दुरन्तभावारिगणानिकामं । निरन्तरं  
केवलि सत्तमावो । भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहका-  
रिकुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । संसार-  
सागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥  
परिमलभरलोभा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हार  
नीहारहासे । अविरलभ्रवकारा गारविह्वित्तिकारं । कुरुकम-  
लकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ \* ॥ इति वीरस्तुतिः ॥ \* ॥

॥ \* ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ  
समगौरी । कमलेस्थिता भगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं  
॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां ।  
विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं  
समाश्रित्य । साधुभिः साध्यते क्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं ।  
भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ \* ॥ इति स्तुति ॥ \* ॥

॥ \* ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंभनेस्वर्गिरौ । श्री-  
पूज्याभयदेवसूरिविवुधा धीशैः समारोपितः । संसक्तः स्तुति  
भिर्जलैः शिवफलस्फुर्यत्फणापल्लवः । पार्श्वः कल्पतरुः समे

प्रययतां नित्यं मनोवांछितं ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो ।  
जीरावद्विसिरोमणिः पार्श्वनाथो जगन्नाथो । नतुनाथो नृणां-  
श्रिये ॥ २ ॥ \* ॥ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ \* ॥

॥ \* कल्याणकमलागेहं । नीलदेहं महासहं । नवरवंमाविधं-  
पार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥ १ ॥ इति ॥ \* ॥ चतुः कृताय  
पद्मिन्मन्त्रं ध्वजं । दूजयमयणमाणं मसमूरणं । सरसपियंगु-  
वन्नगयगामियं । जयतुपासं भुवणतय सामियं ॥ १ ॥ जसत-  
णुकंतिकडप्पसिणिध्वजं सोहृदफणमणिकिरणालिध्वजं । ननवज-  
लहरतडिलयलंठियं । सोजिणपासपयव्वनवंठियं ॥ १ ॥ \* ॥  
इति श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः ॥ \* ॥

॥ \* ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं  
सर्वधर्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं प्रगवान्-  
वीरो । मङ्गलं गौतमः प्रभुः । मङ्गलं स्थूलभद्राद्या । जैनोधर्म्मो-  
स्तु मङ्गलं ॥ २ ॥ \* ॥ शिवमस्तु सर्वं जगतः । परिहितनि-  
रता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखी  
भवतु लोकः ॥ ३ ॥ \* ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदीय  
पादाब्जतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात् । युग-  
प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ४ ॥ \* ॥ सिद्धांतसिंधुर्जगदेकबंधुः ।  
युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटी प्रकटीकरोतु ।  
सूरीश्वरो श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ५ ॥ \* ॥

॥ अथ साधुप्रतिक्रमण सूत्र ॥

॥ \* ॥ चत्वारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं ।  
साहू मङ्गलं । केवलपणत्तो धर्म्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्वारि लो-  
गुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो-

गुत्तमा । केवलपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारिसरणं-  
 पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जा-  
 मि । साहूसरणं पवज्जामि । केवल पन्नतं धम्मं सरणं पवज्जा-  
 मि ॥ ३ ॥ इच्छामि पडिक्कमिन् ॥ पगामसिज्जाए । निगा-  
 मसिज्जाए । संयारा उवट्टणाए । परियट्टणाए । आनंटणाए ।  
 पसारणाए । ठप्पइया संघट्टणाए । कुइए कक्कराइए । ठीएजं-  
 न्नाइए । आमोसे ससरक्खामोसे आनलमानलाए । सोअणव-  
 त्तिआए । इत्थी विप्परियासिआए । दिठी विप्परियासिआए ।  
 मण विप्परियासिआए । पाण भोयण विप्परियासिआए ।  
 जोमे देवसियो अइआरोकठ । तस्समिच्छामि डक्कमं ॥ पडि-  
 क्कमामिगोअरचरिआए । निरुखायरिआए । उग्घाडकवाड  
 उग्घाडणाए । साणावच्चादारा संघट्टणाए । मंणीपाहुडिआए ।  
 वलिपाहुडिआए । ठवणापाहुडिआए । संकिए सहस्सागारे ।  
 आणेषणाए । पाणेषणाए । आणभोयणाए । पाणभोयणाए ।  
 वीअभोयणाए । हरिअभोयणाए । पच्चाकम्मिआए । पुराक-  
 म्मिआए । अदिठ्हडाए । दगसंसठ्हडाए । रयसंसठ्हडाए  
 पारिसाडणिआए पारिठावणिआए उह।सणन्निक्खाए । जंनुग  
 मेणं उप्पायणेषणाए अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं । परिभुत्तंवा जंन-  
 परिठ्वणिअं । तस्समिच्छामि डक्कडं ॥ \* ॥ पडिक्कमामि चा-  
 उक्कालं । सिज्जायस्स अकरणयाए । उन्नतं कालं भंनोवगर-  
 णस्स । अप्पडिलेहणाए डप्पडिलेहणाए । अप्पमज्झणाए  
 डप्पमज्झणाए । अइक्कमे वइक्कमे । अइयारे अणायारे । जोमे-  
 देवसिन् अइआरोकठ । तस्समिच्छामि डक्कडं ॥ \* ॥ पडि-  
 क्कमामि एगविहेअसंजमे । पडिक्कमामि दोहिंवंधणेहिं । रागवं

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पन्निपुन्नं ।  
 नेआनुयं । संसुद्धं । सद्धगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । नि-  
 ज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सब्बडुक्खपही-  
 णमग्गं । इत्थंठिआजीवा । सिज्जंति । बुज्जंति । मुच्चंति । प-  
 रनिव्वायंति । सब्बडुक्खणमंतंकरंति । तंधम्मं सद्वहामि । पत्ति-  
 आमिं । रोएमि । फासेमि । पादेमि । अणुपादेमि । तंधम्मंस-  
 द्हहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पादितो अणुपादितो ।  
 तरुस धम्मरुस केवल्लिपन्नतरुस । अण्णुठ्ठिमि आराहणाए ।  
 विरुठ्ठिमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसं-  
 पज्जामि । अबंनं परिआणामि । बंनं उवसंपज्जामि । अकण्णं  
 परिआणामि । कण्णं उवसंपज्जामि । अब्बाणं परिआणामि ।  
 नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उव-  
 संपज्जामि । मिच्चतं परिआणामि । सम्मतं उवसंपज्जामि ।  
 अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परि-  
 आणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंनरामि । जंचन संनरा-  
 मि । जंपडिक्कमामि । जंचन पडिक्कमामि । तरुससवस्स  
 देवसिअरुस । अइआरुस पडिक्कमामि । समणोहं संजय  
 विरय पन्निहय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिठ्ठि-  
 संपन्नो । मायामोसविवज्जिठ्ठं । अट्ठाइज्जेसु दीव समुद्देसु ।  
 पन्नरस कम्मन्नूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुह-  
 पडिग्गहधारा । पंचमहवयधारा । अठारसहस्स सीलंगधारा ।  
 अक्खयायारचरित्ता । तेसब्बे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदा-  
 मि ॥ खामेमि सब्ब जीवे । सब्बे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे स-  
 व्वन्नूएसु । वेरंमज्जु न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअ डुगुंठिअं सम्मं । तिविहेण पम्किंतो । वंदामि जिणे  
चउवीसं ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सच्चित्त १ । दधश् १ । विगई ३ ॥ बाहण ४ । तंनो-  
ल ५ । बत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विले-  
वण १० ॥ बंन ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । जत्तेसु १४ ॥  
इति चउद निअम गाथा ॥ ❀ ॥

॥ अथ वंदितु सूत्र ॥

॥ ❀ ॥ वंदितु सवसिद्धे । धम्मायरिएअ सवसाहूअ । इत्ता-  
मि पडिक्कमिठं । सावगवम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इआ-  
रो । नाणे तहदंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ वायरोवा । तंनिदे  
तंच गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहे-  
अ आरंभे । कारावणे अंकरणे । पम्किमे देसिअंसवं ॥ ३ ॥  
जंवअ मिंदिएहिं । चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेणव  
दोसेणव । तं निदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे  
ठाणेचंकमणे अणान्नोणे । अन्निनगे अतिन्नगे । पम्किमे ॥ ५ ॥  
संकाकरवविगंठा । पसंसतहसंथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइ  
आरे । पम्किमे ॥ ६ ॥ ठक्काय समारंभे ॥ पयणेअ पयावणेअ  
जेदोसा । अत्तणय परण । उन्नयणचेव तंनिदे ॥ ७ ॥ पंच-  
एहमणुवयाणं । गुणवयाणंचतिएहमइआरे । सिक्खवाणंच  
चउएहं ॥ पम्किमे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयम्मी । थूलगपा-  
णाइवायविरइन्न । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं  
॥ ९ ॥ बह्वंधवविट्ठेए । अइजारेन्नत्तपाणवुट्ठेए । पढम वयस्स  
इआरे । पम्किमे ॥ १० ॥ बीए अणुवयम्मी । परिधूलग  
अलिअवयण विरइओ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमाय-

प्यसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारि । मोसुवएसेअ कूडलेहे-  
 अ ॥ बीअवयस्सइआरे । पन्निक्कमेण ॥ १२ ॥ तइएअणुवय-  
 म्मी । थूलगपरदब्बहरणविरइत्त । आयरिअमण्यसत्थे । इत्थ-  
 पमायप्यसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडण्णत्तगे । तण्णडिक्खवे विरुद्ध-  
 गमणेअ । कूडतुल्लकूडमाणे । पन्नि ॥ १४ ॥ चत्तयेअणुवय-  
 म्मी । निच्चं परदारगमण विरइत्त । आयरिअमण्यसत्थे । इत्थ-  
 पमा ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिव-  
 अणुरागे । चत्तयवयस्सइआरे । पन्निक्क ॥ १६ ॥ इत्तोअ-  
 णुव्वए पंचमम्मी । आयरिअमण्यसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए ।  
 इत्थ ॥ १७ ॥ धणधन्नस्वित्तवत्थु । रुण्यसुवण्णेअ कुविअ परि-  
 माणे । दुण्यएचत्तप्ययम्मी पन्नि ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-  
 माणे । दिसासुत्तहं अहेयतिरिअंच । बुद्धिस्सइ अंतरद्धा ।  
 पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-  
 अफलेअ गंधमल्लेअ । उवप्पोग परीप्पोगे । बीअम्मिगुणव्वए  
 निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पन्निवुद्धे । अण्णोलडुण्णोलिएअ आहारे ।  
 तुत्तोसहिअकरवणया । पन्नि ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी ।  
 ज्ञामी फोमीसु वज्झए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस-  
 केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुज्जंतपिअणंकम्मं । निअंठ-  
 णंच दवदाणं । सरदह तत्तावसोसं । असईपोसंच वज्झिज्जा  
 ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तण्णकठेमंतमूलप्पेसिज्जे ।  
 दिण्णेदिवावएवा । पन्नि ॥ २४ ॥ एहाणुवट्ठण वन्नगविलेवणे  
 सहस्सरसगंधे । वत्थासणआप्परणे । पन्नि ॥ २५ ॥ कंदप्पे  
 कुक्कशए । मोहरि अहिगरण जोगअइरित्ते । दंमंमिअण्णवाए  
 तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । अणवठा

एतहासः विहुणे । सामाश्रय वितहकए । पढमे सिकखा  
 वएनिदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सदेखवेअ पुग्गलकरेवे ।  
 देसाविगासिअम्मी । वीएसिकखावएनिदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-  
 विही । पमायतह चेव न्नेयणाप्पोए । पोसहविहिविवरीए । तः  
 एसिकखावएनिदे ॥ २९ ॥ सच्चित्तेनिकखमणे ॥ पिहणेववएस-  
 मन्तरेचेव । कालायकमदाणे । चन्त्येसिकखावएनिदे ॥ ३० ॥  
 सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेणव-  
 दोसेणव । तंनिदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविभागे । नक  
 न्तव चरणकरणगुत्तीसु । संतेफासुअदाणे तंनिदे तंचगरिहा-  
 मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअ आससपण्णे ।  
 पंचविहो अश्चारे । मामज्जंहुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएणका  
 श्चस्स । पन्निक्कमे वाश्चस्सवायाए । मणसामाणसिअस्स ।  
 सवस्सवयाश्रयस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिकखागारवेषु । सणा  
 कसायदंमेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअश्चारेतंनिदे ॥  
 ॥ ३५ ॥ सम्मदिडीजीवो । जश्विहुपावं समायरेकिंचि । अप्पो  
 सिहोश्वंधो । जेणननिश्वंधसंकुणः ॥ ३६ ॥ तंपिहुसपन्निक्कमणं ।  
 सप्परिआवंसउत्तरगुणंच । खिप्पंनवसामेई । वाहिद्वसुसिक्खिवं  
 विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया । वि  
 ज्जाहणंत मंतेहिं । तोतंहवः निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं  
 कम्मं । रागदोससमज्झिअं । आलोअंतोअ निंदंतो । खिप्पं  
 हणश्सुसावणं ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणूसो । आलोअनिंदिअ  
 गुरुसगासे । होअश्चरेगलहुणं । उहरिअन्नरुवन्नारवहो ॥ ४० ॥  
 आवस्सएण एएण । सावणंजइवि बहुरण्हो । उकरवाणमंतकि  
 रिअं । काहीअचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा



नयसंनरिआपमिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे । तंनिदेतंच  
गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवल्लिपणत्तस्स । अश्रुच्छिन्न  
मिआराहणाए । विरुमिविराहणाए । तिविहेणपमिक्कंतो ।  
वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं । उह्वेअअहेअ  
तिरिअलोएअ । सवाइंताइंवंदे । इहसंतोतत्थसंताइं ॥ ४४ ॥  
( नगवन् ) जावंति केविसाहू । नरहेरवए महाविदेहेअ । सव्वे  
सितेसिपण्ण । तिविहेणतिदंरुविरिआणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचि  
यपावपणासणीए । नवसयसहस्स महणीए । चउव्वीसजिण  
विणिग्गयकहा । वनलंतुमेदीअहा ॥ ४६ ॥ मममंगलमरिहंता  
सिद्धासाहूसुअंचधम्मोअ । सम्मद्विठीदेवा । दितुसमाहिंचवो  
हिंच ॥ ४७ ॥ पमिसिद्धाणंकरणे । किच्चाणमकरणेहि पमि  
क्कमणं । असद्वहणेअतहा । विवरीअ परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खा  
मेमिसव्वजीवे । सव्वेजीवाखमंतुमे मित्तीमेसव्वनूएसु । वैरंमज्झ  
नकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइअनिदिअ । गरहिअडुगुंठियंस  
म्मं । तिविहेणपमिक्कंतो । वंदामिजिणेचउव्वीसं ॥ ५० ॥ ॥  
इति श्री श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र समाप्तः ॥ ॥

॥ ॥ अथ दशपञ्चकरवाणविचार लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ तहां प्रथम चउदै नियमसंनारै सो विगय देसावगा  
सीयुक्तइसतरै पञ्चकरवाणकरै ॥ ॥ उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं  
( मुंठसी ) पञ्चकरवाइ चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइ  
मं । साइमं । अणत्थणाप्पोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारे  
णं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । विगइणपञ्चकरवाइ । अणत्थणा  
प्पोगेणं । सहस्सागारेणं । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खि  
त्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारिठावणियागारेणं । महत्तरा-

गारेणं । सवसमाहिवत्तियागारेणं । देसावगासियं जोगपरिजोगं  
पञ्चकरवाइ । अणत्थणाजोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं ।  
सवसमाहिवत्तियागारेणं । वोसरइ ॥ इति नवकारसीपञ्च  
करवाणं विगय देशावगासीयुक्तं ॥ १ ॥

॥\*॥ तथा जो श्रावक नियम संभारै नही । सो विगइका  
[ अर ] देसावगासीका आगार नपचखै । निकेवल । नवकारसी  
आदिक पञ्चकरवाण करै ॥ यथा ॥

॥\*॥ उग्गएसूरे नमोकार सहियं पञ्चकरवाइ । चउव्हिहंपि  
आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणण । सह ।  
वोसरइ । इति नवकारसी पञ्चकरवाण ॥ आगार १ ॥

॥\*॥ पोरसिं ( मूंगसिं ) पञ्चकरवाइ । उग्गए सूरे चउव्हि  
हंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणत्थण ।  
सहस्साण । पण्णकालेणं । दिसामोहेणं । साहुवयणेणं । सवण ।  
वोसरइ विगइत्तं पञ्चकरवाइ । इत्यादि पुर्व्वकीपरैकहणा ॥  
इति पोरसी पञ्चकरवाण ॥ २ ॥ आगार ६ ॥

॥\*॥ इसीमाफक साढपोरसीका पञ्चकरवाण जाणना । इतना  
विशेष है । पोरसिं पञ्चकरवाइ ( इहां ) साढपोरसिंपञ्चकरवाइ  
कहणो ॥ इति साढपोरसीपञ्चकरवाण आगार ६ ॥\*॥ सूरे  
उग्गए । पुरमहं अवहं ( वा ) पञ्चकरवाइ । चउव्हिहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणण । सहण । पण्ण ।  
दिसाण । साहुण । महण । सब्बण । विगइत्तं पञ्चकरवाइ । इत्यादि  
पूर्व्ववत् । इति पुरमहपञ्चकरवाण ॥ ३ ॥ आगार ७ ॥\*॥

॥\*॥ पोरसिं साढपोरसिं ( वा ) पञ्चकरवाइ । उग्गएसूरे ।  
चउव्हिहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणण ।

सहण। पञ्चण। दिसाण। साहुण। सबण। एकासणं व्यासणं (वा)  
 पच्चकरवाइ। डुविहं। तिविहंपि आहारं। असणं। खाइमं।  
 साइमं। अणण। सहण। सागारि आगारेणं। आनट्टणपसारेणं।  
 गुरुअप्पुठाणेणं। पारिण। महण। सबण। वोण देसावगासियं।  
 इत्यादिपूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण व्यासण पच्चकरवाण ॥  
 आगार ८ ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिंवा पच्चकरवाइ। उग्गएसूरे चउ  
 विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अणण।  
 सहण। पञ्चणकाण। दिसाण। साहुण। सबण। एकासणं एगठाणं  
 पच्चकरवाइ। डुविहं। तिविहं। चउविहंपि आहारं। असणं।  
 खाइमं। साइमं। अन्नण। सहण। सागारि आगारेणं। गुरुअ  
 प्पुठाणेणं। पारिण। सहण। सबण। वोसण। देसावण। इत्यादि  
 पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकठाणा पच्चकरवाण। आगार ९ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चकरवाइ। उग्गएसूरे चउ  
 विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अणण।  
 सहण। पञ्चण। दिसामोण। साहुण। सबण। आयंबिलं पच्चकरवाइ।  
 अणत्थण। सहण। लेवालेवेणं। गिहत्थसंसिठेणं। उकिस्वत्तवि  
 वेगेणं। पडुच्चमकिस्वयेणं पारिठाण। महण। सबण। एकासणं  
 पच्चकरवाइ। तिविहंपि आहारं। असणं। खाइमं। साइमं।  
 अणण। सहण। सागारिआगारेणं। आनट्टणपसारेणं। गुरुअप्पु  
 ठाणेणं। पारिठाण। महण। सबण। वोसरइ ॥ ६ ॥ \* ॥  
 इति आंबिल पच्चकरवाण। आगार १० ॥

॥ \* ॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चकरवाइ उग्गएसूरे। च  
 उविहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण

त्यण । सहण । पञ्चण । दिसाण । साहुण । सबण ॥ निविगइयं  
पच्चकरवाइ । अन्नण । सहण । लेवालेवेणं । गिहत्यसंसिठेणं ।  
उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारिण । महण । सबण ॥  
एकासणं पच्चकरवाइ । तिविहंपि आहारं । असणं । खाइमं ।  
साइमं । अन्न । सह । सागाण । आण्हण । गुरुण । पाण । महण ।  
सबण । वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥  
इति निवीपच्चकरवाण ॥ \* ॥

॥ \* ॥ सूरु उग्गए अन्नतठं पच्चकरवाइ चउव्विहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अण्ण । सहण । महण । सबण ।  
वोसरइ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥  
इति चउव्विहार उपवास पच्चकरवाण ७ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ सूरु उग्गए अन्नतठं पच्चकरवाइ । तिविहंपि आहारं ।  
असणं । खाइमं । साइमं । अण्ण । सहण । पाणहार पोरसिं ।  
साढपोरसिं । पुरमहं । अवहंवा । पच्चकरवाइ । अण्ण । सहण ।  
पञ्चण । दिसाण । साहुण । सबण । वोसरइ । देसावगासियं इत्या  
दि पूर्ववत् ॥ \* ॥ इति तिविहार उपवास पच्चकरवाण ॥

॥ \* ॥ पोरसिं-साढपोरसिं-पुरमहं अवहं वा पच्चकरवाइ । उग्ग  
एसूरु चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अ  
ण्ण । सहण । पञ्चण । दिसाण । साहुण । सबण । एकासणं एगघणं  
दत्तियं पच्चकरवाइ तिविहं चउव्विहंपि आहारं । असणं । पाणं ।  
खाइमं । साइमं । अण्ण । सहण । सागाण । गुरुण । महण ।  
सब्वण । वोसरइ । विगइउ ॥ देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥  
इति दत्तिपच्चकरवाण ॥ ए ॥ \* ॥

॥ \* ॥ दिवसचरमं पच्चकरवाइ चउव्विहंपि आहारं । अस

एणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणण । सहण । महण । सब्बण ।  
वोसरइ ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ डुविहंपि आहारं । असणं ।  
खाइमं । अणण । सहण । महण । सब्बण । वोसरइ ॥  
इति दिवसचरमडुविहार पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अणण । सहण ।  
महण । सब्बण । वोसरइ ॥ ❀ ॥ इति पाणहार पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जवचरमं पच्चक्खाइ । तिबिहं चउविहंपि आहारं ।  
असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अणण । सहण । महण ।  
सब्ब । वोसरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ (जवचरम दोआगार का पिण  
होय) ॥ इति जवचरमपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा गंठसहि । मुंठसहि । अंगुठसहि । प्रमुख अ  
ग्निग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार । अणण । सहण ।  
महण । सब्बण । वोसरइ । पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके  
होय ॥ ❀ ॥ इति अग्निग्रह पच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अहणं जंते । तुम्माणं समीवे । देसावगासियं पच्च  
क्खामि । दब्बनं । खित्तनं । कालनं । जावनं । दब्बनं देसा  
वगासियं । खित्तनं इत्थवा अणत्थवा । कालनं महत्तधा  
रणापमाणे । जावनियमं पच्चक्खामि । जावनं जावगहेणं  
नगहिज्जामि । ठलेणं नठलिज्जामि । अण्णकेविरायंकेणवा ।  
एसो परिणामो नपमिवज्जइ । ताअग्निग्रह । अणत्थणाप्पो  
गेणं सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सब्बसमाहिवत्तियागारे  
णं । वोसरामि ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तथा साधु पच्चक्खाणकरै । तवदेसावगासी नहिं

पचरै । अरुतिबिहार उपवासमें । आबिलमें निवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपच्चरै ( सो दिखावेहै ) पाणस्स लेवाडेणवा । अलेवाडेणवा अत्येणवा वहलेणवा ससित्येणवा असित्येणवा दोसरइ ॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थं लिखते ॥

॥ उगए सूरै नमोकार सहियं पच्चखाइ चउव्विहंपि आहारं । ( अर्थ ) इहां गुरु कहै पच्चखाइ शिष्य कहै पच्चखामि ॥ पच्चखाइका अर्थ सर्व-  
त्रिकाणें अंगीकार वाचक । जाणनो ( जैसैं ) सूरज उदय हुवांवाद । नवका रसी व्रत अंगीकार करूं । यह पच्चखाण ( महूर्त ) दोघडी काल उपरांत । जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहिं । तहां तक ( चउव्विण ) । चारूं आहारनो त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं ॥ ( सो चार प्रकारको आहार लिखते हैं ) । असणं ॥ पाणं ॥ खाइमं ॥ साइमं । ( असणं व्याख्या ) असण कहतां अन । चोपा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहुं प्रमुख सर्वधानं । सत्तू गहुं कों आदिलेके सर्व तरैको आटो ॥ सर्व तरैका साग । लामू प्रमुख सर्वपकवान । सूरणादिक सर्वकंद । दूध दही मांडादिक । सर्वक-  
वली वस्तु । हींग विरहाली । लूण सैधवादिक । इत्यादिक सर्व अशणमांहि जाणना ॥ १ ॥ ( पाणं । व्याख्या ) आठण जवोदक तु-  
पोदक तंडुलोदक उण्णोदक शुद्धोदक सर्वतरैकाजल पाण आगारमें जाणना ॥ २ ॥ ( खाइमं । व्याख्या ) खादिम । सुंखडी नालेर खजूर द्राख सेक्योधानं आंवा केला काकडी अखरोट खारक विदाम प्रमुख सर्व जातनोमेयो । सर्व जातनाफल ॥ खादमजाणना ॥ ३ ॥ ( साइमं । व्याख्या ) स्वादिम । तंबोल सूंठि मिरच पीपर हरडै वहेडा तुलसी कसेलो काथो जेष्टीमधु तज तमालपत्र इलायची लवंग वायवि-  
डंग अजमो अजमोद कुल्लिजण चिणकवोवा फचूर नागरमोथ पान सुपारी पुहकरमूल जवासामूल वायची वांउन्नगलि धवगलि खेजड गल खयरसार ए सर्वस्वादिम जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार लिखतेहैं ॥

नीवठालि मूल पांन सिली गोमुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडन सुक  
 डिराख रोहिणीठाल पीपलामूल वच धमासउ रीगणी एलियो चिणोठी कयर  
 वोरिनामूल (इत्यादि) अणाहार पिण इत्तासंयुक्त ठोमना ( यद्दजो ) इत्ता-  
 विना अनिष्ट पणें लीजै । जवतो अनाहारहै । जो इत्तासंयुक्त जावता ली  
 जै तो आहार को दूषण लगै । (अवपच्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते  
 हैं) । जिस पच्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पच्चक्खाण  
 नियम करै ॥ अन्नत्थणा जोगेणं ॥ १ ॥ ( व्याख्या ) अनाजोगटाली ।  
 अनाजोग कहियै अत्यन्त विस्मृत होणेंसैं ( किया जो ) पच्चक्खाण  
 यादनरहै । झूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेंमें आई होय  
 पिण जाण्यां पीठे तत्काल नाख देवै तो पच्चक्खाण जाजै नही । जा-  
 ण्यां पठै नक्कण करै तो पच्चक्खाण जाजै ॥ १ ॥ पन्नन का-  
 लेणं । ( व्याख्या ) कालकी प्रवृत्तता । आकाशें गर्द उमतीहोय । वा  
 आकाशें बढ़लगाया होय । तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे । सूरज  
 न दीसै । तव न्नरमसुं पच्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर जोजन  
 करै तो व्रत जंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं । ( व्याख्या ) सहसा-  
 कार कहीयै अत्यन्त उतावलकै जोगे । अथवा । अकस्मात् विलोक्तां  
 तोलतां घृत प्रमुखको ठांटो मुखमें पडै । तो । व्रतजंग न होय ॥ २ ॥ दि-  
 सा मोहेणं ( व्या० ) दिशकों अजाणतो वैसे । जो दिशा झूल मनुष्य ।  
 पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जाणें । इस कारणसैं । पच्चक्खाण काल पूर्ण-  
 हुवा विनां जोजन करै तो व्रतजंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं ( व्याख्या )  
 साधूकै वचनसैं उगघाडा पोरिसी आदिक न्नरमसंयुक्त सुणके । पच्चक्खाण  
 काल पूरण हुवो जाणि कर जोजन करै तो व्रतजंग न होय ॥ ५ ॥ सब  
 समाहि वत्तिया गारेणं ( व्याख्या० ) पच्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम-  
 हीज अकस्मात् शूलादिक रोग ऊपजै । तिससैं कदास परिणामीकी थिरता  
 नरहै । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तव उसरोगीकुं रोग मिटावण वावत  
 औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पच्चक्खाण जंग नही होय ॥ ६ ॥  
 महत्तरागारेणं ( व्या० ) पच्चक्खाण पावणेंसैं । जितनी कर्मोंकी निर्ज-  
 रा होती है । उसनिर्जरासैं अधिक निर्जरा होनेका कारण । और कोई

पुरुषसँ वन नहीआवै । औसा जो । चैत्यसंघादि प्रयोजन होनै  
 सँ । पञ्चखाण काल पूरण हुवा बिनां जोजन करै तो व्रत जंग न होय  
 ॥ ७ ॥ सागारी आगारेण ( व्या० ) गृहस्थ देखतां साधु जोजन न करै ।  
 औसी जिनराजकी आज्ञाहै । इसीसँ कोई साधुनै एकासनादिक पञ्च-  
 खाण किया है । जोजन करनेकुं बैठाहै । तिस वखत कोईक  
 गृहस्थ साधु पास आय बैठे । तब साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर ओर-  
 ठिकाणें जायके जोजन करै तो व्रत जंग नहोय ॥ और गृहस्थकों यह  
 आगार ऐसँ है ) कि जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि  
 कर ओर ठिकाणें जोजन करै तो पञ्चखाण जंग नहोय ॥ ८ ॥ आनु-  
 दण पसारेण ( व्या० ) पगप्रमुख जो एकठे करनेसँ । तथा पसारनेसँ ।  
 थोडासा आसन चल जाय । तो व्रतजंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अवंचु-  
 छाणेण ( व्या० ) आपका गुरु आणेंसँ । तथा । आपसँ कोई वमा पुरुष  
 आणेंसँ । विनय निमित्ते । एकासणादि व्रतमें । जोजन करतो पिण  
 आसन ठेग उठ खडो होय । तोपिण व्रत जंग नहोय ॥ १० ॥ पारिचाय-  
 णियागारेण ( व्या० ) ( सर्व पञ्चखाणां में यह आगार साधुका है )  
 जो आहार नाखणेंसँ बहुत जीव विराधना होती जाण कर ( गुरु कहै )  
 यह सरस आहार है परठोमति ऐसी आज्ञा देवे ( तो ) एकासणादि  
 व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो पिण व्रतजंग नहोय  
 ॥ ११ ॥ लेवालेवेण ( व्या० ) जोजन करनेका थाल प्रमुख जाजन ।  
 तिसके मांदि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ  
 प्रमुख सँ पूंठगेरा । परंतु किंचित् वेमालुमसा रह गया होय ।  
 उस जाजनमें आयंविलादि व्रतधारी जोजन कर लेवे । तो व्रत जंग नहोय  
 ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेण ( व्याख्या ) आयंविलादि पञ्चखाणमें ॥  
 नही खाणें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । ( तिसका फरस ) खाणें जोग्य  
 द्रव्यसँ किंचित् होगया होय । वहखाणें में आजावै । तो व्रत जंग नहोय ।  
 ॥ १३ ॥ गिहस्थ संसिणेण ( व्या० ) जोजन पुरुषे जिस सेती । औसा  
 कुडग आदि जाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सँ वेमालुम खरडा होय । प्र-  
 त्यक्ष निजरसँ कदाचित्मालुम न होय । जो उस वासनसँ जोजन पुरसँ



तो ब्रत जंग न होय ॥ १४ ॥ पडुच्चमुक्खिएणं ( व्या० ) सर्वथा लूखी  
रोटी खाखराप्रमुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं वेमालुम चोपडनें में आ-  
या होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो ( नीवी )  
पच्चक्खाण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आज्ञावेतो ब्रतजंग न होय ॥ १५ ॥  
॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽयं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ दोचेव नमुकारो । आगाराठवहुंति पोरसिए । सत्तेवय पुरमट्टे । एगास  
एंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग ठाणस्तअो । अठे वय आयंवलंमि आगारा । पंचे  
वयजत्तठे । ठप्पाणे चरिमचत्तारी ॥ २ ॥ पंचचत्तरो अज्जिग्गहे । निवीए  
अठ नवय आगारा । अण्णावरणे पंचत्त । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥  
॥ ❀ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥ ❀ ॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥  
मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥  
( यहच्यार पडिलेहण मुहपत्तीखोलतीवरखत कही जै ) काम  
राग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं ( य  
हसातेवोल प्रथम कही जै ) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सु  
धर्म ३ ॥ आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधर्म  
३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥  
आदरुं । ( यहनवपडिलेहणमावै हाथे करीजै ) । ज्ञानविरा-  
धना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥  
परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति  
३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरु १ ॥ वचनदंरु २ ॥ कायदंरु  
३ ॥ परिहरुं ॥ ( यह नव पडिलेहण जीमणै हाथे करीजै ।  
यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पडि  
लेहण अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ मायै निलाडै ॥ रुद्धिगारव  
 १ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं ॥  
 मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिच्छादंशणशल्य  
 ३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मान २ ॥ (जीमणैकांधै  
 कारवे परिण) ॥ माया १ ॥ लोभ २ ॥ (मावे कांधै वगलै  
 परिण) ॥ हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ (मावे हाथे परिहरुं) ॥  
 भय १ ॥ शोक २ ॥ डगुंठां ३ ॥ (जीमणै हाथे परिहरुं) ॥  
 पृथ्वीकाय १ ॥ अण्णकाय २ ॥ तेजकाय ३ ॥ (मावे पगे परि  
 हरुं) ॥ वाजकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ व्रसकाय ३ ॥ (जी  
 मणैपगे परिहरुं) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ \* ॥  
 ॥ \* ॥ थापनाचार्यनी पडिलेहणकरतां ॥ १ ३ बोलचिंतवी  
 जै सो लिखिते हैं ॥ सुखस्वरूपधारुं १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन  
 ३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५ ॥ प्ररूपणासुद्धि ६ ॥  
 दर्शनासुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालूं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनु  
 मोडूं १० ॥ मनोगुप्त ११ ॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥  
 एवं १३ ॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ \* ॥

॥ अथ आलोचण लिख्यते ॥

॥ \* ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें । जोमें जीव विराध्या  
 होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अण्णकाय । सातला  
 ख तेजकाय । सातलाख वाज काय । दशलाख प्रत्येक वनस्प  
 ती काय । चवदेलालाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख  
 वेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिंद्री । चारलाख देव  
 ता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्येच । चवदेलाला  
 ख मनुष्य । एवं चारगति । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहण्यो होय । हणायो होय । हणतां प्रते नलोजा  
 एयो होय । तेसहू मन । वचन । कायाइं करी । मिच्छामि डुक्कडं ॥  
 प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादान ३ । मैथुन ४ ।  
 परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग  
 १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अज्याख्यान १३ । परपरीवा  
 द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ ।  
 मिथ्यात्वशल्य १८ । एअहारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा  
 या होय । सेवतांप्रते नलोजाण्यां होय । ते सहू मन वचन  
 कायाइं करी । मिच्छामि डुक्कडं ॥ \* ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र  
 पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधर्म  
 नी आसातनाकरी होय । पनरैकर्मदाननी आसेवनाकरी होय  
 राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । प्रोक्तकथा । करी होय ।  
 और जो कोई परनिंदा ये करी । पाप कियो होय । करायो होय  
 करतांप्रते अणुमोद्युं होय । ते सर्व । मन । वचन । कायाये  
 करी । दिवसअतीचार आलोयणैकरी । पडिक्कमणा माहें  
 आलोउं । तरस मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति लघुअतीचार ॥

॥\*॥ अथ पाखी चौमासी संवहरी वृद्धअतीचार ॥\*॥

॥\*॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि ।  
 आयरणंआयारो । इह एसो पंचहान्निण्डं ॥ १ ॥ अर्थः ॥ ज्ञाना  
 चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥ वी  
 र्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार ।  
 पक्कदिवसमांहि । सूदम बादर । जाणतां अजाणतां । हुओ  
 होय तेसहू मन वचन कायाइं करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ \* ॥ ( तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे । उत्रहा  
 णे तहयनिन्नवणे । वंजण अत्यतउन्नए । अष्टविहो नाणमायारो  
 ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिउंगुणिउं नही । अकालेपढिउं ।  
 विनयहीन । बहुमानहीन । उपधानहीन । श्रीविपाध्यायकनें ।  
 नहीपढिउं । अथवा अनेराकनें पढिउं । अनेरो गुरु कह्यो ।  
 व्यंजन अर्थ तउन्नय कूडोपढ्यो । देववांदणें । पढिक्कमणें ।  
 सिज्जाय करतां पढतां गुणतां । कूडोअद्धार कानेमात्रें । अधि  
 को उंगो । आगलपाठलन्नएयो । सूत्र अर्थ कूडाज्जाया । ज्ञानी  
 वीसास्यो । तपोधनतणेंधर्म । काजो अणकधस्यै । दांमीअण  
 पढिलेही । वसती अणसोधी । असिज्जाई अणोळाकालवेला  
 मांहि । दसवैकालिक प्रमुख । सिद्धांतज्जायो गुणयो । योगव  
 ह्यांपरस्यै ज्ञायो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाठी पोथी ठवणी कवली  
 सांपडा सांपडी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें । आसात  
 ना हुई । पगलागो । थूकलागो । जूंसीसैमूंक्यो कनेंउतां आहार  
 नीहारकीधो । ज्ञानद्रव्य ज्ञेयज्ज्ञेयकीधो । प्रज्ञापराधे वि  
 णास्यो । विणसतोज्जेख्यो । ठतीसकें सार संत्राल नकीधी ॥ ज्ञान  
 वंत प्रतें मत्तरवह्यो । अवज्ञा आसातना कीधी । कोईप्रतें ज्ञा  
 तां गुणतां प्रवेप मत्तर अंतराय अपघातकीधो । मतिज्ञान ।  
 श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच  
 ज्ञानतणी । असद्वहणाकीधी । कोई तोतलो वोवमोदस्यो वित  
 क्यो । आपणा जाणपणातणो गर्वचित्तव्यो ॥ \* ॥ अष्टविधज्ञा  
 नाचारविषय जोअतीचार । पद्धदिवसमांहि । सूद्धमवादर  
 जाणतां अजाणतां हुवोहोय । तेसहू मन वचन कायाईकरी  
 मिच्छामिउक्कडं ॥ \* ॥ दशनाचारनाआठअतीचार ॥ \* ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निवित्तिगिच्चा अमूढ दिडीअ । उवबू  
 हथिरीकरणे । वल्लपपन्नावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषै  
 निस्सकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधस्यो नही । सगलाई  
 मत जलाठे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषै  
 निःसंदेहबुद्धिधरीनही । चारित्रिया साधु साधवीतणा मल्लिमली  
 नगात्रेदेखी । डुंगंठजपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रप्तावना  
 देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहि गुणवंततणी । अनुप  
 वृहणा । अस्थिरीकरणं । अवात्सल्य अप्रीति अप्रकृति चिंत  
 वी । संघमांहि थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिबतें प्रप्तावनानकी  
 धी । देवद्रव्यविणासिनु । विणसतुं उवेषीनु । ठतीशक्तें सारसं  
 जाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनप्रवनतणी  
 चौरासी आसातनाकीधी । गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी ।  
 अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंगमपारखे देवपूज्या । वासकूं  
 पी कलसतणो ठबकोलागो । मुखतणीवांफलागी । ठवणारिय  
 हाथ थकी पडिनु । पडिलेहवो वीसाखो । नवकरवालीनें पगला  
 गो ॥३॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचारण ॥ ३ ॥ \* ॥

॥३॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुतो ।  
 पंचहिंसमर्शहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ  
 नायवो ॥१॥ इरियासुमती १ ॥ ज्ञाषासुमती २ ॥ एषणासुमती  
 ३ ॥ आयाणप्रममत्तनिकखेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे  
 लज्जसंधाणपारिठावणियासुमती ५ ॥ मनोगुप्ती १ ॥ वचनगुप्ती  
 २ ॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूमीपरें पाली  
 नही ॥३॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईजिको  
 अतीचारण ॥ ४ ॥ \* ॥

॥४॥ विसेपतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारहव्रत  
 श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥४॥ संका कंसव विगंठा । पसं  
 स तहसंयवो कुलिंगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणी । बल अति  
 सय ज्ञानलक्ष्मी गांजीयादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारित्रि  
 याना चारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । (आकांक्षा) ब्रह्मा  
 विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विष्णायग ।  
 हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ । देव  
 देहराना प्रभावदेखी । रोगिं आतंकै । इहलोक परलोकार्ये पू  
 ज्या मान्या । बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी । प्ररमा । प्रगत ।  
 लिंगिया । योगी । दरवेश । अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्र  
 चमत्कारदेखी । परमार्थ जाण्यांविन भूल्या । अनुमोद्या ।  
 कुशास्त्रसीख्या । सांभल्या । सराय । संवच्चरी । होली ।  
 बलेव । माहीपूनिम । अजापडिवा । प्रेतबीज । गोरबीज ।  
 विनायगचोथ । नागपांचम । जूजणाठ । शीलसातम । द्रो  
 आठम । नतली नवम । अहवदसम । व्रतश्रृंगारस । वछ  
 वारस । धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराश्रण ।  
 नवोदक । ज्यागन्नेगउत्तारणा कीया । पीपलपाणीयाल्या । घ  
 लाव्या । घरवाहिर । कूई तलाव नदी समुद्र कुंरुपुन्यहेतु  
 स्नानकीया । दांनदीया । ग्रहण शनीश्वर माहमास नवरात्रि  
 नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीया कराव्या  
 विचिकित्ता । धर्मसंवन्वियारुलतणो संदेहकीधो । जिणअरि  
 हंत । धर्मनाआगर । विह्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग दातार ।  
 देवाधिदेवबुद्धे सुद्धत्तावे नपूज्या नमान्या । महातमाना ज्ञात  
 पाणीतणी डुगंठाकीधी । कुचारित्रिया देखी । चारित्रियाऊप

रि अज्ञावहुन । मिथ्यात्वीतणी प्रज्ञावना देखी । प्रसंसाकीधी ।  
 प्रीतिमांडी । दाक्षिणलगे तेहनोधर्म मान्युं ॥३॥ श्रीसमकित  
 विषय । जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्मवादर  
 जाणतां अजाणतां हुन होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि  
 ङ्गामिडुकडं ॥१॥ ❀ ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच  
 अतीचार ॥३॥ वह बंध ठविच्छेए । अश्चारेभतपाणवुच्छेए ॥  
 विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघान प्रहारघाल्यो । गाढे बंध  
 नवांध्या । घणें प्रारपीड्या । निर्वांठन कर्मकीधा । चारपांणी  
 तणी वेला सारसंज्ञावनकीधी । लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा  
 व्युं । तेणें प्रूखे आपणजीम्या । अणगलपाणी वावस्यो । रूढे  
 गल्यो नही । गलाव्योनही । अणगलपांणीजील्या । लूगडा  
 धोया । ईंधण अणसोध्योजाल्युं । साप कानखजूरा । सुलह  
 ला । माकड । जूंआ । गोगिंमा । साहतां मूआंदूषव्यां । रूढे  
 आत्कनमूंक्या । कीडी । मकोडी । उदेही । घीवेली । कातरा  
 चूमेलि । पतंगिया । मेरुका । अलसिया । ईली । कूति ।  
 मांस । मसा । बगतरा । माखीप्रमुख । जेकेईजीव । विणठा  
 चांपिया । दूहव्या । माला हलावतां । पंखी काग चिडकला  
 ना ईमा फूटा । अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव । विणठा ।  
 चांप्या । दूहव्या । हालतां । चालतां । अनेरुं कांश्कामकाज  
 करतां विदंसपणू कीधूं । जीवरक्षारूढे नकीधी । संखारोसूक  
 व्यो । सुल्याधान तावडैदीधा । दलाव्या । भरडाव्या । खाट  
 लातावडैजाटक्या । मूंक्या । मूंकाव्या । जीवाकुलभूमिनीपावी ।  
 बासीगार राखी । रखावी । दलणें खांरुणें नीपणें । रूढी जय  
 णा नकीधी । आठमचउदसना नियमज्ञागा । धूणीकरावी ॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषयं । अनेरो ॥ १ ॥ ॥ बीजो थूल  
मृपावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ॥ ॥ सहस्सारहस्स  
दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें ।  
अयुक्तोआलदीधो । किणएकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखी ।  
तुहे तो राजविरुद्धचित्तवोठो । इत्यादिक कहुं । स्वदारमंत्र  
भेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो ।  
किणहीनं कूडी बुद्धिदीधी । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखन्न  
री । आपणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । भूमि । संबंधि  
या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको  
जूठ वोल्हुं । हाथ पग ञणी गालदीधी । करमकामोडया ।  
अधर्मवचन वोल्या ॥ ॥ ॥ बीजै मृपावादव्रत ॥ २ ॥ ॥  
तीजै अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडण्य  
नंगे । घरबाहिर खेत्त खलैपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीवी  
दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधी । चोरधामीत प्रतें  
संबलदीधुं । संकेतकहुं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु  
राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा भेलसंभेल कीधा  
खोटै तोल मान माप बुहखा । माणचोरीकीधी । साटै लांच  
लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांव  
कीधी । किणहीनं लेखैपलेखे भूलव्युं । पडीवस्तु नलवीलीवी  
तीजै अदत्तादान व्रत ॥ ३ ॥ ॥ चौथै स्वदारसंतोषमैथूनव्रतें  
पांच अतीचार ॥ अपरिगृहीतयाइत्तर । अणंग वीवाह तिब  
अणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन । इत्तर परिगृहीतागमन ।  
विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विपै ।  
दृष्टिविपर्यासकीधी । सरागवचन वोल्या । आवम चउदस



तेलअधिकआएया । हीडोलैहीच्या । राजकथा । देसकथा ।  
 मुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त रोद्र ध्यान  
 ध्याया । कर्कसवचन बोलया । करडकामोडया । संजेडालाया  
 जेंसा सांढकूकड मीढा श्वानादिजुऊता कलहकरताजोया खा  
 धिलगै अदेखाई चिंतवी । माटी । मीतुं । कण कपासिआ ।  
 काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयठा । आलेवनस्यतीखुंदी ।  
 गठ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक  
 तणा प्राजनउघाडा सूक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ मारवी  
 नंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा  
 हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागवेष लगै । एकनेरिद्धि  
 परिवारबांठी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थ  
 दंडव्रतविषय ॥ ७ ॥ ❀ ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती  
 चार ॥ ❀ ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । सामायकलीधै । मनआहट  
 दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यबोल्यां । कायअणपडिलेह्युं हलाव्युं ।  
 ठतीविलाई सामायकनलीधुं । सामायकलेई उघाडैमुखबोल्या । ऊं  
 घआवीकीधी । बीजदीवातणी उजोहीलागी । कण कपासी  
 या माटी मीतुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्यं  
 चना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यंची आमडी । मुहपतीउसंघ  
 डी । सामायकअणपूरउंपारिउं । पारउंवीसारिउं ॥ नवमेंसामा  
 यकव्रतविषय ॥ ८ ॥ ❀ ॥ दशमेंदेशावकासिक व्रतै पांचअ  
 तीचार ॥ ❀ ॥ आणवणे पेसवणे ॥ आणवणप्यउंगे । पेसवण  
 प्यउंगे । सहाणुवाए । खूवाणुवाए । बहियापुग्गलपकरेवे । नि  
 यमितभुमिकामांहि । बाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हा  
 यी बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनारवी

आपणपुं ठुं जणावुं ॥३॥ दशमें देशावकासिकव्रत ॥१०॥  
 इग्यारमेषोषधोपवासव्रतें पांच अतीचार ॥ ३ ॥ संथारुच्चार  
 विही । पमावतहचेव जोअणाजोए ॥ पोसहलीधै । संथारात  
 णीझूमी बाहिरलाथंमिला । दिवसै सोध्यापडिलेह्या नही ।  
 मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिं । अणपुंजी झूमिकाई परठ  
 विं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन  
 कह्युं । परठयांपूठै बारत्रिणि बोसिरामि ९ नकह्युं । पोसहशां  
 लामांहि । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी  
 सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेज्जकाय । वाज्जकाय ।  
 वनस्पतीकाय । त्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप उपद्रवहुआ ।  
 संथारा पोरसितणो । विधि नणं वीसारिं । पोरसिमांहिं  
 ध्या । अविधिसंथारुंपायसुं । कालवेलायें पडिकमणुं नकीधुं  
 पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवावीसारि  
 या । पोसहअसुरोलियो । सवारोपारियो । पव्वतिथि आवी  
 पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्रत ॥११॥ ३ ॥  
 वारमै अतिथि संविज्जागव्रतें पांच अतीचार ॥ ३ ॥  
 सच्चित्ते निकरवणे ॥ सच्चित्तवस्तु हेठै । ऊपरिथकै ।  
 महातमाप्रतेंअसूऊतुं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धै सूऊतुं फेडी  
 असूऊतुंकीधुं । देवातणीबुद्धै असूऊतुं फेडी । सूऊतुंकीधुं । आ  
 पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा  
 तमातेडया । मच्चरलगैदांनदीधुं । गुणवंत आव्यै भगति नसाचवी  
 । ठतीसक्तिसाधर्मिक वात्सल्यनकीधुं । अनेराईधम्मक्षेत्रसी  
 दाता । ठतीशक्तैऊधस्यानही ॥३॥ बारमैअतिथिसंविज्जागव्रत  
 ॥१२॥ ३ ॥ संलेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए

इहलोकासंसप्यन्ते । परलोकासंसप्यन्ते । जीविआसंसप्यन्ते ।  
 मरणासंसप्यन्ते । कामप्रोगासंसप्यन्ते । इहलोक मनुष्यप्रव  
 मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव च-  
 क्रवर्त्ति पदवांठ्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी  
 वांठी । सुखआये जीववातणी वांठाकीधी । दुखआये मर  
 वातणी वांठा कीधी । काम प्रोग तणी इच्छा कीधी ॥ \* ॥ संलेह  
 णाव्रतविण ॥ \* ॥ तपाचारवारेजेदै ॥ ठअच्यंतर । ठवाहिर ।  
 अणसणमूणोश्रिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पव्वति  
 थि ठतीशक्तिकीधुं नही । (उणोदरी) कवल पांचसातऊणार  
 ह्यानही । (द्रव्यसंक्षेप) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही ।  
 आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । (संलीणता) अंगोपांगसं  
 कोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूठसी । साठपो  
 रसी । पुरमुह । एकासणो । वैआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख प  
 च्चक्रवाण पारवावीसाह्या । वैसतां नवकारअण्युनही । ऊठतां  
 दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । का  
 चोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ \* ॥ बाह्य तपव्रतविण ॥ \* ॥ अच्यं  
 तरतप ॥ \* ॥ पायच्चित्तंविणउण । गुरुकनें मनसुद्धे आलोयण  
 लीधीनही । गुरुदत्तप्रायच्चित्ततप लेखासुद्ध पुहचाडयुं नही ।  
 देवगुरु संघसाहम्मीप्रते विनयसाचव्योनही । वाचना पृष्ठना  
 परावर्त्तना अनुप्रेदया धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जायकी  
 धोनही । धर्म ध्यान शुद्धध्यान ध्यायोनही । कर्म कृत्य नि  
 मित्त लोगरस दस वीसनुं काउसग्गनकीधो ॥ \* ॥ अभ्यंतरत  
 पविषइण ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ \* ॥ अणगुहियब  
 लविरिण । परक्रमइजोजहुंतवाणेषु । जुंजइ अजहायामं । ना

यद्येवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा  
सामायक दान शील तप भावना प्रमुख धर्मकृत्य तणें विषै ।  
मन वचन कायातणो ठतुं बलवीर्यगोपवुं । रूढापंचांग स्वमा  
समण नदीधा बैठांपडिक्कमणंकीवुं ॥ \* ॥ वीर्याचारविषण ॥  
॥ \* ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मेसु ।  
वारसतव विरिअ तिगं । चणवीसं सय अइयारा ॥ १ ॥ ॥\*॥

॥\*॥ पडिसिद्धाणंकरणेण । जिनप्रतिपिद्ध । बावीसअन्नद ।  
वत्तीसअनंतकाय । बहुबीजभक्षण । महाआरंभ महापरिग्रहादि  
क कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रा  
दिकनकीधा । जीवाजीवादिविचारसदहियानही । आपणी कुम  
तिलगैउतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणातिपात १ । मृपावाद २ । अद  
त्तादान ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ ।  
लोभ ९ । राग १० । वेप ११ । कलह १२ । अज्याख्यान १३ ।  
परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृपावाद  
१७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअह्वारहपापस्थानकर्माहि ।  
जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्मै ।  
श्रीसम्यक् मूलवारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको  
अतीचार । पद्ददिवसमांहि । सूक्ष्म वादर जाणतां अजाण  
तां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिन्नामिडुकडं ।  
इति श्री श्रावकूकैवारहव्रतना अतीचार संपूर्णम् ॥ \* ॥

॥\*॥ अथ जय तिहुअण वत्तीसीलि ॥\*

॥\*॥ जय तिहुअण वरकण्णरुक्ख जयजिणधन्नंतरि ।  
जयतिहुअण कल्लप्पकोस डुरिअ करि केसरि । तिहुअण जण

अविलंघियाण भुवणतयसामिअ । कुणसु सहाइ जिणेषपास  
 थंनणयपुरठिअ ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंतिऊत्ति वर पुत्त कलत्तहि  
 ॥ धण सुवण हिरण पुण जण भुंजहिरज्जहि । पिकखहि  
 मुक्ख अंसंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प  
 रुक्ख सुक्खहिकुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण कण  
 नहुठ सुकुठिण । चक्खुक्खीण खणखुण नरसद्धिअ सूलिण । तु  
 हजिणसरण रसायण लहुहुंति पुणएव । जयधणंतरिपास  
 महवि तुहुं रोगहरोन्नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस संत तंत सिद्धि  
 अपयत्तिण । भुवणसुअ अठविह सिद्धिसिज्जइतुहनामिण ।  
 तुहनामिण अपवित्तंवि जणहोइ पवित्तं । तंतिहुअण क  
 द्धाणकोस तुहुंपासनिरुत्तं ॥ ४ ॥ खुद्वपत्तइ संत तंत जंताइ  
 विसुत्तइ । चरधिरगरत्त गहुग्गरवग्ग रिउवग्गविगंजइ । इत्थि  
 यसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । इरिअइं हरत्त सुपा  
 सदेव इरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंनेइमीम दप्पुद्धर  
 सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलयल  
 चारि रत्तइखुद पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआ  
 णजयपास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थ अणत्थहित्थ भत्ति  
 ष्शरनिज्जर । रोमंचंचिअ चारुकाय किणरनर सुरवर । जसु  
 सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु । सोन्नवणतय  
 सामिपास महमद्वउरिउवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलन्न  
 सल नयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदन्नवणतय दि  
 णयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंनणय  
 ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवणुअवणु सु  
 णुवणिउण्णहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंजायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिञ्च । सोजोइअम  
 एकमलभसल सुहपासपवञ्च ॥ १९ ॥ भयविघ्नवरणऊणिर  
 दसणथरहरिअसरीरय । तरलिअनयण विमुणमुणगगर  
 गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर ।  
 महविज्जवि सिअसइपास भयपंजरकुंजर ॥ २० ॥ पइं पासवि  
 विअसंतनित्त पतंतपवत्तिय । वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु  
 लिय । मणहिमणुसणपुणअपाणंसुरनर । इयतिहुअण आ  
 णंदचंद जयपासजिणेर ॥ २१ ॥ तुहकछाणमहेसुघंट टंका  
 रवपिछिअ । वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ  
 लिअ पवत्तयंतिभवणेहिमहूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज  
 यपाससुहुञ्चव ॥ २२ ॥ निम्मलकेवल किरणनियर विहुरिय  
 तमपयहर । दंसिअसयलपयत्थसत्थवित्थरिअपहाजर । क  
 लिकलुसिअ जणघूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु  
 हरपासनाह भुवणत्तयदिणयर ॥ २३ ॥ तुहसमरणजल वरि  
 सत्ति माणवमइमेइणि । अवरारवरसुहुमत्थबोह कंदलदलेइ  
 णि । जायइफलभर भरियहरिय उहदाहअणोवम । इयमइ  
 मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ २४ ॥ कयअविकल क  
 छाणवलि उल्लूरिअउहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग डुग्गइग  
 मवारणुं । जयजंतुहजणएणतुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मथ  
 म्मसोजयनपास जयजंतुपिआमहु ॥ २५ ॥ भुवणारणनिवा  
 सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखितवाल खुद्दासुरपसु  
 वय । तुहउतठसुनठसुठु अविसंतुलचिठहिं । इयतिहुअण व  
 णसीहपास पावाइ पणासहिं ॥ २६ ॥ फणिकणकारफुरंतरय  
 ण कररंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निवुप्पल

सामल । कमठासुरवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ । जयपच्च  
 कखजिणेषपास थंनणयपुरिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरलुपमा  
 णुनेय वायाविविसंठलु । नियतणुरविअविणयसहाव आलस  
 विहिलंघलु । तुहमाहणपमाणदेव कारुणपवत्तन । इयमइमा  
 अवहीरपासपालहिविलवंतन ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिण्येयकलुणु  
 किंकिंवनजंप्पिण । किंवनचिठ्ठिणकिठ्ठदेव दीणयमविलंबिण ।  
 कासनकियनिप्फल्ललल्ल अह्महिंडुहत्तइ । तहविनपत्तताणकिं  
 पि पइंपहुपरिचत्तइ ॥ १९ ॥ तुजं सामिहुतुजं मायवण तुजं मि  
 त्तपियंकरु । तुजंगइतुजंमइतुंहिजताण तुजंगुरुखेमंकरु । हउंउ  
 ञ्जरत्तारिअवरानरावलनिञ्जग्गन । लीणउतुहकमकमल स  
 रण जिणपालहिचंगन ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा  
 वियसुहसय । किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ।  
 किविगंजिअरिउवग्गकेवि जसधवल्लिअमूअल । मइंअवहीर  
 हिकेणपाससरणागयवत्तल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्पण  
 पनंअण । तुजंजिणपासपरोवयार करुणिक्कपरायण । सत्तुमित्त  
 समचित्तवित्ति नयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गनंवि म  
 इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंउहुविहइहतत्तगत्तुजंउहनासणप  
 रु । हउंसुयणहकरुणिक्कठाणतुजंनिरुकरुणाकरु । हउंजिणपा  
 सअसामिसालतुजंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंऊखंत  
 इयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविन्नागनाहनहुजोअणतु  
 हसम । ञवणुवयारसहावन्नाव करुणारससत्तम । समविसमइ  
 किंघणनिणइ भुविदाहसमंतन । इयउहबंधवपासनाहमइंपालथु  
 णंतन ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएविअणविकिविजुग्गय ।  
 जंजोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइनाहिणचित्तउ । तोजुग्गउअहमेवपास पालहिमइं चंगउ ॥  
 ॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेस किविमणहिदीणह । जंपा  
 सविनवयारुकरइतुहुंनाह समग्गह । सुच्चिअकिलकद्धाणजेण  
 जिणतुम्हपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥  
 ॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किंपुण ।  
 हउंडुकिवउ निरु सत्तचत्त उक्कउउस्सुयमण । तंमणउ निमि  
 सेणणण एउ विज्जइ लज्जइ । सच्चंजंभुकिवयवसेण किं उंवरुप  
 चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअणपयासिउ ।  
 किज्जउजंनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपिउ । अणुणजिणजगतुह  
 समोविदस्सिखणदयासउ । जइअवगिणसितुंहिजअहहकिहहो  
 सुहयासउ ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलविउ  
 तउजाणुंजिणपासंतुह्म हउंअंगीकरिअउ । इयमहयत्तिअजंन  
 होइसातुहउंहावण । रक्खंतहनियकित्तिण्यजुज्जइअवहीरण ॥  
 ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेव इअणवणमहूसउ । जंअणलिय  
 गुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिअउ । इयमइंपसियसु पासना  
 ह थंअणयपुरिअ । इयमुणिवर सिरिअअयदेव विणवइआणिं  
 दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंभनक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ परकीसुत्र लि । ॥ \* ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे  
 यरिसी । महारिसिनाणंचवंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसाधर ।  
 मविराहिज्जणतिन्नसंसारा । तेमंगलंकरिता । अहमविआराह  
 णाप्तिमुहो ॥ २ ॥ मममंगलमरिहंता । सिद्धासाहसुयंचधम्मो  
 यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अज्जवयामहवंचेव ॥ ३ ॥ लोगंसिंज



जाणामि तरुसन्नते पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पा  
 णं वोसरामी । सेमुसावाए चउ विहे पन्नते (तंजहा) दवउ खित्तउ  
 कालउ प्रावउ दवउणं मुसावाएसवदवेसु खित्तउणं मुसावाए लोए  
 वा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा रानवा प्रावउणं मुसावा  
 ए रागेणवा दोसेणवा जंपियसए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स  
 अंहिं सालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाण  
 स्स अहिरणसुवणियस्स उवसमप्पन्नवस्स नववंनचेरगुत्तस्स  
 अप्पयमाणस्स निक्खवावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिस  
 रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्विया  
 रस्स निव्विती लक्खणस्स पंचमहवय जुत्तस्स असंनिहि  
 संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमण  
 पक्कवशाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए  
 अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा पमाएणं रागदोसपन्निवद्धयाए  
 वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्ढयाए तिगारवगरुयाए चउ  
 कसाओवगएणं पंचेदियवसहेणं पन्निपुन्नं नारियाए सायासोक्ख  
 मणु पालयंतेणं इहंवा नवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु मुसावाओ  
 नासिओवा नासाविउवा नासिज्जंतोवा परेहिंसुमणुन्नानं तंनिं  
 दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं  
 निंदामि पटुपन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चक्खामि सवमुसावायं जा  
 वज्जीवाए अणिसिउहिं नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया  
 विज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेन समणु जाणामि (तंजहा) अरिहंतस  
 क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं  
 एवंहवई निक्खूवा निक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय  
 पावकम्मे दियावा रानवा एगउवा परसागउवा सुत्तेवा जागरमाणे

वा एसखलुमुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणु  
 गामिए पारगामिए सब्बेसिपाणाणं सब्बेसिंजूयाणं सब्बेसिंजीवाणं  
 सब्बेसिसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अति  
 णणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्थे  
 महागुणे महाणुत्तावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे  
 तंडुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलात्ताए संसारु  
 तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेन्नंतेमहद्वए उव  
 छिन्नमिसद्धानुमुसावायानुवेरमणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेन्नंतेमहद्वए  
 अदिन्नादाणानुवेरमणं सब्बंन्नंते अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगा  
 मेवा नगरेवा रणेवा अणंवा वज्जंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अ  
 चित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिएहज्जा नेवन्नेहिंअदिन्नंगिएहावि  
 ज्जा अदिन्नंगिएहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिवि  
 हं तिविहेणं मणेणं वायाए काणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नंन समणुजाणामि तस्सन्नंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहा  
 मि अण्णाणंवोसरामि सेअदिन्नादाणेचउविहे पन्नत्ते ( तंजहा )  
 दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं अदिन्नादाणे गहण  
 धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तणं अदिन्नादाणे गमेवा नगरेवा रणेवा  
 कालणं अदिन्नादाणे दियावा राउवा भावणं अदिन्नादाणे रा  
 गेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवल्लि पन्नत्तस्स अ  
 हिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स  
 अहिरण सुवणियस्स उवसमण्यन्नवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अण्य  
 यमाणस्स निरकावित्तियस्स कुक्खीसंवलस्स निरगिसरणस्स  
 संपक्खालियस्स चित्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स नि  
 वित्ति लक्खणस्स पंचमहद्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि

संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमणपङ्कवसाणफल  
 स्स पुर्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणन्निगमेणं अ  
 निगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवधयाए वालयाए मोहयाए मं  
 दयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसानवगएणं पंचेदिय  
 वसट्टेणं पडिपुन्न प्रारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाप्पवे  
 अन्नेसुवा पवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहावियंवा धिणं  
 तंवा परेहिंसमणुन्नान्तंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे  
 णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्च  
 क्खामि सवंप्रंतेअदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिसिउहिं नेवस  
 थंअदिन्नंगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिएहाविज्जा अदिहंगि  
 एहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि(तंजहा)अरिहंतसक्खियं सिद्धस  
 क्खियं साङ्गसक्खियं देवसक्खियं अप्सक्खियं एवंहवई निक्खू  
 वा निक्खूणीवासंजय विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दिथा  
 वा रान्वा एगलंवा परिसागलंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु  
 मेज्जणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा  
 मिए सवेसिंपाणाणंसवेसिं भूयाणं सवेसिंजीवाणं सवेसिंसत्ताणं  
 अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी  
 डणयाए अपरिआपणयाए अणुहवणयाए महत्थे महागुणे म  
 हाणुप्पावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्ख  
 क्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणा  
 ए तिकहु उवसंपङ्कत्ताणं विहरामि ॥ तच्चेप्रंतेमहवएअप्पुठिन्  
 मिसवानं अदिन्नादाणान्वेरमणं ॥३॥ अहावरेचउत्थेप्रंतेमहवए  
 मेज्जणान्वेरमणं सवंप्रंतेमेज्जणं पच्चक्खामि । सेदिवंवा माणुसं  
 वा तिरिक्खजोणियंवा नेवसथं मेज्जणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेज्जणं

सेवाविज्ञा मेज्जणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि : जावज्जीवाए  
 तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काणं नकरेमि नकारवेमि  
 करंतंपि अन्नंन समणुजाणामि तस्सन्नंते पडिक्कमामि निंदामि  
 गरिहामि अण्णाणं वोसरामि ॥ सेमेज्जणेचनव्विहेपन्नते (तंजहा)  
 दव्वनं खित्तनं कालनं भावनं दव्वणंमेज्जणे रूवेसुवा रूवसहग  
 एसुवा खित्तनंमेज्जणे उह्लोएवा अह्लोएवा तिरियलोएवा  
 कालनं मेज्जणे दियावा रातवा भावनं मेज्जणे रागेणवा दोसे  
 एवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलपणत्तस्स अहिंसाल  
 कवणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर  
 न्न सुवणियस्स उवसम प्पन्नवस्स नववंनचेरगुत्तस्स अप्पय  
 माणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गीसरणस्स  
 संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि  
 तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ  
 विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणं पज्जवसाण  
 फलस्स पुर्व्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अण्णिगमेणं  
 अन्निगमेणवा पमाणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहया  
 ए मंदयाए किद्धयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसानव्वगणं पंचं  
 दियवसहेणं पन्निपुन्नंभारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं  
 वाप्पवे अन्नेसुवा न्नवग्गहणेषु मेज्जणंसेवियंवा सेवावियंवा से  
 विज्जंतंवा परेहिंसमणुणानं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
 हेणं मणेणं वायाए काणं अशयं निंदामि पटुपन्नंसंवरेमि अ  
 णागयं पच्चक्खामि सव्वंमेज्जणं जावज्जीवाए अण्णिस्सिउहिं नेव  
 सयं मेहुणंसेविज्ञा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्ञा मेज्जणंसेवंतेवि  
 अन्नेन समणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस

क्खियं साङ्गसक्खियं देवसक्खियं अप्सक्खियं एवंहवइ नि  
 क्खूवा निक्खूणीवा संजयविस्थपडिहय पच्चक्खाय पावकस्मे  
 दियावा रान्वा एगोवा परिसागन्वा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस  
 खलु मेङ्गणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं भूयाणं सवेसिंजीवाणं सवेसिं  
 सत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया  
 ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्वणयाए महत्थे महागु  
 णे महाणुप्पावे महापुरिसाणुचिणे परमरिसिदेसिएपसित्थे तंडु  
 क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलान्नाए संसारु  
 त्तरणाए तिकहुवसंपज्जताणं विहरामि ॥ चउत्थेअंते महवए  
 उवठिन्मिसवान् मेङ्गणान् वेरमणं ॥४॥ अहावरेपंचमेअंतेमहव  
 ए परिग्गहान् वेरमणं सवअंतेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा व  
 ऊंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि  
 ग्गहं परिगिण्हज्जा नेवभोहिं परिग्गहं परिगिण्हविज्जा परि  
 ग्गहं गिण्हंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि  
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सअंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि  
 अप्पाणं वोसरामि । सेपरिग्गहेचउविहेपन्नते (तंजहा) दवन् शिव  
 तन् कालन् प्रावन् दवन्णंपरिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दवेसु शिव  
 तन्णं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रण्णेषुवा कालन्णं परिग्गहे  
 दियावा रान्वा प्रावन्णंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नतस्स अहिंसाल  
 क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्न  
 सुवन्नियस्स उवसमप्पन्नवस्स नववअंअ० अप्पय० निक्खवावित्थिय

स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस  
 स्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय  
 जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसेवाइयस्स संसारपारगामिय  
 स्स निवाणगमणपक्कवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवण  
 याए अबोहिए अणन्निगमेणं अन्निगमेणवा पमाएणं रागदोसप  
 ङ्खिययाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किह्वयाए तिगारव गरु  
 आए चण्णकसानंवगएणं पंचेदियवसहेणं पडिपुन्नं ज्ञारियाए सा  
 यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवाज्जवेअन्नेसुवा ज्वग्गहणेसु परि  
 ग्गाहो गहिंत्तवा गहाविंत्तवा धिप्पंतोवा परेहिंसमणुज्जातं तंनिंदा  
 मि गरिहामि ति विहंति विहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदा  
 मि पडुपन्नंसंवेरेमि अणागयं पच्चक्खामि सवंपरिग्गहं जावज्जी  
 वाए अणस्सिंत्तहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हज्जा नेवन्नेहिंप  
 रिग्गहं परिगिण्हविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु  
 जाणामि (तंजहा) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साङ्गस  
 क्खियं देवसक्खियं अप्ससक्खियं एवंहवइत्तिकखूवा त्तिक्खणी  
 वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा रान्त्तवा  
 एगोवा परिसागन्त्तवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवे  
 रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स  
 व्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अडु  
 क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिण्णयाए अपीड  
 णयाए अपरियावणयाए अणुद्ववणयाए महत्थेमहागुणे महा  
 णुज्जावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंडुक्खक्ख  
 याए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकहु उवसंपक्कत्ताणं विहरामि ॥ पंचमेज्जंतेमहव्वए उवडिंत्तमि

सवान् परिगृहान्वेरमणं ५ ॥ अहावरे ठेनतेवए राईभोयणा  
 न्वेरमणं सवन्ततेराईभोयणं पच्चक्खामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराई भुंजिक्का नेवनेहिंराई भुजावि  
 क्का राईभुंजंतंवि अन्नेनसमणुजाणामि जावक्कीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि  
 अन्नंनसमणुजाणामि तस्सन्नंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि  
 अप्पाणं बोसरामि । सेराईभोयणेचनविहेपन्नते (तंजहा) दव्वनं  
 खित्तनं कालनं भावनं दव्वनं राईभोयणे असणंवा पाणंवा खाइ  
 मेवा साइमेवा खित्तनं राईभोयणे समयखित्ते कालनं राईभो  
 यणे दियावा रानंवा भावनं राईभोयणे तिकखेवा कडुएवा कसा  
 इलेवा अंबिलेवा मज्जेरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपिय  
 मए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा  
 हिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसुवण्णियस्स  
 नवसमण्यन्नवस्स नववन्नचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खवावि  
 त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स च  
 त्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पं  
 चमहवयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स सं  
 सारपारगामियस्स निवाणगमणपक्कवसाणफलस्स पुव्विअन्ना  
 णयाए असवणयाए अबोहिए अण्णिगमेणं अण्णिगमेणवा  
 पमाएणं रागदोसपन्निबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि  
 ड्ढयाए तिगारव गरुआए चनक्कसान्वगएणं पंचेंदियवसट्ठेणं  
 पडिपुन्नंनारियाए सायासोक्खमणुपालयंतंणं इहंवाप्पवेअन्नेसुवा  
 न्नवग्गहणेषु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुंजंतंवा परेहिंस  
 मणुन्नान् तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अईयं निंदामि पटुपन्नंसंवेरेमि अणागयंपच्चक्खामि स  
 वं राईप्पोयणं जावज्जीवाए अणिसिन्नहिं नेवसयं राईप्पुंजि  
 ज्जा नेवन्नेहिराईप्पुंजाविज्जा राईप्पुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा  
 मि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साङ्गसक्खियं दे  
 वसक्खियं अप्ससक्खियं एवंहवइ निक्खूवा निरकूणीवा संज  
 य विरय पम्हिइय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा रान्वा एगोवा प  
 रसागन्वा सुत्तेवा जागरमाणेवा, एसखल्लु राईप्पोयणस्सवेरमणे  
 हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणा  
 णं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिसत्ताणं अडक्खणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि  
 यावणयाए अणुद्वणयाए महत्थेमहागुणे महाणुप्पावे महापु  
 रिसाणचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडक्खक्खयाए कम्मरक  
 याए मोहक्खयाए बोहिलाप्पाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंप  
 ज्जत्ताणं विहरामि॥ ठवेन्नंतेवए उवठिन्नमि सवानं राईप्पोयणान्वे  
 रमणं ॥६॥ इच्चेइयाइंपंचमहवयाइं राईप्पोयणवेरमणठठाइं अत्त  
 हियठाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि॥१॥ अप्ससत्थायजेजोगा । प  
 रिणामायदारणा । पाणाइवायस्स वेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥२॥  
 तिक्ख रागायजाप्पासा । तिक्खदोसातहेवय । मुसावायस्सवेरमणे ।  
 एसवुत्तेअइक्कमे ॥३॥ उग्गहंचअजाइत्ता । अविदिन्नेवउग्गहे ।  
 अदिन्नादाणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥४॥ सद्धारूवारसागं  
 धा । फासाणंपवियारणा । मेहुणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे  
 ॥५॥ इत्थामुत्थायगेहीय । कंरवालोप्पेयदारुणे । परिग्गहस्सवे  
 रमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥६॥ अयमत्तेआहारे । सूरखित्तेयसं  
 किए । राईप्पोयणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥६॥ दंसणना



एचरित्ते । अविराहिताठिनुसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे ।  
 विरयामोपाणाइवायानु ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिता  
 ठिनुसमणधम्ममे । वीयंवयमणुरक्खे । विरयामोमुसावायानु ॥ २ ॥  
 दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताठिनुसमणधम्ममे । तइयंवयमणु  
 रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणानु ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ  
 विराहिताठिनुसमणधम्ममे । चनुत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे  
 ऊणानु ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहिताठिनुसमणधम्ममे ।  
 पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहानु ॥ ५ ॥ दंसणनाणच  
 रित्ते । अविराहिताठिनुसमणधम्ममे । ठंवंयमणुरक्खे । विर  
 यामोराईप्पोयणानु ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिनु । जुत्तोगुत्तोठि  
 नुसमणधम्ममे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायानु ॥ १ ॥  
 आलयविहारसमिनु । जुत्तोगुत्तोठिनुसमणधम्ममे । वीयंवयमणु  
 रक्खे । विरयामोमुसावायानु ॥ २ ॥ आलयविहासमिनु ।  
 जुत्तोगुत्तोठिनुसमणधम्ममे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि  
 न्नादाणानु ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिनु । जुत्तोगुत्तोठिनुसमण  
 धम्ममे । चनुत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेऊणानु ॥ ४ ॥ आल  
 यविहारसमिनु जुत्तोगुत्तोठिनुसमणधम्ममे । पंचमवयमणुरक्खे ।  
 विरयामोपरिग्गहानु ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिनु । जुत्तोगुत्तो  
 ठिनुसमणधम्ममे । ठंवंयमणुरक्खे । विरयामोराईप्पोयणानु  
 ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिनु । जुत्तोगुत्तोठिनुसमणधम्ममे । ति  
 विहेणपमिक्कंतो । रक्खामिमहवएपंच ॥ ७ ॥ सावऊजोगमेगं  
 मिच्चतंएगमेवअणाणं । परिवऊंतोगुत्तो । रक्खामिमहवएपंच  
 ॥ १ ॥ अणवऊजोगमेगं । सम्मतंएगमेवनाणंतु । उवसंपन्नोजुत्तो  
 रक्खामिमहवएपंच ॥ २ ॥ दोचेवरागदोसे । उन्नियऊणाइअट्ठरु

द्वां । परिवर्जन्तो गुतो । रक्खामिमहद्वएपंच ॥ ३ ॥ ड्विहंचरित्तध  
म्मं । ड्विन्नियजाणइधम्मसुक्कां । उवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहद्व  
एपंच ॥ ४ ॥ किन्हानीलाकाऊ । तिन्नियलेसानंअप्पसत्थानं । परि  
वर्जन्तो गुतो । रक्खामिमहद्वएपंच ॥ ५ ॥ तेऊपह्मासुक्का । तिन्नि  
यलेसानंसुपसत्थानं । उवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहद्वएपंच  
॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविक्र । वायासच्चेणकरणसच्चेण । तिबि  
हेणविसच्चविक्र । रक्खामि महद्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियडुहसि  
जा । चत्तरोसन्नातहकसायाय । परिवर्जन्तो गुतो । रक्खामि  
महद्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिजा । चत्तद्विहंसंवसमाहिं  
च । उवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहद्वएपंच ॥ ९ ॥ पंचेवयकामगु  
णे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परिवर्जन्तो गुतो । रक्खामिमहद्व  
एपंच ॥ १० ॥ पंचेदियसंवरणं । तत्तोपंचविहसंवससायं । उव  
संपन्नोजुतो । रक्खामिमहद्वएपंच ॥ ११ ॥ ठज्जीवनिकायवहं  
ठप्पिय ज्ञासानं अप्पसत्थानं । परिवर्जन्तो गुतो । रक्खामि मह  
द्वएपंच ॥ १२ ॥ ठद्विहमच्चिंतरयं । वसंपियठद्विहंतवोकम्मं ।  
उवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहद्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तन्नयठाणां ।  
सत्तविहंचेवनाणविष्णं । परिवर्जन्तो गुतो । रक्खामिमहद्व  
एपंच ॥ १४ ॥ पिंमेसणपाणेसण । उग्गहसत्तिकया महअय  
णा । उवसंपन्नोजुतो । रक्खामि महद्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमय  
ठाणां । अठयकम्माइतेसिवंधंच । परिवर्जन्तो गुतो रक्खामि  
महद्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिठाअठविहनिठि  
अठेहिं । उवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहद्वएपंच ॥ १७ ॥ नवपाव  
नियाणां । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवर्जन्तो गुतो ।  
रक्खामि महद्वएपंच ॥ १८ ॥ नवयन्नचेरगुतो । ड्वनवविहंवं

अचेरपडिसुद्धं । नवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥  
 नवघायंचदसविहं । असंवरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुतो ।  
 रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिठणा । दसचेवदसा  
 नंसमणधम्मंच । नवसंपन्नोजुतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥  
 आसायणंचसव्वं । तिगुणंइकारसंविवज्जंतो । नवसंपन्नोजुतो ।  
 रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ एवंपतिदंरुविरत्तं । तिगरणसुद्धोतिसद्ध  
 तिसद्धो । तिविहेणपम्भिकंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥ इच्चैयं  
 महव्वयनच्चारणं थिरत्तं सल्लुक्खरणं धिइवलंवसानं साहणधो पाव  
 निवारणं निकायणा भावविसोही पमाग्गहणं निज्झुहणाराह  
 णागुणाणं संवरजोगो पसत्थज्जाणो वनत्तया जुत्तयानाणे परमधो  
 उत्तमधो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसिन्नपवयणस्ससारो  
 ठज्जीवनिकायसंजमं नवसंवसिन्नं तिल्लुकसकयठाणं अल्लुवगया  
 नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर  
 मणंतमण्यमे नमोत्थू ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थू  
 ते अरिहत्तं नमोत्थूते भगवत्तं (तिकहु) इच्चैसा खल्लुमहव्वय नच्चा  
 रणाकया इत्थामोसुत्तकित्तणं कानं नमोतेसिखमासमणाणं जेहिं  
 इमंवाइयं ठविहमावस्सयंभगवंतं (तंजहा) सामाइयं १ चउवीस  
 त्थत्तं २ वंदणयं ३ पम्भिकमणं ४ कावसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६  
 सव्वेहंपिएयंमि ठविहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे  
 सन्निज्झुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भग  
 वंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्वहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्वहंतेहिं पत्तयंतेहिं रोयं  
 तेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं  
 पढियं परियद्वियं पुत्तियं अणुपेहियं अणुपालियं तं डुक्ख

कखयाए कम्मकखयाए मोहकखयाए बोहिलाप्पाए संसारुत्तार  
 णाए तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामी (अंतोपकखस्स) जंनवाइ  
 यं नपढियं नपरियट्ठियं नपुत्तियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
 वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा  
 मो निंदामो गरिहामो विग्गहेमो विसोहेमो अकरणयाए अज्झुठेमो  
 अहारिहंतवोकम्मं पायत्तितंपप्पिवज्जामो ॥ तस्समिह्वामिउक्क  
 ढं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का  
 लियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प  
 सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवाप्पिगमो पन्नव  
 णा महापन्नवणा नंदीअणुनगदाराइं देविंदच्चउ तंडुलवेयालियं  
 चंदाविज्जयं पमायप्पमायं पोरसिमंमलं मंमलप्पवेसो गणिवि  
 ज्जां विज्जाचरणविणिच्चउ जाणविन्नत्ती आणविन्नत्ती आयवि  
 सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरगसुयं विहारकणो च  
 रणविसोही आनरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सवेहिंपिएयंमि  
 अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थेसगांथे सन्निज्जुत्ती  
 ए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता  
 वा परूवियावा तेभावे सद्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा  
 लेमो अणुपालेमो ते भावेसद्वहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोइंतेहिं फा  
 संतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकखस्स) जंनवाइयं पढियं  
 परियट्ठियं पुत्तियं अणुपेहियं अणुपालियं तंडुक्खकखयाए  
 कम्मकखयाए मोहकखयाए बोहिलाप्पाए संसारुत्तारणाए तिकट्ठु  
 उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (अंतोपकखस्स) जंनवाइअं नपढियं  
 न परियट्ठियं नपुत्तियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी  
 रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पप्पिक्कमामो निंदा

अप्यायंकाणं अन्नग्नं जोगाणं सुवयाणं सायरियं उवश्चायाणं  
 नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअप्याणं भावेमाणाणं वज्रसुप्ते  
 णप्ते दिवसो पक्खो चोमासियो वड्ढंतो अन्नोयत्तेकद्धाणेणं प  
 ङ्कु वड्ढिं सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुप्पेहिंसम्मं । इतिगुरु  
 वचनं ॥ इत्थामिस्वमासणो पुर्विचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुप्पेणं  
 पायमूले विहरमाणेणं जेकेइं वज्रदेवसिया साङ्गणोदिठा सम  
 णावा गामाणुगामंडुइज्ज माणावा रायणिया संपुहंति नमराय  
 णिया वंदंति अज्जयावंदंति अज्जयानुवंदंति सावयावंदंति  
 सावयानुवंदंति अहंपिनिसद्धो निक्कसानु तिकड्डु सिरसा मण  
 सा मत्थएणवंदामि ॥ इतिशिष्यसाधु वचनं ॥ इहां गुरुवचन  
 अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ १ ॥ अण्णुठिंमि तुप्पेणं संतियं  
 अहाकप्पंवा वत्थंवा पडिग्गहंवा कंवलंवा पायपुह्णंवा रजहर  
 णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिल्लोगंवा अठंवा हेनंवा पसि  
 णंवा वागरणंवा तुप्पेवि यत्तेणंदिन्नं मएअविणए अपमिच्चियं ॥  
 तरुसमिच्चामि डुक्कमं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय  
 रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं १ ॥ इत्थामि स्वमासमणो  
 अहमविपुवाइं कयाइंच मेकियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं  
 तरे सेविं सेवाविं अवग्रहिं सारिं वारिं चोइं पडिचो  
 इं वियत्ता मे पडिचोयणा उवड्ढिंहिं तुप्पेणं तवतेयसिरीए  
 इमानं चानुरंतसंसारकंताराणुसाहड्डु नित्थरिस्सामि तिकड्डु सिर  
 सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव  
 चनं नित्यारगपारगाहोह ॥ इतिश्रीपाक्षिकखामणकानि ॥॥

॥ ❀ ॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रज्ञाविक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजियंजिअसवन्नयं । संतिं च पसंतं सवगयपावं । जयगुरुसं  
तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिव्यामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलंजावे ।  
तेहंविञ्जलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पजावे । थोसामिसुदिठसप्पावे ॥ २ ॥  
गाहा ॥ सवड्ढरवप्पसंतिणं । सवपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो  
अजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम  
कित्तणं । तहयधिइमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिं कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥  
किरिआविहिसंचियं । कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियं च गुणेहि  
महामुणिसिद्धिगयं । अजियस्सय संतिं महामुणिणोविअ संतिअरं । सययं म  
मणिवुइकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिंगणिअं ॥ पुरिसाजइ ड  
क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च जावत्तं । अज  
यकरे सरणंपवज्झहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । मुव  
रय जरमरणं । सुर असुर गरुड जुयगवइ । पयय पणिवइयं । अजिय  
महमक्खिय सुनयनयनिञ्जण मन्नयकरं । सरणमुवसरिअ जुविदिविज्झमहिंयं  
सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्झव  
मद्वव खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं  
तिमुणीममसंतिं समाहिवरंदिसत्तं ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुच्चपत्थिवंचवर  
हत्थि मत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं धिरसरिञ्चवत्तं । मयगललीलाय माणव  
रगंधहत्थिपत्थाणपत्थिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थयाहुं । धंतकणगरुअग्नि  
रुवहयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं । सुइसुद्धमणाभिराम परम  
रमणिज्झवरदेवइंडुहिं । निनायमहुरयरयसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेदत्तं ॥ अजिअंजिआ  
रिगणं । जिअसवन्नयंनवोहरिं । पणमामिअहंपयत्तं । पावंपसमेत्तमेन्नयवं  
॥ १० ॥ रासालुक्खत्तं ॥ कुरुजणवयहत्थिणात्तरं । नरीसरोपढमं । तत्तमहा  
चक्खवट्ठिजोए । महप्पजावो । जोवावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगरणिगमजण  
वयवइं । वत्तीसारायवरसहस्साणजायमग्गो । चत्तदसवररयण नवमहानिदि  
चत्तसत्तिहस्सपवरजुवइं सुन्दरवइं । चुलसीदयगयरहसयसहस्ससामी अत्त

वङ्गामकोमिसामी । आसी जो नारहस्मिन्नयवं ॥ ११ ॥ वेढन ॥ तंसंतिंसंति  
 अरं । संतिहं सवन्नया । संतिथुणामिजिणं संतिविहेनमे ॥ १२ ॥ रासाणंदियअं  
 इरुखागुविदेहनरीसर नरवसहामुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण विग  
 यतमा विहुअरया । अजियनत्तमतेअगुणेहिमहामुणि अमिअवला विन्नलकु  
 ला । पणमामितेन्नवन्नयमूरण जगसरणाममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव  
 दाणविंदचंदसूर वंदहठुठजिठपरम । लठरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुद्धनिद्धव  
 ल । दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर । दित्तेयविंदधेयसवल्लोय  
 नाविअप्पनावणे । पइअसमेसमाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमलससिक  
 लाइरेअ सोमं । वित्तिमिरसूरकलाइरेअ तेयं । तिअसवङ्गणाइरेअ रूवं । धर  
 णीधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजिअं । सारीरेय  
 वले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं ॥ १६ ॥  
 नुअंगपरिरिंजिअं ॥ सौमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससी तेयगुणेहिं पावइ  
 नतं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइनतं तियसगणवई । सारगुणेहिं पावइन  
 तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं ।  
 धीरजण थुअच्चिअंचुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयनं ।  
 संतिमहंमहामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललियअं ॥ विणान्णाय सिरर  
 इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं । विवुहाहिव धणवइनरवइ थुअमहि  
 अच्चिअंवहुसो । अइरुग्गय सरयदिवायर समहिअ सप्पन्नंतवसा । गयणं  
 गणविअरण समुइअ चारण वंदिअंसिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥  
 असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरौरगनमंसिअं । देवकोमिसयसंथुअं । समण  
 संवपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयंअणहं अरयं अरुअं । अजियं अजियं  
 पयनपणमे ॥ २१ ॥ विळुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिव्वकणग रहतुरय  
 पहकरसइहिंहुलिअं । ससंनमोरयणखुन्निअललिअचलकुंमलं । गयतिरीड  
 सोहंतमन्नलिमाला ॥ २२ ॥ वेढन ॥ जंसुरसंघासासुरसंघा । वेरविन्नत्तान्निसुजु  
 ता । आयरन्नूसिअसंनमपिंमिअ । सुहुसुविह्मिअ सव्वबलोघा । नत्तमकंचणर  
 यणपरुविअ । नासुरन्नूसणनासुरिअंगा । गायसमोणयन्नत्तिवसागय । पंज  
 लिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति  
 गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा । पमुइआ सन्नवणाइ

तोगया ॥२४॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसजयमोहवक्त्रि  
 अं । देवदाणवनरिंदवंदिअं । संतिमुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अं  
 वरंतर वियारणिआहिं । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्यणसा  
 लणिआहिं । सकलकमलदललोपणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतर  
 थणन्नर विणमिअगायक्षयाहिं । मणिकंचणपसिद्धिमेहल सोहियसोणि  
 तडाहिं । वरखिंखिणि नेन्नर सतिलय वलय विन्नसणिआहिं । रयकर चन्नर म  
 नोहर सुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआ  
 हिं वंदिआयजस्सतेसुविक्रमाकमा । अण्णोणिलाडएहिं मण्णोडएण्ण  
 गारएहिं केहिंकेहिंवी । अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चित्तएहिं संग  
 यं गया हिं । नत्तिसन्निविद्वंदणागयाहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥  
 नारायण ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयन्नपण  
 मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ धुअवंदिअस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेववज्ज  
 हिं । पयन्नपणमिअस्सा । जस्सजगुत्तमसासणयस्सा । नत्तिवसागयपिमियआ  
 हिं । देववरत्तरसावहुआहिं । सुरवरइगुणपंमिअयाहिं ॥ ३० ॥ नासुरिअं ॥  
 धंससद्वतंतितालमेलए । तिन्नक्खराजिराम सहमीसएकएअ । सुइसमाणणे  
 असुअसऊगीअपायजालधंदिआहिं । वलयमेहला कलावनेन्ना जिराम सह  
 मीसएकएय । देवनंदिआहिं । हावप्तावविअमप्पगारएहिं । नच्चिअणअंग  
 हारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविक्रमाकमा । तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं ।  
 पसंतसव्वपावदोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमंजिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥ नत्तचा  
 मर पडागजुअजव मंमिआ । ऊयवर मगर तुरग सिरिवच्चसुलंठणा । दीव  
 समुद्ध मंदिर दिसागय सोहिआ । सयिअ वसहसीह सिरिवच्च सुलंठणा ॥  
 ३२ ॥ ललिययं ॥ सहावखण समपइण । अदोसउण गुणेहिजिण  
 पसायसिण तवेणपुण सिरीइइण रिसीहिंजुण ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ तेत  
 वेण धुअसव्वपावया । सव्वलोगहिअमूलपावया । संधुआअजिअसंति पा  
 वया । ऊं तुमेसिवसुहाण दावया ॥ ३४ ॥ अपरंतिका ॥ एवंतववलविउलं ।  
 धुअमए अजियसंति जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं । गयंगयंसासयंविम  
 लं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तंवहुगुणप्पसायं । मुक्खसुहेणपरमेण अविसायं । नासेउमे



विसायं । कुण्डलपरिसावित्र पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तमोऽनुअनंदि ।  
 पावेनुअ नंदिसेणमजिनंदि । परसाविय सुहनंदि । ममयदिसु संजमे नंदि ॥  
 ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअअचान्मासे । संवत्तर राइएय दिअहेअ । सोअ  
 वोसवेहिं । उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो निसुणइ । उन्न  
 उकालं पि अजिअ संति थुअं । नज्ज ऊति तस्सरोगा । पुव्वुप्पणा विनासंति  
 ॥ ३९ ॥ जइइह पम्मपयं । अहवाकित्तीसु वित्थमा जवणे । तातिव्वुक्ख  
 रणे । जिणवयणे आयरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ उद्धासिकम नक्खनिग्गयपहादंमहलेणंगिणं । वंदा रूण दि  
 संतइवपयमं निव्वाण मग्गावलं । कुंदिंउज्जल दंतकंति मिसुं नीहत  
 नाणंकुरु । केरेदोवि दुइज्जसोदसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमज  
 लहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं । खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सय  
 लनहयलंवा लंघए जोपएहिं ॥ अजिअ महवसंतिं सोसमत्थोथुणेउं ॥ २ ॥  
 तहविज्ज वज्जमाणु द्धासिअत्तिअरेण । गुणकणमिवकित्ते हामिचिंतामणिव्व ।  
 अलमहव अचिंता एतंसामत्थउंसिं । फलहइ लज्जसव्वं वेठिअं णिठ्ठिअमे  
 ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं नामिमित्तेणज्जाणं । बिहडइलज्जउवा । निठ्ठो  
 घट्टघट्टं । नमिरसुरकिरीडू धठपायारविंदे । सययमजिअसंती ते जिणिं दे  
 जिंवदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्टएदेहदिती । विलसइ जुविमिती जायए  
 सुप्पविती । फुरइ परमतिती होइसंसारठिती । जिणजुअपयज्जती हीअ  
 चिंतोरुसती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं चूरिदिवंगहारं । फुडघणरसज्जावो  
 दारसिंगारसारं । अणिमिसरमणिज्ज दंसणहेअज्जीया । इवपणमण मंदा  
 कासि नटोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहअजिअसंती तेकयासेससंती । कणयरय  
 पसंगा ठज्जएजाणमुत्ती । सरजसपरिरंज्जारंजिनिव्वाणलह्ठी । घणथणघुसिणं  
 कु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ वज्जविहनयज्जगं वत्थुणिच्चंअणिच्चं । सदसदण  
 जिलप्पा लप्पमेगंअणेगं । इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धंअजेसिं । वयणमवयणि  
 ज्जं ते जिणे संजराणि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंधयारं । जमइ  
 जय मसणं ताव मिठ्ठतठणं । फुरइफुन फलंता एतण्णाणं सुपूरो । पयड  
 मज्जिअसंती ज्जाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिएज्ज एहंवुचोराहि वा

ही । समरमर मारी रुद्वखुदोवसग्गा । पलयमजिअसंती कित्तेणेऊत्तिजं  
 ती । निविडतरतमोहा जयखरा लंखिअव ॥ १० ॥ निचिअउरिअदारु दित्त  
 जाणग्गिजाला । परिगय मिव गोरं चिंतिअं जाण रूवं । कणयनिहसरे  
 दा कंतिचोरं करिजा । चरधिर मिह लंछिं गाढसं थंभिअव ॥ ११ ॥  
 अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं । जलहियहरिहीरं ताणगुत्तिव्याणं ।  
 जल्लिअ जलणजाला लिंगिआणंचकाणं । जणयइ लज्जसंतिं संतिनाहाजि  
 आणं ॥ १२ ॥ हरिकरिपरिकिणं पक्कपाइक्कपुणं । सयलपुहवि रज्जं ठडिउं  
 आणसज्जं । तणमिव पमिलगं जेजिणामुत्तिमगं । चरण मणुपवणा जं  
 तुतेमे पसणा ॥ १३ ॥ ठणससिवयणाहिं । फुल्लनित्तुप्पलाहिं । थणजरन  
 मिरीहिं मुळिगिण्णोदरीहिं । ललिअनुअलयाहिं पीणसोणित्थलीहिं । सय  
 सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किडिअकुव गंठि का  
 साइसार । खयजर वणलूआ साससोसोदराणि । नहमुह दसण्णी कुठि  
 कणाइरोगे । महजिण जुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इयगुरुडहतासे प  
 त्तिखएचाउमासे । जिणवरडुगथुत्तं वट्टरेवा पवित्तं । पढह सुणह सिआ  
 एहजाएहचित्ते । कुणह मुणह विग्वं जेण घाएहसिग्वं ॥ १६ ॥ इयविजया  
 जियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणेतार । तहअइरा विससेण तणय पंचमच  
 कीसर । तित्यंकरसोलसमसंति जिणवल्लहसंतह । कुरुमंगल ममहरसुडरि  
 अमखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति श्रीलवुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं १ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ नमिऊणपणयसुरगण । चूनामणिकिरणंरंजिअंमणिणो । चल  
 एजुअलं महाजय । पणासणंसंयवंबुत्तं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह ।  
 निवुडनासाविवणलावणा । कुम्भहारोगानल । फुल्लिगनिद्वद्धसवंगा ॥ २ ॥  
 तेतुहचलणाराहण । सलिलंजलिसेअवट्ठियत्ताया । वणदवदट्ठागिरिपाय  
 पुव पत्तापुणोलंछिं ॥ ३ ॥ उवायखुन्निअजलनिहि । उप्पमकल्लोलनीस  
 णारवे । संजंतजयविसंतुल । निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अयदलिअजाण  
 वत्ता । खणेणपावंतिइत्थियंकूलं । पासजिणचलणजुअलं । निअंचिअजेनमं  
 तिनरा ॥ ५ ॥ खरपवणुअवणदव । जालावलिमिलिअसयल डमगहणे ।  
 मसंतमुद्धमयवज्ज । नीसणरवनीसणंमियणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमजुअलं ।

निव्वावियसयलतिङ्गअणान्जोयं । जेसंजरंतिमणुआ नकुणइजलणोन्नयंते  
 सिं ॥ ७ ॥ विलसंतन्नोगजीषण । फुरिआरुणनयणवरलजीहालं । उग्गञ्जु  
 अंगंनवजलय । सत्थहंजीसणायारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिद्ध  
 ढविसमविसवेगा । तुहनामक्खरफुडसिध् । मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥  
 अडवीसुजिह्वतकर । पुलिंदसहूलसद्वनीमासु । जयविहलुवणकायर । उद्ध  
 रिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा । तुहनाहपणाम मित्तवा  
 वारा । ववगयविग्घासिग्घं । पत्ताहियइच्चियंठाणं ॥ ११ ॥ पक्कलिआनलनयणं ।  
 दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघायविअलिय । गयंदकुंनत्थलाज्जोयं  
 ॥ १२ ॥ पणयससंजमपत्थिव । नहमणिमाणिक्यपडिअपडिमस्स । तुहवयण  
 पहरणधरा । सीहंकुधंपि नगिणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं । दीहकर  
 छालवट्ठि उच्चाहं । महुपिंगनयणजुअलं । ससलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥  
 ज्जीमं महागइंदं । अच्चासनंपितेनविगिणंति । जेतुह्मचलणजुअलं । मुणिवइ  
 तुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मतिकखखग्गा । जिघायपविध्ननुद्धअकवंदे ।  
 कुंतविणिज्जिन्न करिकलह । मुक्कसिक्कारपन्नरम्मि ॥ १६ ॥ निक्किअदप्पुध  
 ररिन्नरिंदं । निवहान्नडाजसंधवलं । पावंतिपावपसमण । पासजिणतुह  
 प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदगयरणजयाइं ।  
 पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसवाइं ॥ १८ ॥ एवमहाजयहरं । पा  
 सजिणिंदस्ससंथवमुआरं । जवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 रायजयजक्खरक्खस्स । कुसुमिण्डस्सन्नणरिक्खपीडासु । संजासुदोसुपंथे  
 उवसग्गेतहयरणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणोयमाण  
 तुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलज्जुवणच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ ✽ ॥  
 इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तंजयजणुतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअं  
 जवसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिलेसा निहयकुलेसाप  
 सत्थ सुहलेसा । सिखिध्माणतित्थस्स । मंगलंदितुतेअरिहा ॥ २ ॥ निह  
 ढ्ढकम्मवीआ । वीआपरमेष्ठिणो गुणसमिधा । सिधा तिजयपसिधा ।  
 हणंतुडत्थाणितित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारं सयापयासंता ।  
 आयरिआतहतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगा

य । सिञ्चवायवायगावाए । पवयणपनिणीयकए । वणंतुसवस्ससंघस्स ॥ ५ ॥  
 निव्वाणसाङ्गणुक्कअ । साहूणंजणिअसवसाहक्का । तित्थप्पजावगाते ।  
 हवंतुपरमेष्ठिणोजइणो ॥ ६ ॥ जेणानुगयंनाणं । निव्वाणफलंचचरणमविह  
 वइ । तित्थस्सदंसणंतं । मंगुलमवणेतसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्वम्मोसुअधम्मो ।  
 समग्गजब्बंगिवग्गकयसम्मो । गुणसुव्विअस्ससंघस्स । मंगलंसम्ममिहदि  
 सउ ॥ ८ ॥ रम्मोचरित्तधम्मो संपाविअन्नवसत्तसिवसम्मो । नीसेसकिल्ले  
 संहरो । हवउत्तयासयलसंघस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरूणो गुरूणो । सिवसुह  
 मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरिवद्धमाणपहुपयमिअस्स । कुसलंसमग्गस्स ।  
 ॥ १० ॥ जियपडिवक्खाजक्खा । गोमुहमायंगगयमुहपमुक्खा । सिरिवं  
 न्तसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवंदंतु ॥ ११ ॥ अंवापडिहयमंवा । सिद्धा  
 सिद्धाइआपवयणस्स । चक्केसरिवइरुटा । संतिसुरादिसउत्तसुक्खाणि ॥ १२ ॥  
 सोलसविक्कादेवीउ । दंतुसंनस्समंगलंविउलं । अन्नतासहिआउ । विस्सु  
 असुयदेवयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकयरक्खा । जक्खाचउवीस सासण  
 सुरावि । सुहजावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणं  
 मिनिरया । विरहाकुपहान्तसव्वासाव्वे । वेयावच्चकराविअ । तित्थस्सहवं  
 तुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग । वहिअन्नवाण जणिअसाह  
 क्को । गीयरइ गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तज  
 लयल । वणपव्वयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणविआणं । उहाणिसवाणि  
 निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिपालासक्खित्तपालया । नवग्गहासनक्खत्ता ।  
 जोइणिराहुग्गहकालपास । कुलिअधपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंटइहिं ।  
 सविण्वित्थेहिं कालवेल्लाहिं । सवेसवत्थसुहं । दिसंतुसवस्ससंघस्स ॥ १९ ॥  
 भवणवइवाणमंतर । जोइसवेमाणियायजेदेवा । धरणिंदसक्कसहिआ । दलं  
 तुडरिआइतित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गत्तइ पुरउपणासिअतमो  
 हं । तंतित्थस्सजगवउ । नमोनमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणो  
 वीरो । जस्सक्कविसासणंजएजयइ । सिद्धिप्पहसाहणंकुपह । नासणंसव  
 जयमहणं ॥ २२ ॥ सिरिउत्तसत्तेणपमुहा । हयजय निवहा दिसंतुतित्थस्स ।  
 सव्वजिणानंणिहारिणो । एहवंठिअंसवं ॥ २३ ॥ सिरिवद्धमाणतित्थादि  
 वेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स । सम्मंसुद्धम्मसामी । दिसउत्तुहं सयलसंघस्स

सं । मंगलकल्याणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ नवेनवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इतिश्रीपार्श्वजिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ लघुशांतिलि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनि  
 मित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ नमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोन्नगव  
 तैर्हतेपूजां । शांति जिनायजयवते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकला  
 तिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः  
 शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । नुवन  
 जनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व्वडुरितौघ नाशन करा  
 य । सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रहभूत पिशाच । शाकनीनां प्रमथनाय  
 ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित ।  
 मिति चनुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ नवतु नमस्ते नगवति । विजये सुजये  
 परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥  
 सर्व्वस्यापिच संघस्य । नद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टि  
 पुष्टिप्रदेजीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे । निर्द्वेतिनिर्वाण जननि सत्वा  
 नां । अन्नयप्रदाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुज्यं ॥ ९ ॥ नक्तानां जंतुनां ।  
 शुक्नावहे नित्यमुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय  
 ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपत्की  
 र्तीयशो । वर्द्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रह  
 राजरोगरण्नयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरैतिश्वापदादिज्यः ॥ १२ ॥ अथ  
 रक्त्वा रक्त्वा सुशिवं । कुरु १ शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिकुरु १ पुष्टिं । कुरु १  
 स्वस्तिं च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ नगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्ती  
 ह । कुरु १ जनानां । नमिति नमो नमो ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं । यः ह्रीं ह्रीं  
 फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरुस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते  
 शान्ति निमित्तं । नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्व्वसूरिदर्शित ।  
 मंत्रपविद्वर्जितः स्तवः शांतेः । सलिलादिजयविनाशी । शांत्यादिकरश्च नक्ति

मतां ॥ १६ ॥ यश्चेनं पठति सदा । श्रयणोति जाययति वा यथायोगं ।  
सहि शान्तिपदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ❀ ॥  
इति लघुशान्तिस्तोत्रं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वृद्धशान्ति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ओ ओ नम्याः गृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां  
त्रिचुवनगुरोर्दत्ता चक्तिजाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्द्धदादिप्रजावा ।  
दारोग्य श्री धृति मतिकरी छेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ ओओनम्यलोकाइह  
हि नरतेरावत विदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं ।  
अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनानन्तरं । सकलसुरा  
सुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्द्धद्धारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे ।  
विहितजन्माजिपेकः । शान्ति मुद्घोषयति । ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा  
महाजनो येन गतस्स पंथाः । इति नम्य जनेः सहसमागत्य । स्नावपीठे  
स्नानविधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नानादि महोत्सवानन्तरं ।  
इतिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं १ । प्रीयतां १  
जगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः । स्तैलोक्यनाथा । स्तैलोक्यमहिता ।  
स्तैलोक्यपूज्या । स्तैलोक्येश्वरा । स्तैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी  
॥ १ ॥ निर्वाणी । १। सागर । ३। महापश । ४। विमल । ५। सर्वानुभूति । ६।  
श्रीधर । ७। दत्त । ८। दामोदर । ९। सुतेजा । १०। स्वामी । ११।  
मुनिसुव्रत । १२। सुमति । १३। शिवगति । १४। अस्ताग । १५।  
नमीश्वर । १६। अनिल । १७। यशोधर । १८। कृतार्घ । १९। जिने  
श्वर । २०। शुद्धमति । २१। शिवकर । २२। स्यन्दन । २३। संप्रति  
। २४ ॥ ❀ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थकराः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीकृपन् । १। अ  
जित । २। संजव । ३। अजिनन्दन । ४। सुमति । ५। पञ्चप्रज । ६।  
सुपार्थ । ७। चंद्रप्रज । ८। सुविधि । ९। शीतल । १०। श्रेयांस । ११।  
वासुपूज्य । १२। विमल । १३। अनन्त । १४। धर्म । १५। शान्ति । १६।  
कुंयु । १७। अर । १८। मल्लि । १९। मुनिसुव्रत । २०। नमि । २१।

नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्धमान । २४ । प्रमुखावर्तमानजिनाः ॥ ॥  
 ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंपन्न । ४ ।  
 सर्वानुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । पोदिल ।  
 ९ । शतकीर्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ ।  
 निष्पुलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ ।  
 संवर । १८ । यशोधर । १९ । विजय । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ ।  
 अनन्तवीर्य । २३ । जद्रंकर । २४ ॥ ॥ एते चावितीर्थकराजिनाः ॥ ॥

॥ ॥ शान्ताः शान्तिकराः चवंतु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयडुर्नि  
 क्तकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाभि । १ । जितशत्रु  
 । २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ठ । ७ । मह  
 सेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढस्थ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य  
 । १२ । कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । ज्ञानु । १५ । विश्वसेन । १६ ।  
 शूर । १७ । सुदर्शन । १८ । कुंज । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ ।  
 समुद्रविजय । २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ । ॥ ॥ वर्तमान  
 चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ । विजया । २ । सेना  
 । ३ । सिद्धार्था । ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ ।  
 लक्ष्मणा । ८ । रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ ।  
 श्यामा । १३ । सुयशा । १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री ।  
 । १७ । देवी । १८ । प्रजावती । १९ । प्रद्धा । २० । वप्रा । शिवा । २१ । वामा  
 । २२ । विशला । २३ । ॥ ॥ वर्तमानजिनजनन्यः ॥ ॥ ॐ श्री गोमुख ॥ १ ।  
 महायक्ष । २ । त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंबरु । ५ । कुसुम । ६ ।  
 मार्तण्ड । ७ । विजय । ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा । १० । यक्षराज । ११ ।  
 कुमार । १२ । षण्मुख । १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ ।  
 गंधर्व । १७ । यक्षराज । १८ । कुबेर । १९ । वरुण । २० । नृकुटि ।  
 । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व । २३ । ब्रह्मशांति । २४ । ॥ ॥ वर्तमा  
 नजिनयक्षाः ॥ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ । अजितवला । २ । इरितारि । ३ ।  
 काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा । ६ । शांता । ७ । नृकुटि । ८ ।  
 सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी । ११ । चंदा । १२ । विदिता

॥ १३ ॥ अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ । निर्वाणी । १६ । वला । १७ ।  
धारणी । १८ । धरणीप्रियाः । १९ । नरदत्ता । २० । गांधारी । २१ । अं-  
विका । २२ । पद्मावती । २३ । सिद्धायिका । २४ । ॥ ❀ ॥ वर्तमान  
चतुर्विंशति तीर्थकरशाशनदेव्यः ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवृति कीर्तिः कांति बुद्धि  
लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतनामानो । जयन्ति - ते  
जिनैन्द्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञती । २ । वज्रशृंगला । ३ । वज्रांकुशा  
। ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ ।  
गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वास्त्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ ।  
वैरोद्या । १३ । अत्रुता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ ।  
एताः पौनःशविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्व-  
र्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ब्रह्मा  
श्वंद्र सूर्या गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपा-  
दाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम  
नगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयतां १ अक्षीणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च  
भवन्तु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजनसंबन्धिवंधुवर्गसहिताः  
नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो भवन्तु । अस्मिंश्च भूमंमले आयतननिवासिनां ।  
साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्भनस्योपशम-  
नाय शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः भवन्तु । सदा  
प्राडुर्भूतानि क्षुरितानि पापानि शाम्यन्तु । शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।  
श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश ।  
मुकुटाञ्ज्यर्चितां ह्ये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दि-  
शतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ १ ॥ ॐ उन्मृष्ट  
रिष्ट डष्ट ब्रह्मगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयतु  
शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपोरजनपद राजाधिपराजसंनिवेशानां । गोष्ठीपुरमुख्या-  
नां । व्याहरणैर्व्याहरेज्जान्तिं ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । श्रीपौर  
लोकस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शान्ति-  
र्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु । ॐ  
स्वाहा १ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठा यात्राम्ना



न कोलहइ गुणगुरुं नवकार ॥ १२ ॥ अमसंपय नवपय सहित इगसठ  
 लघु अक्षर । गुरुअक्षर सत्तेव एहजाणो परमाक्षर । गुरुजिणवल्लहसूरिच  
 णै सिवसुखहकारण । नरय तिरियगइ रोग सोग बहुडुक्ख निवारण ।  
 जल थल पवय वन गहन समरण ऊवे इकचित्त । पंचपरमेष्ठि मंत्रहतणी  
 सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्ठि नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम् ॥

## ॥ ❀ । अथ तिजय पञ्चस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिजय पञ्चस्तोत्र पयासं । अठ महा पाडिहेर जुत्ताणं । समय  
 खित्त विआणं । सरेमि चक्रं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीया । पन  
 रस पणास जिणवर समूहो । नासेठ सयलडुरिअं । नविआणं नत्तिजुत्ता  
 णं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विअ । तीसा पणहतरी जिणवरिंदा । गह नूअ  
 रक्ख साइणी । घोखसग्गं पणासेठ ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसाविअ । सठी पंचे  
 व जिणगणोएसो । वाहि जल जलण हरि करि । चोरारि महाजयं हरण  
 ॥ ४ ॥ पणपणाय दसेवअ । पणवी तहयचेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं  
 देवा सुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरज्जंहः सरसुंसः । हरज्जंहः तहयचेव  
 सरसुंसः । आलिहअ नामगणं । चक्रं किर सबनं नदं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि  
 पणत्ति वज्जश्रृंखला । तहय वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता । कालि महा  
 कालि तहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला । माणवि वइरुद्ध तहयअनुत्ता ।  
 माणसि महमाणसिआ । विज्जादेवीन रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मचूमिसु  
 नप्पणं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाण वणो । वसोहिअं हरण डुरि  
 आइ ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापामिहेर कयसोहा । ति  
 त्थयरा गयमोहा । ऊए अवा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संखविहुम ।  
 मरगय घणसंनिहं विगय मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं । सवामरपूइअं वंदे  
 स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ । जे  
 केवि डुब्देवा । ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फलहे  
 लिहिऊण खालिअंपीअं । एगंतर गहमुग्गय । साइणिनूअंपणासेइ ॥  
 १३ ॥ इय सत्तरिसय जंतं । सम्ममंतं डुवार पमिलिहिअं । डुरिआरि विजय  
 तंतं । निज्जंतं निज्जमचेह ॥ १४ ॥ इति सप्तत्युत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ दोसावहार स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोसावहारदक्खो । नालीयायर वियासिगोपसरो । रयणत्तयस्सज  
एत्तं । पासजिणो जयत्तं जयचक्खू ॥ १ ॥ कयकुवलय पडिवोहो । हरिणं  
कियविग्गहो कलानिलत्तं । बिहियार बिंद महणो । दियराओ जयत्तं पास  
जिणो ॥ २ ॥ कंतीइनिज्झिणंतो । सिंदूरं पुहविन्दणो कूरो । जयजंतुअम  
यवक्को । सुमंगलो जयत्तं पज्जपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदलनीलरुई । हरिमंमल  
संयुओ इलाणंदो । रयणियरदारत्तं मह । बुहोपसीयज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥  
नाहियवाय वियट्ठो । नायत्थोणायरायकयपूत्तं । सिरिपासनाहदेवो । देवाय  
रित्तं सुहंदिसत्तं ॥ ५ ॥ रायावट्ट समुज्जल । तणुप्पह मंमलोमहाजुई । असुरे  
हिंनंमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयत्तं ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो । संतो  
उक्खावहोजयंमिथिरो । वज्जल तमासरिससरी । जयचक्खुसुत्तं जयत्तपासो  
॥ ७ ॥ कवलीकयदोसायर । मायंमरहं अहो तणुविमुक्कं । लोयाअरणीज्जुयं ।  
पासजिणं सत्तमंसरह ॥ ८ ॥ उरिआइ पासनाहो । सिहावमाली नहो न  
वणकेज्ज । दूरंतमरासीत्तं । सत्तमठाणत्तिं हरत्तं ॥ ९ ॥ इय नवगह धुइग  
यं । जिणपंदसूरीहिं गुंफिअं धवणं । तुहपास पढइ जोत्तं । असुहाविगहा  
नपीडंति ॥ १० ॥ इति नवग्रहस्तुतिगद्दिर्जत श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ जगद्गुरु ए ग्रहस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सदगुरुज्ञापितं । ग्रहशांतिं प्रवि  
ख्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया  
विधिक्रमात् । पुष्पविलेपने धूपैः । नैवेद्ये स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रज्ञस्यमार्त्तमः  
चंद्र श्रेंद्रप्रज्ञस्यच । वासुपूज्योन्नमिपुत्रो । बुधोप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥  
विमलानंतधर्माणां । शांतिं कुंतु नमिस्तथा । वर्द्धमानो जिनेंद्राणां । पादपद्मे  
बुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऊपज्ञाजितसुपार्श्वा । आनिनंदनशीतलो । सुमतिःसंज्ञ  
वःस्वामी । श्रेयांसश्चबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधे कथितः शुक्रः । सुव्रतश्च  
नैश्वरः । नेमिनाथोन्नवेंद्राज्जः । केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्मलक्ष्मेचरा  
शौच । यदा पीडंति खेचराः । तदा संपूजयेद्दीमान् । खेचरैः सहितान् जि

नान् ॥ ७ ॥ पुष्पैर्गंधादिर्निर्धूपैः । नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृश दौनश्च  
 वासोर्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्यसोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनेश्च  
 रोराहुः । केतुःप्रमुखाखेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चा  
 रा । देशनक्षत्रवर्णके । स्तुताश्चपूजिताभक्त्या । ग्रहाः संतुसुखावहा ॥ १० ॥  
 जिनानामग्रतः स्थित्वा । ग्रहाणांतुष्टिहेतवे । नमस्कारशतंभक्त्या । जपेदष्टो  
 त्तरं नरं ॥ ११ ॥ नद्रवाहु रुवाचेदं । पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः  
 पूर्वाद् । ग्रहशांतिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥ इति श्रीनवग्रहशांतिकारकजिनस्तोत्रं ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धम्मो मंगलमुक्किठं । अहिंसा संजमो तवो । देवावि तं नमंसंति ।  
 जस्स धम्मसयामणो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्सपुप्फेसु । जमरो आविअइरसं ।  
 नय पुप्फं किलामेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणावुत्ता । जेलो  
 ए संति साहुणो । विहंगमाव पुप्फेसु । दाणजत्तेसणेस्या ॥ ३ ॥ वयंच वि  
 त्तिलव्वजामो । नयकोइजवहम्मइ । अहागडे सुरीयंति । पुप्फेसुजमरो जहा  
 ॥ ४ ॥ महुकारसमावुद्धा । जे जवंति अणिस्सिआ । णाणापिंमरयादंता ।  
 तेणवुच्चंति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ डमपुप्फियानामअयणंसम्मत्तं ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्व्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेय्यो  
 नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येय्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपा  
 ध्यायेय्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुय्यो  
 नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनमस्कारः । सर्वपापक्षयंकरः । मंगलानांचसर्वे  
 षां । प्रथमं जवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जएविजए । अर्हपरमात्मनेनमः ।  
 कमलप्रजसरिंद्रो । ज्ञापतेजिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकजक्तोपवासेन । त्रिकालंय  
 पठेदिदं । मनोजितवित्तं सर्वं । फलंसलजतेध्रुवं ॥ ४ ॥ जूशज्या ब्रह्मचर्ये  
 ण । क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रेपवित्रात्मा । षण्मासैर्लजतेफलं ॥ ५ ॥  
 अर्हंतस्थापयेन्मुर्धनि । सिद्धंचक्षुर्ललाटके । आचार्य श्रोत्रयोर्मध्ये । उपा

ध्यायंतुब्राह्मणे ॥ ६ ॥ साधुद्वंदं मुखस्याग्रे ॥ मनःशुद्धंविधायच । सूर्यचंद्र  
निरोधेन । सुधीःसर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनवेपी । वामपार्श्वे स्थितो  
जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञः । परमेष्ठिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशंश्रीजिनोरक्ते ।  
दाग्नेयंविजितेन्द्रियः । दक्षिणांशंपरंब्रह्म । नैऋतिंचक्रिकालवित् ॥ ९ ॥ प  
श्चिमांशं जगन्नाथो । वायवंपरमेश्वरः । उत्तरांतीर्थरुत्सर्वा । मीशानीचनि  
रंजनः ॥ १० ॥ पातालंजगवानहं । नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा  
देव्यो । रक्षंतुसकलंकुलं ॥ ११ ॥ रूपज्ञोमस्तकंरक्ते । दजितोपिविलोचने ।  
संज्ञवःकर्णयुगलं । नाशिकां चान्तिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ट्रो श्रीसुमती रक्षेत् ।  
दंता न्यग्रप्रज्ञोविभुः । जिह्वां सुपाश्वदेवोयं । तालु चंद्रप्रज्ञोविभुः ॥ १३ ॥  
कंठं श्रीसुविधीरक्षेत् । हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसोवाङ्मयुगलं । वासुपूज्यः  
करघ्यं ॥ १४ ॥ अंगुली विमलो रक्षेत् । दन्तोसौस्तनावपि । सुधर्मोप्युदरा  
स्थीनि । श्रीशांतिर्नाम्निमंमलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथगुह्यकंरक्षेत् । दरोरोमकटीतटं ।  
मस्तिरूपृष्टिवंशं । जंघेचमुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षेत् । श्रीने  
मिश्ररणद्वयं । श्रीपार्श्वेनायःसर्वांगं । वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी  
जलतेजस्क । वाय्वाकाशमयंजगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो । धीतरागोनिरंजनः  
॥ १८ ॥ राजद्वारेश्मशानेवा । संग्रामेशत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि ।  
भूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणप्राते । दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपु  
त्रत्वेमहादोषे । मूर्खत्वेरोगपीडिते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनी ग्रस्ते । महा  
ग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारे ध्ववैपश्ये । व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव  
सुमुत्थाय । यःस्मरेज्जिनपंजरं । तस्य किंचिन्नयनास्ति । लज्ज्यते सुखसंपदं  
॥ २२ ॥ जिनपंजर नामेदं । यःस्मरत्यनुवासरं । कमलप्रचराजेंद्रः । श्रि  
यंसलज्जतेनरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थायपठेत्तत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंज  
राख्यं । आसादयेत्सः कमलप्रचाराख्यं । लक्ष्मी मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥  
श्रीरुद्रपत्नीयवरेण्यगच्छे । देवप्रज्ञाचार्य्यपदाब्जहंसः । वादींद्रचूडामणिरपेजै  
नो । जीवाङ्गुरुः श्रीकमलप्रचाराख्यः ॥ २५ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इस महाप्रज्ञावीक जिनपंजरस्तोत्रकों सुधगुरूकेपास सीखके  
प्रज्ञातसमें सदागुणें तो कोई शरीरमें उपद्रव न होय ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ लघु जिनसहस्रनामः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वन्द्ये तस्यैव नामा  
नि । मोक्षयसौख्यान्निलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो  
निरामयः । निःशरीरो निरातंको । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलं  
को निरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारो  
यनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । निर्द्वयो निर्ममः शिवः । निस्त  
रंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः । नि  
रागो निरघोजिनः । निःशब्दः प्रतिमश्लेषः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥  
निःसंगात् प्रातकैवल्यो । नैष्ठिकः शब्दवर्जितः । अनिंद्यो महापूतात्मा । जग  
त्शिवर शेषरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः । सोपि  
योगात् शुभ्रप्राप्तः । कर्मद्वोतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरौ अमरः सिद्धः । अ  
र्चितः अक्षयो विभुः । अमूर्तः अच्युतो ब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापति ॥ ८ ॥  
अनिंद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमो जगन्नाथ । बोधरूपो  
जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः । अह्ने  
द्यो निर्मलो नित्यः । सर्वसद्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतो जगद्भूतः ।  
निष्कषायो जगन्नाथः । विश्वनाथः स्वयं बुद्धः । वीतरागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥  
अंतको सहजानंदः । अवाज्ञानसगोचरः । असाध्यः शुद्धश्चैतन्यः कर्म नो  
कर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः । कर्मो  
जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः ।  
विश्ववेदी पितामहः । सर्वभूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आ  
नंदरूपचैतन्यो । जगवां स्त्रिजगद्गुरुः । अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्यक्तव्य  
यात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित । गौरवादित्रया  
हूरः । सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अन्नयः प्रातकैवल्यः । निर्माणो निरपे  
क्षकः । निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो  
महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः । सर्वेशः सत्सुखावासः । जिनैन्द्रो मुनिसंस्तुतः  
॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो जगन्नाथः । प्र  
स्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्व  
रो जगन्नाथः । सचित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो

मुक्तिवल्लभः । योगीन्द्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ ११ ॥ सदा  
 शिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्य त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणको  
 ष्ठमूर्तिकः ॥ १२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः । सर्वपापविवर्जितः । सर्वदेवाधिको देवोः ।  
 सर्वभूत हितकरः ॥ १३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ।  
 तनुमात्रश्चिदानंदः । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ १४ ॥ सकलातिशयोदेव । मु  
 क्तिस्थो महातामहः । मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ १५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः । महाभाक् महादर्शः । महामुक्तिप्र  
 दायकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्षि  
 को महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ १७ ॥ महापूज्यो महाबन्धो । महा  
 विघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिमश्च्युतः ॥ १८ ॥ मुक्ता  
 मुक्तिजसंबोधः । एकानेकविनिश्चलः । सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः  
 ॥ १९ ॥ महागूरो महाधीरो । महाह्रुः खविनाशकः । महामुक्तिप्रदो धीरो । म  
 हाह्व्यो महागुरुः ॥ २० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामो विपयाद्भ्युतः । ज  
 गन्तो महाशान्तो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ २१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः ।  
 परमेष्ठी परमेश्वरः । परमात्मा परानंदोः । परंपरम आत्मकः ॥ २२ ॥ प्रस्तुता  
 नंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नाकृतिं नाकूरो वर्णा । व्योमरूपो जिता  
 त्मकः ॥ २३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः । संसारहृदेकारणः । निरवद्यो महा  
 राध्यः । कर्मजिद्धमनायकः ॥ २४ ॥ बोधस्तु जगद्बन्धो । विश्वात्मा नर  
 कांतकः । स्वयंभू पापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभ्रवः स्तुतः ॥ २५ ॥ वर्णातीतो म  
 हातीतो । रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेशनायकः ॥ २६ ॥  
 वरेण्यो जवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः । जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो  
 हरः ॥ २७ ॥ विश्वदृक् स्वसंबन्धः । पवित्रो गुणसागरः । प्रसन्नः परमा राध्यः  
 लोका लोकप्रकाशकः ॥ २८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रबन्धः सुरार्चितः ।  
 निष्प्रपञ्चो निरातंको । निःशेष ह्वेशनाशकः ॥ २९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो ।  
 लोका लोकविलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाय शिखरस्थितः  
 ॥ ३० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । वेपथन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदं यांति ।  
 मुच्येते नात्र संशयः ॥ ३१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ इति जद्रवाङ्गस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

मंदं ॥ ३ ॥ सकलजन्म सरोजविकाशिका । कुमतिसंत मसोच्चयनाशिका ।  
जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । ज्वतु वाग्जिनलाज शुचार्थदा ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्यविलसद् ज्ञानामृतांजोनिधेः । सद्भावेन  
परस्वरूपविरते मुंत्यास्पदेतस्थुषः । सद्भूतप्रतिविंबतस्तु सुतरां गौमीपुरोज्ञा  
सिनः । सोद्धासं प्रणिपत्प सत्य मनसा तत्रैव नित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादां  
बुज दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्या व्रजंतो ध्वनि । स्पृश्यन्ते नहि डुष्टजंतुनिवहैर्धन्यै  
र्नवा तस्करैः । नैवोज्ज्वालदवानलैर्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो । सःश्रीपार्श्वविभ्रु  
व्यचिन्त्यमहिमा दृश्योनकेषां जवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तः करणाद्भुतं कुटिलतां  
मोहादिनोज्ञावितां । धृत्वा निर्मलजावनांच विधिना यद्भक्तिमातन्विता । लज्य  
न्ते नरराज निर्जर वर श्रेणी सुखानिक्रमा । न्मुक्तिश्री रपि सैवसुधमनसा संसे  
व्यतांविश्वपाः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीगौडीपार्श्वजिनस्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यः श्रीऋषजस्ततो जितजिनः श्रीसंजवस्तीर्थकृत् । सुश्रीमान  
जिनंदनश्च सुमतिः श्रीसद्मपद्मप्रजः । पृथ्वीकुक्षिज्व सुपार्श्वजिनपस्तीर्थेशचं  
द्रप्रजः । सव्वर्द्धः सुविधिर्जिनो मुनिमतः श्रीशीतलःसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांस  
प्रभुवासुपुज्य विमला नंतेश धर्म्मेश्वराः । शांतिः कुंथु ररस्ततो जितरिपु मंछि  
र्जिनःसुव्रतः । अर्हतौ नमि नेमिशुद्धमुनिपौ विश्वत्रयेविश्रुतौ । श्रीमत्पार्श्वजिनः  
प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमानः प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्च  
तुर्विंशति । निश्शेषोत्तम ज्ञव्यजंतुहृदयां जौजप्रबोधोद्यताः । बंधन्ते सुरचन्दवं  
द्यविशदश्लोकव्रजानिर्जय । श्रीसंपत्तिनिवास विक्रमपुरेसद्भक्तितः प्रत्यहं ॥ ३ ॥  
॥ ❀ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मङ्गलाष्टकं लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुट प्रद्योतिरत्नप्रज्ञा । ज्ञास्वत्पादनखेन्दव  
प्रवचनां ज्ञोधौ व्यवस्थायिनः । ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः  
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तमम  
लं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदः । धर्म्मःसू  
क्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्यालयं । प्रोक्तं तत्र त्रिविधं चतुर्विधं ममी कुर्वे

तुमे मङ्गलं ॥ १ ॥ नाच्चेयादिजिनाधिपा स्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्री  
मन्तो नरतेश्वरप्रभृतयो येचक्रिणो द्वादश । ये विष्णु प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः  
समाधिकात्रिंशती । त्रैलोक्ये जयदा त्रिपटिपुरुषाः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥  
कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी । चंपायां वसुपूज्य सज्जनपतेः ।  
सम्भेदशैलेर्हतां । शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वाणा  
विनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वतु मेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योति व्यंतर जावनामरगृहे  
मेरौकुलाद्रौस्थिता । जंबू शालमलि चैत्यशाखिषु तथा बह्मरूप्यादिषु ।  
इक्ष्वाकारगिरौच कुम्भलनगे क्षीपेच नंदीश्वरे । शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्व  
तु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्जावतरोपिजयत्यर्हतां जन्मान्निपेकोत्सवे । योजातः  
परिनिक्रमे वचनत्रयो यः केवलज्ञानज्ञाक् । यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमासंज्ञावितः  
स्वर्गिभिः कल्याणानिच तानिपंचसततं कुर्वतुमे मङ्गलं ॥ ६ ॥ येपंचोपधिक्षुधयः  
श्रुततपो रुद्धिगताः पंचये । येचाष्टांगमहानिमित्तकुशला येषौविधाचारणा ।  
पंचज्ञानधराश्च येषिवलिनो ये बुद्धि रुद्धीश्वरा । सत्तेते सकलाश्च ते गण  
भृताः कुर्वतुमे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्याश्चाष्ट जयादिका द्विगुणिता विद्या  
दिका देवता ॥ श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः । द्वात्रिंश  
तत्रिदशा ग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टा । दिक्पाला दश इत्यमीसुरगणाः  
कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ।  
पूर्वाण्येपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं । ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च  
मनुजैर्धर्मार्थकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिताः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥  
॥ इति श्रीमङ्गलाष्टकं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परमात्मास्तोत्रः ॥ ❀ ॥

॥ शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नवंधुनंकर्म नकर्ता । नश्रंगं न  
संगं नशृङ्गा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नवंधो नमोहो नरा  
गादिलोकं । नजोगं नजोगं नव्याधि नंशोकं । नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं  
(चि०) ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षु नंकारं नवक्त्रं ननि  
द्रा । नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा । (चि०) ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं



नचिंता । नक्षुल्लुट् नञ्जीतं नरुष्यं नतुंदा । नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्या ।  
 चि० ॥ त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं । ऋषीकेश विदंशकर्म्मरिजालं । नपु  
 एयं नपापं नअध्या नप्राणं । (चि०) ॥५॥ नवालयं नवृद्धं नविधि नमूढा ।  
 नभेद्यं नभेद्यं नमूर्ति नमीहा । नरुणं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । (चि०) ॥६॥  
 नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टौ नअव्या । नगुर्वो न  
 शिष्यो नआद्यो नदीनं ॥ (चि०) ॥७॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी । नपूर्णा  
 नगून्यं सचैतन्यरूपं । अन्योन्निजिणं नपरमार्थमेकं । (चि०) ॥८॥ आत्मा  
 रामगुणाकरं गुणनिधि श्रैतन्यरत्नाकरं । सर्वेभूतगतागते सुखदुःख ज्ञातात्वया  
 सर्वगं । त्रैलोक्याधिपति स्वयंस्वमनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंह्रिंश  
 हर्षहृदयं श्रीमान् भूदच्युतः ॥ ९ ॥ ॐ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ नमस्कारस्तोत्रं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं । दर्शनं स्वर्गसोपानं । दर्श  
 नं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेनच । नतिष्ठति  
 चिरं पापं । छिद्रहस्ते यद्योदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य । संसारध्वांतना  
 शनं । बोधनंचित्तपद्मस्य । समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य ।  
 सद्धर्माभृतवर्षणं । जन्मदाघविनासाय । वृंहणंसुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति  
 जिनेभक्ति । जिनेभक्ति दिनेदिने । सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु ज्ञे  
 ज्ञे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहित्राता । नहित्राता जगत्रये । वीतरागसमोदेवो ।  
 न भूतो न भविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं मम ।  
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्ष जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागं मुखंदृष्ट्वा । पद्मरागस  
 मप्रज्ञं । नैकजन्म कृतंपापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं  
 सिद्धाजगतिमंगलं । मंगलंसाधवोमुख्यं । धर्मःसर्वत्रमंगलं ॥ ९ ॥ लोको  
 त्तमाइहार्हतः । सिद्धालोकोत्तमाः सदा । लोकोत्तमोयतीशानां । धर्मोलोको  
 त्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हतः । सिद्धाशरणमंगलां । साधवः शरणं  
 लोके । धर्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंमल स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष । मक्षरंवाप्ययत्स्थितं । अग्निज्वाला समंता  
 द । विंडुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं  
 देदीप्पमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्हं मित्यक्षरं ब्रह्म । वाच  
 कं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सचीजं । सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमो  
 हृद्ग्य ईशेऽन्यः । ॐ सिद्धेऽन्योनमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः । उपाध्यायेभ्यः  
 ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः । ॐ ज्ञानेऽन्योनमोनमः । ॐ नमः  
 स्तत्त्वदृष्टिभ्यः । आरित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्येत । द  
 हंदाद्यष्टकं शुभं । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं  
 पदं शिखारंक्षे । त्परं रंक्षेत्तुमस्तकं । तृतीयं रंक्षेत्त्रेक्षे । तुर्यं रंक्षेच्च नासिकां ॥ ७ ॥  
 पंचमं तु मुखरंक्षेत् । षष्ठं रंक्षेच्च घटिकां । नाभ्यंतं सप्तमं रंक्षेत् । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं  
 ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः । सरेफोद्विध्विपंचपान् । सप्ताष्टदशसूर्याकान् ।  
 श्रितो विंडुस्वरान्पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः । पंचातो ज्ञानदर्शनं ।  
 आरित्रेभ्यो नमो मध्ये । ह्रीं सांतं ह समलंकृतः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॐ । ह्रीं ।  
 ह्रीं । हुं । हूं । ह्रूं । ह्रौं । ह्रौं । ह्रौं । ह्रौं । असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो  
 नमः ॥ ❀ ॥ जंबूवृक्षधरोक्षीपः । क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकेष्ट ।  
 काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतो मेरुः । कूटलक्षैरलंकृतः । उच्चै  
 रुच्चैस्तरस्तार । स्तारामंमलमंमितिः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं । बीजम  
 ध्यास्य सर्वगं । नमामि विंमार्हत्यं । ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं  
 निर्मलं शांतं । वज्रलं जाम्बवतोश्चितं । निरीहं निरहंकारं । सारं सारतरंग  
 नं ॥ १४ ॥ अनुक्षतं शुभं स्फीतं । सात्त्विकं राजसंमतं । तामसं चिर  
 संबुद्धं । तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं । सरसं विसंपरं  
 परापरं परातीतं । परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च । त्रिवर्णं  
 तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं । सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं  
 तुष्टं । निर्वृतं अतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं । निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥  
 ईश्वरं ब्रह्म संबुद्धं । बुद्धं सिद्धं मतंगुरु । ज्योतीरूपं महादेवं । लोका लोक  
 प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णीतः । सरेफो विंडुमंमितिः । तुर्यस्वरस

मायुक्तो । वज्रधानादमालितः ॥ १० ॥ अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे । वृष  
 नाद्याजिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता । ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ ११ ॥  
 नादश्चंद्रसमाकारो । विंडुर्नीलसमप्रज्ञः । कलारूपसमासांतः । स्वर्णाक्षः सर्व  
 तोमुखः ॥ १२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसं  
 लीनं । तीर्थरुन्ममलंस्तुमः ॥ १३ ॥ चंद्रप्रज्ञ पुष्पदंतौ । नादस्थितिसमा  
 श्रितौ । विंडुमध्यगतौ नैमि । सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ १४ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपूज्यौ ।  
 कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ १५ ॥  
 शेषास्तीर्थकृतः सर्वे । हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरंप्राप्ता । श्वतुर्वि  
 शतिरहंता ॥ १६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदाः सर्व  
 कालेषु । ते च व्रतु जिनोत्तमाः ॥ १७ ॥ देवदेवस्य यश्चक्रं । तस्य चक्रस्य या  
 विज्ञा । तयाच्चादित सर्वाङ्गं । मामांहीनस्तु माकिनी ॥ १८ ॥ देवदेवस्य ० ।  
 मामांहीनस्तु राकिनी ॥ १९ ॥ देवदेव ० । मामांहीनस्तु लाकिनी ॥ २० ॥  
 देव ० । मामांहीनस्तु काकिनी ॥ २१ ॥ देवदेव ० । मामांहीनस्तु शाकिनी  
 ॥ २२ ॥ देव ० । मामांहीनस्तु हाकिनी ॥ २३ ॥ देव ० । मामांहीनस्तु  
 याकिनी ॥ २४ ॥ देव ० । मामांहींसंतुपणगाः ॥ २५ ॥ देव ० । मामांहिं  
 संतु हस्तिनः ॥ २६ ॥ देवदेव ० । मामांहिंसंतु राक्षसाः ॥ २७ ॥ देव ० ।  
 मामांहिंसंतु वणहयः ॥ २८ ॥ देव ० । मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥ २९ ॥ देव ० ।  
 मामांहिंसंतु उर्जनाः ॥ ३० ॥ देव । मामांहिंसंतु भूमिपाः ॥ ३१ ॥ श्री  
 गौतमस्ययामुद्रा । तस्यायान्नुविलब्धयः । तान्नि रन्धुद्यतज्योति । रहंसर्व  
 निधीश्वराः ॥ ३२ ॥ पातालवासिनो देवा । देवाभूषीणि वासिनः । स्वर्वा  
 सिनोपि ये देवाः । सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ३३ ॥ येऽवधिलब्धयो येतु ।  
 परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवाः । मांसं रक्षंतु सर्वदा ॥ ३४ ॥ दु  
 र्जनाभूतवेत्तालाः । पिशाचामुजलास्तथा । ते सर्वे प्युपशाम्यंतु । देवदेव  
 प्रज्ञावतः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृतिर्लक्ष्मी । गौरी चंमी सरस्वती ।  
 जयांवा विजयानित्या । क्लिप्ता जिता मदद्रवा ॥ ३६ ॥ कामांगा कामवा  
 णाच । सानंदानंदमालिनी । माया मायाविनी रौद्री । कला काली कलि  
 प्रिया ॥ ३७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो । वर्त्तंते याजगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रय  
 त्नुतु । कांतिकीर्तिधृतिमति ॥ ३८ ॥ दिव्यो गोप्यः सङ्गः प्राप्यः । श्रीऋषि

मंमलस्तवः । ज्ञापितस्तीर्थनाथेन । जगत्त्राण रुतेनघः ॥ ४९ ॥ रणेराज  
कुलेबन्धो । जलेडुर्गे गजे हरो । रमशाने विपिने घोरे । स्मृतो रक्षति  
मानवं ॥ ५० ॥ राज्यघ्नष्टा निजं राज्यं । पदघ्नष्टा निजं पदं । लक्ष्मी  
घ्नष्टानिजां लक्ष्मीं । प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ चार्याधी लज्जते चार्या ।  
पुत्राधी लज्जते सुतं । वित्ताधी लज्जते वित्तं । नरः स्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥  
स्वर्णरूपे पटेकांस्ये । लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धिः । गृहे  
वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ जूयपत्रेलिखित्वेदं । गलके मूर्धनि वा जुजं । धा  
रितं सर्वदा दिव्यं । सर्वजीति विनाशकं ॥ ५४ ॥ जूतेः प्रेतैर्ग्रहेर्यक्षैः । पिशा  
चैर्मुञ्जलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकैः । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ जूजुवः स्व  
स्वयीपीठः । बन्तिनः शाश्वताजिनः । तैः स्तुते वैदितै र्दृष्टैः । यत्फलं तत्फलं श्रुतो  
॥ ५६ ॥ एतज्ज्ञोष्यं महास्तोत्रं । न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते ।  
बालहत्यापदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपः कृत्वा । पूजयित्वा जिनावली ।  
अष्टसाहस्रिको जापः । कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रातः ।  
यैपठन्ति दिनेदिने । तेषां न व्याधयो देहे । प्रज्जवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अ  
ष्टमासावधियावत् । प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतन्महातेजो । जिनविंशं  
स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यहंतो विंशे । ज्वेसतमके ध्रुवं । पदं प्राप्नोति  
शुद्धात्मा । परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंशो ज्वेध्याता । कल्याणानि  
च सोऽश्रुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि । जूयस्तु न निवर्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं  
महास्तोत्रं । स्तुतीनामुत्तमं परं । पठना त्स्मरणा ज्ञापा । ह्यन्यते पदमुत्तमं  
॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंमलस्तोत्रं ॥ ❀ ॥ क्लृपक श्लोकानिराकृत्य मूल्यं  
त्रकल्पानुसारेण । लिखितं । गणिः श्रीऋमाकल्याणोपाध्यायैः । तस्योपरि  
मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ऋक्तामरस्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋक्तामरप्रणत मौलिमणिप्रज्ञाणा । मुद्ब्योक्तिकं दलितपापत  
मोवितानं । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा । बालं वनं ज्वज्जैनपततांज  
नानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल बालयतत्वबोधा । उन्नतवृद्धिपटुभिः सुरलोक  
नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरेरुदारैः । स्तोत्रे किलाहमपि तं प्रथमं जिनैर्दं

॥ २ ॥ युग्मं । बुध्याविनापि विबुधाच्चितपादपीठ । स्तोतुं समुद्यतमति विंग  
तत्रपोहं । वालंविहाय जलसंस्थित मिडिविव । मन्यःक इहति जनः सह  
साग्रहीतुं ॥ ३ ॥ वक्तुंगुणान्गुणसमुद्र शशांक कांतान् । कस्तेक्ष्मः सुरगुरु  
प्रतिमोपि बुध्या । कल्पांतकाल पवनोद्धतनक्रचक्रं । कोवातरीतुमलमंबुनि  
धिं भुजाभ्यां ॥ ४ ॥ सोहं तथापि तवभक्तिवशान्मुनीश । कर्तुंस्तवं विग  
तशक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्मवीर्यं मविचार्य मृगोमृगेंद्रं । नाभ्येति किं नि  
जशिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतं परिहासधाम । त्वन्नक्ति  
रेव मुखरीकुरुते बलान्मां । यत्कोकिलःकिलमधौमधुरंविरोति । तच्चारुचाभ्र  
कलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेनभ्रवसंततिसन्निवधं । पापंक्षणावृद्ध  
यमुपैति शरीरभ्राजां । आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु । सूर्याशुनिन्न मि  
व शार्धरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेतिनाथतवसंस्तवनंमयेद । मारज्यते तनुधि  
यापि तवप्रज्ञावात् । चैतोहरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु । मुक्ताफलद्युतिमुपैति  
ननूदविडुः ॥ ८ ॥ आस्तांतवस्तवनमस्तसमस्तदोषं । त्वत्संकथापि जगतां  
डरितानिहन्ति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव । पद्माकरेषु जलजानिवि  
काशभ्रांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ । भूतैर्गुणैर्भुविभ्रवंत म  
न्निष्ठुवंतः ॥ तुल्या भ्रवंति भ्रवतो ननु तेन किंवा । भूत्याश्रितं य इहनात्म  
संमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वाभ्रवंत मनिमेषविलोकनीयं । नान्यत्रतोषमुपयाति  
जगस्यचक्षुः । पीत्वापयः शशिकरद्युतिडुग्धसिंधोः । द्वारंजलंजलनिधे रसि  
तुंकःइहेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुच्चिन्निः परमाणुभिस्त्वं । निर्मापितस्त्रिभु  
वनैकं ललामभूत् । स्तावंतएवखलुते प्यणवःपृथिव्यां । यत्तेसमानमपरंनहिरूप  
मस्ति ॥ १२ ॥ वक्रंक्वतेसुरनरोरगनेत्रहारि । निःशशेषनिर्जित जगत्त्रितयो  
पमानं । विवं कलंकमलिनं कनिशाकरस्य । यदासरे भ्रवति पांडुपलाशक  
लयं ॥ १३ ॥ संपूर्णममलशशांककलाकलाप । शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तवलंघ  
यन्ति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं । कस्तान्निवारयति संचरतोयप्रेष्ठं  
॥ १४ ॥ चित्रं किमत्रयदिते त्रिदशांगनाभि । व्रीतं मनागपिमनो नविकार  
मार्गं । कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन । किमंदराद्विशिखरं चलितंरुदा  
चित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्ति रपवर्जितं तैलपूरः । रुक्मंजगत्त्रयमिदं प्रग  
टी करोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां । दीपोपरस्त्वमसिना

य जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराज्जगम्यः । स्पष्टी कं  
 रोपि सहसायुगपज्जगंति । नाञ्जोपरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः । सूर्यातिशायिम्  
 हमासि मुनीन्द्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं । गम्यं न  
 राज्जवदनस्य नवारिदानां । विभ्राजते तव मुखाब्ज मनलपकांति । विद्योतय  
 ज्जगद पूर्वशशांकविंशं ॥ १८ ॥ किं शर्वरीपु शशिनान्धि विवस्वतावा ।  
 गुप्मन्मुखेऽदलितेषु तमस्तुनाय । निष्पण्णशालिवनशालिनिजीवलोके । कार्यं  
 कियज्जलधरेज्जलनारनभ्रेः ॥ १९ ॥ ज्ञानंयथा त्वयि विजाति कृतावकाशं ।  
 नैवं तथा हरिहरादिपु नायकेषु । तेजःस्फुरन्मनिषु याति यथा महत्त्वं नैवंतु  
 काचसकले किरणाकुलेषु ॥ २० ॥ मन्नेवरं हरिहरादय एव दृष्टा । दृष्टे  
 पु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन ज्वताञ्जुवियेन नान्यः । कश्चि  
 न्मनोहरतिनाथ जवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानिशतशो जनयंतिपुत्रान्  
 नान्याश्रुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्वादिशोदधति ज्ञानि सहस्ररस्मिं । प्रा  
 च्येव दिग्जनयति स्फुरवंगुजालं ॥ २२ ॥ त्वामामनन्तिमुनयः परमं पुमांस ।  
 मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् । त्वामेवसम्यगुपलज्य जयन्ति मृत्यु । ना  
 न्यःशिवः शिवपदस्य मुनीन्द्रपण्याः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभु मर्चित्य मसंख्य  
 माद्यं । ब्रह्माण मीश्वर मनन्त मनङ्गकेतु । योगीश्वरं विदितयोग मनेक मेकं ।  
 ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदन्तिसन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधाश्रितबुद्धियोधा ।  
 त्वंशंकरोसि ज्वनत्रय शंकरत्वात् । धातासिधीर शिवमार्गं विधेर्विधानात् । वय  
 नं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥ तुज्यं नम स्त्रिज्वनार्तिहराय नाथ ।  
 तुज्यं नमः क्लिततलामलजूपणाय । तुज्यं नम स्त्रिजगतः परमेश्वराय । तुज्यं  
 नमो जिनज्वो दधिशोपणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्र यदि नामगुणैरशेषैः ।  
 स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश । दोषरूपाच्च विबुधाश्रयजातगर्भैः । स्वप्नां  
 तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखा । मा  
 ज्ञाति रूपममलं ज्वतो नितान्तं । स्पष्टोन्नसत्किरणमस्ततमोवितानं । विम्बं  
 स्वेरिवपयोद्धरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिद्धासने मणिमयूख शिखाविचित्रे । वि  
 भ्राजते तव वपुः कनकावदातं । विम्बं विषद्विलसदंगुलतावितानं । तुङ्गो  
 दयाद्रिशिरसीत सहस्र रश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं । वि  
 भ्राजते तव वपुः कलधोतकांतं । उग्रशंकां शुचिनिर्झरं वारिधार । मुखे

स्तटं सुरगिरिखिशातकौञ्चं ॥ ३० ॥ तत्रत्रयं तवविज्ञाति शशांककांत । मुचैः  
 स्थितंस्थगितज्ञानुकरप्रतापं । मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धिशोचं । प्रख्यापयत्  
 त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेम नवपंकज पुंजकांति । पर्युन्नसन्नख  
 मयूख शिखाञ्जिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्रधत्तः । पद्मानि तत्र वि  
 बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं तथा तव विभूति रभूजिनेन्द्र । धर्मोपि  
 देशन विधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञादिनक्तः प्रहतान्धकारा । तादृ  
 क्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्रयोतन्मदा विलविलोल कपोल  
 मूल । मत्तम्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं । ऐरावताभिमिन्नमुद्यत मापतन्तं । दृष्ट्वा  
 जयं जवतिनोजवदाश्रितानां ॥ ३४ ॥ निष्पन्नकुंज गलडुज्ज्वल शोणिताक्त ।  
 मुक्ताफल प्रकरभूषित भूमिजागः । वद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि । नाक्रा  
 मति क्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्यतवन्धिकल्पं ।  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गं । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं ।  
 त्वं नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिल कंठनीलं ।  
 क्रोधोद्यतं फणिनमुतफण मापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः ।  
 त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ बलगतुरङ्ग गजगर्जित भीमना  
 द । माजौबलं बलवता मपि भूपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापविद्धं ।  
 त्वत्कीर्तनात्तमइवाशुभिदाभुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवा  
 ह । वेगावतारतरणातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितडुर्जयजेयपक्षाः । त्व  
 त्पादपंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अञ्जोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र ।  
 पाठीनपीठजयदोल्वणवामवाग्नौ । रङ्गतरंगशिखरस्थितयानपात्रा । स्वासं  
 विहायजवतः स्मरणादब्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्धूतभीषणजलोदरज्जार मुग्धाः ।  
 शौच्यांदशा मुपगताश्रयुतजीविताशाः । त्वत्पादपंकज रजोमृतदिग्धदेहा । म  
 र्यान्निवन्ति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरशृंखलवेष्टिताङ्गा ।  
 गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः । सद्यः  
 स्वयं विगत बंध जया जवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेद्र मृगराज दवानलाहि  
 संग्रामवारिधि महोदरबन्धनोत्थं । तस्याशु नाशमुपयाति जयं जियेव । य  
 स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां ।  
 जज्ञया मया रुचिरवर्णं विचित्रपुष्पां । धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं ।

तं मानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति श्रीजन्तामरस्तोत्रम् ॥ २ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कल्याणमन्दिर मुदारमवद्यजेदि । जीता जयप्रदमनिन्दित मंह  
पद्मं । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु । पोतायमानमजिनम्यजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥  
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांधुराशेः । स्तोत्रं सुविस्मृतमति न विजुर्विधातुं । तीर्थेश्व  
रस्य कमठस्मयधूमकेतो । स्तस्याहमेव किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मं)  
सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्मादृशाः कथमधीश जवंतधीशाः ।  
धृष्टोपि कोशिकशिशु र्यदिवादिवांधो । रूपं प्ररूपयति किं किलाघमं रश्मेः ॥  
॥ ३ ॥ मोहक्षया दनुजवन्नपि नाथमर्त्यो । नूनं गुणान् गुणयितुं न तव क्षमेत ।  
कल्पान्तवातपयसः प्रकटोपि यस्मा । न्मीयेत केन जलधे र्नु रत्नराशिः  
॥ ४ ॥ अज्युद्यतोस्मि तवनाथ जडाशयोपि । कर्तुं स्तवं लसदसंख्य गुणाकर  
स्य । बालोपि किं न निजवाङ्मु युगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति स्वधि  
यांधुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेक्ष्य । वक्तुं कथं जवति  
तेषु ममावकाशः । जातातदेव मसमीक्षित कारितेयं । जल्पन्ति वा निजगि  
रा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्ताम चिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामा  
पिपाति जवतो जवतो जगन्ति । तीव्रातपो पहतपांथ जनास्तिदाधे । प्रीणा  
ति पद्मसरसः सरसो निलोपि ॥ ७ ॥ हवर्त्तिनि त्वयि विजो शिथली जवन्ति ।  
जंतो कृणेन निवडाअपि कर्मबंधाः । सद्यन्नुजङ्गममया इव मध्यजाग ।  
मज्यागते वनशिखं निचंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसाजिनंद्र ।  
रोद्रे रूपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेपि । गौस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे । चैरि  
रिवाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारको जिनकथं जविनां तएव । त्वा  
मुबहन्ति हृदयेन यज्जतरंतः । यदादति स्तरति यज्जल मेपनून । मंतर्गतस्यम  
स्तः सकिलानुजावः ॥ १० ॥ यस्मिन् नृहर प्रभृतयोपि हतप्रज्ञावा । सोपि  
त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता ऊतज्जुजः पयसाथ येन । पीतं  
न किं तदपि दुर्ध्वस्वाम्येन ॥ ११ ॥ स्वामिण तुल्य गरिमाणमपि प्रपन्ना ।  
स्त्वांजंतवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघुतरंत्यति लाघवेन । चिं  
त्यो न हंतमहतां यदिवा प्रज्ञाव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विजो प्रथमं



निरस्तो । ध्वस्तास्तदावतकथं किलकर्मचौराः । श्लोषत्यमुत्र यदिवा शि  
 शिरापिलोके । नीलद्रुमानि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगि  
 नो जिन सदा परमात्मरूप । मन्वेषयन्तिहृदयां बुजकोशदेशे । पूतस्य नि  
 र्मलरुचेर्यदिवा किमन्य । दक्षस्य संज्ञविपदं ननुकर्णिकाया ॥ १४ ॥ ध्याना  
 जिनेश जवतो जविनः क्षणेन । देहंविहाय परमात्मदशां व्रजन्ति । तीव्रान  
 लाडपलञ्चाव मुपास्यलोके । चामीकरत्वमचिरा दिवधातुन्नेदाः ॥ १५ ॥  
 अन्त सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसेत्वं । ज्ञव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरं ।  
 एतत्स्वरूप मथ मध्यविवर्तिनोहि । यद्विग्रहं प्रसमयन्ति महानुज्जावाः ॥ १६ ॥  
 आत्मा मनीषि निरयं त्वदन्नेदबुद्ध्या । ध्यातोजिनेन्द्रजवतीह जवत्प्रज्ञावः ।  
 पानीयमप्य मृतमित्यनु चिन्त्यमानं । किं नामनो विषविकार मपाकरोति ॥ १७ ॥  
 त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनंविज्ञो हरिहरादि धियाप्रपन्नाः । किंका  
 चकामलिभिरी शसितोपि शंखो । नो गृह्यते विविधवर्णं विपर्ययेण ॥ १८ ॥  
 धम्मोपदेशसमये सविधानुज्ञावा । दास्तांजनोजवति ते तरुरप्यशोक । अ  
 ष्युज्जते दिनपतौ समहीरुहोपि । किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥  
 चित्रंविज्ञो कथमवाङ्मुखवृत्तमेव । विष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः । त्वज्जो  
 चरे सुमनसां यदिवामुनीश । गच्छन्ति नून मधएवहि बंधनानि ॥ २० ॥  
 स्थाने गज्जीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा  
 यतः परमसंमदसंगज्ञाजो । ज्ञव्याव्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वा  
 मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो । मन्ये वदन्ति सुचयः सुरचामरौघाः । यस्मै  
 नतिं विदधते मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्धगतयः खलु शुद्धज्ञावाः ॥ २२ ॥  
 श्यामं गज्जीरगिर मुज्ज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिहज्ञव्य शिखण्डिनस्तां ।  
 आलोकयन्ति रत्नसेन नदन्तमुच्चैः । श्रामीकराद्रिशिरसी वनवांचुवाहं ॥ २३ ॥  
 उज्जता तवशति युतिमंरुलेन । लुप्तद ह्विरशोक तरुर्वज्रव । सानिध्यतो  
 पि यदिवा तव वीतराग । निरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ ज्ञो  
 ज्ञो प्रमादमवधूय जजध्वमेन । मागत्यनिर्वृतिपुरी प्रति सार्थवाहं । एतन्नि  
 वेदयति देव जगत्त्रयाय । मन्ये नदन्नजिनः सुरडुंडनिस्ते ॥ २५ ॥ उद्यो  
 ति तेषु जवता जवनेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताक  
 लापकलितो हसितातपत्र । व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुवमज्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन

प्रपूरित जगत्त्रय पिंमितेन । कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हे  
म रजत प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेण जगवन्नितो विज्ञासि ॥ १७ ॥ दिव्य  
स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्यरत्नरचितानपि मौलिवंधान् । पा  
दौश्रयंति ज्वतो यदिवा परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ १८ ॥  
त्वं नाथ जन्म जलधेर्विपराद्धमुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।  
युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव । चित्रं विज्ञो यदसि कर्म विपाकशून्यः ॥ १९ ॥  
विश्वेश्वरोपि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाक्कर प्रकृतिरप्य लिपिः त्वमीश ।  
अज्ञानवत्पि सदैव कथंचदेव । ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ २० ॥  
प्राग्ज्ञार संनृतनज्ञांसि रजांसि रोषा । इत्यापितानि कमठेन शठेन यानि ।  
गयापितै स्तवननाथ हता हताशो । अस्तस्त्वमीजि रयमेव परं दुरात्मा ॥ २१ ॥  
यत्तज्जङ्घूर्जितं घनौघमदघ्ननीम । अश्वत्थिन्मुशाल मांसलघोरधारं । दैत्येन  
मुक्त मथ दुस्तरवारिदधे । तेनैव तस्य जिन दुस्तर वारिकृत्यं ॥ २२ ॥ ध्वस्तोर्ध्व  
केशविरुताकृतिमर्त्यमुन्म । प्रालंबजृम्भयदवक्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिज  
घंतं मपीरितोयः । सोऽस्याज्वत्प्रतिज्वं ज्वदुःखहेतुः ॥ २३ ॥ धन्यास्त एव  
जुवनाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधान्यकृत्याः । जत्तयुल्लसत्पु  
लकपद्मलदेहदेशाः । पादद्वयं तव विज्ञो जुविजन्मज्ञाजः ॥ २४ ॥ अस्मि  
ण्णपार जववारिनिधौ मुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आक  
र्णितेतु तव गोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्विपथी सविधंसमेति ॥ २५ ॥ ज  
न्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया महित मीहित दानदक्षं । तेनेह  
जन्मनि मुनीश पराज्वानां । जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ २६ ॥  
नूनं नमो हतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वविज्ञो सरुदपि प्रबिलोकिंतोसि । मर्मा  
विधौ विधुरयंति हिमामनर्थाः । प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथै ते ॥ २७ ॥  
आकर्णितोपि महितोपि निरीकृतोपि । नूनं नचेतसि मया विधृतोसि जत्तया ।  
जातोस्मि तेन जनवांधवदुःखपात्रं । यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न ज्ञावशून्याः  
॥ २८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरे  
ण्य । जत्तयानते मयि महेश दयां विधाय । दुःखांकुरोद्बलन तत्परतां विधेहि  
॥ २९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं ।



त्रिकालं ॥ १ ॥ सातजोयणतीजेअरे । पिऊलो तीरथराय । सोलजोयण  
ऊंचोसही । ध्यानघरू चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिऊलपण । चौथे  
अरे मऊार । ऊंचो दसजोयण अचल । नितप्रणमें नरनार ॥ ४ ॥ बार जो  
यण पंचम अरे । मूलतणे विशतार । दोजोयण ऊंचोअठे । सेवुंजतीरथ  
सार ॥ ५ ॥ सातहाय ठे अरे । पिऊलो परवतएह । ऊंचोदोस्ये सत्तय  
नुष । सासतोतीरथएह ॥ ६ ॥ ॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥  
केवलन्यानी प्रमुखतीर्थकर । अनंतसीधाइणगामरे । अनंतबली सीऊसे इ  
णगामे । तिणकरुं नितपरणामरे ॥ १ ॥ सेवुंजैसाधुअनंतासीधा । सीऊसीव  
लीय अनंतरे । जिणसेवुंजतीरथ नहीनेव्यो । तेगरनावासकहतरे ॥ सेवुं  
॥ २ ॥ फागुणसुदि आठमने दिवसे । रिपनदेव सुखकाररे । रायणरूख समोस  
स्वास्वामी । पूरवनिनाणूं वाररे । से ० ॥ ३ ॥ जरतपुत्रचैत्रीपूनमदिन ।  
इणसेवुंज गिरिआयेरे । पांचकोडिसूं पुंमरीकसीधा । तिण पुंमरीक कहायेरे ।  
से ० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर । वेवेकोडिसंघातरे । फागुणसुदिदशमी  
दिनसीधा । तिणप्रणमुंपरजातरे । से ० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चउदसनंदिन  
नमिपुत्री चौसठिरे । अणसणकरि सेवुंजैगिर ऊपर । एसऊसीधा एकठेरे ।  
से ० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा । दावमने वारिखिल्लरे । कातीसुदि  
पूनमदिनसीधा । दशकोडिसूं मुनिशिखरे । से ० ॥ ७ ॥ पांचे पांम्व इणगिरसी  
धा । नवनारद रिपिरायरे । संव प्रजून गयाइहां मुगतै । आठेकरमखपायेरे ।  
से ० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थकर । समोसत्या गिरिशृंगरे । अजित  
शांति तीर्थकरवेऊं । रक्षा चोमासोरंगरे ॥ से ० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवार  
संघाते । थावया सुकशाधरे । पांचसे साधुसुं सेलगमुनिवर । सेवुंजै सिवसुख  
लाधरे ॥ से ० ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेवुंजैसीधा । जरतेसरने पाटेरे ।  
राम अने जरतादिक सीधा । मुक्तिणी एवाटेरे ॥ से ० ॥ ११ ॥ जालिमया  
लीने उयाली । प्रमुख साधुनीकोमिरे । साधुअनंता सेवुंजैसीधा । प्रणमुं  
वेकरजोमिरे ॥ से ० ॥ १२ ॥ ॥ ढालचौपईनी ॥ ॥ सेवुंजेनाकऊं  
सोलउदार । तेलुणिज्यो सऊकी सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय ।  
जनमजनमना पातिकजाय ॥ १ ॥ रूपनदेव अयोध्यापुरी । समयसन्धा स्वामी  
हितकरी । जरतगयो बंदणनैकाज । येउपदेसदियोजिनराज ॥ २ ॥ जगमाहे मोटा

अरिहंतदेव । चौसठ इंद्र करैजसुसेव । तेहथीमोटो संघकहाय । जेहनें प्रणमै  
 जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटो संघवीकह्यो । जरतसुणीनै मनगहगह्यो । जरत  
 कहैतेकिमपामियै । प्रभु कहै सेत्रुजै जात्राकियै ॥ ४ ॥ जरतकहै संघवीपद  
 मुझ । थेआपोऊं अंगजतुझ । इंद्रैआण्याअक्षतवास । प्रभु आपै संघवीपदता  
 स ॥ ५ ॥ इंद्रैतिणबेला ततकाल । जरत सुनद्रा विजुनैमाल । पहिरावी घर  
 संप्रेमिया । सखरसोनाना रथआषिया ॥ ६ ॥ शिवनदेवनी प्रतिमावली ।  
 रत्नतणीदीधीमनरली । जरतै गणधर घरतेडिया । सांतिक पोष्टिक सज्ज तिहां  
 किया ॥ ७ ॥ कंकोत्रीमुंकी सज्जदेस । जरततेडायोसंघआसेस । आयोसंघ  
 अयोध्यापुरी । प्रथमथकीरथजात्राकरी ॥ ८ ॥ संघ नगति कीधी अतिघणी ।  
 संघचलायो सेत्रुजानणी । गणधर बाहूवलकेवली । मुनिवरकोडि साथेलि  
 यावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तिनी सगलीरिद्धि । जरतें साथे लीधीसिद्धि । हयगयरथ  
 पायक परवार । तेतो कहतां नावैपार ॥ १० ॥ जरतेसर संघवीकहवाय ।  
 मारगचैत्य उधरतोजाय । संघ आयो सेत्रुजैपास । सज्जनीपूगी मननीआस  
 ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुजराय । मणि माणक मोत्यांसुं बधाय । तिण  
 ठामै रही महोन्नवकियो । जरतें आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुजा  
 ऊपर चढ्यो । फरसंता पातिक ऊडपड्यो । केवलन्यानी पगला तिहां ।  
 प्रणम्यारायण रूखठै जिहां ॥ १३ ॥ केवलन्यानी सनात्रनिमित्त । ईशानेंद्र आ  
 णीसुपवित्त । नदीसेत्रुजै सोहामणी । जरतेंदीठी कौतुकनणी ॥ १४ ॥ गणधर  
 देवतणें उपदेस । इंद्रैबलिदीधो आदेस । श्रीआदिनाथ तणोदेहरो । जरत  
 करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रसाद उत्तंग । रत्न तणी प्रतिमा  
 मनरंग । जरतै श्रीआदीसरतणी । प्रतिमाथापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी  
 प्रतिमानली । माहीपूनिम थापीरली । ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद । जरतैथाप्या  
 नवलैनाद ॥ १७ ॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद । जरतकराया गुरुसुप्रसाद । जरत  
 तणोपहिलो उधार । सगलोही जाणै संसार ॥ १८ ॥ ॐ ॥ ढाल सिंधूमो  
 आसानरी ॥ १९ ॥ जरत तणें पाटै आठमै । दंम वीरज थयो रायोजी । जरत  
 तणीपर संघकीयो । सेत्रुजसंघवी कहायो जी ॥ २० ॥ सेत्रुजैउधारसांनलो ।  
 सोलमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात बीजावलि । तेह नकजुं अधिकारोजी  
 से ॥ २१ ॥ चैत्यकरायो रूपातणो । सोनानो बिंबसारोजी । मूलगोविं

वज्रमारीयो । पञ्चिमदिश तिणवारोजी । से० ॥ ३ ॥ सेवुंजैनी जात्राकरी ।  
 सफलकियो अवतारोजी । दंमवीरज राजातणो । एवीजो उधारोजी ॥ से०  
 ॥ ४ ॥ सोसागरोपम वितिकम्प्या । दंमवीरजयी जिवारोजी । इशानेंद्रकरा  
 वीयो । एतीजो उधारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी । माहें  
 द्र नाम उधारोजी । तिणसेवुंजेनो करावीयो । ए चोथो उधारोजी ॥ से०  
 ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनोधणी । ब्रह्मद्र समकित धारोजी । तिणसेवुंजेनो  
 करावीयो । ए पांचमो उधारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इंद्रनोकीयो । ए  
 ठवो उधारोजी । चक्रवर्तिसगरतणोकीयो । ए सातमो उधारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥  
 अजिनंदन पासै सुएथो । सेवुंजनो अधिकारो जी । व्यंतरइंद्र करावीयो ।  
 ए आठमो उधारोजी । से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रनुस्वामिनोपोतरो । चंद्रशेखरनाम  
 मल्हरोजी । चंद्रजसराय करावीयो । ए नवमो उधारोजी । से० ॥ १० ॥  
 शांतिनाथनी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय क  
 रावीयो । ए दशमो उधारोजी । से० ॥ ११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो । मुनि  
 सुप्रत स्वामी वारोजी । श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उधारोजी ॥ से०  
 ॥ १२ ॥ पांमवकहें अग्नेपापीया । किमवूठं मोरीमायोजी । कहेंकुंती  
 सेवुंजतणी । यात्रकीयां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचेपांमव संघ  
 करी । सेवुंज जेटयो अपारोजी । काष्टचैत्य विंवल्लेपना । ए बारमो उधारोजी ।  
 से० ॥ १४ ॥ मग्माणी पापाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसेवुंजेनो  
 संघकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥ १५ ॥ अणेत्तर सोवरसांगयां ।  
 विक्रमनृपत्री जिवारोजी । पोरवाडजावड करावीयो । एतेरमो उधारोजी ।  
 से० ॥ १६ ॥ संवत बारतिडोत्तरे । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहड्डे मुहते  
 करावीयो । ए चवदमो उधारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरे इकोत्तरे । देसल  
 हर अधिकारोजी । समरे साहकरावीयो । ए पनरमो उधारोजी । से० ॥ १८ ॥  
 संवत पनर सत्यासीयें । वेंसापवदि सुजवारोजी । करमेडोसी करावीयो । ए  
 सोलमो उधारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रतिकाले सोलमो । एवरतेठे उधा  
 रोजी । नितनित कीजे वंदना । पामीजे जवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ डहा ।  
 वल्लिसेवुंज मद्दातमकड्डां । सांजलो जिमठेतेम । सूरिधनेसरइमकहें । मद्दावी  
 रफसो एम ॥ १ ॥ जेह्यो तेह्यो द्रसणी । सेवुंजे पुजनीक । जगवंतनो वेंसवां

गठखरतरतणोए । श्रीजिनचंदसुरीस । से० । प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए । स  
 कलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ १० ॥ ताससीसजगजाणीयैए । समैसुंदरउवजाय ।  
 से० । रासरच्यो तिणरूवडोए । सुणतां आणंदथाय ॥ से० ॥ ११ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीसम्मेतसिखरजीकोरास ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वांदी वीस जिनेसरू । रचस्युं रासरसाल । तीरथ शिखर  
 समेतनी । महिमा बडी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियलै ।  
 प्रगट्यो शिखर समेत । कोडाकोडी मुनिवरू । सिद्धि गए इहखेत  
 ॥ २ ॥ तीरथ शिखर समेतए । फरस्यां पापपुलाय । ज्विजन जेटो  
 जावसुं । ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा सिखरसमेतनी । कहि  
 नसकै कविकोय । गुण अनंत जगवंतना । तिमए तीरथ होय ॥ ४ ॥  
 ढाल ॥ १ ॥ चौपईनी ॥ ❀ ॥ गिरवर शिखर समो नहीकोय । एहनी महिमा  
 सवजग होय । वीसजिनेसर मुगतैगया । मुनिजन ध्यानधरीनै रह्या ॥ १ ॥  
 प्रथम अयोध्यानगरी जली । तिहां जितशत्रु नरेसर बली । विजया राणी  
 नै सुतजाण । अजित कुमार सज्जगुणनीषाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिक सेवा  
 करै । इंद्राणी अतिउज्जव धरै । तीर्थकरनी पदवी लही । अंतर अरिजिण  
 साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इमजोगवतां जोग । पुन्यप्रसाद मिल्यो सज्ज  
 जोग । अक्सर दै संबंहर दांन । संजम लीनो आप सुजान ॥ ४ ॥ कर्मख  
 पात्री पाम्यो ग्यान । केवलदर्शन लख्योप्रधान । विचरै पुहवी मंमल मांहि ।  
 जव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥ ५ ॥ सिंह सेनादिक गणधरजया । पंचा  
 एवै संख्या सज्ज थया । एकलाख मुनिवर परिवरया । श्रावक श्रावकणी  
 वज्जकख्या ॥ ६ ॥ तीन लाख बलि तीस हजार । साधवियां जाणो सुवि  
 चार । श्रावक सहस्र अठाणुं सही । दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥  
 पांच लाख पैंतालीस हजार । श्रावकणी संख्या सुविचार । बज्जतर लाख  
 पूरवनो आय । कंचनवरण सरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढा च्यारसै धनुष स  
 रीर । मानलख्यो प्रज्जु गुण गंज्जीर । गजलांठन प्रज्जुजीनो जाण । अमृतसम  
 जसुमीठी वाण ॥ ९ ॥ अनुक्रम प्रज्जुजी सिखरसमेत । गिरवर पर आव्या

निजहेत । सहस मुनिस्वरने परिवार । मासखमण अणसण कर सार  
 ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनिमने दिने । मुक्तिगण प्रभु तीरथइए । भूचर खे  
 चर किनरसुरी । इंद्रादिक सज्ज उठव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो  
 मही । अठाइ महोत्सव कियोसही । ए तीरथनी जात्राकरै । ते भवियणअद्द  
 यसुख लहै ॥ १२ ॥ इहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंभव जिनराजजी । गएइहांनिर्वाण ।  
 शिखरसमेत सुहामणो । प्रगट्यो तीरथ जाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ सुगुणसनेही  
 साजन श्रीसीमंधरस्वाम, एचाल ॥ सावथी नगरी जरी धनसंपद सज्जथोक ।  
 जैतारीनृप राजकरै सुखियासवलोक । सेनाराणी मीठीवाणी गुणनी खाण ।  
 जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥ २ ॥ कंचनवरण सरीरमनोहर  
 प्रभुनोजाण । लंठन अवतणो सोहै प्रभुनो परधान । साठलाख पूरवनो  
 प्रभुनो आयुप्रमाण । धनुख चारसै उचपणै प्रभुदेह बखाण ॥ ३ ॥ एकसो  
 दोय संख्यायै प्रभुने गणधर होय । दोयलाखमुनि जेहने गुणवरता जगजो  
 य । तीन लाख श्रमणी बली ऊपर सहस ठतीस । भूमरुल बिचरै प्रभु श्रीसं  
 भव जंगदीस ॥ ४ ॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं श्रावक लोक । पट्टलाख  
 सहस ठतीस श्रावकणी संख्याथोक । विमुख यक्ष अरु डरितादेवी सानिध  
 कार । बिचरतां प्रभु सकल संघमें जय जय कार ॥ ५ ॥ सहस श्रमण परिवारै  
 प्रभुजी शिखर समेत । एकमास संलेखणकीनी निज पदहेत । इण गिरि ऊपर  
 पायो प्रभुजी पद निरवाण । तीरथमहिमां महियल मोटी थइय सुजाण  
 ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इहा ❀ ॥ अजिनंदन जिन बंदियै । पायो पद निरवाण । शिखर  
 समेत सुहामणो । जेटो तीर्थसुजाण ॥ १ ॥ सहसश्रमणसुं सुकसंजमधरो  
 एचाल ॥ ❀ ॥ नगरी अजोध्या सुरपुरि समजली । संवरराजा सोहैमनरली ।  
 सिद्धार्था राणी तसुनंदए । अजिनंदन जिन प्रगट्याचंदए ( उल्लाखो ) चंदए  
 सोवन वरणसोहै धनुष साढीतीनसै । सुंदर शरीर प्रमाण युतिकर कपिलंठन  
 तेनित बसै । पूर्वलाख पचास आयु गणधर इकसो सोलए । तीनलाख मुनि  
 ठलाख आर्या सहस त्रिसत्सोलए ॥ २ ॥ ( चाल ) सहसअठ्यासी दोलख  
 श्राद्धनी । संख्या चोलखसत्तावीसनी । श्रावकएयांरी संख्या जाणए । नायक  
 यक्ष कालिकाठाणए ( उल्लाखो ) ठाणए शिखर समेत ऊपर मासएक संलेख



णा । इकसहस साधू परवस्था प्रभु मुक्ति पङ्कचे पेषणा । इमही अयोध्या मे  
 वनरवर देवी मात सुमंगला । श्रीसुमति जिनवर जण नंदन सदाहोत सुमंगला  
 ॥१॥ (चाल) सोवनवर्ण धनुषतनुतीनसै । लंठनक्रौंच सोहै सुजगै हसै । पूरव  
 लाख पच्यासी आनए । इकसौ गणधर गुणगण जानए (उल्लाखो) जानए  
 मुनि त्रिणलाख सोहै सहसवीस प्रमाणए । पणलक्ष त्रीस हजार साध्वी श्रावक  
 दोय लक्षजाणए । संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आनीये ।  
 पणलाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मांनीये । श्रीशिखर ऊपर सातसंख्या  
 सहस साधुसुरंगए । करमासकी संलेखणा प्रभुमुक्तिपुहता चंगए ॥३॥ (चाल)  
 इम कोसंबी नगरीतातए । धरनृपतात सुसीमामातए । पदमप्रभुतसु अंगजना  
 थए । लंठनकमल तणो सुजहाथए (उल्लाखो) हाथए धनुषप्रमाणपूराअढा  
 ईसै तनुकहो । तीन लाख पूरव थितकहावै एकसोगणधर लहौ । लखतीन ती  
 सहजार साधू बीससहस लखच्यारए । साधवी दोयलख सहस बिहंतर श्राव  
 कसंख्या सारए ॥४॥ (चाल) पांचलाख बलि पांचहजारए । श्रावकएयांरी  
 संख्यासारए । कुसुमदेव स्यामादेवी कही । लालवरण तनुसोहै प्रभुसही ।  
 (उल्लाखो) सोहए सिखरसमेत ऊपर आठसै त्रिण मुनिवरा । करमास संले  
 खन प्रभुनी सेव करहै सुरवरा । श्रीपदमप्रभूजी मुक्तिपङ्कता गिरशिखर  
 महिमानई । तसु चरणपंकज बालबंदै हृदय आणंद गहगही ॥५॥ डहा ॥  
 श्रीसुपास जिणंदना । पदपंकज आराम । नविजन अमर सुसेवतां । पामें  
 बंठितकाम ॥ १ ॥ श्रीसीमंधर साहिवा, ए चाल ॥ ✽ ॥ नगर वणारसी  
 सोजता । राजा तात प्रतिष्ठलाखरे । देवी पृथ्वीमातजी । स्वस्तिकलंठन  
 सिष्ठलाखरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वजिणंदजी । बीस पूरवलख आयुलाखरे । धनुष  
 दोयसैदेहनो । कंचनवरण सुहाय लाखरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचाणवै गणधर  
 कथा । साधू त्रिणलाख होय लाखरे । च्यारलाख तीस ऊपरै । सहस साध  
 वियां जोय लाखरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहससतावन लक्षनी । श्रावकसंख्या  
 थाय लाखरे । च्यारलाख बलीत्रेणवै । सहस श्रावकणीजाय लाखरे ॥ ४ ॥  
 श्री० ॥ मातंगयक्ष सांतासुरी । पांचसै मुनि परवार लाखरे । करिअणसण  
 मुगतैगया । नामलियां निस्तार लाखरे ॥ ५ ॥ श्रीसु० ॥ नगर चंद्रपुर इण  
 परै । राजातात महेस लाखरे । देवी मातालक्ष्मणा । सुत चंद्राप्रभु वेशला

लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्राप्रभु बंदिये । चंद्रवरण तनुदेह लालरे । लंठन चंद्रतणो  
 नलो । धनुषदोढसै देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ नविक कमल प्रतिबोधता ।  
 सेवै सुर नर यक्ष लालरे । दसलाखपूरव आऊखा । तेणवै गणधर दक्षला  
 लरे ॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलख सहस पचाणवै । मुनिश्रमणी तीनलक्ष ला  
 लरे । असीसहस संख्याकही । श्रावकबलि दोयलक्षलालरे ॥ ९ ॥ श्रीचं० ॥  
 लाखपचास ऊपरवली । श्राविका चञ्जलक्षधार लालरे । सहसइकाणवै ऊ  
 परै । प्रभुजीनो परिवारलालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी ।  
 सहससाधु परिवारलालरे । संलेखन इकमासनी । पुहता मुक्तिमजार लालरे  
 ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥ उहा ॥ जय श्रीसुविध जिनेसरू । जगपति दीनदया  
 ल । समेतसिखर मुगतेगया । नविजनके प्रतिपाल ॥ ढाल ॥ ✽ ॥ श्रीविम  
 लाचलसिरतिलो एचाल ॥ ✽ ॥ नयर काकंदीनरपति । एम पितासुग्रीव ।  
 देवीरामा मातासुत । नए सुविधसुजजीव ॥ १ ॥ रजतवरण समतनुसत । ध  
 नुष एकपरिमाण । दोय लाख पूरव कस्यो । प्रभुनो आयु सुजाण ॥ २ ॥ अठ्या  
 सी संख्याअर्ध । गणधर परम प्रधान । लख दो मुनि विंशति सहस । इकल  
 खश्रमणीजाण ॥ ३ ॥ दोयलक्ष श्रावक कक्षा । अरु गुणतीसहजार । एक  
 तर चौलख सहस । श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरीसुतारा सुरअजित ।  
 श्रीसंघ सानिधकार । सहससाधु परिवारसुं । आएसिखर सुचार ॥ ५ ॥ माससं  
 लेखण कर प्रभु । मुक्तिगए इहठोर । तीरथ महिमा महियलै । प्रगटी च्याहं  
 उर ॥ ६ ॥ इमहीज शीतलनाथनो । हिवसुणज्यो अधिकार । नदिलपुर दृढ  
 स्थपिता । मातनंदा सुखकार ॥ ७ ॥ लंठन सुज श्रीवृत्तनो । श्रीशीतल जिन  
 चंद । कंचनवरण नेऊधनुष । मानसरीर अमंद ॥ ८ ॥ एकलाख पूरव क  
 स्यो । प्रभुनो आयुप्रमाण । इक्यासी गणधर कक्षा । मुनि इकलाख सुजाण  
 ॥ ९ ॥ एकलाख चालीससहस । श्रमणीसंख्या उर । सहस तयासी दोय  
 लख । श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठान लक्षचौ । श्रावकणी सु  
 विचार । देवी असोका ब्रह्मयक्ष । सज्ज संघ सानिधकार ॥ ११ ॥ सिखरस  
 मेत सहस्रएक । साधूनें परिवार । मुक्तिगए प्रभुमासकी । संलेखन करसार  
 ॥ १२ ॥ ✽ ॥ ढाल ॥ धन२ संप्रतिसाचौ राजा एहनी ॥ ✽ ॥ सिद्धपुरी  
 नगरी तिहाराजा । विष्णुनरेसर तातजी । कंचनवरण श्रेयांस प्रभुजी । उपै

ज्या विष्णु सुमातजी ॥ १ ॥ नमोरेष्ट श्रीत्रिभुवन राजा । खड्ग लंठन प्रभु  
पायजी । धनुष असी देहमान चौरासी । लाख बरसनो आयुजी ॥ २ ॥  
न० ॥ गणधर वज्रतर सहसचौरासी । मुनि श्रमणी तीन लक्षजी ।  
तीन सहस बलि सहस गुण्यासी । आवक पुण दोय लक्षवजी ॥ ३ ॥ नमो ॥  
अडतालीस सहस बलि चौलख । आविका जाणो सारजी । जङ्ग अमर  
सुरी मानवी जाणो । श्रीसंघ सानिध कारजी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनें  
परिवारे । प्रभुजी सिखर समेतजी । मास संलेखन कर प्रभुपुहता । मुक्तिम  
हिल सुखहेतजी ॥ ५ ॥ न० ॥ हिव कंपिलपुर तातज्ञपति । श्रीरुतवर्मसुमा  
तजी । स्यामा देवी अंगजनपना । विमलनाथजगतातजी ॥ ६ ॥ न० ॥ सूकरलं  
ठन सोवनकाया । साठधनुष देहीमानजी । साठलाख बन्नरनो आयु । शिष्य स  
तावन जानजी ॥ ७ ॥ न० ॥ साठसहस मुनि अमृतसय इकलख । श्रमणी आवक  
जाणजी । आठसहस दोयलक्ष आविका । चौलक्षसंख्या आणजी ॥ ८ ॥ न० ॥  
षण्मुख सुरवर विदितादेवी । प्रभुजी शिखरसमेतजी । षटहजार साधुपरिवारे ।  
मुक्तिगए सुखहेतजी ॥ एन ० ॥ नगरी नाम अजोध्या नरवर । सिंहसेन जगसार  
जी । सुजसामात तिणे सुतजायो । प्रभुजी अनंतकुमारजी ॥ १० ॥ न० ॥ लंठन  
इयेन सोवनसमकाया । धनुषपचास प्रमाणजी । तीसलाख बन्नरनो आयु । गण  
धर पचवीस आणजी ॥ ११ ॥ न० ॥ ठासठसहस मुनीसरसोहै । वासठश्रमणीह  
जारजी । ठहजार लाख दोय आवक । आवकणी इमधारजी ॥ १२ ॥ न० ॥  
चारलाख बलि चवदहजारए । अंकुसादेवी होयजी । पातालपक्ष श्रीसंघकै  
सानिध । कारीनितप्रति जोयजी ॥ १३ ॥ न० ॥ आठसैमुनिवरनें परिवारे । शि  
खरसमेत प्रधानजी । माससंलेखन करगिरऊपर । पुहतापद निखाणजी ॥ १४ ॥  
न० ॥ ✽ ॥ उहा ॥ ✽ ॥ ऐसे धर्मजिणेसरू । पुहता पदनिर्वाण । शिखर  
समेत गिरंदपर नमो २ जगजाण १ ॥ ✽ ॥ जगतगुरु त्रिशालानंदनजी एवा  
ल ॥ ✽ ॥ रत्नपुरी नगरीधानीजी । जानुराय सुजाण । राणीसुब्रता मातनेंजी ।  
धर्मनाथ गुणखाण ॥ १ ॥ जगतप्रति धर्मजिनेसरसार ॥ धनुषपेतालीसतनुक  
झोजी । वज्रलंठन सुखकार ॥ २ ॥ ज० ॥ चोतीसगणधर मुनिकह्याजी । चौ  
सठसहस प्रमाण । श्रमणी वासठ सहस स्युंजी । आवक दोयलक्षमान ॥ ३ ॥  
ज० ॥ चारसहस बलि ऊपरंजी । चौलाख एक हजार । आवकणी सं

ख्याकहीजी । दसलक्ष आयुविचार ॥ ४ ज० ॥ किंनरसुर यत्नांसुरीजी ।  
 एकसहस्र परिवार । समेत शिवर मुगैंगयाजी । वांदूवारहजार ॥ ५ ॥ ज०  
 हथिणापुर विश्वसेननाजी । अचिरामात उदार । शांतिजिनेसर जनमियाजी ।  
 त्रिभुवन जय २ कार ॥ ६ ॥ (जगतपति शांति जिनेसरसार) ॥ मृगलांठन  
 सोवनसमोजी । देही धनुषचालीस । आयुवरपइकलाखनोजी । ठत्तीस गणधर  
 सीस ॥ ७ ॥ ज० ॥ वासवसहस्र मुनि ठसैजी । इगसठ श्रमणी हजार । दो  
 यलाख श्रावककह्या जी । ऊपरनेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस्रत्रयाणूं श्रा  
 विका जी । तीनलाख परिवार । गरुडयक्ष देवीसुरी जी । श्रीसंघ सानिधकार  
 ॥ ९ ॥ ज ॥ नवसै मुनि परिवारस्युंजी । आया शिवर समेत । मासखमणकर  
 मुक्तिमें जी । पुढता निजपदहेत ॥ १० ॥ ज० ॥ असै हथिणा पुर नलोजी ।  
 राजासूर सुतात । कुंधुनाथ जिन जनमीयाजी । कंचनतनु श्रीमात ॥ ११ ॥  
 (जगतपति कुंधुजिनेसरसार) ॥ ठागलंठन पेंतालीसनोजी । धनुषदेहनो  
 मान । सहस्र पंचाणवे वरपनोजी । आयु प्रभुनोजान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पेंती  
 सगणधर दीपताजी । साठसहस्र मुनि जान । ठसै साठसहस्र बलीजी । श्र  
 मणी संख्यामान ॥ १३ ॥ ज० ॥ सहस्र गुणियासी लक्षनोजी । श्रावक सं  
 ख्या होय । सहस्र इक्यासी तीन लाखनी जी । श्राविका संख्याजोय ॥ १४ ॥  
 ज० ॥ सातसै साधू परब्रह्माजी । देवीबला गंधवं । कुंधुनाथ मुगैंगयाजी ।  
 माससंलेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥ ॐ ॥ डहा ॥ ॐ ॥ श्रीअरिनाथ जिनं  
 दनो । कहस्युं अव अधिकार । श्रोता सुणज्यो प्रेमधर । थास्यैलानअपार  
 ॥ १ ॥ (देसीविठियानी) अरेलाला श्रीजिनकुशल सूरि सरू ए चा० ॥  
 ॥ अरेलाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू । जिहां नगरी अयोध्या चंदरेलाला ।  
 तात सुदर्शन मातजी । नंदादेवी ना नंदरे लाला ॥ १ ॥ श्री अ० लंठन  
 नंद्यावर्त्तनो । वीसधनुष देहीनो मानरे लाला । कंचनवरण सुहामणो । आयु  
 सहस्र चोरासी प्रमाणरे लाला ॥ २ ॥ श्री० ॥ इकलाख श्रावक ऊपरै ।  
 बली संख्या अधिकी जाणरे लाला । सहस्रबज्रतर तीननी । लक्ष श्राविका  
 संख्या आणरे लाला ॥ ४ ॥ श्री० ॥ देवदेवी सानिधकरे । इकसहस्र  
 मुनि परिवारे लाला । मुक्ति गए इणगिरि प्रभु । कर माससंलेखन साररे ला  
 ला ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मिथिलानगरी प्रजावती । मात पिता श्री कुंज

रायरेलाला । लंठनकलस पचीसनो । वपु धनुष सोवनसम कायरे ला  
 ला ॥ ६ ( श्रीमद्विनाथ जिनेसरू ) ॥ सहस पचावन वर्षनी । थित ग  
 णधरअष्टावीसरे लाला । नविककमल प्रतिबोधता । जगनायक श्रीजगदीसरे  
 लाला ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ चालीस सहस मुनीसरू । श्रमणी पचावनसहसरे  
 लाला । सहस त्रयासी लक्षनी । श्रावकनी संख्या साररे लाला ॥ ८ ॥  
 श्रीम० ॥ श्राविका सित्तरसहसनी । लक्षतीन संख्या सुविचाररे लाला ।  
 सहस मुनी परिवारसुं । गण मुक्ति संलेखण धाररे लाला ॥ श्रीम० ॥ राज  
 ग्रही राजा पिता । सुग्रीव पद्मावती मातरे लाला । श्यामवरण तनु शोभतो ।  
 जे कपिल लंठन विख्यातरे लाला ॥ ९ ( श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी ) ॥ धनुष  
 वीस देही तणो । आयुवत्तर तीसहजाररे लाला । अष्टादश गणधर थया ।  
 तीससहस मुनीसर साररे लाला ॥ १० ॥ श्रीमु० ॥ श्रमणी सहस पचीसनी ।  
 संख्यावज्जतर हजाररे जाला । इकलक्ष ऊपरि श्राविका । तीन लक्ष प  
 चास हजाररे लाला ॥ ११ ॥ श्रीमुनि० ॥ वरुणयक्ष देवी जली । नर  
 दत्ता सानिधकाररे लाला । सहस मुनि परिवारसें । गण मुक्ति महल सुख  
 साररे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयपिता विप्रामात जी । सोवन सम  
 श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंठन कस्यो । वपु धनुष पनर आयु  
 साधरे लाला ॥ १३ ॥ ( श्रीनमिनाथ जिनेसरू ) ॥ दसहजार वरस तणो ।  
 गणधर सित्तर परमाण रे लाला । बीस इकतालीस सहस किम । साधु  
 साधवी संख्या जाणरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि ॥ इकलख सित्तर सहस  
 नी । तीनलक्ष सहस बलि होयरे लाला । श्रावक संख्या श्राविका । अ  
 नुक्रमकरि संख्या जोय रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता भूमंमलै ।  
 आया सिखर समेत मऊार रे लाला । अकुटी यक्ष गंधारी सुरी । इक स  
 हस मुनि परिवाररे लाला ॥ १६ ॥ श्री० उहा ॥ ॥ परमेसर श्री पास  
 नी । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरोमणि सहसफण । जगजी  
 वन जगतात ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ आदरजीव क्षमागुण आदर एहनी ॥  
 ॥ ॥ ॥ जय जय परमपुरुष पुरुषोत्तम । पारस पारस नाथ जी । सांवरिया  
 साहिव जग नायक । नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय २ सिखर  
 समेत सिरोमणि । श्रीसांवरीया पास जी । ध्यावै सेवै जेनरतेहनी । पूरै

वन्धित आसजी ॥ २ ॥ जय० १ ॥ कासीदेस वणारसि नगरी । श्रीअश्वसेन  
नरिंद जी । वामा माता जग विख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥  
॥ ३ ॥ जय० १ ॥ पन्नग लंठन नीलवरण ठवि । देही शुभ नवहाथ  
जी । आयू एक सो बरस प्रमाणे । गणधर दस प्रभु साथजी ॥ ४ ॥  
जय० १ ॥ सोल सहस मुनिवर अरुथ्रमणी । कही अमृतीस हजार जी ।  
भूममल विचरे नविजनकुं । बोधवीज दातारजी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ स  
हस लाख इक श्रावक । गुणचालीस हजार जी । तीन लाख श्रावकणी  
संख्या । पार्श्व यक्ष सुर सारजी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगतै पुह  
ता । महिमा थइयअपार जी । तिणए तीरथ प्रगढ्यो जगमें । मुक्तिरणो  
दातार जी ॥ ७ ॥ जय० १ ॥ ठहरी पालै जेनर जावै । जेठै सिखर गि  
रिंद जी । ते नर मनवन्धित फल पामे । ए सुरतरुनो कंदजी ॥ ८ ॥ जय० १  
वज्रविध संघ तणी करै जकि । संघपति नाम धराय जी । सफल करै  
संपद निज पामी । जेहनो सुजस सवाय जी ॥ १० ॥ जय० ॥ परन्नव  
सुरनर संपद पामे । जात्रा करै गहगाटजी । साधमी वज्रल मुनि जकी ।  
पूजा उज्जव थाट जी ॥ ११ ॥ जय० ॥ टुंक टुंक पर चरण प्रभूना ।  
पूजो नविजन जाव जी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें । आनंद अधि  
क उज्जाव जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखर गिरीनो । सुणतां न  
बनिधि थाय जी । तिणए नविजन जाव धरीन । सुण ज्यो मनधिर लाय  
जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ खरतर गठपति महिमा धारी । कीरति जग विख्यात  
जी । जय श्रीजिन सौभाग्य सुरीसर । अमृतवचन सुगात जी ॥ १४ ॥  
ज० ॥ तासुपसायै रासरच्यो ए । अमृत समुद्रनं सीस जी । बालचंद्र निज  
मत अनुसारै । सोधो विबुध जगीस जी ॥ १५ ॥ ज० संवत उगणीसे सित  
मोत्तरे । सुदि वैशाख सुढाल जी । रास अजीमगंज मांहि कीनो । जण  
तां मंगल माल जी ॥ १६ ॥ ज० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
इति श्री सिखरजीको रास संपूर्णम् ॥ २०१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ गौतम रास लिख्यते ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ बीरजिनेसर चरण कमल कमलाकय वासो । पणमवि पन्नणिसु

सामि साल गोयम गुरु रासो । मण तणु वयणे कंत करवि निसुणऊ जो  
 नविया । जिम निवसै तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव  
 सिर भरह खित खोणी तल मंमण । मगह देस सेणिय नरेस रिनुदल वल खंम  
 ण । धणवर गुवर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा । विष्णवसै वसु झुइ तत्थ  
 तसु पुहवी नज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरि इंद्रनूय नूवलव पसिद्धो । चवदह  
 विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार गुण गणह  
 मनोहर । सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर  
 चरण जणवि पंकजलपाडिय । तेजहि तारा चंद सूरि आकास नमाडि  
 य । रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय । धीरम मेरु गंजीर सिंधु  
 चंगम चय चामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जणजंपै किंचिय  
 एकाकी किल नीत इत्थ गुण मेल्या संचिय । अहवा निचय पुव जन्म  
 जिणवर इण अंचिय । रंजा पनमा गवरि गंग रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥  
 नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो । पंचसयां गुण पात्र  
 ठात्र हीमं पर वरियो । करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय । अण  
 चल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ ( वस्तु ) ॥ ॥ जंबूदी  
 व जंबूदीव भरह वासंमि । खोणीतल मंमण । मगह देस सेणिय नरेसर ।  
 वरगुवर गाम तिहां । विष्ण वसै वसझुइ । सुंदर तसु पुहवि नज्जा । स  
 यल गुण गण रूव निहांण । ताणपुत्त विज्जानिलो । गौयम अतिहि सुजाण  
 ॥ ७ ॥ ( नास ) ॥ चरम जिणेसर केवलनांणी । चोविहसंध पइछा जाणी ।  
 पावापुर सामी संपत्तो । चनविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवस  
 रण तिहांकीजै । जिणदीठै मिथ्या मत ठीजै । त्रिजुवन गुरु सिंहासन वैठा ।  
 तत्तखिण मोह दिगंतपइछा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा । जायै नाठा  
 जिम दिन चोरा । देवडंडनी आगासे वाजी । धरमनरेसर आव्यो गाजी  
 ॥ १० ॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा । चनसठ इंद्रज मांगेसेवा । चामरठ  
 त्र सिरोवरि सोहै । रूवहि जिणवर जगसहु मोहै ॥ ११ ॥ उपसम रसन्नर  
 वर वर संता । जोजनवाणि वखाण करंता । जाणवि वर्द्धमान जिण पाया ।  
 सुर नर किन्नर आवइराया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहल कंता । गयण  
 विमाणहि रण रण कंता । पेखवि इंद्र झुइ मनचिंते । सुरआवे अम जइ

ऊवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिमते बहिता । समवसरण पुहता गह  
 गहिता । तो अजिमाने गोयमजंपै । इण अवसर कोपे तणुकंपै ॥ १४ ॥  
 मूढा लोक अजाएथुं बोलै । सुर जाणंता इमं कांइ मोलै । मो आगल  
 कोइ जाण नणी जै । मेरु अवर किम ओपम दीजै ॥ १५ ॥ ( वस्तु )  
 वीर जिणवर वीरजिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरमहिय । पत्तनाह संसारता-  
 रण । तिहिं देवइ निम्महिय । समवसरण वज्ज सुख कारण । जिणवर  
 जग उज्जोयकरे । तेजहिकर दिनकार । सिंहासन सांमी ठव्यो । ऊउ तो  
 जय जय कार ॥ १६ ॥ ( आस ) तोचढियो घणमाण गजै । इंद्र चूड़ चूय  
 देवतो ॥ ऊंकारो करसंचरिय । कवणसु जिणवर देवतो ॥ जोजन चूमि समो  
 सरण । पेखवि प्रथमारंजतो ॥ दहदिस देखे विबुध बधू । आवंती सुरं  
 नतो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंम ध्वज । कोसीसै नवघाटतो ॥ वय  
 रविवर्जित जंतुगण । प्राती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर ।  
 इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्त चमकिय चिंतवए । सेवंतां प्रभुपावतो ॥ १८ ॥  
 सहस किरण सांमी वीरजिण । पैववि रूप विसालतो ॥ एह अचंचव संचव  
 ए । साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु । इंद्रचूय नामेण  
 तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सेवे । फेमै वेदपण्णतो ॥ १९ ॥ मान मेल  
 मदठेल करे । जगतहिं नाम्यो सीसतो ॥ पंचसयांसु व्रत लियो ए । गो  
 धम पहिलो सीसतो ॥ वंधव संजम सुणवि करे । अगनचूड़ आवेयतो ॥  
 नाम लेई आजास करे । ते पिण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम  
 गणहर रयण । थाप्पा वीर इग्यारतो ॥ तो उपदेशे चुवन गुरु । संयम  
 सुं व्रतवार तो ॥ विज्ज उपवासं पारणो ए । आपणपै विहरंत तो ॥ गो  
 यम संयम जगसयल । जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ ( वस्तु )  
 ॥ ॐ ॥ इंद्र चूड़ ९ चढियो वज्जमान । ऊंकारो करि कंप तो । सम  
 वसरण पज्जतो तुरंततो ॥ जेहसंसा सामिसेवे । चरमनाह फेमै फुरंततो ॥  
 बोधवीजसंजाय मने । गोयम चवहि चित्त ॥ दिक्खलेई सिख्यासही ।  
 गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ ( आस ) ॥ ॐ ॥ आज ऊओ सुविहाण ।  
 आज पचेत्तम पुण्यजरो । दीठा गोयमसामि । जो निय नयणे अमियऊरो ॥  
 समवसरण मझार । जे जे संसा ऊपजै ए । ते ते पर उपगार । कारण पूरै



मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजै दीख । तीहां केवल ऊपजै ए । आपकनै  
 अणजंत । गोयम दीजै दान इम । गुरु उपरगुरु नक्ति । सामीगोयम उप  
 निय । अणचल केवल नाण । रागजं राखै रंगनरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद  
 सैल । बंदै चढ चउवीस जिण । आतम लवधि वसेण । चरम सरीरी सो  
 जमुनि । इय देसणा निसुणेह । गोयम गणहर संचरिय । तापस पनरसए  
 ए । जो मुनि दीगो आवतोए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग । अह्मां स  
 गतिन ऊपजैए । किमचढस्थै दृढकाय । गज जिम दीसै गाजतोए । गिरु  
 ओ ए अजिमान । तापस जो मन चिंतवै ए । तो मुनि चढियो वेग ।  
 आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न । दंरु कलस  
 ध्वज वरु सहिय । पेषवि परमाणंद । जिणहर नरतेसर महिय । निय २  
 काय प्रमाण । चिजं दिसि संठिय जिणह विंव । पण मवि मन उल्लास ।  
 गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव । तिर्यक जृंनक  
 देवतिहां । प्रतिबोध्या पुंमरीक । कंडरीक अध्ययननणी । बलता गोयमसाम  
 सवि तापस प्रतिबोध करे । लेई आपण साथ । चाले जिम जूथाधिपति  
 ॥ २८ ॥ खीरखांम घृत आण । अमिय बूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण  
 पात्र । करावै पारणो सवे । पंचसयां सुनननाव । उज्जल नरियो खीर मिसे  
 साचा गुरु संयोग । कवलत केवल रूप ऊय ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह ।  
 समवसरण प्राकारत्रय । पेषवि केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोयकरे । जाणें जण  
 विपीयूष । गाजंती घनमैघजिम । जिणवांणी निसुणेवि । नाणीऊआ पंचस  
 यां ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाणसंपन्न । पनरैसै परिवरिय । हरिय  
 डुरिय जिणनाह बंदइ । जाणेवि जगगुरु वयण । तिहिंनाण अप्पाण निंदइ ।  
 चरमजिनेसर इमनणे । गोयम मकरिस खेव । ठेहजाय आपणसही । हो  
 स्यां तुल्लावेव ॥ ३१ ॥ (चास) ॥ ॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद  
 जिम उल्लासिय । विहरियो ए नरह वासंमि । वरसबऊत्तर संवसिय । ठवतो  
 ए कणय पउमेण । पायकमल संघै सहिय । आवियो ए नयणा णंद । नयर  
 पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेषियोए गोयम सामि । देवसमा प्रतिबोधकरे  
 आपणोए त्रिसळादेवि । नंदन पुहतो परमपण । बलतोए देव आकास ।  
 पेषवि जाण्यो जिणसमैए । तो मुनिए मनविषवाद । नादनेद जिमऊपनो

ए ॥ ३३ ॥ इणसमें ए सामियदेख । आपकनासूं टालियो ए । जाणतोए  
 तिऊअणनाह । लोकं विवहारन पालियो ए । अतिजलोए कीधलो सामि ।  
 जाण्यो केवल मांगस्यैए । चिंतव्योए वालक जेम । अहवा केमे लाग  
 स्यैए ॥ ३४ ॥ हूं किमए वीरजिणंद । जगतहिं जोलै जोलव्योए । आ  
 पणोए उंचलो नेह । नाह नसंपै साचव्योए । साचोए एवीतराग । नेह  
 न हेजै लालियो ए । तिणसमेंए गोयमचित्त । राग बैरागे वालियोए ॥ ३५ ॥  
 आवतो ए जो उल्लट । रहितो रागें साहियो ए । केवलए नाण उपन्न ।  
 गोयम सहिज उमाहियो ए । तिऊअणए जय जय कार । केवल महिमा  
 सुर करै ए । गण धरुए करय वखांण । जविया जवजिम निस्तरै ए ॥ ३६ ॥  
 (वस्तु) ॥ पढम गणहर १ वरपञ्चास । गिहवासै संवसिय । तीसवरस संजम  
 विजूसिय । सिरिकेवल नाणपुण । वास्वरस तिहुअण नमंसिय । राजग्रही नयरी  
 ठव्यो । बाणवइ वरसाउ । सामी गोयम गुण निळो । होस्ये सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥  
 (जास) ॥ ॥ ॥ जिमसहकारे कोयलटऊकै । जिम कुसमावन परमल महकै ।  
 जिमचंदन सोगंधनिधि । जिम गंगाजल लहिस्थां लहकै । जिमकणया  
 चल तेजें ऊलकै । तिम गोयम सोजाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर  
 निवसै हंसा । जिम सुरतरुवर कणय वतंता । जिम मऊयररा जीव  
 वने ॥ जिम रयणायर रयणे बिलसै । जिम अंवर तारा गण बिकसै । तिम  
 गोयम गुरु केलघने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहै । सुरतरु  
 महिमा जिम जगमोहै । पूरव दिसि जिम सहस करो । पंचानन जिम  
 गिरवर राजै । नरवइ घर जिम भेंगलगाजै ॥ तिम जिन सासन मुनि  
 पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहै साखा । जिम उत्तम मुख मधुरी  
 जापा । जिमवन केतकि मह महै ए । जिम जूमीपति जुयवल चमकै ।  
 जिम जिनमंदिर धंटाणकै । गोयम लवधै गद्गह्योए ॥ ४१ ॥ चिंताम  
 णि करचढीयो आज । सुरतरु सारै बंठिय काज । कामकुंज सऊ बसिऊ  
 आए । कामगवी पूरै मनकामी । अष्ट महासिधि आवै धामी । सामी गो  
 यम अणुसरोए ॥ ४२ ॥ पणवद्धर पहिलो पन्नणीजै । मायावीजो श्रिवण  
 सुणीजै । श्रीमिति सोजा संजवो ए । देवां धुर अरिहंत नमीजै । वनय  
 पऊ उवजायधुणीजै । इण मंत्रै गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां

कांय करीजै । देस देसांतर कांय जमी जै । कवण काज आयास करो ।  
 प्रहज्जठी गोयम समरीजे । काज समगल ततखिण सीजे । नवनिधिविलसै  
 तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय वारोत्तर वरसै । गोयम गणहर केवल दि  
 वसै । कीयो कवत उपगारपरो । आदहि मंगल ए पजणीजै । परवमहोत्तव  
 पहिलो दीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धनमाता जिण नयरै  
 धरियो । धन्य पिता जिण कुल अवतरियो । धन्य सुगुरु जिण दीखियो  
 ए । विनयवंत विद्याजंमार । तसुगुण पुहवि नलज्जइ पार । वडजिम सा  
 खा विस्तरौ ए । गोयम स्वामिनो रास जणीजै । चउविहसंव रलियायत  
 कीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन ठडोदिरावो ।  
 माणक मौतियां चोक पूरावो । रयण सिंघासण बैसणो ए । तिहांवैठी गुरु  
 देसना देसी । जविक जीवना काज सरेसी । नित नित मंगल उदय करो  
 ॥ ४७ ॥ इति गोतमरास संपूर्णम् ॥ इति षट् रासः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ राग प्रज्ञाती जेकरै । प्रहज्जगमते सुर । झूखा जोजन संप  
 जै । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसै । लव्हितणा जंमार ।  
 जे गुरु गोतम समरियै । मनवंठित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम मुहा ।  
 गणधर गुण संपन्न । प्रहज्जठीने प्रणमतां । चवदैसै वावन्न ॥ ३ ॥ खंति  
 खमं गुणकलियं । सुविणियं सबलद्धि संपणं । वीरस पढमसीसं । गोयमसा  
 मी नमंसामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय । सर्वाच्चीष्टार्थदायने । सर्वलद्धि  
 निधानाय । गोतमखामिने नमः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ अथ देववांदणामें ( वा ) प्रातकाल सिंध्याकाल प्रतिक्र  
 मणमें कहणेंकुं पनरै तिथांकी स्तुतिलि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ महीमंणं पुत्र सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल ज्ञाण गेहं । महा  
 नद लब्धी वज्र बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा  
 जेह जीवाण जाया । जवरसंति ते सब जवाणताया । तहा संपयं जेजि  
 णा वट्टमाणा । सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ डुस्तार संसार कु  
 वारपोयं । कलंकावली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंठियत्थे सुमंदार कप्पं ।  
 जिणंदागमं वंदिमो सुमहणं ॥ ३ ॥ वीकोसे जिणंदाणं नोजलीणा ।

कलाःरूढ लावण सोदग्ग पीणाः। बहंतस्स चित्तंमि णिच्चंमि जाणं । सिरी  
 चारही देहिमे सुव्वनाणं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच विदेह विषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ।  
 चरणकमल तसु नामुं सीस । अह्निसि समरुं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंचमे  
 रु पासे ऊलकंता । सोहे वीस महा गजदंता । तिण ऊपरि ठै जिणवर वी  
 स । ते जिणवर पणमुं निसि दीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय डुवालसअंग ।  
 थानकवीस जएया तिहां चंग । तिणऊपरि जे आणे रंग । तेनर पामें  
 सुख अजंग ॥ ३ ॥ जिणसासण देवी चउवीस । पूरे मुऊमन तणीजगी  
 स । संघतणा जेविघन निवारे । तिऊ अण जन मन वंछित सारे ॥ ४ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति वीसविहरमाणस्तु तिः ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सम दमोत्तम वस्तु महापणं । सकल केवल निर्मल सदगुणं ।  
 नगर जेसलमेर विचूयणं । जजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुर नरेश्वर  
 नम्र पदांबुजाः । स्मर महीरुह जंग मतं गजाः । सकल तीर्थकराः सुख  
 कारका । इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिन  
 शासनं । विपुल मंगलकेलि विजासनं । प्रबल पुण्य रमोदय धारिका ।  
 फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकट संकट कोटि विनासिनी ।  
 जिनमताश्रित सौख्य विकासिनी । नर नरेश्वर किणर सेविता । जयंतु सा  
 जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वर मुत्तियहार सुतारंगणं । परचित्त कलत सपत्तधणं । पय  
 पंकय ठप्पय देवगणं । श्रीअब्बुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोय न  
 मंसिय पायजुआ । घणमोह महीरुह मुत्तिगंया । परिपालिअ निच्चल  
 जीवदया । ममज्जंतु जिणागम सुखसया ॥ २ ॥ पणयंगि महातम रो  
 दरं । कल्लाण पयोरुह बुद्धिकरं । सुहमग्ग कुमग्ग पयासकरं । पणमामि  
 जिणागम मन्दि करं ॥ ३ ॥ सिरिइंद समुज्जल गायलया । सुद्धाण वि  
 णम्मिय एगलया । अमुरिंद सुरेंद सुरप्पणया । ममवाणि सुद्धाणि कुणेतु  
 रुपा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान कर्म । पंचानुत्तर सीम

दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्ज्वल पंचमी वरतपो व्याहारि  
तत्कारिणां । श्रीपंचानन लांठनः सतनुतां श्री वर्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये  
पंचाश्रव रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि  
प्रज्ञापना सादराः । कृत्वा पंचशुषीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमी ।  
तेमी संतु सुपंचमी व्रतभृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचार धुरीण  
पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंचज्ञान विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं ।  
दीपाज्जं गुरु पंचमार तिमिरे ष्वेकादशी रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रका  
शनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपं  
चमेरु श्रियां । भक्तानां भवितां गृहेषु वज्रशो या पंचदिव्यं व्यधात् । प्रके  
पंचजने मनोमृत कृतौ स्वारत्नपंचालिका । पंचम्यादि तपोवतां भवतु  
सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीरं । देवं । नित्यं । वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् । पांतु  
॥ २ ॥ जैनं । वाक्यं । भूया । हृत्यै ॥ ३ ॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं  
॥ ४ ॥ इति लघ्वीस्त्रीठंडसि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ यदंजि नमना देव । देहिनः संति सुस्थिताः । तस्मै नमोस्तु  
वीराय । सर्वविघ्नविधातिने ॥ १ ॥ सुरपति नत चरण युगान् । नाज्ञेयजि  
नादि जिनपती नमोमि । यद्रचन पालनपरा । कृलांजलिं ददतु उःखेज्यः  
॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणा यतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः । गणा  
धिपा स्तीर्थ समर्थन कृणे । तदंगिना मस्तु मतं नु मुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः  
सुरा सुरवरै स्सहदेवताभिः । सर्वज्ञ शासनं सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्ध  
मान जिनदत्त मतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेज्यः ॥ ४ ॥  
इति श्रीमहावीरस्तुतिः अणोक्तारी ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विश्वनायक लायक जितशत्रु विजयानंद । पयजुग नितप्रणमै  
देव अनैदेविंद । जावलहिरी गहिरी सव मनधरीयै अमंद । श्रीसूरतसहिरै  
वंदो अजितजिणंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिसय वलि चौतीस ।  
दिलरंजण देसन तेहना गुण पेंतीस । अगणित रिधधारी आचारीमां  
ईस । एहगुणना धारक वांडं जिनचौवीस ॥ २ ॥ सुध अरथ अनोपम  
जिन जाबित सिद्धांत । स्थावाद नयादिक हेतु युक्त नविज्जांत । पाप कर

दम पाणी सदगतिनी सहिनाणी । सुणिये नितजविका आगमकेरी वाणी  
॥ ३ ॥ सासणनी साचीदेवी सानिधकारी । डख कष्ट निवारण सेवीजे  
सुखकारी । साचै मनसमरै ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपै हो  
ज्यो जय जय कारी ॥ ॥ ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ चोवीसे जिनवर प्रणमुं नितमेव । आठम दिनकरिये चंद्रा  
प्रभुनी सेव । मूरति मनमोहै जाणै पूनिमचंद । दीगां डख जायै पामें  
परमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजै प्रभुजीना पाय । इंद्राणी अपत्तरा  
करजोमी गुणगाय । नंदीश्वर दीपें मिल सुरवरनी कोड । अछाही महोत्सव  
करतां होमा होम ॥ २ ॥ सेतुंजा सिखरै जाणी लाज अपार । चौमासे  
रहिया गणधर मुनि परिवार । जवियणनै तारै देइ धरम उपदेश । दूध सा  
करथी पिण वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो प डिकमणो करियै व्रत  
पचखाण । आठम तप करतां आठकरमनी हाण । आठमंगल थायें दि  
न २ कोडि कल्याण । जिन सुखसूरि कहै इम जीवत जनम प्रमाण ॥ ॥  
इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । सिद्धारथ नंदन धिस  
ला देवि सुमाय । मृगनायक लंठन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सु  
ख दायक स्वामी श्रीवधमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरि  
विंद । कामित नर पूरण अजिनव सुरतरुंद । जवियणनै तारै प्रवहण  
समनिसि दीस । चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथें  
करि आगम जाप्या श्रीजगवंत । गणधर तेगुंध्या गुणनिधि ग्यान अ  
नन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहिनसके एकन्त । समरूं सुखदायक  
मनसुव सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघनविशेष । सज्ज  
संकट चूरै पूरै आस असेप । अह्निसि करजोडी सेवे सुर नर इंद्र ।  
जंपई गुणगण इम श्रीजिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ॥  
इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अश्वसेन नरेशर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नील  
वरण सुखकंद । अह्निलंठण सेवित पन्नावइ धरणिंद । प्रहज्जठी प्रणमुं नि  
तप्रति पासजिणिंद ॥ १ ॥ कुलगिरि वेयद्वइ कणयाचल अन्निराम । मा

नुषोत्तर नंदी रुचिक कुंमल सुखठाम । नवणैसर व्यंतर जोइस वेमाणी  
 य धाम । वरतै जेजिनवर पूरो मुऊ मनकाम ॥ २ ॥ जिहां अंगइग्यारै  
 वारैउपांग ठहेद । दसपइचा दाख्या मूलसूत्र चउजेद । जिन आगम षटद्र  
 व्य सत्तपदारथ जुत्त । सांजलि सरदहतां तूठै करम तुरत्त ॥ ३ ॥ पउमा  
 वइदेवी पार्श्वयक्क परतक्क । सज्ज संघना संकट दूरकरेवा दक्क । तेसमरो  
 जिनभक्ति सूरि कहै इकचित्त । सुख सुजस समांपो पुत्र कलत्र वज्जवित्त  
 ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अस्य प्रव्रज्या नमिजिनपते ज्ञानमतुलं । तथा मल्ले जन्म व्रत  
 मपमलं केवलमलं । बलकै कादश्यां सहसिलस उद्दाम महासि ॥ कितौ क  
 ल्याणानां कपतु विपदः पंचक मदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्र श्रेण्या गमन गमनै  
 न्मिवलयं । सदा स्वर्गत्यैवा ह्रमहमकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापु  
 क्कण मति सुखं नारकसदः ॥ ( कितौ ० ) ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्र  
 णिजग डुरात्मीय समये । फलं यत्कर्तृणा मितिच विदितं सुधसमये ।  
 अनिष्टा रिष्टानां किति रनुज्वेयु वैज्जमुदः ॥ ( कितौ ० ) ॥ ३ ॥ सुरास्सं  
 द्रा स्सर्वे सकल जिन चंद्र प्रमुदिताः । तथाच ज्योतिष्का खिल नवनना  
 था समुदिताः । तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मितहृदः ( कितौ ० ) ॥ ४ ॥  
 ॥ ॥ इति मोनै कादशीस्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दढरथ नृपराणी  
 नंदा केरोनंद । नदलपुर सामी फेमै नवनाफंद । चित्तचोखै नमियै श्रीशी  
 तल जिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत ऊआ होस्ये अनंत । संप्रतिका  
 लै जेक्केत्रविदेह विचरंत । त्रिज्ज नवणे ठवणा सासय असासय संत । त  
 सगला त्रिकरण प्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उक्तालिक अंग अ  
 नंगपविठ । नय नंग निक्खेपा स्यादवाद मित सिठ । नविजन उपगारी  
 नारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासै कोडिकलेस ॥ ३ ॥ ब्रह्म  
 जक्क असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकि  
 तधार । चिंता डुखचूरै पूरय मनहजगीस । ध्यान तेहनो धरियै कहै जिनला  
 न सूरिस ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥ १२ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ मिल चौविहसुरवर विरचै त्रिगमो सार । अढी गाऊ उंचो

पिङ्गलो जोयण पार । विच कनक सिंहासन पदमासन सुखकार । श्री  
तीर्थनायक वैसै चौमुखधार ॥ १ ॥ तीनठव शिरोवरि चामर ढालै इंद ।  
देव छुंछुजि वाजै जाजै कुमतीफंद । नामंमलपूठे ऊलके जाण दिणंद । ति  
ऊअण जन मन मोहै सयलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य जावमु ठवणा नाम नि  
क्खेपाच्यार । जिणु गणहर जाप्या सूत्रसिद्धांत मऊार । जिनवरनी पडिमा जि  
नसारिषी सुखकार । सुन्नजावे बंदो पूजो जग जय कार ॥ ३ ॥ डखहर  
णी मंगलकरणी जिनवरवाणी । जवठेद रुपाणी मीठी अमियसमाणी । म  
नसुखे आणी प्रतिबूजो जविप्राणी । सुयदेविपसायें पामें जयति सुनांणी ॥  
४ ॥ ॥ इति श्रीसमवसरण जावगर्जितस्तुतिः ॥ १३ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ द्रैद्रैकि धपमप धुधुमि धौधौ धसकि धर धप धोरवं । दौदौकि  
दौदौ दाग्निदि दाग्निदिकि द्रमकि द्रण रण द्रेणवं । ऊक्तिऊँकि ऊँ ऊँ ऊ  
णण रण रण निजकि निज जन रंजन । सुरशेख तिरखरे जवति सुखदं पार्थ  
जिनपति मऊनं ॥ १ ॥ कट रेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडदां धुधुकि  
धुट नट पाटवं । गुण गुणण गुण गण रणकिणेंणें गुणण गुण गण गौर  
वं । ऊ ऊँ ऊँकि ऊँऊँ ऊणण रण रण निजकि निज जन सऊना । कल  
यति कमला कलित कलमल मुकलमीस महेंजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठैकि  
ठै ठै ठकि ठकि ठकि पट्टा ताड्यते । तललोंकि लोलों त्रैपि त्रैपिनि  
मैपि मैपिनि वायते । ठै ठैकि ठै ठै थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे ।  
जिन मत मनंतं महिम तनुता नमति सुर नर सुत्रवे ॥ ३ ॥ पुदांकि पुंदां  
पुपुडदि पुंदां पुपुडदि दौदौ अंधरे । चाचपट चचपट रणकि णेंणें मणण  
मंमं मंवेर । तिहां सग मपयुनि निधप मगरस सस ससस सुर सेवता ।  
जिन नाव्यरंगे कुशलमुनिसं दित्तु शासन देवता ॥ ४ ॥ ॥ ॥  
इति श्रीजिन कुशलसूरीकृत पार्थ्वजिन स्तुतिः ॥ १४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ सेजुंज गिरि नमिषै कृपज देव पुंमरीक । शुन्नतपनी महिमा  
सुणि गुरु मुख निरञ्जीक । शुभमन ठवसाँ विधिसुं चैत्यवंदनीक । करिये  
जिन आगल टाढी वचन अलीक ॥ १ ॥ शक स्तवनादिक प्रथम तिलक  
दश बीस । अकृत गिण तीसे चढता तिम चालीस । पंचासनी पूजा जा  
पइ इम जगदीस । तेहीज नितप्रणमं स्वामी जिन चउबीस ॥ २ ॥ सुदि



पद्मनी पूनम चैत्रमास शुक्लवार । विधिसेती लहीयै आगमसाख विचार ।  
 इम सोलवरस लग धरियै न्यान उदार । करतां नरनारी पामें जवनोपार ॥ ३ ॥  
 सोवन तनचरणे नयणे तिम अरिविंद । चक्केसरी देविय सेविय नर सुर वृंद ।  
 कामितसुखदायक पूरयमन आणंद । जंपै गणनायक श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥  
 इति श्रीचैत्री पूनमस्तुतिः ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी ।  
 करुणासागर निजगुण आगर सुन्न समता रस धामी जी । श्री सिद्ध चक्र  
 शिरोमणि जिनवर ध्यावै जे मन रंगै जी । ते माभव श्रीपाल तणी परि  
 पामें सुख सुर संगे जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु म  
 हा गुणवंता जी । दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जय वंता  
 जी । एहनो ध्यानधरंता लहीये अविचल पद अविनासी जी । तेसगला  
 जिननायक नमीयै जिनए नीति प्रकासी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनो हर  
 तिमवलि चैत्रकमास जगीसै जी । नजवाली सातमथी करिये नव आंबिल  
 नव दिवसे जी । तेरसहस वलि गुणिये गुणणो नवपदकेरो सारो जी ।  
 इण परि निरमल तप आदरिये आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल  
 कमलदल लोयण सुंदर श्री चक्केसरि देवी जी । नवपद सेवक नविजन  
 कैरा विघनहरो सुर सेवीजी । श्रीखरतरगह्व नायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति  
 मुणिंदाजी । तासु पसायें इणपरि पन्नणें श्रीजिनलान्न सुरिंदा जी  
 ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीनवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥ १६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वलि वलिजं ध्यावुं गानुं जिणवरवीर । जिण परव पजूसण  
 दाख्या धरमनी सीर । आसाढ चौमासे जूंती दिनपंचास । पडीक्रमणो  
 संवत्तरी करियै त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।  
 करियै नलजावें नरिये पुण्यजंमार । वलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लान्न अनंत ।  
 इम परव पजूसण सज्जमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचना  
 यें वचाय । श्रीकटपसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परजावना  
 धूप अगर नकरेवो । इम नवियण प्राणी परव पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ वलि  
 साहमी वल्ल कसियै वारंवार । केइ जावना जावे केइ तपसी सीलधार ।  
 अमदीह पजसण इम सेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहै जिनलान्न

सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपर्जुणपापर्व स्तुतिः ॥ ❀ ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुर असुर बंदिष पापपंकज मयणमल्ल अक्षोजितं । घन सुवन स्याम सरीर सुंदर शंख लंठन सोजितं । सिवा देवि नंदन-त्रिजग बंदन नविक कमल दिनेश्वरं । गिरनार गिरिवर सिखर बंडुं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदं श्रीआदि जिनवर वीर जिनपावापुरे । वासुपूज्य चंपापुरियसीधा नेमि रेवय गिरिवरे । सम्मेत सिखरं वीस जिनवर मुगति पङ्कता मुनिवरू । चत्तरीस जिनवर तेहबंडुं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यारे अंग उपांगवारो दसपयत्ता जाणियें । ठठेद ग्रंथ प्रसत्य अत्था च्यार मूल वखाणियें । अनुयोग वार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइयें । इह वृत्ति चूरणि ज्ञाप्य पेंतालीस आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ डुजुं दिसैं वा लंक दोय जेहनैं सदानवियण सुखकरू । डुखहरैं अंवा लुंन सुंदर डुरिय दोहग अप हरू । गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरण पंकज सेवियें । श्रीसंघ सज्जनैं सदांमंगल करो अंवा देवियें ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति गिरनार मंमण श्रीनेमि जिनस्तुतिः ॥ १८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीदेवार्य । विश्वेवर्य । पूर्णानंद । नक्तचावंदे ॥ १ ॥ तीर्था धीशाः । शुद्धादेशाः । सर्वेजीष्टं । शं कुर्वं तु ॥ २ ॥ अर्हद्वाचो । वाचो युक्त्या । कृताः सद्भिः । पापं घंतु ॥ ३ ॥ शांता कांता । सिद्धा देवी । शांत्यै दांत्यै । शश्वद्भूपात् ॥ ४ ॥ इति श्रीवीर प्रभु स्तुतिः ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिचुवन जन नायक दायक वंजित दान । नवि कमल वि कासन सासन सूर समान । प्रणमुं बहुजावे नंदाराणी नंद । श्रीसूरत स हिरे शीतलनाथ जिणंद ॥ १ ॥ उज्जल गुण धारी अविकारी अरिहंत । नविजन हितकारी महिमावंत महंत । उपगारी अविचल जयकारी जग दीस । नित निरमल चित्तै बंदो जिन चोवीस ॥ २ ॥ जिहां नैगम संग्रह आदिकनय सुविचार । स्यादस्ति प्रमुख बलि सतजंगि विस्तार । पेंतीस गुणेंकरि सोजै अति सुविसाल । तेकठे ठविये जिनवाणी वरमाल ॥ ३ ॥ कमलासन सोहै नील वरण तनुकांत । निज च्यार जुजै करि राजै अतिसय वंत । श्रीदेवी अशोका सोक हरण सुखकंद । इम नक्तै पज एं श्रीजिनलान सूरिंद ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ श्री सर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीसं देवेन्द्रं । काम्याकारं लीलागारं  
साध्वाचारं श्रीतारं । ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्तिस्फारं श्रीकारं । गीर्वाणै  
र्वन्द्यं सानन्दं नक्त्या वन्दै श्रीपार्श्वं ॥ १ ॥ जागृक्षीपे जंबूक्षीपे स्वर्णं शशैले  
श्रीशैले । चंचच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुंगत्वाढ्ये वैताढ्ये । श्रेयस्कारे वक्रस्कारे  
देवावासे सोद्धासे । धेवर्तन्ते सर्वाधीशा स्तेसौख्यं वो देयासुः ॥ २ ॥ स  
म्यग् ज्ञानं शुद्धध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं । त्रैलोक्य श्रीरामारम्यं विद्वज्जम्यं  
प्राकाम्यं । अर्हच्चक्रां चोजोद्भूतं शश्वत्पूतं संगीतं । लक्ष्मीकांतं वर्णो  
पेतं वंदेव्यक्तं सिद्धांतं ॥ ३ ॥ नव्यानां नक्त्यानां कल्याणं कुर्वती विभ्रा  
णा । शीर्षे सोमरीं कोटीरं तारं हारं वक्षोजे । विख्याता चोगेंद्रोपेता सा  
लंकारा प्रल्हादं । यत्नंती पद्मादेवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैडुष्यं ॥ ४ ॥ ❀ ॥  
इति श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पापायां पुरि चारु षष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः । हमापाल प्रभु  
हस्तपाल विपुल श्रीशुक्लशालामनु । गोसे कार्तिक दर्श नागकरणे तूर्यार  
कांते शुभे । स्वातौ यः शिवमाप पाद रहितं संस्तौमि वीरप्रभु ॥ १ ॥ यज्ञ  
र्चागमनोद्भव व्रतवर ज्ञानाक्षराप्ति क्षणे । संज्ञयाशु सुपर्व संततिरहो चक्रे  
मह स्तत् क्षणात् । श्रीमन्नाम्निन्नादि वीरचरमा स्ते श्री जिनाधीश्वराः ।  
संवाया नघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसिच ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिदं जगाद  
जिनपः श्रीवर्द्धमानान्निधः । तत्पश्चा ज्ञाननायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः ।  
श्रीमत्तीर्थ समर्थनेक समये सम्यग् दशां नूतपूरां । नूयाज्ञावुक कारकं  
प्रवचनं चेतश्चमत्कारियत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थ ज्ञावनपराः सिद्धायि  
का देवता । चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता पायादपायादसौ । अर्हन् श्रीजि  
नचंद्रगी स्सुमतिनो नव्यात्मनः प्राणिनो । याचक्रे वम कष्टहस्ति निधने  
सार्द्धलविक्रीमितं ॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ ११ ॥ ॥ पुनः ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धार्थ ताता जगत विख्याता त्रिसलादेवी माय । तिहां ज  
गगुरु जनम्या सब दुखविरम्या महावीरजिनराय । प्रभुलोई दिक्षा कर हित  
शिख्या देईसंवहरीदान । वज्र करमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुद्धध्यान  
॥ १ ॥ वर केवलपामी अंतरजामी वदिकाती शुभदीस । अमावसजातें  
पिठदीरातें मुगतिगया जगदीस । वलि गौतम गणधर सोटामुनिवर पाम्या

पंचमज्ञान । ययातत्वप्रकासी शीलविलासी पञ्जतामुंगति निदान ॥ १ ॥  
 सुरपति संचरिया रतनउवरिया रातथई तिहां काली । जन दीवा कीवा कार  
 जसीधा निसाथई उजवाली । सज्जलोके हरखी निजरेनिरखी परवकियो दी  
 वाली । वलि नोजन नगतें निज निज सगतें जीमें सेवसुहाली ॥ ३ ॥  
 सिद्धायिकादेवी विघनहरेवी वंति दै निरवारी । करे संवनेसाता जिमजग  
 माता एहवी शक्ति अपारी । जिनगुण इमगावे शिवसुखपावै सुणज्यो  
 नविजनप्राणी । जिनचंदजतीसर महामुनीसर जंपै एहवी वाणी ॥ ४ ॥  
 ॥ इति श्री दीपमालिका स्तुति ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ पनरैतिर्योका स्तवन लिख्यते ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि । अरज सुणो इक  
 जगगुरु मुऊ आसा विसराम । पूरवविदेहें विजयनली पुष्कलावई नाम ।  
 जिहां विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणै जे जो  
 जनगामनी वाणि । धनते महीपल चरणधरै जिहां जिनवर जाण । धनते  
 नविजन जे रहै प्रभुताहरे परसंग । वदनकमल निरखी नितमाणे उठवअं  
 ग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुह्यीणो सांचलकान । मिलवानें उलसै  
 मनमाहरो धरुं इक ध्यान । नगति जुगति करवानी ठै मुऊसगली जोम ।  
 पिण प्रभुलग पुहची जे तेहनही पगदोम ॥ ३ ॥ आमा मुंगर अतिघणा  
 विचवहै नदियांपूरि । किम मुऊथी अवरायै प्रभुजी एतलीदूर । आंखडली  
 उलजों करै जोयवा मुख जिनराज । पांखडली पाई नही ते दिन किमसरे  
 काज ॥ ४ ॥ बाटडली बहतो कोई न मिलै संगूसाथ । कागलियो लिख  
 आपूं जुं जिम तेहनें दाय । जाणूं ससिहर साथे कजुं संदेशाजेद । पिण  
 अलगो थई ऊपरि बाडै निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रभुजी तुमयी  
 एय अवाय । तो इण भरतनावासी नविजन पावन थाय । साद्विनीनो  
 सुनिजर सगलै सरिपी होय । पिणपोतानी प्रापति सारु फलप्रतिजोय  
 ॥ ६ ॥ अलगोटुं पिणमाहरे तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवै  
 दीवने विण १ चीत । जुंसेवक तुंवे माहरो आतमराम । नद्विय वि  
 सारु जीवुं जांलगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥ साचै दिलथी मुऊसुं धरज्यो धर

मस्नेह । करुणाकर प्रभु कर जो मोपरि महिर अठेह । दूसमकाल तणो ड  
 खटालो दीनदयाल । पालो विरुद संजालो निज सेवकसुं रुपाल ॥ ८ ॥  
 आसविलूया अलग थकी पिण करै अरदास । पिण मोटानी महिरठतां न  
 विधाय निरास । केईवसै प्रभु पासे केई वसैठै दूर । राजमहिरनी रीते स  
 कलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुखदायक नायक लायक स्वामिसुरंग ।  
 ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आत्मनमंग । सहिजे एकपलक जोयायै  
 प्रभु तुऊसंग । लान्नउदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अन्नंग ॥ १० ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै । नवना संचित पाप परा  
 सब मेटियै । मनधर नाव अनंत चरणयुग सेवता । अणजुंतें इक्कोमि  
 चतुरविध देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरुं प्रभुदूरथकी ऊं ताहरो । जल जिमलीनो  
 मीन सदा मनमाहरो । नव २ तुमहीजदेव चरणहूं सिरधरुं । नवसायरथी  
 तार अरज आहीजकरुं ॥ २ ॥ नूख त्रिषा तप सीत आतम एनविसहै । तप  
 जप संयम नारतणो नविनिरवहै । पिण जिणवरना नामतणी आसतघणी ।  
 एहिज ठै आधार जगतगुरु अह्वनणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसाम नवो  
 दधि ऊं फिस्यो । सहिया डुक्ख अनेक न कारज कोसख्यो । मिलिया हिव  
 प्रभु मुझ सदासुख दीजीयै । चनगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥  
 यादवपति श्रीकृष्ण तणी आरतिहरी । सेनाकीध सचेत जरा दूरैकरी । पर  
 चा पूरण पास रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो  
 ॥ ❀ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह  
 नगतै नणुं । जेटवापाय कमल नाव हीयमै घणो । करीय सुपसाय जे  
 बीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुहसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अठै तिसो  
 कर जोमि करि नाषियै । अति सबल मुऊहियै मोह माया घणी । एक  
 मन नगति किमकरुं त्रिभुवन घणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी  
 परिगडै । रीसचटको चढे लोचन वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम  
 रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं हियडै नवि बसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनें रातिहि  
 यडै अनेरो धरुं । मूढमन रीऊवा बलिय माया करुं । तूंहीज अरिहंत

जाणें जि सो आचरूं । तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्म  
 वसि सुखनैं डुक्खजेज्जसज्ज । मनतणी वात अरिहंत किएनैं कज्ज । करि  
 दया करि मया देव करुणापरा । डुक्ख हरि सुख करि सामि सीमंधरा  
 ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म नकराय प्रचुपाप  
 पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव बीजो नही । एह आधार जग जाणंज्यो  
 अह्म सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू । हस्यो वोढ्यो  
 रस्यो रंगरातो वहू । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह्म समबम  
 नही अवर वालहे सरा ॥ ७ ॥ अमिय सम बांणि जाणुं सदा सांजलुं ।  
 वार वर परपदा मांहि आवी मिलुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायजलुं ।  
 किम करुं ठाम पुंमर मिरिवेगलुं ॥ ८ ॥ जोलडा जगतिंतू चित्तहारै किस्यै ।  
 पुण्यसंयोग प्रचु दृष्टिगोचर जूस्यै । जेहनें नांम मन वयण तन जलूस्यै ।  
 दूरथी ठूकमा जेम हियडै वसै ॥ ९ ॥ जल जलो एणि संसार सज्ज ए  
 अठै । सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठै । ध्यान करतां सुपन मांहि  
 आवीमिलै । देखियै नयण तो चित्त आरति टलै ॥ १० ॥ साम सोहा  
 मणा नाम मन गह गहै । तेहसुं नेह जे वात तुह्मची कहै । तुह्म पाय  
 जेटवा अति घणुं टलवलुं । पंख जो होयतो सहिय आवीमिलुं ॥ ११ ॥  
 मेरुगिर लेखणी आनकागल करुं । खीर सागर तणा दूध खडिया भरुं ।  
 तुह्म मिलवा तणा सामि संदेसमा । इंद्र पिण लिखिय नसकै अठै एवमा  
 ॥ १२ ॥ आपणें रंग जरि वात सुण जेतली । ऊपजै सामि न कहाय  
 मुख तेतली । सुणो सीमंधरा राज राजेसरा । लामनें कोमि प्रचुपूरि स  
 विमाहरा ॥ १३ ॥ पुव्व जवि मोह वसि नेह जूवै जेहनें । समरिये एणि  
 संसार नित तेहनें । मेहनें मोरजिम कमल जमरो रमें । तेम अरिहंततूं चि  
 त्त मोरै रमें ॥ १४ ॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियमै वस्युं । वापमो पापहि  
 व रहिय करस्यै किसुं । ठामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही । ततखिण सर्प  
 नी जाति नसकै रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सज्ज परिहरी । सा  
 मि सीमंधरा तुह्म पाय अणुसरी । सुख चारिव कहियै प्रचू पालसुं । डं  
 कख जंमार संसार जय टालसुं ॥ १६ ॥ तुह्म जंदासज्ज तुह्म सेवकसही ।  
 एहमें वात अरिहंत आगलिकही । एवढी माहरी जगत जाणी करी ।

आप ज्यो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम ऊर्ध्व वृद्धि  
समृद्धि कारण डरित वारण सज्जकरो । उवप्प्राय वर श्री जक्तिलाजै थुण्यो  
श्रीसीमंधरो । जय जयो जगत गुरु जीव जीवन करो सामि मया घणी ।  
करजोडि बलि बलि वीनबुं प्रभु पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्ण ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनमोहन महाराज । तीन जुवन सिरताज ॥ आठे लाल ॥  
नगर ब्रह्मान पुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिणंद प्रधान । निरमल सुगुण  
निधान ॥ आठे लाल ॥ वामा सुत बनि जागीया जी ॥ २ ॥ सेवक नी  
संजाल । करीय खरी ततकाल ॥ आठे लाल ॥ संकट सज्ज प्रभु परि ह  
स्वाजी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर । प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आठे लाल ॥  
वाट विषमता पिणटली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीनें परसाद । वीता सज्ज विख  
वाद ॥ आठे लाल । मन बंठित मुक्त सज्ज फल्याजी ॥ ५ ॥ ध्यान समा  
धिनी थाप । मिलीयाठो प्रभु आप ॥ आठे लाल ॥ देज्यो दरसन बलि  
सदाजी ॥ ६ ॥ अमृत धर्म सुजाण । सीस क्षमा कल्याण ॥ आठे लाल ॥  
वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ इति श्रीमन मोहन पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय १ श्रीजिन राज । जग जन अन्तर जामी । तारण तरण  
जिहाज । परमात्म परिणामी ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेस । परमानंद प्र  
धान । परम प्रकास विसेस । निरमल ज्ञान निधान ॥ २ ॥ जगपति पा  
स जिणंद । प्रभु तुह्य हो उप गारी । सुनियै सेवक जान । ऐसी अरज  
हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद झूलि । में वज्जकाल गमायो । निजपर ज्ञा  
व विवेक । सुध सुजाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन जाव । कर्म कलं  
कित कीनो । ताकारण गुण ठेसि । पर ओगुणचित दीनो ॥ ५ ॥ निज  
अवगुण सुणिकान । दिलमें रोस जराठे । अठता निज गुणगान ।  
सुनिवैकुं ऊमाहूं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुध । दिलसें दूर नजावै । कुम  
ति कदाग्रह जोग । समता सुध न आवै ॥ ७ ॥ अब कठु पुण्य संयोग ।  
प्रभु तुह्य मुद्रा पेखी । सुध अध्यात्म लीन । जाव असुध नवेखी ॥ ८ ॥  
निरखि १ प्रभुविंव । मनमें आनंदपाऊं । गाऊं तुह्यगुणयाम । देव अवर

नविचांजुं ॥ ए ॥ करुणाकरि प्रभुमुझ । आतम निरमल कीजै । सुखदसा  
प्रगटाय । मोह विकलता ठीजै ॥ १० ॥ जव १ निजपद सेव । प्रभु सेवककुं  
दीजै । श्री जिन नक्ति पसाय । सुमति विलाश वरीजै ॥ ११ ॥ ॥ ✽ ॥  
॥ ✽ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निरमल न्यानउपाय । पांचमि तप जणुंए ।  
जन्म सफल गिणुंए ॥ १ ॥ चन्नीसमो जिनचंद । केवल न्यान दिणंद ।  
त्रिगणे गहगहोए । नवियणनें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वमो संसार ।  
न्यान मुगति दातार । न्यान दीवो कसोए । साचो सरदसोए ॥ ३ ॥  
न्यान लोचन सुबिलास । लोकालोक प्रकास । न्यान बिना पसुए ।  
नर जाणें किसुंए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण । जगवती सूत्रप्रमाण ।  
न्यानी सर्वतुए । किरिया देशतुए ॥ ५ ॥ न्यानी सासोसास । कर्म करे  
जेनास । नारकिनें सहीए । कोडवरस कहीए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार ।  
बोल्या सूत्र मजार । किरिया ठै सहीए । पिण पाठै कहीए ॥ ७ ॥ कि  
रिया सहित जो न्यान । जूबैतौ अति परधान । सोनोनें सुरोए । संख  
दूधै नखोए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मजार । पांचमि अक्षर सार । जगवंत  
जापीयोए । गणधर साखियोए ॥ ९ ॥ (ढाल १ पहिली काल हरानी) ॥  
॥ ✽ ॥ पांचमि तप विधि सांजलो । जिम पामो जव पारोरे । श्रीअरिहंत  
इम उपदिसै । नवियणनें हित कारोरे ॥ पां० ॥ १० ॥ मिगसर माह फा  
गुण जला । जेठ आसाढ वैसाखरे । इण पठमासै लीजीयै । शुभदिन  
सजुरु साखोरे ॥ पां० ॥ ११ ॥ देव जुहारी देहरे । गीता रथ गुरु वं  
दीरे । पोथी पूजो न्याननी । सगति जूबै तो नंदीरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ वेकर  
जोमी जावसुं । गुरु मुख करो उपवासोरे । पांचमि पडिकमणो करै ।  
पढो पंडित गुरु पासोरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो ।  
तिण दिन आरंज टालोरे । पांचमि तवन थुई कहो । ब्रह्म चारिज पिण  
पालोरे ॥ पां० ॥ १४ ॥ पांचमास लघुपंचमी । जाव जीव उरुष्टीरे ।  
पांच वरस पांच मासनी । पांचमि करो शुभ दृष्टीरे ॥ पां० ॥ १५ ॥  
(ढाल २ उल्लाखानी) ॥ ✽ ॥ हिय नवियणरे पांचमि ऊजमणो सुणो ।  
घर सारूरे वारू धन खरचो घणो । ए अवसररे आबंता बंदि दोहिलो ।



पुण्य जोगैरे धनपामंता सोहिलो । ( उल्लाखो ) सोहिलो बलीय धन पाम  
तां पिण धर्म काज किहां बली । पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयै  
कावसग रखी । त्रिण न्यान दरसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजीयै ।  
थापना पहिली पूजकेसर सुगुरु सेवा कीजीयै ॥ १६ ॥ सिद्धांतनीरे पां  
च परत वीटांगणा । पांच पूठारे मुख मल सूत्र प्रमुख तणा । पांच मो  
रारे लेखण पांच मजी सणा । वासकुंपारे कांबी वारू वरतणा । ( उ  
ल्लाखो ) वरतणा वारू बलिय कमली पांच जिल मिल अति जली ।  
थापना चारिज पांच ठवणी मुह पती पम पाटली । पट सूत्र पाटी पंचको  
थल पंच नव कर वालियां । इण परै आवक करै पांचमि नजमणो नजवा  
लियां ॥ १७ ॥ बलि देहरैरे स्नात्र महोत्तव कीजियै । घर सारूरे दानबली तिहां  
दीजियै । प्रतिमानैरे आगलि ठोवणो ठोइयै । पूजानारे जे जे उपगरण जोइयै ।  
( उल्लाखो ) जोइयै उप गरण देव पूजा काज कलशचंगार ए । आरती मङ्गल  
थालदीवो धूप धाणो सारए । घनसार केसर अगर सूकम अंगलुहणो दीसए ।  
पंचपंच सगली वस्तु ठोवो सगलिसुं पचवीस ए ॥ १८ ॥ पांचमीतारे साह  
मी सर्व जीमामियै । रात्री जोगैरे गीत रसाल गवाडियै । इण करणीरे क  
स्तां न्यान आराधियै । न्यान दरसणरे उत्तम मारग साधियै । ( उल्लाखो )  
साधियै मारग एह करणी न्यान लहीये निरमलो । सुर लोकनें नरलोक  
माहें न्यान वंतते आगलो । अनुक्रमे केवल न्यान पामी सासता सुख  
जेलहै । जे करै पांचमि तप अखंमि वीर जिणवर इम कहै ॥ १९ ॥  
॥ कलश ॥ इम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्ध मान जिणोसरो । मंथुण्यो  
श्रीअरिहंत जगवंत अतुल बल अलवेसरो । जयवंत श्रीजिनचंद सूरिज  
सकल चंद नमंसीयो । वाचना चारिज समय सुंदर जगति जाव प्रसंसीयो  
॥ २० ॥ इति श्रीपंचमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचमि तप तुमे करोरे प्राणी । निरमल पामो न्यानरे । पहि  
ली न्याननें पठे किरिया । नही कोई न्यान समानरे ॥ पां० ॥ १ ॥ नंदी  
सूत्रमें न्यान बखाण्यो । न्यानना पंच प्रकारे । मति श्रुत अवधि अनें  
मन पर्यव । केवल न्यान श्रीकारे ॥ पां० ॥ २ ॥ मति अठावीस श्रुति  
चवद्वीस । अवधि ठे असंख प्रकारे । दोय जेद मन पर्यव दाख्यो । केवल

एक प्रकारे ॥ पां० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेस्युं तेज आ  
कासरे । केवल न्यान समो नही कोई । लोका लोक प्रकासरे ॥ पां० ॥  
॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीन । महारीपूरो जेदेरे । समय सुंदर कहै  
जुं पिए पामुं । न्याननो पंचमों जेदेरे ॥ पां० ॥ ५ ॥ ॥ ✽ ॥

इति श्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ जविका श्रीजिनविंव जूहारो ॥ आतम परम आधारैरे । ( ज  
विकाश्रीजि० ) । जिनप्रतिमा जिनसारपी जाणो । नकरो संकाकाई । आ  
गमवाणीन अनुसारै । राखो प्रीत सवाईरे ॥ ज० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविं  
व स्वरूप न जाणें । तेकहिये किम जाणें । जूला तेह अज्ञानें जरिया । न  
ही तिहां तत्वपिठाणोरे ॥ ज० श्री० ॥ २ ॥ अंबड थावक श्रेणिक राजा ।  
रावण प्रमुख अनेक । विविध परै जिन जगति करंता । पाम्या धरम वि  
वेकरे ॥ ज० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा वज्र जगते जोतां । होय नि  
श्रय उपगार । परमारथ गुण प्रगटै पूरण । जोज्यो आद्र कुमाररे ॥ ज०  
श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर । वै वज्र जलधि मज्जार । तेदेखी  
वज्रला मज्जादिक । पाम्या बिरत प्रकारे ॥ ज० श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगै  
जिन प्रतिमानो । प्रगटपणें अधिकार । सूरियाजसुर जिनवर पूज्या । राय  
पसेणी मज्जारै ॥ ज० श्री० ॥ ६ ॥ दशमैं अंगै अहिंसादाखी । जिनपूज्यां  
जिनराज । एहवा आगम अरथमरोमी । करियै केम अकाजरे ॥ ज० श्री०  
॥ ७ ॥ समकित धारी सतीय द्रुपदी । जिनपूज्या मनरंगै । जोज्यो एहनो  
अरथ विचारी । ठे ग्याता अंगैरे ॥ ज० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरै जिम  
जिनवर पूजा । कीधी चितथिर राखी । द्रव्य जाव विजुं जेदे कीनी । जीवा  
जिगम ते साखीरे ॥ ज० श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक वज्र आगम साखें । कोइ  
संका मति कर ज्यो । जिनप्रतिमा देखी नित नबलो । प्रेम वणो चित धर  
ज्योरे ॥ ज० श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रज्जुपासपसाये । सरवा हो  
ज्यो सवाई । श्रीजिनलाज सुगुरु उपदेसै । श्रीजिन चंद्र सवाईरे ॥ ११ ॥  
ज० श्री० ॥ इति श्रीचिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ६ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अंतरजामी सुण अलवेसर । महिमा त्रिजग तुमारी । सांजल  
न आयो तुमतीरे । जन्ममरण डखवारो ॥ १ ॥ ( सेवक अरज करैठेहो

राज । अम्हनें सिवसुख आलो ) ॥ ( आंकणी ) सज्जकोनां मनवंडित  
 पूरो । चिंता सज्जनी चूरो । एह विरुदढे राज तुह्यारो । किम राखो ठो दूरो  
 सेव ॥ १ ॥ सेवकनें बिल बिलतो देखी । मनमें महिरन धरसो । करुणासा  
 गर किम कहवासो । ज्यो उपगार नकरसो ॥ सेव ॥ ३ ॥ लटपटनो हिव  
 कामनही ठे । परतिख दरसण दीजै । धुंवांमै धीजुं नहीसाहिव । पेट पड्यां  
 पतीजै ॥ से ॥ ४ ॥ श्री संखेसर मंमण साहिव । वीनतमी अवधारो । क  
 हे जिनहर्ष मयाकर मुऊपर । नवसायरथी तारो ॥ सेवक ॥ ५ ॥ ॐ ॥  
 इति श्री पार्श्वजिनस्तवनं ॥ ॐ ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जयकारी जिनराज । पुरसादाणीरे । वामासुत वरदाय । निरम  
 लनाणीरे ॥ १ ॥ पांचकमल प्रभुअंग । निरुपम निरख्यारे । तीनकमल मुऊ  
 संग । आतमहरख्यारे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख । चंद लजाणूरे । गगन  
 नमें निसदीस । इम मन आणूरे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार । नयण वि  
 राजै रे । हृदय कमल सुविलास । थाल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चर  
 ण बिलोक । पंकज हाखो रे । ततखिण निज संवास । जलमें धाखो रे  
 ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार । श्रीजिन राया रे । साचै पुण्य संयोग । सा  
 हिव पायारे ॥ ६ ॥ प्रभु गुण अनुभव नीर । सांग सुरंगैरे । टाढ्यो पा  
 तिक पंक । आतम संगैरे ॥ ७ ॥ वरस अठार चौतीस । वदि वैशाखै रे ।  
 मनु हर पांचम दीस । सज्ज संघ साखें रे ॥ ८ ॥ नगर महेवा मांहि ।  
 पास जुहाखा रे । श्रीजिन चंद मुणिंद । वंडित साखा रे ॥ ९ ॥ ॐ ॥  
 इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ॐ ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अमल कमल जिम धवल विराजै । गाजै गोमी पास । सेवा  
 सारै जेहनी । सुर नर मन धरिय नलास ॥ १ ॥ सोनागी साहिव मेरावे ।  
 अरिहां सुग्यानी पास जिणंदावे । ( आंकणी ) सुंदर सूरति मूरति सोहै ।  
 मोमन अधिक सुहाय । पलक २ में पेखतां । मानुं नव नवी ठवीय देखाय  
 ॥ २ ॥ सोनागी ० अ ० ॥ नवडुख नंजण जनम निरंजन । खंजन नयन  
 सुरंग । श्रवण सुणी गुण ताहरा । माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥  
 ॥ सो ० ॥ अ ० ॥ दूरथकी ऊं आयो वहनें । दे वहलो दीदार । प्रारथियां  
 पहिडेनही । साहिवा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सोनागी ० अ ० । प्रभु

मुख चंद विलोकित हरखित । नाचत नयन चकोर । कमल हसै रवि दे  
 खनै । जिम जलधर आंगम मोर ॥ सो० ॥ ५ ॥ किसकै हरि हर किसकै  
 ब्रह्मा । किसकै दिलमें राम । मेरै मनमें तूं वसै । साहिव सिव सुखनो  
 गम ॥ सो० अ० ॥ ६ ॥ माता बामा धन्य पिता जसु । श्रीअश्वसेन  
 नरेश । जनम पुरी बृणारसी । धन धन कासीनो देस ॥ सो० अ० ॥ ७ ॥  
 संवत सतरैसे बाबीसै । बदि बैसाख बखाण । आठम दिन जलै जावसुं ।  
 मोरी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० अ० ॥ ८ ॥ सानिध कारी विघन नि  
 वारी । पर उपगारी पास । श्रीजिनचंद जुहारतां । मोरी सफलफली सज्ज  
 आस ॥ सो० अ० ॥ ९ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवन ॥ ८ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ( ढाल ) पाटो धरजी पाटीयै पधारो ए० ॥ सुणि २ सेवुंज गि  
 रस्वामी । जगजीवन अंतरजामी । झंतो अरजकरुं सिरगामी । रुपानिध  
 वीनती अवधारो ॥ १ ॥ जवसायर पार उतारो । निज सेवक वानवधारो ॥  
 रु० ॥ प्रभु मूरति मोहन गारी । निरख्यां हरखे नरनारी । जाउँ वारी झं वार  
 हजारी ॥ रु० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै । मुऊ ऊपर महिर  
 धरीजै । दिलरंजन दरसण दीजै ॥ रु० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फ  
 लिया । जव जवना पातिक टलिया । प्रभु जो मुऊ सेमुख मिलिया ॥ रु० ॥  
 ॥ ४ ॥ समस्यां संकट टलि जायै । नव नवनि न मंगल थायै । मुऊ आ  
 तम पुण्य जरायै । रु० ५ ॥ कर जोमी वीनति कीजै । केसर चंदन च  
 रचीजै । दिन धन धन तेह गिणी जै ॥ रु० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस  
 लहितोरो । अति हरखित झुवो चित्त मोरो । जिम दीगं चंद चकोरो  
 ॥ रु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचमै आरे । विसमा जय संकट वारे । सज्ज  
 सेवक काज सुधारै ॥ रु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वामि सदा सुखदाई । कमणा न  
 रहै घर काई । बाधै संपति सोज सवाई ॥ रु० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंवर  
 चंदा । जव जन मन नयण आणंदा । ओलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ रु० ॥  
 ॥ १० ॥ जयकारी रिपज जिणंदा । प्रहसम धर परम आणंदा । वंदै  
 श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ रु० ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ इति श्री रूपन देवजी स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥ धर अंगण सुरतरु फल्योजी । कवण कनक फल खाय ।

गयवर बांध्यो वारणेंजी । खर किम आवैदाय ॥ १ ॥ विमल जिन माहरे  
तुल्लसुं प्रीति । सुर सकलंकित सुंमिल्यां जी । हीयडो हीसे केम ॥ वि० ॥  
॥ २ ॥ मन गमता मेवा लहीजी । कुणखल खावा जाय । आदर साहिव  
नो लहीजी । कुणलये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाच ठते कुण काचनें  
जी । अलव पसारै हाथ । कुण सुरतरु थी ऊठिनें जी । बांवल घाले वा  
थ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो ऊं करूं जी । तो प्रभु तुमची आण ।  
श्री जिनराज नवो नवैजी । तुंहीज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्री विमल जिन स्तवनं ॥ ए ॥ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पास जिनेसर जगति लोए । गवडी पुर मंनण गुण निलो  
ए । तवन करिस प्रभु ताहरो ए । मन बंठित पुरो माहरो ए ॥ १ ॥ नय  
री नाम वणारसि ए । सुर नयरी जिन रिद्धै वसी ए । तेण पुरीठें दीपतो  
ए । अस्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसुघरि नार ए । तसु  
गुणहि नलखै पार ए । तासु नयर अवतार ए । तसु अतिसय रूप उदार  
ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लखाए । अनुक्रम करि तेसऊ मन ग्र  
ह्याए । पूठै नूपतिनें कल्याए । करजोमि कल्या जे जिम लखाए ॥ ४ ॥  
( ढाल १ ) । प्रथम सुपनगज निरख्यो । मायतणोमन हरख्यो । बाजै वृ  
षभ उदार । धरणी जिण धख्यो चार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान । ज  
सुबल कोयनमान । चउथै देखी श्री देवी । कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥  
पांचमै पुप्फनी माला । पंचवरण सुविशाला । ठेठे दीठोएचंद । ग्रहगण के  
रोएइंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार । दूरकियो अंधकार । आठमें धजलह कं  
ती । वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंज । नरियो निरमल अंज ।  
देखि सरोवर दसमें । मनह थयो अति विशमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें ।  
खीर जलधि जसु नामें । वारम देव विमान । वाजिन्न ध्वनि गीत गान ॥ १० ॥  
तेरम रतननी राशि । दहदिसि ज्योति प्रकाशि । सुपन चवदमें ए दीठो ।  
पावक धूमथी मीठो ॥ ११ ॥ सुपन कल्या सुविचार । हरष्यो नूपनदार ।  
पुत्ररतन होस्यै ताहरै । थास्यै नदय हमारै ॥ १२ ॥ ( उहा ) चवदसुपन  
श्रवणेंसुणी । हरषकियो सुविचार । सुंदर सुत तुमे जनमस्यो । कुलदीपक  
आधार ॥ १३ ॥ वामाप्रीतम वचन सुणि । आवी मंदर ऊत्ति । देव सुगु

रुकीरत करी । जनम कियो सुकृत्य ॥ १४ ॥ इण अनुक्रमि ऊग्यो दिवस  
कीधा सुपन विचार । ते घरि पङ्कता आपणै । दीया दान अपार ॥ १५ ॥  
( ढाल ) ३ ॥ ॥ ॥ हिवजनम्या जगगुरु जगत्रज्जने जयकार । खिण इकनार  
किये पायो सुख अपार । दिशिकमरी मिलकर सूत्रकरम निशिकीध । करि  
थानक पुहती वंठित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निशि चौसठ इंद्रमिली  
तिहां आवै । लेई निज जगते सुरगिर स्नात्र करावै । करि जनम महोत्सव  
जननी पासे ठावै । तिहांथी सुर सबमिली दीप नंदीसर जावै ॥ १७ ॥ इम  
रयण बिद्वाणी ऊगो दिवस उदार । घर २ गाइजे कीजे मङ्गलच्यार । इग्या  
रम-दिवसै मिली सहू परिवार । तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार  
॥ १८ ॥ प्रभु बाधै दिन २ कलाकरी जिम चंद । त्रिजं न्यान विराजित  
रूप जिसो देविंद । गुणकला विचक्षण विद्या तणोच निधान । योवन वय  
आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥ ( ढाल ४ ) ॥ ॥ ॥ कुमर पदै प्रभु  
रहितं काल सुखें गमैं ए । आयो मन बैराग संयम लेवासमैं ए । तब लो  
गंतिय देव जणावै अवसरू ए । देई संवत्तरी दान याचक जन सुख करू  
ए ॥ २० ॥ स्वामी संयमलेइ इंद्रादिक सब मिल्या ए । देश विदेश वि  
हार करी क्रम निरदल्या ए । पामीय केवल न्यान सुरै महिमा करी ए ।  
थापिय चउविह संव मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥ ( ढाल ) ॥ ५ ॥  
॥ ॥ इम श्रीगौडी पास तणा गुण जे नर गावै । ते नर नारी इह पर  
लोगसु वंठित पावै । संघ करी संघ पत्ति जिके गवमी पुर जावै । चोर  
धाड संकट टलै विघन बुराई न आवै ॥ २ ॥ धरणराय पञ्मावइ जास  
वहै सिर आण । सांवल वरण सुशोभित नवकर काय प्रमाण । कल्पवृक्ष  
चिन्तामणि काम गवी सम तोले । श्री गुणशेखर सीस समय रंग इण  
परिवोलै ॥ २३ ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तवनं ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग सिंधू ॥ पूजानो तूं वे पत्वाही । ते समता गाढी करि  
साही । राही जिम तुऊ आण आराही । पूरेतो पूरी पति साही ॥ १ ॥  
तेसाची सेवा विधि जाणी । झूला जमैं अवर सवि प्राणी । मन सुख आ  
राधे तुऊ वाणी । तो संतोषी जे आफाणी ॥ २ ॥ देखै एक वचन उथा  
पै । तेतो पिंम जरी जे पापे । नाम जपे परमेसर जावै । तुंकिम केहनों

पातक कापै ॥ ३ ॥ जगति जुगतिनो पहिलो पार । मइ लाधउ जिनवर  
 निरधार । जिण तुऊ काइन लोपीकार । तिणतो जगति करी सौवार ॥४॥  
 नाथ अनंत तणो जिनराज । लाधो मान सहीमें आज । आगमने वचने  
 जिनराज । चालै तो दै सिवपुर राज ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री अनंत जिन स्तवनं ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरण बैठा जगवंत । धरम प्रकासै श्री अरिहंत । वारे  
 परषदा बैठी जुडी । मिगसर सुदि इग्यारस वमी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना ती  
 न कल्याण । जनम दिहाने केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी रूवमी  
 ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति पर  
 धान । ए तिथिनी महिमा ए वमी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच जगत ऐरवत इम  
 हीज । पांच कल्याणक ऊवै तिम हीज । पंचासनी संका परगमी  
 ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै  
 तेम । कुण तिथ्यै एतिथ जे वमी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि  
 गिणो । लाज अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सऊ तिथि सिर राखमी  
 ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणै रखा श्री मल्लिनाथ । एक दिवस संयम व्रत सा  
 थ । मोनतणी परि व्रत इम पमी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै ।  
 चौविहार विधसुं कीजी यै । पिण परमादन कीजै वमी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस  
 इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोहू त  
 णी पावमी ॥ मि० ॥ ९ ॥ उजमणो कीजै श्रीकार । न्यानना उप गरण इ  
 ग्यार २ ॥ करो कानसग गुरुपाये पमी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र  
 करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । मुगति पुरी कीजै ठूकमी ॥ मि० ॥  
 ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । व्रत पञ्चक्खा  
 ण करो आखमी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन  
 सहू मन गमै । समय सुंदर कहे करो व्याहमी ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री एकादसी वृद्ध स्तवनं संपूर्ण ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंमेरे मनमें प्रभु तुंमेरे दिलमें ध्यान धरुं पल २ में । पास  
 जिणोसर अन्तर जामी । सेवकरुं ऋन २ में ॥ ( तुं० ( १ ॥ काहू को  
 मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रभु तुमहीसुं रा

च्यो । ज्युं चातक चितवनमें । ( तुं० १ ) जोगीसर तेरी गति जाएँ ।  
अलख निरंजण त्रिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिव तीन  
चवनमें ॥ ( तुं ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरा साहिव हो श्री सीतलनाथकि । वीनती सुणो इकमोरमी ।  
डख जाँजै हो जग दीन दयाल कि । वात सुणीमें तोरमी ॥ १ ॥ ( मो० )  
तिण तोरैहो जं आयो पासकि । मुऊ मन आस्या ठै घणी । कर जोडी  
हो कज्जं मननी वातकि । तुं सुणि जे विजुवन घणी ॥ २ ॥ ( मो० ) जं  
भमियोहो जव समुद्र मज्जार कि । डख अनंता में सखा । ते जाएँ हो  
तुं हीज जिन राज कि । में किमजायें ते कखा ॥ ३ ॥ ( मो० ) जाग जो  
गे हो तोरो श्री भगवंत कि । दरसण नयणे निरखियो । मन मान्यो हो  
मोरै तुं अरिहंत कि । हियमो हेजै हरखियो ॥ ४ ॥ ( मो० ) एक निश्वै  
हो में कीधो आज कि । तुऊ बिण देव बीजो नही । चिंतामणि हो जो  
पायो रतन कि । काच ग्रहै कहो कुण सही ॥ ५ ॥ ( मो० ) पंचामृ  
तहो जिण भोजन कीध कि । खल खायवा मनकिम थीयै । कंठ तांइहो  
जो अमृत पीधतो । खारो जल कहो कुण पीयै ॥ ६ ॥ ( मो० ) मोती  
कोहो जो पहस्यो हारकि । चिरमठि कुण पहिरै हीयै । जसु गांठे हो  
लाख कोडि गरख्य कि । व्याज काढी दाम कुण लीयै ॥ ७ ॥ ( मो० )  
घर मांहें हो जो प्रगव्यो निधानतो । देस देसांतर कुण जमें । सोना  
नोहो जो पोरसो सीधतो । धातुरवादी कुण धमें ॥ ८ ॥ ( मो० ) जिण  
कीधो हो जवहर व्यापार कि । मणि हारी मन किम गमें । जिण कीधो  
हो सदा हाल जकम्म कि । ते तूं कारो किम खमें ॥ ९ ॥ ( मो० ) तूं  
साहिव हो मोरो जीवन प्राण कि । जं सेवक प्रभु ताहरो । मुऊ जीवत  
हो आज जनम प्रमाण कि । जव डख जागो माहरो ॥ १० ॥ ( मो० )  
तुऊ मूरति हो देखंता प्राय कि । समवसरण मुऊ संजरे । जिन प्रतिमा  
हो जिन सरिपी जाण कि । मूरख जें सांसो करे ॥ ११ ॥ ( मो० ) तुह  
दरसण हो मुऊ आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरमा । तुह नामें  
हो मोरा पाप पुलाय कि । जिम दिन जगे चोरमा ॥ १२ ॥ ( मो० ) तुह  
दरसण हो मुऊ मन उतरंग कि । मेह आगम जिम मोरमा । तुह नामें



हो सुख संपति आय कि । मन वंछित फल मोरमा ॥ १३ ॥ ( मो० )  
 ऊं मांगुं हो हिव अविहम् प्रेम कि । नित नित करुं निहोरमा । मुऊ दे  
 ज्यो हो स्वामी जव जव सेव कि । चरण न ठोमुं तोरमा ॥ १४ ॥ ( मो० )  
 कलश ॥ इम अमर सर पुर संघ सुख कर मात नंदा नन्दनो । सकलाप शी  
 तल नाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवत्त लंठन वरण कंचन रूप  
 सुंदर सोह ए । एतवन कीधो समय सुंदर सुणित जनमन मोहए ॥ १५ ॥  
 इति श्री शीतल नाथ जिन स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८४ आसातना स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) विलसै रुद्धिनी ॥ जय १ जिण पास जगत्र धणी ।  
 सोजा ताहरी संसार सुणी । आयो ऊं पिण धर आस घणी । करिवा  
 सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन २ जे न पमै जंजालै । उपयोग सुं वैसे  
 जिन आलै । आसातना चउरासी टालै । सास्वता सुख ते हीज संजालै  
 ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेखम जिन हरमैं । कलह करै गाली जूयरमैं । धनुषादि  
 कला सीखण ठूकै । कुरखो तंवोल जखै थूकै ॥ ३ ॥ सुरै वायवमी लघु  
 नीत तणी । संझा कुंगुलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया ।  
 चांदीनी नाखे चांवमिया ॥ ४ ॥ दांतणनैं वमन पीयै कावो । खावे धांणी  
 फुली खावो । सूवै वेसामण विसरावै । अज गज पसुनैं दामण दावै ॥ ५ ॥  
 सिर नासा कान दसन आखै । नख गाल वपुषना मल नाखै । मितणो  
 लेखो करे मंत्रणो । विहचण अपणो करि धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसे पग  
 ऊपरि पग चढियां । थापै ठांणा ठमे ठूढणीयां । सूकवै कप्पम पप्पम व  
 मियां । नासीय ठिपै नृपन्नय पमियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथाज कहै ।  
 इहां संख्या वेतालीस लहै । हथियार घमनें पशु बांधे । तापे नाणों प  
 रखेरांधै ॥ ८ ॥ जांजी निसही जिन गृह पेसै । धरे ठवनें मंमपमें वैसे ।  
 पहिरे वस्त्र अनें पनही । चामर बीजैं मनठाम नही ॥ ९ ॥ तनु तेल सचित्त  
 फल फूल लीये । जूषण तजि आप कुरूप थीये । दरसणथी सिर अंजलि  
 नधरे । इग सामैं उत्तरा संग न करे ॥ १० ॥ ठोगो सिर पेच मोम जो  
 मै । दडिये रमनें वैसे होमै । सयणांसुं जुहार करै मुजरो । करै जंम चेष्टा

कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरै घरणो जगमे जलंठी । सिर गुंथै बांधे पालं  
ठी । पसारे पग पहरे चाखमीयां । पग ऊटक दिरावे डर बमीयां ॥ १२ ॥  
कर दम लूहै मैथुन मंमै । जूआं बलि आँठ तिहां ठंमै । उयाडे गुश्न करे  
बयदां । काढे व्यापार तंणी कयदां ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीरधरे ।  
अंधोले पीवाठाम जरै । दूषण जिन जवनमें एदाख्या । देव बंदण ज्ञाप्यमें  
जे ज्ञाप्या ॥ १४ ॥ सुझानी आवक सगतिठतां । आसातन ठाले बार  
सतां । परमाद वसे कोई थायै । आलोयां पाप सहूजायै ॥ १५ ॥ तंबोल  
नैं जोजन पान जूआ । मलमूत्र सयन स्त्री जोग ऊआ । जूषण पनही  
ए जघन्य दसे । वरज्या जिन मंदिर मांहिक्से ॥ १६ ॥ द्रव्यतनैं जावत  
दोय पूजा । एहनाहिज जेदकस्या दूजा । सेवा प्रजुनी मन सुद्ध करै । वंठि  
त सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ ( कलश ) ॥ ❀ ॥ इम जव्यप्राणी जा  
य आणी विवेकी शुभ वातना । जिन विंव अरचै परी वरजै चोरासी आ  
सातना । ते गोत्र तीर्थ कर उपार्जे नमें जेहनें केवली । उव शाय श्री  
धमसीह बंदै जैन सासन ते बली ॥ १८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीचौरासी आसातना स्तवन ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १४ जिनदेहमान स्तवन लिख्यते ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणमुं रूपन जिनेसर पाय । धनुष पांचसै उंचीकाय । बीजो  
अजित जिन मुक्त मन वसै । मान धनुष साढाचारसे ॥ १ ॥ तीजो सं  
जव सुख दातार । उंची काय धनुष सोच्यार । अजिनंदन जिनसुं मनली  
न । देह धनुषसो साढा तीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ जगवान । धनुष  
तीनसो देहीमान । पदम प्रभू पूरे मन आस । देह धनुष दोयसे पंचास  
॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय । देह प्रमाण धनुषसो दोय । चंद्रा प्र  
भु जिन मुक्त मन वसै । देह प्रमाण धनुष दोढसे ॥ ४ ॥ सुविध नाथ न  
मिये सुविवेक । ऊंच प्रमाण धनुषसो एक । शीतल नाथ नमें जगसवे ।  
देह प्रमाण धनुष जसुनिवे ॥ ५ ॥ श्रीअभियांस नमुं ऊलसी । ऊंच प्रमाण  
धनुष तनु असी । वासपूज्य वारम जिन चंद । मान धनुष सितर सुख  
कंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणकरि गंजीर । साठि धनुष जसुमान सरीर ।

अनन्त ज्ञान अनन्त प्रकास । देह प्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम ध  
रमनाथ जगदीस । मान धनुष जसु पेंतालीस । शांति करण सोलम जिन  
शांति । देह धनुष चालीस सोमंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार ।  
मान धनुष पेंतीस उदार । अर अठारम दीन दयाल । त्रीस धनुष तनु अति  
सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि नाथ जिन उगुणीसमो । मान पचीस धनुष पय  
नमो । बीसम मुनिसुव्रत अरिहंत । बीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥  
इकवीसम नमि जिन राजान । धनुष पनरै तनु रूप निधान । बावीसम श्रीने  
मि जिणंद । दस धनु दीपै जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्रीपारस नाथ ।  
नील वरण सोहै नव हाथ । चौवीसमा जिनवर श्रीवीर । सात हाथ जगना  
थ सरिर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चौवीस । प्रणमें प्रहसम धरीय जगी  
स । तांघर सिद्धि सिद्धि उबरंग । रंगविनें प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति श्रीचौवीस जिन देह मान स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिन आयुप्रमाण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय । लाख चोरासी पूरव आय । बीजो  
अजित जसु सूत्रै साख । आठ बज्जुत्तर पूरवलाख ॥ १ ॥ तीर्थकर संजव  
तीसरो । आठलाख पूरव साठिरो । अग्निनंदन पूरै मन आस । आठला  
ख पूरव पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आठ लाख पूरव  
चालीस । श्रीपदम प्रभूनी ए थितिजाण । लाख तीस पूरव परि  
माण ॥ ३ ॥ श्रीसुपार्श्व लाख पूरव बीस । दस लाख पूरव चंद प्रभु ईस ।  
सुविध नाथ लाख पूरव दोय । इक लाख पूरव शीतल थिति होय ॥ ४ ॥  
आठ वरस चोरासी लाख । श्रीश्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बज्जुत्तर व  
रसां तणो । वासु पुज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आठ लाख साठि  
वरीस । वरस अनंत तणो लाख तीस । लाखवरस दस धरम दिणंद । ला  
ख वरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पंचाणवै । श्रीकुंथु ना  
थ तणीसंजवै । सहस चोरासी अर जिनतणी । मल्लि सहस पंचावन  
जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । मुनिसुव्रत परमान उदार । बी  
स सहस नमिजिन थिति जणी । वरस सहस नेमीसर तणी ॥ ८ ॥ पास

वरस एकसो सुख कंद । वरस वज्रतर वीर जिनंद । कृपण तणा तेरै  
 अवतार । सात चंद्र संतीसर वार ॥ ए ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस ।  
 पार्श्व वीर दश सत्तावीस । त्रिजं त्रिजं जव सतरै जगदीस । सगला जव  
 एकसो अमतीस ॥ १० ॥ सिद्धि लही सज्जनै धन धन । गणधर चवदे  
 सै वावन्न । सज्जनै मुनि लख अजवीस । सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥  
 लाख चमाल ठ्यांल हजार । षडधिक सज्ज साधवी सोच्यार । श्रावक ला  
 ख पचावन धुरै । अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविका  
 सुजगीस । लाख पांच सहस अमतीस । ए संध चतुर्विध सज्ज जिन त  
 णै । रंगविनै प्रणमै हित घणै ॥ १३ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति श्रीचोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ ६३ शिलाका पुरुष स्तवन लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( ढाल १ ) धरम महारथ सारथि सारं । एचाल ॥ ✽ ॥ सदगुरु  
 चरणकमल मनधारं । त्रैसठ उत्तम नरअधिकारं । पन्नणसु श्रुत अनुसारं ।  
 जेहने नाम लियै निसतारं । आपण सफलजुवै अवतारं । पामी जै जव  
 पारं ॥ १ ॥ कृपण अजित संचव अजिनंदन । सुमति पदम प्रचुनयना नंदन  
 सत्तम तेम सुपास । चंद्र प्रचुनै सुविध सीतल जिन । श्रेयांस वासपूज्य  
 जिण सुरमणि । विमलगुणै करवास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्रीशान्ति जिनेसर  
 कुंथुनाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनि सुव्रत नमि नेमि । पार्श्व वीर जिन चोवीस  
 जगवत्तल जगगुरु जगदीस । प्रणमीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥ ( ढाल २ ) प्रथ  
 म सुपनगज निरख्यो एचाल ॥ ✽ ॥ प्रथम भरतनर इंद्र । बीजो सगरसु  
 रिंद । मधवा तीजो उदार । चौथो सनत्कुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांति चक्रीस ।  
 ठगो कुंथु गणीस । सातमो अर नरनाथ । आठम संचूमि सनाथ ॥ ५ ॥ न  
 वमो पदमनरेस । हरपेण दसम कहेस । इग्यारम जय ताम । बारम ब्रह्म  
 दत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर वार । खेत्रचरत सिणगार । मधवा सनत  
 कुमार । पुहता स्वरग मऊार ॥ ७ ॥ सुचुम अने ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय  
 निरत्त । आठ थया सिवगामी । तेप्रणमु सिरनामी ॥ ८ ॥ (ढाल ३) ॥ ✽ ॥  
 मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥ ✽ ॥ पहिलो त्रिपटि जाए । विप्रष्ट दूसरो

तीजो स्वयं प्रभु जाणीयै ए । पुरुषोत्तम ए चोथो । पंचम परगमो । पुरुष  
 सिंह प्रमाणीयै ए ॥ ए ॥ ठो पुरुष पुंमरीक । दत्त तिम सातमो । लक्ष्म  
 ए नामें आठमोए । नवमो कृष्णनरैस । एनव केसवा । प्रहज्जठी ए पिण नमुंए  
 ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव । नारकी सातमी । आगला पंच ठी  
 गयाए । सातमो पंचम नैर । चोथी आठमो । नवमो तीजी नारीयाए ॥ ११ ॥  
 अचल विजयनें नद्र । सुप्रभु सुदर्शन । आनंद नंदन सुज्जमतीए । रामचंद्र  
 बलनद्र । बलदेव एनव । आठ थया तिहां सिवगती ए ॥ १२ ॥ बलनद्र  
 ब्रह्म देवलोक । काल नसप्पणी । जास्यै सिवरुण सासणेंए । अथवा ति  
 पुलाक नाम । तीर्थकर होस्यै । चवदमो इम बहुश्रुत नणेंए ॥ १३ ॥  
 (ढाल ) कुमर पणें प्रभु रहतां काल सुखे गमेंए एचाल ॥ ॥ ॥ अस्वयंत्रिनें  
 तारक मेरुक बलि मधु तिसा ए । निशुंन बलय प्रह्लाद रावण जरासिंधु  
 जिसा ए । एनव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण जाव जि  
 णेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥ ( ढाल ५ ) सफल संसारनी ॥ ॥ ॥ सां  
 तिनें कुंथु अरि एहज्जव एकही । चक्रधर तीर्थकर दोय पदवी लही । बीर  
 वासुदेव अरिहंत नव जू जूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुण सठ थया  
 ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नवणुण ले  
 खे ठता । तीन चक्रधर तणा मिलिय बारै टल्या । एम त्रेसठना तातं इक  
 वन मिट्या ॥ १६ ॥ तीन चक्र व्रत तणी टाल दीजै जिसै । माय सज्जनी  
 थई साठ लेखै इसै । एह नर रयणनो ध्यान नित जे धरै । तेह सुर पद लही  
 मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥ ( कलश ) इम थुण्या तीर्थकर चक्कीसर वासु  
 देव बलदेव ए । प्रति वासुदेव सुसेवजेहनी करै सुर नर सेव ए । त्रेसठ  
 सिलाका पुरुष उत्तम जगें जयवंता सदा । प्रहसमें तेहना चरण पंकज नमें  
 मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सिलाका पुरुष स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अजितशांतिजिनस्तवन लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ मंगल कमला कंदए । सुखसागर पूनिमचंदए । जगगुरुं अजि  
 य जिणंदए । शांतीसर नयणानंदए ॥ १ ॥ विज्जं जिनवर प्रणमेवए । वि  
 ज्जं गुणगाइस संखेवए । पुण्य जंमार नरेसए । मानवज्जव सफल करेसए

॥ २ ॥ कोमहि लाखपचासए । सागर जिणसासण आसए । रिसहजिणे  
सर वंसए । उवझाय सरोवर हंसए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजीयोए ।  
राजा जितशत्रु जग गाजीयोए । विजया तसुवर नारए । विजुं रमयति  
पासासारए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतारए । तिणराय मनाव्योहारए । उयरव  
स्यो दसमासए । प्रभु पूरी जणणी आसए ॥ ५ ॥ विजुं जण मन आणंदी  
योए । सुतनाम अजिअजिण तो दीयोए । तिजुअण सयल उठाहए । क्रम  
क्रम बाधै जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारस तणीए । गति सुललित नि  
जगति निरजणीए । मलपति चालै गैलए । जाणै नयण अमीरस रेलए  
॥ ७ ॥ अवरन समो संसारए । बलि न्यान विवेक विचारए । गुणदेखी गज  
गहगह्योए । लंठण मिसि पगलागी रस्योए ॥ ८ ॥ जोवनवय जव आवीयोए ।  
तव वररमणी परिणावियोए । पीयसाधै सब काजए । प्रभु पालै पुढवीराजए  
॥ ९ ॥ हिव हथणानुर ठामए । विश्वसेण नरेसर नामए । राणी अचिरा देवए ।  
मनहर सुखमाणै वेवए ॥ १० ॥ चवदह सुपनै परवस्योए । अचिरा उये सुत  
अवतस्योए । मानवदेव बखांणीयोए । चक्रीसर जिणवर जाणीयोए ॥ ११ ॥  
देस नयर झुइ संतए । तिणनाम दीयो सिरि शांतए । जिणगुण कुण जाणै  
कहीए । तिजुं चुवणे तसु उपमानहीए ॥ १२ ॥ नयण सल्लणो हिरणलोए ।  
वनसिंधे बीहै एकलोए । नयण समाधि निरोधए । इणनयणे नारिविरोधए  
॥ १३ ॥ गीतही राग सुरंगए । पिण पन्नणै लोक कुरंगए । तो उलम्यो  
शशि संकए । तिणपाम्यो नाम कलंकए ॥ १४ ॥ इणपर मृग अति खल  
जल्योए । नयनंजण स्वामी सांजल्योए । आणंदीयो मनआपणोए । पा  
यसेवै मिस लंठण तणोए ॥ १५ ॥ लीलापति परणै घणीए । नव नवीय कु  
मरि रायां तणीए । वल ठल अरियण जोगवैए । पीयराय जलीपर जोगवैए  
॥ १६ ॥ कुमरतणै मंमद समेंए । पंचाससहस वरसां गमेंए । तौतेजै दिणयर  
जिसोए । ऊपनो चक्रयण तिसोए ॥ १७ ॥ साधी जरह ठहखंमए । वरतावी  
आंण अखंमए । चवदरयण नवनिहि सहीए । बसु सोलसहस जकखै अही  
ए ॥ १८ ॥ सहसवज्जतर पुरवराए । वत्तीस मौमवज्ज नरवराए । पायक गामे  
कोमए । ठिन्नवै नमै वेकरजोमए ॥ १९ ॥ हय गयरह वर जूजुवाए । लखचौरा  
सी मंदिर झुवाए । लाख त्रि वाजित्र धम धमेए । वत्तीस सहस नाटक रमेंए ।

॥२०॥ रूपजिस्ती सुरसुंदरीए । लक्षण लावन्य लीला जरीए । जंगम सौ  
हग देहरीए । इसी चौसठसहस अंतेजरीए ॥ २१ ॥ अवरज सिद्धि प्रकार  
ए । मणि कंचण रयण जंमारए । ते कहिवा कुण जाणए । वपु वपुरे पुण्य  
प्रमाणए ॥ २२ ॥ इम चक्रीसर पंचमोए । चौथो दूसमशूशम समोए ।  
वरस सहस पचवीसए । सबपूरी मनह जगीसए ॥ २३ ॥ इणपरि विजुं  
तिर्थंकराए । चिरपाली राज विविहपराए । जाणी अवसर सारए । विजुं  
लीधौ संजमनारए ॥ २४ ॥ विजुं खमदम धीरम धरीए । विजुं मोह मयण  
मद परहरीए । विजुं जिणऊण समाणए । विजुं पाम्यो केवलनाणए  
॥ २५ ॥ विजुं देवहि कोमहि महिय । विजुं चौतीसे अतिसय सहिय ।  
समवसरण विजुंठाणए । विजुं जोयणवांणि वखांणए ॥ २६ ॥ नाचे रण  
कत नेजरीए । विजुं आगलि इंद्र अंतेजरीए । टिग मिग जोवै जग सऊए  
रंगहि गुणगावै सुरवऊए ॥ २७ ॥ विजुंसिर ठव चमर विमल । विजुं पगतल  
नव सोवन कमल । विहु जिन तणें विहारए । नविरोग नसोग नमारि  
॥ २८ ॥ विजुं नवयार नुवणजरीए । विजुं सिद्धि रमणि सयंवरीए । विजुं  
जंजी नवकंदए । विजुं नदयो परमाणंदए ॥ २९ ॥ इम बीजोनें सोलमोए ।  
जांणे चिंतामणि सुरतरुसमोए । थुणिअ तिसंऊ विहाणए । तिहां इह  
परिभव नवि हाणए ॥ ३० ॥ विजुं ननुव मंगलकरण । विजुं संघसयल  
डुरियहरण । विजुं वरकमल वयण नयण । विजुं श्री जिनराय नुवण  
रयण ॥ ३१ ॥ इमजगतै जोलिमतणीए । श्रीअजिय शांति जिण थुड  
जणीए । सरण विजुं जिणपायए । सिरि मेरुनंदन नवऊायए ॥ ३२ ॥  
इति श्री अजित शांतिजिन वृक्षस्तवन संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुहपत्ती पमिलेहण स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल कपूर ऊवे अति ऊजलोरे एचाल ) ॥ ❀ ॥ वरधमान  
जिनवर तणाजी । चरण नमुं चितलाय । ग्यान क्रिया जिण उपदिसै जी ।  
शिव सुखतणो उपाय ॥ १ ॥ ( नविक जन धर श्रीजिन उपदेस । बूटे कर्म  
कलेस न० ) ॥ पमिलेहण मुहपति तणीजी । नाबीठै पचवीस । तिहां  
एनाव विचारीयै जी । इम नावै जगदीस ॥ २ ॥ ( न० ) प्रथम बेपास

बिलोकिये जी । सूत्र अरथनी दृष्टि । एपमिलेहण दृष्टिनी जी । करे ध  
 र्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ (न०) समकित मिथ्या मिश्रनीजी । मोहनी तीन  
 नो त्याग । कामराग स्नेहराग नें जी । तज बलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
 (न०) सीप बधू तक गुरु थकी जी । वाम हाथ करनाउ । नव अखो  
 मा आदरो जी । नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ (न०) देव तत्व गुरु तत्व  
 सुं जी । धर्म तत्व गृह सार । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी । तीन तणो परिहार  
 ॥ ६ ॥ (न०) ग्यान दरसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार ।  
 तजो विराधन तीन एजी । एह अरथ अवधार ॥ ७ ॥ (न०) मन वच  
 कायानी सदाजी । गुपति गृही जे सुद्ध । परिहरीये बलि जाणें जी ।  
 तीने दंभ विसुद्ध ॥ ८ ॥ (न०) पमिलेहण पचवीसए जी । मुह पत्ती  
 नी सार । द्वि पमिलेहण अंगनी जी । ते पिण चतुर विचार ॥ ९ ॥  
 (न०) हास्य अरति रति दोयनं जी । सुद्ध करो वाम बांह । तजि नय  
 शोक डगंठना जी । दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ (न०) धुरली ले  
 श्या तीन एजी । ते शिर थी करि दूर । सिद्धि रस शाता गारवो जी । करि  
 मुख थी चकचूर ॥ ११ ॥ (न०) काढ सत्य तीन उर थकी जी । माया  
 नियाण मिथ्यात । चार कपाय वे बगलथीजी । क्रोधादिक करिघात ॥ १२ ॥  
 (न०) तज खटकाय विराधना जी । चरण विणहे सुद्ध होय । ए पमिले  
 हण अंगनी जी । पचवीसे तुं जोय ॥ १३ ॥ (न०) इम पडिलेहण जे  
 करै जी । धरमन ग्यान विवेक । सकल करम दूरै करै जी । पामें सुक्ख  
 अनेक ॥ १४ ॥ (न० कलश) इम धीरजिणवर तणा मुख थी अरथ गण  
 धर सांजली । कह्ये सूत्र वाणी मन सुहाणी सुणो नवियण मन रली । उव  
 आय वर सिरि लज्जकीरति मुख थकी ए संग्रही । मुह पत्ती पमिलेहण  
 तणी विधि लज्जि बल्लन गणि कही ॥ १५ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति श्रीमुह पत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥ १४ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ सिद्धगिरी स्तवन लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ श्री विमलाचल शिर तिलो । आदीसर अरिहंत । जुगला धर  
 म निवारणो । नयनंजण जगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुज मन कलट अति





मु० ॥ जवनाटक नितकरतो नवनव । ऊं तुऊ आगलि नाच्योरे ॥ ज० ॥  
 समरथ साहिव सुरतरु सरिपो । निरखी तुऊने जाच्योरे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥  
 जो मुऊ नाटक देखी रीऊचा । तो मुऊ बंठित दीजैरे ॥ ज० ॥ जो नविरी  
 ऊचा तो मुऊ जापो । बलि नाटक नवि कीजैरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच  
 धरि हुं सेवा सारुं । तुं डखडा नविकापैरे ॥ ज० ॥ दातासेती सूंचलेरो ।  
 वहिलो ऊतर आपैरे ॥ ज० ८ मु० ॥ तुऊ सरिषा साहिव पिण महारो ।  
 जो नवि कारज सारोरे ॥ ज० ॥ तोमुऊ कर्म तणी गति अवली । दोस  
 नकोई तुमारोरे ॥ ज० ९ मु० ॥ दीनदयाल दयाकरि दीजै । सुध समकि  
 त सहिनाणीरि ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना बंठित पूरो । तेहीजगुण मणिखाणी  
 रे ॥ ज० १० मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै । ज्येष्ठसुदी सोमवारोरे ॥ ज० ॥  
 लालचंद प्रतिपददिन नेत्या । वीकानेर मजारोरे ॥ ज० ११ मु० ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति श्री कृपन् देवजी स्तवनं ॥ १६ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्री महावीर वीनती लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ वीर सुणो मोरी वीनती । कर जोमीहो कऊं मननी बात । बाल  
 कनी परिवीनवुं । मोरा सामीहो तूं चिनुवन तात ॥ १ ॥ वी० ॥ तुम दरसण विण  
 ऊं नच्यो । जव मांहेंहो सामी समुद्र मजार । डख अनंता में सखा । ते  
 कहितांहो किमआवै पार ॥ २ ॥ वी० ॥ पर उपगारी तुंप्रनु । डखजाजेंहो जग  
 दीनदयाल । तिणतोरै चरणें ऊं आवीयो । सामीमुऊनंहो निज नयण निहा  
 ल ॥ ३ ॥ वी० ॥ अपराधी पिण ऊघखा । तैं कीधीहो करुणा मोरासाम ।  
 ऊं तो परम जगत ताहरो । तिणतारोहो नहीं ढीलनो काम ॥ ४ ॥ वी० ॥  
 शूलपाणि प्रति वूऊन्या । जिण कीधाहो तुऊनं उपसर्ग । मंक दीयो चंमको  
 सीये । तैं दीधोहो तसु आठमोसर्ग । ५ ॥ वी० ॥ गोशालो गुनही घणुं ।  
 जिण बोल्याहो तोरा अवरणवाद । तेवलतो तैं राखीयो । सीतलेस्याहो मूं  
 की सुप्रसाद ॥ ६ ॥ वी० ॥ ए कुणठे इंद्रजालीयो । इम कहितां हो आ  
 यो तुमतीर । ते गोतमनं तैं कीयो । पोतानोहो प्रभुतानो बजीर ॥ ७ ॥  
 वी० ॥ वचन ऊत्याप्या ताह्रा । जे ऊगड्योहो तुऊसाथ जमाळ । तेहनं  
 पिण पनैरे जवे । सिव गामीहो तैं कीयो रुपाल ॥ ८ ॥ वी० ॥ अमत्तो रिपि

जेरस्यो । जल मांहेंहो बांधी माटीनी पाल । तिरती मूंकी काचली । तें तास्यो  
 हो तेहनें ततकाल ॥ ए ॥ वी० ॥ मेवकुमर शिषि दूहव्यो । चितचूकोहो चारि  
 तथी अपार । एकावतारी तेहनें । तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ १० ॥ वी० ॥  
 वारवरस वेस्याघरे । रस्यो मुंकीहो संयमनोजार । नंदखेण पिण ऊधस्यो ।  
 सुरपदवीहो दीधी अतिसार ॥ ११ ॥ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी । ग्र  
 हवासैहो बसिया वरस चौवीस । ते पिण आद्रकुमारनें । तें तास्यो  
 हो तोरी एह जगीस ॥ १२ ॥ वी० ॥ राघ श्रेणक राणी चेलणा ।  
 रूप देखीहो चित चूका जेह । समवसरण साधु साधवी । तें कीधा  
 हो आराधिक तेह ॥ १३ ॥ वी० ॥ किरत नही नही आखमी । नही  
 पोसोहो नही आदर दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधोहो सामी आ  
 पसरीख ॥ १४ ॥ वी० ॥ इम अनेक तें ऊधस्या । कऊं तोराहो केता  
 अवदात । सारकरो हिवमाहरी । मनमांहेंहो आणो मोरमी वात ॥ १५ ॥  
 वी० ॥ सूधो संजम नविपलै । नही तेहवोहो मुऊ दरसण नाण । पिण  
 आधारवै एतलो । इक तोरोहो धरुं निश्चूल ध्यान ॥ १६ ॥ वी० ॥ मेह  
 महीतल वरसतो । नविजोवैहो सम विखमी ठाम । गरुआ सहिजे गुण क  
 रे । स्वामी सारो हो मोरा वंठित काम ॥ १७ ॥ वी० ॥ तुम नामें सुख संपदा ।  
 तुम नामें हो डख जायै दूर । तुम नामें वंठित फलै । तुम नामें हो मुऊ  
 आणंद पूर ॥ १८ ॥ वी० ॥ ( कलश ) ॥ ❀ ॥ इम नगर जेशलमेर मंम  
 ण तीर्थकर चौवीसमो । सासना धीसर सिंह लंठन सेवतां सुरतरु समो ।  
 जिणचंद त्रिसला मात नंदन सकल चंद कला निलो । वाचना चारज स  
 मय सुंदर संथुण्यो त्रिचुवन तिलो ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री महावीर जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौवीस दंभक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल आदर जीव ह्मागुण आदर ) एचाल ॥ ❀ ॥ पूर म  
 नोरथ पासजिनेसर । एहकरुं अरदासजी । तारण तरण विरुद तुऊ सांज  
 लि । आयो ऊं धरि आस जी ॥ १ ॥ ( पू० ) इण संसार समुद्र अथागै  
 जमियो जवजल मांहि जी । गिल गिचिया जिम आयो गिडतो । साहिव

हाथे साहिजी ॥ २ ॥ ( पू० ) तुं ग्यानीतो पिण तुऊ आगै । वीतक कहीयै  
 वात जी । चौबीसे दंमक ऊं नमियो । वरणुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ ( पू० )  
 साते नरक तणो इक दंमक । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें  
 तीन विकलेंद्री । उगणीस गिणती आणजी ॥ ४ ॥ ( पू० ) पंचेंद्री तिर्यंच  
 नें मानव । एह थया इकबीस जी । व्यंतर ज्योतिषीनं वेमानिक । इम दंम  
 क चौबीस जी ॥ ५ ॥ ( पू० ) पंचेंद्री तिर्यंच अने नर । परयाता जे हो  
 य जी । एचौविह देवां मे उपजै । इम देवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ ( पू० )  
 असंख्यात आऊखै नर तिरि । निहचै देवज थायजी । निज आऊखे सम  
 के जुठै । पिण अधिकै नवि जायजी ॥ ७ ॥ ( पू० ) नवनपती के व्यंतर  
 ताई । समूठिम तिर्यंच जी । सरग आठमा ताई पुहचै । गरजज सुकृत सं  
 चजी ॥ ८ ॥ ( पू० ) आऊ संख्यातै जे गरजज । नर तिर्यंच विवेक  
 जी । वादर पृथवीनं बलिपाणी । बनस्पती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ ( पू० ) परि  
 याता इण पांचे ठामें । आवी उपजै देवजी । इण पांचामाहें पिण आगै ।  
 अधिकाई कऊं हेवजी ॥ १० ॥ ( पू० ) तीजा सरग थकी मांमी सुर ।  
 एकेंद्री नवि थाय जी । अठम थी ऊपरिला सगला । मानव मांहै जायजी  
 ॥ ११ ॥ ॥ ( पू० ) ( ढाल २ आज निहेज्योरे दीसै नाहलोएचाल । )  
 ॥ ॥ नरक तणी गति आगति इण परै । जीवनमें संसार । दोय ग  
 तिनें दोय आगति जाणीयै । बलीय विशेष विचार ॥ १२ ॥ ( न० ) संख्या  
 तै आऊ परयापता । पंचेंद्री तिर्यंच । तिम हीज मनुष्य एहिज वे नरक  
 में । जायै पाप प्रपंच ॥ १३ ॥ ( न० ) प्रथम नरक लगि जाय असन्नि  
 यो । गोहं नकुल तिम वीय । गृध्र प्रमुख पंखी जीजी लगे । सींह प्रमुख चो  
 थिय ॥ १४ ॥ ( न० ) पंचमी नरकै सीमा सापणी । ठी लगि स्त्री जाय ।  
 सातमीये माणस के माठलो । ऊपजै गरजज आय ॥ १५ ॥ ( न० ) न  
 रक थकी आवै विऊं दंमकै । तिर्यंच के नर थाय । ते पिण गरजज नें  
 परयापता । संख्या ती जसुआय ॥ १६ ॥ ( न० ) नारकियानें नरकथी  
 नीसखां । जे फल प्रापत होय । उत्तुष्टे जांगै करि तेकऊं । पिण निश्चै  
 नही कोय ॥ १७ ॥ ( न० ) प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति जुवै । बीजी  
 हरि बलदेव । तीजी लगि तीर्थकर पद लहै । चौथी केवल हेव ॥ १८ ॥

( न० ) पंचमी नरकनो सरव विरति लहै । ठी देस विरत्त । सातमी न  
रक नो समकित दीज लहै । न ऊँवै अधिक निमित्त ॥ १९ ॥ ( न० )  
( ढाल ३ ॥ ॐ ॥ ( करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ) ए चाल ॥ ॐ ॥  
मानव गति विण सुगति ऊँवै नहीरे । एहनो इम अधिकार । आऊ संख्या  
तै नर सऊ दंमकैरे । आवी लहै अवतार ॥ २० ॥ ( मा० ) तेऊ वाऊ दंमक  
वेतजीरे । बीजा जे बाबीस । तिहांथी आया थायै मानवीरे । सुख दुख कर्मस  
रीस ॥ २१ ॥ ( मा० ) नर तिरयंच असंखी आउखैरे । सातमी नरकना  
तेम । तिहांथी मरनें मनुष्य ऊँवै नही रे । अरिहंत ज्ञाप्यो एम ॥ २२ ॥  
( मा० ) वासुदेव बल देव तथा बलीरे । चक्रवर्तिनें अरिहंत । सरग नर  
गना आया ए ऊँवैरे । नर तिरथी न ऊँवत ॥ २३ ॥ ( मा० ) चौविह दे  
व थकी चवि ऊपजैरे । चक्रवर्ति बल देव । वासुदेव तीर्थकर ए ऊँवै रे ।  
वैमानक थकी वेव ॥ २४ ॥ ( मा० ) ( ढाल ४ नाञ्जि अने मरुदेवा ) ए चाल  
॥ ॐ ॥ हिव तिरयंच तणी गति आगति कहीयै अशेष । जीवजन्में इण  
परजव मांहें करम विशेष । आऊ संख्याती जे नर तिरयंच विचार । ते स  
गला तिरयंचा मांहें लहै अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचां मांहे आवै  
नारक देव । ते कल्या पहिली तिण कारण नकऊं हेव । पंचेंद्री तिरयंच  
संख्यातैं आऊखै जेह । ते मरी चिऊं गतिमां जावै इहां नही संदेह ॥ २६ ॥  
थावर पांच तीने विकलेंद्री आठे कहावै । तिहांथी आउसंख्याता नर ति  
रयंचमें आवै । विकल चवी लहै सरव विरति विण सुगति न पावै । तेऊ  
वाऊ थी आयो तेहनें समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जी  
व संसार । पृथ्वी आउ वनस्पती मांहि लहै अवतार । एतीने इहांथी चवि  
आवै दसे ठामें । थावर विकल तिरी नर मांहे उतपत पामें ॥ २८ ॥ पृथ  
वी काय आदि देई दस दंमके एह । तेऊ वाऊ मांहे आवी उपजै तेह । म  
नुष्य विना नवमांहे तेऊ वाऊ वे जावै । विकलेंद्री ते दसमांहि जावै पूठा  
ही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत । वनस्पती मां  
हें तिहां रहीयो काल अनंत । पुढवी पाणी अगनि अनेंचोथो बलि वाय ।  
काल चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ वेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री  
मजारै । संख्याता वरसां लगै जमियो करम प्रकारै । सात आठ जव लागि

तां नर तिरयंचमें रहियो । हिव मानव जव लहिनें साधुनो वेपमें रहियो  
॥ ३१ ॥ राग वेप ठूटे नही किम हूवे ठूटकवार । पिण्ठें महारे मनसुध ताह  
रो एक आधार । तारण तरण में त्रिकरण सुधै अरिहंत लाधो । हिव संसा  
र घणो जमिवो तो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तुं मन वंजित पूरण आपदाचू  
रण सामी । ताहरी सेवलहीतो में नवनिध सिध पामी । अवरन कांइ इत्तं इण  
जव तुंहीज देव । सूधै मन एक होज्यो जव जव ताहरीसेव ॥ ३३ ॥ ( क  
लश ) ॥ इम सकल सुखकरनगर जेशल मेर महिमा दिन दिनें । संवत्तसतैरे  
उगणतीसै दिवस दीवालीतणें । गुण विमलचंद समान वाचक विजैहरप  
सुसीसए । श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीसए ॥ ३४ ॥ ॥ ✽ ॥  
इति श्री चौबीस दंमक स्तवनम् ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

## ॥ इरियावही मित्रामि डुकढसंख्या स्तवन लि० ॥

॥ ✽ ॥ प्रभु प्रणमुरे पास जिणैसर थंनणो एहनी ॥ ✽ ॥ पद पंक  
ज रे प्रणमी वीरजिनंदना । त्रिकरण सुधरे करि मुनिवर पय वंदना । ओम  
तैरे पमिकमी जिम इरियावही । श्रीवीर नीरे वाणी तहतकरि सरदही ।  
( ३० ) सरदही वाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मित्रामि डुक  
ढ तणी संख्या कहिसुं जिम कही केवली । भू दग जलण तिम बाउ वण  
सइ विगल मण इंद्री तणी । करतां विराहण करम वंध्या दूर ते करिवा न  
णी ॥ १ ॥ ( चाल ) पुढवी दगरे बाऊ तेऊ वणस्सइ । पण थावरे वादर  
सुहम दसेथई । प्रत्येकजरे वणस्सइ इग्यारह थया । वावीसेरे पऊत्तग अ  
पऊत्तया । ( उल्लाओ ) पऊत्त अपऊत्तग वखाएया विगलतिय ठहचालए ।  
जल थल खचर जुयंग डइपण इंद्रिय तिरि अमआलए । घम्मादि साते न  
रक पुढवी नारकी तिहां सात जे । ते चवद जेदै करी जाणो पऊत्तय अ  
पजत्त जे ॥ २ ॥ ( चाल ) पनरह विधरे सुर गिण परमाहम्मिया । किल  
विखियारे त्रिविध करम ते निम्मिया । जंजिय दसरे नव लोगांतिक जाणिये ।  
सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणिये । ( उल्लाओ ) वखाणिये दसविध जुवन  
पतिना तार रवि शशि रिपि गहा । चर थिर दसेविध जोइसी सुर वखाएया  
जिणवर जहा । वारह विमानक पण अणुत्तर नवग्रीवैके नव जएया । पऊत्त

अपजत्तग अठाणुं अधिक सतसंख्यागिएया ॥३॥ (ढाल १) मेघ आगम सही  
ए० ॥ पंचजरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए । खेत्र ए पनरह  
करम भूमि जाणीयै असि कसि मसिहि आजीविकाए । हेमवत खेत्र  
वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरएयवत सहीए । मेरुपिण पाखती चारि २ खेत्र  
दस कुरु अकरम भूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि ल  
वण समुद्रमांहि विस्तरिए । सात १ अंतर दोय पासै दीप ठप्पन्न अन्तर  
धरीए । दोइसै जेद डइ आगला जांणि मणुय पज्जत्त अपज्जत्तयाए । एक  
सौ एक समुच्चिम जेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥ (ढाल ३) ॥  
( हिव जनम्या जगगुरु० ) ए० ॥ पणसय त्रेसठिविध जीवसहू ठे एह  
अनिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह । पणसहस ठसै वलि त्रीस अ  
धिकते जाणि । ते रागै दोसै डगुणा करी बखाण ॥ ६ ॥ ऊइ सहस इ  
ग्यारह डइसय साठि प्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हितनर आण ।  
मनवच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक । तेतीस सहस सत सातअसी  
निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा किछ । इकलक्ख  
सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध । अतीत अनागत वर्तमान बलिकाल ।  
जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संजाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस चार  
वेसै अधिक तेथाय । अरिहंत प्रमुख ठह साखै ठगुणा जाय । इम लाख  
अठारह वलि सहस चउवीस । इकसो बीसोत्तर ऊइ संख्या निसदीस  
॥ ९ ॥ (ढाल ४) चोपईनी ॥३॥ इण परि मिञ्जामि उक्कमंदेई । जविक  
तस्या जवजल निधिकेई । तरै अठै वलि आगलि तरिसी । निरमल केवल  
लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल । न्हाण करै आतमक  
रि निरमल । सैं मुखजाषै वीर जिणोसर । सूत्रकरी गूथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥  
इम पम्किमी मुनिवर अइमत्तो । वीरसीस केवल पदपत्तो । त्रिकरण सुध  
तसु पय प्रणमी जै । मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥ ( कलश )  
॥३॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो । तियलोय  
सामी सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो । उवजाय लक्ष्मी कीर्त्ति सीसै जैनवा  
णी मन धरी । गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुण्यो जावै करी ॥ १३ ॥  
इति इरियावही मिञ्जामि उक्कम संख्या स्तवनं ॥३॥ ॥३॥

॥ ✽ ॥ अथ पंचसमवाय स्तवन लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सिद्धार्थ सुतवन्दिये । जगदीपक जिनराज । वस्तुजाव सब जा  
णिये । जिन आगम थी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथी संपजे । सकल वस्तु  
विख्यात । सतजंगी रचना बिना । बंधन वैसे बात ॥ २ ॥ वाद बदे नय जूजु  
आ । आप आपणें ठाम । पूरण वस्तु विचारतां । कोई न आवे काम ॥ ३ ॥  
अंध प्ररूपे एहगज । अही अवयव एकेक । दृष्टिबंत लहै पूर्णगज । अ  
वयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकल नये करी । जुगत २ सुव बोध ।  
धन जिनसासन जगजयो । तिहां नही कोई विरोध ॥ ५ ॥ ( ढाल १ आ  
साउरी राग ॥ ) श्रीजिन सासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धसरूपरे ।  
नयपकांत मिथ्यावनिवारण । अकल अचंग अनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० कोई  
कहे एकाल तणें बस । सकल जगत गत होयरे । काले उपजे विणसे का  
ले । अवगन कारन कोयरे ॥ ७ ॥ श्री० काले गर्ज धरे जगवनिता । काले  
जनमें पूतरे । काले बोलै काले चाले । काले जाले घर सूतरे ॥ ८ श्री० ॥  
काले दूध थकी दही थायै । काले फल परिपाकरे । विविध पदार्थ का  
ल उपायै । अंतकरे बेवाकरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चन्नीसे वारचक्रयै ।  
वासुदेव बलवतरे । काले कविलत कोई नदीसे । जसुकरता सुर सेवरे  
॥ १० ॥ श्री० ॥ उत्सर्पणि अवसर्पणि आरा । ठे ठे जूजूयें जांतरे । पटरितु  
काल विशेष विचारो । जिनजिन दिन रातरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले बाल  
बिलास मनो हर । योवन कालांकेशरे । बुद्धपणें जयबलि २ डवल । सकति  
नही लवलेसरे ॥ १२ ॥ श्री० ॥ ( ढाल २ गिरु आ गुण श्रीवीरजी ए चाल ) ॥  
॥ ✽ ॥ तव सुजाव वादी वदेजी । कालकिसुं करै रंक । वस्तु सुजावे नीपजे  
जी । विणसे तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ ( विषेकी जुओ २ वस्तु सु  
जाव ) ॥ ठे योग जोवनवती जी । बांजणि न जणें बाल । मूत्रनही  
महिला मुखेजी । फरतल जगें न बाल ॥ १४ ॥ वि० ॥ विणस जाव  
नवि संपजे जी । किमह पदार्थकोय । अंव नलागे नीवमेजी । वागवसंते  
जोय ॥ १५ ॥ वि० ॥ मोर पीठ कुणचीतरै जी । कुण करे संध्या रंग । अंगवि  
विध सविजीवनाजी । सुंदर नयन कुरंग ॥ १६ ॥ वि० ॥ कांठा चोरबबूल  
नाजी । कुणें अणियाला कीध । रूप रंग गुण जूजूआजी । तस फल फू



ल प्रसिद्ध ॥ १७ ॥ वि० ॥ विसहर मस्तके नितवसैजी । मणिहरै विस तत  
 काल । परवत धिर चल वायरोजी । नरध अगननी जाल ॥ १८ ॥ वि० ॥  
 मन्त्र तुंव जलमां तरैजी । बूमै काग पाहाण । पंख जाति गयणें फिरे जी ।  
 इणपरै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ वि० ॥ वाय सूठ थी उपसमें जी । हरडै  
 करै विरेच । सीऊँनहि कणकांगमो जी । सकल सुजाव अनेक ॥ २० ॥  
 वि० ॥ देश विशेषै काठनोजी । जुयमां थायै पाखाण । संख अस्थिनो नी  
 पजै जी । क्षेत्र सजाव प्रमाण ॥ २१ ॥ वि० ॥ रवि तातो शशि सीयलो जी ।  
 जव्या दिक बज्र जाव । ठए द्रव्य आपापणा जी । न तजै कोइ सुजाव  
 ॥ २२ ॥ वि० ॥ ( ढाल ३ ) कपूर ऊँवै अति ऊजलो रे एचाल ॥ काल  
 किसुं करै वापमोरे । वस्तु सुजाव अकज्ज । जो नहोइ जवतव्यता जी ।  
 तो किम सीऊँ कज्ज रे ॥ २३ ॥ ( प्राणी मकरो मनजंजाल ) ॥ एतो जा  
 वी जाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ जलधितरै जंगल फिरै जी । कोमि यतन करै  
 कोय । अणजावी होवै नही जी । जावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥  
 आँवै मोर वसंतमां जी । मालै कोई लाख । खस्या केई खांखटी जी । केई  
 आँवा केई साख रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ बांजल जिम जवतव्यता जी । जि  
 ए २ दिशे नजाय । परवस मन माणस तणो जी । तृण जिम पूठै धायरे  
 ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियत वसै विण चिंतव्युं जी । आवी मिलै ततकाल ।  
 वरसां सोनुं चिंतव्यो जी । नियम करै विसराल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो  
 चक्रि सुन्नूमि तेजी । समुद्र पड्यो विकराल । ब्रह्मदत्त चक्री तणा जी ।  
 नयन हरै गोवाल रे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयल करै जी । किम रा  
 खीसरे प्राण । आहेमी शर ताकीयो जी । ऊपर जमें सीचाणरे ॥ २९ ॥  
 प्रा० ॥ आहेमी नागें मस्यो जी । बाण लग्या सीचाण । कोकूहो नमी गयो  
 जी । जोउ नियत परमाणरे ॥ ३० ॥ प्रा० ॥ सख हणया संग्राम मांजी । रानपड्यां  
 जीवंत । मंदिर मांहें मानवी जी । राख्याही न रहंतरे ॥ ३१ ॥ प्रा० ॥ ( ढाल ४  
 सग मारुणी मनोहरणी ) ॥ ॥ काल स्वजाव नियत मति कूमी । करम करै  
 ते थाय । करमें नरय तिरय नर सुर गति । जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥ ( चेत  
 न चेतज्योरे करम न बूटै कोय ) ॥ करमें राम वस्या वनवासे । सीता पामी  
 आल । कमें लंका पति रावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कमें

कीडी कर्म कुंजर । कर्म नर गुणवंत । कर्म रोग सोग डुख पीमित । जनम  
जायै विलसंत ॥ ३४ ॥ (चे०) कर्म वरस लगे रिसहेसर । उदक न पा  
में अन्न । कर्म जिननें जोउ गिमारे । खीळारोप्या कज ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्म  
एक सुख पाळै वैसे । सेवक सेवै पाय । एक ह्य गय चढ्या चतुर नर ।  
एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी परि । जगह्नी  
में हाहूतो । कर्म बली तेलहै सकल फल । सुख नर सेजै सूतो ॥ ३७ ॥  
चे० ॥ उंदर एकै कीधो उद्यम । करंमीयो करकोले । माहे घणा दिवसनो  
जूखो । नागरहो ममलोले ॥ ३८ ॥ चे० ॥ विवर करी मूपक तसु मुखमां ।  
दीये आपणुं देह । मार्ग लही वन नाग पधाया । कर्म मर्म जोवो एह  
॥ ३९ ॥ चे० ॥ (ढाल ५ मी) ॥ ( तो चोढियो घण मान गजै एचाल )  
॥ ४० ॥ हिव उद्यम वादी जणें ए । ए च्यारे असमत्यतो । सकल पदारथ  
साधवा ए । उद्यम एक समरत्यतो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए । स्पुं  
नविसीजै काजतो । रामें रयणापर तणी ए । लीधो लंका राजतो ॥ ४१ ॥  
करम नियतिनें अनुसरै ए । जेहमां सत्वन होयतो । देवल वाघ सुख पंखि  
या ए । पिउ पैसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विण उद्यम किम नीकलै ए । तिल  
माहंथी तेलतो । उद्यम थी ऊंची चढैए । जोवो ऐकंद्रिय बेलतो ॥ ४३ ॥  
उद्यम करतां इकसमें ए । जेह नसीजै काजतो । ते फिर उद्यमथी जुवैए ।  
जो नवि आवे वाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊच्यां विनाए । नविरंधायै अ  
जतो । आवी न पडै कोलीयोए । मुखमां खेपै जतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत  
उद्यम पिताए । उद्यम कीधा कर्म तो । उद्यम थी दूरे टलैए । जोउ कर्म  
नो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करीए । कीधा पापअनंततो । उद्य  
मथी पट मासमां ए । आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपै २ सरवर जरै  
ए । काकरै २ पालतो । गिर जेहवा गढ नीपजै ए । उद्यम सकत निहालतो  
॥ ४८ ॥ उद्यमथी जल विंडुओए । करे पाहाणमां ठामतो । उद्यम थी  
विद्या जणें ए । उद्यम जोमै दामतो ॥ ४९ ॥ (ढाल ६) एठिंमी किहां राखी  
एदेशी ॥ ५० ॥ एपांचेही वाद करंता । श्रीजिनचरणे आवै । अमीयरसै जि  
न वयण सुणीनें । आणंद अंग नमायेरे ॥ ५० ॥ (प्राणी समकित मतिम  
न आणोरे । नय एकांत मताणोरे । ते मिथ्या मत जाणोरे । आंकणी) ॥

एपांचे समुदाय मिट्यां विण । कोई काज न सीऊ । आंगुल जोगे कवल  
तणी पर । जे बूऊ तेरीऊरे ॥ ५१ ॥ प्राण ॥ आयह आणी कोई एकने ।  
एहमां दिवै वमाई । पिण सेनामिल सकल रण गण । जीतै सुनट  
लमाईरे ॥ ५२ ॥ प्राणीण । तंतुसजावै पट उपजावै । काल क्रमें वणाई ।  
जवतव्यता होयें ते नीपजे । नही तो विघन घणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणीसण ।  
तंतुवाय उद्यम नोक्तादिक । ज्ञान्य सबल सहकारी । एपांचे मिल सकल प  
दारथ । उतपत जोवो विचारी रे ॥ ५४ ॥ प्राणीण ॥ नियति वसें हलुकर्म थइनें  
निगोद थकी नीकलियो । पुण्यें मनुज नवादिक पामी । सदगुरुनें जई  
मिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्राण ॥ जवथितनो परपाक थयो तव । पंक्ति  
वीर्य उलसियो । जव्यस्वजावै शिव गति गामी । शिव पुर जइनें वसियोरे  
॥ ५६ ॥ प्राण ॥ वर्द्धमान जिन इण परि वीनवै । सासन नायक गावो ।  
संघ सकल सुख दाई जेहथी । स्यादवाद रसपावोरे ॥ ५७ ॥ प्राण ॥ (कल  
श) इम धर्म नायक मुगति दायक वीर जिनवर संथुण्यो । सय सतर संवत  
वन्हिलोचन वर्ष हर्ष धरी घणो । श्रीविजय देव सूरिद पटधर विजय प्रभु  
मुण्डण । कीर्ति विजय वाचक सीस इण परिविनय कहै आणंदण ॥ ५८ ॥  
इति पंच समवाय स्तवनं समाप्तम् ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥      ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ १४ गुणठाणास्तवन लिण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थंजणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ सुमतिजिणंद सु  
मतिदातार । वंडुं मनसुध वारंवार । आणीजाव अपार । चवदै गुणथानक  
सुविचार । कहिस्सुं सूत्र अरथ मनधार । पामें जिम जवपार ॥ १ ॥ प्र  
थम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो । बीजो सास्वादन मन आणो । तीजो मि  
श्र वखाणुं । चौथो अविरत नाम कहाणो । देशविरति पंचम परमाणो ।  
ठवो प्रमत्त पिठाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सलहीजै । अठम अपूरव क  
रण कहीजै । अनिवृत्ति नाम नवम् । सूखमलोचन दसम सुविचार । उपशां  
त मोह नाम इग्यार । खीणमोह बारम् ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधाम ।  
चउदम थयो अयोगी नाम । वरणुं प्रथम विचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म  
वखाण । तेह लक्षण मिथ्या गुणठाण । तेहना पंचप्रकार ॥ ४ ॥ (ढाल१)

सफल संसारनी ॥ ५ ॥ जेह एकान्त नय पक्ष थापी रहै । प्रथम एकान्त  
मिथ्यामती ते कहै । ग्रंथ उत्थापि थापै कुमति आपणी । कहै विपरीति  
मिथ्यामती ते जणी ॥ ५ ॥ जैन शिव देव गुरु सज्ज नमैं सारिखा । तृतीय  
ते बनय मिथ्यामती पारिखा । सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धणै । सं  
सयी नाम मिथ्यात चोयो जणै ॥ ६ ॥ समस्त नही काय निज धंधरातो  
रहै । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै । एह अनादि अनंत अज्ञव्यनै ।  
करिय अनादि धिति अंत सुज्ञव्यनै ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंभ जीमनैं वमैं ।  
सरस रस पाय बलि स्वाद केहवोगमैं । चौथ पंचम ठवै गण चढिनैं पमैं ।  
किणहि कपाय बसिआय पहिलै अमै ॥ ८ ॥ रहै बिच एक समयादि पट  
आवली । सहीय सासादनैं धिति इसी सांजली । हिव इहां मिश्रगुण गण  
त्रीजो कहे । जेह उत्कृष्ट अंतर मज्जरतल है ॥ ९ ॥ ( ढाल ३ ) वेकर  
जोमीताम ॥ एहनी ॥ ५ ॥ पहिला चार कपाय । शमकरि समकित्ती ।  
कैतौ सादि मिथ्यामती ए । ए वेहिज लहै मिश्र । सत्य असत्य जिहां ।  
सरदहणवेउं ठतीए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि । मरण लहै नही । आ  
उबंघ नपमै नवो ए । कैतो लहै मिथ्यात । कै समकित लहै । मतिसर  
खी गति पर जवै ए ॥ ११ ॥ चार अप्रत्याख्यान । उदय करी लहै । म  
तिविण किहां समकित पणो ए । ते अविरत गुणगण । तेतीस सागर ।  
साधिक धिति एहनी जणो ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग । निरवेद आ  
सता । समकित गुण पांचे धरैए । सज्ज जिन वचन प्रमाण । जिन सास  
न तणी । अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कैईक समकित पाय । पुदग  
ल अरधतां । उत्कृष्टा जवमैं रहै ए । कैईक जेदी गंठि । अंतर मज्जरतैं ।  
चढतैं गुण सिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ चार कपाय प्रथम । त्रिणबलि मोह  
नी । मिथ्या मिश्र सम्यक्तनीए । साते प्रकृतिजास । परही उपसमैं । ते  
उपसम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीव । ते नर क्वायकी ।  
तिणहीज जव सिव अनुसरैए । आगलि बांध्यो आउ । तातैं तिहां धकी ।  
तीजैं चोथैं जवतरै ए ॥ १६ ॥ ( ढाल ४ ) इणपुर कंबल कोइन लेसी ॥  
ए चाल ॥ ५ ॥ पंचम देसविरति गुणगण । प्रगटै चक्रकमी प्रत्याख्यान ।  
जेण तजैं वावीस अज्ञक । पाम्यो आवकपणो प्रतक ॥ १७ ॥ गुण इक

वीस तिके पिण धारै । साचा वारै व्रत संजारै । पूजादिक पटकारज साधै ।  
 इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आरत रोद्र ध्यान ऊवे मंद । आयो मध्य  
 धरम आनंद । आठ वरस ऊणी पुत्रकोम । पंचम गुण ठाणें थिति जोम  
 ॥ १९ ॥ हिव आगै साते गुणथान । इक २ अंतर मझरत मान । पंच  
 प्रमाद वसै जिण ठाम । तेण प्रमत्त ठवो गुणधाम ॥ २० ॥ थिवर कलप  
 जिन कलप आचार । साधै पट आवस्यक सार । उग्रत चोथा च्यार क  
 षाय । तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥ २१ ॥ सूधो राखै चित्तसमाधै । धर  
 मध्यान एकांत आराधै । जिहां प्रमाद क्रिया विधनासै । अपरमत्त सत्तम  
 गुण जासै ॥ २२ ॥ ( ढाल ५ ) नदी यमुनाकै तीर उमें दोय पंखीया ॥  
 ए चाल ॥ ॥ पहिलै असै अठम गुणठाणा तणें । आरंभै दोयश्रेणि  
 संखेपै ते गणें । उपशम श्रेणि चढै जे नरऊवे उपसमी । कृपक श्रेणि क्षाय  
 क प्रकृति दशक्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण ल  
 है । अठम नाम अपूरव करण तिणें कहै । सुकल ध्याननो पहिलो पायो  
 आदरै । निरमल मन परिणाम अमिग ध्यान धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त  
 करण नंवमो गुण जाणियै । जिहां जाव थिर रूप निवृत्ति न जाणियै ।  
 क्रोध माननं माया संजलणा हणें । उदै नही जिहां वेद अवेद पणों ति  
 णें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सूखम लोभ कांश्क शिव अजिलखै । ते सूखम  
 संपराय दशम पंमित देखै । संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै । मोह  
 प्रकृति जिण ठाम सज्ज उपसम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो काल करै  
 किणही परै । तो थायै अह मिंद्र अवर गति नादरै । च्यारवार सम श्रेणि  
 लहै संसारमें । एक जवै दोय श्रेणि अधिक न ऊवै किमें ॥ २७ ॥ चढि  
 इग्यारम सीम समी पहिलै पमै । मोह उदै उत्कृष्ट अरध पुदगल रमै ।  
 खिषक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही । दशम थकी वारम्म चढै ध्यान रहै  
 ॥ २८ ॥ ( ढाल ६ एक दिन कोई मागध आयो पुंरंदर पास ) ॥ ए चाल  
 ॥ ॥ खीण मोह नामें गुण ठाणो वारम जाण । मोह खपायो नैमो आयो  
 केवल नाण । प्रगट पणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिव आगै  
 तेरम गुणठाण तणी कहै बात ॥ २९ ॥ घातीय चौकनी क्षयगई र  
 हीय अघातीय एम । प्रकृति पच्यासी जेहनें जूना कापरु जेम । दरसण

ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत । केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरे श्री  
 जगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी अनी परगट वात । महिमावंत अ  
 ठारे दूषण रहित विख्यात । आठेवरसे ऊणी कही इक पूरव कोमि । उत्तु  
 णी तेरम गुण ठाणें ए थिति जोमि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूध्या  
 मन बच काय । तेण अयोगी अंत समइ सज्ज प्रकृति खपाय । पांचे लघु  
 अक्षर ऊचरतां जेहनो मान । पंचम गतिपामें सिवपद चउदम गुणथान ।  
 ॥ ३२ ॥ बीजें वारमें तेरमें मांहें न मरै कोइ । पहिलो बीजो चौथो पर  
 भव साथे होइ । नारक देवनी गतिमांहे लाजे पहिलाचार । धुरला पांच  
 तिरी मांहिमणुंए सर्व्व विचार ॥ ३३ ॥ ( कलश ) ॥ इम नगर वाहन मेरुमं  
 मण सुमति जिण सुपसानलै । गुणठाण चवद विचार वरण्यो जेद आग  
 ननै जलै । संवत्त सतरेसैं ठतसैं आवण वदि एकादसी । वाचक विजय श्री  
 हरप सानिध कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री चतुर्दश गुण स्थान विचार स्तवनं ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

### ॥ अथ नवतत्त्व ज्ञापा गर्वित स्तवन लि० ॥

॥ ❀ ॥ डहा ॥ नमस्कार अरिहंतने । सिद्धसूरि उवजाय । साधु सकल  
 प्रणमी करी । प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नवतत्त्वनी । गाथा ज्ञापा  
 रूप । मंद बुद्धि गुरु सानिधे । कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥ ( सुरती मही  
 नानी देखी ) ॥ जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आसव सोय । संवर निज्जर  
 बंध मोक्ष पुनवतत्व होय । चवद चवद बायाल ब्यासी बलि बायाल । सत्ता  
 वन वारे चौ नव क्रम जेद निहाल ॥ १ ॥ इग ड ति चौविह पण विह  
 ठविह जीव कहाय । चेतन वस थावर वेदै गई करणें काय । एगिंदी सू  
 खम वादर ए दो जिय ठाण । सनि असनि पणिंदी विति चौरिंदी आण  
 ॥ २ ॥ ए सगपज्जता अपज्जता चवदै होय । अनुक्रम जीवठाण ए सूत्र  
 प्ररूपा सोय । नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उवयोग । ए पडलकण  
 लक्षित जीव द्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्तीतीन ।  
 सासो सास ज्ञापा मन पमए अनुक्रम लीन । चार एगिंदी पंचपज्जत्ती वि  
 गलें जोय । पंच असनि सधितें पम पज्जत्ती होय ॥ ४ ॥ इन्द्रिय पांच उतास

आऊ बल ए दसप्राण । च्यार ठ सात आठ एगिंदी विगलै जाण । असनि  
 सनि पंचिंदीनें नव दस क्रम थाय । प्राणांथी जे विप्रयोग जिय मरण क  
 हाय ॥ ५ ॥ धम्मा धम्म आगास तीनुना त्रिण त्रिण जेद । काल दशम  
 इग आगास पुग्गल च्यार विठेद । खंधा देश पएस परमाणु चवद अजीव ।  
 धम्मा धम्म पुग्गल नन्न काल ए पांच न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्म  
 थिर संठाण अधम्म । अवगाहै पूरण गलणै नन्न पुग्गल धम्म । समय वलिय  
 मज्जुत्त दीह पख मासनै साळ । पट्योपम सागर उस्सण्णी सण्णी काल  
 ॥ ७ ॥ षम इग दो सग सग सग षम इग अंक गिणाय । एगमज्जुत्त आवलि  
 संख्या सूत्र कहाय । तीन सात बलि सात तीन ऊसासै माण । केवल ना  
 णी नणियो एह मज्जुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्चगोय मणु सुर डग पंचिं  
 दीजाय । पांचशरीर आदिम तिसरीर उवंग कहाय । आदिसंधेण संठाण  
 चौवण अगुरु लज्ज होय । परव ऊसास तेम बलि आतपनै उज्जोय ॥ ९ ॥  
 सुन्नखगई निम्माण तसादिदशुं नी माल । सुर नर तिरियआऊ तित्थंकर पुण्य  
 वयाल । तस वादर पज्जुत्त पत्तेय थिरं सुन्नसोय । सुन्नग सुसर आइऊ जसै  
 बस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दसक नववीजा नीच असाय ।  
 मित्थ थावरदश नारगत्रिक पचवीस कसाय । तिरियंच डग एकिंद्री विति  
 चौरिंद्री तेय । कूखगई उपधा अपसत्थ वणचौजेय ॥ ११ ॥ पढम संघयण  
 बिना संघयण तेमसंठाण । एम वयासी प्रकृति पापतत्त्वनी ए जाण । थावर  
 सुहम अपऊ साहारण अथिरै गेय । असुन्न डन्नग दूसर एाइऊ अजस  
 दसलेय ॥ १२ ॥ पणचौ पण तिय इंदि कसाय अवय तिम जोग । वाया  
 लीस सेषपच्चीस कयासंयोग । काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप ।  
 प्राणातिपात आरंजकी परिगहियानो लाप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिह्मादं  
 सणवत्ती तेम । अपच्चक्खाण की दिठ पुठि पामुच्चियजेम । सामंतोपन वणि  
 य नैसत्थि साहत्थै जेह । आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥ १४ ॥  
 अणवकंख, पच्चय ना उवंगी समुदाय । प्रेम वेष इरियावही किरिया एक  
 हि वाय । सुमति गुपति परिसह जइधम्म जावण चारित्त । पण तिग वा  
 बीस दस वारै पण संवरतत्त ॥ १५ ॥ इरिया जाषा एवणा सुमती ना जेद  
 होय । आदान जेन उच्चार निकखैवण पांचे जोय । मनगुत्ती वयगुत्ती काय

मुत्ती त्रिण जाण । हिव आगै वावीस परीसह कज्जं हित आण ॥ १६ ॥  
 जूव पिपासा सीत ज्जन मांसा निरवत्थ । अरति जोपा चरित्रा नैपिया  
 सिझासत्त । अक्रोस वह जायण अलाज रोग त्रिणफास । मल सक्कार  
 पन्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम स  
 म्म । सत्यं सौच अकिंचन वंनचेर जइ धम्म । पढम अनित्य अशरण सं  
 सार एग अनत्त । असुचि आश्रव संवर निज्जर नवि जावो नित ॥ १८ ॥  
 लोकसुजाव बोधज्जरत्त इग्यारम गाव । धरम साधक अरिहंत ए वारे  
 जावन जाव । सामायक ठेदोपस्थापन बीजो सोय । परिहार विसुद्ध सूख  
 मसंपराय चज्जत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम अहक्खाय चरित्त सरव जियलोग प्र  
 सिद्ध । जेह सुविधि आचरणे के जिय पाम्या सिद्ध । वारैविध निज्जर त  
 त्व वंधना च्यार प्रकार । प्रकृति ठिई अनुजाग प्रदेश जेदे निरधार ॥ २० ॥  
 अणसण क्कणोदर वृत्तिसंखेप रसनो त्याग । कायकलेस सद्धीनता बाहिर  
 तप पम जाग । पायट्ठित विनय वेयावच्च तेम सिझाय । ध्यान काउसग्ग  
 अज्ज्यंतर तप पमविध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृति सुजाव काल अवधारण थि  
 त निरवंच । अनु जागै रस तेम प्रदेशें दलनों संच । पट प्रतिहार धार तर  
 वार मय बलि तेम । निगम चित्रकर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥  
 अनुक्रम आठ नामना जाप्या जेजे जाव । तिम ज्ञानावरणा दिक अमना  
 एह सजाव । इम संखेपे विवरण कीना आठे तत्त । प्रस्तावे पाम्यो वरणव  
 स्युं हिव मोखतत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूवण द्रव्यनें खेव प्रमाण । फ  
 रसन काल पांचमों ठो अंतर जाण । जाग सातमो जाव आठ तिम अ  
 लप वज्जत्त । एनव जेदे जावन करस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोह एक प  
 दधी ठे जे पदे अविनांजाव । व्योम कुशम तिम ससिक श्रिंग जिम नदी  
 य अजाव । एहवी जे पद मोह तेहनों मग्गण द्वार । विवरण कर वरण  
 वस्युं सुणज्यो सुहम विचार ॥ २५ ॥ गति नर इंदिय पंचेदी काये त्रसका  
 य । नाणे जेहनें केवल संयमयी अहखाय । दंशणमें इक केवल दंशण  
 अवर न होय । जव्य अज्जव्ये जव्यपणो परि पाकै जोय ॥ २६ ॥ संमत्ते  
 क्षायक सद्धी असद्धीवें सत्ति । अणहारी आहारी अणहारी उप्पन्न । द्रव्य  
 प्रमाणें सिद्ध जीव द्रव्य होय अनंत । लोग असंखम जाग एगसिद्ध होय



अणंत ॥ २७ ॥ फरसन खेत्र थी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत । सादि  
अनंती थित जिन आगम थी सुविदीत । प्रतिपाती चावे नहिं सिद्धां अं  
तर जोय । सरव जीवथी चाग अनंतम सज्ज सिद्ध होय ॥ २८ ॥ दंशण  
नाण जेहनें बे ते द्वायक चाव । जीवत जेहनें वलि परणामक चाव समा  
व । सज्जथी थोमा वेद नपुंसकथी जेसिद्ध । तेहथी थी नर अनुक्रम संख  
गणा सुपसिद्ध ॥ २९ ॥ जे जाणें जीवादिक नवतत्त तस सम्मत्त । अण  
जाणंतानें ज्ञय जे सरधानें रत्त । सरव जिणेसर मुखथी चाप्यावयण जहत्थ ।  
ए बुद्धी जेहनें मन संमत निचल तत्थ ॥ ३० ॥ अंतर मज्जरत एगमात्र फर  
स्यो संमत । अर्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमत । उरसप्पणीय अ  
णंत एग पुग्गल परियट्ट । अनन्त अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट  
॥ ३१ ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदै विवरण कीध । श्रावक आग्रह कीन  
सहाय पूरण रसपीध । कोटिक गण सुन्नसदन प्रकास नदी उपमान । श्री  
जिन लान्न चंदकुल पूनम चंद समान ॥ ३२ ॥ अग्याना दिक् करि वर  
सिंहें वयरी साख । रत्नराज मुनि ते वम्मासाखानी पडिसाख । ग्यानसार ते  
पमिसाखानी सूखम माल । ए नव पद नव रयण विनाणें गुंथी माल ॥ ३३ ॥  
संबन्धर निश्चय नय विगई प्रवचन माय । परम सिद्ध पद वामगते ए अंक  
गिणाय । माघ किसन ससिवार मेरु तिथ पूरनकीध । च्यार कथा तजि  
तत्त्वकथा नज नर फल लीध ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥  
इति नवतत्त्व चाषागर्जित स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ दंमकनी चाषा गर्जित स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ कृपञ्जा दिक् चौवीस नमि । तेहनो सूत्र विचार । दंमक रचना  
ये तवुं । संखेपै निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक पढम । असुरा नाग सु  
वन्न । विज्जु अगनि दीवो दही । दिसि पवणें थणियन ॥ २ ॥ पुढवी आ  
ऊ तेउ वलि । वानवणस्सइकाय । वि ति चौरिंदी गप्पधर । तिरि नर ति  
हां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया । ए दंमक चौवीस । एह  
ना चार कज्ज हिंवे । गणनायें तेवीस ॥ ४ ॥ वीर जिणेसरनी देशी ॥ ॥  
॥ ॥ सरीर उगाहण संघयणें संगण । कोहाई लेसिंदिय दोसमुग्घाय

प्रमाण । दिघी दंशण नाण जोग तिम वलि उवयोग । उपपात वलिय चवण  
 ठिई पेज्जति प्रयोग ॥१॥ के दिसिनो आहार सन्नि गइ आगइ वेय । दार  
 गाहा डुगनो ए अरथ कसो संखेव । हिव तेवीसदारनो रहिस समय अनुसा  
 र । अलप रुची ऊं तेहथी कहिसुं अलपविचार ॥ २ ॥ ॥ ✽ ॥  
 सूरती महीनानी देशी ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
 ॥ ✽ ॥ चौ गप्पय तिरि वाऊ कायें च्यारसर । मनुष्यमें पांच दंमग  
 इकवीसर रक्षा तिसरी । थावर च्यारनें जहन्य उकोसें देहप्रमाण । जाग अ  
 संख्यातम इग अंगुलनों परिमाण ॥ २ ॥ सरवनो जघन्य स्वप्नावक अं  
 गुलजाग संकात । उकोसें पणसै धणु नारगनें विक्तात । सुरनो सातहाथ  
 गज्जय तिरि वणस्सई काय । जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय  
 ॥ २ ॥ नर तेईदि तिगाऊ वेईदी जोयणवार । एगजोयण चौरिंदी देह ऊं  
 चै आकार । आरंभ कालें वैक्रिय देहनो ए परिमाण । जाग एक इकआं  
 गुलनो संख्या तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधक इकलाख जोयण इगलाख ।  
 नवसै जोयण तिरजंचनें एसूत्रै साख । साप्तावकथी डुगणो नारक वैक्रिय  
 काय । एकमहूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्षएग उ  
 कोस विज्जण काल । विगल संघयणी थावर सुर नारकनीमाल । गप्प  
 यनर तिरनें पम विगलनें ठेवठ एक । सरव जीवनें च्यार दसे सणायें लेख  
 ॥ ५ ॥ नर तिरनें पम सुरनें सम चौरंस संगण । ऊंमग इग नारग विगलें  
 द्री सूत्र प्रमाण । नाणाविह धय सूइ मसूरनी चंद्र आकार । वणस्सई वा  
 उ तेउ नू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सज्जनें च्यार कषाय गप्पय पम नर  
 तिरि दोय । वेमाणिय नारग तेउ वाउ विगल विक होय । जोयसि तेऊलेसा  
 सेस रक्षाने च्यार । दार इंद्रियनो सुगम तेहनो सुं विसतार ॥ ७ ॥ समुद  
 घात सग नरनें पण गप्पय तिरि देव । नारग बायुनें च्यार सेसनें तीनुंजेव ।  
 दिघी दोय विगलमें थावरनें मिथ्यात । सेसनें तीनदिठि जिम प्रवचनमें वि  
 क्तात ॥ ८ ॥ थावर वि तिनें एक अचक्खू दंशण होय । चौरिंदी तेचक्खु  
 अचक्खू दंसण होय । मनुजनें च्यार सेस दंमगमें दंशण तीन । नाण अना  
 ण तीन सुर तिरि नारगनें लीन ॥ ९ ॥ थावरदोय अनाण विगल दोनाण  
 अनाण । गप्पय मणुनें तीन अनाणनें पांचुं नाण । सुर नारग एकाद

श तिरनें तेरै जोग । मनुजनें पनरै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥  
 वाङ्मकायनें पांच तीन थावर संयोग । मनुजनें वार नरग तिरि देवनें नव  
 उपयोग । विगल डुगै पण षट् चौरिंदी थावर तीन । नववाय इग चवण  
 दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एग समें संख्यात असंख्या चवण पपात ।  
 गण्य तिरि विगलेंदी नारग सुर विख्यात । मणुआ थावर वणस्सई संख  
 असंख अणंत । मणुज असन्नि असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावी  
 स सात तीन दस वरस सहस उक्किठ । वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊ  
 नें जिठ । नर तिरि तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस । व्यंतर पल्य अ  
 धिक लख वरष पल्य जोईस ॥ १३ ॥ असुरा दिक दर्शनें इक सागर अ  
 धिको आय । देसें ऊणा दोय पलपनो नवेय निकाय । विगलनें वार वर  
 स गुणचास दिवस ठम्मास । अंत मऊत्त जहन्नें पुढवाई दसरास ॥ १४ ॥  
 नुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार । पल्य तेना अमंस वेमाणिय जो  
 इस धार । सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार । विगलनें पंच पऊत्ती  
 ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय ठए दिसनो आहार । होय न  
 होय पंचादिक दिस ए सुत्र मऊार । दीह काल की चौविह सुर नारग  
 तिरजंच । विगलनें हेउपएशा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गण्य  
 मणुजनें दीहकालकी सन्नाहोय । केइक आचारज कहै दिठिवाय थीदोय  
 निचय पऊत्ता पंचिंदी तिर नर जेह । चौविह देवां मांहे आवी ऊपजै तेह  
 ॥ १७ ॥ संखान पजत्त पंचिंदी तिरि नर तेम । पजत्ता नूदग पत्तेयवण  
 स्सई जेम । ए सरवेमैं निचै सुरनी आगति ऊंति । पऊत्त संख गण्य  
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उदवरत्या नर तिर उपजै नऊवै  
 सेस । नू अप्प वणस्सईमें नारग विण उपजै असेस । पुढवाई दसपयमैं नू  
 आऊ वण जंति । पुढवाई दसपयमैं तेऊ वाऊ नवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वा  
 ऊनो गमण पुढवी पद नवमैं ऊंत । पुढवाई दस पदमें विगल जावंत आ  
 वंत । सऊमें तिर गति आगति मणुआ सऊमें जाय । तेउ वाऊथी मरीनें  
 जीव मनुज नवियाय ॥ २० ॥ थी पुरसै चौविह सुर तिरि नर तीनुंवेद ।  
 थावर विगल नारकनें एक नपुंसक जेद । पऊत्ता मणु वादर अगनि वेमा  
 णिक तेम । नवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि एम ॥ २१ ॥ वेइंदी

तेइंद्री पृथ्वीनिं अप्पकाय । वाज वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवा  
य । हे जिन ए सज्ज ज्ञाव मै पाम्या वार अनंत । तेहनो अनुक्रम गणि  
तां किमहीन आवै अंत ॥ २३ ॥ नर सुर विण सज्ज दंडगमै ते गति सं  
योग । लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्मप्रयोग । सुरमै पिण दंसण लहि  
विरति न पामी मूल । ते सुरजात सदावै देस विरति प्रतिकूल ॥ २३ ॥ अर  
रज देस आरज कुल सुध सुगुरु उपदेश । तेहथी तुहदंसणनो किंचित  
पाम्यो लेस । धारक तारक कारक वारक दंशण देव । आतम गुणसंसा  
सम्मत कम्मसयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गच्छ नटारक श्रीजिन लाज सुरिंद ।  
रत्नराज मुनि सीस तेहना पद अरविंद । रज मकरदं लीणो ग्यानसार त  
सुसीस । तेणतव्या तेवीसदार दंमग चौबीस ॥ २५ ॥ संवत शशि रस वा  
रण तेमचंद निरधार । पोष मास पख ऊजल सातमनै सोमवार । आवक  
आग्रहथी एकीनो अल्प विचार । अठम चौमासो कर जैपुर नगर मजा  
२ ॥ २६ ॥ ॥ इति चतुर्विंशति दंमक स्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥॥॥ अथ जीवचार ज्ञापा गर्जित स्तवन लि० ॥॥॥

॥ ॥ (उहा) ज्ञवन प्रदीपक धीरमि । किंचित जीव सरूप । क  
हिसुं पूर्वाचार्य जिम । बालबोध गुरु रूप ॥ १ ॥ ( देशी सूरती महीना  
नी ) ॥ एगमुगति बीजा संसारी जीव डुजेद । सत्ताजिनिं सिद्ध अनंतै रू  
प अजेद । संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार । जू अप वाऊ तेऊ  
वणस्सई थावर धार ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल बलि हरि  
याल । मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीमाल । सेढी बच्ची अरणेटो  
पाखेवो पाखाण । जोडल तूरी ओस जूमि पाहण जेखाण ॥ २ ॥ सुरमो  
लुणजात ए पुढवी काय बिठेद । जूमि आकास जंस हिम करग आऊना  
जेद । हरित घास ऊपर जे जलकण धूहर तेम । होय घणोदधि अप्प  
काय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा जाला जोजर तिम उलकापात ।  
अशणि कणग विद्युतादिक अगन जीव विज्ञात । उग्रामग उक्कलिका  
मंमल बलि मुहवात । सुध गुंज तिम घण तणु वाऊ जेदं ज्ञात ॥ ४ ॥  
साधारण पत्तेय वणस्सइ जीवडुजेय । एग सरीर अनंत जीव साधारण नेय ।

कंदा अंकुर कूपल फूलण बलि सेवाल । झुंफोमा अदत्तिय सरवे जे फ  
 लवाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ बाथवो थेग पालंको साग । गुपत सिरा सांधा  
 गांठां जाजै समजाग । काठी माल झुंमिमें रोप्या पल्लव थाय । जाल  
 पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एग जीव जे ते प्रत्ये  
 क । फूल बाल फल मूल काठ बीजै जिय एक । वण पत्तेय विना जे पांचे  
 पुढवी काय । सयल लोगमें व्यापक अंत मूहर्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते  
 नियमा द्विठी निजर न होय । लोकालोक प्रकास थकी बलि अलप न  
 कोय । कवनी संख गंमोला लहिंगा लटनी जात । चंदनका अलसी मेहर  
 जोका विद्वात ॥ ८ ॥ मायवाहा रुम पौरादिक वेइंद्री होय । गोमी मा  
 कण जूआ कीमा कीनी दोय । दीपक ईली धीवेली गोंगीमा जात । चर  
 मजूका गादहिया गोवर रुम नुतपात ॥ ९ ॥ धान कीमा जिमचोर कीमा  
 गोवाली तेह । ईली कंधुक इंद्रगोप तेइंद्री एह । बीठू ठंकण जमरा जमरी  
 इंद्री च्यार । तीमा माखी मांस मठ्ठर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवम मोला  
 मांकमिय पतंग इत्यादिक जेद । नारक तिरि मणु देव पंचेद्री च्यार विठेद  
 वस्मा वंसा सेला अंजण रिठा क्हात । मघा माघवई नारग एनामें सात ॥ ११ ॥  
 जलचारी थलचारी नज्जचारी तिर जंच । मठ्ठ कठ सुसुमार मगर गाहा  
 जलअंच । चौपय उरपरि झुजपरि साप झूचारी तेय । तिविहा गाय साप  
 तिम नकुल अनुक्रमलेय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोमपंखी चमचेड कपोत ।  
 मनुज लोक थी बाहिर समुग विगय पंखहोत । सरवे जल थल खचर  
 समुज्जिम गरुजय दोय । कम्म अकम्म जूमि अंतर दीवा मणुजोय ॥ १३ ॥  
 असुरादिक दस होय बाण व्यंतरिया अठ । जोइस पंच वेमाणिय डविहा  
 सुत्तें दिठ । पनरै जेदै सिध कहा एजीव प्रकार । तनु मानादिक हिव एह  
 नो कहसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आऊखो एक सरीरें थितनो मांण ।  
 प्राण जेहनें जेता तिम बलि योन प्रमाण । अंगुल जाग असंख सहू ए  
 गिंदी काय । जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सइ काय ॥ १५ ॥ बिति  
 चौरिंद्री अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास । बारै जोयण तीन गाऊ इग जोयण  
 जास । सत्तमना नेरइया धनु सयपंच प्रमाण । तेहथी अरध अरध ऊ  
 णा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस गजधर मठ्ठ उरगनो देह ।

गाऊ धणुहपऊत नूचारी पंखी जेह । खेचर नवधणु उरग जुयंग जोयण  
नव होय । नव गाऊ परिमाण समुष्ठिम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खम गाऊ  
ऊंचास चउपय गऊनयमाण । तीन कोस उकोस मनुजनो काय प्रमाण ।  
नवण व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत । सात हाथ उकोसै ऊंचपणै तणु  
ऊंत ॥ १८ ॥ सनत कुमार माहेद्रे परम ब्रह्म लांतक पांच । शुक्र सहस्रारै  
उकोस च्यार करवांच । आणत प्राणत आरण अच्युत हाथै तीन । नव  
त्रैवेयक दोय पंचानुत्तर इगलीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन दश वरस  
सहस्रै आय । नू आऊ वाऊ वण ती दिन तेऊ काय । वार वरस गुणचा  
स दिवस तिम बलि उमास । अनुक्रम वेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री रास ॥ २० ॥  
सुर नारग तेतीस अंगर उकोसै आय । चौपय तिरिय मनुजनो तीन पट्यो  
पम थाय । जलचर उरपर नुजपर उकोसै पुव कोम । पंखीनै इगनाग अ  
संख पट्यनो जोम ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समुष्ठिम मणुजेह । जहन्न  
उकोसै अंतमुहत्त नियम धिति तेह । इम उगाहण नाप्यो संखेपै अधि  
कार । जेवलि इत्थ विसेस विसेस सुत्रसू धार ॥ २२ ॥ असंख उसणणि  
सऊ एगिंदी आपणी काय । उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ।  
संख्याता संवत्तर विगल आपणी देह । सात आठ नव पंचिंद्री तिरिमणु  
आ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरग नविजाय । देव चवीनै  
ते बलि देवपणै नविथाय । इंद्रीय सासोसास आऊ बल ए दसप्राण । च्यार  
ठ सात आठ इग डुति चौरिंद्रिय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचिंदी दश नव  
अनुक्रम जोय । प्राण थकी जे विप्रयोग जिय मरणे होय । नीमसायर सं  
सार अपार अनंतीवार । नमियो जीव धर्मविण जोणि अशीनै च्यार ॥ २५ ॥  
सग सग सग सग दश चवद्वे दो दो दो लाख । च्यार च्यार तिम च्यार चवद  
लख सूत्रै साख । नू अप तेऊ वाऊ वणपत्तेय साधार । वि ति चौ पण तिर  
नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल  
नही जात । सादि अनंत जंग जिन आगम धिति विज्ञात । रोग न सोग  
न भोग जोग नही नारी द्विग । नहीय नपुंसक पुरप तणा नही अंग उपंग  
॥ २७ ॥ नाण दंशण चारित वीरज ए च्यार अनंत । सिद्ध थया तेहथी सि  
ध्दतै सिद्ध कहंत । इम ए जीव विचार गाथायी नापा रूप । श्रावक आय

हथी में कीनो सुगम सरूप ॥ १८ ॥ खरतर गह्व नद्वारक श्रीजिन लाज  
सूरीस । रत्न राज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस । संवत शशि रश वार  
ण ससिहर धर निरधार । माव चौथ दिन कीनो जैपुर नगर मऊार ॥ १९ ॥  
इति जीव विचार जाषा गर्जित स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

## ॥ समवसरण विचार गर्जित स्तवन लि० ॥

॥ ॥ ( डहा ) श्रीजिन सासन सेहरो । जगगुरु पास जिणंद । प्रण  
मी जेहना पाय कमल । आवी चौसठ इंद्र ॥ १ ॥ तीर्थकर आवै तिहां ।  
त्रिगडो करै तयार । सम कित करणी साचवै । एह कज्ज अधिकार ॥ २ ॥  
करै प्रसंसा समकित्ती । मिथ्यात्वी होवै मूक । सूर्य देख हरखै सहू । घणै  
अंधारै घूक ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ढाल वीर बखाणी ० एचाल ॥ ॥ ॥ आप अरिहंत  
नलै आविया जी । गावै अपठरह गंधर्व । समवसरण रचै सुरवराजी । सं  
खेपै ते कज्ज सर्व ॥ ४ ॥ ॥ आप ॥ नुवन पति वीश इंद्रें मिट्या जी । सोलह  
व्यंतर सार । जोइश ड दश वेमाणिय जुड्या जी । चौसठ इंद्र सुविचार  
॥ ५ ॥ ॥ आप ॥ पवन सुरपुंज परमार जैजी । नूमि योजन समजाउ । मेघ  
कुमार रचै मेघनै जी । करीय सुगंध ठिमकाउ ॥ ६ ॥ ॥ आप ॥ अगर कपूर  
सुन्न धूपणाजी । करय श्री अगन कुमार । वांणव्यंतर हिव वेगसुं जी ।  
रचय मणिपीठका सार ॥ ७ ॥ ॥ आप ॥ पुज्जप पंच वरण ऊरध मुखै जी ।  
वरष ए जानु परिमाण । नवणवइ देव त्रिगडो नलो जी । करय ते सुणउ  
सुजाण ॥ ८ ॥ ॥ आप ॥ रचय गढ प्रथम रूपा तणोजी । सोवन कांगरै सा  
र । रवि शशि रयण कोसीसको जी । कनक नो वीय प्रकार ॥ ९ ॥ ॥ आप ॥  
रतन गढ रतननै कांगरै जी । रचय वेमाणि सुरराज । नलो बीजोगढ जी  
तरैजी । जीहां विराजै जिनराज ॥ १० ॥ ॥ आप ॥ जीतजुंची धणुं पांचसै  
जी । सवा तेत्रीस विसतार । धनुषसै तेरगढ आंतरोजी । प्रौल पंचास ध  
णु च्यार ॥ ११ ॥ ॥ आप ॥ दश पंच २ त्रिजुं गढतणी जी । पावमी वीश ह  
जार । थाक श्रम नहीय चढतां थकां जी । एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ ॥  
आप ॥ पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच्च रहै त्रिगढ आकाश । ते  
हतल सज्ज यथा स्थित वसै जी । नगर आराम आवाश ॥ १३ ॥ आप ॥

तोरण चिज्जं २ दिस तिहां जी। नील मणि मोरनिरमाण। इसय धणु मध्य  
 मणि पीठिका जी। उच्च जिण देह परिमाण ॥१४॥ आ०॥ चार आस  
 ए तिहां चिज्जं दिसंजी। मोतीयें ऊक ऊमाल। सम विचकूण ईसाणमें  
 जी ॥ देव ठंदो सुविसाल ॥१५॥ आ०॥ देव डंडनि नाद उपदिसें जी।  
 जिन गुण गावसी तेह। अहजिम आइंशिर ऊपरें जी। गाजसी तेह गुण  
 गेह ॥१६॥ आ०॥ (ढाल) सफल संसारनी ॥ ॐ ॥ पुवदिशि आसणें आइ  
 वेंसे पहू। सुररुत चोमुख रूपदेखे सज्ज। दीपें अशोक तरु वार गुण देह  
 श्री। देखि हरये सहू मोर जिम मेहथी ॥१७॥ मोतियां जालि त्रिण उच्च सु  
 विसालए। रूप चिज्जं चिज्जं दिसें चामर ढालए। योजन गामनी वांणि  
 श्री जिनतणी। जगवंत उपदिसें वार परपद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा  
 रूपथी अग्निकूणें करी। गणवर साधवी तिम बेमाणीय सुरी। ज्योतपी  
 नुवणनी बितरी स्त्री पणें। नैकृत कूण जिन बाणि ऊनी सुणें। त्रिज्जं तणा  
 पति बाय कूणमें जाणए। सुर बेमाणीय नर नारि ईसाण ए। वारह परप  
 दा मद महर ठेम ए। नूख त्रिप वीसरें सुणें कर जोमए ॥ १९ ॥ पूठ  
 जामंमल तेज प्रकास ए। जौयण सहस धज ऊंच आकास ए। ऊल  
 हलै तेज धुम चक्र गगनें सही। महक सज्ज वारणें धूप धांणा सही  
 ॥ २० ॥ बाहण वहिल सज्जधरीय पहिले गढे। होइ पग चारि नरनारि  
 ऊंचा चढे। जिन तणी बाणि सुणि जीव तिरजंच ए। बैर तजि वीय  
 गढ रहै सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरपते परपद वारमें। सुणें जिन  
 बाणि धन गणय अवतार में। चौविह देव जिण देव सेवा रचे। मणिम  
 यी मांहिली प्रोन्नमांहे वसे ॥ २२ ॥ चिज्जं दिसि बाटली बावि चो जाणी  
 यें। विदसि चोकूण दोइ २ बखाणियें ॥ आठ जिहां बावि जल अमृत  
 जेम ए। स्नान पाने वषु निरमल देम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत  
 अपराजिया। मध्य कंचण गढे प्रोन्न वसंतिया। तुंगरु पुरुष खट्वांग अर्चि  
 माल ए। रजतगढ प्रोन्नना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिल त्रिगमो नज्जअ  
 जिण पुर याम ए। देव महर्द्धिक रचे तिण ठाम ए। करण वारवार नंदी का  
 रण कोई ए। आठ प्रातीहारज ते सही होइ ए ॥ २५ ॥ जिण समवसर  
 एनी कूदि दीठी जीयें। तेह वन धन्य अवतार पायो तिये। पास अरदा



स सुणी वंछित पूरज्यो । हिव मुऊ ताहरो सुख दरसण ऊज्यो ॥ १६ ॥  
 ( कलश ) इम समवसरणें ऊद्विवरणें सहू जिनवर सारखी । सरद है ते  
 लहै सुख समकित परम जिन धर्म पारखी । प्रकरण सिद्धांत गुरू परंपर  
 सुणी सऊ अधिकार ए । संस्तव्यो पास जिणंद पाठक धर्म वर्द्धन धार  
 ए ॥ १७ ॥ इति समव सरण विचार जाणा गच्छिन्नत स्तवन ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ आवूजी तीर्थ महिमा स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ जात्रीमा जाई । आवूजीनी जात्र करे ज्यो । जात्र जणी उमहे  
 ज्यो । तुझे नरन्नव लाहो लीज्योरे ॥ जात्री० ॥ पंचतीर्थी मांहेटाजै ।  
 आवू मारूमै देस विराजैरे ॥ जा० ॥ स्वरगथी वादै लागौ । नुंचो अंवरीयै  
 जाइ लागोरे ॥ १ ॥ जा० ॥ एतो देवानो वास कहावै । निरखंता त्रिपति  
 नथावेरे ॥ जा० ॥ एतो डूंगरीयानो राजा । एहनीठे वारह पाजारे ॥ २ ॥  
 जा० ॥ ठहरितु वास वणाव्यो । एतो चंपला अंवलां ठायोरे ॥ जा० ॥  
 सरवर ऊरणा जाजा । जिहां तिहां वनवेढ्या आऊरे ॥ ३ ॥ जा० ॥  
 नार अठारे वणराई । एतो इहांहीज निजरे आईरे ॥ जा० ॥ दह दिस परमल  
 आवै । फूलमानो रंग सुहावेरे ॥ ४ ॥ जा० ॥ ऊपर झूमि विसाला । देव  
 ल दीठा रलीयालारे ॥ जा० ॥ विमल मंत्री वरदाई । चक्केसरि देवि सहाईरे  
 ॥ ५ ॥ जा० ॥ पोरबाम वंस वदीतो । जिण दल पतिसाही जीतेरे जा० ॥  
 देवल तेण करायो । पाहण आरास मंमायोरे ॥ ६ ॥ जा० ॥ जीणी१ कोरणी  
 जेस्यो । दल मांखण जेम उकेस्योरे ॥ जा० ॥ नवी१ जांतिवनाई । जिहां तिहां  
 कोरणीया जिणाईरे ॥ ७ ॥ जा० ॥ उत्तरै पाहणजेतो । जोषीजै पाहण ते  
 तोरे ॥ जा० ॥ आदिजिणेसर सांमी । प्रतिमा थापी हित कामीरे ॥ ८ ॥ जा०  
 उगणीस कोम सोनईया । द्रव्य लागति करि जस लीयारे ॥ जा० ॥ करजो  
 डीनें आगै । मंत्री जिनवर पाय लागैरे ॥ ९ ॥ जा० ॥ पूठै चढीया हा  
 थी । मंमाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल सम बडकोई । झूम  
 ल मांहि न होईरे ॥ जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला । वस्तुपाल  
 अनै तेजपालारे ॥ जा० ॥ देवनमी रिद्धिपाई । इहां तियां पिण सफल क  
 राईरे ॥ ११ ॥ जा० ॥ तेहवो जिणहर पासै । वारकोमनी लागति चासैरे

ज० ॥ देवराणी जेठाणी । आलानी अजब कहाणीरे ॥ १२ ॥ जा० ॥  
 इहां देवल सोह वधारी । नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारीरे ॥ जा० ॥ कसबट  
 पांहुण केरी । मरति सुरमा रंग हेरीरे ॥ १३ ॥ जा० ॥ देवल बामो दीठो ।  
 तेतो लागे नयण मीठेरे ॥ जा० ॥ तिहां केई देवल पासै । लोकजोवे घ  
 णों तमासेरे ॥ १४ ॥ जा० ॥ त्रिणगान आगल जाईयै । देवल देखी सुख  
 लहीयैरे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा च्यारो । आदिनाथ देव जुहारैरे ॥ १५ ॥  
 जा० ॥ सोवनमें साते धातो । किंग मिग रही दिनन रातेरे ॥ जा० ॥ म  
 ण चवदैसै चमालौ । जिण बिंवनो जाव निहालेरे ॥ जा० ॥ १६ ॥  
 श्रीमाली नोम सोनागी । जिणवरधी जसुलय लागीरे ॥ जा० ॥ एहनी  
 करणी बाह बाहो । इहांलीधो लखमी लाहोरे ॥ १७ ॥ जा० ॥ ए डुंगरी  
 ये आवी । जिण जात्रकरै मनजावीरे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावी ।  
 नाटकीया नाच करावेरे ॥ १८ ॥ जा० ॥ रातीजोगो दियरावो । जिणवर  
 ना जस गुण गावोरे ॥ जा० ॥ साहमी वच्छल कीज्यो । जातमलीनो ज  
 सं लीज्योरे ॥ १९ ॥ जा० आगेथी आवी चाली । वातां केई अचरिज  
 बालीरे ॥ जा० ॥ सुणीयैठे जे कोई । अहिनाणें जो ज्यो तेईरे ॥ २० ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ गुणगावे । जात्रानो फलते पावैरे ॥ जा० ॥ ए तीरथ स  
 म तोलै । कुणआवे रूप चंद बोलैरे ॥ २१ ॥ जा० इति आवूजी स्तवन ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ अथ श्रीशीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ नवी जिनपजोरे शीतल जिन पतीरे । नयना नंदन चंद । प्रभु  
 जी पिराजैरे सूरति विंदैरे । नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥ जग हितकारी  
 रे जिनजी अवतस्कारे । श्रीदृढरथ नृप मेह । श्रीवृत्त सोहैरे लांठन सुंदरूरे ।  
 कनकवर्ण प्रभुदेह ॥ २ ॥ ज० ॥ विषय निवारीरे संयम संग्रहोरे । लाधुं के  
 बल नांण । सघन घनावन जिमधम वरसतारे । विचर्या त्रिभुवन ज्ञाण  
 ॥ ३ ॥ ज० ॥ वेदनी प्रमुख जे सेप रसा ऊतारे । च्यार अवाती कर्म ।  
 दूर निवास्कारे अनुक्रम तेहनेरे । पाण्युं शिव पद सम ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्र  
 तिकाळैरे श्रीजिन राजनोरे । पूजीजै प्रतिबिंब । प्रतिदिन लहीधेरे प्रभु सुप्र  
 साद धीरे । वांछित फल अविश्रंय ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब वि

लोकतारे । डुकुत दूर पुलाय । इंद्रीयनिग्रह सुग्रह संपजैरे । समकित पिण्ड  
 ठ थाइ ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसज्जुना मुखथी सांजल्यारे । एहवा वचन वि  
 लास । ते बज्रमानेरे निज चित्तमें धर्यारे । नेमीसुत चाईदास ॥ ७ ॥  
 ज० ॥ चैत्य कराव्युरे सुंदर सोजतारे । मनधरि अधिक उदास । शी  
 तल प्रचुनोरे विंव जरावीयोरे । सहस फणा बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥  
 वरस अजरह सत्तावीसमेरे । माधव मास मऊार । उज्जल वादसी दिवसै  
 थापीयोरे । विंव अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी सज्ज ।  
 मैलै थयारे । विंवादिक सुविचार । कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनीरे । विधंपू  
 र्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्री जिनलान्न सूरेश्वर दीप तारे । श्रीखर  
 तर गज्ज जाण । तासपसाय में शीतल जिन थुएपारे । विबुध कृमाकल्पा  
 ण ॥ ११ ॥ ज० ॥ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अढाई दीप १० विहरमान स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ वंडुं मनसुध विहरमाण जिणोसर बीस । दीप अढीमें दीपै जै  
 वंता जगदीस । केवल ग्याननें धारै तारै करि नपगार । किण १ ठामें कु  
 ण २ जिन कहिस्सुं सुविचार ॥ १ ॥ पेंतालीस लक्ष जोयण मानुक्ष क्षेत्र  
 प्रमाण । बलियाकारै आधै पुरष्करसीमा जाण । दोय समुद्रे सोहे दीप  
 अढाई सार । तिणमें पनरै करमा जूमिनी कहुं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो  
 जंबूदीप समै विंच थाल आंकार । लांबो पिछलो इकलख जोयणनें विसतार ।  
 मोटो तेहनें मध्य सुदरशण नामें मेर । तिणथी दिसा विदिसांनी गिणती च्या  
 रे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिणदिसि एहजरत सुजक्षेत्र । पांचसै ठावीस  
 जोयण ठकला तेहनो क्षेत्र । उत्तरखंभमें एहवो ऐरवतक्षेत्र कहाय । इण  
 चिछं करमांजूमि अरा ठई फिरता जाइ ॥ ४ ॥ तेवीस सहस ठसै चौरा  
 सी जोयण जाण । च्यारकला ए महाविदेह विखंज वखाण । बावीससै तेरे  
 जोयण एकविजै पज्जलाण । एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहनं ठाण ॥ ५ ॥ मेरु  
 विचै कर पूरव पच्छिम दोय विजाग । सोलैं १ विजयतिहां विचरै श्रीवीतराग ।  
 सांसते चोथे आरै तारै श्रीअरिहंत । एहवे महाविदेह करम जूमि त्रीजीतंत  
 ॥ ६ ॥ पूरवविदेह विजै पुष्कलावति आठमी ठाम । पुंमरीकणीनगरी तिहां श्री

सीमंधर स्वांम । वप्रविजै पचीसमी विजया पुरनो नाम । पष्ठिम विदेह बीजो यु  
गमंधर काजै प्रणाम ॥७॥ तिमहीज नवमी वज्रविजै बलि पूरवविदेह । नयर सु  
सीमा बीजो वाज्र नमुं धरि नेह । नलिनावर्त चौबीसमी पष्ठिम विदेह वखाण ।  
वीतसोका नगरी तिहां चौथो सुवाज्र जाण ॥८॥ ए च्यारेई जिणवर जंबूदीप  
मऊार । महाविदेह सुदरशण मेरुतणें परकार । एहवो जंबूदीप महागढ  
जेम गिरंद । खाई रूपै दोइलख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥ (ढाल दीवाली  
दिन आबीयो एचाल ) ॥ दीपै बीजो दीपए । धन२ धातकीखंम । पिऊलो  
चिऊं लख जोयणे । मंमल रूपे मंम ॥१०॥ दी०॥ दोइ भरत दोइ ऐरवत ।  
दोइ बलि महाविदेह । करमजूमी पटठै जिहां । उणहीज नामें एह ॥११॥  
दी०॥ पूरव पष्ठिम धातकी । खंम गिणीजै दोइ । विजयमेरु पूरव दिसै ।  
पष्ठिम अचलमेरु जोइ ॥१२॥ दी०॥ इक२मेरुनें आंतरै । करमजूमि तीन  
२ । निज२ मेरुथी मांमिनें । लेखो चिऊं दिस लीन ॥१३॥ दी०॥ श्रीसुजात  
जिन पांचमो । ठवो स्वयंप्रभू ईस । रिपनानन जिन सातमों । समरीजे  
निस दीश ॥ ४ ॥ दी०॥ अनंत बीरज जिन आठमो । ए च्यारे जिन राय ।  
पूरव धातकी खंममें । महाविदेह रहाय ॥१५॥ दी०॥ पहिली विऊं जिननी  
पैरै । विजय नगर दिशिवाण । तिणहीज नामें अनुक्रमें । विजय मेरु अहि  
नाण ॥१६॥ दी०॥ नवमो सूर प्रभु नमुं । दसमो देवविशाल । इम वज्रधर  
इग्यारमों । त्रिकरण नमुं विऊंकाल ॥१७॥ दी०॥ बारमो चंद्रानन जिन ।  
पष्ठिम धातकी मांहि । विचरै च्यारे जिणवरा । अचलमेरु उठाहि ॥१८॥  
दी०॥ एहवो धातकी खंमए । परदक्षणा परकार । अवलख जोयण बीटीयो  
समुद्र कालोदधि सार ॥१९॥ दी०॥ (ढाल ३ पहिली प्रतिमा एकणमा  
सनी० एचाल) ॥ कालोदधिनें पैले पारए । बीव्यो चूमी जेम विचालए ।  
सोलह लख जोयण विसतारए । दीप पुष्कर वर अति सुखकारए । ( ३० )  
सुखकार पुष्कर दीप बीजो तेहनें आधिपगै । विचपड्यो परवत मानुपोत्तर  
मनुष्यकेव तदांलगै । तिण आधिकर अवलाख जोयण अरधपुष्कर एम  
ए । तिहां करमजूमी ठर कहीजै धातकी खंम जेमए ॥ २० ॥ (ढाल ) आ  
धै पुष्करनें पूरव दिसै । मंदरनामिं मेरु तिहांवसै । पष्ठिम विष्णुमाली मेरुए ।  
इहां किण इतरो नामें फेरए । ( ३० ) फेरए इतरो इहां नामें अवरठामें को

नहीं । एक एक मेरे तीन ताने करमझूमी तिहां कही । इम जरत ऐरवत महा  
 विदेहै नांमसरखो हेतए । तिणहीज नामें विजै सगली सासता धमखेतए  
 ॥ २१ ॥ (ढाल) धातकीखंमै तिम पुष्कर सही । इहां खेवांनी रचनां वि  
 ध कही । वार२ कहतांए विसतारए । पहिला परलेज्यो सुविचारए । (३०)  
 सुविचार वाकी तेहसगलो नगर तिमहीज मनगमें । पूरवै पछिम जेहनीते  
 तेह तिमहीज अनुक्रमें । श्रीचंद्रवाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तिर्थ करा ।  
 पूरवै पुष्कर अरधमांहे सरवजीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ (ढाल) बैरसेन वंडं  
 जिन सतरमो । श्रीमहाजद्र अठारम नित नमो । देवजसा उगणीसम देव  
 ए । जसोरिध वीसम जिण देवए । (३०) जिणच्यार पुष्कर अरध मां  
 हि कल्या पछिम जागए । तिहां मेरु विद्युन्मालि चिऊंदिशि विचरता वीत  
 रागए । चौरासी पूरवलाख वरसां आउ इक२ जिनतणो । पांचसै धनुष  
 सरीर सोहे सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ (ढाल) कालजघन्यै एजिण  
 वीसए । हिव उतकृष्टे जेदकहीसए । एकसो सत्तरि तिहां जिणवर कहै ।  
 पांचे जरते जिमपांचे लहै । (३०) जिणलहै पांचे तेमपांचे ऐरवत मि  
 ल दशजवा । इक२ विदेहै वत्तीस विजया तिहां पिणठै जू जू आ । एक  
 सो सत्तरि एम जिनवर कोमिनवसय वलि केवली । नव सहस कोमी अवर  
 मुनिवर बंदीयै नित ते वली ॥ २४ ॥ (ढाल) इहां जरतें ऐरवतें आजए  
 पांचमें आरे नहीं जिनराजए । धन२ पांचे महाविदेहए । विचरै बीसे जिन  
 गुणगेहए । (३०) गुणगेह दोष अठार वरजित अतिसया चौतीसए ।  
 चौसठि इंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीसए । तिहां आज तारण तरण  
 विचरै केवली दोय कोमए । दोईसहस कोमि सुसाधु बीजा नमुं वे कर जो  
 मए ॥ २५ ॥ (कलश) इम अढीदीपै पनर करमाझूमि खेत्र प्रमाणए । सि  
 धांत प्रकरण मांहाण्या वीस वेहरमाणए । श्रीनगर जेशलमेर संवत  
 सतर गुणतीसै समै । सुख विजय हरष जिणद सानिध नेहधरि धमसीनमें ॥  
 ॥ २६ ॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मझूम्यादि विचार गर्जितं विंशति विहरमा ए  
 जिनानां वृद्धिस्तवनं ॥ ❀ ॥ १ जंबुद्वीप, २ धातकी खंम, आधो पुष्करद्वीप,  
 एवं २॥ द्वीपमें ५ जरत ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्मझूमिमें विचरता  
 सासता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सकल शास्वताचेत्य नमस्कार स्तवन ॥

॥ ॐ ॥ (ढाल बेकर जोमीतांम एचाल) ॥ रिपजानन व्रवमांन । चंद्रोनन  
जिन । वारिपेण नामें जिणाए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद । त्रिजुवन सासता ।  
प्रणमुं विंव सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोमि । लाख वज्रत्तर । चे  
ईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि । साठ लाख सुंद  
र । जुवनपती मांदि मन वसीए ॥ ४ ॥ वारे देव लोक प्रासाद । चौरासी  
लाख । सहस ठिबूनें सातसैए ॥ ५ ॥ (ढाल २ आव्यो तिहां नरहर एचाल)  
॥ ॐ ॥ द्विवे नव ग्रीवेकें पंचानुत्तर सार । चेईहर व्रणसय त्रेवीसा सुविचार  
प्रत्येकें प्रतिमा बीसासो तिहां जाण । अम्वीस सहस सत साठ अठे गु  
ण खाण ॥ ६ ॥ नंदीसर गांवन कुंमल रुचिक वखाण । चक्र २ चेई हर  
साठ सवे त्रिजं गाण । इकसो चौबीसे गुण प्रतिमा चिज्जनांम । च्यारसे  
चालीसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसे सोलस कुलगिरि  
तीस । मेरुवन अस्सी दस कुरु गजदंते बीस । मानुपोत्तर परवत च्यार २  
इखुकार । असो अति सुंदर वक्षसकार मजार ॥ ८ ॥ (ढाल ३) ॥ दिग्गज  
गिरचालीस । असीद्रह सुजगीस । कंचन गिर वरुए । एक सहस धरुए  
॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ बैताढ्य । बीस सतरसो आढ्य । सतर महानदीए । पं  
च चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरुख । इग्यारसे सत्तर सुख । कुं  
म्वणसय असीए । बीस जमग वसी ए ॥ ११ ॥ (ढाल ४) ॥ त्रिण सहस सो  
एक निवांणरे । जिनवर प्रासाद वखाणू । बीस सो ए अंक गुणीयेरे । ती  
र्थकर प्रतिमा धुणीये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस बलि च्यारसीरे । प्रतिमा  
आठ सोन असी । सरवाल सव मेली जेरे । जिनवर प्रासाद नमीजे ॥ १३ ॥  
आठ कोमि सत्तावन लकरवारे । दोयसे निव्यासी कयरुखा । द्विव प्रतिमा  
ग्यांन कदीजेरे । जिनवरनी आण बहीजे ॥ १४ ॥ पनरसे बैतालीस को  
मीर । अम्वन लख अधिके जोमी । उतीस सहस अधिक कदीयेरे । प्रति  
मा सगली सरदहीये ॥ १५ ॥ (ढाल ५ मी) ॥ जोइस विंतर प्रतिमा सा  
सती । असंख्यात बलि जेहोजी । पाय कगल तेहना नित प्रणमीये । सो  
वन वरण सुदेहोजी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा बंदीये । सुंदर सकल  
सरूपोजी । पूजे प्रतिमा चोविह देवता । बलिप विद्याधर नूपोजी ॥ २ ॥

वि० ॥ जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी । हित सुख मोक्ष नी दानोजी । न  
वियणनें नवसायर तारवा । प्रवहण जेम प्रधानोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाग्नि  
गम प्रमुख मांदि प्राणीयो । एसज्ज अस्थ विचारोजी । सांजलितां नण  
तां सुख संपदा । हियमै हस्य अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० (कलश) ॥ इम सास  
ता प्रासाद प्रतिमा संथुएपा जिनवर तणा । चिज्जं नांम जिण चंद तणा  
त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा । वाचना चारज समय सुंदर गुणज्जणें अजिरा  
मए । त्रिज्जं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा मुज्ज परणामए ॥५॥  
इति शास्वता जिनचैत्य विंवसंख्या स्तवनं ॥५॥ ॥५॥ ॥५॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन विंव नमस्कार स्तवन ॥

॥ ५॥ (देशी सूरती) प्रहज्जठी प्रभु ध्यानधरुं नमुं सिद्ध अनन्त । त्रिभुवन  
मांहै नमणकरुं जेविंवरहंत । भुवन पति व्यन्तर योतषि वैमानिक मांहै । अ  
द्भुत सास्वता विंवनमुं मनधरि उज्जाह ॥१॥ पंचमेरु वेताढ्य हिमाचल निषध  
प्रमाण । नीलवंत चित्रसेल कुंमल गजदंत वखाण ॥ रुचक नंदीसर मानु  
षोत्तर आदि सास्वता जाण । शिष्यानन चंद्रानन वारिपेण ब्रधमाण ॥३॥  
आठकोड अरुठप्पन लाख सताणुं हजार ॥ चवसै ठ्यासी चैत्य सास्वता  
मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोम मिलाय । तेपन लख  
चवसै अव्याशी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मते आठकोम सता  
वन लाख । दोयसै अठाणुं त्रिभुवनमां सज्जचैत्यनी साख । अठावन लख  
पनरैसै वयालीसकोम । अडतीस सहस विंवसज्ज सतअसीकी जोम ॥४॥  
मगध कोसल अंग वंग कलिंग काशी कुरुदेस । सोरठ कन्न विदेह जां  
गल कुसावर्त कहेस । जंग सोबीर वैशट मलय सांमिल सूरसेन । वरण  
पंचाल दशार्ण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससज्ज  
केकड़ अर्ध जाण । साढा पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधान । दोय  
कोम अठावन लाख ठ्यासी हजार । नवसै तिज्जुत्तर ग्राम नगर मांहै विं  
वअपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्वीप सहू आर्य होय । धातकी  
खंम सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्ध पुष्करमांहें देस गि  
णाय । ग्राम नगर मांहै विंव अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धशेख उज्जिं

त शिखरगिरि मोटाधाम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठाम । तारंगा  
अबुंद राजग्रही क्षेत्र प्रमाण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगजाण ॥ ८ ॥  
दीप असंख्या जल थल पवंत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण स्यण  
सज्ज विंवरहाय । इम त्रिजलोक असास्वती सास्वती थापना देख । त्रि  
करण सुद्धे नित प्रति प्रणमं सज्ज गुण लेख ॥ ९ ॥ थापना जगवंते कही  
आगम मांह प्रमाण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखो सुजाण । जे  
जन्सुत्र वचनके जापक जासी निगोद । अनंत काल जमतां क्षणभर नहिं  
पामें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रभुनी देखी जविपामें बोध । आद्र कु  
मरकी रीते देखो आगम सोध । द्रव्यज्ञाव विधिसंयुत सुर नर पूजै जेय ।  
गुण पिंमस्य पदस्य रूपस्य रूपातीत लेख ॥ ११ ॥ रिपनादिक चौबीस  
तिर्यकर नमं मन लाय । गणधर सज्ज संघ मंगलकारी नित प्रति थाय ।  
जन्म मरण सज्ज डख दूरे करो दीनदयाल । गच्छ खरतर गुरु लक्ष्मीप्रधान  
न मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
इति त्रिचुवन मंत्रण सर्वे जिन विं व नमस्कार स्तवनं ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ हारे जंतो जरवागईथी बटजमुनाके तीरजो ० एचाल ॥ हारे  
हारे धरमजिणं दसुं लागी पूरण प्रीतजो । जीवमलो ललचाणो जिनजीनी  
उंजगरेलो । हरिमुनं धारुण कोइक समंप्रभु सुप्रसन्न जो । वातमलीतवथारुपे  
महारी सवि वगेरेलो ॥ १ ॥ हरिकोई उज्जननो जंजेखो माहरो नाथजो । उंजव  
स्ये नहिं कपारे कीची चाकरीरेलो । हरिमोरा स्वामीसरीपो कुणठे डनियां माहिं  
जो । जईयेरे जिम तेहनें घर आस्थाकरीरेलो ॥ २ ॥ हारे जस सेव्यासेती स्वार  
थनी नसिद्धजो । ठालीरे सीकरवी तेदथीगोठडीरेलो । हारेकांई फूनुंखाइते मि  
ठाइनें माठेजो । क्याहीरे परमारथनी नहि प्रीतडीरेलो ॥ ३ ॥ हरिप्रभु अंतरजां  
मी जीवतप्राणाधारजो । वायोरे नवि जाएयो कलियुग वायोरेलो । हारे मोरा  
लायक नायक जगति वज्रल जगवानजो । गारूरे गुणकेरा साहिव  
सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हारेप्रभु लागी मुऊनें ताहरी माया जोरजो । अन्न  
गारे रसाथी होइज जोगलोरेलो । हारे कुण जाणें अंतर गतिनी विण



महाराजजो । हेजेंरे हसी वोखो ठंमी आंमलोरेखो ॥ ५ ॥ हारेताहरे  
 मुखनें मटकें अटक्यूं माहरूं मन्नजो । आंखमली अणीआली कांमण  
 गरीयुरेखो । हारे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुळजो । रातीरे  
 प्रभुरागे नरहे वारीयारेखो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा तोपिण जाणज्यो करीनें  
 हजूरजो । ताहरीरे वलिहारी ऊंजानं वारणेरेखो । हारे कवि रूपविवुधनो मो  
 हन करै अरदासजो । गिरूआ थई मन आणो ऊलट अतिघणारेखो ॥ ७ ॥  
 इति श्री धर्म नाथ जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकित द्वारगुंजारे पेसतांजी । पापपडल गयादूरे । मोहन मारुदे  
 वीनो लामलोजी । दीठो मीठो आनंदपूरे ॥ १ ॥ सण ॥ आयूवरजित सातिकर्म  
 नीजी । सागर कोमा कोमि हीणरे । स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी । वीरज  
 अपूरवनो घरलीधरे ॥ २ ॥ सण ॥ झुंगलजागी आद कषायनीजी । मिथ्यातमो  
 हनी सांकलसाथरे । बार उवामा सम संवेग नांजी । अनुभव चवनें वेठो नाथरे  
 ॥ ३ ॥ सण ॥ तोरण बांधु जीवदया तणुंजी । साथीयो पूरो सरधारूपरे । धूपघ  
 ठी प्रभुगुण अनुमोदनाजी । विगुण मंगल आठ अनूपरे ॥ ४ ॥ सण ॥ सं  
 वरपांणी अंगपखालणेंजी । केशर चंदन उत्तम ध्यानरे । आतम गुण रुची मृग  
 मद सह महेंजी । पंचाचार कुशम परधानरे ॥ ५ ॥ सण ॥ जाव पूजानें पा  
 वत आतमाजी । पूजो परमेसर पुंन्यपवित्रे । कारणजोगें कारज नीपजेजी  
 खिमा विजय जिन आगम रीतरे ॥ ६ ॥ सण ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्णः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी । नाम जपुंनिसदीसजी । च  
 त्तारी अठ दश दोय बंदियाजी । चिऊंदिस जिन चौबीसजी ॥ १ ॥ मण ॥ जो  
 जन जोजन अंतरेंजी । पावम साळा आठजी । आठ जोजन ऊंचो देहरोजी  
 डुख दोहग जाये नाठजी ॥ २ ॥ मण ॥ जरतें जराव्या जलां देहराजी । सोनै  
 प्यारा थंनजी । आप मूरति करे सेवनाजी । जाणो जोईजै ऊन्नजी ॥ ३ ॥ मण ॥

गौतमस्वामि तिहां चढ्याजी । आंणी चागीरय गंगजी । गोत्र तीर्थकर वां  
धियोजी । रावण नाटक रंगजी ॥४॥ म०॥ देवे नदीधी मुऊने पांखमीजी ।  
आवुं केम हजूरजी । समय सुंदर कहै वंदनाजी । प्रह ऊगमते सूरजी ॥५॥  
म० ॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अनंत जिन आपज्योरे) ॥ एचाल ॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे  
तुऊ अनंत अपार । तेशांजलतां ऊपनीरे । खचि तिण पारउतार ॥१॥ अजि  
तजिन तारज्योरे । तारज्योदीन दयाल । अजित जि० (आंकणी०) जे जे का  
रण जेहनेरे । सांमग्री संयोग । मिलतां कार्य नीपजैरे । कर्त्ता तनय प्रयोग  
॥ २ ॥ अ० ता० ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसुरे । लहि कारण संजोग । निज  
पद कारक प्रभु मिहपारे । होय निमित्त मजोग ॥ ३ ॥ अ० ता० अ०  
अज कुल गत केसरी लहैरे । निज पद सिंघ निहाल । तिम प्रभुजक्तें नधि  
लहैरे । आतिम शक्ति संजाल ॥ ४ ॥ (अ० ता०) ॥ कारण पद कर्त्ता पणैरे  
करि आरोप अनेद । निज पद अर्थी प्रभुयकीरे । करें अनेक उमेद ॥ ५ ॥  
(अ० ता० अ०) अहवा परमात्म प्रभुरे । परमानंद स्वरूप । स्पाबाद सत्तार  
सीरे । अमल अखंम अनूप ॥६॥ (अ० ता० अ०) आरोपित सुख भ्रमट  
ल्योरे । नास्यो अव्यावाध । समस्यो अजि लाखी पणोरे । कर्त्ता साधन साध्य  
॥ ७ ॥ अ० ता० अ० ॥ ग्राहकता स्वांमिहपारे । व्यापक भोक्ता नाथ । का  
रणता कारज दशारे । सकल प्रभुं निज नाव ॥ ८ ॥ अ० ता० अ० ॥  
अज्ञा नासन रमणतारे । दांनादिक परिणाम । सकल थया सत्तारसीरे । जिन  
वर दरशन पांमि ॥ ९ ॥ अ० ता० अ० ॥ तिणें निर्यामक माहणोरे । वैद्य गो  
प आधार । देवचंद्र सुख सागरूरे । नाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ता०  
अ० इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ सिंहायमाळा लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ ढंढण रिज्जीने वंदणा ॥ ऊंवारी ॥ उतकष्टो अणगारे ॥  
ऊंवारी लाल ॥ अजिग्रहलीयो एद्वो ॥ ऊं० ॥ लेस्युं सुख आहारारे ॥  
॥ ऊं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊत्रे गोचरी ॥ ऊं० ॥ नमिले शुख आ-  
दारारे ॥ ऊं ॥ मूल नळे अणसूक्तो ॥ ऊं० ॥ पंजर कीयो गातारे ॥ ऊं०

॥ २ ॥ ठं० ॥ हरिपूठै श्रीनेमिने ॥ जं० ॥ मुनिवर सहस्र अठारै ॥ जंवा ॥  
 उत्कृष्टो कुण एहमै ॥ जं० ॥ मुऊनें कहो विचारै ॥ जंवा० ॥ ठं० ॥  
 ॥ ३ ॥ ठं० अधिको दाखियो ॥ जं० ॥ श्रीमुख नेमि जिणंदरे ॥ जं० ॥  
 कृष्ण ऊमासो वांदवा ॥ जं० ॥ धन जादव कुल चंदरे ॥ जं० ॥ ४ ठं० ॥  
 गलियारें मुनिवर मित्या ॥ जंवा० ॥ वांद्या कृष्णनरेसरे ॥ जं० ॥ कीणही  
 मिथ्यात्वी देखनें ॥ जं० ॥ आय्यो ज्ञावविसेसरे ॥ जं० ॥ ५ ठं० ॥ मुऊ  
 घरआवो साधुजी ॥ जं० ॥ ल्यो मोदक ठै सुखरे ॥ जं० ॥ मुनिवर विहरीनें  
 पांगुखा ॥ जं० ॥ आया प्रभुजीनें पासरे ॥ जं० ॥ ६ ठं० ॥ मुऊलव  
 धै मोदक मित्या ॥ जं० ॥ श्रीपति लवधि निधानरे ॥ जं० ॥ ७ ठं० ॥  
 एलेवा जुगतो नही ॥ जं० ॥ चाल्या परठवा काजरे ॥ जं० ॥ ईठनिवाहें  
 जाइनें ॥ जं० ॥ चुरै करम समाजरे ॥ जं० ॥ ८ ठं० ॥ आणी चढती  
 ज्ञावना ॥ जं० ॥ पाय्यो केवलनाणरे ॥ जं० ॥ ठं० एरिषि मुगतें गया  
 ॥ जं० ॥ कहै जिन हरष सुजाणरे ॥ जं० ॥ ९ ठं० ॥ इति ठं०  
 मुनी सिंशाय संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ धनारिषि सिंशायलि ॥ ॥

॥ ॥ श्रीजिन वाणीरे धन्ना । अमीय समाणी मोरा नंदन । मन  
 मैतो मानीरे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तुं अतिही बैरागीरे धन्ना । धरमनो  
 रागी मोरा नंदन । माहरो तो मनमोरे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस  
 दिसि दीसै रे धन्ना । तो विनसूनी ( मो० ) । अनुमति देतारै जीन  
 वहै नही ॥ ३ ॥ वतीसे नारीहो धन्ना । अतिही पियारी । ( मो० ) ।  
 वाणी तो बोलैरे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालकतो कामणीरे धन्ना । वय  
 पिण तरुणी । ( मो० ) । गज गति चालैरे चाल सुहा वणी ॥ ५ ॥ ए  
 घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । ( मो० ) कोमिवतीसे धननों तूं धणी  
 ॥ ६ ॥ ए धन माणोरे धन्ना । वय पिण जाणो । ( मो० ) जोगवि ले-  
 ज्योरे जोग सुहा मणो ॥ ७ ॥ वत अति दोहिलोरे धन्ना । नहीय सुहेलो  
 ( मो० ) । सुगम नही ठैरे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर घर जिह्वा हो धन्ना  
 गुरुतणी सिख्या । ( मो० ) कहनी तो रहणीरे नही ठै सारबी ॥ ९ ॥ इक

वारें सुणीये हो धन्ना । आगम जणीये । ( मो० ) । जिनवर जाणोहो  
 डुकर जोगठे ॥ १० ॥ वनवासै रहणा हो धन्ना । परीसह सहनो । ( मो० ) ।  
 कोमल केसारे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाप्यो हो अम्मा । ऊ  
 ठन आख्यो ( मोरी अम्मा ) । डुकर मारग जननी दाखीयो ॥ १२ ॥ सुख  
 अजिलापी हे अम्मा । फूठन आखी । ( मोरी अम्मा ) । कायरमारग जननी  
 दाखीयो ॥ १३ ॥ एजग स्वारथी हे अम्मा । नही परमारथि । ( मोरी अम्मा )  
 वीर वखाएयोरे परपदा सज्ज सुण्यो ॥ १४ ॥ में इम जाण्यो हे अम्मा ।  
 वीर वखाएयो । ( मोरी अम्मा ) । एधन जोवन आऊ थिर नही ॥ १५ ॥  
 अनुमति दीजे हे अम्मा । ढीलन कीजे । ( मोरी ) । जोखिण जाइसु फिर  
 आवें नही ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा । जीव सुखपायो ॥ ( मो० )  
 संजम लीधोरे मनमां गह गह्यो ॥ १७ ॥ ठठ २ पारणें हे अम्मा । विग  
 य निवारण ॥ ( मो० ) ॥ वीरवखाएयो सुरनर आगले ॥ १८ ॥ सुख सं  
 जम पाले हे अम्मा । दूषण टाले ॥ ( मो० ) ॥ अंग इग्यारह अरथ रू  
 मा जणें ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नव पल वाम ॥ मो० ॥  
 मास संधारे हो सरवारथ सिद्धि लख्यो ॥ २० ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥  
 इति श्रीधन्नाकृपि सिञ्जाय संपूर्णम् ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ कर्म सिञ्जाय लिख्यते ॥ \* ॥

॥ \* ॥ देव दानव तीर्थकर गणधर । हरिहर नरवर सवल्ला । कर्म प्र  
 माणें सुख दुख पाय्यां । सवल ज्जवा महा निवलारे प्राणी । कर्म समो  
 नही कोई ॥ १ ॥ आदी सरजीनें कर्म अटाल्या । वरस दिवस रत्ना  
 झूला । वीरनें वारें वरस दुख दीवा । उपना ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्रा० क० ॥  
 साठ सहस सुत मात्ता एकणदिन । जोध जुवान नर जैसा । सागर ज्जवो  
 महापुत्रनो डुखियो । कर्म तणा फल ऐसारे ॥ प्रा० ॥ ३ क० ॥ वत्रीस  
 सहस देसारे साहिव । चक्री सनत कुमार । सोले रोग शरीरमें उपना ।  
 कर्म कीयो तनु ठारे ॥ प्रा० । ४ क० ॥ कर्म ह्वाल कीया हरीचंदनें  
 वेची सुतारा राणी । वार वरस लगमाये आण्यो । नीच तणें घर पाणीरि  
 प्रा० ॥ ५ क० ॥ दधिवाहन राजानी वेटी । चावी चंदनवाला । चौपदज्यं

चोहटामें बेची । कर्म तणा ए चालारे ॥ प्रा० ॥ ६ क० ॥ संचूम नामें आ  
ठमो चक्री । कर्म सायर नाख्यो । सोलैं सहस जह्नु ऊजा देखै । पिण  
किणही नविराख्येरे ॥ प्रा० ॥ ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें वारमो चक्री । क  
र्म कीधो आंधो । इमजाणी प्राणी थेकाइ । कर्म कोई मति बांधेरे ॥  
प्रा० ॥ ८ क० ॥ ठप्पन कोम यादवनो साहिव । कृष्ण महाबल जाणी ।  
अठवी मांहि मूवो एक लमो । बिल ९ करतो पाणीरे ॥ प्रा० ॥ ९ क० ॥  
पांख पांच महा कूजारा । हारी द्रोपदा नारी । वारै वरस लग वन रम  
बनिया । नमिया जेम नीख्यारीरे ॥ प्रा० ॥ १० क० ॥ बीस जुजा दस  
मस्तक जुंता । लखमण रावण माखो । एक लमै जग सज्ज नर जीत्यो  
ते पिण कर्मसुं हाखोरे ॥ प्रा० ॥ ११ क० ॥ लखमण राम महा बल  
वंता । अरु सतवंती शीता । कर्म प्रमाणे सुख दुख पास्या । बीतक बज्ज  
तसबीतारे ॥ प्रा० ॥ १२ क० ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा । बेटे बांध्यो  
मुसकै । धरमी नरनें करम धकायो । करमसुं जोरन किसकरे ॥ प्रा० ॥  
१३ क० ॥ संतीय सिरोमणी द्रौपदा कह्यै । जिन सम अवसन कोई ।  
पांच पुरुषनी जुइ ते नारी । पूरव कर्म कमाईरे ॥ प्रा० ॥ १४ क० ॥  
आज्ञानगरी नो जे स्वामी । साचो राजा चंद । माई कीधो पंखी कूक  
डो । कर्म नाख्यो ते फंदेरे ॥ प्रा० ॥ १५ क० ॥ ईशरदेव पारवती नारी  
करता पुरुष कहावै । अहिनिस महिल मसाणमें बासो । निख्या जोजन  
खावैरे ॥ प्रा० ॥ १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रातदिवस रहै  
अटतो । सोलकला ससिधर जगचावो । दिन ९ जायें घटतारे ॥ प्रा०  
१७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर कर्म । जांज्या ते पिण साजा ।  
इधि हरष करजोमीनें वीनवै । नमो ९ करम महाराजारे ॥ प्रा० ॥ १८  
क० ॥ इति श्री कर्मसिंहाय संपूर्णम् ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ अथ शीता सिंहाय लि० ॥

॥ ✽ ॥ जल जलती मिलती घणीरे । जालो जाल अपाररे । सुजाण  
शीता । जाणें केसू फूलियारे लाल । राता खैर अङ्गाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ धी  
ज करै सीतासतीरे लाल । सीद्ध तणें परिमाणरे ॥ सु० ॥ लखमण राम

खुशीथयारे लाल । निरखे राणो राणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल  
जलेरे लाल । पावक पासै आयरे ॥ सु० ॥ ऊनी जाणै सुरङ्गनारे लाल ।  
अनुपम रूप दिखायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया घणारे लाल । ऊ  
जा करै हाय हायरे ॥ सु० ॥ नस्म ऊसी इण आगमैरे लाल । राम करै  
अन्यायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांठयो ऊवैरे लाल । सुपनैही हीज  
कोयरे ॥ सु० ॥ तोमुऊ अगनि प्रजालज्योरे लाल । नही तो पाणी होयरे  
सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पैठी आगमैरे लाल । तुरत अगनि थयो नीरे ॥ सु० ॥  
जाणै ब्रह्म जलसुं नखोरे लाल । ऊल्लै धरम सुधीरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव  
कुशम वरपा करैरे लाल । एह सती सिरदाररे ॥ सु० ॥ शीता धीजै ऊतरी  
रे लाल । साख नरैसंसारे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सऊको थयारे लाल ।  
सगले थया उग्रंगरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुसी थयारे लाल । शीता  
शील सुरंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहें जस जेहनोरे लाल । अविचल शील  
कहायरे ॥ सु० ॥ कहै जिन हरप सती तणारे लाल । नित प्रणमी जै पा  
यरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति शीतासती सिञ्जाय समाप्तम् ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

अरूप  
॥ अर्थ नार्थी रूपि सिंहाय लि० ॥

॥ ✽ ॥ श्रेणिक रय बानी चढ्यो । पेखियो मुनी एकंत । वर रूप कां  
तै मोहियो । राय पुठेरे कहैरे विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय ऊंरे अनाधीनि  
अर्थ । तिणमैं लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥ (श्रे०) ॥ इण कोसंबी नगरी  
वसैं । मुऊपिता परधल धन । परवार पूरै परबखो । ऊं तुं तेहनोरे पुत्र  
रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुऊ वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात  
पिता सऊ तूरी रक्षा । तोही पिणरे समाधि न आय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
गुणमन उरमी । उरमी अवला नार । कोरमी पीमामें सही । नही कीधीरे  
मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वऊ राज वेद्य बुलाइया । कीधला कोमि उ  
पाय । वावना चंदन लेइया । पिण तोहीरे दाह नविजाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥  
वेदना जो मुऊ उपसमें । तो लेवुं संजम नार । इम चिंतवतां वेदन गई ।  
व्रत लीधोरे दरप अपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जग मांहि को केहनो नही । तेज  
णी ऊंरे अनाथ । वीत रागनो धरम बाहरो । कोइ नहीरे मुगतिनो साथ

श्रेण ॥ ७ ॥ करजोमी राजा गुणस्तवै । धन धनतुं अनगार । श्रेणिक सम  
 कित तिहां लहै । वांदी पुंहेचै नगरमऊार ॥ श्रेण ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी  
 गावतां । कर्मनी तूटै कोमि । गणि समय सुंदर तेहना । पाय वांदैरे वे  
 करजोमि ॥ श्रेण ॥ ९ ॥ इति अनाथी मुनी सिञ्जाय समाप्तम् ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ प्रतिक्रमण सिंशाय लिण ॥

॥ ❀ ॥ करि पन्तिकमणो जावसुं । दोयधमी सुज जाण ॥ लाखरे ॥  
 परजवजातां जीवनें । संबल साचो जाण ॥ लाखरे ॥ १ ॥ (करि पन्तिकम  
 णो जाव सुंण) ॥ श्रीमुख बीरसमुच्चरे । श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ लाण ॥  
 लाखखमी सोना तणी । दीयै दिन प्रतिदान ॥ लाण ॥ २ (करिण) ॥ लाख  
 बरस लग तेहने । इम दीयै द्रव्य अपार ॥ लाण ॥ ३ (करिण) ॥ लाख  
 ला । नावै तेह लगार ॥ लाण ॥ ४ (करिण) ॥ सामायक परसादथी ।  
 लहीयै अमरबिमान ॥ लाण ॥ धरमसीह मुनिवर कहे । मुगति तणो ए नि  
 दान ॥ लाण ५ (करि) ॥ ❀ ॥ इति प्रतिक्रमण सिंशाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सप्तव्यसन सिंशाय प्राण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सात विसननारे संग मतां करो । सुण तेहनों सुविचार ॥ विवे  
 की ॥ सात नरक नारे जाई सातेई । आपै डक्ख अपार ॥ विवेकी । १  
 साण ॥ प्रथम जुवानेरे विसनपड्यां थकां । पांमव पांच प्रसिद्ध ॥ विवेकी ॥  
 नलराजा पिण इण विसनें पड्यो । खोइ सहू राज रिद्ध ॥ विण १ साण ॥  
 डसरै मांस नहण अवगुण घणां । करै परजीव संहार ॥ विण ॥ महा स  
 तकनी नारी रेवती । नरक गई निरधार ॥ विण ३ साण ॥ तीजै मदरा पा  
 न विसनतजी । चितधरी बली चाह ॥ विण ॥ दीपायणरिष डहव्यो जाद  
 वै । चारकानो थयो दाह ॥ विण ४ साण ॥ चोथै विसनें वेश्यावर बसै ।  
 लोकमें न रहै लाज ॥ विण ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो । कुविसनें  
 रे काज ॥ विण ५ साण ॥ पाप आहेमैं कुविसन साचवै । प्राणी हणीयें  
 प्रहार ॥ विण ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो । पहिली नरक प्रसिद्ध ॥  
 विण ६ साण ॥ ठै चोरीनें विसनें करी । जीव लहै डक्खजोर ॥ विण ॥

मुंज देवराजायै मारीयो । चाबो जून्क चोर ॥ वि० ७ सा० ॥ परत्नीय सं  
गत कुविसनसातमें । हाणि कुजस वज्र होय ॥ वि० ॥ राणो रायण शीता  
अपहरी । नास लंकानेरे जोय ॥ वि० ८ सा० ॥ इम जाणी जव्य तुमे आ  
दरो । सीख सुगुरुनिर सार ॥ वि० ॥ इण जव परजव आणंद अति घणा ।  
कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ९ सा० ॥ इति ॥ ॥॥ ॥॥

### ॥॥॥ अथ उपदेश सिंहाय लि० ॥॥॥

॥॥॥ दमका नाहि जरोसा साहै । करले चलनेका सामान ॥ १ ॥  
तन पिंजरसैं निकश जाइगा । तिनमें पंठी प्राण ॥ द० १ ॥ लख चौरासी  
जोजन जटायो । उपनो गरजा धान । सवानवमास वश्यो अंधकूपमें । मनु  
प्परूप सनमान ॥ द० २ ॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है ॥ सुखमें खाण अ  
व्याण । नीरपम्यां तेरे कोइयन साथी । साथी दान अरु ध्यान ॥ द० ॥  
॥ ३ ॥ आशा विज्ञानां विकथा निद्रा । कुमता रूपनिधान । दिन २ वधे  
पापकी संगत । व्यापै क्रोध अरुमान ॥ द० ॥ ४ ॥ चलते फिरते सोवत  
जागत । करत खाण अरुपाण । तिन २ आयु घटतहे तेरो । होत देहकी  
हाण ॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपत्त में । होय रक्षा गलता  
न । देखत २ बिनस जायगा । मतकर मान गुमान ॥ द० ॥ ६ ॥ ऊठा सब  
यह जगत पसारा । नारी विपकी खान । माया ममता आदिके बेरी ।  
इनसैं कहा पहचान ॥ द० ॥ ७ ॥ पांचूं चोर मुंसैं घर तेरो । इन की  
रोटी बाणि । अठबेरी तेरे संग फिर तुहे । मोह बन्ना सुलतान ॥ द० ॥  
॥ ८ ॥ कोइ रहणें पावे नही जगमें । यह तु निहये जानि । अजजं ठां  
मि समझि कुटलाई । मूरख तर अज्ञान ॥ द० ॥ ९ ॥ जाई बंध अरु स  
जन संबंधी । राखें तेरा मान । अंतसमें कोइ कामन आवे । किसै मान  
गुमान ॥ द० ॥ १० ॥ जप तप शील पावो सुन संगत । देह सुपात्रे  
दान । सहित साथ चरण चितलवावो । प्रभु जज तज अजिमान ॥ द० ॥  
॥ ११ ॥ इति उपदेश सिंहाय संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
॥॥ जंजं बिहिणा बिहिअं । तंतं परिणमइ सयल लोपरस । इह जा  
णे बिणुपीरा । बिज्जेवि नकापरा ऊंति ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥



## ॥ अथ बाहूवलजीनी सिंहाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ ईमर आंवा आंवलीरे । एचाल ॥ ❀ ॥ बाहूवल चारित ली  
 योरे । साचो धरिवैराग । नरतेसर इम वीनवैरे । वार १ पाय लाग । हरष  
 नर मुऊसुं बोलज्योरे ( थानै बाबाजीरी आण । थानै रूपन देव जीरी  
 आण । थेतो मकरो खेचा ताण । थेतो माहरै जीवन प्राण ) । हरष० ।  
 मुऊ सुंबो० । ( आंकमी ) ॥१॥ ऊंतो जाई ताहरोरे । जेमै कीधो दोस ।  
 तो पिण खमज्यो जाई मारे । गरुवा नकरै रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बां  
 ह देई मिलारे । जोवो आंख नघाड । बोलो मीठा बोलमारे । पुरो मननो  
 लाम ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलो नाखुं तौमनेरे । जिण कुल जाई बेढ । नायो  
 आयुध सालमेरे । ज्युं बांजण घर डेढ ॥ ह० ॥ ४ ॥ जानीना उलंनमारे ।  
 किमसंनलायै कान । जातां पांव बहै नहीरे । तुऊनें मुंकी शन ॥ ह० ॥  
 ॥ ५ ॥ तूं जीत्यो हूं हारीयोरे । देव नरै ठै साख । तुऊ सरिखो जगको  
 नहीरे । मुऊ सरिषाठै लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथै सूरज आवीयोरे । प  
 सीनो सारो गात । वैसो नोजन जीमियैरे । खारक दाख निवात ॥ ह० ॥  
 ॥ ७ ॥ निनांणुं एकण मत्तैरे । मुऊनें लोनी जाण । ते सज्ज मुऊनें परि हस्योरे  
 ज्युं वरसालै ठाण ॥ ह० ॥ ८ ॥ तुंमाहरै जीवन आतमारे । तुंहीज माहरै बांह ।  
 दिस सूनी जाई विनारे । आवोनें घरजांह ॥ ह० ॥ ९ ॥ बोल घणाई  
 बोलियारे । नरतेसर महाराज । हाथीना दांत जे नीकदयोरे । ते पाठान  
 बीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अजिमानी सिर सेहरोरे । बाहूवल रिषिराय ।  
 सीधा करम खपायनेरे । विमल कीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति बाहूवल सिंहाय संपूरणम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ अथ चेलणा महासती सिंहाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ वीरवांड़ी बलतां थकांजी । चेलणा दोठोरे निग्रंथ । राति वन  
 मांदि काउसग रघो जी । साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी  
 राणी चेलणा जी । सतीय सीरोमणि जाण । चेडा राजानी साते सुता  
 जी । श्रेणिक शीयल परमाण ॥ २ ॥ बी० ॥ शीत ठंगार सबलो पमै  
 जी । चेलणा प्रीतम साथ । चारितीयो चित्तमें बस्यो जी । सोवडि बाहिर

रहो हाथ ॥ ३ ॥ वी० ॥ ऊबक जागी कहै चेलणा जी । किम करतो  
ऊस्यै तेह । कुसती मन माहिं ए कुणवस्यो जी । श्रेणिक पडचोरे संदेह  
॥ ४ ॥ वी० ॥ अतनर परो जालज्यो जी । श्रेणिक दीयोरे आदेस । नग  
वंत सांसे जाजियो जी । चम कियो चितनरेस ॥ ५ ॥ वी० ॥ वीरवांदी बल  
तां थकां जी । पैसतां नगर मजार । धुवानो घोर देखी करी जी । जा जा  
हरे अन्नय कुमार ॥ ६ ॥ वी० ॥ तातनो वचन पाली करी जी । व्रतलि  
यो अन्नय कुमार । समय सुंदर कहै चेलणा जी । पामिया नवतणो पार  
॥ ७ ॥ वी० ॥ इति चेलणा महासती सिञ्जाय संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

### ॥ अथ वैराग्य सिञ्जाय लि० ॥

॥ ॥ ॥ नूलो मन नमरा कांश्चन । नमियो दिवसनै रात । माया  
रोवांध्यो प्राणीयो । नमीयो परमल जात ॥ १ ॥ नू० ॥ कुंज काचो  
काया कारमी । जेहना करोरे जतन । बिणसतां वार लागै नही । निरम  
ल राखोरे मग्न ॥ २ ॥ नू० ॥ केहना ठेरू केहना वाठरू । केहनां मा  
यनै वाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनै पाप ॥ ३ ॥ नू० ॥ आ  
स्यातोमूंगर जेवमी । मरवो पगलारे देठ । धन संची संच कांई करो ।  
करवो देवनी बेठ ॥ ४ ॥ नू० ॥ लख पति ठव पति सवगए । गएलाखोंके  
लाख । गरज करीरे गोखे बैसता । नए जलबल राख ॥ ५ ॥ नू० ॥ नव  
सायर जल डुख नखो । तिर वोठोरे जेह । बिचमें बीह सखलो अठै । क  
रमें वायनै मेह ॥ ६ ॥ नू० ॥ उखट नही मारग चालवो । जायवो पहिलै  
रे पार । आगलि नही हटवाणीयो । संवल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ नू० ॥  
मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाप । यखबिना जाय पोढवो । ल  
ख पति लाकन मांय ॥ ८ ॥ नू० ॥ मद्मद कहै यस्तु बोरीये । जे कुठ आ  
वैरे साथ । अपणो लान उवारीये । लेखो साहिव हाथ ॥ ९ ॥ नू० ॥ इति ॥

### ॥ अथ बाहूवलजी सिञ्जाय लि० ॥

॥ ॥ ॥ राजतणा अति लोचनीया । नरत बाहूवल रूजोरे । मूठि उपा  
नी मारिवा । बाहूवल प्रतिबूजोरे ॥ १ ॥ बीहा सारा गजधकी ऊतरो । वा

ह्री सुंदरी ज्ञासैरे । ऋषज जिणैसर मोकली । बाहूवलनें पासैरे ॥ १ ॥ वी०  
 ( गजचढ्यां केवल न होईरे ) ॥ २ ॥ वी० ॥ लोचकरी चारितलीयो । व  
 लि आयो अजिमानेरे । लघु बंधव वांडुं नहीं । कानसग रह्यो सुज ध्या  
 नेरे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस कानसग रह्यो । बेलडियां बीटाणोरे ।  
 पंखी माला मांमीया । सीत ताप सूकाणारे ॥ ४ ॥ वी० ॥ साधवी वचन  
 सुण्या इसा । चमक्यो चित्तमऊारोरे । हय गय रथमें परिहस्या । पिण न  
 विमुंक्यो अहंकारोरे ॥ ५ ॥ वी० ॥ वैरागै मन वालीयो । मुंक्यो निज  
 अजिमानोरे । पांव नपानी वांदिवा । ऊपनों केवल नाणोरे ॥ ६ ॥ वी० ॥  
 पङ्कतो केवलि परषदा । बाहूवल रिषि रायारे । अजर अमर पदवी लहै ।  
 समय सुंदर वंदै पायारे ॥ ७ ॥ वी० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति बाहूवल सिंहाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ अरणकमुनी सिंहाय लि० ॥❀॥

॥❀॥ अरणक मुनिवर चाल्यागोचरी । तमकै दाऊं सीसोजी । पाय उ  
 जराणारे बेलपर जलै । तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ १ अ० ॥ मुख कमला  
 णोरे मालतीफूलज्युं । ऊजो गोखनें हेठोजी । खरै डपऊरैरे दीठो एकलो ।  
 मोही माननी मीठोजी ॥ २ अ० ॥ वयण रंगीलैरे नयणे वेधियो । रिषथं  
 ज्यो तिणवारो जी । दासीनें कहै जाय उंतावली । उरिष तेडी आणो जी  
 ॥ ३ अ० ॥ पावन कीजै रिषिघर आंगणो । बहिरो मोदक सारो जी । नव  
 जोवन रस काया कांइदहो । सफल करो अवतारो जी ॥ ४ अ० ॥ चंद्रा  
 वदनीरे चारित चूकव्यो । सुखविलसै दिन रातोजी । इकदिन गोखैरे रमतो  
 सोगटै । तब दीठी निज मातो जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करती  
 मायफिरै । गलियै गलियै मऊारो जी । कहि किण दीठोरे माहरो अरण  
 लो । पूठै लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उतर तिहां थीरे जननी पाय न  
 म्यो । मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिग् धिग् पापीरे माहरा जीवनें । एहमें  
 अकारज कीधो जी ॥ ७ अ० ॥ अगन धुखंतीरे सीला ऊपरै । अरणक  
 अणसण कीधोजी । समय सुंदर कहै धनते मुनिरू । मनबंधितफल सी  
 धोजी ॥ ८ अ० ॥ इति अरणक मुनिसिंहाय संपूर्णम् ॥❀॥

## ॥ अथ सचित्त अचित्त सिन्धाय ॥

॥ ✽ ॥ (ढालचौपईनी) ॥ प्रवचन अमरी समरी सदा । गुरुपद पंकज  
 प्रणमीमुदा । वस्तु तणा कज्जं काल प्रमाण । सचित्त अचित्त विधि लहै जिम  
 मांण ॥ १ ॥ विज्जं क्तु मिली चौमासा मांन । पट्कत्तु मिलीने वरिस प्रमां  
 ण । वर्षा शीत उण्ण त्रिणकाल । त्रिज्जं चौमासैं वरस रसाल ॥ २ ॥ श्रावण  
 चाद्रव आसू मास । काती इम वरसाला वास । मागसिर पोस माहनें फा  
 ग । ए च्यारे सीयाला लाग ॥ ३ ॥ चैत्र वैशाखनें ज्येष्ठ आसाढ । उण्णकाल  
 एच्यार अगाढ । वर्षा शरद शशिर हेमंत । वशंत ग्रीष्म पट्कत्तु इम तंत ॥ ४ ॥  
 राध्युं विदल रहै चउयाम । उंदन आठपुज्जर अजिरांम । प्रहरसोल दधि कां  
 जी ठाठ । पठै रहैतो जीवनिवास ॥ ५ ॥ पापड लोइया बटक प्रमाण ।  
 ह्यारपज्जर तिम पोलीमांन । पनर दिवस वर्षापकवान । ग्रीसदिवस सीयाला  
 मांन ॥ ६ ॥ वीस दिवस उन्हालै रहै । पठै अन्नक थायै जिनकहै । मात्र प्रमुख  
 नीवी पकवान । चलिंतरसै तसकाल प्रमाण ॥ ७ ॥ धान धोयण ठवमी पर  
 माण । दौयेघमी जरवाणी जाण । फल धोयण एक प्रहर प्रमाण । त्रिफला  
 जल ठवमीनुं मांन ॥ ८ ॥ त्रिणवारे ऊकलिउं जेह । सुद्ध उण्णजल कहियै  
 तेह । प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण । वर्षा शीत उन्हालै जाण ॥ ९ ॥ श्रा  
 वण चाद्रवमै दिनपंच । मिश्रलोठ अणचाहित संच । मिगसर पोसैं त्रिण  
 दिन जाण । आसू काती चउदिन मांन ॥ १० ॥ माह फागुणैं कक्षो पण  
 याम । चैत्र वैशाख चउप्रहर प्रमाण । जेठ आसाढ प्रहर त्रिण जोय । ति  
 ण उपरांत सचित्त ते होय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि षमधान कपास । जब त्रि  
 णवरसैं अचित्त होय खास । विदल सर्वतिल तूवरदाल । पांच वरसैं होइ  
 अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसैं अचि  
 त्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सचित्त जोनि अचित्त तेहोय  
 ॥ १३ ॥ हरमै पीपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अजिराम । जोय  
 ण शत जल बटमां व्है । साठिजोयण थलमांन्है रहै ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तु  
 प्रवहणनी जेह । थाइ अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अगनि परीयापणैं  
 करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ वारपज्जर रहै ऊगलीराव ।  
 सोलपज्जर राईतां अजाव । कमाह बिगय परिसेक्यो धान । पहिरचौवीस

गोमूत्रनुमान ॥१६॥ अति खारु घृत कालातील । पलटाई वर्णादिक रील ।  
 काचो दूधरहै बज्रवार । एह अन्नक कहै मुनिसार ॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक  
 विदलनीदाल । सेक्या धानपरै तसकाल । च्यारपज्जर सीरो लापसी ।  
 विदलपरै ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंजी गिण्यो । काल  
 प्रमाण सवि केहनं जण्यो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु  
 अन्नक कहिवाय ॥१९॥ धवलो सैधव कस्यो अचित्त । श्राद्ध विधै अख्यरां  
 प्रतीत । एकाळादिक उहरां जेथाय । तेह अचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥  
 गीतारथनें वयणै जोय । आचीरण अनाचीरण होय । आई धान अंकुर नीक  
 लै । तबते वस्तु अन्नकमां जिलै ॥ २१ ॥ गेरु मणसिल लवण हरियाल ।  
 आवै जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले  
 वानी नही तसुजाखि ॥२२॥ इम बोढ्यो लवलेश विचार । विस्तर प्रवचन  
 सारोधार । धीरविमल पंन्ति सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिझाय ॥२३॥  
 इति सचित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिझाय ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १९दोश कानसग्ग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणी  
 सदोष कानसग्ग तणा । बोढुं श्रुतअनुसारै सुण्या ॥१॥ घोटक दोष कस्यो  
 बलिएह । वांको पगराखै बलिजेह । लतादोष बीजो हवैसुणो । मील हला  
 वै जे अति घणो ॥२॥ उंठीगण लैई जेरहै । अन्नदोष ते तीजो कहै । मा  
 लदोष चौथो कस्यो एह । मस्तक अमकावी रहैजेह ॥३॥ पग अंगूठा मे  
 लीरहै । उद्दिदोषते पंचमकहै । बेऊं पग नेलाकरै जेह । नउल दोष ठो  
 कस्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखै निजहाथि । शवरी दोष कस्यो जगनाथ ।  
 मुख चालना करै अति वणी । खलित दोष अठ्ठम तेसुणी ॥५॥ धूंधट ता  
 णीनें जेरहै । बज्रदोष ते नवमो लहै । लम थडतूं पहिरै पहिरणू । दशमे  
 दोष लंबोत्तर जणू ॥६॥ हृदय स्थल आज्ञादितरहै । ते थण दोष इग्यारमो  
 लहै । वस्त्रासुं ढांक्यो सविदेह । संयति दोष बारसमो एह ॥७॥ ज्ञापण चा  
 लोकरै अति घणुं । जमुहदोष तेरसमो जणुं । अंगुली हलावै संख्याकाज ।  
 चवदमो दोष कस्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करै । वायस दोष

पनरमौ धरै । पहिखावत्त संकोमी रहै । कपित्थदोष सोलसमो लहै ॥९॥  
 मस्तक धूणावै अतिघणुं । ते सिरकंप सतरमो जणुं । महिरानी परि जे बडव  
 नै । वारुणी दोष अठारमो चमै ॥ १० ॥ मूकदोष कसो उगणी समो । तेह  
 करी कान्तसग मतगमो । विणदोष एमाहिला ठलै । सोल दोष साधवीनं मिलै  
 ॥ ११ ॥ लंबुत्तर १ थणने २ संयती ३ । दोष एह वोल्या जगपती । बहूदोष चौ  
 धौ जवमिलै । च्यार दोष आविकाने ठलै ॥ १२ ॥ कान्तसगधी समता सुख  
 धाय । कठिन कर्मनी कोमि पुलाय । कान्तसग करतां सवि सुख होइ । कान्तस  
 ग सम तप नकसो कोय ॥ १३ ॥ दोष रहित कान्तसग कीजीये । जिम स  
 हिजै शिवफल लीजीये । पंक्ति धीर विमलनो सीस । कवि नय विमल कहै  
 निशिदीश ॥ १४ ॥ इति कान्तसगना १९ दोष सिधाय संपूर्ण ॥ ॥॥

॥॥॥ अथ अलोचन स्वरूप सिधाय लि० ॥॥॥

॥॥॥ (ढाल सफल संसार एचाल ॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणौ । जा  
 स परसाद उपगार थायै घणौ । सूत्र सिद्धांत गुरु मुख थकी सांजली । लहीप  
 सम कित अने विरति लहीये बली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप  
 करे । जिण थकी जीव संसार सागर तिरै । दोष लागा जिके गुरु मुख आलो  
 इये । जीव निर्मल जुवै बख जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष लागै तिके च्यार प्र  
 कारना । धुरधकी नामनें अरथ ते धारणा । किणही कारण वसै पापजे की  
 जीये । प्रथम ते नाम संकष कहिजीये ॥ ३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प प्रमुपे  
 करी । दोष ते वीथ परमादसंज्ञा धरी । कूदतां गवंतां होय हिंसा जिहां ।  
 दर्पण नामकरी दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगि नरकरे  
 जिको । चौथो आकुटियादोष ऊपजै तिको । अनुक्रमे च्यारए अधिक  
 एक एकथी । दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ (ढाल १) अन्यदिवस को  
 ई भागधआयो पुरंदरपास ए चाल ॥॥॥ पाटी पोथी कवली नवकरवाली  
 जोय । ग्याननाउपगारण तणी आशातन कीधी होय । जघन्यथी पुरमठ  
 एकासणो आविल उपवास । अनुक्रम एह आलोचन सुगुरु वताईतास  
 ॥ ६ ॥ एजो खंमि थायै अथवा किहांइ गमाय । तोवलिनवा करायां दो  
 ष सज्ज मिटजाय । धापता अणपमिलेसां पुरमठनो तपधार । गिरतां एकास

एनै गमतां चौथ विचार ॥७॥ दर्शनना अतीचार तिहां पुरमहजधन्य ।  
 एकासण आंबिल अठम चिज्जंजेदे मन्न । आशातन गुरुदेवनी साहमीसुं  
 अप्रीति । जधन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय  
 आरंज विनास्यां चौथ प्रसिद्ध । वि ति चनरिंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध ।  
 बज्ज वि ति चौरिंद्रिय हएयां वि ति चन उपवास । संकल्पादि चिज्जंविधि  
 डगुणा डगण प्रकाश ॥ ९ ॥ उद्देही कुलिया वमा कीडी नगरा जंग । ब  
 ज्जत जलोयां मूक्या दसनपवास प्रसंग । वमन विरेचन कृमिपातन आंबि  
 ल इक एक । जीवाणी ठोलंतां दोइउपवास विवेक ॥ १० ॥ संकल्पादिक  
 एक पंचेंद्री उपद्रव होइ । दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै आलोयण जोइ ।  
 बज्जपंचेंद्री उपद्रव ठव अठमें दश वीश । चिज्जं प्रकारै चढती आलोयण  
 सुणलेसीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनै लकमी प्रमुखै कीध प्रहार । एकासण आंबि  
 ल उपवासनै ठव विचार । साध समद्धे लोकसमद्धे राजसमद्ध । कूमा आ  
 लदीयां डइचौथरु ठव प्रतद्ध ॥ १२ ॥ उपवास दश दंमायां तेम मरायां वीस ।  
 इकलख असीसहस नवकार गुणो तजिरीस । पख चौमाश वरस लग इक  
 त्रिण दश उपवास । अधिको क्रोधकरै तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥  
 सूआवमना दोषकीयां गुरु ऊपर रोस । जीवविराधन कीधा बज्ज असतीना  
 पोस । करीय डुवालस बारहजार गुणो नवकार । मिच्छा डक्कम देई  
 आलोवो वारो वार ॥ १४ ॥ (ढाल ३) वेकर जोमीतांम ॥ एचाला ॥ विणकी  
 धां पचखांण । विणदीधा बांदणा । पम्भिकमणा विध पांतैरैए । अणोऊनै अ  
 सिझाय । तिहां अविधै ज्ञेयां । इकइ आंबिल आचरैए ॥ १५ ॥ गंठ  
 सीनै एकत्र । भिवी आंबिल । ज्ञांगै आलौयण इमेंए । एक पांच षट आठ ।  
 नवकरवालीय । गुण नवकार अनुक्रमेंए ॥ १६ ॥ उपवासजंग उपवास ।  
 आंबिल ऊपरां । अधिकोदंम वखांणीयैए । पांचम आठम आदि । जंगकी  
 या बली । फिरग्रही पातिक हाणीयैए ॥ १७ ॥ ऊखल मूखल आग । चूलो  
 घरटीयै । दीधै अठम तपकरैए । मांगीसूई दीध । कातरणीबुरी । आंबिल  
 चढता आरदरैए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध । रात्री भोजन । जल तिरणो खे  
 लण जूओए । पापतणा उपदेश । परद्रोह चीतव्यां । उपवासइकइ जूजूओ  
 ए ॥ १९ ॥ पनरै करमादांन । नियमकरी जंग । मद्यमांस माखण ज्ञेया

ए । आलोयण उपवास । संकषादिक । चिज्जं जेदें चढता लिख्याए ॥ १० ॥  
 वोल्यां मिरखावाद । अदत्ता दांनत्युं । जघन्य एकासण जांणीयै ए । अति  
 उत्कृष्टी एण । जाण आलोयण । उपवास दस २ आंणीयै ए ॥ ११ ॥ (ढाल  
 ४) ॥ सुगण सनेही मेरे लालां (एचाल) । चौथै व्रत जागै अतीचार । ज  
 घन्य ठठ आलोयण धार । मध्यइ दस उपवास विचार । उत्कृष्टा गुण लख न  
 वकार ॥ १२ ॥ परिग्रह विरमणदोष प्रसंग । तीन गुण व्रत मांहे जंग । च्यार ।  
 सिद्धा व्रतनें अतीचारे । आंविळ त्रिणप्रत्येकें धारै ॥ १३ ॥ सीलतणी नव  
 वामि कहाय । तिहां जोलागो दोष जणाय । त्रीयनें फरस जुआं अविवेके ।  
 इक आंविळ कीजै प्रत्येकें ॥ १४ ॥ साधु अनें श्रावक पोसीध । एकेंद्रीस  
 चित्त संघट्टें कीध । बीसर जोलैं सचित्त जल पीध । दम एकासण आंविळ  
 दीध ॥ १५ ॥ विण धोआं विण लूसा पात्रै । एकासण तिम पुरमठ मात्रै । गई  
 मुंह पत्ती आंविळ सारो । तिम उंवै अरुम अवधारो ॥ १६ ॥ च्यार आगार  
 ठंगीमी राखै । व्रत पचखांण करै पट् साखै । दोषे मित्रामि डकम दाखै । आ  
 लोयणलेतां अनिलाखे ॥ १७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार । पूरो कहितां  
 नावै पार । तोपिणं संक्षेपै तंतसार । निरमल मन करतां विस्तार ॥ १८ ॥  
 धन श्रीवीर जिनेसर स्वांमी । जसु आगम वचनें विधि पामी । जीतकल्प  
 ठांणअंगै आदि । वली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ १९ ॥ (कलश) इम जेह ध  
 रमी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइनें । एकांत पूठै गुरु वतावै शक्तिवय  
 तसु जो इनें । विधएह करसी तेहतिरसी धरमवंत तणें धुरै । ए तवन श्रीधरमसी  
 ह कीधो चौपनें फल वधि पुरै ॥ २० ॥ इति आलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ ✽ ॥ अय क्रोधनी सिंहाय लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ कडुवारे फलठे क्रोधना । ग्यानी इम वोले । रीसतणो रस जा  
 णिइ । हलाहल तोले ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोमि पूरवतणो । संजम फ  
 ल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥  
 साधु वणो तपियो जुं तो । धरतो मन वैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो ।  
 चंम कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि ऊठै जे घर थकी । ते पहलुं  
 घरवाले । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क० ॥ ४ ॥



क्रोध तणी गति एहवी । कहे केवल नांणी । हांणि करे जे हेतनी । जा  
 लवजो इमजाणी ॥ क० ५ ॥ उदय रतन कहै क्रोधने । काढजो गलें सा  
 ही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ६ ॥ ॥ ॥  
 इति क्रोधसिंघाय सं० ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ मानकी सिंघाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ रेजीव मान नकीजियै । मानें विनय नआवैरे । विनय विना विद्या  
 नही । तोकिम समकित पावैरे ॥ १ ॥ रे० ॥ समकितविन चारित्र नही । चारित्र  
 विण नही मुक्तिरे । मुक्तिना सुखठे सास्वता । तेकिम लहीइं जुक्तिरे ॥ २ ॥ रे०  
 विनय वमो संसारमां । जगमांहे अधिकारीरे । मानें गुणजाये गली । प्रा  
 णी जोज्यो विचारीरे ॥ ३ ॥ मानकियो जो रावणें । ते तो रामें माखोरे ॥  
 डरजोधन गरवै करी । अंतवर ते हाखोरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूका लाकडा  
 सारीखो । डुख दाई ए खोटेरे । उदय रतन कहै मानें । देज्यो तुमे देसो  
 टेरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ ॥ इति मानकी सिंघाय संपूर्ण ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ मायाकी सिंघाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ समकितनूं मूल जाणीये जी । सत्य वचन साख्यात । साचा  
 में समकित वसें जी । मायामां मिथ्यातरे ( प्रांणी मकरिस माया लगार  
 ॥ १ ॥ मुख मीठी ऊठे मनंजी । कूम कपटनो कोट । जीजेंतो जी जी  
 करै जी । चितमां ताके चोटेरे ॥ प्रां० ॥ २ ॥ आपगरजें आघो पडै जी ।  
 पिण न धरे विसवास । मनसुं राखे आंतरोजी । ए मायानो पासरे ॥ प्रां०  
 ॥ ३ ॥ जेसुं बांधी प्रीतमी जी । तेसुं रहे प्रतिकूल । मयल नठें मन त  
 णोजी । ए मायानो मूखरे ॥ प्रां० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी । मि  
 त्र सुं राखैरे जेद । मल्लि जिनेसर जाणजो जी । तो पास्या स्त्री वेदरे  
 प्रा० ॥ ५ ॥ उदय रतन कहै सांजलो जी । मेखो मायानी बुद्धि । मुगति  
 पुरी जावा तणोजी । ए मारगठे सुखरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ ॥ ॥  
 इति मायाकी सिंघाय संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ लोभकी सिंघाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ तुमे लक्षण जो ज्यो लोभनारे । लोभै जन पामें खोन्नारे ।

लोचें माहा मन मोहला करैरे । लोचें डरघट पंथे संचरैरे ॥ तु० ॥ १ ॥  
 तजे लोच तेहना लेउं चामणारे । बलि पाय नमीनं करुं खामणारे । लो  
 चे भरजादा नरहैं केहनीरे । तुमे संगत भेलो तेहनीरे ॥ तु० ॥ २ ॥  
 लोचने घर मेहली रणमां मरैरे । लोचने उंचते नीचुं आचरैरे । लोचें पापन  
 णी पगलां जरैरे । लोचने अकारज करतां न औसरैरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लो  
 चने मनहुं नरहैं निरमलुरे । लोचें सगपण नासैं वेगलुरे । लोचें नरहैं प्रेतने  
 पावतुरे । लोचने धन मेले वज्र एगलुरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोचें पुत्र प्रते पिता  
 हणैरे । लोचें हत्या पातक नविगणैरे । ते तो दाम तणें लोचें करैरे ।  
 ऊपर मणिधर थायें ते मरिरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोचनें थोच दीसि न  
 हीरे । एहवो सूत्र सिद्धांते कहुं सहीरो । लोचें चक्री संभूम नामें जुवोरे ।  
 ते तो समुद्र माहे वूमी मुवोरे ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम जाणीनें लोचनें ठम  
 ज्योरे । एक धर्म सुं ममता ममज्योरे । कवि उदय रतन जावे मुदोरे । वंड  
 लोच तजे तेहनें सदोरे ॥ ७ ॥ इति श्री लोचकी सिंघाय संपूर्ण ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ भरत चक्रवर्ति सिंघाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ भरतजी मन हीमें बैरागी । मनहीमें बैरागी । भरतजी म०  
 ॥ टेक ॥ सहस्र वत्तीस मुगट बद्ध राजा । सेवा करै बडजागी । चौसठ  
 सहस्र अंतेवरि जाके । तोही न ज्ञवा अनुरागी । ( भरतजी मनहीमें  
 बैरागी ) ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके । ठुं कोडहैं पागी । लाख  
 चोरासी गजरथ सोहियें । सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार  
 कोड मण अनज उपमे । लुण दशलाख मण लागे । तीन कोड गोकुल  
 नित दूजे । एक कोडि हलसागी ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस्र वत्तीस देस बन्  
 जागी । जण सरवके त्यागी । ठुं कोड गांमके आध पति । तोही न  
 ज्ञवा अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निय रतन चतुगमा वाजें । मन चिं  
 ता सरव जागी । कनक कीरत मुनिवर बंदतहे । दीजो मुगति में मांगी  
 ॥ ५ ॥ भर० ॥ ॥ इति भरतजीकी स्वाध्याय संपूर्ण ॥ ॥ ॥

॥ ॥ गर्भाधान उत्पत्ति विचार वैराग्यसि ॥ ॥

॥ ॥ उत्पत्ति जोय जीव आपणी । मनमांदि विमास । गरजावासे

जीवमों । वसीयो नवमास ॥ १ ॥ ३० ॥ नार तणी नाज्जीतलै । जिन व  
 चनें जोय । फूलतणी जिम नालिका । तिम नामी ठै दोय ॥ २ ॥ ३० ॥  
 तसुतल जोनि कहीजियै । वर फूल समान । आंव तणी मांजर जिसो ।  
 तिहां मांस प्रधान ॥ ३ ॥ ३० ॥ रुधिर श्रवै तिहां मांसथी । रितुकाल स  
 दीव । रुधिर शुक्र जोगै करी । तिहां उपजै जीव ॥ ४ ॥ ३० ॥ जे अ  
 पावन पवनें करी । वासित डुरगंध । तिणथानक तूं ऊपनो । हिव हूउ  
 अंध मंध ॥ ५ ॥ ३० ॥ नामी वांसतणी घणुं । जरीयै रूघाल । तातीलोह  
 सिलाकतै । जालै ततकाल ॥ ६ ॥ ३० ॥ तिम महिलानी जोन में । ठै नव  
 लख जीव । पुरुष प्रसंगे तेसहू । मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ३० ॥ ऊपजै नर  
 नारी मित्यां । पांचेइंद्री जेह । तेह तणी संख्या नही । तजो कारज एह  
 ॥ ८ ॥ ३० ॥ नवलख जीव टिकै तिहां । उत्कृष्टीवार । जीव जघन्य पणें  
 टिकै । एक दोय त्रिण च्यारि ॥ ९ ॥ ३० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै ।  
 मज्जरत परिमाण । वार वरसनी थिति तिहां । उत्कृष्टी जाण ॥ १० ॥  
 ३० ॥ तिहां गरजै कोइ जीवमों । जंपै जग दीस । फिर नर आवंतो  
 रहै । संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ ३० ॥ महिला वरस पिचावनें । कहीयै  
 नीरबीज । पिचहत्तर वरसां पठै । थायै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ ३० ॥ जी  
 मणी कूखै नर वसे । तिम वामें नारि । बीच नपुंसक जाणीयै । जिन वच  
 न विचार ॥ १३ ॥ ३० ॥ हिव सामान्य पणें इहां । आयो गरजावास ।  
 सातदिना ऊपरि रहै । नरगत नवमास ॥ १४ ॥ ३० ॥ आठ वरस तिर  
 यंच रहै । उत्कृष्टै काल । गरजा वासै जोगव्यां । इम वज्र जंजाल ॥ १५ ॥  
 ३० ॥ कारमण कायें कर लीयो । पहिलो आहार । शुक्र अनें श्रोणित  
 तणो । नही ऊठ लिगार ॥ १६ ॥ ३० ॥ परजापत पूरी नही । तिहां वि  
 सवा बीस । तिण आहारै तूंथयो । ऊदारक मीस ॥ १७ ॥ ३० ॥ पवन  
 अठै उदरै तिको । ऊपजायै अंग । अगनिकरै थिर तेहनै । जल सरस  
 सुरंग ॥ १८ ॥ ३० ॥ कठन पणें प्रथवी रचै । अबगाह आकास । पांच  
 जूत शरीरमें । इम करै प्रकाश ॥ १९ ॥ ३० ॥ वारै मज्जरत तां पठै । वि  
 लसै नरनारि । गरजतणी उत्पत्ति तिहां । नही अवर प्रकार ॥ २० ॥  
 ३० ॥ कलिल ऊवै दिन सातमै । अरबुद दिन सात । अरबुदथी पेसी

वधै । घनमांस कदात ॥ २१ ॥ ३० ॥ मांसतणी वोटी ऊवै । अमताली  
स टंक । प्रथम मास जिनवर कहै । मन धरो निस्संक ॥ २२ ॥ ३० ॥  
सुधिर मांसवीजै ऊवै । द्विवै तीजै मास । करम तणै वसि ऊपजै । मा  
ता मन आस ॥ २३ ॥ ३० ॥ चोथै मासै मातना । प्रणमै सज्ज अंग ।  
हाथ अने पग पांचमै । तिम सुतकोसंग ॥ २४ ॥ ३० ॥ पित्त रुधिर ठठे  
पमै । सातमै इण संच । नव धमणी नस सातसै । पेसी सय पंच ॥ २५ ॥  
३० ॥ रोमराय पिण सातमै । साढी तीन कोमि । उपजे ऊणै केतलै ।  
इम आगम जोड ॥ २६ ॥ ३० ॥ आठमै मासै नीपनो । इम सकल शरीर ।  
ऊंधै शिर वेदन सहै । जंपै जिनवीर ॥ २७ ॥ ३० ॥ शोणित शुक्र सले  
पमा । लघुने वमनीत । वात पित्त कफ गरजनी । थायै नरनीत ॥ २८ ॥  
३० ॥ मात तणी सुहृटी लगै । बालकनो नाल । रस आहार करै तिहां ।  
आवै तत काल ॥ २९ ॥ ३० ॥ जननी द्यै आहार ते । जाय नाडो ना  
ड । रोम इंद्रि नख चख वधै । तिम मीजीने हार ॥ ३० ॥ ३० ॥ सबज  
अंगै ऊलसै । सरवंग आहार । कबल आहार करै नही । गरजे सुविचार  
॥ ३१ ॥ ३० ॥ मास बीजै किण जीवने । थायै ज्ञान विजंग । अथवा  
अवधि कही जीयै । तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३२ ॥ ३० ॥ कटक करै वैकी  
यणै । कूकी नरकै जाय । को जिन वचन सुणी करी । मरी सुर पिण  
थाय ॥ ३३ ॥ ३० ॥ ऊंधैमुख गोमा हीयै । सहि तो वज्र पीन । दृष्टि  
आगलि विजं हाथसुं । रहै मुनीजीम ॥ ३४ ॥ ३० ॥ नरविण बल ज  
नादिकै । ऊपजै आधान । अथवा विजं नारी मिल्यां । कसो गरज  
विधान ॥ ३५ ॥ ३० ॥ कोई उत्तम चिंतवै । देखी डल वास । पुन्य करी  
तिम नीकलुं । नाऊं गरजावास ॥ ३६ ॥ ३० ॥ ऊंठकोमि चापै सुई ।  
कोई समकाल । तिणयी गरजे अठगुणी । सहै वेदन बाल ॥ ३७ ॥ ३० ॥  
माता नूली नूलीयो । सुखणी सुखथाय । माता सूती ते सूवै । परवस दि  
न जाय ॥ ३८ ॥ ३० ॥ गरज थकी डल लखगुणो । जामै जिनवार ।  
जन्मथयां डल बीसरे । धिम् मोह विकार ॥ ३९ ॥ ३० ॥ उपज्या अशु  
चि पणै जिहां । मल मूत्र कलेस । पिंम अशुचि करि पूरीयो । किहां  
सुचि लवलेस ॥ ४० ॥ ३० ॥ तुरत रुदन करतो थको । जामै जिणवार ।

मात पयोधर मुख ठवै । पीयै दूध तिवार ॥ ४१ ॥ ३० ॥ दिन दिन दीसै  
 दीपतो । करै रंग अपार । लाम कोम माता पिता । पूरै सुविचार ॥ ४१ ॥  
 ३० ॥ श्रोत्र इग्यारै नारिनें । नव नरनें जाण । रात दिवस वहिता रहै ।  
 चेतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ ३० ॥ सात धातु साते त्वचा । ठै सातसै  
 नाम । नवसै नाडी पिंममें । तिम तीनसै हाम ॥ ४४ ॥ ३० ॥ संधि एकसो  
 साठठै । सत्तोत्तरसो मरम । तीन दोष पेसी पांचसै । ढांकीठै चरम ॥ ४५ ॥  
 ३० ॥ रुधिर सेर दस देहमें । पेसाव सरीष । सेर पांच चरबी तिहां । दोय  
 सेर पुरीष ॥ ४६ ॥ ३० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै । वीरज वत्तीस । टांक  
 वत्तीस सलेखमां । जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ ३० ॥ इण परमाण थकी यदा ।  
 उठे अधिको थाय । व्यापै रोग शरीर में । नवि चालै काय ॥ ४८ ॥ ३० ॥  
 पोख्यो पहिलै दाहकै । इम वधियो अंग । खान पान नूषण जला । करै  
 नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ ३० ॥ हिव बीजै दसकै जणयो । विद्या विवध प्र  
 कार । तीजै दसकै तेहनै । जाग्यो काम विकार ॥ ५० ॥ ३० ॥ जिण था  
 नक तुं ऊपनो । तिणमें मन जाय । चोथै दसकै धन तणो । करै कोमि उ  
 पाय ॥ ५१ ॥ ३० ॥ पऊतो दसकै पांचमें । मनमें ससनेह । वेटावेटी पो  
 तरा । परणावै तेह ॥ ५२ ॥ ३० ॥ ठहै दसके प्राणीयो । बले परवस था  
 य । जरा आवी जोवन गयो । तृण्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ ३० ॥ आवै  
 दसकै सातमें । हिव प्राणी तेह । बल जागो बूढो थयो । नारी न धरै स  
 नेह ॥ ५४ ॥ ३० ॥ आठमें दसकै मोसलो । खुलिया सऊ दांत । कर  
 कंपावै सिर धुणें । करै फोकट वात ॥ ५५ ॥ ३० ॥ नवमें दसकै प्राणी  
 यो । तन सूकत जाय । सालै वचन वज्रवां तणां । दिन जूरतां जाय  
 ॥ ५६ ॥ ३० ॥ खाट पड्यो खूंखूं करै । सऊ गाली देह । हाल ऊकम  
 हालै नही । दीयो परजन ठेह ॥ ५७ ॥ ३० ॥ आंख गलै वेपुम मिलै ।  
 पमे मुंहमै लाल । वेटा वेटीनै बहू । नकरै सार संजाल ॥ ५८ ॥ ३० ॥  
 दसमें दसकै आवीयो । तव पूरी आय । पुण्य पाप फल जोगवी । प्राणी  
 परजव जाय ॥ ५९ ॥ ३० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो । लखो नर जव सार ।  
 श्री जिन धरम समाचरो । पामो जिम जवपार ॥ ६० ॥ ३० ॥ चरण  
 पणें जे तप तपै । पालै निरमल शील । ते संसार तरी करी । लहै अविच

ल लील ॥ ६१ ॥ ३० ॥ कोमि स्तन कवमी सटै । कांई गमैरे गिंवार ।  
 धरम पखै पिण जीवने । नही कोई आधार ॥ ६२ ॥ ३० ॥ काया माया  
 कारमी । कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । सांचो धरम संचार  
 ॥ ६३ ॥ ३० ॥ चवदै राज प्रमाण ए । तै लोक महंत । जनम मरण  
 करि फरसियो । तेवार अणंत ॥ ६४ ॥ ३० ॥ आप सवारथिया सहू । न  
 ही केहनो कोय । विण स्वारथ अण पूजतां । सुत पिण वेरी होय ॥ ६५  
 ॥ ३० ॥ जरा न आवै जांलगै । जांलग सबल शरीर । धरम करो जीवतां ल  
 गै । होइ साहस धीर ॥ ६६ ॥ ३० ॥ आरजदेस लखो हिवै । लाधो  
 गुरु संयोग । अंग थकी आलस तजो । करो सुकृत संयोग ॥ ६७ ॥ ३०  
 श्रीनमिराय तणी परै । चेतो चित मांदि । स्वारथना सज्ज को सगा । को  
 ई-किणरो नांदि ॥ ६८ ॥ ३० ॥ जोग संजोग तजीसहू । थया जे अणगार  
 धन धन तसु माता पिता । धन धन अवतार ॥ ६९ ॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि  
 सारिखो । सेवो जिन धरम । जिणथी सुख संपति वधै । कीजे तेहिज क  
 र्म ॥ ७० ॥ ३० ॥ तंडुल बेयाली अठै । एहनो अधिकार । तिणयी ऊध  
 रनें कसो । नही कूठ लिगार ॥ ७१ ॥ ३० ॥ (कलश) इह जेनधर्म  
 विचार सांजलि लीये संयम नार ए । परि सीह केरा सदा पाले नेम नि  
 रती चार ए । संसारना सुख सकल जोगवि ते लहै नवपार ए । श्रीजि  
 न हरप सुसीस रंगे इम कहै श्रीसार ए ॥ ७२ ॥ ३० ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति उपदेश इकत्तरी संपूर्ण ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ अथ विजयसेठ विजयासेठानीको चोढालियो लि० ॥

॥ ✽ ॥ प्रह ऊठीरे पंच परमेष्टि सदा नमुं । मनसूधैरे तेहनें चरणे  
 नित नमुं । धुरि तेहनें अरिहत सिद्ध बखानिये । आचारजरे उपाध्याय  
 मन आणिये । ( उल्लाखो ) आणीये निज मन जाव सुधे उपाध्याय नमूं  
 वली । जे पनरह करम जूमि मांदि साधु प्रणमूं ते वली । जिम कृष्ण  
 पकनै सुकृपकवल शील पाल्यो ते सुणो । नरतारनें स्त्री बिन्दे तेहनो चरित  
 नाबैसुं नणो ॥ १ ॥ (ढाल) नरत केवैरे समुद्र तीर दक्षिण दिसै । कठदेसेरे  
 विजय सेठ श्रावक बसे । शील वतरे अंगारा पकनो लियो । वाला पणैरे

एहवो निश्चो मन कियो । ( उल्लाखो ) मन कीयो एहवो तेण निश्चै परख्य  
 अंधारै पालस्युं । ऊं शील निश्चै एह विरुन विषय सेवा टालस्युं । इक अठै  
 सुंदर रूप विजया नाम कन्या तेवली । तिण शुक्ल पद्मनो शील लीधो सुगुरु  
 जोगै मन रली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्म जोगैरे मांहो मांहिं ते विजुं तणो । शुभ  
 दिवसैरे ऊओ विवाह सुहामणो । तव विजयारे शोलै शृंगार जला करी ।  
 पिनु मंदिररे पोहती मन उल्लट धरी । ( उल्लाखो ) मन धरी उल्लट अधिक  
 पजुती पिया पासै सुन्दरी । ते देखि हरषै सेठ बोलै शील निश्चो संचरी ।  
 मुऊ शील निश्चो पख अंधारै तेहना दिन तीनठै । ते नेम पाली सुकलप  
 ख्य ऊं जोग जोगवस्युं पठै ॥ ३ ॥ (चाल) इम सांचलरे विजया तव वि  
 लखी थई । पिऊ पूठैरे किम चिंता तुऊनें नई । तव विजयारे कहै शुक्ल  
 पद्म व्रतमें लीयो । व्रत चोथेरे वाला पण निश्चो कीयो । ( उल्लाखो ) वाला  
 पुणेंमें कीयो निश्चो शुक्लपद्म व्रत पालस्युं । तो उन्नै पद्म हिव शील पाली  
 नियम दूषण टालस्युं । तुह्मे अवरनारी परणने हिव सुक्ल पद्म सुख जोगवो ।  
 रुण्ण पद्म निज नियम पाली अजिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तव व  
 लतेरे तसु जरतार कहै इसो । विषया रसरै कालकूट विषकै तिसो । ते ठ  
 मीरे शील व्रत दोनुं पालस्यां । एह वार्त्तारे मात पिता न जणावस्यां ॥ ५ ॥  
 मात पिता जव जाणस्ये तव दिख्य लेसां धरदया । इम अजिग्रह लेइनें ते  
 जाव चारित्रीया थया । एकत्र सज्या सयन करतां खमग धारा व्रत धरै ।  
 मन वचन काया करी सूधो शील वेऊं आचरै ॥ ५ ॥ (ढाल) ॥ विमल के  
 वली एक । चंपा नयरीयै । ततखिण आवि समोसस्याए । आणी अधिक विवे  
 क । श्रावक जिण दास । कहै विनय गुण परिवस्यो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु  
 मुऊ घर पारणो । करै मनोरथ तो फलै ए । केवल ज्ञान अगाध । कहै  
 श्रावक सुणो । एह वाततो नवि मिलैए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार । किहां  
 बलि सूऊतो । जातपाणी नही एतलोए । तो हिव तेह विचार । करो तुह्मे  
 जिम तिम । फल अह्म ऊवै तेतलोए ॥ ८ ॥ अठै हिवै कहुदेस । सेठ ।  
 विजय बली । विजया जार्या तसु धरैए । जावयती ग्रह वास । तेहनें जोजन  
 दीधां फल ऊवै तेतलोए ॥ ९ ॥ जिणदास कहै जगवंत । तेमांहि एतला  
 कुण गुण कुण व्रतठै घणा ए । केवली कहै अनंत । गुण तसु शीलना ।

रुण्ण शुक्लपद्म व्रत तणा ए ॥ १० ॥ (ढाल) ३ ॥ दानकहै जगज्जं वमो  
एचाल ॥ केवलीनं मुख सांजली । श्रावक तेजिनदासरे । कव्वदेसं हिव आ  
वीयो । पूरै निज मन आसरे ॥ ११ ॥ (धन १ शील सुहामणो) ॥ शी  
ल समो नही कोईरे । शीलै देव सानिध करै । शीलथी शिव सुख होईरे  
॥ १२ ॥ सेठ विजय विजया जणी । जगतसु भोजन देईरे । सहस  
चोरासी साधुना । पारणानो फल लेईरे ॥ १३ ॥ मात पिता पूठै  
तेहनं । एहनो शील वखाणरे । केवलीनं मुख जिम सुण्यो । तिम कहै ते  
गुण जाणरे ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनं । पारणो दीये कोई  
जायरे । रुण्ण शुक्ल पद्म दंपती । भोजननो फल थायरे ॥ १५ ॥  
मात पिता जयजाणीयो । प्रगट ज्ञओ संबंधरे । सेठ विजय विजया ली  
यो । चारित्र अप्रतिबंधरे ॥ १६ ॥ (ढाल) ४ ॥ केवलीनं पासै ।  
चारित्र लेई उदार । मन ममता मूंकी । पालै निरती चार ॥ १७ ॥ आठ क  
रम खपावी । पाय्यो केवल नाण । ते मुगतै पज्जता । दंपती सुगण सुजा  
ण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै । जावै जे नर नार । ते वंछित सुख लहै ।  
पज्जचै जवनं पार ॥ १९ ॥ (कलस) इम रुण्णपद्मनं शुक्ल पर्यै शील  
पाट्यो निरमलो । ते दंपतीना जाव सुझै सदा सुज गुण सांजलो । जिम  
उरिय दोहग दूर जायै सुख थायै वज्रपरै । बलि सकल मंगल मनह वं  
छित कुशल नित घर अवतरै ॥ इति रुण्ण शुक्ल पद्म चौढा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अय इखुकार राजा भृगुप्रोहित सि० ॥ ॥

॥ ॥ महिला में बैठी राणी कमलावती । जीणीतो जमै मारगखेह ।  
जोवै तमासो इखुकार नगरमें । कोतिक उपनो मनमें एह ॥ १ ॥ (सांजल  
हे दासी आज नगरमें बहदो किम घणो) । कातो परधान सखी मंमीया ।  
काकेई लूट्या राजा गांव । काकोई गाडयो धन नीसख्यो । गामा रक्षा ठै  
ठामो ठाम ॥ २ ॥ सां० ॥ आ० ॥ नातो परधान वाइजी मंमीया । ना को  
ई राजा लूट्या गांव । भृगू परोहित धन तज नीसख्यो । राजारै धन लेवा  
चाव ॥ ३ ॥ (सांजल हे राणी ज्ञकम करो तो कोइ गामो इहां धरां) ॥ वे  
ठांतो तिणरा संजम लीयो । बरज्यो धणुं ही पिता मात । ते पिण चारित ले



वा ऊमह्या । जगू जशा तिणें मोह लल चात ॥ ४ ॥ (सांजल हे० ऊ  
 क०) ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहै । इहां तो कमी नही काय ।  
 सांजलनें राणी माथो धुणीयो । राजारी ममता नही गाय ॥ ५ ॥ (सां०  
 दासी राजानें एवातां जुगती नही) । महिलासुं राणी कमलावती ।  
 आईवै राजारे हजूर । वचन कहै राजानें आकरा । जाएं पोरस चढियो  
 वोले सूर ॥ ६ ॥ (सांजलहो राजा ब्राह्मण ठोमी रिद्धक्युं आदरो) । कर  
 जोमी कमला कहै । सांजल कंत सुजाण । ब्राह्मण जेरिद्ध परिहरी । ते  
 तो घर मांहै मत आण । (सां० । राजा ०) ॥ ७ ॥ एरिद्धसुं अपणें  
 कांई घणो ऊसी । राजारा मोटा ठै जग । वमियै आहाररी बांठा कुण  
 करै । कै कुतरा कै काग ॥ ८ ॥ सां० ॥ राजा० । ब्रा० । वमियो आ  
 हार पीठो नर जखे । नही परसंसवा जोग । जगू प्रोहित रिद्ध तजनीस  
 खो । थे जाण्यो ठै आसीह्वारें जोग ॥ ९ ॥ (सां । राजा ब्रा०) ॥  
 संकल पियोमो पाठो किमलीयै । सांजलहो महाराज । दान दियो थे  
 पहिलां हाथसुं । ते पूठो लेतांनावै थानें लाज ॥ १० ॥ (सां राजा ब्रा०  
 निहचैतो मरणो राजा इक दिनें । ठोमीनें काम विसेष । बीजो तो जगमें  
 सरणो को नही । तारै जिनजीरो धम एक ॥ ११ ॥ (सां० राजा) ॥  
 सगलै जगतरो धन जेलो करी । थे घालो जंझारां रै मांहि । तो पिए  
 तिसना राजा पापणी । त्रिपत न मनमो थाय ॥ १२ ॥ (सां० ब्रा०) ।  
 सांजलनें इखुकार राजा बोलीयो । तुं जापैनी वचन संजाल । कातनें रा  
 णी जोलो वाजीयो । काकोई कीधी मतवाल ॥ १३ ॥ (सां० । राणी  
 राजानें करमा वचन न बोलीयै) । नांतो राजाजी जोलो वाजीयो । नाकोई  
 कीधी मत वाल । ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो । बरजण आईहो  
 नूपाल ॥ (सां० राजा ब्रा०) ॥ १४ ॥ बलतो राजा राणीनें इम कहै ।  
 इसमी वैरागण थाय । अजूतो निजरां आवै नही । तुं वेठी ठै घर मांय  
 (सां० । राणी राजानें करण ॥ १५ ॥ उत्तर वालीतो दीसै नही । इसमी  
 आई ठै मतवाल । ऊंतो घर ठोमीनें नीसरी । थे पिए ठोमो हो नूपाल ।  
 (सां० । राजा आग्या देवो तो संयम आदरुं) ॥ १६ ॥ रतन जन्तरो  
 राजा पीजरो । तिणमें सूवटो पडियो फंद । इण रीतै ऊं थारै राजमें ।

रहिनें पामुं आणंद । (सां० राजा आग्या) ॥ १७ ॥ सनेह रूपिया  
 तांतण तोमनें । आरंज धनसुं रहस्यां दूर । विरकत थई मोन पणें रक्षा ।  
 थे पिण होयज्यो सूर ॥ (सां० राजाआ०) ॥ १८ ॥ दवतोलागी.हो राजा  
 वन मऊँ । हिरण सिसा वलै मांय । गिरधंपंखी ज्युं आमिप देखनें । मन  
 मांहें हरिपित थाय । (सां० राजा राग वेपरा जांगा लग रक्षा) ॥ १९ ॥  
 मांहो मांहें खेधो ईसको । दस प्राण रहित कीधो काल । डसमणतो म  
 नमें हरप पाभ्यो घणो । जाणें ते माहरो मिटियो साल । (सां० हो रा  
 जा रागवेप) ॥ २० ॥ इण दिष्टांतै लोनी मूरख थका । मुरऊरक्षा जोग  
 मांहि । पेलानें डखियो देखी चेतै नही । लागी राग वेपरी लाय ॥ (सां०  
 राजा राग०) ॥ २१ ॥ मांसरी वोटी पंखीरी चांचमां । नरपासै पंखी प  
 मियो आय । आमिप सम जोग ठोमनें । चारित्र लेस्यां चित्त लाय ॥  
 (सां० प्राणी संयमथी, सुखपांमीयै) ॥ २२ ॥ महलं पिलंगादिक अधि  
 रतै । ते पांम्या ठै आपणें हाथ । कामजोगमें रकत होय रक्षा । ते तज  
 होयसां नाथ ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २३ ॥ पांचे इंद्रचारा जोग ठोमनें ।  
 द्रव्य जावै हलकाथाय । सहज वान पंखीनीपरै । विचरस्यां अपणी दाय ॥  
 (सां० प्राणी सं०) ॥ २४ ॥ गिरध पंखीज्युं जोग जाणजो । एह काम  
 वधारै संसार । सापज्युं मोर थकी मरतो रहै । ज्युं पापसुं संकस्यां इण  
 वार ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २५ ॥ सोक तजी संतोपसुं । लेस्यां संय  
 मजार । ममता तजी समता ग्रहो । करस्यां उग्र विहार (सां० प्राणी सं०)  
 ॥ २६ ॥ तन धन जोवन कारमो । चंचल बीज समान । खिण २ खूटै  
 आउखो । मूरख करैरे गुमान ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २७ ॥ हस्तीज्युं  
 बंधण तोमनें । आपे वनसुखै जाय । करम बंधण तूटै संयम-लियां । सुणो  
 कज्जुं महाराय ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २८ ॥ इम सुणनें इखुकार राजा  
 चेतियो । ठोमीनें मोठको राज । कायरनें तो ए तजतां दोहिलो । विप्र  
 सहित साखा काज ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह  
 ठोमके । पायो जिन धरम सुजाण । तपस्या सगलांहीआदरी । उत्तुष्टो  
 पराक्रम आण । (सां० प्राणी सं०) ॥ ३० ॥ सुधसंयम पालै सदा । सु  
 मति गुपति दयाल । जमरानी परै करै गोचरी । रिप टालै दोष क्यांल ॥

(सां० प्राणी सं०) ॥ ३२ ॥ तारण तरण जिहाज ठै । नव्य जीवनें उ  
 तारै पार । केवल ज्ञान उपायनें । सुख पास्यां श्रीकार ॥ ३३ ॥ (सां०  
 प्राणी सं०) । मोहनिवारी प्राणी समऊनें । निरमल जावना जाव । ठए  
 जणा थोमा कालमें । सुगति विराज्या जाय । (सां० प्राणी सं०) ॥ ३४ ॥  
 राजा सहित राणी कमलावती । नृगु पुरोहित जशा नार । प्रोहित नृगुना  
 दोय दीकरा । शिव सुख पास्या सार ॥ ३५ ॥ (सां० प्राणी सं०) इति  
 श्री इखुकार राजा नृगु प्रोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

## ॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिश्याय लि० ॥

॥ ॐ ॥ जगचूमामणि नून । उसनो वीरो तिलोय सिरि तिलन । एगो  
 लोगा इच्चो । एगो चक्खू तिऊअणस्स ॥ १ ॥ संवत्तर मुसन्न जिणो । ठ  
 म्मासे वद्धमाण जिणचंदो । इइ विहरिया निरसणा । जएऊए उव माणेण  
 ॥ २ ॥ जइता तिलोय नाहो । विसहइ वज्जयाइ असरिस जणस्स । इय  
 जीयंत कराइ । एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइऊइ चालेन । महइ  
 महा वद्धमाण जिणचंदो । उवसग्ग सहस्सेहिवि । मेरु जहा वाय गुंजा  
 हिं ॥ ४ ॥ न्हो विणीय विणन । पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो  
 वि तमत्थं । विहिय हियन सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आण वेइ राया । पयईन तं  
 सिरेण इच्छंति । इय गुरुजण मुह नणियं । कयं जलिन डेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह  
 सुर गणाण इंदो । गह गण तारागणाण जहचंदो । जहय पयाण नरीदो । गण  
 स्सवि गुरु तहा णंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मही पालो । न पया परि हवइ एस गुरु उव  
 मा । जंवापुरन कानं । विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेयस्सी । जुग  
 प्पहाणा गमो मज्जर वक्को । गंजीरो धिईमंतो । उवएस परोय आयरिन ॥ ९ ॥  
 अपरिस्तावी सोमो । संगह सीलो अजिग्गह मईय । अविकत्थणो अ  
 चवलो । पसंत हियन गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिंदा । पत्ता  
 अयरामरं पहं दातं । आयरिण्हिं पवयणं । धारिऊइ संपयं सयलं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए नगवई । राय सुयज्जा सहस्स वंदेहिं । तहवि न करेइ माणं ।  
 परिच्छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स । अजिमुहा  
 अऊचंदणा अऊा । नेछइ आसण गहणं । सो विणन सव्व अऊाणं

॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए । अज्जाए अज्ज दिक्खित्तं साहू ।  
 अग्निगमण वंदण नमंसणेण । विण्णण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस  
 प्यन्नवो । पुरस वर देसित्तं पुरसं जिघो । लोएवि यहू पुरसो । किंपुण लोए  
 तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना  
 सहस्स महियं । आसी किरूव्वंतीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी । उ  
 द्दहंती न ताइया ताहिं । उयरविण्ण इक्केण । ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥  
 महिलाणसु वज्जयाणवि । मज्जातं इह समत्त घर सारो । रायपुरिसेहिं  
 निज्जइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण वज्ज जाणा व  
 णाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह जरह चक्खवट्ठी । पसन्न चंदोय दि  
 षंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पणसु वट्ठमाणस्स । किं परिय  
 त्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण  
 दिक्खित्तमि अहं । उम्मगेण पमंतं । रक्खइ राया जणवत्तय ॥ २१ ॥ अ  
 प्पा जाणइ अप्पा । जहवित्तं अप्पसक्खित्तं धम्मो । अप्पा करेइ तं तह ।  
 जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण  
 जेण जावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं वंधए कम्मं ॥ २३ ॥ ध  
 म्मो मएण जंतो । तोनवि सी उह वाय विज्जडित्तं । संवत्तर मणसीत्तं ।  
 वाज्जवलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिण्ण । सत्तं  
 द बुद्धि चरिण्ण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवपुसेणं ॥ २५ ॥ थ  
 षो निरोवयारी । अविणीत्तं गवित्तं निरवणामो । साज्जजणस्स गरहित्तं । ज  
 णेवि ययणिज्जयं लइइ ॥ २६ ॥ थोवेणवि सप्पुरिसा । सणं कुमारुव्व के  
 इवुज्जंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७ ॥ जइ  
 ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवमंति सुरा । चिंतित्तं सेसं । सं  
 सारे सासथं कयरं ॥ २८ ॥ कदत्तं जन्नइ सुक्खं । सुचिरेणवि जस्स उक्ख  
 मत्ति हियए । जंच मरणावसाणे । जय संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएस  
 सहस्से हिवि । वोहिज्जं तो न बुअई कोई । जह वंजदत्त राया । उदाइ निव  
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अथरिच्चत्ताइ राय लट्ठीए । जी  
 वा सकम्म कलिमन्न । जरिय जरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जी  
 वाणं । सउक्कराईति पावचरियाइ । जययं जा सा सा सा । पयाए सो हू इण

मो ते ॥ ३२ ॥ पन्नि वज्जि ऊण दोसे । नियए सम्मंच पायवमियाए । तो  
 किर मिगावईए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति पोसह सिश्याय समाप्ता उपदेश माला ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ राईसंथारा पोसह सिश्याय ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ निस्सिही १ एमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महामुणीणं ।  
 ( नवकार ३ करेमिज्जंते ३ कहीयै ) । अणुजाणह चिठ्ठिजा । अणुजाणह  
 परमगुरू । गुण गण रयणे हिं मंमिअ सरीरा । वज्ज पन्निपुत्ता पोरिसी ।  
 राई संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संथारं । वाज्ज वहाणेण वामपासे  
 णं । कुक्कुम पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमा  
 सं । उवट्ठंतेय काय पन्निखेहा । दवाई उवठ्ठं । ऊसास निरुंजणा लोयं ॥ ३ ॥  
 जइमे ऊज्ज पमानं । इमस्स देहस्सि माइरयणीए । आहार मुवहि देहं । स  
 वं ति विहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वंधण । कलहा नक्खणा पर  
 परीवानं । अरइ रई पैसुन्नं । माया मोसंच मिहत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु इ  
 माई मुखमग्ग । संसग्ग विग्घ झूआई । डग्गइ निबंधणाई । अठारस  
 पाव छाणाई ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मच्चस्स कस्सवि । एवं अ  
 दीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा । नाणदं  
 सण संजुउ । सेसामे वाहिरा चावा । सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ सं  
 जोग मूला जीवेणं । पत्ता डुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सवं ति वि  
 हेण वोसरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो । जाव जीवं सुसाज्जणो गुरुणो ।  
 जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं । अरि  
 हंता मंगलं । सिध्दामंगलं । साहू मंगलं । केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं ।  
 चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिध्दा लोगुत्तमा । साहू लो  
 गुत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ।  
 अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिध्देसरणं पवज्जामि । साहू सरणं पवज्जा  
 मि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मअ ।  
 अरिहंता मअ देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । बोसिरामित्ति पावमं  
 ॥ १ ॥ सिध्दाय मंगलं मअ । सिध्दाय मअ देवया । सिध्दाय कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मझ । आयरिया मज्झदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं । वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उव ज्जाया मंगलं मज्झ । उवझाया मझ देवया । उवझाया कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ । साहूणो मझ देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुअ । इक्किक्के सत्त जोणि लक्खानं । वण पत्तेय अणंते । दस चउ दस जोणि लक्खानं ॥ १ ॥ विगल्लिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सु रेसु । तिरिएसु ऊंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्व झूएसु । वैरं मझ न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ डुगुंठिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सव्वहजीव निकाय । सिद्धह साख आलोयणह । मझह वैरं नज्जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु । चउदह राज जमंतु । तेमइं सव्व खमाविआ । मझवि तेह खमंतु इति राई संधारा गाथा समाप्ता ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य । सामायक, पम्पिमणा अठपुहरी (तथा) चौ पुहरी पोसा, । देववांदणा, पञ्चक्खाण पारणा, छ म्मासी तप चिंतना, सर्वकी अनुक्रमे शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रणम्य श्रीजिनाधीशं । सदगुरुं च विशेषतः ।  
श्राद्धाहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकनापया ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रथम प्रज्ञात सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक दोय बडी रात्र रक्षां, पेशहशालायै । अथवा गुरुकनै । अथवा घरने एक प्रदेशे (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पम्पिलेखा वस्त्र पहिरी । (जो) गुरुो योग न ऊवे (तो) आप प्रमार्जित धानकै । खमासमण पूर्व क तीन नवकार गुणी थापनाजी थापे (पठे) खमासमण देई कहै । इच्छा कारेण संदिस्सद् जगवन । सामायक मुहपत्ती पम्पिलेऊं ( गुरुकहै पम्पिलेह ) पठै इच्छकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पम्पिलेहै । ऊनो हो

य खमा० कहै । इच्छा० सं० ज० । सामायक संदिस्सावूं (गुरु कहै संदि  
 स्सावेह ) पठै इच्छं कही । वलेख० देने कहै । इच्छाका० सं० ज० । सामायि  
 क ठानं (गुरु कहै ठाएह ) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । अर्धावन  
 तकाय ऊजो थको । तीन नवकार गुणी कहैं । इच्छकार जगवन पसानकरी  
 सामायिकदंम उच्चरावोजी (गुरु कहै उच्चरावेमो ) पठै । करेमिजंते सामाश्यं  
 (इत्यादि) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो थको । तीनवार उच  
 री । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । इरियावहियं पडिक्कमामि (गुरुकहै  
 पन्निक्कमह ) पठै इच्छं कही । इच्छामि पन्निक्कमिं इरियावहियाए (इत्यादि  
 पाठकहै ) इरियावही पन्निक्कमी । एक लोगस्सनो कान्तसग्गकरी । एमो अ  
 रिहंताणं कही । कान्तसग्गपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई  
 इच्छा० सं० ज० । वैसणो संदिस्सावूं (गुरु कहै संदिस्सावेह ) पठै इच्छं क  
 ही । वले खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । वैसणो ठानं (गुरु कहै ठा  
 एह ) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सिप्पाय सं  
 दिस्सानं (गुरुकहै संदिस्सावेह ) पठै इच्छं कही । वलेखमासमण देई । इच्छा  
 का० सं० ज० । सिप्पाय करं (गुरुकहै करेह ) इच्छं कही । वले खमासमण  
 देई । ऊजो थको, आठ नवकार सिप्पाय करै । तथा शीतकालादि ऊवै  
 (तो) खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । पांगरणो संदिस्सावूं (गुरु कहै  
 संदिस्सावेह ) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । पांगरणो  
 पन्निग्घानं (गुरु कहै पन्निग्घाएह ) पठै इच्छं कही । वस्त्रग्रहण करै । तथा  
 सामायकवंत (अथवा) पोसहीता श्रावकप्रतें (कोई) सामायकवंत (अथ  
 वा) पोसहीतो श्रावक वांदै (तो) वंदामो एहवुं कहै । जो कोई बीजो  
 वांदै (तो) सिप्पायं करेह । एहवो कहै ॥ ❀ ॥  
 इति प्रज्ञात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ (हिवै) एक खमा समण देई । इच्छाका० सं० ज० । चैत्यवंदन करं  
 (गुरुकहै करेह ) पठै इच्छं कही । जयउ सामी १ (इत्यादि) जय वीय राय  
 सूधी चैत्यवंदन करै । पठै खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । कुसुमिण ड

स्समिण राई प्रायत्तिन्न विसोहणत्थं करेमि कान्तसग्गं (गुरु कहै करेह) पठै इत्थंकही । कुसुमिण उस्समिण राई प्रायत्तिन्न विसोहणत्थं करेमि कान्तसग्गं । अन्नत्थू ससिएणं (इत्यादिकही) (४) लोगस्सनो कान्तसग्ग । चंदेसु निम्मलयरार ॥ सूधी चिंतवी । एमो अरिहंताणं कही । कान्तसग्ग पारी । मुखै लोगस्स कहै (जो) रात्रें मोटको गुण संवंधी दूषण लागो ऊवै । (तां) कान्तसग्ग माहें । सागरवरगंजीरा । सूधी चिंतवीयै (इतिसंप्रदायः) ।

॥ ✽ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण उस्समिण कान्तसग्ग करी । पठै चैत्यवंदन करवो कसोठे । पिण परमार्थ एकहीजठे । पठै । पम्पिक्रमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै ॥ ✽ ॥ हिवै पम्पिक्रमण ठाववानो अवसर ऊवां ॥ १ खमासमण देई (श्री आचार्यजी मिश्र) कही बांदीयै ॥ २ खमासमण देई (श्री उपाध्यायजी मिश्र) कही बांदीयै ॥ ३ खमास मणें । जंगम युग प्रधान वर्तमान नदारक श्रीपुज्यजी का नाम कही बांदीयै ॥ ४ खमास मणें । सर्व साधूजीकुं बांदीयै ॥ इम च्यार खमासमणें पडि क्रम णो ठावी । इत्तकार समस्त थावको बांदूं (कही) गोडा लीयै बैसी । मस्त क नमावी । दोय हाथे । मुहपत्ती मुखें देई । सबस्सवि राइय (इत्यादि कहै) पिण इत्ता कारेण संदिस्सह इत्तं (इसोन कहै) पठे शक्र स्तवकही । ऊजो थई । करेमि जंतें सामाइयं । सावळ्ळं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि कही) । इत्तामि ठाठं कान्तसग्गं । जोगे राइत्त (इत्यादि पाठ कही) त स्सुत्तरी । अन्नत्थू ससिएणं कही । चारित्र शुद्धि निमित्तें ॥ १ लोगस्स नों कान्तसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें । लोगस्स कही । सब लो ए अरिहंत चेइयाणं करेमि कान्तसग्गं । वंदण वत्तिआ ए (इत्यादि कही) १ लोगस्सनो कान्तसग्ग करी (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धि निमित्तें । पुक्खर वर दीवट्ठे । (कही) सुयस्स जगवन्न करेमि कान्तसग्गं । वंदणवत्तिआए (इत्यादि कही) कान्तसग्ग करै । कान्तसग्ग माहें । आजूणा चौपुहरी रात्रि माहें । इत्यादि आलोयण पाठ चिंतवे ॥ ✽ ॥ ॥ (अने एनावैतो) आठ नव कार चिंतवीयै । पठै कान्तसग्ग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) संमासा प्रमाजंन पूर्वक बैसी (मुहपत्ती पम्पिक्रमणें) पठेदो बांदणादैं (ते इम) अविग्रह बाहिर ऊजो थको । आघो नमी ॥ इत्तामि खमा



स । वंदि० जाव० । नि० । अणुजाणह । मेमिउगहं (इतरो कही) नू  
मि प्रमार्जतो थको । निस्सही कही । कांइक अवग्रह मांहि पैसी । संमा  
सा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । मावै हाथ मुहपत्ती लेई । मावै कान थो जी  
मणा कान लगें निलाम पूंजी । मुहपत्ती आगै मेल्ही । तेहनें मध्यभागै  
गुरुचरण कटपना करी । अहो कायं (इत्यादि आवर्त्त करी) क्युं हिक ऊं  
चो नमी । मस्तकै अंजली करी । गुरुसांझी दृष्टिराखी । खमणिज्जो ने  
किलामो (इत्यादि पाठ कहै) पठै । फेर जत्ताजे । (इत्यादि आवर्त्तन  
कर ) ऊनो थई । पाठै पगे नूमि पुंजतो । अवग्रह बाहिर स्वस्थानें आ  
वी । आवस्सियाए (इत्यादि पाठ ) सर्व कहै । वीजी वार बले इम हीज  
करै । (पिण ) अवग्रह बाहिर न नीकलें । तिहां ऊनोज सर्व पाठ कहै ।  
आवस्सियाए पद न कहै । (इम सर्वत्र जाणिवूं ) पठै अवग्रह मांहिरखां  
कहै । इच्चाका० सं० न० । राइयं आलोवूं (गुरु कहै आलोएह )  
पठै । इच्चं आलोएमि जोमेराइउ (इत्यादि पाठ ऊचरतो ) कानसग्ग मां  
हें चिंतव्या । रात्रिसंवंधी अतीचार । गुरु समझें आलोवै । पठै । सवस्स  
वि राइय (इत्यादि पाठ कहै ) तिहां इच्चाका० सं० न० एपद क  
हिवै करी । आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगै (गुरु कहै पडिक्क म  
ह ) पठै । इच्चंतस्स मिच्चामि डक्कमं (कही) संमासा प्रमार्जी । आसणें  
बैसी । जीमणो गोमो ऊंचोराषी । मावो गोमो नीचो करी (एहवूं कहै)  
जगवन् सूत्रजणुं (गुरु कहै जणह ) पठै इच्चं कही । ३ नवकार । ३ करे  
मि जंते (अथवा ) १ नवकार । १ करेमि जंते (कही) इच्चामि पमिक्क  
मि ने । जोमेराइउ (इत्यादि कही) वंदितू सूत्र । तंनिंदे तंच गरिहामि  
(सूधी कहै) पठै ऊनो थई । अब्भु णिंमि आराहणाए (इत्यादि सं  
पूर्ण कहै) वे बांदणा देई ॥ अवग्रह मांहि थको हीज कहै । इच्चाका०  
सं० । न० । अणुण्णिमि अण्णितर । राइयं (कही) संमासा प्रमार्जन  
पूर्वक गोडालीयै बैसी । वेबांह पडिलेही । मुहपत्ती बांम हाथसुं मुखें  
देई । दक्षिण हाथ गुरु सांझो करी । नीचो नम्यो थको । जंकिंचि अप्यत्तियं  
(इत्यादि संपूर्ण कहै) तिवारै गुरु पिण मिच्चामि डक्कडं कहै ) पठै । वे  
बांदणादेई । नूमि प्रमार्जता । पाठै पगे अवग्रह बाहिर आवी । आयरिय

उवआए । इत्यादि गाथा ३ कहै । पठै । करेमि जंतै० । इहामि गामि  
 कान्तसगं । तस्सुत्तरा ( इत्यादि कही ) कान्तसग करै । कान्तसग माहें ।  
 श्रीवीर कृत ठम्मासीतप चिंतवै ( जो ) ठम्मासी तपन जाणै ( तो ) ६ लोगस्स,  
 अथवा, २४ नवकारनो कावसग करै ऐसी प्रवंचीहैं । पठै जे पञ्चक्खाण करावो  
 ऊवै ( ते ) हियामाहि धारी । कान्तसग पारी । लोगस्स कही । ऊकडूवैसी ।  
 मुहपत्ती पडिलेही । वे वांदणा देई । सकल तीरथ नामलेई । नमस्कार करी  
 ( कहै ) इत्त कार जगवन पसाउ करी पञ्चक्खाण करावो जी ( पठै ) गुरु  
 मुखें पञ्चक्खाण करै । गुरु अजावै थापना समझें ( अथवा ) साधमी मुखें  
 पञ्चक्खाण करै ( पठै ) इहामो अणुसठिं कही, वैसैं ( तिवारै ) गुरु १  
 थुई कल्यां पठै । मस्तकैं अंजली करी । नमो खमासमणणं । नमो ज्झंत्ति  
 खा कही ॥ संसार दावानल इत्यादि ( अथवा ) नमोस्तु वरुं मानाय । इ  
 त्यादि ( अथवा ) पर समय तिमर ( इत्यादि तीन गाथा जणी ) शक्रस्त  
 व कहै । पठै ऊजो थई । अरिहंत चेइयाणं करेमि कान्तसगं । वंदणवत्ति  
 आए ( इत्यादि कही ) कान्तसग माहें १ नवकार चिंतवी । एक थावक प्रथ  
 म कान्तसग पारी । नमोर्जंत्तिखा कही । एक गाथा स्तुति कहै । बीजा  
 सर्व कान्तसग माहें रखा सुणें ( पठै ) । एमो अरिहंताणं कही । कान्तसग  
 पारै । इम आगे पिण जाणवो । ( पठै ) लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत  
 चेइआणं । वंदणवत्ति० । अन्नत्थू० । ( इत्यादि कही ) १ नवकारनों का  
 न्तसग करी ( पारी ) बीजी स्तुति कही । सिद्धाणं बुद्धाणं कहै । ( पठै ) वे  
 थावक गराणं० । अन्नत्थू० कही । १ नवकारका० करी । ( पारी ) नमो  
 ज्झंत सिद्धा कही । चौथी स्तुति कही । ( वैसी ) । नमोत्थुणं कहै । पठै  
 तीन खमासमणं । पूर्वोक्त रीतें । आचायं । उपाध्याय । सर्व साधू वांदै ।  
 इति प्रजाती पन्तिक्रमण विधि. ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनःस्तना विशेष है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इतनी विधि कियां पाठै थिरता ऊवै ( तो ) उत्तर दिशें । सी  
 मंथर स्वामी सांढमां वैसी । कम्म जूमीश ( इत्यादि ) संपूर्ण चैत्यवंदन क  
 रै ( प्रांतें ) अरिहंत चेइयाणं करेमि कान्तसगं । वंदणवत्ति० अन्नत्थू० क  
 ही । १ नवकार चिंतवी ( पारी ) सीमंथरस्वामीनी स्तुति कहै । इम हीज

थिरता ऊवै ( तो ) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवन्दन करै ॥ पठै पम्ल्लेहण करै ( ते इम ) खमासमणदेई । इच्छाका० सं० ज० । पम्ल्लेहण संदिस्सा नं ( गुरु कहै संदिस्साएह ) बीजै खमासमणे । इच्छा० सं० ज० । पम्ल्लेहण करं ( गुरु कहै करेह ) पठै । इत्तं कही । मुहपत्ती पम्ल्लेहै । ( इमहीज दोइ खमासमणें । अंग पम्ल्लेहण संदिस्सानं । अंग पम्ल्लेहण करं ( कही ) धोतियो कणदोरो पम्ल्लेही । खमासमणदेई । इत्तकार जगवन पसान करी पडिलेहण पडिलेहा बीजी ( इम कही ) थापनाचार्य पडिलेही राखै ( अनें ) जो गुर्वा दिक् थापनाचार्य पम्ल्लेहै । तोपिण । खमासमण देई आग्यामांगै । पठै खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । मुहपत्ती पडि लेऊं ( गुरुकहै पडिलेहेह ) पठै इत्तं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमासमणें इच्छाका० सं० ज० । उही पडिलेहण संदिस्सानं । करं ( कही ) कंवल वस्त्रादि पडिलेहै । पठै । पोसहशाला प्रमार्जी । काजो विधसुं परठी । खमासमण देई । इरियावही पडिक्में ( एमूलविध जाणवी ) ॥ ❀ ॥ इतरी स्थिरतानऊवै तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी । हिवणां पिण प्रायें इमहीज करता दीसै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥हिवै सामायक पारणेंकी विधि कहैगै॥❀॥

॥ ❀ ॥ पठै सामायक पारै । १ खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै फेर खमासमण देई इच्छा० सं० ज० । सामायक पारं ( गुरु कहै पुणोवि कायव्वो ) पठै यथाशक्ति कही । वले खमासमण देई ( कहै ) इच्छाका० सं० ज० । सामायक पारेमि ( गुरु कहै आयारोनमोत्तव्वो ) पठै तहत्तिक ही । अर्ध नम्र ऊन्नो थको । तीननवकारगुणी । नीचो गोमालीयै वैसी । मस्तक नमावी । जयवंदसन्नजदो ( इत्यादी गाथा कहै ) ( अथवा ) प हिलां सामायक पारी । पठै पडिलेहण करै ( इहां ) यथायोग्य अवसरै गुरुनें सुहराई पूठे ( ते इम एक खमासमण देई कहै । इत्तकार जगवन, सुहराई, सुखतप शरीर, निराबाध, संयम यात्रा, सुखें निरवहैठैजी, ठै पूज्यजी साता ( इत्यादि पूठी ) बीजी खमासमण देवै । श्रीजिन पति सुरि जीनी समाचारीमें इम कह्यो ठै ॥ ❀ ॥ इति सामायक पारणविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ संध्याकाल सामायक विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पाठलै पंजुर धर्मशाला प्रमार्जी । बस्त्रादि पमिलेहै । जो अवेलो आयो जुवै ( तो ) दृष्टि पमिलेहण करै । पठै । गुरु आगै ( अथ वा ) थापनाचार्यजी आगै आवी । जूमी प्रमार्जी । आसण बांम पास मूं की । खमासमण देई ( कहै ) इच्छाका० सं० ज० । सामायिक मुह पत्ती पमिलेछं ( गुरु कहै पमिलेदेह ) पठै इच्छं कही । बले खमासमणदेई इच्छाका० सं० ज० । सामायक संदिस्सां ( गुरु० संदिस्सावेह ) फेर खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सामायक ठां ( गुरु० ठाएह ) पठै इच्छं कही । फेर खमासमण देई । अर्धावनन थई । तीन नवकार गुणी ( कहै ) इच्छकार जगवन पसांन करी सामायिक दंम उचरावो जी ( गुरु० उचरावेमो ) पठै । करेमि जंते सामाश्यं ( इत्यादि ) सामायक सूत्र गुरुवचन अनुज्ञापण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । इरिया बहियं पमिक्कमामि ( गुरु कहै पमिक्कमह ) पठै इच्छं कही । इच्छामि पमिक्कमिं । इरिया बहियाए ( इत्यादि पाठै इरि यावही पडिक्कमी । १ लोगस्स नो काउत्तसग्ग करी । एमो अरिहंताणं कही । काउत्तसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावैसी । मुहपत्ती पडिलेही । बांदणा देई ( कहै ) इच्छकार जगवन पसांन करी पच्चक्खाण करावोजी पठै ( गुरु ) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै ॥ गुरु अज्ञावै । थापनाचार्य समक्कें ( अथवा ) स्वमुखें ( तथा ) वमेरा सार्धमी मुखें पचखै ( अर्ने ) जो तिबिहार उपवास कीधो जुवै ( तो ) मुहपत्ती पमिलेही । पच्चक्खाण करै । बांदणा नद्यो ( अने ) जो चउविहार उपवास जुवै ( तो ) पच्चक्खाण करवोठै नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पमिलेहै । एविस्तार विधितै । पठै १ खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । सिज्जाय संदिस्सां ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) पठै इच्छं कही । बले खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । सिज्जाय करं ( गुरु० करेह ) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । ऊजो थको ( मधुरस्वरें ) ७ नवकारनी सिज्जाय करै । पठै खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । वैसणो संदिस्सां ( गुरु० संदिस्सावेह ) फेर खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । वैसणो ठां ।

( गुरु० ठाएह ) पठै इत्तं कही । जो शीतकालादि ऊवै ( तो ) खमास मण देई । इच्छा० सं० ज० । पांगरणो संदिस्सानं ( गुरु० संदिस्सावेह ) फेर खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । पांगरणो पन्निग्घानं ( गुरु० पन्निग्घाएह ) इत्तंकही शुभध्यान करै ॥३॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

## ॥ ३ ॥ अथ देवसी पन्निक्कमण विधि लि० ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ३ खमासमण देई ॥ इच्छा० सं० ज० । चैत्य वंदन करुं ( गुरु कहै करेह ) पठै इत्तं कही । जयतिऊयण० । जय महायस ( प्र मुख ) नमस्कार कही । नमोत्थुणं कही । अरिहंत चेइयाणं० ( इत्यादि पूर्वोक्त रीतें ) च्यारे थुई ए देव वांदै । च्यार खमासमणें आचार्यादिक वांदी । पठै इच्छकार समस्त श्रावको वांडं । इम कही गोमालियै वैसी । मस्तक नमावी । सबस्सवि देव सिय ( इत्यादि ) तस्स मिच्छामि डक्कडं कहै ( पिण ) इच्छा कारणे संदिस्सह इत्तं ( एपद न कहै ) पठै ऊन्ना थई । करेमि जंतै सामाइयं० । इच्छामि ठान कान सग्गं । जोमे देवसिउ० । तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थु ससिएणं० ॥ ( इत्यादि कही ) कानसग्ग करै । कानसग्ग माहें । आजूणा चौपहरा दिवसमें० ( इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी ) एमो अरिहंताणं कही । कानसग्ग पारी । लोगस्स कहै । संमाशा प्रमार्जन पूर्वक वैसी । मुहपत्ती पन्निखेही । वे वांदणा देवै । पठै अवग्रह मांहि ऊन्नो थको कहै ॥ इच्छा० सं० ज० ॥ देवसिय आलोऊं । गुरु कहै आलोएह । पठै । इत्तं आलोएमि० पाठ कहै । आजूणा चौपहर दिवस० लघु अती चार आलोवै । पठै सबस्सवि देवसिय ( इत्यादि ) इच्छा कारणे संदिसह । सूधी कहै । तिवारै ( गुरु कहै पन्निक्कमह ) पठै । इत्तं तस्स मिच्छामि डक्कमं ( कही ) संमाशा प्रमार्जी । प्रमार्जित भूमें आसणें वैसी कहै । जगवन सूत्र जणुं ( गुरु कहै जणह ) पठै इत्तं कही । तीन नवकार ३ करेमि जंतै ( अथवा ) १ नवकार १ करेमि जंतै ( कही ) इच्छामि पन्निक्कमिउं । जोमेदेवसीउं ( इत्यादि कही ) एक श्रावक वंदितू कहै । वीजा सर्व सुणें । पठै ऊन्नो थई । अण्णुठिउमि आराहणाए ( इत्यादि संपूर्ण पाठ कही ) वे वांदणा देवै । अवग्रह मांहिज ऊन्नो थको । इच्छाका०

सं० ज० । अष्टुच्छिन्निमि अष्ट्रिन्तर । देव सियं खामेउं ( गुरु कहै खामेह )  
 पठै इच्छं खामेमि देवसियं ( कही ) गोमालीयै वैसी । वाम हाथें मुह पत्ती  
 मुखें धरी । दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी ( सर्व पाठ  
 कहै ) पठै विधिसुं वे वांदणा देई । आयसिय उवझाए ( इत्यादि ३ गाथा  
 कही ) करेमिजंते सामाइयं ॥ इच्छामि गउं काउसगं ( इत्यादि कही )  
 चास्त्र शुद्धिनिमित्तै दोयलोगस्सनो काउसग करै ( पारी ) दर्शन शुद्धि  
 निमित्तें प्रगट लोगस्त कही । सबलोए अरिहंतचे । वंदण ० । अन्नत्थू ०  
 कही ॥ १ लोगस्सनो काउसग करै ( पारी ) ज्ञान शुद्धि निमित्तें । पु  
 ष्करवर दीवहे ( कही ) सुयस्त जगवन् ० । वंदण व ० । अन्नत्थू कही ।  
 १ लोगस्सनो काउसग करै ( पारी ) सिद्धाणं बुद्धाणं ( कही ) वेयावच्च  
 गराणं न कहै । पठै । सुयदेव्याए करेमि काउसगं । अन्नत्थू कही । ए  
 क नवकारनो काउसग करी । गुरु संयोग नही ऊवै ( तो ) एक श्रावक  
 काउसग पारी । नमोऽस्तिसिद्धा ० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । ( गु  
 रु ऊवै तो गुरु कहै ) बीजासवं स्तुति सुणकै काउसग पारै । पठै । शि  
 त्त देव्याए करेमि काउसगं । अन्नत्थू कही । एक नवकार चिंतवी । पूर्व  
 ली परं ( क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै ) पठै ऊनो थको । १ नवकार कही ।  
 संमाशा प्रमाजी । ऊकडू वैसी । मुहपत्ती पम्निहेही । विधिसुं वे वांदणा  
 देई । इच्छामो अणुसद्धि कही । वैसै ( पठै गुरु एक स्तुति कहां पठै ) आ  
 थक समस्त मस्तकें अंजली करी । एमो खमासमणाणं । एमो अंस्तिसि  
 द्धा कही । एमोस्तु वरुं मानाय ( इत्यादि तीन स्तुति कहै ) श्राविका ।  
 एमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पठै एमो  
 त्थुणं कही । एक श्रावक खमास मण देई कहै । इच्छाका ० सं० ज० ।  
 स्तवन जणुं । बीजा सर्व खमासमण देई कहै । इच्छा ० सं० ज० । स्तवन  
 सांजलुं ( गुरु कहै जणह, सांजलह ) पठै आसणें वैसी । नमो अंस्तिसि  
 द्धा ० पूर्वक । वमो स्तवन कहै । पठै तीन खमास मणें । आचार्य उपाध्या  
 य सर्व साधू वांदी । चौथै खमासमणे इच्छा ० सं० ज० । देवसी प्रायश्चित्त  
 विशुद्धि निमित्तें काउसग करुं ( गुरु कहै करेह ) पठै इच्छं कही । दे  
 वसी प्रायश्चित्त विशुद्धि निमित्तें । अन्नत्थू कही । च्यार लोगस्सनो काउस

ग करै (पारी) लोगस्स कहै । पठै खमासमण देई । इच्छा का० सं०  
 ज० । खुदो वदव नहमावणत्थं करेमि काउसग्ग । अन्नत्थ० ( इत्यादि  
 कही ) च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) लोगस्स कहै ॥ वैसी ।  
 खमासमण देई । थंजणा पार्श्वनाथ जीनों चैत्य वंदन करै । जय वीयरा  
 य कथां पठै खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी ॥ सिरि थंजणयठिय पा  
 स सामिणो ( इत्यादि दोय गाथा कहै ) ऊन्ना थई । वंदणव० अन्न० कही  
 ४ लोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै । ( इम हीज ) दादा  
 जी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्ग करै (पारी) मुखें लोगस्स कहै । पठै ।  
 दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसग्ग करै । (पारी) मुखे लोगस्स कहै  
 पठे । बोटी शांति कहै ( जो ) शांति न आवै ( तो ) १६ नवकारनो का  
 उसग्ग करै । पठै । ३ खमासमण देई । चउक्कसायनो चैत्यवंदन जय वी  
 यराय सूधी करै । सर्व मंगल कहै ॥ चउ कसाय चैत्य वंदन सूती वखत  
 करनेकाहै ( पिण ) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजहै ॥ पठै पूर्वोक्तरीतै सामा  
 यक पारै । इति देवसी पम्किमण विधिः संपूर्ण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात्रीनं पाठलै विघमियै निद्रा दूर करीनं । पंचपरमेष्टि स्मरण  
 करी । गृहचिंता परिहरी । पर्वदिवस थकी । प्रथम दिवसें । पम्लिलेही राख्या  
 जे पोसहना उपगरण लेई । पोसह शालायें थापनाचार्य समीपें । अथवा  
 गुरुनो संयोग ऊवै ( तो ) गुरुनं पासें आवी । जूमीप्रमार्जी । एक खमा  
 समण देई । इरियावही पम्किमें । पठै खमासमण देई । इच्छाका० सं०  
 ज० । पोसह मुहपत्ती पम्लिलेऊं । ( गुरु कहै पम्लिलेहेह ) इच्छं कही । ख  
 मासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पठै ऊन्नो थई । खमासमण देई ।  
 इच्छाका० सं० ज० । पोसह संदिस्सानं ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) । पठै इच्छं  
 कही । खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । पोसह ठानं ( गुरु कहै । गा  
 एह ) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । ऊन्नो थई । आधो सरीर नमावी ।  
 मुखें मुहपत्ती देई । मधुर स्वरे । तीन नवकार गुणी कहै । इच्छकार जग  
 वन पसान करी । पोसह दंमक उवरावोजी ( गुरु० उवरावेमो ) । पठै करे

मिजंते पोसहं । आहाण । जाव अहोरत्तंवाण । अप्पाणंवोण ॥ एपाठ तीनवार  
 गुरुवचन अनुज्ञापण करतो ऊचरै ॥ ॐ ॥ पठै एक खमासमणें । इच्छा  
 काणसंज्ञण । सामायक मुहपत्ती पडिलेऊं ( गुरु कहै पमिलेहेह ) बीजी  
 खमासमण देई । मुहपत्ती पमिलेहै । पठै । दोय खमासमणें सामायक सं  
 दिस्सां । सामायक ठां ( कही ) खमासमण देई । अर्धावनत गात्रऊं  
 जो थको । तीन नवकार । तीन करेमि जंते ऊचरी । दोय खमासमणें ।  
 वैसणो संदिस्सां । वैसणो ठां । कही । पठै दोय खमासमणें । सिझाय  
 संदिस्सां । सिझाय करं ( कही ) खमासमण देई । ऊजो थको । आठ  
 नवकारनी सिझाय करै । सीतादि परीसहै दोय खमासमणें । पांगरणुं सं  
 दिस्सां । पांगरणुं पडिग्यां ( कहै ) ए सर्थ सामायक विधि पूर्वे कही है  
 तिमहीज करवी । ( पिणइतनो विशेष है ) पहिलां इरियावही पडिक्कमीहै ।  
 ते माटै । इहां सामायक दंमक ऊचखां पठै । इरियावही नहीं पमिक्कमी  
 जै ॥ ॐ ॥ पीठै चैत्यवदं । जय वीपराय सूधी करी । कुसुमण डुस्समिण  
 काउसग करै । पठै पमिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करै । पठै पूर्वी  
 क्तरीतें पमिक्कमण करै ( पिण इतरो विशेषहै ) च्यारे थुई ए देव वांढ्यां पी  
 ठै । खमा समण देई ( कहै ) इच्छाका ० सं ० जणः । बज्जवेलं संदिस्सा  
 ठं ( गुरु कहै ) संदिस्सावेह ( पठै इच्छं कही ) खमासमण देई ( कहै )  
 इच्छाका ० सं ० जणः । बज्जवेलं करं ( गुरु कहै करेह ) पठै इच्छं कही ।  
 तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्री उग्राध्यायजी मिश्र २ ।  
 तीजै सव्वं साधू वांढी । कम्म जूमिहि २ । ( इत्यादि नमस्कार जणें ) जो  
 पमिलेहण वेला नहीं ऊवै ( तो ) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी ।  
 सिझाय करै । द्विवै पमिलेहण वेला पमिलेहण करै ) । ते विधिपूर्व्वे लि  
 खीठै । ( तोपिण ) संक्षेपे फेर लिखेहै ॥ ॐ ॥ दोय खमासमणें । इच्छा  
 सं ० जणः । पमिलेहण करं ( कही ) मुहपत्ती पमिलेहै । पठै दोय खमा  
 समणें । अंग पमिलेहण संदिस्सां । अंग पमिलेहण करं ( कहै ) पठै  
 ( गुरु वचनं ) । इच्छं कही । घोतियो कणदोरो पमिलेही । वल्ल पहिरी ।  
 खमासमण देई । इच्छकार जगवन पसाउकरी पमिलेहण करावोजी । ( इम  
 कही ) । थापनाचार्य पमिलेही थापै । अनें जो ( गुर्वादिक ) थापनाचा



धं पडिलेहैं । ( तो ) पिण ( खमासमण देई । उक्त रतें आग्यामांगै ।  
 पठै खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । उपधि मुहपत्ती पमिलेऊं  
 ( गुरु कहै पमिलेहेह ) पठै इच्छं कही । मुहपत्ती पमिलेही । दोय खमास  
 मणें । इच्छाका० सं० ज० । नही पमिलेहण संदिस्सानं ( गुरु० संदिस्सा  
 वेह ) नही पमिलेहण करुं ( गुरु० करेह ) पठै इच्छं कही । कंबल बस्त्रा  
 दि पमिलेही । पोसहसाला प्रमार्जी । काजो विधिसुं परिठवी । एक ख  
 मासमण देई । इरियावही पम्किमें ( इहां आचार दिन करमें कस्योठै )  
 ॥ ❀ ॥ दोयखमासमणें । इच्छाका० सं० ज० । वसती संदिस्सानं । वस  
 ती पमिलेऊं ( कही ) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जै ( इत्यादि ) पिण वि  
 धि प्रपा प्रमुखमें न कस्यो ॥ ❀ ॥ हिवै एक खमासमणें । इच्छाका० सं०  
 ज० । सिझाय संदिस्सानं । ( गुरु कहै संदिस्सावेह ) बीजै खमासमणें ।  
 इच्छाका० सं० ज० । सिझाय करुं । ( गुरु कहै करेह ) पठै इच्छं कही ।  
 नवकार १ कथन पूर्वक ( उपदेश माला ) प्रमुख सिझाय करी । नवकार  
 एक कही । धर्म ध्यान करै । जणें, गुणें, वखाण सुणें ॥ ❀ ॥ इम करतां  
 पूण पुझरदिन चढ्यां । उग्घामा पोरिसी शागस्या । वझ पम्पुत्ता पोरि  
 सी । कही । खमासमण देई । इरियावही पम्किमी । दोय खमासमणें ।  
 इच्छाका० सं० ज० । पमिलेहण करुं । ( गुरु वचनें ) । इच्छं कही । मुह  
 पत्ती पडिलेही । पान नोजन पात्र पमिलेही राखै । पठैसिज्जाय ध्यानकरै ॥

॥ ❀ ॥ हिवै काल बेलायें । आवस्सही पूर्वक देहरै जई । पांचेशक्रस्त  
 वे देववांदै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारसैं लिखियेहैं  
 ॥ ❀ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । नूमि प्रमार्जी ।  
 पुरुष ऊवै ) तो ) प्रनूजी सुं दक्षिणपासे बैसै । स्त्रीऊवै ते बांम पासे बै  
 सै । पठै । इच्छाका० सं० ज० । चैत्य वंदन करुं । इच्छं कही । पठै नमोत्थु  
 णं कहै । खमासमण देई । इरियावही पम्किमें । एक लोगस्सनो कानस  
 ग्ग करे । मुखें लोगस्स कहै । संडाशा प्रमार्जी बैसै । तीन ( तथा ) च्यार  
 ( तथा ) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिंच नाम तित्थें । ( इत्यादि  
 कही ) पठै । नमोत्थुणं कहै ( ऊनो थई ) अरिहंत चेई याणं करेमि का

उत्सर्गं । वंदण वत्ती० । अन्नत्थू० । कही । १ नवकारनो कान्तसंग करै  
( पारी ) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पठै लोगत्स० । सब लोए अरि० । वंदण  
व० । अन्नत्थू० । कही । १ नव० । ( पारी ) २ थुई की गाथा कहै । पठै ।  
पुक्खर वरदी० । सुअस्तन्नग० । वंदण० । अणत्थू० । कही । १ नव०  
का० ( पारी ) ३ थुई कीगा० । पठै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयावच्चगराणं० ।  
अन्नत्थू० । ( इत्यादि कथन पूर्वक ) चोथी थुईसँ देववांदी । नमोत्थुणं कहै ।  
फेर अरिहंतचे० कहै । इसीतरै । च्यार थुईए देव वांदी वैसै । नमोत्थुणं  
कहै । नमोऽं त्सिद्धाचार्यो पा० ( इत्यादि कही ) पठै स्तवन कहै । पठै  
जय वीरराय कही । ( नमोत्थुणं ) सबे तिबिहेण वंदामि । पर्यंत कहै ॥ ५ ॥  
इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ५ ॥ प्रवचन सारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें  
कहीठै ) ॥ ५ ॥ तथा चैत्य वंदन बृहज्जाप्यमें इम कसोठै ॥ १ ॥ ५ ॥  
नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कहै । इरियावही प्रति क्रमणादि करै । वली  
नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कहै । दोषवार च्यार थुईसँ देववांदै । फेर  
शक्रस्तव कहै । जावंति चेइयाइं गाथा जणी । खमासमण पूर्वक । जा  
वंतिके० वीजी गाथा कहै । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कहै । जय वी  
र राय कहै ॥ ५ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ पठै निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही प  
मिक्कमें । पठै सिद्धाय ध्यान करै ॥ ५ ॥ जो तिबिहार उपवास कियो ऊवै ।  
( तो ) पञ्चखाण बेला पूर्ण ऊवां । जलपीणेंकुं पञ्चखाण पारै ॥ ५ ॥  
॥ ५ ॥ हिंवै पञ्चखाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ खमासण देई । इरियावही पमिक्कमें । फेर एक खमा० । इ  
ज्जा० सं० ज० । पञ्चखाण पारवा मुहपत्ती पडिलेज्जं ( गुरु कहै पमि० )  
पठै इठं कहै । खमा० देई । मुहपत्ती पमिलेहै । फेर एक खमा० देई ।  
इज्जा० सं० ज० । पाणहार अमुक पञ्चखाण पारुं ( गुरु कहै पुणोवि  
कायघो ) पठै यथाशक्ती कहै । खमासमण देई । इज्जाका० सं० ज० ।  
पाणहार पारियुं ( गुरु कहै आपारो नमोचघो ) पठै तद्धति कहै । १ नव  
कारगुणी । अमुक पञ्चखाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किटियं ।  
आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मिट्ठामि डक्कमं ( कही ) चैत्य वंदन

करै । कृणमात्र सिझाय करी यथा संजवै । अतिथि सांवज्ञाग करी पाणी पीवै  
 ॥ ❀ ॥ तथा उपधान बाही ऊवै । ( तो ) पोरसी प्रमुख पञ्चक्खाण  
 पारी । आहार करै । पठै आसण बैठो थको हीज । दिक्स चरम पञ्चखै ।  
 पठै । इरियावही पम्किमी । चैत्य वंदन करै । ( एचेत्यवंदन आहार संवर  
 ण निमित्ते ठै ) । ॥ ❀ ॥ इति पञ्चक्खाण पारणेंकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पठै जो वहिर्नूमि जावणो ऊवै ( तो ) आवस्सहीकही । उप  
 योगीथको । निर्जीव स्थंमिलै जई । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व ।  
 उत्तर । सूर्य ग्रामादिकनें पूठि अणदेई । मल मुत्र परिठवै । प्राशुक जलै  
 शुद्ध थई । बार तीन बोसिरामि २ । एहवूं कहिवै करी । मल मुत्र वो  
 सरावी । पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक ( पैसी ) इरियावही पम्किमें ।  
 खमासमण देई । कहै । इच्छाका० सं० ज० । गमणा गमणं आलोयहं  
 ( गुरु कहै आलोएह ) पठै इच्छं कही । गमणागमण आलोवै ॥ ❀ ॥ ( ते  
 इम ) आवस्सही करी । प्राशुक देशें जई । संमाशा पूंजी । थंडिलो प  
 डिलेही । उच्चार प्रश्रवण बोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आ  
 व्यो ॥ आवंति जंतेहिं । जंखंडियं । जंकिराहियं । तस्समिहामि उक्कडं ॥  
 इम कही बैसै । पठै पम्जिलेहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करै ॥ हिवै ।  
 पाठलै पुज्जर । इरियावही पडिक्कमी । खमासमण देई कहै । इच्छाका०  
 सं० ज० । पम्जिलेहण करुं । ( गुरु कहैक० ) पठै इच्छं कही । दूजै खमास  
 मणें । इच्छाका० सं० ज० । पोसहशाला प्रमार्जुं ( गुरु कहै ) प्रमार्जह  
 पठै इच्छं कही । मुहपत्ती पम्जिलेही । दोय खमासमणें । अंग पम्जिलेहण  
 संदिस्सानं । अंग पम्जिलेहण करुं । ( कहै ) पठै ( गुरुवचनें ) इच्छं कही ।  
 मुहपत्ती पम्जिलेही । दंमासणो पूंजणी प्रमुख सोंप्रमार्जी । पोसहशाला प्रमा  
 र्जै ( पठै ) काजो शुद्ध करी । ऊधरी । एकांतें विखरतो परठवी । इरियाव  
 ही पम्किमी । खमासमण पूर्वक कहै । इच्छकार जगवन पसान करी प  
 डिलेहणा पम्जिलेहावोजी । पठै आपनाचार्य पम्जिलेही । आपै । गुरु स  
 मीपै ( अथवा ) आपनाचार्य समीपै । एक खमासमण देई । इच्छाका०  
 सं० ज० । मुहपत्ती पम्जिलेऊं ( गुरु कहै पडिलेहेह पठै । इच्छं कही ) ख  
 मासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पठै दोय खमासमणें । इच्छा० सं० ज०

सिञ्जाय संदिस्सानं । सिञ्जाय करं (कही) उत्तरीतें कणमात्र सिञ्जाय करी । तिविहार उपवास कीधो ऊवै । (तो) गुरुशाखें । पाणिहार पञ्चखै ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो ऊवै (तो) बांदणा दोय देई । पञ्च कखाण करै ॥ ✽ ॥ (पठै) एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । उपधि थंडिला पडिलेहण संदिस्सानं । बीजै खमासमणें । इच्छाका० सं० ज० । उपधि थंमिला पमिलेऊं (गुरुवचनं) इत्तं कही । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० ज० । वैसणो संदिस्सानं । वैसणोठातं । कही (वैसै) वख कंवला दि पमिलेहै । पुंजणी ऊवै (तो) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवासी तोठै । तेमाटें । सर्वपाठो कडिपटो धोतीयो कणदोरो पमिलेहै ॥ ✽ ॥ उपधानवाही प्रमुख नोजन कीधो ऊवै (तो) कम्पिटादि पमिलेखां पठै । वखकंवलादि पमिलेहै । (एविशेष ठै) । पठै कालवेला सीम सिञ्जाय ध्यान करै ॥ (पीठै) उचार प्रश्रवण २४ थंमिला पडिलेहै (जो) चन्द्रस ऊवै । (तो) पाखी चउमासी पम्किमणो करै । संवत्तरियें संवत्तरी पम्किमणो करै ॥ ✽ ॥ तिहां देवसी पम्किमणो पूर्वे लिख्योठै । तिमहीज करै । (पिण इतरो विशेष ठै) । इच्छा० देवसियें आलोणमि । इत्यादि । देवसी आलोयां पठै । ठाणे कमणे । चंकमणे । (इत्यादि पाठ कहै) (तथा) खुदो वदव काउसग कियां । पठै । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० ज० । सिञ्जाय संदिस्सानं । सिञ्जाय करं (कही) । वैगो थको । तीन नवकार प्रमुख सिञ्जाय करै । इति ॥ ✽ ॥ पाक्षिकादि तीन पम्किमणाकी विधि आगे लिखी है ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ हिवै पम्किमणो ऊवां पठै । साधुनी बेयावश्च कर । पोरसी सीम सिञ्जाय ध्यान करै । जो लघुनीति प्रमुख करवी ऊवै तो आसऊ कहितो थको । जूमि प्रमाजैं । थंमिल स्थानकें जई । देहसंका निवारै । प्रश्रवण वोसरावी । स्वस्थानकें आवै । (जगवन) वज्र पम्पिपुछा पोरसी । (इम कही) खमासमण देई । इरियावही पम्किमणें । पीठै राई संधारा विधि करै ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ हिवै राई संधारा विधि लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । राई संधारा मुहपत्ती पमिले

ऊं । ( गुरु कहै पन्निखेह ) पठै इच्छं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती पन्निखेहै । एक खमासमणें । इच्छा० सं० ज० । राई संथारो संदिस्सानं । बीजै खमासमणें । इच्छा० सं० ज० । राई संथारो ठावूं ( पठै ) गुरुवचनै । इच्छं कही । चनकसाय पन्निम लुल्लूखण । ( इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जय वीरराय सूधी चैत्यवंदन करै । जूमि प्रमार्जी । संथारो उत्तर पटो पा थरै । पठै शरीर प्रमार्जी । निरसही २ इम कही । संथारै वैसी । तीन नव कार । तीन करेमि जंतै । ऊचरी । एमो खमासमणाय । गोयमाईणं महा मुणीणं । अणुजाणह चिठिजा । अणुजाणह परमगुरु । ( इत्यादि ) राई संथारा गाथा जणी । वामहाथ सिराणें देई । सोवै । निद्रानावै । जांसीम । मुनि वर चरित्र चिंतवै । पसवामो फेरै ( तो ) शरीर संथारो प्रमार्जी फेरवै । जो देह शंकायें ऊठै ( तो ) पूर्वोक्त विधैं देहशंका निवारी । इरियावही पडि क्रमैं । पठै जघन्यें पिए । तीन गाथानी सिझाय करी सोवै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति राई संथारा विधि कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै रात्रीनैं पाठिलै पुहर ऊठी । नवकारादि गुणी । इरियावही पडिक्रमैं । खमासमण देई । कुमुमिण डस्सुमिण कानसग्न करी । पूर्वोक्त विधैं सामायिक लेवै । इहां इरियावही न पन्निक्रमैं । पठै दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकारगुणी । पडिक्रमण वेलासीम सिझाय करै । पन्निक्रमण वेला ऊवां । पन्निक्रमणो पूर्वली परे करै । ( पिए इतरो विशेषे ) । राई आलोयां पठै । संथारा नवदणकी ( इत्यादि पाठ कहै ) इम संपूर्ण पन्निक्रमणो करी । पन्निखेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधैं पन्निखेहण करी । धर्मशाला पूंजी । काजो ऊधरी । इरियावही पन्निक्रमैं । दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै । पठै पोसहपारै ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । मुहपत्ती पन्निखेहै । फेर । खमासमण देई कहै । इच्छा० सं० ज० । पोसह पारुं ( गुरु कहै पुणोवि कायवो ) पठै यथा शक्ति कही । खमासमण देई ( कहै ) । इच्छा० सं० ज० । पोसह पारूं । ( गुरु कहै आयारो न मोतवो ) । पठै तहत्ति कहै । खमासमण

देई । तीन नवकार अर्धावनत गात्र ऊजो थको गुणी । खमासमण देई ।  
 मुहपत्ती पमिलेहै । पीठे खमासमण देई कहै । इच्छाका० सं० न० । सा  
 मायक पारुं ( गुरु कहै पुणोवि कायवो । पठै यथा शक्ति कही । खमा  
 समण देई । इच्छाका० सं० न० । सामायक पारुं ( गुरु कहै आपारो  
 न मोत्तवो ) ( पठै तहत्ति कही ) खमासमण देई । अर्धावनत गात्र  
 ऊजो थको । हाथ जोड्यां । मुहपत्ती मुखें दियां थकां । तीन नवकार गु  
 णी । शंमासा पमिले है । गोडांलीधै बैसी । मस्तक नमावी । जयवं दस  
 न्नदो ( इत्यादि जावनारूप गाथा कहै ) पठै पोसहना उपगण संवरी ।  
 देहरे जई । देव जुहारै । घरे आवी । आहार निप्यन्न ऊयो देखी । साधु  
 समीपें आवै । अतिथि संविज्ञाग व्रत साचवण निमित्त । साधु नणी नि  
 मंत्रणा करी । घरे लेजावै । साधू पिण शुद्ध आहार लेई । स्वस्थानकें आ  
 वै । तियार पठै साधूनें जे आहार दीधो । तेहनो हीज । शेष आहार आ  
 प करै ॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ हिवै दिन ऊगां पठै पोसहलै तेहनी विधि लि० ॥

॥ ❀ ॥ घर थकी निश्चिंत थई । धर्मस्थानके आवी । सवें उपगण प  
 मिलेही । कचरो विधिसुं परिठवी । इरिया बही पमिकमें । खमासमण पूर्व  
 क आग्या मांगी । पोसह मुहपत्ती पमिलेहै । आगै पोसह ग्रहणनी वि  
 धि पूर्वें लिखी है । तिमहीज जाणवी ( पिण ) दिवस पोसह हीज करणो  
 ऊवै ( तो ) ( पोसह दमक ऊचरतां ) जावदिवसं पज्जुवासामि । ( एह  
 वो पाठ कहै ) अनें जो । अठपुहरी करवो ऊवै ( तो ) जाव अहोरत्तिं प  
 ज्जुवासामि । ( एहवो कहै ) पठै सामायिक विधि सर्व्व करी । चैत्यवंदण  
 कुसुमिण डुस्तमिण कान्तसंग करी । पमिकमणों करी । दोय खमासमणें  
 वज्जु वेलं संदिस्सावै १ ( अनें जो ) पूर्व्वें पमिकमणो गुरु साथे कस्यो ऊ  
 वैं ( तो ) पमिकमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वत्त । तेपहरी । पोस  
 ह सामायक सर्व्व विधि करी । दोय खमासमणें । वज्जुवेलं संदिस्सावै ।  
 २ ( तथा ) जो गुरु सें जूदो पडिकमणो कस्यो ऊवैं ( तो ) गुरु पासें आ  
 वी । पोसह सामायक सर्व्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्त ।

मुहपत्ती पन्धिलेही । वे वांदणा देई । इच्छाका० सं० ज० । राईयं आलो  
 ऊं । (गुरु कहै आलोपद् ) पठै राई आलोय । फेर १ खमासमण देई । इ  
 छाका० सं० ज० । अच्युतिजमि अचिन्तर । राईयं खामेमि ( गुरु कहै  
 खामेह ) पीठै तब पाठ कहै । राई खामें । पडिलो पडिक्रमणामें नक्कारसी  
 पचखोथो । तेमाटें । पठै । गुरु जावै पचखोथो उपवासनो करै । पठै । दो  
 य खमासमणें । बज्रवेळें संदिस्साउं०३ । ( ए तीन प्रकारका विकल्प जाण  
 वा ) । हिवे पन्धिलेहणतो पूर्व करीतें । ( तो पिण ) । आदेश मांगवें ।  
 ( तेइम ) खमासमण देई । इच्छा० सं० ज० । पन्धिलेहण संदिस्साउं । बीजें  
 खमासमणें । पडिलेहण करुं ( कही ) मुहपत्ती पन्धिले दै । पठै । इमहीज  
 दोय खमासमणें । अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पडिलेहै । पठै ।  
 बले खमासमण देई । इच्छाकार जगवन पसाउ करी पन्धिलेहण पन्धिलेहो  
 जी । ( इम कहै ) पठै । एक खमासमण देई । इच्छाका० सं० ज० । उपदि  
 मुहपत्ती पन्धिलेऊं ( कही ) कोई बल अण पन्धिलेहो राखो ऊवै ( तो )  
 पडिलेहै । ( नहीतो ) बली आसण पडिलेहै । पठै । दोय खमासमणें ।  
 सिज्जाय संदिस्सावी । उपदेशमात्रा प्रमुख सिज्जाय करै । आगै तब किया  
 पूर्व अठपुहरी पोसहमें लिखीतें । तिमहीज जाणवी । पिण इहां । अठ  
 पुहरी पोसहीतो ) पाठली रातें बली सामाविक न लेवै । जिणें दिवस सं  
 वंधी चौपुहरी पोसह लीथो ऊवें । ( ते ) पाठलें पुनर । पचखोथो किया  
 पठै । दोय खमासमणें । उहीपडिलेहण संदिस्साउं । उही पडिलेहण करुं ।  
 ( कहै ) पिण थंमिला पद नकहै । अने थंमिला नही पडिलेहै । यह  
 निकेवल दिनसंवंधी पोसह ग्रहण करणेंमें वितेप विधिही सो बतलाई  
 ॥ २३ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ २४ ॥

॥ २४ ॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लि० ॥ २५ ॥

॥ २५ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौपहरी । पोसो ऊचखो है । पठै संध्यानी  
 पन्धिलेहण करतां । रात्रि पोसहनो जावधयो । ( तो ) पचखोथो किया  
 पठै । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पन्धिलेही । तीन नक्कार गुणी ।  
 तीनवार पोसह दंमक उचरै । ( तिहां ) जाव रत्तिं पज्जुवासामि ( इम )

पाठ ऊचरै । पठै । सामायक विधि पूर्वे लिखी है । तिम करै ( पिण )  
सामायक ऊचखां पठी । दोय खमा समणें । सिझाय संदिस्तावी । आ  
ठ नवकार कही । बैसणो संदिस्तावी । पांगरणो संदिस्तावै । पीठै । दोय  
खमासमणें । इत्ताका० सं० न० । उंही थंमिला पम्लिहेहण संदिस्ताउं ।  
उंही थंमिला पम्लिहेहण करुं ( गुरु कहै करेह ) इत्तंकही । ( उपधि प  
म्लिहे है ) आगै सबंक्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी । ( तथा ) जे श्राव  
क उपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोस  
हनों जावथयां । पाठवै पुहर धर्म स्थानके आवै । जो बसती प्रमाजी  
ऊवै । ( तो सखो ) नहीतो बसती प्रमाजी । काजो परठवी । सर्व उपगर  
ण पम्लिहेही । इरियावही पम्लिकमें । पीठै चौधिहार पञ्चक्खाण करी ।  
दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पम्लिहेही । दोय खमा समण देई । पो  
सह संदिस्तावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनवेर  
पोसह दंमक ऊचरै । ( तिहां ), दिवस सेसं रत्तिं पज्जुवासामि ( कहै ) सं  
ध्या ऊवै । ( तो ) रत्तिं पज्जुवासामि कहै । पीठै । विज्जं खमासमणें सा  
मायक मुहपत्ती पम्लिहेहै । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्तावै ।  
फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिजंते ऊचरै । दोय  
खमासमण देई । सिझाय संदिस्तावी । आठ नवकार कहै । फेर दो खमा  
समण देई । बैसणो संदिस्तावी । शीतादिके । वे खमासमण देई । पांग  
रणुं संदिस्तावै । पीठै । वे खमासमण देई । अंग पडिलेहण संदिस्तावी ।  
मुहपत्ती पम्लिहेहै । फेर । वे खमा समण देई । उंही थंमिला पम्लिहेहण सं  
दिस्तावी । ( जो ) अण पडिलेहो उपगरण ऊवै । ( तो ) पडिलेहै ( जो )  
सबं उपगरण पम्लिहेहै ऊवै । ( तोपिण ) थानक शून्यता टालवा जणी ।  
बले आसण पम्लिहेहै । पम्लिकमण बेलासीम सिझाय ध्यान करै । पीठै ।  
उच्चार प्रश्रवणना ( २४ ) थंमिला पम्लिहेही पम्लिकमणों करै । ( तथा ) पा  
ठ्यीरातें । बली सामायक नलेवै । इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवा  
ना विकल्प जाणवा ) ॥ ॐ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ २४ थंमिला पम्लिहेहण पाठ लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आगाढे आत्तले उच्चार पासवणे अणदियासे ॥ १ ॥ आगा



ढे मझे उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें पासवणें  
 अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ ४ ॥ आ  
 गाढे मझे पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणें अणहियासे  
 ॥ ६ ॥ ✽ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे  
 मझे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहि  
 यासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे  
 पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ ✽ ॥  
 अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे  
 उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अ  
 णहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥ अ  
 णागाढे मझे पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अ  
 णहियासे ॥ १८ ॥ ✽ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहियासे  
 ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे  
 दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अहि  
 यासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणें अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे  
 दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ एथंमिला पडिलेहण पाठकहा ॥ ✽ ॥

॥ हिंवै थंमिला कहां १ करणा सोकहे है ॥

॥ ✽ ॥ ६ थंमिला सय्याकै दोनुं तरफ, दहणें पासे (३) वामपासे (३)  
 पमिले है ॥ ६ थंमिला दरवज्जेकै नीतर पासे दहिणें ३ वामें ३ पमिले  
 है ॥ ६ थंमिला दरवज्जे के बाहर दोनुं पासे पडिले है ॥ ६ थंमिला (ज  
 हां) उच्चार प्रश्रवणकी जगा दोनुं तरफ पडिले है ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति २४ थंमिला पमि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ (तिहां) प्रथम वंदित्तू सूत्र पर्यंत । देवसिक पमिक्कमी । १ ख  
 मासमण देई । देवसी आलोइयं पमिक्कंता । इच्छा ० सं ० ज्ञ ० । पक्षी मुहप  
 ती पमिलेज्जं । (चौमासै) चौमासी ० मुह ० (संवत्तरीयें) संवत्तरी मुहपती  
 पमिलेज्जं । पठै (गुरुकहै पमिलेह) पठै इत्तं कहै । दूजी खमासमणदेई ।

मुहपत्ती पन्धिलेही । वांदणादेवै । तिहां ( पक्खीमें ) परखो वड्कंतो ।  
 ( चौमासी में ) चौमासी वड्कंतो । ( संवत्तरीमें ) संवत्तरो वड्कंतो । इम  
 यथा योग कहै । ( पठै गुरु कहै ) पुण्यवंतो देवसीनं स्थानिकै, पाक्खिक  
 ( चउमासिक ) संवत्तरिक जणज्यो । ठीक जयणा करज्यो । मधुर स्वरै  
 पन्धिकमज्यो । खासै सो विवरा सुद्ध खासज्यो । मांमलमें सावचेत रहज्यो  
 पठै सगलाही कहै । तहत्ति । पठै ऊठी । इत्ताका० सं० ज० । संवुद्धा  
 खामणेणं । अच्चुच्चिमि अञ्जितर । पक्खियं (३) खामेणं ( गुरु कहै खा  
 मेह ) पठै मस्तकै अंजली करतो थको । इत्तं खामेमि पक्खियं ( ३ ) क  
 ही । गोमालीयें वैसी । मस्तक नमावी । दक्षिण हाथ गुरु साहमू करी  
 मुहपत्ती मुखें देई । ( पक्खियें ) पनरसन्हं दिवसाणं । पनरसन्हं राईणं ।  
 जंकिंचि अप्पत्तियं । ( इत्यादि सर्वपाठ कहै ) चउमासे ॥ चउण्हं मा  
 साणं । अउण्हं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राई दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं  
 ( इत्यादि कहै ) । संवत्तरीयें ॥ ड्वाल सण्हं मासाणं । चौवीसण्हं पक्खा  
 णं । तिच्चिसय सठि राई दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं ( इत्यादि कहै ) ति  
 वारे ( गुरु पिण मिच्चामि डुक्कमं कहै ) । तिहां दोय साधु उचरता ऊवै  
 ( तो ) पाखियें ( ३ ) चौमासीयें ( ५ ) संवत्तरीयें ( ७ ) साधुनं खमावै । पठै  
 ऊठी । अवग्रह मांदि रह्यो कहै । इत्ताका० सं० ज० । पक्खियं आलो  
 वूं ( गुरु कहै आलोएह ) पठै इत्तं आलोएमि । जोमे पक्खियं ( ३ ) अ  
 इयारो कउ ( इत्यादि सूत्र जणी ) संक्षेपै ( अथवा ) विस्तारें । पाखी  
 चौमासी । संवत्तरी । अतीचार आलोवै । पठै । सवस्सवि पक्खियं ( ३ )  
 इत्यादि । इत्ताकारेण संदिस्सह पर्यंत कहै । तिवारै ( गुरु कहै ) चउत्थे  
 ण पन्धिकमह ( चौमासै ) ठणेण पडिक्कमह ( संवत्तरीयें ) । अउमेण पडि  
 क्कमह । इत्तं । तस्समिच्चामि डुक्कमं ( कही ) वादशावर्त्त वांदणादेवै ।  
 पठै । इत्ता कारणेण संदिस्सह जगवन् । देवसियं आलोइयं पडिक्कता ( १ )  
 पत्तेय खामणेणं । अच्चुच्चिमि अञ्जितर । पक्खियं (३) खामेज्जं । ( गुरु  
 कहै खा० ) पठै । इत्तं खामेमि पक्खियं । ३ ( इत्यादि पाठ ) सर्व पूर्वे  
 कखो । तिम कही । मिच्चामि डुक्कमं देई । खमावै । पठै । वे वांदणादेई ।  
 जगवन् देवसियं आलोइयं पडिक्कता । पक्खियं (३) पन्धिकमावेह । ( गुरु

कहै सम्मं पम्किमह ) । पठै इहं कही । करेमि जंते सामाइयं । इहामि  
 ठामि कानसगं । जोमे पक्खिउं (३) ( इत्यादि कही ) तस्सुत्तरी० अ  
 न्नत्थु० कही । कानसग करै ) गुरु पाखी सूत्र कहै । ते सांजलै । अनै  
 गुरु थकी जूदा पडिक्कमता ऊवै (तो) एक श्रावक खमासमण देई । क  
 है । जगवन सूत्र जणुं । ( गुरु० जणह ) । इसो वचन मनमें धारी ।  
 ( इहं कही । ऊजो थको । हाथ जोमी । मुहपत्ती मुखें देई । तीन नवकार  
 कही । मधुर स्वरै सूत्रार्थ मनमें चिंतवता । ( वंदितु सूत्र गुणें ) बीजाश्रा  
 वक । करेमि जंते० । इहामि ठानं कानसगं । तस्सुत्तरी ( अन्नत्थु कही )  
 कानसगमें रखां सुणें ( सूत्रप्रांते ) एमो अरिहंताणं कही ( कानसग  
 पारी ) ऊजा थका तीन नवकार गुणी (वैसै) पठै तीन नवकार (३) करे  
 मि जंते कही । इहामि पडिक्कमिउं । जोमे पक्खिउं (३) इत्यादि कही ।  
 ( वंदितु सूत्र गुणें ) पम्किमे देवसियं सव्वं । ( एहनै ठिकाणें ) पम्किमे  
 पक्खियं । चौमासीयं । संवत्तरियं ( सव्वं कहै ) पठै ऊगी । अब्भुविउंमि  
 आराहणाए ( इत्यादि परिपूर्ण जणी ) खमासमण देई । इहामि सं० ज० ।  
 मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं । कानसग करुं ( गुरु क  
 है कोरह ) पठै इहं कही । करेमि जंते सामा० । इहामि ठानं कानसगं ।  
 तस्सु० । अन्नत्थु । ( इत्यादि कही ) पाखीयें ( १२ ) लोगस्स । चौमासै  
 ( २० ) लोगस्स । संवत्तरीयें ( ४० ) लोगस्सनो कानसग करै । एक नव  
 कार ऊपर । कानसग करी । ( पारी ) लोगस्स कहै । वैसी । मुहपत्ती  
 पडिलेही । वे वांदणा देई । इहामि सं० ज० । समाप्ति खामणेणं । अ  
 ब्भुविउंमि अस्सिंतर । पक्खियं (३) खामेजं ( गुरु कहै खामेह ) पठै ।  
 इहं खामेमि पक्खियं । ( इत्यादि पाठ ) पूर्वे कसो । तिम कहै । ( पठै )  
 इहामि सं० ज० । पाखी (३) खामणा खामूं ( गुरु कहै ) । पुण्यवंतो  
 चारवेर खमासमण देई । तीन ९ नवकार कही । पाखी (३) समाप्त खा  
 मणा खामह । पठै । श्रावक एक खमासमण देई । मस्तक नीचो नमावी  
 तीन नवकार गुणें । इम चार वार कहे । पठै । ( गुरु कहै नित्यारग पार  
 गाहोह ) पठै श्रावक कहै । इहं । इहामो अणुसहिं (कही) (गुरु कहै)  
 पुण्यवंतो । पाखीनै लेखै । एक उपवास । ( अथवा ) दोय आंविअ ( अ

थवा ) तीन नीवी । (अथवा) चार एकासणां । (अथवा) वेह्कार सि  
 प्राय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्यानकै देवसिक न  
 णिज्यो ॥ इम चौमासें एसर्व डुगणो कहणो । संवत्तरीये त्रिगुणो कहणो  
 पठै जिणें तपकीधो ज्ञवै । ते पड़वियं कहै । न कीधो ज्ञवै । ते कहै । त  
 हत्ति । पठै वे वांदणां देई । अब्बुब्बिमि अप्रिंतर । देवसियं खामेमि ।  
 इत्यादि कहै ) पठै वे वांदणा देई । आयरिय उवप्पाए ० तीन गाथा कहै ।  
 इम आगै सर्व विधि । देव सिक पम्भिकमणानी करै । पिण इतरो विशेष  
 है । श्रुत देवतानो काउसग्ग करी । स्तुति कहै । पीठे नवण देवयाए करे  
 मि काउसग्गं ( इत्यादि विधे ) नवन देवतानों काउसग्ग करी । स्तुतिकही ।  
 केत्त देवतानो काउसग्ग करै । (तथा) तीने पर्वे । वमो स्तवन अजित शां  
 ति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पम्भिकमणो  
 पूरो ज्ञवां । पठै । एक श्रावक गुर्वाज्ञायें । नमोऽर्हत्सिद्धा कही । शांति  
 स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणें । जिणानें रात्री पोसह न  
 ज्ञवै ( ते ) पोसह सामायिक पारी सांजलै ॥५॥ ॥ ॥  
 इति पाक्षिकादि ( ३ ) पडिक्कमणविधिः कही ॥ ॥ ॥

## ॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें ठम्मासी तपचिंतन विधिः ॥

॥ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो ठम्मासी तपहैं ॥ रे जीव  
 ते करि सके । नकरिसकुं । इम एक दिन उठो । करि सकै ( न करिसकुं ) ।  
 इम एकेक दिन उठो करतां । उगुण तीस दिन ऊणा ठम्मास ज्ञवै । तिहां  
 सूधी पूठियै । पठै । ( पंचमासी ) करि सकै । न करिसकुं । एक दिन ऊ  
 णी पंचमासी करि सकै ( न करिसकुं ) । इम एकेक दिन उठो करतां ।  
 उगुण तीस दिन ऊणी । पंचमासी लगे पूठियै । पठै । ( चउमासी ) एक  
 दिन ऊणी । दोय दिन ऊणी । इमहीज त्रिमासी । डुमासी । यावत्  
 ( एक मासकरि सकै ) । नकरि सकुं । पठै । एक दिन ऊणो फियां । सो  
 लह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सकै ( न करिसकुं ) । पठै । वेवे  
 जात घटावतां पूठियै । ( इम ) वत्रीसम करि सकै ( न करिसकुं ) । ( इम )  
 बीसम । अठ बीसम । ठावीसम । चौत्रीसम । वावीसम । बीसम । अठार

थई सूत्र पूर्ण करै । इम अतीचार पडिकमी । श्रीगुरुनं विषै पोतानो कीधो  
कोई अपराध खमाइवा निमित्तें । वांदणा देवै । पठै गुरु प्रमुखनं खमावी  
कानुसग्ग निमित्तें । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुनं अपणो आधीन  
पणो जणाइवा निमित्तें पिण जाणवी । पठै ( श्रावक ) आयसिय उवझाए  
( इत्यादी तीन गाथा जणें ) हिवे आलोयण पम्किमणा थी शुद्ध न थया  
( जे ) चारित्रादिकना मोटा अतीचार ( ते ) शुद्ध करवानें अर्थे पांचमो आ  
वश्यक कानुसग्ग करै ॥ ❀ ॥ तिहां । प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र ज  
णी । चारित्राचार सुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चिंतवै । इहां तीजी वार  
वले सामायिक उच्चारण कीधो ( ते ) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें की  
धी सफल थाइ । ए अर्थे । पठै ज्ञान थी समकित अधिको है ( तेमाटें )  
दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कह्यो । सबलोए ( इत्यादि ) सूत्र जणी । एक  
लोगस्सनो कानुसग्ग करै । पठै श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर  
दीवह्ते ( कह्यो ) सुयस्स जगवठ ( इत्यादि जणी ) बीजो एक लोगस्सनो  
कानुसग्ग करै ( इहां ) प्रथम कानुसग्ग दोय लोगस्सनो कह्यो । ते ज्ञाना  
दिक थी चारित्रनो अधिकपणो ठे ( तेमाटें ) वली । ग्यानादिकनी अपेक्षा  
यें, चारित्रनं अतीचार घणा लागै । तेपिण कारण जाणवो । पठै ।  
ज्ञान । दर्शन । चारित्राचार । निरतीचार पणें आचरवाना फलभूत  
श्रीसिद्ध जगवान, तिणारी स्तवना । सिद्धाणं बुद्धाणं ( इत्यादि जणें )  
पठै । हिवणां उपगारी श्रीमहावीर स्वामीठै ( ते माटे ) जो देवा ए  
विदेवो ( इत्यादि तेज्जनी स्तवना करै ) पठै महा तीर्थपणा ज्जंती । उज्जिं  
त शेल सिंहरे ( इत्यादि तीर्थ स्तवना करै ) इम । चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार  
सुद्ध करी । समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणठै ( तेमाटें ) श्रुत सम  
द्धि निमित्तें । श्रुत देवतानो कानुसग्ग करी स्तुति कहै । पठै जेहना क्षेत्र  
में रहियै । ते क्षेत्र देवतानो कानुसग्ग करी । स्तुती कहै । ( सिद्धांत माहें )  
तीजै व्रतें निरंतर अवग्रह याचना रूप जावना कह्यो । ते साचवणें नि  
मित्तें ए कानुसग्ग संजवै है । ए दोनुं कानुसग्ग पूर्वधारीये आचर्या ठै ।  
( आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, ज्ञाप्यादिक माहें ) श्रीहरिन्द्र सूरि प्रमुख मोटे  
आचार्ये कह्याठै ( ते माटें ) प्रमाण है । पठै कानुसग्ग थी । केई अती

चार सुख न थया ते सुखकरवानें । ठगे आवश्यक पञ्चक्खाण कसो ॥५॥  
 तेपूर्व कीयो होय ( तो ) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक  
 कही । मुहपत्ती ( अने ) काया पडिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इत्तामो  
 अणुसिद्धि कहै । तुह्मारी आझायें में पन्निक्कमणो कीधो । एहवुं गुरुनें ज  
 णाविवा निमित्तें । ए वांदणा कस्यो । इतरे पन्निक्कमणो परिपूर्णथयो ॥५॥  
 ( हिवै ) निर्विम पणें पडिक्कमणो पूर्ण ऊवा थकी घणो हर्ष ऊपनो । तिणें  
 करी । गुरु एक स्तुति कस्यो थकां । सर्व साधु श्रावक वर्द्धमान स्वरे । तीन  
 स्तुति कहै ( इहां गुरुना वचननें अंतें ) शिष्यादिक । नमो खमासमणा  
 णं ( एहवो गुरुनें नमस्कार कहै ) ते गुरु वचननो वज्जमान रूपवै । पठै  
 शकस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु भक्ति  
 पूर्वक सफल थायै ( ते मांटे ) पन्निक्कमणानें प्रारंभे ( तथा ) अंतें । देव गुरु  
 वंदन कसो ॥ ५ ॥ हिवै पन्निक्कमणां माहें । चारित्रादि सुखि निमित्तें । पूर्व  
 फाउसंग कीधा ठे । तोपिण बली विशेष शुखि निमित्तें । च्यार लोगस्स  
 नो फाउसंग करी । मंगल निमित्तें लोगस्स कहै । जे साधु श्रावक आ  
 त्मार्थीऊवै । ते ए हेतु समज्जी । विधि पूर्वक उपयोग सुं पन्निक्कमणो करै ।  
 ते लीलायें अवसमुद्र तरै । सिद्धि संपदा वरै ॥ ५ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः । प्र  
 ति क्रमण हेतवः । निवद्धा ज्ञापयोद्धृत्य । साधु श्राद्धादि हेतवै ॥ १ ॥ वां  
 चकामृत धर्माणां । शिष्येणात्म हितेष्ठना । कृमाकल्याण गणिना । वीका  
 नेर पुरे मुदा ॥ १ ॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम् ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लिपि ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ चौतीसे अतिशय जुठ । वचनातिशयें जुठ ॥ सो परमेस्वर देख  
 जवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) सिंहासण वैठा जगज्जाण । देखी  
 जविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठें तुळ निम्मल जाण । लहीयै परम महोद  
 य ठाण ॥ १ ॥ ५ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरण कम  
 ल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोजागी । चोवीस वैरागी ॥ चोवीस जिनन्दा  
 कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ५ ॥ इतना कही । कुसुमांजली  
 चढाई जै । चरणां टीकी दीजै । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोर्हत् सि

धा० कही । पढै ॥ ॐ ॥ ( गाथा ) जोनिअ गुण पऊव रम्यो । तसु  
 अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ १ ( ढाल )  
 जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर  
 निज पदलीन । पूजो प्रणमो नव्य अदीन ॥ ॐ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति  
 जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ १ ॥ ॐ ॥ कुसु  
 मांजली चढाई जै । गोमां टीकी दीजै । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके  
 नमो फ़त्सिद्धा० कही पढै ॥ ॐ ॥ ( गाथा ) निम्मल नाण पयासकर ।  
 निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्म वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) लोका लोक प्रकासक नाणी । नविजन तारण जेहनी वाणी ॥  
 परमानन्द तणी नीसाणी । तसुन्नगतें मुऊमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि  
 मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ॐ ॥ ३ ॥ ॐ ॥ कुसु० दोनुं हाथे टीकी  
 दीजै । मुखै पढै । नमो फ़त्सिद्धा० ॥ ॐ ॥ ( गाथा ) जे सिझा सिझ  
 न्तिजे । सिझिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अ  
 रिहन्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) शिव सुख कारण जेह त्रिकालै । समपरिणामें जगति  
 निहालै ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखालै । इन्द्रादिक जसु चरण पखालै ॥  
 कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ कुसु० दोनुं खांधे टीकी ।  
 दीजै । मुखै पढै नमो० ॥ ॥ ॐ ॥ ( गाथा ) सम्म दिठी देशजय  
 साऊ साऊणी सार ॥ आचारज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥  
 ( ढाल ) ॥ चौबीह संघें जे मन धास्यो । मोक्ष तणो कारण निरधास्यो ॥  
 विविह कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमां  
 जलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ॐ ॥ कुसु० मस्तक  
 टीकी दीजै । नमो फ़त्सिद्धा० कही । चमर हाथमें लेवै ॥ ॐ ॥  
 ( वस्तु ) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरङ्ग ॥ कछ्वाण कविह संठविअ ।  
 करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इक्कसमय विहरं  
 न्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस । नत्ति  
 ह जावें पूजीया । करोसंघ सुजगीस ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ एकदिन अचिरा झलरावती । ए चाल ॥ ॐ ॥ नव तीजय समकित  
 गुण रम्या । जिन नत्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना ।

करी धानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रजावता । मनजाव  
ना एहवी जावता ॥ संवजीव करूं शासन रसी । ऐसी जावदया मन जल्ल  
सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवुं जल्लुं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आ  
उंधै विचइ एकजव करी । श्रद्धा संयोगते धिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ लं  
हे नरजव उदार । जुरते तिम ऐरवत तेजसार ॥ महाविदेह विजयपरधान ।  
मझखंमे अवतरै जिन निधान ॥ ४ ॥ ( ढाल ) पुन्य सुपनाहे देखै । मनमां  
हरप विसैपै ॥ गजवर उकल सुन्दर । निरमलवृपज मनोहर ॥ १ ॥ निरजय  
केसरी सीह । लखमी अतिहि अवीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरम  
ल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै । इन्द्रधजा जगजीपै ॥  
पूरण कलस पंमूर । पद्मसरोवर पूर ॥ ६ ॥ इग्यारमै रयणायर । देखै मा  
ताजी गुणसायर ॥ बारमै जुवन विमान । तेरमै रतन निधान ॥ ४ ॥ अंग  
नि शिखा निरधूम । देखै माताजी अनोपम ॥ हरली रायनै जासै । राजा  
अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्यै पुत्र मनोहर ॥ इ  
द्रादिक जसु नमसै । सकल मनोरथ फलसै ॥ ६ ॥ ॥ ✽ ॥ ( वस्तु )  
॥ ✽ ॥ पुन्य उदय २ ॥ ऊपना जिननाह । माता तव रयणी समै ।  
देखि सुपन हरखंत जागीअ । सुपन कही निज कंतनै । सुपन अरथ  
सांजलै सोजागीय । त्रिजुवन तिलक महागुणी । होस्यै पुत्र नि  
धान । इन्द्रादिक जसु पायनमी ॥ करसै सिद्धि विधान ॥ ✽ ॥ ॥ १ ॥  
( ढाल ) ॥ चंद्रा उल्लालानी ॥ ✽ ॥ सोहंमपति आसन कंपीयो । देइ अ  
वधे मन आणंदीयो ॥ मुक्त आतम निरमल करण काज । जवजल ता  
रण प्रगव्योजिहाज ॥ १ ॥ जव अम्वी पारग सत्यवाह । केवलनाणा इअ  
गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण उलट्यो आसाढि  
मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तव रोमराय । बलयादिकमां निज तनु नमाय ॥  
सिंहासणथी ऊव्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ संगअमे  
पय समुहा आवितथ । करी अंजली प्रणमिअ मथ सथ ॥ मुख जापे  
एकण आजसार । तियलोय पहु दीगे उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय  
देव । विपयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मि  
थ्याविष चूरण गंरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समथ । प्रगव्यो तसु



प्रणमी ऊवो सनत्थ ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवि । तव देव देवी हरखे सुणे  
 वि ॥ ६ ॥ गावै तव रंजा गीतगान । सुरलोक ऊवो मंगल निधान । नर  
 खेत्रे आरज वंसठाम । जिनराज वधे सुर हर्ख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता धरे  
 उठव अलेष । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर  
 खसंग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुन्नवेला लगनें तीर्थनाथ ।  
 जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुखपास्यां त्रिभुवन सर्वजीव ॥ वधाई व  
 धाई थई अतीव ॥ ९ ॥ फूल अकृतसें वधावै । ३ प्रदक्षिणा देवै । (पीठे)  
 शक्रस्तव, ठाणं संपावियुंकामस्स । तक कहै । पीठे । रोली (तथा) केसरका  
 हाथमें साधिया करै । धूपखेवै ॥ (ढाल) श्री शांति जिननो कलश कहि  
 सुं ॥ १० ॥ ए चाल ॥ ११ ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइयै सुखकार । नर  
 खेत्र मंरण इह विहंरण । नविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख  
 उठव । थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी । लक्षो  
 हरख अपार ॥ १२ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुणठंड ॥  
 जिन जननी पासे आय पऊती । गहकती आणंद ॥ हेमायतें जिनराज  
 जायो । शचि वधायो रम्म । अमजम्म निम्मल करण कारण । करिस सूई  
 अकम्म ॥ १३ ॥ तिहां झूमि सोधन दीप दरपण । वायवीऊणधार ॥ ति  
 हां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखमी जिनपा  
 णि बांधी । दीयै इम आसीस ॥ युगकोम कोमी चिरंजीवो । धर्मदायक  
 ईस ॥ १४ ॥ (ढाल) उल्लाखानी ॥ १५ ॥ जिनरयणीजी दश दिश उज्जलता  
 धरै ॥ सुन्नलगनेंजी ज्योतिस चक्रते संचरै । जिन जनम्याजी जिण अव  
 सर माता धरे ॥ तिण अवसरजी इंद्रा सण पण थर हरे ॥ (बूटक)  
 थरहरै आसन इंद्रचित्तै कौन अवसर एवन्यो । जिन जन्म उठव काल  
 जाणी अतिहि आणंद ऊपनो ॥ निजसिद्ध संपति हेतु जिनवर जाणि  
 जगतें ऊमत्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो ॥ १६ ॥  
 (ढाल) तव सुरपति जी घंटानाद करावए ॥ सुरलोके जी घोषणा एहदि  
 रावए । नरक्षेत्रे जी जिन वर जनम ऊवो अठै । तसुन्नगतें जी सुरपति मंदि  
 र गिर गठै ॥ (बूटक) गठै मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनत  
 णो । जिन जन्म उठव करण कारण आवज्यो सविसुर घणो । तुम

सुखः समकितः यास्यैः निरमल देव देवी निहालतां । आपणा पातिक सर्व  
जास्यैः नाथ चरणपखालतां ॥ ३ ॥ (ढाल) इम सांजलजी सुरवर कोमि  
वहू मिली । जिन वंदण जी मंदर गिरि साहमी चली । सोहम पतिजी  
जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वांदी स्वामि वधा विया । ( ब्रू  
टक ) वधाविया जिनवर हर्ष वज्रलै धन्यज्जं कृतपुन्य ए । त्रैलोक्य नाय  
क देवदीगो मुक्त समो कुण अन्यए । हे जगत जननी पुत्र तुल्लचो मेरु म  
ज्जन वरकरी । उठंग तुम्हचै बलिय थापिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ४ ॥  
( ढाल ) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पांच रूपे जी अति  
सय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तव वत्तीस आगल वहै । सुर  
कोडो जी जिन दरसणें ऊमहै ( ब्रूटक ) सुर कोमि कोमी नाचती बलि  
नाथ शचि गुण गावती । अपठरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती  
जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदै आसी सए । अह्नवाण शरण आ  
धार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी पांडुक व  
नमें चिहूं दिसै । गिरसिल परजी सिंहासण सासय बसै । तिहां आणीजी  
शकें जिन खोलै ग्रहा । चौसठे जी तिहां सुरपति आवी रक्षा ॥ (ब्रूटक)  
आविया सुरपति सर्व जगतै कलश श्रेणि वणाव ए । सिद्धार्थ पमुहा ती  
थं उगधि-सर्व वस्तु अणाव ए । अच्युय पति तिहां ऊकमकीनो देव कोमा  
कोमिनैं । जिन मज्जनारथ नीरें ल्यावो सवे सुर कर जोडिनैं ॥ ५ ॥ ॥  
सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेकै खडा रहै । मुखसैं पढै (ढाल)  
शांतिनैं कारणै इंद्र कलशा जरै । ए चाल ॥ ॥ आत्मसाधन रसी देव  
कोमी हसी । उल्लसीनैं धसी खीरसागर दिसी ॥ पौमदह आदि दह गंग  
पमुहानई । तीर्थजल अमल लेवा जणी ते गई ॥ २ ॥ जाति अड कल  
श करि सहस अगेत्तरा । ठव चामर सिंहासणें सुजतरा । उपगरण पु  
प्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें जासिया तेम आणीठवे ॥ १ ॥ तीर्थ जल  
जरिय करकलश करि देवता । गावता जावता धर्म उन्नतिरता । तिरिय नर  
अमरनैं हर्ष उपजावता । धन्य अह्न सगति सुचि जगति इम जावता ॥ ३  
सम कित बीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसैं प्रक्तिजल सी  
चता । मेरु सिहरो बरै सर्व आव्या वही । शकउठंग जिन देवि मन गह

गद्दी ॥ ४ ॥ ❀ ॥ (गाथा) ॥ ❀ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो अदिठ  
 पुवो । तिलोय तारणो । तिलोय बंधु । मिहत्तमोह विहंसणो । आणाइ ति  
 ना विणासणो । देवाहि देवो दिव्वो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥ ❀ ॥ (ढाल तेह  
 ज) ॥ ❀ ॥ एम पन्नणंति वण जुवण जोईसरा । देव वैमाणिया जति धम्मायरा ।  
 केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा केई वररमण वयणेण अइउहगा ॥ ५ ॥ ( व  
 स्तु) तत्थु अचुयइ इंद्र आदेश । करजोमि सर्व देवगण । लेयकलश आदेस  
 पामीय । अदन्नुत रूप सरूपजुय । कवण एह पुहंत सामीय ॥ इंद्र कहै  
 जगतारणों । पारग अह्मपरमेस । नायक दायक धम्मनिहि । करीवै तसु  
 अन्निषेस ॥ १ ॥ (ढाल ए मी) तीर्थ कमल वर उदक नरीनें । पुष्कर सा  
 गर आवे (एचाल) ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगै  
 न्हामें । आतम निरमल आव करंता वधतें शुभ परिणामें । अच्युता दिक  
 सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अन्निषे  
 क करंत ॥ १ ॥ पू० (गाथा) ॥ तव ईशान सुरिंदो । सकं पन्नणेइ करि  
 ऊ सुपसावो । तुह अंके मह नाहो । खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १ ॥ ता  
 सक्किंदो पन्नणई । साहमीय वज्जलंमि वज्जलाहो । आणाइवंतेणं गिएहह  
 होउ कयत्थानो ॥ २ ॥ ❀ ॥ इतना कहके । सर्व स्त्रात्रिया, जगवान ऊपर  
 कलश ढाले । मुखैपढे ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सोहम सुरपति वषन्न रूप करि ।  
 न्हवण करै प्रभु अंगै । करिय विलेपण पुष्प मालठवि । वर आचरण अनं  
 ग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुरवर वज्ज जय इ ख करै निश्चैधर आणंद । मोह  
 मारग सारथ पति पाय्यो । नांजिसु हिव नवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोमिव  
 तीस सोवन्न उवारी । वाजंतै वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें । ज  
 ननीनें सुप्रसाद । ३ सो० ॥ आणीथापै एम पयंपै । अह्म निसतरिया आ  
 ज । पुत्र तुहमारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात  
 जतन करि राखिज्यो एहनें । तुह सुत अह्म आधार । सुरपति जगति स  
 हित नंदीसर । करै जिन जगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कप्प गया  
 सवि निर्जर । कहितां प्रभु गुणसार । दिक्का केवल ज्ञान कल्याणक । इह  
 चित्त मजार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गह्व जिन आणा रंगी । राज सागर उ  
 वसाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणै सुपसाय ॥ सो० ७ ॥

देवचंद निज जगतें गायो । जनम महोदय ठंद । बोधबीज अंकूरो उल्लह  
स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो ० ८ ॥ ( ढाल ) ॥ इम पूजा जगतें क  
रो । आतमहित काज । तजिय विजाव निजजावना । रमतां शिवराज ॥ १ ॥  
५० ॥ काल अनंतें जे ज्ञावां । होस्यै जेह जिणंद । संपद् सीमंधर प्रभु ।  
केवल नाण दिणंद ॥ ५० ॥ २ ॥ जनम महोदय इणि परै । श्रावक रुचि  
वंत । विरचै जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ ५० ॥ ३ ॥ देवचंद  
जिन पूजतां । करतां जवपार । जिन पद्मिमा जिन सारखी । कही सूत्र-  
मज्जार ॥ ५० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उहा ) गंगामागध क्षीरनिधि । उषध मिश्रितसार । कुशुमें वा  
सित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ ( ढाल ) मणि कनकादि  
क अमविध करि जरी कलश सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनही  
डरित प्रचार । मेरुशिखर जिम सुखर जिनवर न्हवण अमान । करता वर-  
ता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ १ ॥ ( ठंद ) हर्ष जरी अप्सरावृंद  
आवै । स्नात्र करि एम आसीस जावै । जिहां लगै सुरगिरि जंबुदीवो ।  
अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( श्लोकः ) ॥ विमल केवल  
जासन जास्करं । जगति जंतु महोदय कारण । जिनवरं वज्रमान जलौ  
घतः । शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत  
ज्ञान शक्तये । जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्री मज्जिनेद्राय । जलं यजाम  
हे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥ ❀ ॥ जलसँ न्हवण करावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उहा ) वावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनं घन सार ॥ जि  
न तनु लेपै तसुठलै । मोह संताप विकार ॥ १ ॥ ( ढाल ) सकल संताप  
निवारण तारण सज्ज जवि चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो जवि  
नित्त ॥ निज रूपै उपयोगी धारी जिनगुण गेह । जावचंदन सुह जाव थी  
ढालै दुरित अग्नेह ॥ २ ॥ ( चालि ) जिन तनु चरचतां सकल नाफी ।

कहै कुग्रह उणता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज ह्माकी । न  
 वृषता अह्म तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकलमोह तिमश्र वि  
 नासनं । परम शीतल ज्ञावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शनैः । सहज  
 तत्त्व विकाश कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये ॥  
 जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमङ्गिनेद्राय । चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥  
 इति चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ केसर चंदन चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उहा ) शतपत्री वर मोगरा । चंपक जाइ गुलाब ॥ केतकी  
 दमणो बौलसिरि । पूजो जिन जरि बाब ॥ १ ॥ ( ढाल ) अमल अखंमि  
 त विकसित सुन्न सुमनी धन जाति । लाखीणो टोमरठवी अंगीरचो बज्ज  
 ज्ञाति ॥ गुण कुसुमें निज आतम मंमि करवाजव्य ॥ गुणरागी जमत्यागी  
 पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ ( चालि ) जगधणी पूजतां विविध फूलै । सुरवरा  
 ते गिणें क्षण अमूलै ॥ खंति धर मानवा जिनपद पूजै । तसुतणा पाप संताप  
 धूजे ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै । विंशद चेतन ज्ञाव  
 समुद्रवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनेर्नवैः । परमतत्त्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं परमात्मने ॥ पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति पुष्पपूजा ॥ पुष्प चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ४ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उहा ) कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरक लोवान । मेल  
 सुगंध घनसार घन । करो जिनने धूपदान ॥ १ ॥ ( ढाल ) धूपघटी जिम म  
 हमहै तिम दहै पातिक वृन्द ॥ अरति अनादिनी जावै पावै मन आणंद ॥  
 जे जिन पूजै धूपै जव कूपै फिर तेह ॥ नावै पावै ध्रुवधर आवै सुख अ  
 वेह ॥ २ ॥ ( चालि ) जिनवरे वासतां धूपपूरै । मिहत्त दुर्गन्धता जाइ  
 दूरै ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्व गत स्वभावै । कारिका उच्चगति ज्ञाव पावै  
 ॥ ३ ॥ ( श्लोकः ) सकल कर्म महेंधन दाहनं । विमल संवर ज्ञावसु धू  
 पनं ॥ असुन्न पुजल संग विवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं परमात्मने ॥ धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति धूप पूजा ॥ धूप अंगरवत्ती खेवै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ५ दीपपूजा ॥ ❀ ॥

(डहा) मणिमय रजत ताम्रना । पात्रकरी धृत पूर । वत्ती सूत्र कसुं  
नी । करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल) मंगलदीप वधावो गावो जिन  
ए गीत ॥ दीपतणी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतणी सुज  
योती द्योती जिन मुखचंद ॥ निरखी हरखो नविजन जिम लहो पूर्ण  
द ॥ २ ॥ (चाल) जिन गृहे दीपमाला प्रकासैं । तेहथी तिमर अझान  
सैं ॥ निजघटे ज्ञानज्योति विकासैं । तेहथी जगतणा जावनासैं ॥ ३ ॥  
(श्लोकः) नविक निर्मल बोध विकासकं । जिनगृहे सुज दीपक दीपनं ॥  
गुण राग विसुद्ध समन्वितं । दधतु जाव विकास कृते र्जना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
रमात्मने ॥ दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
ति दीपपूजा ॥ ❀ ॥ मंगलदीप चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (डहा) अक्षत पूरसुं । जे जिन आगे सार । स्वस्तिक रचतां  
वेस्तरे । निजगुण जर विस्तार ॥ १ ॥ (ढाल) उज्जल अमल अखंमित मं  
त अक्षतचंग । पुंजत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक जावै रंग । निज सत्ता नैं  
न्मुख उनमुख जावै जेह । ज्ञानादिक गुणजावै जावै स्वस्तिक एह ॥ २ ॥  
(चाल) स्वस्तिक पूरां जिनप आगै । स्वस्ति श्री नम्र कल्याण जागै ।  
जन्मजरा मरणादि असुज जागै । नियत शिव सम रहै तासु आगै ॥ ३ ॥  
(श्लोकः) सकल मंगलकैलि निकेतनं । परम मंगल जावमयं जिनं । अ  
यति नव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
परमात्मने ॥ अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति अक्षतपूजा ॥ अखंम चावल चढावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ७ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (डहा) सरस सुची पकवान बहु । शालि दालि धृतपूर । धरो  
नैवेद्य जिन आगलै । कुवा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ (ढाल) लपनश्री वर घेवर  
मधुतर मोतीचूर । सीहकेसरिया सेविया दालिया मोदकपूर । साकर द्राख  
सीघोमा नक्तिव्यंजन धृतसद्य । करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै  
सख अनवद्य ॥ २ ॥ (चाल) ढोवतां नोज्य पर जाव त्यागे । नविजना निज

गुण ज्ञेयमांगे । अह्नजणी अह्नतणो सरूप ज्ञेय । आपज्यो तातजी  
जगत पूज्य ॥३॥ (श्लोकः) सकल पुञ्जलसंग विवर्जनं । सहज चेतनञ्चाव  
विलासकं । सरसज्जो जननव्य निवेदनात् । परम निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥२॥  
ॐ ह्रीं परमात्मने ॥ नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥ नैवेद्य मिठाई पकवान चढावै ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ ८ फलपूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( डहा ) पक्क बीजोरं जिन करै । ठवतां सिवपद देइ । सरस  
मधुर रस फल गिणै । इह जिन जेठ करेइ ॥ १ ॥ ( ढाल ) श्रीफल क  
दली सुरंग नारंगी आंवा सार ॥ अंजीर वंजीर दामिम करणा षटबीज  
सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक र  
मणीक वज्रफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ ( चाल ) फलभर पूजतां जगत स्वा  
मी । मनुजगति बेलहै सफल पामी । सकल मनुध्येय गतिजेद रंगै ।  
ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) कटुक कर्मविपाक विनासनं ।  
सरस पक्कफल ब्रज ढोकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रज्ञोपुरः । कुरुत सिद्धि  
फलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने ॥ फलं यजामहे स्वाहा ॥  
इति फलपूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावै ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ अर्घ्य पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( दुहा ) इम अम विधि जिनपूजना । बिरचै जे थिरचित्त ।  
मानवन्नव सफलो करै । वाधै समकित वित्त ॥ १ ॥ ( ढाल ) अगणित  
गुण मणि आगर नागर बंदित पाय । श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर  
उवझाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन । श्रीजिन पूजा  
गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ ( चाल ) संवत गुणयुग अचल इंड । हर्ष  
जरिगाइयो श्रीजिनैंड । तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी । लहै ज्ञान  
उद्योत धन शिव निसानी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) इति जिनवरवृंदं नक्तिः पूजयं  
ति । सकल गुणनिधानं देव चंद्र स्तुवंति । प्रति दिवस मनंतं तत्त्व मुद्रास  
यंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा ॥ अर्घ्यं  
यजामहे स्वाहा ॥ च्यारे खूणै धार दीजै ॥ इति अर्घ्य पूजा ॥❀॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला । सिंहासनो परिमित स्नप  
नावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गंध धूपैः । रुत्वा चर्चन्तु विदधाति सुवस्त्र  
पूजां ॥ १ ॥ तद्यत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकारवस्त्रादिकं । पूजा तीर्थ  
रुतां करोति सततं शक्त्या तिष्ठत्यादृतः । नीरागस्य निरंजनस्य विजता  
राते स्त्रिलोकीपतेः । स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति रुते क्लेशक्षया कांक्षया ॥  
ॐ ह्रीं ॥ वस्त्रं ० ॥ वस्त्र चढावै ॥ इति वस्त्रपूजाः ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ निमक उत्तारण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अहंपदि जग्गापसरं । पया हिणं मुणियवयं करि ऊणं । पड  
इ सलूण तण लज्जियंच । लूणं हू अवहरंती ॥ १ ॥ पिक्खेविणुं मुह जिण  
वरह । दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्चह जरिय । जलण पइस्सइ  
लूण ॥ २ ॥ लूण उत्तारिह जिणवरह । तिन्नि पयाहिणि देव । तड तड  
शब्द करंतिये । विक्का विक्का जलेण ॥ ३ ॥ जंजेण विक्काव थुई । जलेण  
तं तहइ अत्थसदस्स । जिणरूया मच्चरेणवि । फुट्टइ लूणं तड तडस्स ॥ ४ ॥  
॥ ❀ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करै ॥ ( पीठै ) लूण पाणी लेई । मुखें  
गाथा कहे ॥ ❀ ॥ सव्ववि मुणवई जलविजल । तंतह जममइपास । अह  
पि कयंतस्स निम्मलत्तं । निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विणु  
जलणहि पास । जरवि कयज्जल जावहि पास । तिन्नि पयाहिणि दि  
जिय पास । जिम जिय तुट्टै जव डहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमले  
हि लेविणुं । सुरवइ जावहि मुणिवई सेवणुं । पन्नणइ जिणवर तुहपइ  
सरणं । जयतुट्टइ लच्चइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ए कही लूण उत्तारी  
जल सरण कीजै ॥ इति निमक उत्तारण पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उज्जय पयय जत्तस्स । नियमाणे संठियं कुणं तस्स । जिण पासै  
जमिय जणस्स । पिठतुह ऊय वहे पमणं ॥ १ ॥ सव्वो जिण प्पजावो ।  
सरिसा सरिसेसु जेण रचंती । सव्वनूण अपासे । जडस्स जमणं न संक  
मणं ॥ २ ॥ अचंत डःकरं पिहू । ऊयवह निवडेण जडेण कयं । आणा



सवन्नूणं । न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चढाईजै ॥

॥ ॥ अथ ठूटा फूल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ उवणेव मंगलेवो । जिणाण मुह ढालि संवलिया । तिथ पव  
तण समई । तियसे विमुक्का कुसुम बुढी ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥  
ए कही फूल उगलीजै प्रभु आगै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ सतर जेद पूजानी विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम स्नात करै । पीठे । अष्ट प्रकारी पूजा करै । उज्जल रूपै  
प्रमुखनी रकेवीमें । कुंकुम ( तथा ) केसर प्रमुखनो साधियो करै । पीठे  
सुंदर कलश, केसर प्रमुख मिश्रित गुग्गुलु जरी । रुपियो थापनारो कल  
शमें रखी । कलश रकेवीमें धरै । पीठे । स्नातिया मुख कोस उत्तरासण करी ।  
तीन नवकार गुणें । तीन नमस्कार करी । हाथें धूपदेई । रकेवी हाथे  
धरै । मनथिर राखै । ठीक वज्रै । स्नातिया प्रभुजी सन्मुख खमा रहै ।  
कलश अडिग राखै । मुखै इम पठै । जावन्नलै जगवंतनी (इत्यादी) ।

॥ ॥ अथ सतर जेद पूजा ली० ॥ ॥

॥ ॥ (डहा) जावन्नलै जगवंतनी । पूजा सतर प्रकार । परसिध कीधी  
द्रौपदी । अंग ठै अधिकार ॥ १ ॥ ॥ ॥ (राग सरपदो) ॥ ॥ (डहा) ज्यो  
ति सकल जग जागती ॥ (हारेअइ०) ॥ सरसति समरिसुज्जिंद ॥ सतर सुवि  
धि पूजा तणी । पन्नणिसु परमानन्द ॥ १ ॥ (गाहा) न्हवण (१) विलेवण  
(२) वत्थयुगं (३) । गंधारुहणं च (४) पुष्परोहणयं (५) । माला रोहण (६)  
वन्नयं (७) । चुन्न (८) पमागाय (ए) आचरणे (१०) ॥ २ ॥ मालकला  
सुयवंसुघरं (११) पुष्पंपगरं च (१२) अठमंगलयं (१३) धूव उखेवो  
(१४) गीययं (१५) । नटं (१६) वज्जं (१७) तहाज्जणियं ॥ ३ ॥  
सतर सुविध पूजा पवरं । ज्ञाता अंग मऊार । दुपदसुता द्रौपदि परै । क  
रियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख) ॥ ॥

॥ ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं । अहत धोती धरी उचित  
मानी । ( अइयो० ) ॥ विहत मुखकोसके खीर गंधोदकै । सुनृत मणिक

लश करि विवध वांनी ॥ ( अ० ) ॥ १ ॥ नमवि जिनपुंगव लोमहस्ते  
नवं । मार्जनं करिअ वावारि वारी । ( अ० ) । जणिय कुशमंजली कलश  
विधि मनरली । नवति जिनइंद्र जिम तिम अगारी । ( अ० ) ॥ ❀ ॥  
इहा ॥ ❀ ॥ परमानंद पीयूष रस । न्हवण मुगति सोपान । धरम रूप तरु  
सीचवा । जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पदली पूजा साचवै । आवक शुभ  
परिणाम । शुचि पखाल तनु जिनतणै । करइ सुखत हित काम ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग सारंग ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकारी । सुण जैनकी । ( पू० ) परमानन्द तिण  
वढ्योरी सुधारस । तपतबुजीय मेरै तनकी ॥ ( पू० ) ॥ १ ॥ प्रभुकुं विलोकि  
नमि जतन प्रमार्जित । करत पखाल सुचि धार वनकी । ( पू० ) न्हवण  
प्रथम निज वृजन पुलावत । पंककुंवरप जिम धनकी । ( पू० ) ॥ २ ॥ तरणि  
तारणि न्रवसिंधू तिरणकी । मंजरी संपद फल वरधनकी । शिवपुर पंथ  
दिखावण दीपी । धूमरी आपदबेल मरदनकी (पू०) ॥ ३ ॥ सकल कुशल  
रंग मिढ्योरी सुमति संग । जागी सुदिसा सुज मेरे दिनकी । कहै साधु  
कीरति सारंग भरकरतां । आसफली मेरे मनकी ( पू० ) ॥ ४ ॥ ❀ ॥  
इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ एकही पंचामृतसुं न्हवणकीजै (तथा) मावै  
पांवकै अंगूठै जलधार दीजै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुंदर अङ्ग लूहणें करी । विंव प्रमार्जी । केसर चंदन मृगमद  
अगरादिकसैं । कचोली नरी । लेकर खमारहैं । मुखे ० ॥ (रागरामगिरी)  
गात्र लुहै जिन मन रगङ्गसुरे । ( देवा ) सखरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं ( हारे  
देवा ) वा ० । गंध कसायसुमेलियै ॥ १ ॥ नन्दन चंदन चंदमेलियै रे (देवा)  
॥ नं ० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम जेलियै ॥ करलीयै ( हारे देवा ) क ० । रय  
ण पिंगाणि कचोलीयै ॥ २ ॥ पग जानु कर खंचै सिरै रे ( देवा ) जाल  
कंठ नर नदर न्तरै । दुखहरै ( हारे देवा ) सुखकरै । तिलक नवेअंग की  
जीयै ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरै ॥ आवक दू ० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरैं ।  
तिमकरै ( हारे देवा ) ति ० । जिणपर जनमन रंजीयै ॥ गा ० ४ ॥ राग  
खलितमें । इहा ॥ ❀ ॥ करहु विलेपन सुखसदन । श्री जिनचन्द शरीर ।

तिलक नवे अङ्गपूजतां । लहै नवेदधि तीर ॥१॥ मिटै ताप तसु देहको ।  
परम शसिरता संग । चित्तखेद सब उपसमें । सुखमें समर सीरंग ॥२॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग ललित ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विलेपन कीजै जिनवर अंगै । जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुं  
कुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम । अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ क्रम जा  
नु कर खंधै शिर जाल कंठ । उर उदरन्तर संगै । विलुपति अधमेरो करत  
विलेपन । तपत वुझति जिम अंगै ॥ वि० १ ॥ नव अंग नव १ तिलक  
करतही । मिलत नवेनिध चंगइ । कहै साधु तन सुचि करसु ललित पूजा ।  
जै सैं गंग तरंगै ॥ वि० ३ ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥  
एकही विलेपन कीजै । नव अंग पूजीयै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्र युगल पर । केसरनो सां  
थियो करी । प्रभूजी आगै खमा रहै । मुखें इम पढै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( डहा ) ॥ वसन युगल उज्जल विमल । आरोपै जिन अंग ।  
लाज ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय प्रसंग ॥१॥ ( राग गौडी ) ॥ कमल  
कोमल घन चन्दन चरचित । सुगंध गंधै अधिवासिया ए ॥ ( हारे ) अइ  
यो० ॥ कनक मंमित हिय लालपल्लव शुचि । वसन जुग कंति अधिवा  
सिया ए ॥ ( हारे ) अ० ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो यथा । करिय  
पहिरवाणी ढोइयै ए ॥ ( हारे ) अ० ॥ पापलूहण अंगलू हणो देवनें ।  
वस्त्रयुग पुंज मल धोइयै ए ॥ ( हारे ) अ० १ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि: ( राग वैरामी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव दुष्य युग पूजा वन्योहै जगतगुरु । ( हे हांए ) आगे व  
न्योहै जगतगुरु । देव दुष्यहर अब इतनो मांगुं । तुंहीज सबहि हितु तुं  
हीहै मुगतिदाता । तिण नमि १ प्रभु जीकै चरणें लागूं ॥ दे० १ ॥ कहै  
साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण । देव दुष्य मिसदेहु उत्तम वागूं । श्रव  
ण अंजलि पुट सुगुण अमृतपीतां । सबरामी दुख संशय घुरम जागूं ॥ दे०  
॥ २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥ एकही वस्त्र युगल चढावै ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर, चन्दन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीका, चूर्ण करी । कचोली  
जरी । आगे ऊना रहै । मुखें इम पटै ॥ ( गोमी रागमें । दूहो ) ॥ पूज  
चतुर्थी इण परै । सुमति वधारै वास । कुमति कुगति दूरै हरै । दहै मोह द  
लपास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ ❀ ॥ ( हां होरे देवा ) ॥ वावन चंदन घस कुमकु  
मा । चूरण विधि विरचै वासुए । ( हां होरे देवा ) कुसुम चूरण चंदन  
मृगमदा । कंकोल तणो अधि वासुए ॥ ( हां ० ) १ ॥ वास दशोदिश वा  
सतै । पूजे जिनअंग जंगूए ॥ ( हां ० ) ॥ लाठि जवन अधिवासीयो ।  
अनुगामिक सरम अजंगूए ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि: ( राग पूर्वी गौमी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरै प्रनुजीकी पूजा आनन्द मैलै ॥ पू० ॥ वासनवन मोखो  
सबलोए । संपदा जेले ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा । विजय देवा तत्ताये  
ई ॥ वि० ॥ अग्रमत्त गुण तोरा । चरण सेधै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन  
वासै । पूजीधै जिनराजता थेई । चतुरगति डक्ख गौरी । चतुर्थी धनकि ॥  
॥ ३ पू० ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ एकही वासचूर्ण प्रनुजीके  
धिये उपर ठंठै । मंदिर में चूर्ण उगालै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुलाब, केतकी, पांचे तरै का फूल रकेवीमें रखी । मुखें इम  
पटै ॥ ❀ ॥ ( इन्द्रा ) ॥ मन विकसै तिमविकसतां । पुद्ग अनेक प्रकार । प्रनु  
पूजा ए पंचमी । पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग कामोद ) ॥ चंपक  
केतकी मालती ० । ( हरि अ० ) कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूझका ।  
पञ्च सिरी अरविंद ॥ २ ॥ जिनयर चरण उवरि धरै ० ॥ ( हरि उ० ) मुकुलित  
कुशम अनेक । सिय रमणीसँ वर वरै । पिधजिन पूज विवेक । वि० इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग कान्हा ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोहरी माई वरणें । नन मोहरी माई वरणें । ( अहो वरणें )  
विधि कुशम जिन चरणें । ( अ० ) । विकसी हसीन जंपें साहिवकुं । रा  
ग प्रनु हम सरणें ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी ( कु० )

पंच विषै (हां० पं०) डुख हरणें ॥ सो० ॥ कहै साधु कीरति जगति जगवं  
तकी । जविक नरा । (हांरे ज०) । सुख करणें ॥ २ ॥ सो० ॥ ❀ ॥  
इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पांच जातना पुष्प चढावै ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ ठी पुष्पमाला रोहण पूजा ॥❀॥

॥❀॥ नाग, पुन्नाग, दमणो, गुलाब, पामल, मोगरा, सेवती, चंपेली,  
मालती ( इत्यादि ) पंच वरण फुलांनी माला हाथे लेई खमा रहै । मु  
खै इम पढै ) ( डहा ) ॥ ठी पूजा ए ठी । महा सुरजि पुष्पमाल ।  
गुण गुंथी थापै गलै । जेमठलै डुख जाल ॥ १ ॥ (राग रामगिरी गुजरी)

॥❀॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिका सोग पारिध कलीए  
( जलां पा० ) ॥ २ ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका । लाल  
गुलाल पामल जिलीए । ( जलां पा० ) ॥ १ ॥ जासुमणि मोगरा वेनला  
मालती । पंचवरणै गुंथी मालतीए । ( जलां गुं० ) हेमाल जिनकंठ पीठे  
ठी लह लहै । जाणि संताप सब फलतीए । ( जलां ० ) ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ विधिः । ( राग आसानरी ) ॥❀॥

॥❀॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतनंदै । चकोरकुं देखि जिम  
चंदै । ( दे० ) ॥ १ ॥ पंचविधि वरणरची कुशमांकी ॥ जैसी रयणाहे  
( जै० ) बलि सुह मंदै ( देखी० ) ॥ २ ॥ ठीरे तोमर पूजा तवमार धूजै ।  
सब अरियण (हांरे स० ) होइ तिम बंदै । ( दे० ) ॥ ३ ॥ कहै साधु की  
रत सकल आस्या सुख । जविक जगत (हांरे ज० ) । जे जिन वंदै ।  
( दे० ) ॥ ४ ॥ इति ठी टोमर फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ एकही प्रभुजीके  
कंठे फूलमाला चढावै ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ सप्तमी अंगरचन पूजा ॥❀॥

॥❀॥ पंचवरणा फूल केसरसैं अंगीरचै । सो हाथे लेई । मुखै इम  
पढै ॥❀॥ ( डहा ) ॥ केतकी चंपक केवमा । सोनै तेम सुगात । चाढो  
जिम चढता ऊवै । सातमी यै सुख सात ॥ १ ॥❀॥ (राग केदारो गौमी) ॥  
॥❀॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुशमसुंए ॥ (हांरे अ० ) कुंद  
गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुंए ॥ १ ॥ सातमी पुजामें अंगी अलंकीयै ।  
अंग आलंक मिसमाननी मुगति आलिंगियैए ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥॥ अथ विधि ( रागजैरवी ) ॥॥

॥॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती । ( पं० ) । कुंद मचकुद  
गुलाव सिरोमणि । कर करणी सोवन जाती । ( पं० ) ॥ १ ॥ दमणक मरु  
क पामल अरविंदो । अंस जुई वेणुवाती । पारधि चरण कलार मंदारो ।  
विण पठ कूल वनी जाती । ( पं० ) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमण जाती ।  
जैरवी कुगति व्रततिदाती । ( पं० ) ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा  
॥ ७ ॥ सुगंध पुष्पै करी अत्यन्त जकीसं जगवंतनें शरीरै अंगी रचै ॥

## ॥॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥॥

॥॥ घनंसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसं सुगंध वटी करि । जिनेश्वर  
नं आगै ले खमा रहै ॥ ( उहा ) ॥ अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आ  
ठमी । गंधवटी घनसार । लावै जिनतनु जावसुं ॥ १ ॥ ( राग सौरठ ) ॥॥

॥॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी ( देवा ) । पावन घस घन सारो  
जी । सुरजि सिखर मृगनाभिनी जी ( देवा ) । चुन्नरोहण अधिकारो जी  
॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरीयो जी ( देवा ) । अशुज करम चूरी जै जी ।  
अंगण सुरतर मोरियो जी ( देवा ) । तंव कुमती जन खीजै जी । ( तव  
सुमती जनरीजै जी ) ॥ २ ॥ ॥॥ ॥॥

## ॥॥ अथ विधि ( राग सामेरी ) ॥॥

॥॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधै ( जिन० पू० ) । गंधवटी घ  
नसार उदारै । गोततीर्यकर वांधै । ( जलां०१ ) ( पू० ) ॥ १ ॥ आठमी पू  
जा अगर सेल्हारस । लावै जिन तनु रागै । धारकपूर जाव घन वरपत ।  
सामेरी मति जागै ॥ ( जलां० १ ) ( पू० ) ॥ इति आठमी वरासचूर्ण पूजा ॥ ७

## ॥॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥॥

॥॥ द्विवै सधव स्त्री नेली होके ऊजल थाल में । कुंकुमनो साधि  
यो करै । अक्षत थाल मे धरै । श्रीफल रूपानांणो धरै । धजा थालमें धरि  
सधव स्त्री माथै रखी । गीत गान गावतां । सब वाजित्र वाजतां । तीन प्रद  
क्षिणा देवै । पीठे ध्वजा ऊपरि गुरु पासं वासक्षेप करावै । प्रभु सन्मुख  
गुहली करै ॥ ऊपरि अक्षतासं साधियो करै । सुपारी चढावै । मुखे ऐसा

कहै । ( उहा ) । मोहन ध्वज ० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ ( उहा ) मोहनध्वज धर मस्तकै । सुहव गीत समूल । दीजै  
 तीन प्रदक्षिणा । परसिध नवमी पूज ॥ १ ॥ ( राग मेघगौमी ) ॥ ( वस्तु )  
 सहस्र जोयण १ हेममय दंम युतपताक पंचेवरण । घुमघुमंत घुग्घरीय  
 वाजै । मृदुसमीर लहिकै गयण ( ल ० ) । जाण कुमतिदल सयल जाजै ॥  
 सुरपति जिम विरचै धजाए ( हांएवि ० ) नवमी पूज सुरंग । ( न ० ) ति  
 एपर श्रावक धजवहन । ( ति ० ) आपै दान अन्नंग । ( आ ० ) १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ( राग नटनरायण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन । ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना ।  
 ( जि ० ) । मोहन सुगुरु अधिवासीयो । कर पंचसवद ति प्रदक्षिणा ।  
 ( क ० ) सधव बधू सिर सोहना ॥ १ ॥ ( जि ० ) ज्ञातिवसन पंच वरण  
 वन्योरी । विधकरी ध्वजको रोहण ॥ साधु जणति नवमीपूजा नव । पाप  
 नीयांणा षोहणा । शिव मंदिरकुं अधिरोहणा । जन मोह्यो नटनारायण  
 ( जि ० ) ॥ १ ॥ ॥ इति नवमी पूजा ० ॥ ❀ ॥ एकही ध्वजा चढाई जै ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमी आचरण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परोजा, नीलम, लसणिया, मोती माणकसैं जड्या । आचरण  
 लेई मुखे इम पढे ॥ ॥ ( राग केदारैमें ) ॥ ( उहा ) ॥ ॥ दशमी पूजा आचर  
 ण । रचना यथा अनेक । सुरपति जिम अंगै रचै । तिम श्रावक सुविवेक  
 ॥ १ ॥ शिर सोहै जिनवर तणें । रयण मुगट ऊलकंति । तिलक जाल अं  
 गदनुजा । श्रवणकुंमल अति जंति ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग अधजास गुंममलहार ।  
 आशावरी ) ॥ ❀ ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया । मोती माणिक लाल  
 रस णीया । ( हीरा सोहैरे ) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुन्नग  
 अंक अंजना ( मनमोहैरे ) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जड्यो । काने कुंमल  
 ( हारे ) अति जुगतै जुड्यो । ( नरहारुरे ) । ( मन वारुरे ) ॥ जालतिलक  
 बांहे अंगदा । आचरण दशमी पूजा मुदा । ( सुखकारुरे ) । ( डखहारुरे ) ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ ( राग केदारो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु सिरसोहै ॥ मुगटमणि रयण जड्यो । ( रय ० ) । अंगद

वाहु तिलक जालस्यल । यजुनीको कौन घड्यो ॥ ( प्र० ) १ ॥ श्रवण कुं  
मल शशि तरुण मंमल जीपै । सुरतस्सें अलंकस्यो । डखकेदार चमर  
सिंहासन । उत शिर नवर धस्यो । अलंकृत उचितवस्यो ॥ २ ( प्र० ) ॥ ॥ ॥  
इति दशमी आचरण पूजा ॥ १० ॥ एकही आचरण ( तथा ) रोकनांणो  
मन्त्रल चढावै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुगंध पुष्पंकरी संयुक्त फूलघर हाथे लेई । मुखै इम पढै ॥ ॥  
( उहा ) ॥ ॥ फूलगरो अतिसोजतो । फूंदै लहकै फूल । महकै परिमल  
फलमहा । इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ ॥ ( राग रामगिरी ) ॥ ॥  
॥ ॥ कोज अंकोल राय बेलि नवमालिका । कुंद मचकुंद वर विच  
कलूए ( हारे अइयो ) तिलक दमणक दलं मोगरा परमलं । कोमला पारिध  
पामलूए ॥ ( हां० अ० ) प्रमुख कुशमै रचै त्रिजुवन कुं रुचै । कुशमगेहें  
विचि तोरणं ए ॥ ( हां० अ० ) गुठ चंद्रोदयं कुंवका उन्नयं । जालिका  
गोख चितचोरणूए । ( हां० अ० ) ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ विधि ॥ ( राग रामगिरी ) ॥ ॥

॥ ॥ मेरो मन मोक्षो माईरी । फूलघर आनंद जीलै ( फू० ) अ  
सत उसत दाम बहरी मनोहर । देखत तवही सब डरितखीलै ( फू० ) ॥  
॥ १ ॥ कुशम मंमप थंज गुठ चंद्रोदय । कोरणी चारु विनाण सजै । इ  
ग्यारमी पूज वणीहै रामगिरी । विबुध विमान जैसैं तिपुरिजजै ( फू० )  
॥ २ मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥ एकही फूलघर चढाईजै ।

॥ ॥ ॥ अथ वारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पंचवर्णफूल गुलावजल लेई । मुखै इम पढै ॥ ( राग मल्हार ) ॥  
( उहा ) वरपै वारमी पूजमें । कुशम बादलिया फूल । हरण ताप डख  
लोकको । जानुसमा बज्जमूल ॥ १ ॥ ( राग जीममल्हार ) कमखानी जाति ॥  
॥ ॥ मेघ वरसैं नरी पुष्पवादल करी । जानु परमाण कर कुशम  
पगरं । पंचवरणे वण्यो विकचि अनुक्रम चिण्यो । अधोवृत्तै नही पीडपस  
रं ॥ १ ॥ मे० १ ॥ वासमहके मिलै । नमर नमरीमिलै । सरस रस रंग ति



ए डख निवारी । जिनप आगै करै सुरप जिम सुखवरै । वारमी पूज ति  
एपर अगारी ॥ मे० २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि: ( राग प्रीममद्वार ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुष्प बादलीया वरसै । सुसमां ( अहो० ) । योजन असु  
चिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां ( पु० ) गमन आगमन की पी  
रनही तसु । इह जिनको अतिसय सुगुणें । गुंजत २ मधुकर इम पन्नै ॥  
गुं० ॥ मधुर वचन जिन गुण थुणइ ॥ २ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करै ।  
तसुपीम नही सुम्मणें । ( पु० ) । समवसरण पंचवरण अधोवृंत । वि  
बुध रचै सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ वारमी पूज नविक तिम करै । कुराम  
विकस हस ऊचरै । तसु प्रीमबंधन अधरा ऊवै । जेकर हिं जे जिननमें  
॥ पु० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति वारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥ एकही फूलउगलै ॥

॥ ❀ ॥ अथ तेरमी अष्ट मंगलीक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टमंगलीक लेकर मुखे इम पढै ॥ ❀ ॥ राग वसंत ॥ ❀ ॥  
( डहा ) तेरमीपूजा अवसरै । मंगल अष्टविधान । युगति रचै सुमतै स  
ही । परमानंद निधान ॥ ❀ ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ❀ ॥ अतुल विमल मि  
लया । अखंमगुणे निलया । शालि रजत तणा तंडुलाए । श्लषण समाजक  
विध पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा ऊजलाए ॥ १ ॥ ( अ० ) ॥ मेल मंगल  
लिखै सयल मंगल आखै । जिनप आगलि सुथानक धरैए । तेरमीपू  
जा विध तेरमी मन मेरै । अष्टमंगल अष्टसिद्धि करैए ॥ ( अ० ) ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि: ( राग कल्याण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांहो पुजावणी ते रसमें ( हांहो रसमें ३ ) ॥ ते० ॥ अष्टमं  
गल लिख कुशल निधान । तेज तरुणके रसमें ॥ पू० ॥ १ ॥ दप्पण न  
द्रासन नंद्यावर्त पूर्णकुंज । मत्तयुग श्रीवत्त तसुमें । वर्धमान खस्तिक पूज  
मंगलकी । आनंद कल्याण सुख रसमें ॥ २ ॥ ( पू० ) ॥ ❀ ॥  
इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अष्ट मंगलीक चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धूप रकेवीमें धर मुखे इम पढै ॥ ❀ ॥ ( डहा ) ॥ ❀ ॥ गंधवटी मृगमद

अगर सेल्हारस घनसार । धरि प्रभु आगलि धूपणा । चवदमी पूजाचार  
॥१॥ (राग वेलानल) ॥॥॥॥ कृष्णागर कपूरचूर । सोगंध पंचेपूर । कुंदरुक्क  
सेल्हारस सार । गंधवटी घनसार ॥१॥ ॥॥॥॥ गंधवटी घनसार चंदन मृग  
मदारस जेलि यै । श्रीवास धूप दशांग अंवर सुरजि वज्र द्रव्य मेलियै ।  
वेखलिय दंम कनक मंडित धूप धाणो कर धरै । जववृत्ति धूपकरति जोग  
रोग सोग अशुचि हरै ॥ १ ॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥

॥॥॥॥ अथ विधिः ॥ (राग मालवी गौमी) ॥॥॥॥

॥॥॥॥ सव अरति मधन मुदार धूप । करति गंध रसालरे । (देवा  
क०) धाम धूमा बलिय धूसर । कलुष पातिक गालरे (देवा) ॥ १ ॥ उ  
दंगति सूचंति जविकुं । मघमघै कर नालरे (देवा) चवदमी वामांग पूजा ।  
दीयै रयण विशालरे । आरती मंगल मालरे । मालवी गौमी तालरे (देवा  
स०) ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ एकही धूप धाणो प्रभूकै वायें  
अंग धरी खेईजै ॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥

॥॥॥॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥॥॥॥

॥॥॥॥ (प्रभुजीके मुख आगै मधुर स्वरे गुण ग्राम गावै ) ॥॥॥॥  
डहा ) कंठ जलै आलाप कर । गावो जिन गुण गीत । जावो अधिकी  
जावना । पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ (श्रीरागै आर्या ) यवदनंत केवल म  
नंत फलमस्ति जैन गुण गानं । गुण वर्णतान वाच्यै । मात्रा जापा लयै  
युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः । स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च । चंचुर चा  
री चारी । गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥

॥॥॥॥ अथ विधिः ॥ (श्रीराग) ॥॥॥॥

॥॥॥॥ जिन गुणगानं श्रुत अमृतं । तारमंद्रादि अनाहत तानं । केव  
ल जिम तिम फल अमृतं (जि०) ॥ १ ॥ विबुध कुमार कुमरी आलापै  
मुरज उपांग नाद जनितं (जि०) । पाठ प्रबंध धूयो प्रतिमानं । आयति  
वंद सुरति सुमतं (जि०) ॥ २ ॥ सवद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं । सुरनर  
गावै जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं । पनरमी पूज हरै उरितं रे ।  
(जि०) ॥ ३ ॥ ॥॥॥॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥ ॥॥॥॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समान अवस्थावाली सधव स्त्रीयां ( वा ) कुमस्यां जेदी होके प्रनूके सन्मुख संका कंखा रहत नाटक करै । स्त्रीयांका जोग नवणें ( तो ) समान अवस्थावाला पुरुष नाटक करै ( वा ) कुमार कुमस्यां मिलकै नाटक करै नाटक करणेंसें केई जीव तीर्थकर गोत्रबांधाहै । नाटक करतां मुखै इम पढै ॥

॥ ❀ ॥ ( उहा ) ॥ कर जोमी नाटक करै । सजि सुंदर सिणगार । नव नाटक ते नविजमें । सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ ( राग सुध नट्ट ) ( काव्यें ) ज्ञावादि प्पिमणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना । सप्पिम्मा सम रूव वेसवयसो मत्तेज कुंजत्थणा । लावणा सगुणापि कस्सरवई रागाइ आलावणा । कुम्मारी कुमरा विजै न पुरउ नच्चंति सिंगारणा ॥ १ ॥ ( गद्यं ) तएणंते अठसयं कुमारि कुमरीउ । सूरियाजेणं देवेणं संदिठा । रंग मंन्वे पविठा । जिणनमंता । गायंता । वायंता । नच्चंतेत्ति ॥ २ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ विधि ( राग नट्ट त्रिगुण ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाचंती कुम्मार कुमरी । द्रागमदि तत्ता थेईय ( अ० ) ॥ द्रागम दि २ कि थौंगि २ न । मुखै तत्ता थेईय ( अ० ना० ) ॥ वेणु वीणा मुरज वाजै । सोलही सिणगार साजै । तनन्नन्नचेईय ( अइयो ) ॥ व्रणण व्रण एण घुग्घरु धमकै । रणणणणैईय । ( अ० २ ना० ) कसंती कंचूकी तरु णी । मंजरी ज़ेंकार करणी । सोचंती कुमरीय ( अइयो ) हस्त कंहा वा दि ज्ञावै । ददन्ती जमरीय ( अ० ना० ) ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी । सूरियाजै रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तात्तेईय ( अ० ) । जिमप जगतें जविक लीणा । आणंद तत्तात्तेईय ( अ० ना० ) ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सतरमी वाजित्त पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सतरमी पूजामें सबजातिना वाजित्त वजावै । मुखै इम पढै ॥ तत घन सुखिरै आनधै । वाजित्त चौविध वाय । जगत जली जगवंतनी । सतरमी ए सुखदाय ॥ १ ॥ ( गाहा ) सुरमदल कंसालो । मज्जयर मदल सुवज्जए पणवो । सुरनारि नंदितुरो । पन्नणइ तूं नंद जिणनाह ॥ २ ॥ ( रा

ग मधुमाधवी ) ॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दी । चरण कमल जंतु ज  
गत्रय बन्दी ॥ ( तूं ० ) ॥ ज्ञाननिर्मल बावन मुखवेदी । तिवलबोलै रंग अति  
हि आनन्दी । ( तूं ) ॥ १ ॥ जैरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जैन  
जैणावंती । जैन शाशन जइवंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परि परिय बंदंती ॥ ( तूं ० )  
॥ २ ॥ सेवजविक मधुमाधन फेरी । जवनी फेरी नप्पजणंती । कहै साधु स  
तरमी पूज वाजिचसंव । मंगल मधुर धुनिकर कहंती ( तूं ० ) ॥ ३ ॥  
इति सतरमी वाजिच पूजा ॥ १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ( राग धन्यासरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जवितूं जण गुण जिनके सब दिन । तेजतरण मुखराजै । ( ते ० )  
। कवितशतक आठ धुणत सकस्तव । थुय २ रंगै हमगजै । ( जवि ० १ ) अ  
णहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुवि  
ध आवक की । जणीमें जगति हितकाजै ( ज ० २ ) श्रीजिनचंद्रसूरि खर  
तरपति । धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अठार आवणधुरि । पंचमि  
दिवस समाजै ( ज ० ३ ) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसायै सु  
विध झइ गाजै ॥ कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुख  
साजै ( जवि ० ४ ) ॥ ❀ ॥ इति सतरन्नेदी पूजा समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरतीकरण विधि लि ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजाकियां पीठै । सब कपमा । पाध प्रमुख पहरकै ॥ उत्तरास  
ण करै ॥ पीठै प्रभू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपकै निलाम कुंकूरो ति  
लक करै । पीठै पट दूरि करि । रकेवीमें साधियो करी । मांहि रूपाना  
णो । चावल सुपारी धरे । पीठै आरती दीपकसुं संजोयनं प्रभूके सन्मुख  
दक्षिण आवत्तसुं । वाजिच सब वाजतां । आरती करै । मुखै पढै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरती लि ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैजै आरती शांति तुहारी । तोरा चरण कमलकी में जाजं व  
लिहारी ॥ ( जैजै ० ) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख  
पूनमचंदा ॥ ( जैजै ० २ ) ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंठण प्रभु  
चरण सुहाया ॥ ( जै ० ) ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहै । सोलम जिन

वर सुर नर मोहै ॥ (जै०) ४ ॥ मंगल आरती नोरहि कीजै । जन्म जन्म  
को लाहो लीजै ॥ (जै०) ॥ करजोनी सेवक गुण गावै । सो नर नारी  
अमरपद पावै ॥ (जै०) ५ ॥ ❀ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी बनी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखियै है ॥ ❀ ॥ (उहा)

॥ ❀ ॥ परम मंत्र प्रणमीकरी । तासधरी उर ध्यान । अरिहंतपद पूजा क  
रो । निज ९ सक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ (काव्य) नृपन्न सन्नाण महो  
मयाणं । सप्पामि हेरा सण संठियाणं । सद्धेसणा णंदिय सज्जणाणं । न  
मो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं । प्रधानाय  
नव्यात्मने ज्ञास्वताय । यथा जेहना ध्यानथी सौख्य ज्ञाजा । सदा सिद्ध  
चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म, डर्मम चकचूर जेणें । जला  
नव्य नवपद ध्यानेन तेणें । करी पूजना नव्यज्ञावै त्रिकालै । सदा वासि  
यो आत्मा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीनै । दियै दे  
शना नव्यनै हितधरीनै । सदा आठ महा पाणिहारे समेता । सुरेसै नरेसै  
स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा । नवोपग्रही  
च्यारठे जे विलग्गा । जगत्पंच कल्याण कै सौख्य पामें । नमो तेह  
तीर्थकरा मोहू गामें ॥ ५ ॥ ❀ ॥ (ढाल०) ॥ ❀ ॥ तीर्थपति अरिहा  
नमुं । धरम धुरंधर धीरो जी । देशना अमृत बरसता । निज बीरज बडबी  
रो जी । (उद्घालो) । वर अखय निरमल ज्ञानज्ञासन सर्वज्ञाव प्रकासता ।  
निजशुद्ध श्रद्धा आत्मज्ञावै चरण थिरता वासता । जिन नामकर्म प्रज्ञाव  
अतिशय प्रातिहारज सोनता । जगजंतु करुणावंत जगवंत नविक जननै  
थोन्नता ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर साहिब आगै ए देशी ॥ ❀ ॥  
त्रीजै नव वर ध्यानक तपकरि । जिनबांध्युं जिन नाम । चउसठ इंद्रै पूजित  
जेजिन । कीजै तास प्रणामरे ॥ ❀ ॥ (नविका) सिद्धचक्र पद बंदो । जि  
मचिरकालै नंदोरे (न०) उपशम रसनो कंदो रे (न०) रत्नत्रयीनो वं  
दो रे (न०) सेवै सुर नर इंदोरे (न० सिद्ध० ७) (आंकणी) जेहनै  
होइ कल्याणक दिवसै । नरकै पिण अजुआलुं । सकल अधिक गुण

अतिशय धारी । जेजिन नमी अघ टाळुरे । ( ज० ) जे तिज्जं नाण सम्म  
 गग उप्पन्ना । जोग करम कीण जाणी । लेइ दिक्का शिक्षा दिइ जगनें । ते  
 नमीइं जिननांणीरि ( ज०सि० ) ए ॥ महागोप महामाहण कहीयै । निरया  
 मक सत्थवाह । उप्पमा एहवी जेहनें गजै । तेजिन नमीइं उच्चाहरे  
 ( ज०सि० ) ॥ १० ॥ आठ प्राती हारज जसुगजै । पेंत्रीस गुणयुत वाणी  
 जेप्रतिबोध करै जगजननें । तेजिन नमिइं प्राणीरि ( ज०सि० ) ॥ ११ ॥  
 ॥ ✽ ॥ ( ढाल ) ॥ ✽ ॥ अरिहंत पद ध्यातो थको । दव्ह गुण पर्या  
 यैरे । जेद ठेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायैरे ॥ १२ ॥ वीर जिणे  
 सर उपदिसै । सांजल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुद्धि  
 मिलै सब आईरे । ( वी० ) ॥ १३ ॥ ✽ ॥ उं ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत  
 ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम सिद्धचक्राय पंचामृतं १ ।  
 चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं । ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं  
 ८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ✽ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य  
 कलशपूजा ॥ १ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( डहा ) ( दूजी मुजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल ।  
 अशुभ करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ✽ ॥ ( काव्य ) सिद्धाण  
 माणंद रमालयाणं । नमो नमो एतं चउक्रयाणं । समग्ग कम्मक्खय कार  
 गाणं । जम्मं जरा डुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कम्मं क्यें  
 पार पाम्या । जरा जन्म मरणादिं जय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म  
 रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिज्ञागोनेदेहा  
 वगाहात्मदेशा । रक्षा ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता  
 जोतिरूपा । अनावाध अपुनर्जवादि स्वरूपा ॥ १६ ॥ ✽ ॥ सकल कर  
 म मलहय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्यावाध प्रभुता मयी । आ  
 तम संपति नूपो जी । ( उल्लाखो ) जेनूप आतम सहज संपति शक्ति  
 व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल जावै गुण अनंता आदरी । स्व  
 स्वज्ञाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परजणी । मुनिराज मानसरहंस  
 सम वन नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ✽ ॥ ( ढाल ) ॥ ✽ ॥ समय पण

संतर अणफरसी । चरम तिजाग विशेष । अवगाहन लहाजे शिव पुहता  
 सिद्ध नमो ते असेसरे ॥१७॥ (अ० सि०) पूरव प्रयोगनें गति परिणामै ।  
 बंधन ठेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमें रंगरे  
 ॥ १८ ॥ (अ० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोक  
 त । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥  
 (अ० सि०) जाणें पिण न सकै कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।  
 उपमा विण नाणी नवमांहे । ते सिद्ध दीउ उल्लास रे ॥२०॥ (अ० सि०)  
 ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम । विरमी सकल उपाधि । आतम राम  
 रमापति समरो । ते सिद्ध सहज समाधिरे ॥ २१ ॥ (अ० सि०) ॥ ❀ ॥  
 ढाल ॥ ❀ ॥ रूपातीत स्वप्नाव जे । केवल दंसण नाणीरे । ते ध्याता निज  
 आतमा । होइ सिद्ध गुण खाणीरे (वी०) ॥ ❀ ॥ उँ ऊँ ॥ ॥ ❀ ॥  
 इति द्वितीय श्री सिद्ध पदस्य कलश पूजा ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय आचारज पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (डहा) हिव आचारज पदतणी । पूजा करो विशेष । मोह  
 तिमर दूरै हरै । सूजै जाव असेस ॥ १ ॥ ❀ ॥ सूरीण दूरी कय कुग्गहा  
 णं । नमो नमो सूरि सम प्यहाणं । सद्देसणा दाण समायराणं । अखंम  
 ठ्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा । जिनैद्रागमें  
 प्रौढ साम्राज्य जाजा । षट्त्वर्ग वर्जित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पा  
 लवै सावधाना ॥ २ ॥ नवि प्राणिनें देशना देशकालै । सदा अप्रमत्ता य  
 था सूत्र आलै । जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा । जगत्ते चिरंजीव ज्यो शुद्ध  
 जल्यो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण ठ्ती  
 से धामो जी । चिदानंद रस स्वादता । पर जावै निक्कामो जी । (उल्लालो  
 निक्काम निरमल शुद्ध चिद्वन साध्य निज निरधार थी । वरज्ञान दरश  
 ण चरण वीरज साधना व्यापार थी । नवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल  
 गुण संपतिधरा । संवर समाधी गत उपाधी डविध तप गुण आदरा ॥२५॥  
 ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ पांच आचार जे सूधा पालै । मारग जावै साचो ।  
 ते आचारज नमियै तेहसुं । प्रेम करीने जाचोरे ॥ (अ० सि० २६) वर  
 ठ्तीस गुणें करि सोनै । युग प्रधान जग बोहै । जग मोहै नरहै खिण को

है । सूरि नमूं ते जोहैरे ॥ ( ज०सि० १७ ) नित अप्रमत्त धरम उग्रसै ।  
नही विकथा न कपाय । जेहनें ते आचारज नमीइं । अकलुस अमलं अ  
मायेरे ॥ ( ज० सि० १८ ) जेदिइं सारण वारण चोयण । पन्निचोयण व  
लि जननें । पटधारी गन्धयंन आचारज । ते मान्या मुनि मननेरे ॥ ( ज०  
सि० १९ ) अत्थमिइं जिन सूरज केवल । बंदीजै जंगदीबो । जुवन पदार  
थ प्रगट नपटुते । आचारज चिंजीबोरे ( ज० सि० ) ३० ॥ ॥ ( ढाल )  
॥ ॥ ध्याता आचारज जला । महामंत्र सुन्न ध्यानीरे । पंच प्रस्थाने आ  
तमा । आचारज होइ प्राणीरे ( वी० ) ३१ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥  
इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा ( ३ ) ॥ ॥

॥ ॥ अथ चोथी पाठक पद पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( उहा ) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सौजित गात्र । उग्र  
जाया पद अरचियै । अनुन्नव रसनो पात्र ॥ १ ॥ सुत्तत्य वित्थारण तप्प  
राणं । नमो १ वायग कुंजराणं । गणस्स संवारण सायराणं । सवप्पणाव  
ज्झिय मच्चराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरि गुणनें सुहाया । नमूं वाचका  
सक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सुवार्थ दाने । जिके सावधाने  
निरुद्धाजिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनें वर्ग वर्गित गुणैघा । प्रवादि द्विपोछेदने तु  
ल्य सिंधा । गुणी गन्ध संधारणे स्थंन पूता । उपाध्याय ते बंदिइं चित्प्रचू  
ता ॥ ३ ॥ ( ढाल ) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अक्कव मद्दव जुत्ता  
जी । सर्वसोयं अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी । ( उद्वालो ) जेर  
म्या ब्रह्म सुगुप्त गुता सुमंति सुमता शुन्नधरा । स्याद्वादवादइं तत्त्वसाधक  
आत्मपर विजजनकरा । जवज्जीरु साधन धीर शासन वहन धेरी मुनिवरा ।  
सिद्धांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥ ( ढाल )  
॥ ॥ द्वादश अंग सिद्धायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ  
विस्तार रसिकते । नमो उग्रप्राय उद्वासरे ॥ ( ज०सि० ) ॥ ३४ ॥ अर्थ  
सूत्रनें दान विजागै । आचारज उग्रप्राय । जवत्रिएहे जेलहै सिवसंपद ।  
नमीयै ते सुपसायेरे ( ज० ) ॥ ३५ ॥ मूर्खशिरस्य निपजायै जेप्रचु । पाहण  
पत्तव आणै । ते उग्रप्राय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सविजाणैरे ॥  
( ज०सि० ) ॥ ३६ ॥ राजकुमार सरिखा गणचिंतक । आचारज पदयो



ग । जे उक्झाय सदा ते नमतां । नावै जव जय सोगरे ॥ ( ज० सि० )  
 ३७ ॥ वावना चंदन रस सम बयणें । अहित ताप सवि टालै । ते उक्झाय  
 नमी जै जेबलि । जिनशासन अजुबालैरे ॥ ( ज० सि० ) ॥ १८ ॥ ॥  
 ( ढाल ) ॥ ॥ तपसिझायें रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्या  
 य ते आतमा । जगबंधव जगज्जातारे ॥ ( वी० तु० ) ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं ॥  
 इति चोथे पदै श्रीपाठकजीकी कलशपूजा सं० ॥ ४ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( डहा ) मोक्षमार्ग साधन जणी । सावधान थया जेह ।  
 ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायै देह ॥ १ ॥ ( काव्य ) साहूण संसा  
 हिय संयमाणं । नमोश् शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं ।  
 मुणीण माणंद पय धियाणं ॥ ४० ॥ करै सेवना सूरि वायग गणीनी । करु  
 वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसुमती त्रिगुता । त्रिगुते नही  
 कामजोगेपु लिता ॥ ४१ ॥ वली वाह्य अर्घ्य तरै ग्रंथटाली । ऊई मुक्तिनै  
 जोग चारित्र पाली । गुनष्टांग योगै रमै चित्तवाली । नमुं साधुनै तेह नि  
 ज पाप टाली ॥ ४२ ॥ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ सकल विषय विष वारिनै ।  
 निक्कामी निस्संगी जी । जव दव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी  
 ( उल्लाखो ) । जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा । कानस  
 ग मुद्रा धार आसन ध्यान अर्ज्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जपै नैव  
 ठीपै परजणी । मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु । प्रणमो हित जणी  
 ॥ ४३ ॥ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ जिम तरु फूलै जमरो वैसै । पीमा तसुन  
 उपाय । लेई रस आतम संतोषें । तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ ( ज० सि० )  
 ॥ ४४ ॥ पांच इंद्रिणै जेनित जीपै । षट काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार  
 आराधै । बंदूं दीन दयालारे ( ज० सि० ) ॥ ४५ ॥ अठार सहस शीलांग  
 ना धोरी । अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत बंदी । कीजै  
 जनम पवित्रे ( ज० सि० ) ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुपति जेपालै । वारह  
 बिह तपसूरा । एहवा मुनि नमीयै जो प्रगटै । पूरव पुन्य अंकूरारे ( ज०  
 सि० ) ॥ ४७ ॥ सोनातणी परै परिक्षा दीसै । दिनश् चढतै वानें । सं  
 यम खपकरता मुनि नमिई । देश काल अनुमानरे ॥ ( ज० सि० ) ॥

४८ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अप्रमत्त जेनित रहै । नवि हरखै नवि सोचैरे ।  
साधु सूधा ते आतमा । स्युं मुँहै स्युं लोचैरे ॥ ( वी० ) ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं ॥  
इति पांचमे पदै श्रीसाधुजीकी कलश पूजा ॥ ४० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ठी दर्शन पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उहा ) जिनवर नापित सुधनय । तत्वतणी पर तीत ।  
ते सम्यग् दरसन सदा । आदरियै सुन्न रीत ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( काव्य )  
जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स । नमोए निम्मल दंसणस्स । मिच्चन नासाइ  
समुग्गमस्स । मूलस्स सधम्म महा डमस्स ॥ विपर्या सद्दो वासना रूप  
मिथ्या । ठलै जे अनादी अठै जे कुपथ्या । जिनोक्तै ऊई सहज धी शु  
द्ध्यानं । कहीई दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ ५० ॥ विना जेहथी ज्ञान मज्ञा  
न रूप । चरित्रं विचित्रं नवारण्य कपं । प्रकृति सातनै उपसमइ क्य तेह  
होवै । तिहां आप रूपे सदा आप जोवै ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ❀ ॥ स  
म्यग् दरसन गुण नमो । तत्त्व प्रतीत सरूपी जी । जसु निरधार स्वभाव ठे  
। चैतन गुण जे अरूपी जी ( चाल ) जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल  
पर ईहा ठलै । निज शुद्ध सत्ता नाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊठलै ।  
वज्रमान परणिति वस्तुतत्त्वं अहव सुरकारण पणै । निज साध्यदष्टै सरव  
करणी तत्त्वता संपत्ति गिणै ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ शुद्ध देव गुरु  
धर्म परिक्का । सहहणा परिणाम । जेह पामी जै तेह नमी जै । सम्यग्  
दर्शन नामरे ( ज० सि० ५३ । मल उपशम क्य उपशम जेह धी । जे हो  
इ त्रिविध अजंग । सम्यग्दर्शन तेह नमीजै । जिन धरमें दृढ रंग रे ॥  
( ज० सि० ) ५४ ॥ पांचवार उपशम लही जै । क्य उपशमीय असंख ।  
एकवार क्हायक ते सम्यक् । दर्शन नमीई असंख रे ( ज० सि० ) ५५ ॥  
जेविण नाण प्रमाण न होवै । चारित्रतरु नवि फलिउ । सुख निरवाण  
न जे विण लहिई । समकित दर्शन बली उरै ॥ ( ज० सि० ॥ ५६ ॥ सम  
सब बोळै जे अलंकरिउ । ज्ञान चारित्रनु मूल । समकित दर्शन ते नितप्र  
णमुं । सिवपंथनु अनुकूलरे ॥ ( ज० सि० ) ५७ ॥ ❀ ॥ सम संवेगादिक गुण  
खय उपशम जे आवैरे । दर्शन तेहिज आतमा । स्युं होय नाम धरावैरे ॥  
( वी० तुमे० ) ५८ ॥ ( ॐ ह्रीं ० ) ॥ ❀ ॥ इति ठै दर्शनपद कलश पूजा ॥ ६ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ ७ में श्री ज्ञानपद पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( उहा ) ॥ ॐ ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मां  
हि । आराधी जै सुन्नमनै । दिन १ अधिक उहाह ॥ १ ॥ ( काव्य ) अ  
त्राण सम्मोह तमो हरस्स । नमो १ नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सु  
वगारगस्स । सत्ताण सबत्थ पयासगस्स ॥ होइ जेहथी ज्ञानशुद्ध प्र  
बोधै । यथा वर्ण नासै विचित्रा विबोधै । तिणै जाणीइ वस्तु षट्द्रव्य जा  
वा । न होवै विकृता निजेह्ता स्वजावा ॥ २९ ॥ होइ पंचमत्यादि सुग्यान  
जेदै । गुरुपासथी योग्यता तेह वेदइ । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपै ।  
लहै चित्तमां जेमध्यान प्रदीपै ॥ ६० ॥ ॐ ॥ ( ढाल ) ॥ नव्य नमो गुण  
ज्ञाननै । स्वपर प्रकाशक जावै जी । परयाय धरम अनंतता । जेदा जेद  
स्वजावै जी ॥ ( चाल ) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध वास  
विलासता । मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्ध साधन लंठना । स्या  
दाद शंगी तत्वरंगी प्रथम जेद अजेदता । सविकल्पनै अविकल्प वस्तु स  
कल संसय जेदता ॥ ६१ ॥ ॐ ॥ ( ढाल ) ॥ ॐ ॥ नक्क अनक्कन जे वि  
ण लहीयै । पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञानते  
सकल आधाररे ॥ ( न० ) ॥ ६२ ॥ प्रथम ज्ञाननै पठे अहिंसा । श्रीसि  
द्धाते ज्ञाप्युं । ज्ञाननै बंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयै शिवसुख चाख्युं रे ॥  
( न०सि० ) ॥ ६३ ॥ सकल क्रियानुं मूलते श्रद्धा । तेहनुं मूलजे कही  
इ । तेह ज्ञान नित नित बंदीजै । तेविण कहो किम रहीइरे ॥ ( न०  
६४ ) ॥ पांच ज्ञान माहें जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दीपकपरै  
त्रिजुवन उपगारी । वलि जिम रवि शशि मेहरे ॥ ( न०सि० ) ॥ ६५ ॥  
लोक ऊरध अध तिर्यग जोतिष । वैमानिकनै सिद्धि । लोक अलोक प्र  
गट सवि जेहथी । तेज्ञानें मुक्त शुद्धीरे ॥ ( न०सि० ) ॥ ६६ ॥ ॐ ॥  
( ढाल ) ॥ ॐ ॥ ज्ञानावर्णी जे कर्मठै । क्य उपशम तसु थायैरे । तो होइ  
ए हीज आतमा । ज्ञान अबोधता जाइरे ॥ ( वी० तु० ) ॥ ६७ ॥  
( उँझी पर० ) ॥ ॐ ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा सं० ॥ ७ ॥

॥ ॐ ॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( उहा ) अष्टमपद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद । पूजत अ

नुजव रस मिलै । पातिक होय उठेद ॥ १ ॥ ॐ ॥ आराहिया खंमिअ स  
 क्रियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स । सज्जावणा संग विवहियस्स । नि  
 वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ वली ज्ञान फल ते धरीयै सुरंगै । निरासंसता  
 चारोघ प्रसं गै । जवां वोघ संतारणे यानतुल्यं । धरं तेह चारित्र अप्राप्त  
 मूल्यं ॥ ६८ ॥ होई जास महिमा थकीरंक राजा । वली चादशांगी जणी  
 होई ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै । थई सिद्धते कर्मनै-पार  
 जायै ॥ ६८ ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो । तत्व  
 रमण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो ठलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी ।  
 (चाल) । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व धिरता दममंथी । सुचि पर  
 म खंती मुनि दसेपद पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक जेद धरमें यथा  
 ख्यातै पूर्णता । अकपाय अकुलस अमल उज्ज्वल कामकस्मल चूरणता  
 ॥ ७० ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ देशविरतिनै सर्व विरतिजे । अहीयतिनै  
 अजिराम । ते चारित्र जगत जयवंतु । कीजै तास प्रणाम रे (ज०सि०)  
 ७१ ॥ तृणपरै जेपटखंम सुखठंमी । चक्रवर्ति पण वरिठ । ते चारित्र अख  
 य सुख कारण । ते में मन मांहि धरिजे (ज०सि०) ७२ ॥ ऊआ रंक  
 पणै जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण चरण ते वंडु । वरिठ ज्ञा  
 न आनंदरे (ज०सि०) ७३ ॥ वारमास परजाइ जेहनै । अनुत्तर सुख  
 अतिक्रमिइ । शुक्ल सुकल अजिजात्यते ऊपरि । ते चारित्रनै नमीइ रे  
 (ज०सि०) ७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह ।  
 चारित्र नाम निरुक्तै जाण्यु । तेवंडु गुण गेहरे (ज०सि०) ७५ ॥ ॐ ॥  
 (ढाल) ॥ ॐ ॥ जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वप्नाव मांहि रमतो रे ।  
 लेइया शुद्ध अलंकस्यो । मोहवनें नवि जमतो रे । (वी०तुमे०) ७६ ॥  
 उंझी प० ॥ ॐ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलश पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ हिवै एमी तप पद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (उहा) करमकाष्ट प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते  
 तप पद पूजो संदा । निरमल धरियै ध्यान ॥ १ ॥ कम्महुमोन्मूलन कुंज  
 रस्स । नमो २ तिघ तवोयरस्स । अण्णेग लक्ष्मीण निबंधणस्स । उस्सअ  
 त्याणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धिं लद्धिं विक्का समिद्धं । पयमि

य सरवगं झीतिरेहा समगं । दिसिक्ख सुरसारं खोणि पीढावयारं । तिज  
 य विजयचक्रं सिद्ध चक्रं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कम्मकषाय टा  
 ले । निकाचित पणें बांधिया तेहवालै । कस्यो तेह तप बाह्य अज्यंतर ड  
 नेदै । क्कमा युक्ति निहेत डुध्यान छेदै ॥ ७९ ॥ होइ जास महिमाथकी  
 लब्ध सिद्धि । अवांठक पणें कम्म आवरण शुद्धि । तपो तेह  
 तपजे महानंद हेतें । होइ सिद्धि सीमंतनी निज संकेतें ॥ ८० ॥ इम नव  
 पद ध्यावै परम आनंद पावै । नव नव शिव जावै देव नर नवज पा  
 वैं । ज्ञान विमल गुण गावैं सिद्ध चक्र प्रप्तावैं । सब डुरति समावे विश्व  
 जयकार पावैं ॥ ८१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इच्छा रोधन तप नमो । वा  
 ह्य अज्यंतर नेदै जी । आतम सत्ता एकता । पर परणित उछेदैजी ॥ ८२ ॥  
 (उद्धालो) उछेदै कम्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ । सुनयोग  
 संग आहार टाली जाव अक्रियता करै । अंतर मुजरत तत्व साधै सर्व  
 संवरता करी । निज आत्मसत्ता प्रगट जावैं करो तप गुण आदरी ॥ ८३ ॥  
 ॥ ❀ ॥ (ढाल) इम नव पद गुणमंमलं । चउनिक्षेप प्रमाणें जी । सात न  
 यें जे आदरै । सम्यग् ज्ञानें जाणें जी । (चाल) निरधार सेती गुणें गुण  
 णो करइ जे वज्रमानए । जसुकरण ईहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए ।  
 इम शुद्ध सत्ता नलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै । अक्षय अनंत महंत  
 चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८४ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुण  
 पुरंदर सिद्ध चक्र पदावली । सखिलि विज्ञा सिद्धि मंदिर नविक पूजो  
 मनरली । उवप्प्राय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता । गुरु दीपचंद  
 सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥ ८५ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जाणंता  
 त्रिंज्ज ज्ञाने संयुत । ते नव मुगति जिणंद । जेह आदरै करम खपेवा ।  
 ते तप सुरतरु कंदरे ॥ (नणसिण) ॥ ८६ ॥ करम निकाचित पणि क  
 य जाइ । क्कमा सहित जेकरतां । ते तप नमीइ तेह दीपावैं । जिन शासन  
 उजमंतांरे ॥ (न सिण) ॥ ८७ ॥ आमो सही पमुहा वज्रलक्ष्मी । होवै  
 जास प्रप्तावैं । अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटै । नमीयै ते तप जावैरे ॥  
 (नणसिण) ॥ ८८ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नरवर । संपति जेहनु  
 फूल । ते तप सुर तरु सरिषो वंडु । शम सकरंद अमूलरे ॥ (नणसिण) ॥

॥८८॥ सर्व मंगल माहि. पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथ । ते तप पद  
त्रिकरण नित नमिई । वर सहाय सिवपंथरे ॥ ( जणसि० ) ॥ ८९ ॥  
इम नव पद थुणतो तिहां लीणो । ऊठ तनमय श्री पाल । सुजस विलास  
ठै चोथे खंमे । एह इग्यारमी ढालरे ॥ ( जणसि० ) ॥ ९० ॥ ॥ ॥  
( ढाल ) ॥ ॥ ॥ इच्छा रोधन संवरी । परणित समता योगै रे । तप ते  
एहिज आतमा । वरतै निज गुण जोगै रे ॥ ( वी० ) ॥ ९१ ॥ आगमनो  
आगमतणो । जाव ते जाणो साचोरे । आतम जावै थिरऊठ । परजाये  
मत राचोरे ॥ ( वी० ) ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी । घट मांदि कृषि दा  
खीरे । तिम नव पद कृषि जाणज्यो । आतमराम ठै साखीरे ॥ ( वी० )  
॥ ९३ ॥ योग असंख्य ठै जिन कक्षा । नवपद मुख्यते जाणोरे । एह तणें  
अविलंबने । आतम ध्यान प्रमाणोरे ॥ ( वी० ) ॥ ९४ ॥ ढाल वारमी  
एहवी । चोथे खंमे पूरीरे । वाणी वाचक जस तणी । कोईयन  
रहीय अधूरीरे ॥ ( वी० ) ॥ ९५ ॥ ठैंझी अर्झ परमात्मने । अनन्तानन्त  
ज्ञान शक्तिये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिद्धचक्राय । वासं ।  
पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं ।  
ययामहे ॥ ॥ ॥ इति श्री सिद्धचक्र महात्म श्री नवपद पूजासं० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ( पंचामृत ) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुद्धजल ॥ केस  
र । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तुरी । अंबर । रोली । मोली । बूटा फूल ।  
फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप । चावल प्रमुख (नव) जातके धान ।  
(नव) प्रकारके नैवेद्य । (नव) प्रकारके फल । (नव) प्रकारके पक्कव  
स्तु । मिश्री । पतासा । उन्ना । विदाम । सुपारी । प्रमुख । अंगलूहणा  
खातर सपेद वस्त्र । पहरावणी खातर उत्तम रेशमी प्रमुख वस्त्र । वासक्षेप ।  
गुलावजल । अत्तर । इत्यादिक । और (नव) नालीके कलस (९)  
रकैवी । परात । तसला आरती । मंगलदीप । जगवानके अंगी । समो  
सरण । इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रखे । इससे । पूजामें विघ्न  
न होय । (इहां) संक्षेपविधि कही । विसेपविधि गुरुके मुखसें जाण लेणा ॥

॥३॥ अथ सबकै जाणनेकों । नवपदजीके पूजा करणेंकी  
कलस ढालणेंकी विधि कहते हैं ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ चैत्र सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन । श्रात्रिया  
(ए) करै । पंचामृत मोटे घमे प्रमुखमें करे । थापना में श्रीफल रोक  
नाणो धरै । पीठे गुरुके पास मंत्रायकै । केसरसे तिलक करै । कांकणमोरा  
हाथमे बांधै । दहणें हाथमें साथियो करिके । विधि संयुक्त स्नात्र पढावै । पीठे  
श्री अरिहंत पदमें चावल (तथा) चंदन । पुष्प । धूप । दीप । नैवेद्य (प्रमुख)  
अष्टद्रव्य । वासह्नेप । नागरवेल पांन । रकेवीमें धरके । हाथमे रखे । नव  
कलशके मोली बांधै । कुंकुमरा साथिया करै । पंचामृतसें जरिके कलश हाथ  
में लेके पूजा पढे । संपूर्ण होणें से कलश ढाले । वनी परातमें प्रतिमा जी  
पधरावै । ॐ ह्रीं एमो अरिहंताणं । इस माफक कहतो थको । अरिहंत  
पदकी पूजा करै । अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावै ॥ इति प्रथम पूजा ॥ ३ ॥  
॥ १ ॥ (दूसरे) सिद्धपद रक्तवर्ण । गहूं रकेवीमें धरै । श्रीफल (तथा)  
अष्टद्रव्य लेकर । (ए कलश) पंचामृतसें जरिके पूजा पढे । (पूर्ण होणें  
सें) ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं कही । (कलश ढालै) । अष्ट द्रव्य चढावै ॥  
इति द्वितीय पूजा विधि २ ॥ ३ ॥ (तीसरै) श्री आचार्यपद । पीलेवर्ण ।  
चिणाकी दालि । अष्टद्रव्य । श्रीफल प्रमुख लेके । कलश (ए) पंचामृत  
सें जरिके पूजा पढे । पूर्ण होणेंसें । ॐ ह्रीं एमो आयरियाणं (कही) ।  
कलश ढाले । द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ इति तृतीय पूजा ॥ ३ ॥ ॥ (चौथे  
श्री उपाध्याय पद । नीले वर्ण । मूंग प्रमुख अष्ट द्रव्य लेके पूर्वोक्त विधि  
सें पूजा करै । संपूर्ण होणेंसें ॥ ॐ ह्रीं एमो उवझायाणं (कही) कलश  
ढालै । अष्ट द्रव्य चढावै ॥ इति चौथी पूजा विधि ॥ ४ ॥ ॥ (पांचमें)  
श्री साधुपद । स्यामवर्ण नमद प्रमुख लेवै । और पूर्वोक्त विधिः । (पूर्ण हो  
नेसें) ॐ ह्रीं एमो लोए सब साहूणं ॥ इति पंचमी ५ ॥ ३ ॥ (ठहै) दर्शनपद  
स्वैत वर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें । ॐ ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इति ठही  
पूजा विधि ॥ ६ ॥ ३ ॥ (सातमें) श्री ज्ञान पद । स्वैत वर्ण । चावल प्रमुख  
पूर्वोक्त ॥ ॐ ह्रीं एमो नाणस्स ॥ ३ ॥ इति सातमी ७ ॥ ३ ॥ (आठमें)

चारित्र्यपद । स्वेतवर्ण । चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः । ॐ ह्रीं एमो चारित्र्यस्त  
॥ इति आठमी पूजा विधि ॥ ८ ॥ ॐ ॥ (नवमं) तपपद । स्वेत वर्ण । चावल  
प्रमुख पूर्वोक्त विधेः । ॐ ह्रीं एमो तपस्त (कही) कलश ठाले । अष्टद्रव्य  
चढावे । पीठे अष्ट प्रकारी पूजा करे । आरती करे ॥ ॐ ॥  
इति नवपदजीकी पूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वासक्षेप पूजा लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तीर्थपति अरिहानम् । वरम धुरंधर वीरोजी । देशना अमृत  
वसता । निज वीरज वर वीरोजी ॥ १ ॥ ( चाल ) वर अखय निर्मल  
ज्ञान नासन सर्व जाव प्रकासता । निज शुद्ध अक्षा आत्मजावै चरण यि  
रता वासता । जिन नाम कर्म प्रजाव अतिसय प्रातिहारज सोनता । ज  
गजंतु करुणावंत जगवंत जविक जनने धोन्नता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा ॥  
वासं ययामहे स्वाहा ॥ ॐ ॥ इति अरि ० वासक्षेप पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( ठाल ) ॥ ॐ ॥ सकल कर्म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो  
जी । अव्यावाध प्रचुता मई । आतम संपति नूपोजी । ( चाल ) जे नू  
प आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल जावै  
गुण अनंता आदरी । स्वस्वजाव गुण पर्याय परणित सिद्ध साधन परज  
णी । मुनिराज मानसर हंस सम वर नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ॐ ॥  
॥ ॐ ह्रीं प ० ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( ठाल ) ॥ ॐ ॥ आचारज मुनिपति गणी । गुण ठत्तीसे धामो  
जी । चिदानन्द रस स्वादता । परजावै निष्कामो जी ॥ ३ ॥ निष्काम निर  
मल शुद्ध चिदधन साध्य निज निर धारथी । वरज्ञान दरसन चरण वीरज  
साधना व्यापारथी । जिविजीव बोधक तत्वसोधक सफल गुण संपतिधरा ।  
संवर समाधी गत उपाधी जिविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ॥  
इति आचार्य पूजा ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( ठाल ) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अक्षय मद्य जुत्ताजी । स  
यं सोय अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ ( चाल ) जे रम्या  
ग्रह सुगुति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा । स्यादाद वादें तत्वसाधक आ



त्मपर विज्जन करा । ज्व जीरु साधन धीर सासन वहन धोरी मुनिवरा ।  
 सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॐ ॥  
 ॥ इति उपाध्याय पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सकल विषय विषवारिनें । निक्कामी निस्संगीजी ।  
 ज्वदव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ (चाल) ॥ जे  
 रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा । कानसग मुद्राधारि आसण  
 ध्यान अज्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव ठीपै पर जणी । मुनि  
 राज करुणा सिंधु त्रिजुवन वंधु प्रणमं हितजणी ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ❀ ॥  
 इति साधुपद पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्व प्रतीत सरूपीजी ।  
 जसु निरधार सुजाव ठे । चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ (चाल) जे  
 अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा टलै । निज शुद्ध सत्ता जाव प्रगटै  
 अनुजव करुणा ऊढलै । बज्रमान परणित वस्तु तत्वे अहव तसु कारण  
 पणें । निज साध्य दृष्टें सरव करणी तत्वता संपत्तिगिणें ॥ ६ ॥ ॐ ॥  
 इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ ज्व नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकासक जावें  
 जी । पर्याय धर्म अनन्तता । जेदाजेद स्वजावें जी ॥ १ ॥ (चाल) जे मो  
 क परणित सकल ग्यायक बोध जाव सलक्षणा । मति आदि पंचप्रकार  
 निरमल सिद्ध साधन लंढना । स्यादादशंगी तत्वरंगी प्रथम जेद अजेदता ।  
 सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संशय जेदता ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ❀ ॥  
 इति ज्ञान पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ चारित्रगुण बलि बलि नमं । तत्व रमण जसु  
 मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ १ ॥  
 प्रतिकूल आश्रव त्यागसंवर तत्व थिरता दममई । सुचि परम खंती मुनि  
 दसे पद पंच संवर उपचई । सामायकादिक जेदधरमें यथाख्याते पूर्णता ।  
 अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल कामकस्मल चूर्णिता ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥  
 इति चारित्र पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इहारोधन तप नमं । वाह्य अज्यन्तर जेदें

जी । आत्मसत्ता एकता । परः परंणित उठेदें जी ॥ १ ॥ उठेद कर्म अ  
नादि संतति जेह सिद्धपणो वरै । सुन्न जोग संग आहार टाली जाव अ  
क्रियता करै । अन्तर मुहूरत तत्व साधै सव्व संवरता करी । निज आत्म  
सत्ता प्रगट जावैं करो तपगुण आदरी ॥ ए ॥ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ इम  
नवपद गुणमंमल । चौनिक्षेप प्रमाणें जी । सातनयें जे आदरै । सम्यग्  
ज्ञानें जाणो जी ॥ १ ॥ ( चाल ) निरधार सेती गुणें गुणनो करै जे वज्रमान  
ए । जसुकरण ईहा तत्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए । इम सुद्धसत्ता न  
लो चेतन संकल सिद्धी अनुसरै । अक्षय अनन्त महन्त चिदधन परम  
आनंदता वरै ॥ १० ॥ ( कलश ) इम सकल सुखकर गुण पुरंदर सिद्धच  
क्र पदावली । सबलद्धि विज्ञा सिद्धि मंदिर नविक पूजो मनरली । उव  
प्राय वर श्री राजसारह ग्यान धरम सुराजता । गुरु दीपचंद सु चरण से  
वक देवचंद्र सुसोजिता ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ इति श्रीनवपद वासक्षेप  
पूजा संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ऋषिमंमल पूजा लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ ( दोधक ) ॥ ॥ प्रणमी श्रीपारस विमल । चरणकमल सु  
खदाय । ऋषिमंमल पूजन रचुं । वर विधियुत चितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर  
मंदरगिरै । शश्वतजिन महाराज । अरचै अमविध पूजसैं । जैसैं सज्ज सु  
रराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुणधरी । आवक समकित धार । विर  
चै जिन चौबीसकी । अमविध पूजउदार ॥ ३ ॥ ॥ ( गाथा ) ॥ ॥  
सलिल १ सुचंदन २ कुसुमजरं । दीवगकरणंच ४ धूवदाणंच ५ । वरअ  
कृत ६ नेविज्जयं ७ । सुन्नफल ८ पूजाय अरविहा ॥ १ ॥ ए अमविध  
पूजा करणं । सुणियैं सूत्रमऊार । जे नवि विरचै प्रनूतणी । ते पामें  
नवपार ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( दोधक ) ॥ ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । जोगीश्वर न  
राय । प्रथम नए युग आदिमै । सकल जीव सुखदाय ॥ १ ॥ ॥

॥ ॥ ( राग देशाल ) ॥ ॥ ( पूर्वमुख सावनं करि दशन पावनं ।  
इस चालमें ) ॥ ॥ विमलगिरि उदयगिरि राजसिखरो परै । तरुण तर ते

ज दीपत दिण्दिंदा । युगल धर्म वारकरी धरम उद्योत किय । विमल इ  
 द्वाकुकुल जलधि चन्दा ॥ ( १ ) मात मरुदेवी वर उदर दरि हरि वरा ।  
 सकलनृप मुगुटमणि नाजिनन्दा । अखिल जगनायका मुगति सुखदायका ।  
 विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥ ( २ ) वृषन्न लांठनधरा सकल नवन्न  
 य हरा । अमर वरगीत गुणकुसल कन्दा । गहिरसंसार सागर तरणि शम  
 धरा । नमत शिवचन्द्र प्रभुचरण वंदा ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( काव्यम् ) ॥ ❀ ॥  
 सलिल ( १ ) चन्दन ( २ ) पुष्प ( ३ ) फलव्रजैः ( ४ ) । सुविमलाकृत  
 ( ५ ) दीप ( ६ ) सुधूपकैः ( ७ ) । विविध नव्य मधु प्रवरात्रकै ( ८ ) ।  
 र्जिजन ममीजिरहं वसुन्निर्घ्यं जे ॥ १ ॥ नै श्री श्रीपरमात्मने अनंतानंत झा  
 न शक्तये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् कृष्ण जिनैन्द्राय । जलं ।  
 चन्दनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं यजामहे  
 स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति श्रीप्रथम जिनैन्द्रास्याष्टविध पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २ ) श्रीअजितजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) जय जिणंद दिणंद सम । लखि नविकज विक  
 सात । परमानंद सुकंदजल । विजया मात सुजात ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( राग )  
 आयरहो दिलवागमें । प्यारेजिनजी । ( इस ख्यालके चालमें ) ॥ ❀ ॥  
 एक अरज अवधारियै । ( अजितजिन ) एक अरज अवधारियै ॥ ( आं० )  
 अजित जिनेसर जग अलवेसर । कूरम निजर निहारियै । ( अजितजिन  
 एक० ) तारण तरण विरुद सुणितेरो । आयो सरण तिहारियै । ( अजित  
 जिन एक० ) १ ॥ चरमसिंधु नव नय जल निपतित । चरण पतित मोहि  
 तारियै । ( अजित० एक० ) । परमानन्द घन शिव वनिता नन । कज मधुपा  
 न सुकारियै । ( अजित० एक० ) ॥ २ ॥ चिरसंचित घन डरित तिमिर  
 हर । तुम जिननये तिमिरारियै । ( अजित० ) कहै शिवचंद्र अजित प्रभु  
 मेरे । एह अरज न विसारियै । ( अजित० ) ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल चं० ॥  
 ॥ ❀ ॥ नै श्री श्री मदजित जिनैन्द्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥ ❀ ॥ इति श्री  
 अजित जिनैन्द्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( ३ ) श्रीसंनवजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोधक ) ॥ ❀ ॥ जय जितारि संनव सदा । श्रीसंनव जिन

राजः । सकल लोक-जिणः जीतलीयः । जीतो मोह समाज ॥ १ ॥ ॥ ॥  
 ( राग ) गंधवटी धनसार केसर मृगमदारस जेलीयै ( ए चाल ) ॥ ॥ ॥  
 अपरिमित वर शिखर सागर धार संजवकार ए । जिनराज संजव पाय वं  
 दो लहो नवजल पार ए । बलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंज नंजन  
 जानियें । तसु जनक नाम समान नामा जये जिनर आनियें ॥ १ ॥ जसु  
 चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रक्षा । मिलकरि सुरा सुर खत्रर  
 व्यंतर नमर नितचित कमला ॥ जसु चरणकमलै प्लवगलांन कनक सुवर  
 ए कायए । सज्ज जुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥  
 जसु मधुर वाणी जगवखाणी तीस शर ( ३५ ) गुणवारिणी ॥ संसार  
 सागर जय नराजर पतित पारुतारिणी । स्यावाव पक्ष कुठार धारा कुम  
 ति मद तरुदारिणी । प्रभुवाणि नित शिवचंद्र गणिकै ज्वो मंगल कारिणी  
 ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) ॥ ॥ ॥ सलिल चंदन ॥ ॥ ॥ श्री श्री ५० श्रीमत्संजव  
 जिनेंद्राय वसुद्रव्यं ॥ ॥ ॥ इति तृतीय श्री संजव जिनेंद्रास्याष्टविध  
 पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथः ( ४ ) श्रीअग्निनंदन पूजा लि० ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥ ( दोषक ) ॥ ॥ ॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो नवि चितला  
 य । नगति युगति संकट हरण । करण तीन सुव धाय ॥ १ ॥ ॥ ( राग  
 सोरठी ) । कुंद किरण शशि ऊजलोरे देवा ॥ ( ए चाल ) ॥ ॥ ॥ संवर  
 नंदन जिनवरू रे ( वाल्हा ) अग्निनंदन हित कामीरे । जग दग्निनंदन  
 जय करूरे ॥ ( वा ० ) ॥ ॥ इति नंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रका  
 सता रे ( वा ० ) । करता अविचल धामीरे । अव्यावाध अरूपिता रे ।  
 ( वा ० ) । विमल चिदानंद रामीरे ॥ २ ॥ वांछित पूरण सुरमणीरे ( वा ० )  
 ए प्रभु अंतर जामीरे । ऐसे जिन महाराजकुंरे । ( वा ० ) चंद्र नमै सिर  
 नामीरे ३ । ( काव्यं ) ४ ॥ ॥ ॥ सलिल चं ॥ ॥ ॥ श्री श्री ५० श्रीमदग्नि  
 नंदनजिनें ॥ वसु ॥ ॥ ॥ इति श्रीचतुर्थीअग्निनंदन जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ ४ ॥

॥ ॥ ॥ अथः ( ५ ) श्रीसुमति जिन पूजा लि० ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥ ( दोषक ) ॥ ॥ ॥ पंचम जिन नायक नमुं । पंचमि गति दातार ।  
 पंचनाण वर विमल कज । वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ॥ ( राग कै

रवो) वंसी तेरी वैरिणि वाजैरे । वैरिणि वाजै ( ए चाल ) ॥ १ ॥ सुध ज्ञाव  
चित थिर धरिकैरे । (चित०) पूजो सुमति जिणिंद । (सुधज्ञाव०) जिन  
भक्ति करण रसीला । लहो परम आनंद ॥ २ ॥ (सुधज्ञाव०) जिनराज  
सुमति समंद । करै कुमति निकंद । (सुध०) प्रभुना चरण अरविंदा ।  
वंदै असुर सुरिन्द (सुध०) ॥ ३ ॥ कनकाक्ष तनु डतिसोहै । प्रभु सुमंग  
ला नंद (सुध०) । करुणो पशम रस नरिया । वंदै नित शिवचंद । (सुध)  
॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल ०॥ नुं झी० श्रीमत्सुमति जिनैद्राय वसु द्रव्य०  
इति श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ ( ६ ) श्री पद्मप्रभु पूजा ॥ ॥

॥ ॥ (दोधक) ॥ ॥ हिवे षष्ठम जिनवर तणी । पूजन करहु  
नुदार । नवि चित भक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ॥  
(राग सारंग) हांहो० वावन चंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) । ( हां  
होरे वाला ) पदमप्रभु मुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०)  
हरिसुर असुर चकोरमा । नित निरख रक्षा ललचायेरे ॥ २ ॥ (हां०) जिन  
मुख वचन अमृत तणो । जे श्रवण करै नविपानए (हां०) । ते अजरा  
मरता लहै । हरिगण करे जसु गुण गानए (हां) ॥ ३ ॥ धर नृप कुल  
तन दिन मणि । प्रभु मात सुसीमा नंदए (हां) । प्रभु दरसणतें प्रतिदिनै ।  
ऊइ ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल ० नुं० । श्रीपद्म  
प्रभु जिनै० वसु० ॥ ॥ इति श्री पद्मप्रभु जिन पूजा ॥ ६ ॥

### ॥ ॥ अथ ( ७ ) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दोधक) ॥ ॥ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूरण  
काज । जो नवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥ (राग  
कल्याण) मेरा दिल लग्या जिने सरसैं ( ए चाल ) ॥ ॥ मेरी लगी  
लगन जिन वरसैं ( मेरी० ) जैसैं चंद्र चकोर नमरकी । केतकि कमल  
मधुरसैं ( मेरी० ) । एह सुपारस प्रभु नए पारस । गुण गण समरण फर  
सै ( मेरी० ) चेतन लोहपणो परिहरकै । ऊयल्यै कांचन सरिसै ॥ २ ॥  
( मेरी० ) ए प्रभु करुणा करकुं धरिल्यै । उर जिम कमल नमरसै ( मेरी )  
जे नवि जिनपद लगन धरै तसु । नही नय मरन असुरसै ( मेरी० ) ॥ ३ ॥

मात पृथवि तनु जात तनु बुति । सम शुभ्र कांचन सरसै ( मेरी० ) कहै  
सिव चंद्र चित नित मेरो । रहो प्रभुपद लय जरसै ॥ ३ ॥ ( मेरी० )  
( काव्य ) सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमत्सुपाश्वजिनैद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ✽ ॥  
इति श्रीसुपाश्वजिन पूजा ॥ ७ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ ( ८ ) श्रीचन्द्रप्रभु पूजा लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( दोषक ) ॥ ✽ ॥ अष्टम जिनपद पूजियै । विविध कष्ट हरता  
र । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन करतार ॥ १ ॥ ✽ ॥ ( राग  
गुंम मिश्रित मल्हार ) ॥ मेघ बरसै जरी कुसुम बादल करी । ( ए चाल )  
परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता ।  
चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला । कलित सोनित सदा जिन महन्ता  
॥ १ ॥ ( परमपद० ) । कुमतिमत तिमिर जर हरीय पुन जूरि नवि । कुमुद  
सुख करीय गुण रयण दरिया । गहिर नविसिंधु तारण तरणि गुण । धारि  
नव तारि जिनराज तरिया । ( परमपद० ) ॥ २ ॥ राखियै आज मोहि  
लाज जिनराज प्रभु । करण सुख चरण जिन सरण परीया । परम शिव  
चंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित करण ततपर जरीया ॥ ३ ॥ ( पर० )  
( काव्य ) सलिल० । ॐ ह्रीं श्रीमच्चन्द्रप्रभु जिनै० वसु० ॥ ✽ ॥  
इति श्रीचंद्रप्रभु पूजा ॥ ८ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ ( ९ ) श्रीसुविध जिन पूजा लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( दोषक ) ॥ ✽ ॥ सुविध २ समरण थकी । कामित फल प्रक  
टाय । अतिह गहन संसार बनि । बज्रल अटन मिट जाय ॥ १ ॥ ✽ ॥  
( राग ) चंपक केतक मालती ( एचाल ) ॥ ✽ ॥ सुविध चरणकज वंदीयै  
ए । ( अङ्गोव० ) नंदीयै अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विघन  
कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो नयो । ( हांए सफ० ) दीठो  
प्रभुदीदार । तनु मन दग विकसित नये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥  
अमृत जलधर बरसीयो । ( हां० अइ० व० ) नवि उर क्षेत्र मत्तार । दर्शन  
सुरतरु ऊगीयो । शिवफलनो दातार ॥ ( काव्य ) सलिल० । ॐ ह्रीं  
श्रीमत्सुविधि जिनै० वसु० ॥ ✽ ॥ इति श्रीसुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥ ✽ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( १० ) श्रीशीतल जिन पूजा लि ० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) मुक्त तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल जिनराय ।  
तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति पुलाय ॥ १ ॥ ( राग घाटो । दादा  
कुसल सुरिंद ० इस चालमें ) ॥ ॐ ॥ मेरे दीनदयाल तुम नये सकल लो  
क प्रतिपाल । ( आं ० ) सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धर्यो  
प्रभुनो आज । ( मेरे दी ० ) न नमं सज्ज सविकारी देव । करिसुं चरणक  
मलनी सेव । ( मेरे ० ) ॥ १ ॥ जैसें सुरमणि करतल पाय । कुण्डल्यै काच  
शकल उलसाय । ( मेरे ० ) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर १ जग  
निरख्यो जोय ( मेरे ० ) ॥ २ ॥ प्रभुदरसण जलधर धनघोर । लखिय नि  
रतकरे नविजन मोर ( मेरे ० ) । पद शिव चंद्र विमल नरतार । अरज  
एह नरधरियै सार ( मेरे ० ) ॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल ० उँ झी ० श्रीमन्नी  
तल जिनैद्राय वसु ० ॥ ॐ ॥ इति श्रीशीतलजिनैद्र पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( ११ ) श्रीश्रेयांस जिन पूजा लि ० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) ॥ ॐ ॥ श्री श्रेयांस जिनैद्रपद । नद डुति सलिला  
धार । जे नेत्रै मज्जन करै । ते सुचि ऊइ विधुतार ॥ १ ॥ ( राग ) सोहम  
सुरपति वृषज रूप करि ( इस चालमे ) ॥ ॐ ॥ श्री श्रेयांस जिणैसर जग  
गुरु । इंद्रिय सदन सज्जंदहे । जसु वसु विध पूजनसें अरचो । नर धरि पर  
मानंदहे । ए समकित धर श्रावक करणी । हरिणी नव मनरंग हे । विज  
यदेव जिन प्रतिमा पूजी । जीवाग्निगम उक्कंग हे ॥ श्री ० ॥ १ ॥ सूरीयान  
प्रभुपूजन करियो । राय पसेणी उपांगहे । ग्याता अंगै द्रुपदि श्राविका ।  
पूज्या जिन चितविंवहे । काल लगै नमसी नव वनमें । मन्दमती नयन्रांत  
हे ॥ ( श्री ० ) ॥ २ ॥ विष्णुमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर  
हंस हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिर वरि प्रभु अवतंस हे  
इण सुरवरनी परि श्रावक जे । पूजै जिन नररंग हे । ते शिव चंद्र परमपद  
लहिस्यै । निश्चय करी नवमंग हे ( श्री ) ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ( काव्यं ० ) सलिल ०  
॥ १ ॥ उँ झी ० श्री श्रेयांस जिनैद्राय ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति श्रीश्रेयांस जिन पूजा ॥ ११ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( १२ ) वासुपूज्य जिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोषक ) ॥ ॐ ॥ हिववारम जिनवर तणी । पूजन करियै सार ।  
जाव जक्तियुत जवि सदा । द्रव्यजक्ति चितधार ॥ १ ॥ ( राग ) सव अर  
ति मथनमुदार धूपं ( एचाल ) ॥ ॐ ॥ सकल जगजन करत वंदन । जया  
नंदन सामिरे ( देवा ) डुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे  
( देवा ) ॥ १ ॥ ( सकल० ) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । विपिन नंदन  
जातरे ( देवा ) सुहरि चन्दन नन्द । नन्दन । नन्द मदकिय घातरे ( देवा )  
॥ २ ॥ ( स० ) वासु पूज्य जिणेंद्र पूजा । सकल जन महाराज रे । ( देवा )  
करत नुति शिव चंद्र प्रभुए । निखिल सुर सिरताज रे । देवा । ( सक० )  
॥ ३ ॥ ( काव्यं ) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ झी० श्रीमवासु पूज्य जिनेंद्राय वसु  
द्रव्यं ॥ ॐ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( १३ ) श्री विमल जिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोषक ) ॥ ॐ ॥ विमल २ जिन कर मुजै । मलिन करम क  
रि दूर । तेरम प्रभु रमियै सदा । मुज्जर मजि गुणपूर ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥ ( राग )  
सिद्धचक्र पद वंदोरे जविका । ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥ विमल चरण कज वंदोरे ।  
( सूरीजन विम० ) वंदनसैं आनन्दोरे । ( सू० वि० ) जसु गणधर मुनिव  
र गण मधुकर । सेवत पद अरविंदो । श्यामा उदर सुगति सुगता फल ।  
रुत वरमा नृप वंदोरे ( सूरी० ) ॥ १ ॥ सज्ज जग मंमल विमल करणकुं ।  
निज शासन नजचंदो । उदय जयो जविकमुद विकसिवा । वर गुण रयण  
समंदोरे ( सूरी ) ॥ २ ॥ यदि जव वंदि हरण जवि चाहो । प्रभुवंदी चिरनं  
दो । विमल चिदानंद धनमयरूपी । नित वंदत शिवचंदो रे ( सूरी० ॥ ३ ॥  
( काव्यं० ) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ झी० । श्रीमत्र विमलजिनें० ॥ ॐ ॥  
इति विमल जिनपूजा ॥ १३ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( १४ ) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोषक ) ॥ ॐ ॥ हिव चवदम जिनपूजतां । हरियै विषय  
विकार । जों जवियण सुणियै सदा । ए प्रभु सरणाधार ॥ १ ॥ पंचवराणी  
अंगीरची० ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥ पूजकरणी प्रभुनी डुरित निवारी । ( डुरि )  
( आं० ) अनन्त तरणी हिमकिरण तरुणतर । किरण निकर जीताहे नारी ।



लयलाय । सेवै तसु ज्ञवि जमरता । अगणित तुरित विलाय ॥ १ ॥ ॐ ॥  
 ( राग ) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला । मल्लिजिणंद उपगारी ( हारे हारे  
 वाला ) । वारी जाने वारहजारी रे ( वा० । मल्लिजि० ) कुंजनरेसर गग  
 नांगणमें । सहसकिरण अवतारी रे ( वाला० म० ) ॥ १ ॥ पूरव जव  
 पटमित्र नरिंद प्रति । बोधि सिंधु जवतारी । वेदत्रयी चिरही तनु धास्यो  
 सकल संघ सुखकारी रे ( वाला मल्लि० ) ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि  
 चंदन तरुवर । नंदनवन अनुकारी । संघ चतुरविध भूरिखचरगण । प्रणत  
 चंद्र मनुहारी रे ( वा० मल्लि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्य ) सलिल० । नं ऊँ० ।  
 श्रीमल्लिजिने० जल० ॥ ॐ ॥ इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( २० ) श्रीमुनिसुव्रतजिन पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) पद्मोदर वर पद्मनद । गतपर पद्म समान । विंश  
 तितम प्रभु पूजिये । केवल लल्लि निधान ॥ १ ॥ ॐ ॥ ( राग गरवो ) सु  
 णिचतुर सुजाण । परनारीसुं प्रीतडी कवजं न कीजियै ( एचाल ) ॥ ॐ ॥  
 सुणिसुव्रतजिनेंद्र सुनिजर धरि मुऊपर वर दरसण दीजियै । प्रभु दरस प्रीति  
 निरुपाधिकता । करियै लहियै शिव साधकता । तव तुरत मिटै सिव बाधकता ।  
 ॥ १ ॥ ( सुणि० ) अमृतमें साध्यपणो विलसै । प्रभु दरसण साधनता  
 नलसै । तदमुऊमें साधकता मिलसै । ( सुणि० ) ॥ २ ॥ जिनाधिकरण  
 ता यदि विघटै । एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद मुऊ शिव साधकता प्रग  
 टै । ( सुणि० ) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुऊ करियै । जिनाधिकरणता परि  
 हरियै । शिव चंद्र विमल पद तद वरियै ( सुणि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्य )  
 सलिल० । नं ऊँ० । विंशतितम श्रीमत् मुनिसुव्रतजिने० ॥ ॐ ॥  
 इति मुनिसुव्रत जिन पूजा ॥ २० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( २१ ) श्रीनमि जिन पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( दोधक ) अंतरवैरि नमाविया । तव लहियो नमि नाम । ज्ञवि  
 यण ए प्रभु पूजसै । सरीयै बंढित काम ॥ १ ॥ ( राग ) हमआएहै सरण  
 तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० ( एचाल ) । ॐ । श्रीनमि जिनवर  
 चरण कमलमें । नयन जमर युग धरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसै  
 चेतन मद मत करियैरे । ( वारी ) चेतन मद मत करियैरे ( श्रीनमि० )

॥ १ ॥ एह चरण कज अह निशं बिसै । पर कज निसि कुमलावै रे ।  
 ( वारी पर ) एन बलै बलि तुहिन अनलसै । अपर कमल बल जावै रे ।  
 ( वारी० अप० ) ॥ २ ॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत । जीव अमरता  
 पावै रे ( वारी० ) । अवर कमल रस लोचनी मधु कर । कजगत गज गिल  
 जावै रे ( वारी० ) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लक्षिपात्रहै । पद कज संपद  
 देवै रे । तातै पद शिवचंद्र जिण्डके । अह निस सुर नर सेवै ( वारी० ) ।  
 श्री० ॥ ४ ॥ ( काव्य ) सलिल० ॥ ॐ० श्री नमिजिनै० ॥ ॥ ॥  
 इति श्री नमिजिन पूजा ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ १२ ॥ अथ ( १२ ) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( दोधक ) बावीसम जिन जगगुरु । ब्रह्मचारी विख्यात । इण  
 धंदन चंदन रसै । पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥ ( राग रामगिरी ) गात्र लूहै  
 जिनमन रंग सुरै । देवा ( ए चाल ) । नेमि जिण्ड उर धारीवै रे ( वाला )  
 विसय कसाय निवारीवै ( वाला ) । ( वारीवै ) हारे वाला वारीवै ) । ए  
 जिन नैन बिसारीवैरे ॥ २ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजतारे ( वाला ) देशना  
 अमृत वरसतारे ( वाला ) ( दिस० ) । वरसता हारे वाला वरसता । जबिक  
 मोर सुणि उलसतारे ॥ ३ ॥ समवसरण गिरि परि रहारे ( वाला ) ।  
 जामंजल चपला बहारै ( वाला ) । चपला बहा । ( हारे ) चपला बहा  
 सुर नर चातक ऊमहा ॥ ४ ॥ बोध बीज उपजावीयोरे ( वाला ) । जबि  
 उर क्षेत्र वधावीयो हारे ( वाला धा० ) । जबिक मुगति फल पावीयोरे ॥ ५ ॥  
 ( काव्य ) सलिल० ॥ ॐ० श्रीनेमि जिनै० ॥ ॥ ॥  
 इति नेमि जिन पूजा ( १२ ) ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ ( १३ ) श्री मत्पार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( दोधक ) ॥ अश्वसेन नंदन सदा । वामोदर खनि हीर ।  
 लोक सिखर सोचै प्रभु । विजित करम वरवीर ॥ १ ॥ बाजै तेरा बितुआ  
 ( इत कैरवाकी चालमै ) ॥ ॥ ॥ पास जिण्डा प्रभु मेरै मन बसीया । पास  
 जिण्डा० । मेरै मन बसीवारे । मेरै दिल बसीया ( पास जि० ) । शिव  
 कमलानन कमल बिमल कल । तर मकरंद पान अतिरसीया ( पास जि० )

॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकल लोक जन मन किय वसीया  
( पास जि० ) । परमज्योति मुख चंद विलोकित । सुर नर निकर चकोर ह  
रसीया ( चकोर ह० ) ( पास जि० ) ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनु इति जिन  
जलधर । देशना अमृत धार वरसीया ( धारवर० ) ( पास जि० ) । पीय  
करि नवि चिरकाल तिरसीया । मुगति युवति तनु तुरत फरसीया ( पास  
जि० ) । कुमुद सुपद शिवचंद्र जिणेंदनी । वारीजां मन मेरो अतिह उल  
सीया ( पास जि० ) ॥ ४ ॥ ( काव्य ) सलिल० । नैं झी । त्रयो विंशत्तम  
श्रीमत्पार्श्वजिनै० ॥ इति श्री पार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ( २४ ) श्रीमद्वीरजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोषक ) ॥ ❀ ॥ वर इक्खाकुकुल केतु सम । त्रिशलोदर  
अवतार । ए प्रभुनी नित कीजीयै । विविध नक्ति सुखकार ॥ १ ॥ ( राग  
तेजतरणि मुखराजै । ( हारे मुखराजै ) प्रभु जीनो ते० ) ( एचाल ) ॥ ❀ ॥  
चरम वीर जिन राया ( हारे ) जिनराया । मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया  
( आं० ) । सिद्धारथकुल मंदिर धजसम । त्रिशला जननी जाया । निरु  
पम सुंदर प्रभु दरसण ते । सकल लोक सुखपाया । ( हारे सुखपाया )  
( मेरे प्रभुच० ) ॥ २ ॥ वामचरण अंगुष्ठ फरसतै । सुरगिरि वर कंपाया  
इंद्रभूति गणधर मुख मुनिजन । सुरपति वंदित पाया । ( हारे ) ( मेरे प्र० )  
॥ ३ ॥ वर्तमान शासन सुखदाया । चिदानंद घन काया । चंद्रकिरण गुण  
विमल रुचिर धर । शिवचंद्रगणि गुण गाया । ( हारे० मेरे प्र० ) ॥ ३ ॥  
वरस नंद मुनि नाग धरणि मित । द्वितीयाश्विन मनजाया । धवलपद्म पं  
चमि तिथि शनियुत । पुरजय नगर सुहाया ( मेरे० ) ॥ ४ ॥ श्रीजिन हरख  
सूरीसर साहव । वर खरतर गजराया । क्षेमकीर्ति शाखा नूषण मणि । रूपचं  
द्र उवजाया ( मेरे० ) ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु नूरि नरेश्वर । वंदै पद उलसा  
या । तासु शीसवाचक पुण्यशील गणि । तसु शिष्य नाम धराया ( हारे०  
मेरे प्र० ) ॥ ६ ॥ समयसुंदर अनुग्रही ऋषिमंमल । जिनकी सोन सवाया  
पूजरची पाठक शिवचंदै । आनंद संघ वधाया ( हारे० मेरे० ) ॥ ७ ॥  
( काव्य ) ॥ सलिल चंदन० ॥ ❀ ॥ नैं झी श्रीप० चतुर्विंशति तम  
श्रीमद्वीरजिनैंद्राय वसुद्रव्य ॥ इति श्रीमहावीरजिन पूजा विधिः ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ स्तग्धरावृत्तवयं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुर्वार स्फार विमोक्तं करटि घटोत्पाटन स्पष्ट जाग्रद । वि  
यं प्राग्जारोत्पाट चंचत् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्नतानां । संसारापार  
सिंधु तरण तरतरी जकिञ्जाजा मजस्रं । जव्यानां ब्रह्मपद्म प्रवण मधुकरी  
शंकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोका खलित विमल सद्वर्शन ज्ञान  
ज्ञानुः । श्रीमङ्गलैश्वरीयं विज्जुवन विज्जुताति श्रुतुर्विशतिश्च । श्रीसिद्धा नंत  
नाथालय विशदलसत् सर्वलोकाग्रजाग । प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते  
वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति ऋषिमंमल स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय जगज्जन वंछित पूरण । सुरतरु अजिरामी । आत्मरूप  
विमल करतारक । अनुभव परिणामी । ( जय१ जगसारा १ ) । आरती  
पार उत्तारा । सिद्धचक्र सुखकारा ॥ १ ॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा ।  
जज श्रीजगवन्ता । आत्मराम रमा सुखजोगी । सिद्धा जयवंता । ( जय० १ )  
पंचाचार दीपै आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक वाचक सुत्र अर्थना  
पाठक जयतारी ( जय० ) ॥ ३ ॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक । मो  
टा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक । संजम तपज्ञाया ( जय० )  
॥ ४ ॥ नव पदसार परम गुरु ज्ञापै । सिद्धचक्र सुखकारी । ए नव परज  
व सिद्ध सिद्ध दायक । नव सायर वारी ( जय० ) ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक  
गुण गावै । मनवंछित पावै । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत । शिव कमला  
पावै ( जय० ) ॥ ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंमल आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय जिनराजा । ( वारी ज० ) आरती करुं शिवकाजा ।  
नव जय दुख जाजा ( जय० ) ॥ १ ॥ ऋषज अजित संजव जिन राया ।  
अजिनंदन सुमति । पद्म सुपारस चंद्राप्रभुते । दूर जवै कुमति । ( जय१ )  
सुविध शीतल श्रेयांस सवाई । करि वारम जिनकी । विमल अनंत धर्म  
प्रभु शांति । हर आरति तनकी । ( जय० ) ॥ ३ ॥ कुंयुनाथ अरमल्लि  
मुनिसुवत । नमि नेमि श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आत्महि

तकारा । (जय०) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे नवि करसी । नवसायर  
तरसी । श्रीजिनचंद अखयपद फरसी । शिव कमला वरसी । (जय०)  
॥ ५ ॥ इति श्रीऋषिमंमल आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ऋषिमंमल सुननेकी (वा) पूजनकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (प्रथम) ॥ ❀ ॥ आव्यन्ताक्षर संलक्ष्ण । यह । ऋषिमंमलस्तोत्र ।  
धूप, दीपादि, विधि संयुक्त, आठ महिनेतक प्रभात समय सुणें । ऋषिमंमल  
में (जो) मूलमंत्र है (सो) शुभदिन शुभघटी । हाथमें फल फूल जेठ  
शक्ति माफक लेई । गुरुकै पास जावे । जेठ धरके । विनयसंयुक्त मूलमंत्र  
ग्रहण करै । (उसका) ॐ ॐ ॐ जाप, आठ महिनामे करै । आंखिल करणैकी  
शक्ति होय (तो) सदा करै । नहिं तो । आठम । चवदस । दो आंखि  
ल जरूर करै । आठ महिनां ऊयां वाद ऊजमणो करे । ऊजमणैके दिन  
१०८ बेरसुणें । पीठै शक्ति होय (तो) विधिसंयुक्त । ऋषिमंमल स्थापन  
करायके पूजा करे । विशेष शक्ति होय तो (२४) प्रकारी पूजा करावे ।  
पूजामें सामग्री ज्यो पहली नवपदजीकी विधके ठिकाणें लिखीहै (सो)  
सर्व सामग्री इहां (२४) चौईस लेणी । एक एक महाराजकी पूजा  
पढायके । प्रथम जल । पीठै चंदन । ऐसैं अष्टद्रव्य अनुक्रमसैं चढावे ।  
(पीठै) संपूर्ण पूजा ऊयां वाद । गुरुशक्ति करै । साहमी बहल करै । (इहां)  
विशेषविधि गुरुके मुखसैं समऊके करणी॥ (यह) ऋषिमंमल सुणनेवाले पूज  
णैवाले नव्य जीवोंके घरमें कच्ची उपद्रव न होगा । सदा आनंद उछाह  
रहेगा । इत्यलंविस्तरेण । इति ऋषिमंमल सुणने (वा) पूजन करनेकी विधि ॥

॥ ❀ ॥ अथ विंशतिपद पूजा विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सुखसंपति दायक सदा । जगनायक जिनचंद ।  
विघनहरण मंगलकरण । नमो नाञ्जि नृप नंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रका  
सिका । जिनवाणी चितधार । विंशतिपद पूजनतणो । कहिस्युं विधि वि  
सतार ॥ २ ॥ जिनवर अंगै चाषिया । तप जप बज्र परकार । विंशतिपद  
तप सारिसो । अवरन कोई उदार ॥ ३ ॥ दान शील तप जप क्रिया ॥  
चावविना फलहीन । जैसें नोजन लवण विन । नही सरस गुणपीन ॥ ४ ॥

जे नवीयण सेवै सदा । जावै यानक वीश । ते तीर्थकर पदलहै । वंदै सुर  
नर ईश ॥ ५ ॥ ( ढाल ) श्री अरिहंतपद १ सिद्धपद २ ध्यावो । प्रवचन  
३ आचारिज ४ गुणगावो । स्थविर पंचमपद ५ पुन रुक्माया ६ । त  
पसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनजाया १ ( उद्धालो ) मनजाय विनया १०  
वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानीयै । तप १४ विविध उत्तम  
पात्र १५ वेयावन्न १६ समाधि १७ वखानीयै । हितकर अपूरव नाणसंग्रह  
१८ धरौ मन सुजगीसए । श्रुतभक्ति १९ फुनि तीर्थप्रज्ञावन २० एह  
थानकवीसए २ ॥ ( ढाल ) एथानकवीस २० जग जयकारा । जपतां लही  
यै जिनपद सारा । करम निकंदै विसवावीसै । जाप्या जग तारक जग  
दीसै ॥ ३ ॥ ( उद्धालो ) जगदीश प्रथम जिणेंद जगगुरु चरम जिनवर  
जी मुदा । नव तीसरै पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा । वावीस  
जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुणगाइयै । इक दोय त्रिण सज्जपद जपी  
नैं तीर्थपति पद पाइयै ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ ॥ अरिहंतादिक पद सदा । नजीयै तपकरी  
सुख । अति निरमल सुन्नयोगता । करिकै तसुगुण लुख ॥ १ ॥ विमल  
पीठ त्रिक तडुपरै । ठवीयै जिनवर वीस २० । पूजन उपग्रण मेलिकरि ।  
अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी । द्रव्यपूजा परकार ।  
पंच ५ अष्ट ८ विध जानीयै । सत्तर १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट ज्ञातिना  
कलश करि । विमलजलै जरि पूर । पूजो नवीयण पद सहू । होय  
सकल डखदूर ॥ ४ ॥ सोहै सज्ज परमेष्टिमैं । जिनवर पद अन्निराम ।  
वेद ४ निक्षेपै समरीयै । वधतै सुन्न परिणाम ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ( राग देसाख ) पूर्वमुख सावनं करिदसन पावनं ए चाल ॥ ॥  
सकल जगनायकं परमपद दायकं । लायकं जिनपदं विमलज्ञानं ( अईयो  
वि० ) चतु रधिक तीस ३४ अतिशय अमल वार १२ गुण । वचन  
पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥ १ ॥ ( अईयोम० ) ॥ सुखकरण जिन  
चरण पद्मसेवित सदा । जमर सुर असुर नर ऊदयहारी ( अईयो ) एह  
जिनवर तणी आण पूरण सदा । दाम जिम जगत जन शिरसि धारी  
( अई० ) ॥ २ ॥ जिनपपद दरस पारस फरसतैं ऊवै । प्रगट निजरूप पारि

एति विज्ञासं । तजीय बहिरात्म गिरीसारता नविलहै । अनुपमं आत्मकांचन  
 प्रकासं (अ०) ॥ ३ ॥ ऊवई जिनराज पद जाप रवि किरणतें । तुरत वज्र  
 डुरित नर तिमिरनासं । घन चिदानंद वरकंद घन नविलहै । तीर्थकर चरण  
 कमला विलासं (अ०) ॥ ४ ॥ वर विबुध मणिलही काच लघु सकलकौं ।  
 ग्रहण करिवा कवण कर पसारै । तिमलही जिन चरण सरण शुभयोगतें ।  
 अवर सुर सरण कुण रिदय धारै ॥ ५ ॥ प्रभुतणै पंचकट्याण केरै दिनें ।  
 प्रगट त्रिजं लोकमें ऊइ ऊजैरौ । नविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिनन  
 मी । बांधीयौ गोत्र जिनराजकेरौ ॥ १६ ॥ जेह त्रिण काल नितनमें जिन  
 हरखसुं । तेह नवजल तिरै जनम तीजै । अधिक नव यदिकरै तदपि नि  
 श्रय करी । सप्त बलि अष्ट नव करीय सीकै ( अइयोक्त ० ) ॥ ७ ॥ ❀ ॥  
 ( काव्यं ) ॥ ❀ ॥ एमोणंत विज्ञाण सइसणाणं । सयाणंदिया सेस जंतूग  
 णाणं । नवां नोज विद्धे यणे वारणाणं । एमो बोहियाणं वराणं जिणाणं  
 ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 ॥ इति प्रथमपदे श्री जिनैंद्र पूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

❀ ॥ अथ (२) श्री सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥ ❀ ॥

❀ ॥ ( दूहा ) ॥ तनु त्रिजागके घटनतें । घन अवगाहन जास ।  
 विमलनाण दंसण कीयो । लोकालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनाशी अ  
 भित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । एमो  
 सिद्ध जयकार ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( राग सोरठ ) कुंदकिरण ससि ऊजलोरे  
 देवा ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ अनुभव परमानंद सुरे वाला । परमात्म  
 पद बंदोरे । करम निकंदौ बंदिनैरे वाला । लहि जिनपद चिरनंदोरे  
 ॥ १ ॥ गगन पए संतर बलीरे वाला । समयांतर अण फरसीरे । द्रव्य सगु  
 ण परजायनारे वाला । एक समय विद दरसीरे ॥ २ ॥ एक समय रिजु  
 गति करीरे वाला । नयेय परमपद रामीरे । जांगै सादि अनंत एरे वाला  
 निरुपाधिक सुख धामीरे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरीरे वाला । सिद्ध  
 सकल सुखकारीरे । विमल चिदानंद घन थयारे वाला । वर इगतीस गुण  
 धारीरे ॥ ४ ॥ उत्पन्नता १ बलि विगमतारे वाला २ । ध्रुवता ३ त्रि  
 पदी संगैरे । प्रज्जमें अनंत चतुक्तारे वाला । सोहै सम क्रम जंगैरे ॥ ५ ॥

पन्नर जेद ए सिद्धयारे वाला । सहजानंद स्वरूपीरे । परम ज्योतिमें  
परिणम्यारे वाला । अव्यावाध अरूपीरे ॥ ६ ॥ जिनवर पिण प्रणमें मु  
दारे वाला । एहनें दीक्षा अवसरैरे । तिण प्रभुपद गुण मालकारे वाला ।  
कंठै धरीयै सुपरैरे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल जवि जगति सूर वाला । सिद्ध परम  
पद जजिनैरे । पद श्री जिनहरपै लखोरे वाला । परगुण परिणति तजि  
नैरे ॥ ८ ॥ (काव्यं) लोगगज्जागे परिसंठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिं  
दयाणं । निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं । एमो सया मंगल धारगाणं ॥ ९ ॥  
ॐ ह्रीं श्री सिद्धेज्योत्तमः १ ॥ इति द्वितीयपदे श्री सिद्ध पूजा ॥ १ ॥

॥ १० ॥ अथ तृतीय प्रवचन पद पूजा लि० ॥ १० ॥

॥ ११ ॥ (दूहा) ॥ पद तृतीय प्रवचननमो । ज्यूनजमो संसार । गमो  
कुमति परिणमनता । दमो करण जयकार ॥ १ ॥ जैसैं जलधर दृष्टितें । अ  
खिल फलद विकसाय । तैसैं प्रवचन जक्तितैं । सुजपरणित उलसाय । १  
(श्रीराग) जिनगुणगानं श्रुत अमृतं ए चाल ॥ १० ॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं ।  
परिहरिये सज्ज विषय विकारं । करीयै प्रवचन आदरणं ॥ प्रवचन ० १ ॥ सप्त  
जंगि जूषित ए प्रवचन । स्यादवाद मुद्राज्जरणं ॥ सप्तनयात्मक गुणमणि  
आगर । बोधिवीज उत्पत्ति करणं ॥ प्रवचन ० ॥ १ ॥ जैसैं अश्रित पान कर  
णतें । ज्वई सकल विष संहरणं । तैसैं प्रवचन अश्रित पानें । कुमति हला  
हल प्रविशरणं ॥ ३ ॥ प्र० ॥ प्रवचनकौं आधेय कह्यै । सकलसंघ तसु अधि  
करणं । तिण एसंव चतुरविध प्रवचन । एपद अखिल कलुषहरणं ॥ ४ ॥ प्र० ॥  
यदि जविजन तुमए चाहतुहै । मुगतिरमणि जन वशकरणं । करणतीन  
इककरि तदकरीयै । प्रवचन पद समरण धरणं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जिनवरजी  
पिण ए तीरथनैं । प्रणमें मध्य समवसरणं । जवजल तारण तरणि समानं ।  
एतीरथ अशरण शरणं ॥ ६ ॥ प्र० ॥ जिम जरतेसर संघ जगतिकरि । ल  
हीयो पुण्य फलाचरणं । चक्रीपद अनुजवि बलि शिवपद । लीधकरीय क  
म निरजरणं ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संजव जिनहरपै करि । आराधी प्रवचन चर  
णं । करम निकंदि थया जगदीसर । जिन परमान्न आजरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥  
(काव्यं) ॥ अणंत संसुद्ध गुणाकरस्त । उक्खंधया रुग्ग दिवाकरस्त । अ  
णंत जीवाण दयागिहस्त । एमो एमो संघ चउविहस्त ॥ ९ ॥ (ॐ ह्रीं श्री



प्रवचनायनमः) ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदे श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥ ❀

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ पदचतुर्थ नमीयै सदा । सूरीसर महाराज ।  
सोहम जंबू सारिसा । सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सारण वारण चोयणा  
पमि चोयण करतार । प्रवचन कज विकसायवा । सहसकिरण अवतार  
॥ २ ॥ ( राग रामगिरी ) गात्रलूहै जिनमनरंगसुरेदेवा ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
आचारिज पद ध्याईयैरे वाला । तासबिमल गुणगाईयै ॥ पाईयै ( हारेवाला )  
पाईयै ॥ जिनपतिपद जग शिरतिलोरे ॥ १ ॥ आचारिज ० ॥ जिनशासन  
नजुवालतारे वाला । सकलजीव प्रतिपालता ॥ पालता ( हारेवाला )  
पालता ॥ चरण करण मग चालतारे ॥ २ ॥ आचारिज ० ॥ सूरि सकल  
गुण सोहतारे वाला । सुर नर जन मनमोहता ॥ मोहता ( हारेवाला ) मो०  
ज्वीयणनै पमिवोहतारे ॥ ३ ॥ आचा ० ॥ पंचाचार विराजितारे वाला ।  
सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता ( हारेवाला ) गाजता ॥ सूरि सकल  
शिर ठाजतारे ॥ ४ ॥ आ० ॥ उपदेशामृत वरसतारे वाला । डुरितताप सऊ  
निरसिता ॥ निरसिता ( हारेवाला ) निरसिता ॥ परमात्म पद फरसतारे ॥ ५ ॥  
आचा ० ॥ धरम धुरंधरता धरारे वाला । जगबांधव जगहितकरा ॥ हितकरा  
( हारेवाला ) हितकरा ॥ स्व परसमय विनु गणधरारे ॥ ६ ॥ आ० ॥ पद  
श्री जिनहरषै ग्रस्योरे वाला । सूरीशर पद तपवस्यौ । तपवस्यौ ( हारेवाला )  
तपवस्यौ । पुरुषोत्तम नृप शिव लस्योरे ॥ ७ ॥ आ० ॥ ( काव्य ) कुवादि  
केली तरु सिंधुराणं । सूरीसराणं मुणि बंधुराणं । धीरत्त संतज्जिय मंदराणं ।  
णमोसया मंगल मंदिराणं ॥ ८ ॥ ( ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनमः ) ॥ ४ ॥ ❀ ॥  
इति चतुर्थपदे श्री आचार्यपूजा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम थिवर पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( डहा ) ॥ ❀ ॥ इविध थविर जिनवर कस्य । द्रव्य जाव प  
रकार । लौकिक लोकोत्तर वली । सुनीयै जेद विचार ॥ १ ॥ जनकादिक लौ  
किक थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचमपदमें जानीयै । इतीय थविर अधि  
कार ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( सारंगराग ) ॥ नितनमीयै थविर सुनीसरा । पंचमहाव्रत धार

क बारक । कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ ॥ नितनमीयै ॥ ५ ॥ संय  
मयोगै, सीदत, बालक । ग्लानादिक सज्ज मुनिवरा । एहनें उचित सहाय दी  
यणतें । बारै एहना डुखजरा ॥ २ ॥ नित ॥ पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थ  
विरा । बीसरु साठ समोपरा । वयधर समवायाधिक पाठक । एहथ  
विर गुणआगरा ॥ ३ ॥ नित ॥ तीजैअंग कक्षा दशथविरा । रतनत्रयी  
ना गुणधरा । तेइह निरमलजावै ग्रहिवा । नविक सरोज दिवाकरा ॥ ४ ॥  
नित ॥ क्षीरजलधि सम अतिह गंजीरा । सुरगिरी गुरु धीरज धरा । शर  
णागत तारणता धारा । ग्यान विमल जल सागरा ॥ ५ ॥ नित ॥ श्रुत  
तप धीरज ध्यान करणतें । द्रव्यादिक ग्यातावरा । तेह स्वरूप रमण थवि  
राकक्षा । नहिय धवल केशांकुरा ॥ ६ ॥ नित ॥ एहथविर पद सेवी जग  
तै । पदमोत्तर वसुधेसरा । पद श्रीजिनहरपै तिण लहीयो । मुनिवर कुमुद  
निशाकरा ॥ ७ ॥ नित ॥ ( कलश ) सम्मत्त संयम पतित नविजन अ  
तिह धिरकरता जला । अवगुण अदूषित गुणविजूपित चंद्रकिरण समुक्ल  
ला । अष्टाधिका दशसहस शीलोगरथ रुचिर धाराधरा । नवसिंधु तारण प्रवर  
कारण नमो थविरमुनी सरा ॥ ८ ॥ ( उं ह्रीं श्रीस्थविरायनमः ) ॥ ५ ॥ ॥  
इति पंचमपदे श्रीस्थविरपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ षष्ठपदे श्री उपाध्याय पूजा लि ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ ॥ प्रवर नाण दरशण चरण । धारक यतिध्रम  
सार । समितिपंच त्रिणगुप्तिधर । निरुपम धीरजधार ॥ १ ॥ ॥  
( राग जैरव ) ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती ( ए चाल ) ॥ ॥  
जावधरी उवाजायाबंदो विजयकारी । श्रीउवाजाय परमपद बंदी । लहो जिनपद  
अतिशय धारी ॥ १ ॥ जाव ॥ कुमती मदतर जंजन सिंधुर । सुमतिकंद धन  
अवतारी । अंगडवालस जणय जणावै । शिष्यजणी चित हितधारी ॥ २ ॥  
जाव ॥ सकल सूत्र उपदेश दीपणतें । वाचक अति विमलाचारी । नव  
तीजै अत्रित सुखपामें । सुर असुरेंद्र मनोहारी ॥ ३ ॥ जाव ॥ ह्य ग  
ज वृष पंचानन सरिया । करमकंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृपे दिन  
कर । विधु जंमारि तुलाधारी ॥ ४ ॥ जाव ॥ जंबू शीतानदि कांचनगि  
रि । चरमजलधि उपमजारी । एउपमा वज्रश्रुतनी जाणो । उत्तराध्ययन

कहीसारी ॥ ५ ॥ जाव ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि । स  
कल जुवन जन उपगारी । शंशय तिमिर हरण वासरमणि । पाप ताप  
आतपवारी ॥ ६ ॥ जाव ॥ प्रवर शंख पय नरीयो सोहै । तिमरु ग्यान  
चरण चारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । लहीयो जिनपद विजितारी  
॥ ७ ॥ जाव ॥ ( काव्य ) सब्बोहिवीजं कुरकारणाणं । एमो एमो वायग  
वारणाणं । कुबोहिदंती हरिणेशराणं । विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥ ८ ॥  
( नै ज्ञी श्रीनपाध्यायेज्योनमः ) ॥ ६ ॥ इतिषष्टपदे श्रीनपाध्यायपूजा ॥ ६ ॥ ॥

॥ ॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा लि ॥ ॥

॥ ॥ जाणें जिनवाणी सरस । स्पादवाद गुणवंत । मुनिकहीयै सिक्क  
पंथनै । साधै साधुकहंत ॥ १ ॥ समतारस जलज्जलता । विशदानंद सुखप  
तिण पांस्यो पद सप्तमै । नमोनमो मुनिनूप ॥ २ ॥ ॥

( राग गुंमिश्रित जीम म ० ) मेघवरसेनरी पुष्पवादल करी ए चाला ॥  
अक्तिधरि सातमैं पद नजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा ।  
गुण सत्तावीस नूषणकरी शोचिता । क्षोभिता विकट क्रम सुन्नट सारा ॥ १ ॥  
अक्ति ॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा । शिवकरण नाण किरिया प्रधा  
ना । प्रतिदिनै दोष आहारना वरजिता । सप्तचालीस यतिधर्म निधाना ॥ २ ॥  
अक्ति ॥ मदनमद नंजता कुमति जन गंजता । अक्तजन रंजता क्षांतिधरी  
या । सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना । तारीया ग्यान गंजीर दरीया  
॥ ३ ॥ अक्ति ॥ त्रिण मणी समगिणें चतुरविध धर्मना । परम उपदेश दा  
यक उदारा । बहिर ज्यंतर जिदा बारविध अतिकठिन । तपतपै सकलजीउ  
अन्यकारा ॥ ४ ॥ अक्ति ॥ बलि अठावीस मनहरण गुण लवधि  
निधि । सातमैं ठठ गुणठाण वसीया । सप्त नयवारका प्रवर जिन  
आगन्या । धारका स्वगुण परिणमन रसीया ॥ ५ ॥ अक्ति ॥ पंचपर  
माद कल्लोलता कुलमहा । पारसंसार सागर जिहाजा । विविध नववामि  
युत शीलव्रत के धरा । मधुर निजवाणि रंजित समाजा ॥ ६ ॥ अक्ति ॥  
कोमि नवसहस थुणीये महा मुनिवरा । वीरनद्र जिमकरीय साधुसेवा ।  
परमपद जिनहरष सुग्रह्यौ तसुतणा । चरणकज युगनमैं सकलदेवा ॥ ७ ॥  
अक्ति ॥ ( काव्य ) संतजिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गि

हाण । सनाण पक्काय तरूवणाण । एमोणमो होउ तवोधणाण ॥ ८ ॥  
(ॐ ह्रीं श्री सर्व साधुभ्योनमः) ॥ ७ ॥ इति सप्तमपदे श्री साधु पूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा लि ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ( दूहा ) ॥ विमलनाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकाश ।  
जीतलई निजतेजसं । जिन अनंत रविजास ॥ १ ॥ सज्ज संशय तम अपहरै ।  
जय जय नाणदिणंद । नाण चरण समरण थकी । विलय होय डुबदंद  
॥ २ ॥ ॥ ( राग घाटो ) मेरो मन बसकर लीनो । ए चाल ॥ ॥ ॥  
जावै ग्यान वंदन करीयै । शिवसुख तरुकंद । जावै ० ॥ जितचंद्र पद  
गुण धरीयै । बरियै परम आनंद ॥ १ ॥ जावै ० ॥ मतिनाण १ श्रुत २  
पुनरुवधि ३ । मनपर्यव ४ जाण ॥ जावै ० ॥ लोका लोक जाव प्रकाश ।  
वर केवल नाण ५ ॥ जावै ० ॥ २ ॥ पंच ए इकावन ५१ जेदै । क  
ह्यो जिनवर जान ॥ जावै ० ॥ जगजीव जमता ठेदै । ग्यानामृत रसपान ॥  
जावै ० ॥ ३ ॥ विणग्यान कीधी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ जावै ० ॥  
नक्कानक प्रगट ए करीयै । जिम पय जल हंस ॥ जावै ॥ ४ ॥ वरनाण स  
हितसु किरिया । करी फल दातार ॥ जावै ० ॥ ऊवो ग्यान चरण रसीला ।  
बहो नवजल पार ॥ जावै ० ॥ ५ ॥ ग्यानानंद अमृतपीवो । नरतेसर म  
हाराय ॥ जावै ० ॥ तिणसं अमृतपद लीवो । सुरपति गुणगाय ॥ जावै ० ॥  
॥ ६ ॥ सेवीग्यान जयत नरज्ञै । नयेजिन महाराज ॥ जावै ० ॥ सोहैग्यान  
ए त्रिचुवनमें । सज्जपरि सिरताज ॥ जावै ० ॥ ७ ॥ ( काव्य ) उद्व प  
क्काय गुणकरस्त । सयापयासी करणोदुरस्त । मिठत अचाण तमोहरस्त ।  
एमो एमो नाण दिवायरस्त ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्रीज्ञानायनमः) ॥ ८ ॥ ॥ ॥  
इति अष्टमपदे श्रीज्ञानपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ नवमी दर्शन पदपूजा लि ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ( दूहा ) ॥ ॥ दर्शण आश्रय धर्मनो । पढ़ना पट उप  
मान । दर्शण विण नहि चरणविद । उत्तराध्ययने जान ॥ १ ॥ जिणदर  
शण फरस्यो नलो । अंतर मज्जारति मान । अरधपुगल परियटरहै । तसु  
संतारवितान ॥ २ ॥ ॥ ( राग कामोद ) चंपक केतक मालतीए । अइ  
यो मालती ए ॥ ( ए चाल ) ॥ ॥ जिनदरसण मुक्त मनवस्यो ए । ( अइयो

मनवस्यो ए ) । उपजत परम आनंद । जिनदरशन दरशन दीयै । विमलना  
 ण तरुकंद ॥ १ ॥ दरशण मोहरिपु जीतीया ए ॥ ( अइयो ० ) । वर दरशण  
 उलसंत । दरशण घट परगट झुआ । ज्वीयण ज्व नज्जमंत ॥ २ ॥ जिनव  
 रदेव सुगुरु व्रती ए । केवली कथित जिनधर्म । तीनतत्त्व परिणतिरमें । ते  
 दरशण करै शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रभु वचनो परि सदा ए ॥ ( अइयो ० ) ॥ थिर  
 शरदहण धरंत । इण लक्षणें जानीयै । समकितवंत महंत ॥ ४ ॥  
 इग, डग, ति, चौ, शर, दश, विहा ए । ( अइयो ० ) सतसठि ६७ जे  
 द विचार । वलि पररीति समकित जणयो । द्रव्य जाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्यें  
 जिनदरशण कह्योए । जावै समकित सार । द्रव्यत दरशण जावतो । दरशण  
 कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतवलीये । तदपि उत्तर हितकार ।  
 शब्दंजव जिनदरशणें । पायो दरशण सार ॥ ७ ॥ दरशण विण किरिया हता  
 ए । अंकविना जिम बिंडु । वलि हणीयो विण चंद्रिका । वासरमें जिम  
 इंड ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतोए । दरशण पद अनिराम । पद श्रीजि  
 नहरषै धस्योए । वधतै शुभपरिणाम ॥ ९ ॥ ( काव्यं ) अणंतविघ्नाण सुका  
 रणस्स । अणंत संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स । एमो  
 एमो निम्मल दंशणस्स ॥ १० ॥ ( उं झी श्री दर्शनायनमः ) ॥ ११ ॥ ❀  
 इति नवमपदे श्रीदर्शनपूजा ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ (१०) विनयपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ विनय जुवन रंजन करै । विनयै जस विसतार ।  
 विनय जीउ नूषित करै । विनयै जय जय कार ॥ १ ॥ विनयमूल जिनधम्म  
 नो । विनय ग्यान तरु कंद । विनय सकलगुण सेहरो । जय जय विनय  
 सज्जंद ॥ २ ॥ ( राग सामेरी ) पूजोरीमाई जिनवर ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
 ध्यावोरीमाई विनय दशमपद ध्यावै । पंच जेद, दश विध, तेरस वि  
 ध । वावन जेद गणेशै ॥ ध्या० ॥ वासठ जेद कल्या आगममें । विन  
 यतणा सुविसेसै ॥ १ ॥ ध्या० ॥ तीर्थकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ सं  
 घा ५ । किरिया ६ धर्म ७ वरनांणा ८ ॥ ध्या० ॥ नांणी ए आचारिज  
 १० मुनिधविरा ११ । पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ १४ ॥ ध्या० ॥  
 ए अरिहादिक तेरसपदनो । विनयकरै जेजावै ॥ ध्या० ॥ ते तीर्थकरपद अ

नुन्नविने । अमृतपद सुखपावै ॥ ३ ॥ ध्या० ॥ जिमकांचनमें मृडगुण ला  
 जै । नदीय कालिमा पावै । ध्या० ॥ तिणए सकल धातुमें उत्तम । नाम क  
 ह्याण कहवै ॥ ४ ॥ ध्या० ॥ तिमविनयीमें ठै मृडतागुण । कुमति क  
 विनता नासै ॥ ध्या० ॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलीनता । जायै विनयगुण जा  
 सै ॥ ५ ॥ ध्या० ॥ दोयसहस अरु अधिक चिज्जुत्तर । देववंदन निरधारो ॥  
 ध्या० ॥ गुरुवंदन विधि चारसै वाणुं । जेदकरी उरधारो ॥ ६ ॥ ध्या० ॥  
 तीर्थकरादिकनौ मनरंगै । विनय चरण शुभध्यायो । धननामा नवि नमि जि  
 नहरै । तीर्थकर पद पायो ॥ ७ ॥ ध्यावो ॥ ( काव्य ) आणंदिया से  
 स जगज्जणस्त । कुंदिङ्ग पादा मलता चणस्त । सुवम्भ जुत्तस्त दयासय  
 स्त । एमो एमो श्रीविणयालयस्त ॥ ८ ॥ ( उं ह्रीं श्री विनयायनमः ) ॥ १० ॥  
 इति दशमपदे श्रीविनयपूजा ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (११) चारित्र पदपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ ॥ इग्यारम पद नितनमुं । देश सरव चारित्र ।  
 पंक मलिनता दूरकरि । चेतन करै पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करै ।  
 रंकथकी सुराय । तीन जगतपति पद दीयै । जसु सुर नर गुणगाय ॥ २ ॥  
 ( राग सारंग ) वावना चंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) ॥ चरण शरण  
 मुऊ मन हस्यो । सुखकरण हरण घन पापए । ( हां होरे वाला ) । एह चरण  
 जलधर हरे । अग्यान तरुण तर तापए ॥ १ ॥ हां ॥ आठ कपाय निवा  
 रतां । देशविरति प्रगट ज्वै खासए ॥ हां होरे ॥ बार कपाय निवारीया । सम  
 विरतिलदे गुणवासए ॥ २ ॥ हां ॥ इगवासर सेव्यो थको । शुभ सरवसं  
 वर चारित्रए ॥ हां ॥ वाला ॥ परमानंद घन पददीये । सुरलोक जनित सुख  
 चित्रए ॥ हां ॥ वाला ॥ नव नय तरुण ठेदिवा । एसंयम निशित कुठार  
 ए ॥ हां ॥ वाला ॥ ग्यान परंपर करणठै । अमृतपदनो हितकारए ॥ ४ ॥  
 हां ॥ वाला ॥ चरण अनंतर करण ठे । निरवाण तणो निरधारए ॥ हां ॥  
 वाला ॥ सरवविरति सुखचरणसैं । पामें अरिहंत पदसारए ॥ ५ ॥ हां ॥ वा  
 ला ॥ वरस चरण परजायमें । अनुत्तरसुख अतिक्रम होयए ॥ ६ ॥ हां ॥  
 वाला ॥ सतरनेद चारित्रना । कहीया जिनआगम जोयए ॥ हां ॥ वाला ॥  
 देशप्री सम संयम विषै । उज्जलता अनंतगुण यायए ॥ ७ ॥ हां ॥ वाला ॥

अरुणदेव सेवी चरणनै । जये जगगुरु जिन महारायण ॥ हां ० ७ ॥ (काव्यं)  
कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महोदयानंद लयाजलस्स । विजाण पंकेरुह  
काणणस्स । एमोचरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री चारित्रायनमः  
११ ॥ इति एकादशपदे श्री चारित्र पूजा ११ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ (१२) ब्रह्मचर्य पद पूजा लि० ॥❀॥

॥❀॥ दूहा ॥❀॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी । कामकलश अवधार ।  
ब्रह्मचर्य इणसम कह्यो । कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिषीयां रज  
निकर । सुरगणमै सुरराय । तिम सज्जवत शिर सेहरो । ब्रह्मचारज कहिवा  
य ॥ १ ॥ ( राग ख्याल ) नला प्रभुगुण वालाहो ( ए चालमैं ) ॥❀॥ नव  
जये हरणा, सिवसुख करणा, सदा नजोब्रह्मचारा (मैंवारी जानें) सदानजो  
हो ॥ नव० ॥ शीलबिबुध तरु पालन करिवा । कहि जिनवर नववाराहो ।  
दिव्योदारिक करण करावण । अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ १ ॥ नव०  
॥ त्रिकरण जोगै ए परिहरीयै । नवीयै नेद अढाराहो ॥ नव० ॥ क  
नक कोमिनो दानदीयै नित । कनकचैत्य करताराहो ॥ न० ॥ २ ॥ एह  
थी ब्रह्मचारज धारकनो । फल अगणित अवधाराहो ॥ न० ॥ सहस चौ  
रासी श्रमणदानफल । ब्रह्मव्रत फल समसाराहो ॥ न० ॥ ३ ॥ विजयसेठ वि  
जयासेठानी । ननयपद्म ब्रह्मधाराहो ॥ न० ॥ जये सुदर्शन सेठ शीलसे  
मुगतिबधू नरताराहो ॥ न० ॥ ४ ॥ सहस अढार शीलंग रथधारा । धारिकरै  
निसताराहो ॥ न० ॥ सिंहादिक वसुनय तरु नंजन । कुंजर मद मतवारा  
हो ॥ ४ ॥ न० ॥ कलहकारि नारदरिषि सिरिषे । तस्या नवजलधि अपारा  
हो ॥ न० ॥ पञ्चक्खाण विरति नहि एहमैं ॥ ए ब्रह्मव्रत उपगाराहो । न०  
॥ ५ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नखर । धरीय नगति हितकाराहो ॥ न० ॥  
ब्रह्मचारज व्रत धर नखरके । प्रणमैं चरण उदाराहो ॥ न० ॥ ६ ॥ दशम  
अंगि नणियो नखर्मा । नरपति गुण आधाराराहो ॥ न० ॥ ब्रह्मचारिज व्रत पा  
लि लखोपद । जिनहरषै जयकाराहो ॥ न० ॥ ७ ॥ ( काव्यं ) सग्गापव  
ग्गाग्ग सुहप्पयस्स । सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स । सच्चवयानूसण नूसणस्स  
एमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ८ ॥ ( ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्यायनमः ) ॥ १२ ॥  
इति द्वादशपदे श्री ब्रह्मचर्य पूजा १२ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ॐ ॥ अथ (१३) किरियापद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) ॥ ॐ ॥ करम निरजरा हेतुहै । प्रवर क्रिया गुणखाण  
जिनशासननी स्थिति रही । किरिया रूपै जाण ॥ १ ॥ जुवनमांदि किरियाम  
ही । सकलशुद्ध विवहार । प्रवरनाण दसराण तणो । शुधकिरिया शिणगार  
॥ २ ॥ (राग मालवी गौमी) ॥ सव अरतिमथन मुदारधूप (ए चालमें)  
शुजध्यान किरिया हृदय धरिने । धर्म सुकल नर धारे । आर्त रोदनी हेतु  
किरिया । अशुज पणवीस वारे ॥ २ ॥ शु० ॥ ग्यानवंत अशख नटहै । कि  
या शस्त्र वतंसरे । सुजटनाणी क्रियाशस्त्रे । करयक्रम अरिधंसरे ॥ २ ॥ शु० ॥  
ग्यानसेती वदै शिव यदि । तेरमें गुणठाणरे । एकनाणें तद जिणेंसर । कि  
मुनलहै निरवाणरे ॥ ३ ॥ शु० ॥ जिनप शैलेशी करण करि । चवदमें गुण  
ठाणरे । सरवसंवर चरण करणें । लहै पद निरवाणरे ॥ ४ ॥ शु० ॥ ए अ  
नंतर अमृतकारण । कसो जिनवर ज्ञाणरे । सरव संवर चरण किरिया । न  
शिव इणविनु जाणरे ॥ ५ ॥ शु० ॥ एकनाणें इक क्रियामें । नशिव वितरण  
शक्तिरे । कहै जिनवर उन्नययोगै । लहै नविजन मुक्तिरे ॥ ६ ॥ शु० ॥ गर  
लमिश्रित सरस जोजन । अशुज परिणत धारे । अमृतसंयुत तेहजोजन  
रुचिर परिणति काररे ॥ ७ ॥ शु० ॥ ग्यानसहिता तेमकिरिया । करिकरै नि  
सतारे । ग्यानविन किरियानदीपै । मनोमत फलसारे ॥ ८ ॥ शु० ॥ ग्या  
नपरिणति रमी किरिया । तेह किरिया सारे । जयो हरिवाहन जिनेसर ।  
सुद्ध किरिया धारे ॥ (काव्य) विशुद्ध सक्षाण विज्ञानस्स । सुलद्धि संप  
त्ति सुपोषणस्स । एमो सदाणंत गुणप्पदस्स । एमोणमो सुद्धक्रिया पदस्स ।  
॥ १० ॥ (नै ज्ञी श्री क्रियायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति त्रयोदशपदे श्री क्रिया पूजा ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (१४) तपपद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) ॥ ॐ ॥ शमतारस युत तप रुचिर । जणियो जिन  
जगज्ज्ञान । शिव सुरसुख चंदन फलद । नंदन विपिन समान ॥ १ ॥ स  
धन करम कानन दहन । करन विमल तपज्ञान । विपिन धूमकेतन समो ।  
जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥ (राग कल्याण) तेरी पूजावनी हे रसमें ।  
(ए चाल) ॥ मेरीलगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशलए ।



डरित निकाचित हरणें ॥ १ ॥ मेरी ० ॥ जैसें चक्रवाककी अरुणें । चकोरकी  
 हिमकर किरणें ॥ मेरी ० ॥ जैसें गणधरकी जिनचरणें । चादककी जलधरणें ॥ २ ॥  
 मे ० ॥ जिनवर पिण तदन्नव शिवजाणें । त्रिण चउ नाण सुकरणें ॥ मे ० ॥  
 तदपि सुकोमल करण चरणें । ठवय कठिन तप करणें ॥ ३ ॥ मे ० ॥ क  
 पटसहित तप चरण धरणें । वांछित फल नवितरणें ॥ मे ० ॥ नितए द  
 न रहित तपपदके । सुरपति गणगुण वरणें ॥ ४ ॥ मे ० ॥ पीठ महापी  
 ठ मुनि मल्लीजिन । पूरव नव तप सरणें ॥ मे ० ॥ रहीया तदपि कपट  
 नवि ठंड्यो । नये स्त्री गोत्रा चरणें ॥ ५ ॥ मे ० ॥ दृढप्रहारि पांशुव घन  
 करमी । ठंड्या करमा वरणें । तपसैं शोजलही त्रिजुवनमें । केवल कमला  
 नरणें ॥ ६ ॥ मे ० ॥ लाख इग्यारह असीहजारा । पंचसय शरदिन खिरणें ।  
 मासखमण करि नंदन मुनिवर । पांशुयो फल शिव धरणें ॥ ७ ॥ मे ० ॥ त  
 पकरीयो गुणखण संवत्सर । खंधक समता दरणें । चवदसहस मुनिमें क  
 श्यो अधिको । धनो तप आचरणें ॥ ८ ॥ मे ० ॥ बाहिर ज्यंतर जेदै एत  
 प । वारजेद अधिकरणें । वसिनैं कनककेतु पांशुयोपद । जिनहरषै नवतर  
 णें ॥ ९ ॥ ( काव्यं ) लक्ष्मी सरोजा वलिता वणस्स । सरूव संलग्ग सुपा  
 वणस्स । अमंगला नोकुह डुहवस्स । नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥  
 ( ॐ ह्रीं श्रीतपसे नमः ) ॥ १४ ॥ इति श्रीपतपूजा ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१५) गौतम गणधर पदपूजा लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ गौतमगणधर पनरमें पदसेवो सुप्रसन्न । व  
 लि सज्ज जिन गणधर नमो । चवदैसै वावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस  
 करै । दानहरै डरितारि । मन वांछित सज्ज सुख दीयै । दान धरम हितकारि  
 ॥ २ ॥ ( राग सौरठ ) ॥ मैंतेरी प्रीति पिठानीहो प्रजुमें ( ए चाल ) पनरम  
 पद गुणगाना हो नवी । पनरमपद गुणगानाहो ॥ आं ० ॥ जावधरी करीयै  
 मनरंगै । परम सुपात्रै दानाहो नवी ॥ पनर ० ॥ १ ॥ पात्र कक्षा द्रव्य  
 जाव डजेदै । द्रव्य लहून ए जाना हो नवी । पन ० ॥ सर्वोत्तम उत्तम  
 ऊवै जाजन । रतन कनक रूपाना हो नवी ॥ २ ॥ पनर ० ॥ मध्यमपात्र  
 कहीजै एहवा । ताम्रधातु निपजाना हो नवी ॥ पनर ० ॥ पात्र लोहादिक अ  
 पर जातिना । तैह जघन्य कहाना हो नवी ॥ पन ० ॥ ३ ॥ जावपात्रनो

लहने कहीयै । सुनीयै सुगुन संघाना हो जवी ॥ पन० ॥ पंचम चरण धरै  
 वलिवरतै । कीणमोह गुणगाना हो जवी ॥ पन० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते  
 सर्वोत्तम । पात्र कथा जिनजाना हो जवी ॥ प० ॥ प्रवरनाण किरियाधर सु  
 निवर । लाजालाज समांना हो जवी ॥ प० ॥ ५ ॥ ते कांचन जाजन सम  
 कहीया । जवजल तारन यांना हो जवी ॥ पन० ॥ सुधमेन चांदशब्रतं दर  
 शनधर । तारपात्र सम जाना हो जवी ॥ पन० ॥ ६ ॥ सुध संमकित धर  
 श्रेणिक परमुख । रक्षा अविरत गुनगाना हो जवी ॥ प० ॥ ताम्रपात्र सम  
 एहने कहीयै । जवी गुण मणि खाना हो जवी ॥ पन० ॥ ७ ॥ अपर सकल  
 जन मिथ्यादृष्टी । लोहादिपात्र गिनाना हो जवी ॥ पन० ॥ ८ ॥ जिनशासन  
 रंग रंगाना । वाचंयम सुप्रमाता हो जवी ॥ पन० ॥ ९ ॥ एहने दानदीये शि  
 व लहीयै । एह सुपात्र पहिचाना हो जवी ॥ पन० ॥ पंचदान, दसदान, नि  
 करमै । अन्नय सुपात्र सहिराना हो जवी ॥ पन० ॥ १० ॥ नरवाहन सुजपात्र  
 दानतै । जये जिनहरप निधाना हो जवी ॥ पन० ॥ सालिजद्र वलि सुरमुख  
 लहीयो । सुरनर करय दखाना हो जवी ॥ पन० ॥ ११ ॥ (काव्य) अ  
 णंत विज्ञाण विजाकरस्स । डवालसंगी कमलाकरस्स । सुलक्ष्वासा जरगो  
 यमस्स । एमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ १२ ॥ (ॐ ह्रीं श्री गौतमाय नमः)  
 ॥ १५ ॥ इति पंचदशपदे सुपात्रदानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १५ ॥ ॥  
 ॥ ॥ अथ (१६) वेयावच्च पदपूजा लि० ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ ॥ सोलमपदमें जानीये । वेयावच्चविधान । अ  
 खिल विमलंगुण मणितणो । सोहै प्रवरनिधान ॥ १ ॥ जिन, सूरि, पाठक, मु  
 नी । बालक, वृद्ध, गिलांन, । तपसि, चैत्य, संघनो, करौ । वेयावच्च प्रधान  
 ॥ २ ॥ (रांग) बालोहारो कव मिलसी मन मेलू (ए चाल) सेवो जाई  
 सोलमपद सुखकारी । श्रीजिनचंद्र प्रमुख दश पद नो । करन वेयावच्च  
 जारी ॥ सेवो ० ॥ श्रीतीर्थकर त्रिजुवन शंकर । अवर केवली हारी । मन  
 पर्यव धर अवधिनाण धर । चन्द्र पूरव श्रुतधारी ॥ ३ ॥ सेवो ० ॥ दशपू  
 री अतकष्ट चरणधर । लब्धिवत अणगारी । एजिन कहीयै इनवंदनतै ।  
 जविजुवै जिनअवतारी ॥ ३ ॥ जिनमंदिर विंवर करण जरावै । पूजकरै म  
 न्हारी । वेयावच्चकही ए जिनकी । करियै जवजल तारी ॥ ४ ॥ से० ॥

आचारज परमुख नवपदको । बेयावच्च विजितारी । जगतिपूर्व वस्त्रौषध  
 अन्नजल । देवै गुण विस्तारी ॥ ५ ॥ से० ॥ पंचसय मुनिनी करीय बेयावच्च  
 पूर्वजन्म व्रतचारी । जगत वाज्रबल चक्रीपदनुज । बललक्ष्यो वरी शिवना  
 री ॥ ६ ॥ से० ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी । करीय बेयावच्च सारी ।  
 तिणसैं सरगलोकमें ड्यकी । जईय प्रसंसाजारी ॥ से० ॥ इत्यादिक सो  
 लमपद उधरै । बज्रलज्जव्य क्रमजारी । तिणसैं इणबेयावच्च पदकी । वारी  
 जाउं वारहजारी ॥ ७ ॥ से० ॥ नृपजीमूत केतु सोलमपद । सेवीजयेडुख  
 वारी । श्रीजिनहरष धरी हरिवंदत । शरणागत निसतारी ॥ ८ ॥ (काव्यं)  
 मणुणसवा तिसयासयाणं । सुरासुराधीशर बंदियाणं । रवीडुबिंवा मलसगु  
 णाणं । दयाधणाणं हि नमोजिणाणं ॥ १० ॥ ( उं झी श्रीजिनेज्यो नमः ) ॥  
 ॥ १६ ॥ ❀ ॥ इति षोडशपदे श्रीवैयावृत्यपूजा ॥ १६ ॥ ❀ ॥

### ❀ ॥ अथ (१७) समाधिपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ सतरमपदमें सेवीयै । सज्ज सुखकरण समाधि  
 जिण सेवनतैं जविकनो । गमें व्याधि अरुआधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पथि  
 विचरतां । वर पाथेय समान । ए समाधिपद जानीयै । सुरमणि किय हैरान  
 ॥ २ ॥ वाजै तेराबिठुआ (इस कैरवारी चालमें) ॥ ❀ ॥ मेरोरे समाधि चरण  
 चित वसीयो ॥ चर० ॥ तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो ॥ मे० ॥ सकल  
 जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुजव रंगै अतिह विकसीयो ॥ १ ॥ मे० ॥  
 द्रव्यत जावत डुविध समाधि । सुरतरु मांनुं नित जुवन विलसीयो । मे० ॥  
 अशन वसन सलिलादिक जक्ती । करय संघनी करुणारसीयो ॥ मे० ॥ १॥  
 द्रव्यसमाधि प्रथम एसुनियै । कस्यो जिन लोकालोक दरसीयो ॥ मे० ॥  
 सारण वारण चोयण प्रमुखै । पतित सुथिरकरै धर्ममें हरसीयो ॥ मे० ॥ ३ ॥  
 जावसमाधि डुतीयए कहीयै । जोकरै सो जिनचरण फरसीयो ॥ मे० ॥ सकल  
 संघकों जो उपजावत । डुविध समाधि डुरित तसुनसीयो ॥ ४ ॥ मे० ॥ सु  
 मति पंच त्रिण गुपति धरैनित । सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो ॥ मे० ॥  
 जगतजंतु अघतपति हरणकुं । अनुजव अश्रित धार वरसीयो ॥ ५ ॥ सुक  
 ल अनिल करमेंधत दाहत । जिणसैं परगुण परिणति खिसीयो ॥ मे० ॥ ६ ॥  
 मुनि तरणि तेज सम दीपत । अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ ६ ॥ मे० ॥

इणपदमें ऐसे मुनिजनके । संमरणते ऊय जग अवतसीयो ॥ मे० ॥ एवं  
दसेवी नृपतिपुरंदर । जये जगपति जिनहर्ष उल्लसीयो ॥ ७ ॥ (काव्यं)  
सर्विंदिया पार विकार दारी । अकारण सेस जणोवगोरी । महाजवातक ग  
णापहारी । जयोसदा सुखचरित धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्योनमः  
॥ १॥ अथ (१८) अपूर्व श्रुतग्रहण पदपूजा लि० ॥ १॥

॥ १॥ (दूहा) ॥ १॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पदमां  
हि । इणपद सेवक जनतणा । सज्ज संकट जय जांहि ॥ १॥ जैसी कुमति  
विशुद्धता । घोर तपैकरि होय । तत् अनंत गुणि शुद्धता । सुग्यानीकी जोय  
॥ २ ॥ ॥ १॥ दिलदार वार गवरू । राखुरे धुंधटदा पटमें (ए. चाल) ॥ १॥  
जिनचंद्र ग्यान तेरा । होजीतेरे विकट जवजटने (आं०) ॥ सदपूर्व ग्यान  
धरणा । बितरै जिनेंद्र चरणा । करि सव कर्म हरणा ॥ २ ॥ जीतेणः (जि  
नचंद्र०) ॥ जगमें महोपकारी । जवसिंधु वास्तारी । कुमतां धता विदारी ॥ २ ॥  
जी० ॥ जि० ॥ सज्जनावनो प्रकासी । परमस्वरूप चासी । समकित स  
अवासी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जि० ॥ विणुहेतु विश्वबंधू । गुणरत्न राशिसिंधू ।  
शमता पीयूष अंधू ॥ ४ ॥ जीतेणः ॥ जिन० ॥ स्यादाद पक्षगाजै । नयसप्तसै  
विराजै । एकांतपक्ष जाजै ॥ ५ ॥ जी० ॥ जि० ॥ लहि तीर्थ पावतारा । इणतें  
जिनेंद्रसारा । किया जव्यके उवारा ॥ ६ ॥ जी० ॥ जि० ॥ पद सेविण नरिंदा ।  
जये सागराद्रि चंदा । जिनहर्षके समंदा ॥ ७ ॥ जी० ॥ जि० ॥ (काव्यं)  
सुखकिया मंमल मंमनस्त । संदेह संदोह बिखंमनस्त । मुत्ती उगदान सु  
कारणस्त । नमो ही नाणस्त जयो धणस्त ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय  
नमः ॥ १८ ॥ ॥ इति श्रीअपूर्वश्रुत ग्रहणरूपा ज्ञानपूजा ॥ १८ ॥ ॥ १॥

॥ १॥ अथ (१९) श्रुतपद पूजा लि० ॥ १॥

॥ १॥ (दूहा) ॥ १॥ पाप ताप संहरण हरि । चंदन सम श्रुतसार ।  
तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥ १॥ इगुनवीस पदमें जजज ।  
जिनवर श्रुतनी जक्ति । इन पद बंदनसैं लहे । अमल नाण युत मुक्ति ।  
॥ २ ॥ ( राग ) ब्रजवासी कांन ते मोरी गागर दोरीरे (अपर) आजआयोरे  
उवाह । जीवमानाच जिणंद आगै ( इस चालमें ) ॥ १॥ जविजन श्रुत

नक्ति चरणशरण नर धरीवैरे । ए श्रुत नक्ति सुमंगल माल । विमल के  
 वल कमला वरमाल ॥ नविजन ० ॥ १ ॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय । प्र  
 गट करण एश्रुत मनजाय ॥ नवि ० ॥ अतुल अनंत किरण समवाय ।  
 धरण तरणिगण सम कहिवाय ॥ न ० ॥ २ ॥ एश्रुत कुमति युवतिनै संग ।  
 अगणित रमणितणो करैजंग ॥ नवि ० ॥ अरथै ज्ञाप्यो श्री जिनराज । सूत्रै  
 गणधर मुनि सिरताज ॥ नवि ० ॥ ३ ॥ ए श्रुतसागर अगमअपार । अनंत  
 अमल्लगुण रयणाधार ॥ नवि ० ॥ नव नय जलनिधि तरण जिहाज । निसु  
 णि मगननई सकल समाज ॥ न ० ॥ ४ ॥ नवकोटी लगि तपकरि जीव ।  
 अग्यानीकरै जितनी सदीव ॥ नवि ० ॥ करम निरजरा तितनी होय । झा  
 नीकै इकखिणमें जोय ॥ नवि ० ॥ ५ ॥ एक सहस कोमि १ ०० ०००००००००,  
 ठससय कोमि ६ ०००००००००० । चतुरस्तीस कोमि ३४००००००००,  
 अक्षर जोमि ॥ नवि ० ॥ अमसठ लाखरु ६८०००००० सात हजार ७०००  
 । अमसय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ ( १६०३४६८७  
 ८८० ) नवि ० ॥ ६ ॥ इतने वरणसैं इकपद होय । एक श्लोकका गणितए  
 जोय ॥ नवि ० ॥ इकपदको परिमाण एजाण । इणपदसैं आगम परिमाण ॥  
 नवि ० ॥ ७ ॥ तीन कोमि ३०००००००० अरु अडसठ लाख ६८००००००  
 सहस वयालीस ४२००० एपदनाख ॥ न ० ॥ इतने पदसैं अंग इग्या  
 र । केरी गणना नवि चितधार ॥ न ० ॥ ८ ॥ बारम दृष्टिवादको मान ।  
 असंख्यात पदको पहिचान ॥ न ० ॥ इणको चनुदपूरव इकदेश । इसको  
 पारलक्ष्यो है गणेश ॥ न ० ॥ ९ ॥ एह डुवालस अंग नुदार । एहनी जईयै नित  
 वलीहार ॥ न ० ॥ एहनी द्रव्य नाव बज्जुनक्ति । करीयै धरीयै जिनपद युक्ति  
 ॥ नवि ० ॥ १० ॥ रत्नचूम नृप सुखमाधार । जिन श्रुतनक्ति करी हितकार  
 ॥ न ० ॥ नये जिनहरष परमपददाय । जिनके सुर नर पति गुनगाय ॥ न ० ॥  
 ॥ ११ ॥ ( काव्यं ) अन्नाणवल्ली वन वारणस्स । सुबोहि बीजांकुर कारण  
 स्स । अणंत संसुद्ध गुणालयस्स । एमो दयामंदिर सत्तुयस्स ॥ १२ ॥ ( उं  
 ङ्गी श्री श्रुतायनमः ॥ इति श्री श्रुतपूजा ॥ १ए ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २० तीर्थप्रप्तावन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहो ) ॥ प्रावचनी १, अरु धमकथी २। वादि ३, निमत्ती

४ जाण । तपसी ५, विद्या ६, सिद्ध ७, बलि । कवी ८, एहमुनित्राण ॥१॥  
 ज्ञावतीर्थ प्रज्ञूकक्षा । प्रज्ञावीक एंअष्ट । तीर्थप्रज्ञावन जेकरै । ते फललहै  
 विशिष्ट ॥ १ ॥ ॥ ( राग धन्यासिरी ) तेजतरणि मुखराजै ( ए चाल ) ॥  
 पर ज्ञावन जयकारा । ( अहो जयकारा ) तीरथ परज्ञावन जयकारा ॥ जिन  
 सेंनवसागर जलतरीयै । ते तीरथ गुनधारा । तीर ० ॥१॥ जिनके गणधर ती  
 रथ कह्यै । बलि सज्ज संघ सुखकारा । एह महातीरथ पहिचानो । वंदि  
 लहो जवपारा ॥ तीर ० ॥ २ ॥ अमसठ लौकिक तीरथ तजि करि ।  
 नज लोकोत्तर सारा । द्रव्यज्ञाव दोयजेद लोकोत्तर । धिर जंगम जयहारा  
 तीरथ ० ॥ ३ ॥ पुंमरीक परमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा । एह वर तीर  
 थ थावर कह्यै । दीगं डुरित विदारा ॥ तीर ० ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख  
 पीशजिन । विहरमान जवतारा । दोयकोमि केवलि विचरंतां । जंगम ती  
 र्थ उदारा ॥ तीर ० ॥ ५ ॥ संघ चतुर विध जंगम तीरथ । जिनशासन उ  
 जीयारा । वरअनेत गुण जूपण जूपित । जिनकूं नमत जिनसारा ॥ ती ० ॥  
 ॥ ६ ॥ ए तीरथ परज्ञावना करीयै । शुचिज्ञावन आधारा । शिवकज जल  
 विंशति तम पदकी । जाउं प्रतिदिन बलिहारा ॥ तीर ० ॥ ७ ॥ ए तीरथ  
 परज्ञावना करतो । मेरुप्रज्ञू अतिकारा । पद जिनहरप लहीनै तरीया । न  
 वनय जलधि अपारा ॥ ८ ॥ तीर ० ॥ ॥ ( काव्य ) महा महा नंद  
 पद प्रदाय । जगत्रयाधीश्वर वंदिताय । जिनश्रुतज्ञान पयोनदाय । नमोस्तु  
 तीर्थाय शुचंददाय ॥ ९ ॥ ( उं झी श्री तीर्थायनमः ) ॥ ॥ इती ॥ ॥

॥ ॥ अथ विंशति पद स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ ( गरवो ) सुणिचतुर सुजाण परनारीसुं प्रीतमी ० ( ए चाल )  
 ॥ ॥ चितहरपधरी, अनुजवरंगै, वीत परमपद बंदीयै । शिव रमणि  
 वरी, फेवल सखीय सहाय, करी चिरनंदीयै ( आं ० ) एवीशचरण अशरण  
 शरणा । चिरसंचित डुरित तिमिर हरणा । नित चित एपद समरण धर  
 णा । चि ० ॥१॥ एपद समरण जिण चितधरीया । तरीया तरसैं तरैं जवद  
 रीया । सदनंत नविक सज्ज नयहरीया ॥ चि ० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर म  
 नुदारा । वरणन तरणीयै वज्रहारा । इंद्रादिक सुरनलसो पारा ॥ चि ० ॥ ३ ॥  
 एपद अतिशय महिमाधारा । आश्रितपद कमला जरतारा । जिनचंद्रा नंद

घनपद कारा ॥ चित० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदकै शिवकरणा । चंद्रामल  
गुण विंशति करणा । ऊइज्यो प्रभुअरजए अवधरणा ॥ चित० ॥ ५ ॥ ॥ इति श्री समस्त विंशति पदस्तुति ॥ २१ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ कलश ॥ ॥

॥ ॥ एवीशस्थानक ज्वननंदन अघ निकंदन जानीयै । विबुधेंद्र चंद्र  
नरेंद्र वंदित पद जिनेंद्र बखानीयै । ए वीशपद जव जलधि तारन तर  
ए गुन पहिचानीयै । इमजानि जविजन कुशलकारन वीश पद ऊ  
आनीयै ॥ १ ॥ इहवरस चंद्र दिनेंद्र हरिमुख विधि नयन बिति मिति  
धरू । तिह मासजाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रविवासरू । बंगाल ज  
नपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरू । सऊ नगर सोजित अजीम  
गंजपुर दुतीय बालूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतर गणेशर विजित सुरगुरु विमल  
गुण गिरिमाधरा । गुणजवन जविजन नलिन कानन नित विकासन दिनकरा  
मुनिचंद्र श्री जिनलान्न सूरिंद सुगुरु महीबल युगवरा । सकलेंद्र बंध जिनें  
द्र शासन मंमना नित हितधरा ॥ ३ ॥ तसुपट नऊल शिखरि गणवर नदय  
गिरि वासरकरा । योगींद्र वंद नरेंद्र वंदित चरण पंकज गणधरा । आचार  
पंच ठत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा । युगप्रवर श्री जिनचंद्रसूरी गु  
रु सकल सूरीसरा ॥ ४ ॥ तसुचरण कमलज युगलसेवन अहनिशि मधुकरता  
धरी । बलि सुगुरुपद अरविंद युगनी रुपा नित चित आदरी । गणधार  
श्री जिनहरषसूरी हरष धरी वन अघहरी । या वीशपदकी विविध पूजन वि  
धितणी रचनाकरी ॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुतिमयः पूजा विधि ॥

### ॥ ॥ अथ वीशस्थानककी आरती लि० ॥ ॥

॥ ॥ जीया चतुर सुजाण नवपदके गुन गायरे ( एचाल ) ॥ ॥  
पियाविंशतिस्थान मंगल आरती गायरे ( आं० ) सुमतिप्रिया कहै चेतन पति  
को । निसुण वचन मनजायरे ॥ पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परणति तुमचहीयै  
तिनको एह उपायरे ॥ पि० ) ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक । सा  
धु सकल समुदायरे ॥ पि० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विंशतिपद समरण । जवजय  
हरण विधायरे ॥ पि० ॥ एह आरती डरति वारती । अनुपम सुरसुखदा

ये॥॥ पि० ॥ ४ ॥ जैसें जगतै करत आरती । सकल सुरा सुरराये॥  
पि० ॥ तैसें जवितुमे करत आरती । एउद गुण चितलाये॥ पि० ॥ ५ ॥  
पंच प्रदीप सैं करय आरती । जेनित चित उल्लासाये ॥ पि० ॥ तेखही पं  
च चिदा नंद घनता ॥ अचल अमर पद पाये ॥ पि० ॥ ६ ॥ पंचप्रदीप  
अखंति ज्योतै । डुरमती तिमिर विलाये ॥ पि० ॥ एह आरती तुरत तारती ।  
ज्वजल निपतत धाये ॥ पि० ॥ ७ ॥ पद जिनहरपतणी एकरणी । मनं  
हरणी कहिवाये ॥ पिया० ॥ चंद्र विमल शिवसिद्धिनिधि धरणी । वरणी  
किणविधा जाये ॥ पि० ॥ ८ ॥ इति वीश थानक आरती संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ॥ अथ स्रग्धरा ठंद काव्य तीन ॥ ॥

॥ ॥ योजीमुतां जनोधां, जन गिरिसदृशां, काशिकेतु प्रमुक्तो । दुर्वार  
स्फार पंको कट तर समर, वातता गम्परूपा । अव्यावाधा व्ययो द्यत् पर  
म पद दशां सदृशां योविजतं । योनित्यं क्षाधिकार्या क्षय विमल लसतै  
लपूतिं दधानः ॥ १ ॥ स्वादादौ हामध्यामो ठलद तुलकल प्रज्वल ज्ञात  
धेदौ । ज्वाला माला कुलांगा जनित ज्वमहा रण्य जातंक संगः । यत्रा  
नेके पतंगाः कुमत मिमतयो जीजनलष्टरंगा । जस्मी जावं स्वकीयं सकल  
जयहरः शंकर प्राणजाजां ॥ २ ॥ प्रवृत्तां नंतचंच त्किरण गणलसः त्सप्त  
संतिप्रतापो । लोका लोकाव लोका रखलित विमलतो दयजायत्प्रकाशः ।  
त्रैलोक्या नंदन स्तप्रकृत कुशलरु दंदन श्यामरंद्रै । श्रीवामानंदनोयं जगति  
विजयतां जैनचंद्रः प्रदीपः ॥ ३ ॥ त्रिजिर्विशेषकं ॥ ॥ इति ॥ ॥  
यद्दतीन काव्य आरती कियां पीठे, दोनु हाथ जोडके कहै ॥ ॥

॥ ॥ अथ नंदीश्वरा षट्मदीपांतर्गतं वापंचाशज्जिनप्रासाद  
शाश्वत जिनप्रतिमार्चन विधि लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ (दोधक) ॥ ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण  
जयकार । अश्वसेन नंदन चरण । शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी  
समरणकरी । सकल जीव सुखकार । कहिंशुं नंदीश्वर जगत । पति पूजन  
विसतार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ अखिलदीप सिरताज विराजै । अष्टमनंदी  
श्वर दीप राजै । बलयाकार जगत सुखकारी । निरुपम अतिशय गुण म



णि धारी ॥ ३ ॥ (उल्लाखो) ॥ मणिधारि वावन विमलगिरवर जैनमंदिर  
 युतसदा । शुभ्रनक्तिधर निर्जर पुरंदर निरखिपांमें संपदा । इककोटि शत त्रि  
 ण सठिकोटिय चौरासिलख योजना । इण दीपनो चक्रवाल विष्वंज मान  
 जाणो नोजना ॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ इणदीपै पूरव दक्षिण आसा । पश्चिम  
 उत्तर दिश चउ पासा । चक्र रंजनगिरि सुखमा धारी । चारणसुर विद्याधर  
 चारी ॥ ५ ॥ (उल्लाखो) धरचारि निज डति नर विनिर्जित, सजल जलधर  
 घनघटा । वलि चतुरशीति सहस्रयोजन तुंगता धरतास्फुटा । इणप्रवर  
 अंजन शिखर शिखरें शाश्वता जिनमंदिरा । चउसंख्य सुंदर कनक कल  
 शोपमधरा जग सुखकरा ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ इक इक अंजनगिरि  
 चउपासा । चउपुकरिणी प्रकट प्रकासा । विस्तर इगलख योजनसारा । ता  
 सुमांहि इक इक उदारा ॥ ७ ॥ (उल्लाखो) इक इक उदारा सहस्र चउ  
 सठि योजनोन्नतता कुला । जिनराज मंदिर मंमिता सज्ज चंद्र किरण समु  
 ज्वला । दधिमुख धरा धर दीर्घका प्रति विदिशि दोय दोय रतिकरा । दश  
 सहस्र योजन उन्नता धर उदय करुणा रुणवरा ॥ ८ ॥ (ढाल) ॥ जिनमं  
 दिर युत रतिकर विमला । पूरवदिशि तेरस सज्ज अचला । एहरीतिपर  
 त्रिणदिशि जाणो । इम वावन्न गिरेंद्र वखाणो ॥ ९ ॥ (उल्लाखो) ॥ इव  
 खाण शतयोजन सुदीर्घा वज्रत्तर योजन प्रमा । अतिउन्नता पंचासयोजन  
 विस्तरा जिनगृहसमा । शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा पंचशत धनुरुन्नता ।  
 इणरीति प्रतिप्रासाद प्रतिमा जाणीयें विंवशाश्वता ॥ १० ॥ ❀ ॥

(दोधक) ऋषिज्ञानन चंद्रानना । वारिषेण ब्रधमान । एजाणो शाश्वत  
 सकल । जिनप्रतिमा अग्निधान ॥ ११ ॥ सुरगिरि शिखरै जिनतणो । जिन  
 न्हवणोत्सव सार । करिकै नंदीश्वर जई । हरिगण विबुध उदार ॥ १२ ॥ अनुन्नव  
 रसयुत नक्तिधर । हृदय सरोज मऊार । इणपरि शाश्वत जिनतणी । करइ  
 पूज अतिसार ॥ १३ ॥ पूरवदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जिनराज । अम  
 विध पूजायें सदा । अरची जै हितकाज ॥ १४ ॥ प्रथम पूज जिनराजनी ।  
 विमलजलै नरपूर । करियै न्हवण सदान्वी । होइ सकल दुखदूर ॥ १५ ॥  
 ॥ ❀ ॥ कुंदकिरण किरण शशिकुजलोरे देवा (ए चाल) ॥ ❀ ॥ मिलिकरि  
 सकल सुरासुरांरे वाला । निज सेवक सुरपासैरे । क्षीरजलधि मागध थकी

रे बाला । सिंधुनदी गंगासरे ॥ १ ॥ बलि वरदाम सुतीर्थसरे बाला । विमल सलिल अणावैरे । मणि कनकादि कलस जरीरे बाला । नवधि कुसुम मिलावैरे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सज्ज सुगणारे बाला । शाश्वत जिन न्हवरावैरे । विमल सलिल धाराकरीरे बाला । कुमति तापनं गमावैरे ॥ ३ ॥ इण परि जेजगतै जवीरे बाला । न्हवणकरै जिनअंगैरे । ते सुरवर सुख अनुज वीरे बाला । लहै शिवपद मनरंगैरे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरारे बाला । करइ जिणिंद गुणगानारे । कुशल कुमुद विकसायवारे बाला । प्रभु शिव चंद्र समानारे ॥ ५ ॥ (काव्यं) इरितदाव घना तप वारणं । सकल जाव वि काशन कारणं । जगति नव्य जवोदधि तारणं । जिनगणं सपयाम्य म लैकालै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं परमात्मन्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिन्यः । प्रणत सकल सुरासुरेद्र वितेंद्रेंद्रं विहितचक्तिन्यः । कठिन कर्मशालमाखोन्मूलनवा रणेन्यो । जन्म मृत्यु निवारणकारणेन्यो । नंदीश्वराष्टमचीपगत । पूर्वाजनगिरी शिखरस्थ । सिद्धायतन संमनाय मानेन्यः । श्रीक्षपजानन, चंद्रानन, वारिणेण, वर्धमाना, निधाना षोत्तरैकशत शाश्वतजिनेंद्रेन्यो । जलं ययामहे स्वाहा इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोषक ॥ ❀ ॥ द्वितीय पूज जिनराजकी । करज्ज चक्ति जरसार । वर सुगंध द्रव्ये करी । तरज्ज सिंधु संसार ॥ १ ॥ ( राग जीममल्हार ) मेघव रसैं जरी पुष्पवादल करी ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ चक्तिधरि जवीयजन पूज महा राजकुं । एह वरगंध द्रव्ये सदाई । विमल घनसार चंदन सरस मृगमदा । कुंकुमें कर बिलेपन मुदाई ॥ १ ॥ चक्ति ० ॥ जेजवो सुरजितर गंध द्रव्ये करी । सुरभि तनुकरै जिनराजकेरो । तेहनी चंद्रकर अमल यशवासना सुरजितम करइ सज्जजग घणैरो ॥ २ ॥ चक्ति ० ॥ एमवर सुरजितर द्रव्य सै सुरवरा । अरचकरि जगतपति विंजसारा । परम शुभजावन जावता । गावता । विशद जिनवरगुणा अति अपारा ॥ ३ ॥ च० ॥ सकल सुरगण मिली एमजंपै मुदा । जोसुरा आज जिनराज अरचो । विरति गुण रहि त निजजन्म सफलो कीयो । सुमति संयोग डरमति विगूचो ॥ ४ ॥ च० ॥ इतीय इमपूज करतां हरइ नव्यनो । पाप घनताप आपै अपारा । सरग

निरवाण पुरपंथ प्रकटीकरण । विशद शिवचंद्र करगण उदारा ॥ ५ ॥  
 (काव्यं) मृगमदो ज्ज्वल कुंकुम चंदनै । श्वरतनांतर ताप निकंदनैः । जिन  
 वरानघ तामस चास्करान् । स्वहित कृद्विधयेच समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अर्चं परमात्मनेन्द्र्योऽ नंतानंत ज्ञानशक्तिन्द्र्यः । कठिन कर्मशाल मालोन्मू  
 लनवारणेन्द्र्यो । जन्म जरा मृत्यु निवारण कारणेन्द्र्यो । नंदीश्वरा ष्टमदीपगत  
 पूर्वाजतगिरि शिखरस्थ । सिद्धायतन मंमनाय मानेन्द्र्यः । श्री ऋषिज्ञानन चंद्रा  
 नन, वारिषेण, वर्धमाना, जिधानाष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनैन्द्रेन्द्र्यो । श्रंदनं  
 ययामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति द्वितीया गंध पूजा ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥ ॥

॥ ॥ दोषक ॥ ॥ तृतीयपूज जिनराजनी । विकसित अतिह रसाल  
 सुरभि कुसुमकरी नवियजन । करीयै नक्ति विशाल । १ ( राग जैरवी )  
 पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल) ॥ एह जिनकी पंकहरणी नगती  
 सारी । मिलकरि हरिवर सकल सुरासुर । विकरण इककरि हितकारी ॥ १ ॥  
 (एहजिनकी०) अनुभव रसयुत चित्त नक्तिधरि । पूरव पुण्य उदयनारी ॥  
 एह० ॥ इण विध कुसुम नक्ति जिनवरकी । करइ हरइ धन डरतारी ॥ एह०  
 ॥ १ ॥ मालती नाग पुन्नाग केवमा । दमणक कुंद सुगंधि धारी ॥ एह० ॥  
 मरुक केतकी पद्म मोगरा । कुसुम मालकरि मनुहारी ॥ एह० ॥ जिनवर  
 कंठवै प्रभुआगलि । कुसुम पुंज धरि डःखवारी ॥ एह० ॥ इण विध पुष्प  
 नक्तिकरी नविजन । बरइ सकलजग शिरनारी ॥ ४ ॥ करिकै शुक्ल ध्या  
 न पावकसैं । नरम विषम सम क्रम वारी ॥ एह० ॥ चिदानंद धन शिव  
 चंद्रोपम । पामैं अति गुण विस्तारी ॥ एह० ॥ ( काव्यं ) नव दवानल ताप  
 घनाघनं । कुशल चंदन नंदन काननं । विशद शारद चंद्र समाननं । जि  
 नगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्चं परमात्मन्द्र्यो अनंता० ॥  
 प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री ऋषिज्ञानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना  
 जिधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनैन्द्र्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ ४ धूपपूजा ॥ ॥

॥ ॥ (दोषक) ॥ जगनायक जिनचंदनी । एह चतुर्थी जाण । धूप

पूज करीयें सदा । हरीयें कुमती अनाए ॥ १ ॥ ( राग मालवी गोमती ) ॥  
 सब अरतिमयन सुदारधूप ( ए चाल ) ॥ जग कुशलकारि अघालिहरण ।  
 धूपपूज उदाररे । धूप अनलै कुगति डुखचर । फलद दहत अपाररे ॥ २ ॥ जग  
 सरस चंदन अगर अंबर । मृगमदा घनसाररे । कुंदरुक् वली सेलहारस । करी  
 यें गंधवटि साररे ॥ ३ ॥ जग ॥ रतनमयवरधूप धाणो । धूपचृत कर धाररे  
 सुर पुरंदर पूजकरतां । लहै लाज अपाररे ॥ ४ ॥ जग ॥ धूप परिमल म  
 ह्महै जिम । तेम जुवन मजाररे । धूपपूजा ते नविकनो । गुणसुगंध विचाररे  
 ॥ ५ ॥ जग ॥ नवअंध कूप पतंत उबरत । धूप अरचन धाररे । कहत ग  
 णि शिवचंद पाठक । पूज चतुर्थी साररे ॥ जग ॥ ५ ॥ ( काव्य ) नवसु  
 डस्तर धारधितारकं । विषयसौख्य विकार निवारकं । निरुपमोत्तर मंगलका  
 रकं । जिनगण धृत धूप करायजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अहं परमात्म  
 श्रीकृष्णानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, निधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत  
 जिनंद्रेष्ठ्यो धूपयजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति चतुर्थी धूपपूजा ॥ ४ ॥ ७ ॥

### ॥ ७ ॥ अथ ( ५ ) दीपकपूजा ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ ( दोषक ) ॥ ७ ॥ दीपपूज इह पंचमी । करीयें विविध प्रका  
 र । दीपपूज करतो नविक । दीपै जगतमजार ॥ १ ॥ ( राग कल्याण )  
 तेरी पूजावणी तेरसमें ( ए चाल ) ॥ मेरी लगीय प्रीति प्रनुचरणें ॥ निजगुण  
 परणति करण करावण । सकल लोक सुखकरणें ॥ मेरी ॥ १ ॥ गहिर  
 सिंधु नव निपतित तारण । तरण तरणि गुणधरणें ॥ मेरी ॥ अनंतरूप  
 धर डरगति नयहर । परमज्योति अधिकरणें ॥ २ ॥ मेरी ॥ करुणाधार  
 विमलगुण आगर । निरुपम अशरण शरणें ॥ मेरी ॥ ए जिनचरण दीप  
 पूजनसैं । अरचीजै डुखहरणें ॥ ३ ॥ मेरी ॥ केवल विमल चिदानंद ल  
 हीयै । दीपपूजके करणें ॥ मेरी ॥ रतनदीपसैं करै आरती । हरपित जिन  
 गुण वरणें ॥ ४ ॥ मेरी ॥ ए प्रनुचरण सेव नवि जनकुं । अश्रित पद  
 सुवितरणें ॥ मेरी ॥ कुमति रजनी अग्यानतिमिरहर । वर शिवचंद्र सुकिर  
 णें ॥ मेरी ॥ ५ ॥ ( काव्य ) मदन सिंधुर सिंधुर वैरिण । गुरुकपाय करे  
 णु समीरण । मदधरा धरता बल वैरिण । जिनगण प्रयजे सुप्रदीपकै ॥ ६ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री अहं परमात्मज्यो ॥ प्रणत ॥ कठिन ॥ नंदीश्वर ॥ श्रीकृष्णा

नन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना, त्रिधाना ऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जि  
नैर्द्रेज्यो । दीप यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥❀॥

॥❀॥ (दूहा) ॥ ठी अक्षत अरचना । करियै धरि सुननाव । वरि  
यै सिद्धिवधू परम । अक्षय सुखनोदाव ॥ १ ॥ (राग सारंग) हां होरे देवा  
वावन्नचंदन घसि कुमकुमा ( ए चाल ) ॥ हांहोरेवाला ॥ ए जगदीशर हि  
तकरू । अलवेसर जिनमहाराज ए ( हांहोरेवाला ) अतिगहिरा नव जल  
धि तें । प्रभु तारण तरण जिहाजए ॥ २ ॥ ( हांहोरे० ) नीमकरमकुंजर  
घटा । जंजन मृगराज समानए ( हांहोरे० ) नव्यकमल प्रतिबोधवा । ए  
प्रभु वासर महिरानए ॥ ३ ॥ ( हांहोरे० ) रजतशालि तंडुलमयी । अक्षत  
पूजन अग्रसारए ( हांहोरे० ) ए पूजा जिनचंद्रनी । वांछित सुखनी दातारए  
॥ ४ ॥ ( हांहोरे० ) ठवण जिनंद दरशण अठै । अनुभव रस तरुनो कंदए ।  
( हांहोरे० ) नाव जिणैसर दरशनो । कारण कस्यो सकल जिणंदए ॥ ५ ॥  
हां० ॥ ए पाठक शिवचंद्रनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ हां० ॥ प्रतिभव  
ऊँज्यो एकही । ठी अक्षत पूजा सारए ॥ ५ ॥ ( काव्य ) विजित मं  
दर नूधर धीरतं । निहत सागर राज गंज्जीरतं । प्रजित पातक योध सुवीरतं  
जिनगणं प्रयजे ऽक्षतपूजया ॥ ६ ॥ नै ऊँ श्री अर्जं परमात्मज्योऽनंता०  
प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री कृष्णानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना  
त्रिधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनैर्द्रेज्यो ऽक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥  
इति ठी अक्षत पूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ (७) नैवेद्य पूजा ॥❀॥

॥❀॥ (दूहा) हिव पूजा नैवेद्यनी । सतम अतिहरशाल । करीयें जि  
नवरनी अचल । लहीयें मंगल माल ॥ १ ॥ ( राग ) जिनगुणगानं श्रुत  
अमृतं (एचाल) ॥❀॥ जिनवर दरसण वर अमृतं । एजिनदरसण अत्रित फ  
रसै । पामें अनुपम कांचनतं । तिणसैं सुरपति प्रभुदरसण वरि । जगतें  
गावै जिनचरितं ॥ २ ॥ जिन० ॥ मोदक घृत वर खज्जक परमुख । वरनै  
वेद्य सरस धरितं । हरि गण जग प्रभु आगलि ठोवै । मणि मय

कनक थाल जरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥ जेनैवेद्य करी जित पूजन । करइतेह  
जग मन हरितं । अतिही स्वाड सुर गति शिव पद सुख । तति नितसैवै ज  
वि तुरितं ॥ ४ ॥ जिन० ॥ विंशति पदमें एजिन पतिपद । वर शिवचंद्र विमं  
ल अनितं । इण पद सेवक जविजन केरो । संचित जूरि हरइ डरितं ॥ ५ ॥  
जिन० ॥ ( काव्य ) अनंत विज्ञान मयस्वरूप । समस्त लोक त्रय जूति  
भूषं । लसजुणौघा मृत चारुकूपं । यजेसु नैवेद्य चया जिनौघं ॥ ६ ॥ उंझी  
श्री अर्ज परमात्मज्यो० । प्रणत० । कठिन० । नंदी० । श्रीरूपज्ञानन, चं  
ब्रानन, वारिखेण, वर्धमाना, जिधानाष्टोत्तरैक शत शाश्वत जिनैद्रेज्यो नैवेद्य  
यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ (८) फल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ जिन फल पूजा अष्टमी । कष्ट अनिष्ट विदार ।  
करीयें सुजनावैं सदा । जरीयैं पुण्यजंमार ॥ १ ॥ ( राग धन्या सिरी )  
तेज तरणि मुखराजै ( एचाल ) ॥ सुरनायक जशगावैं । जिनजीको सुर०  
( आंकणो ) निरमल मन बच काय करणें । लुलि २ सीस नमावैं । सुर  
अवतार सफल ज्यो मेरो । जिनपूजन सुपसावैं ॥ २ ॥ जिनजीको सुर०  
नयन चकोर चंद्र समज्योती । संचित डरित पुढावैं । निरखि निरखि मन  
मोहन मूरति । आनंद अंग न मावैं ॥ ३ ॥ जिनजीको ॥ नालिकेर ना  
रंगी कवला । केला आम्र अणावैं । पुंगीफल दामिम परमुख फल । जि  
नवर चरण चढावैं ॥ ४ ॥ जिन० ॥ जेजवि फल पूजा जिनवरकी । करै  
करावैं जावैं । अनुमोदै तेपरम चिदानंद । धन अन्नित फलपावैं ॥  
जिन० ) ॥ ५ ॥ वरसअढार विहोत्तर जेठे । प्रतिपद सुकल सुहावैं । चंद्र  
सुनु वासर जयनगरै । खरतरगछ जगचावैं ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिन हर्षसू  
रि सूरिसर । विजयमान बडदावैं । रूपचंद्र गणि पाठक पारिद्रं । वादींद्र  
विरुद्ध धरावैं ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ तासुशीश वाचक पुण्यशील शिष्य । स  
मय सुंदर कहिरावैं । तासुशीश पाठक शिव चंदें । पूजरची मनुजावैं ॥ ७ ॥  
जिनजी० ॥ जेनंदीश्वर शाश्वत जिनकी । वसुविध पूज रचावैं । ते जन  
सकल लोकके ईश्वर । तीर्थकर पद पावैं ॥ ८ ॥ जिन० ॥ ( कलश ) सुर  
पति सुरासुर, वंद वंदित, चरण पंकज मघहरं । सदीप नंदीश्वर जिनालय,

परमतर सुखमाकरं । अतविशद हिमकर चंद्रिकामल निखिलगुण मणि  
सागरं । जिनराज गण मह मर्चये वर फलचयैः करुणाकरं ॥ ए ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं अर्हं परमात्मज्यो ० । प्रणत ० । कठिन ० । नंदी ० । श्री रुषज्जानन, चं  
द्रानन, वारिषेण, वर्धमाना जिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनैन्द्रेज्यो फलं  
यजा महे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इत्यष्टमी फल पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूरवदिशि अंजन गिरी । मंदिरगत जिनराज । अमविध  
पूजायै सदा । अरचीजै हितकाज ॥ १ ॥ पूरव प्रमुख चिह्नदिशै ।  
पुकरणी अन्निराम । दधिमुख चतुर्भुज जिन । अरचीजै शुभकाम ॥ २ ॥  
ईशानादिक विदिशि गत । वसु रतिकर गिरिराज । मंदिरगत जिनराजकी ।  
रचीयै पूजसमाज ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि अंजनगिरी । मंदिरगत महाराज ।  
वसुविध पूजायै सदा । पूजीजै हित काज ॥ ४ ॥ दक्षिण अंजन शैलनै ।  
चतुर्दिशि दधिमुख सार । चतुर्भुज जिन रायकी । करीयै पूजनुदार ॥  
॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकै । विदिशै अतिह उदार । अड रतिकर  
गिरिवर जिन । पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशि अंजन गिरी ।  
मंदिर जिन महाराज । वसुविध पूजायै सदा । पूजो नविक समाज  
॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनै । चतुर्दिशि दधिमुखधार । चतुर्भुज  
जगनाथकी । पूजकरो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै । विदिशै जग  
हितकार । अम रतिकर गिरि जिन प्रते । अरचुं जगदाधार ॥ ए ॥ उत्तर  
रदिशि अंजनगिरी । मंदिर गत जगराय । अष्टविधार्चनसै नविक । अर  
चो जीन सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजन शैलनै । चतुर्दिशि दधिमुख ।  
नाम । चतुर्भुज तीर्थेशनै । अरचो शुभपरिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशाना  
दिकै । विदिशै रुचिराकार । वसु रतिकर गिरि जगप्रभू । पूजो अरति विदार  
॥ १२ ॥ सकल संघ बलि जेठमल । कोठारीचितचंग । इनके आग्रह  
सै करी । एहपूज मन रंग ॥ १३ ॥ इति नंदीश्वरहीपकी पूजा सं० ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे दीप वरेष्टमेहम् । सुगंधि  
तीर्थामि जलैः सुनक्तए । जिनेश्वराणां स्तुपयामि मूर्त्तिः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं

नंदीश्वरे । अष्टम क्षीपे । श्रीमत्तृशाश्वत जिनेश्वरेऽप्यो । जलं ० ॥ ❀ ॥  
 स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे क्षीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूरस चंदन कुंकु  
 मैश्व । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ १ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा ० नंदी ० । विकास  
 जाक् शुद्धसुगंधि पुष्पैः । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा  
 से ० नंदी ० । तुरुक्क रुष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयच्छामि जिनेश्वरेऽप्यः ॥ ४ ॥  
 ॥ ❀ ॥ स्वर्वासिवा ० नंदी ० । सुनिर्मलाज्येन नृतैः प्रदीपैः । कुर्वे प्रमोदा जिन  
 राज पूजाम् ॥ ५ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि ० नंदी ० । स्वयं पुरस्ता जिन पुंगवानां ।  
 सदक्तौघा नुप दौकयामि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि ० नंदी ० । स्वयं ० पुरस्ता ० ।  
 नैवेद्य जातान्युप दौकयामि ॥ ७ ॥ ❀ ॥ स्वर्वासि ० नंदी ० । स्वयंपुर ० ।  
 फलानि चाश्रयाण्युप दौकयामि ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इत्थं जिनानां प्रविधाय पूजां ।  
 सद्रव्यतो जाय विशुद्धिजाजः । जव्यांगिनो नुक्रमतो लज्जते । स्वर्गच मोक्षं  
 विरहाद्भवस्प ॥ ९ ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर दीपकी आरती लि ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गासरे ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
 जीया अष्टपक्षीप । मंगल आरती गायरे । परमानंद पद एहीज जपतां ।  
 अजरामर सुख पायरे ॥ जी ० ॥ १ ॥ रूपज्ञानन चंद्रानन वारिषेण । ब्रध  
 मांन पद जायरे ॥ जी ० ॥ एच्यारे जिन सास्वत सोहै । समरण मंगल था  
 यरे ॥ जी ० ॥ २ ॥ अष्टप्रकारी पूज मनोहर । मनशुद्ध कर मन जायरे ॥  
 जी ० ॥ जन्मजरा दुःख दूरकरणतै । कीजै एह उपायरे ॥ जी ० ॥ ३ ॥ पंच  
 प्रदीपसँ आरती कीजि । मावे आवर्त्त कहायरे ॥ जी ० ॥ जैन आरती पढै  
 पढावै । तोथायै सुररायरे ॥ ४ ॥ जी ० ॥ मंगलकारी विघननिवारी । सुख  
 कारी लय लायरे ॥ जी ० ॥ पंचमगति पांमँ एहनांमै । जेगावै चितलायरे  
 ॥ ५ ॥ जी ० ॥ एहआरती जविजनमोहै । नांमँ नव निध आयरे ॥ जी ० ॥  
 सुखकारी ए सकल मनोहर । कर्पूरजद्र गुणगायरे ॥ जी ० ॥ ६ ॥ ❀ ॥  
 ॥ इति नंदीश्वरजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । जावधरी नरपूर । अनु



नव गुण निरमल करी । वंडं जिनवर सूर ॥ १ ॥ उवै श्री जिनराजनी । सं  
ख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांजली । ते सुणजो धर नेह ॥ २ ॥ स  
हसकूटनी थापना । करियै विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दि  
वस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेतुंजा ऊपरै । सहसकूटनो जाव । ते देखी न  
वि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ  
ज्जलजाव । गीतनृत्य प्रभू आगलै । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव  
सुहागण सुंदरी । सऊसोलै सिणगार । प्रभु आगै मंगल करै । पावै हर  
ख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा नरी । स्नात्र करै नविसार । सहस  
कूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥  
आज आयोरे उहाह । जीवमा नाच ० ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियैरे ॥ आ ० ॥ पंचनरत  
बलि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज ० ॥ दक्षिण उत्तर  
नरते जाए । अतीत अनागतनें वर्तमान ॥ १ ॥ आज ० ॥ इणपर गिण  
तां जिनवर थाय । सातसै वीश अधिक कहवाय ॥ आ ० ॥ तीश चौबीशी  
वंडं एह । तारण तरण नविक गुण गेह ॥ आ ० ॥ २ ॥ परमात्म परमे  
शर जाण । एहनी आणकरो परमाण ॥ आ ० ॥ जिनसम अवरन दूजो  
देव । सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार ।  
सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ ० ॥ वारिजानं एहनी वार हजार । मुऊ  
प्रीतम एही अवधार ॥ आ ० ॥ ४ ॥ करता भूममल उपगार । जगनायक  
जिनवर जयकार ॥ आज ० ॥ जावधरी वंडं जगसार । सुमति सदा दीजै  
किरतार ॥ आ ० ॥ ५ ॥ उं ऊं परमाण श्री सहसकूट जिनेंद्राय जलं यजा  
महे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ वर्तमान जिन वंदियै । तीन चौबीसी मांह । रुष  
नादिक जिनपूजतो । दिन १ हरख उहाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदै ।  
अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । जावधरी गुणमाल ॥ २ ॥  
( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अवतो उवाखो मोहि चाहियै जिनंदराय ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
॥ वर्तमान जिनपूजत करकै । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त ० ॥ रुषन

अजित शंखव अभिनन्दन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर० ॥ १ ॥ प  
दम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रभु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल  
जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनैद्र वरोरे ॥ वर० ॥ २ ॥ वारमो वाशपूज्य  
जिन नमन । मिथ्यातम सब दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां ।  
रुद्र सिद्धको जंमार चरोरे ॥ वर० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर मद्धि जिनेसर ।  
मुनिसुव्रत दिलध्यान करोरे । नमि नेमी श्रीपास जिनेसर । वीर सदा मुक्त  
नाथ खरोरे ॥ व० ॥ ४ ॥ ए चौबीशे जिन गुण गावत । संपद सुखकी सेज  
वरोरे । सुमति कहै जिन पूजन करकै । लुल २ जिनके पाय परोरे ॥ व० ॥  
॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमाण सहस्रकूट जिनैद्राय चंदनं यजामहेः ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ (३) पुष्पमाल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहाः ) ॥ पुष्पमाल गुंथी करी । कंठ ठवो जिनराज । सुम  
ति सुगंधी विसतैरे । लाज अनंत समाज ॥ १ ॥ अतीत चौबीसी बंदियै ।  
आंणी जाव प्रधान । मनवंत्रित पूरण सदा । परतिख कलप समान ॥ २ ॥  
(ढाल) ॥ श्री चंद्राप्रभु जिनवर साहिव । सुणिये ० मैवारि ० (ए चाल) ॥  
॥ ॥ केवल ज्ञानीनै निरवांणी । सागर महा जशकारा ( मै वारि  
जांन सा ० ) ॥ के ० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक । सर्वानुज्ञत उदा  
रा ॥ (मै ० स ०) के ० ॥ १ ॥ श्रीधर दत्त जिनवर उपगारी । दामोदर अवि  
कारा ॥ मै ० दा ० ॥ अधिक सुतेज जिनेसर सांमी । मुनि सुव्रत गुणकारा  
॥ २ ॥ (मै ० सु ०) के ० ॥ ३ ॥ श्री सुमती शिवगति जिनपूजो । अस्तंग नमी  
मुनि प्यारा ॥ (मै ० अ ०) ॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो । किरतारथ म  
नुहारा ॥ (मै ० कि ०) के ० ॥ ४ ॥ श्री जिनराज जिनेसर बंदो । शुद्धमती  
शिवकारा ॥ (मै ० सु ०) ॥ स्थंदन संप्रति जिन चौबीशे । सुमति सदा गुण  
कारा ॥ (मै ० सु ०) ॥ के ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमाण ॥ श्री सहस्रकूट  
जिनैद्राय पुष्पं यजामहेः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ (४) धूप पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ आवी जिनवर बंदियै । द्रव्य जाव सुविचार । पद  
मनाज आदिक प्रभू । बंदूं वारं वार ॥ १ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर । अं

वर तुरक लोबांन । धूप करो जिन राजनें । पावो सुख असमान ॥ १ ॥  
( ढाल ) ॥ संजव जिन सुखकारीरे । वाला संज० ( एचाल ) ॥ ❀ ॥

॥❀॥ पदमनाज सुखकारीरेवाला ॥ प०॥ (हारे हारे वाला) वारीजां  
वार हजारीरेवाला ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंडुं जावै । सुपारस ब्रह्मचारीरे ॥  
वा० प०॥ २ ॥ स्वयं प्रभू जिन अंतरजांमी । सर्वानुभूत उदारी । देवश्रुती  
जिनपर उपगारी । उदय पेढाल विचारीरे । वा० ॥ प० ॥ ३ ॥ पोढल  
जिन शंत किंती कहियै । सुव्रत जिन हितकारी । अमम जिनेसर वारमो  
कहियै । निक्कषाय गुणधारीरे । वा० ॥ प० ॥ ३ ॥ निष्पुलाक जिन पनरमो  
सेवो । महिमा अधिकतुमारी । सोलम निरमम जिनवर जावै । सेवकरो  
इकतारीरे । वा० ॥ प० ॥ ४ ॥ चित्र गुपति चितचाह धरीनें । समाधि से  
वो सुविचारी । संवर जिनगुण मणिके आगर । जस्सोधर जशधारीरे ।  
वा० ॥ प० ॥ ५ ॥ विजयमल्लि देवज जिन पूजो । अनंतवीरज शुभचारी  
जावकरी नदंकर सेवो । एहीज निजगुण धारीरे । वा० ॥ प० ॥ ६ ॥ जा  
वी जिनवर उत्तम कहिये । चरण कमल बलिहारी । सुमति कहै तन  
मन कर उज्जल । सेवोजिन इकतारीरे । वा०॥ प० ॥ ७ ॥ उंझी परमा०  
सहस्र कूटजिनेंद्राय धूप० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ (५) दीपक पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ ( दूहाः ) दीपक कंचन मय करी । पूजो जग नरतार । धा  
तकी पूरव खंमै । नरत तणा जिनसार ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ ( ढाल ) ॥ तुमबिन दीनानाथ दयानिध कोन० ॥ ( ए चाल )

॥❀॥ धातकी खंमै पूरव नरतै । अतीत चौबीसी वंदोरे । धा० ।  
रतन प्रभूनें अमल प्रभूजी । असंजव जिन चंदोरे धात० ॥ १ ॥ श्री  
अकलंक चंद्रा प्रभु प्रणमुं । सुप्रंकर सुखकंदोरे । सपत नाथ जिन  
सुंदर जावै । नाथ पुरंदर इंदोरे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देव  
दत्तजी । वासवदत्त सुनंदोरे । श्रीश्रियांस जिनेसर वंदो । वीरस्वरूप  
आनंदोरे ॥ धा० ॥ ३ ॥ श्रीतप तेज दिवाकर सेवो । श्रीप्रतिबोध सुदेवोरे ।  
श्रीसिद्धार्थ जिनवर पूजो । स्यंदन जिणगुण देवोरे । धा० ॥ ४ ॥ अमल  
नाथ देवेंद्र सुपूजो । पवचन नाथ सुचंदोरे । विश्वानन जिनदेव सुवंदो ।



तम फल पूजा करो । पावो सुख अविकार ॥ १ ॥ पुरकरदीपै बंदियै ।  
 अतीत चौबीशी जेह । शास्त्रथकी सुणजो सदा । अनुपम गुणके गेह  
 ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ जात्रानिनाणुं करियै विमलगिरि जाण ( ए चाल ) ॥  
 पुकरखरदीप सुबंदोरे । नविजन ॥ पुण ॥ पूरवन्नरते अतीत चौबीशी । सेव  
 तन्नवि चिरनंदोरे । न० ॥ पु० ॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक । सरवा  
 रथ सुख कंदोरे । न० ॥ पु० ॥ १ ॥ ऊखीनाथ हरिन्नद्र सुहंकर । गणा  
 धिप मुनि इंदोरे । न० ॥ पु० ॥ पारत्रक जिनकुं नविवंदो । ब्रह्मचारी  
 सुखकंदोरे । न० । पु० ॥ २ ॥ दीपक जिन बलिराज ऊखीसर । विशाख  
 प्रभू जिनचंदोरे । न० ॥ पु० ॥ अचितरवि श्रीसोमजिनेसर । जयश्री मो  
 क्क जिनंदोरे । न० ॥ पु० ॥ ३ ॥ अग्नीजानुं धनुख सुबंदो । सेमांचित चि  
 रनंदोरे । न० ॥ पु० ॥ प्रसिद्धनाथ श्रीजिनवरइंदो । बंदी पाप निकंदोरे  
 न० । पु० ॥ ४ ॥ इम हीज वर्तमान जिनपूजी । अनागत जिन वंदोरे ।  
 न० । पु० । सुमतिकहै जो जिनवर पूजै । तेहीज जगमणि चंदोरे । न० ।  
 पु० ॥ ५ ॥ उंझी परमात्मने । सहस्र कूट० नैवेद्यं, फलं यजामहे ॥ ७ ॥

### ॥ ✽ ॥ अथ ( ८ ) वस्त्रपूजा ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( दूहाः ) ॥ वस्त्रयुगल प्रभू आगलै । ढोवो नविक उदार ।  
 जंबू ऐरवत खेत्रमें । पूजो जिनवर सार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ आज जं ग  
 ईथी समवसरणमें । ( ए चाल ) ॥ ✽ ॥ जंबूदीपे ऐरवरतमें । इमहीज  
 जिनवर ठाजैरी ( वारीवारी इम० ) जं० ॥ तीन चौबीशी गिणतां नविज  
 न । वज्रतर जिन पति राजैरी । वा० व० ॥ जं० १ ॥ गुरुमुखथी अ  
 वधारो नविजन । परमात्म गुण साजैरी । वा० । प० ॥ जं० ॥ आव धरी  
 पूजन नवि करतां । कुमति कुटलता लाजैरी । वा० । कु० ॥ जं० ॥ २ ॥  
 इमहीज धातकी पूरव मांहै । ऐरवतखेत्र सुकाजैरी । तीन चौबीशी नितश  
 नमियै । बोधलता गुण बाजैरी । वा० । वो० ॥ जं० ॥ ३ ॥ इमहीज धा  
 तकी पश्चिमसोहै । ऐरवतखेत्र सुठाजैरी । वा० । ऐ० ॥ जं० ॥ ४ ॥ ज  
 गत जंतु करुणानिध स्वामी । अमृत वाणि सुगाजैरी । वा० । अ० ।  
 जं० ॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो । उपगारी सिरताजैरी । वा० । उ० । जं०  
 ॥ ५ ॥ उंझी परमा० । सहस्र कूट जिनें द्राय । वस्त्रं यजामहे ॥ ८ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ( ए ) ध्वज पूजा ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ ( दूहाः ) वीशजिनेसर शास्वता । पंचविदेह मंजार । सीमंधर  
 आदै करी । प्रणमं बारहजार ॥ १ ॥ गगन बीच अदभुतवणी । पंचवरण  
 विकसंत । नवमीध्वज पूजा करी । लेवो लाजअनंत ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥  
 सेवुं जानो वासी प्यारो लागै म्हाराराजिंदा ( ए चाल ० ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विहरमानं नवि ध्यावो म्हाराराजिंदा । ध्या ० ॥ वि ० ॥ सीमंधर  
 जुगमंधर स्वामी । वाज सुवाज सुहावै । म्हां ० ॥ वि ० ॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभु  
 सेवो । कृपानन मनभावै । म्हां ० ॥ वि ० ॥ १ ॥ अनंत वीरज सिरीसूरप्रभुजी ।  
 दशमो विशाल कहावै । म्हां ० ॥ वज्रधर जिन नवि सेवो जुगतै ।  
 बोधवीज उपजावै । म्हां ० ॥ वि ० ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्रवाहूजी । जु  
 जंग ईशर सुखपावै । म्हां ० । नेमप्रभु जिन गुण मणि दरियो । वीरसेन  
 मुनिरावै । म्हां ० ॥ वि ० ॥ ६ ॥ अचारम महान्द्र सुशेवो । देवजशा नित  
 ध्यावो ॥ म्हां ० ॥ अजित वीरज जिनवीशमो ध्यावो । देख्यां हरख नमावै ।  
 म्हां ० ॥ वि ० ॥ ४ ॥ पंचविदेहै एजिनसोहै । सोवन वरण सुहावै ॥ म्हां ० ॥  
 चौरासीलख पूरव आयु । शाशता एहिजपावै । म्हां ० । वि ० ॥ ५ ॥ परमपु  
 रख एवीश जिनेसर । ए जगसार कहावै ॥ म्हां ० ॥ सुमति कहै ए जिनवर  
 पूजो । निजगुण ज्युं नवि आवै । म्हां ० ॥ वि ० ॥ ६ ॥ उं ह्रीं परमा ० सहस्र  
 कूट ० ध्वजं यजामहेः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अष्टमंगल पूजा ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ ( दूहा ) ॥ पंचविदेहै शासता । एकसो साठ जिनंद । कल्या  
 एक जिनराजना । पूजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ संधव मित्ती प्रभु आग  
 लै । मंगल आठकरंत । तन मन उज्जल जावसुं । हृदयकमल विकसंत ॥  
 ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ ॐ ॥ ( हांहेरे देवा ) बावना चंदन घसण ( ए चाल ) ॥  
 ॥ ॐ ॥ ( हांहेरे देवा ) पंचविदेहै विराजता । उत्तरुष्टा सज्ज जिनराजए ।  
 हांहे ० ॥ एकसो साठ सुहंकरा । जगबंधव जग शिरताजए ॥ हां ० ॥  
 जनमसमं विजुं लोकमें । हरखित ऊर्ध्व सज्ज सुरराजए ॥ हां ० ॥ चौसठ  
 सुरपति जावसुं । उठव करै हित सुख काजए ॥ २ ॥ हां ० ॥ च्यवन जनम  
 दिख्या सही । केवल मोक्ष शुभराजए ॥ हां ० ॥ चौवीशे जिनराजना । क

द्व्याणक वलि सुसमाजए ॥ ३ ॥ हां० ॥ पंच पंच गिणती कखां । एक  
 सौबीश शुभराजए ॥ हां० ॥ च्यार जिनेसर शासता । कृषन्नानन जिनगुण  
 राजए ॥ ४ ॥ हां० ॥ चंद्रानन बीजोनमुं । वारखेण तीजो महाराजए ॥ हां० ॥  
 वरधमांन नितवंदियै । ए च्यारे शुभगुण पाजए ॥ ५ ॥ हां० ॥ द्रव्य ज्ञाव  
 पूजन करो । ज्ञव जलनिधि तारण ऊचाजए ॥ हां० ॥ सुमति सदा जिनरा  
 जना । पदवंदै हित सुख काजए ॥ ६ ॥ उं झी परमा० सहसकूट० अष्ट  
 मंगलं० यजामहेः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ गीत, नृत्य, पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहाः ) ॥ गीत नृत्य गुणगावतां । थायै लान्न अनंत । न  
 व्य सदा सेवन करै । हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अरे  
 थारीगईरे अनादिनींद जरा टुकजोवोतो सही ॥ जो० ॥ ( ए चाल ) ॥  
 तनें देवैरे सुग्यांनीसीख जिनंद पद सेवोतो सही । सेवोतो सही मेराचेतन सेवो  
 तोसही ॥ त० ॥ जिनवरकी वरणी डुखहरणी जोवोतो सही ॥ मे० जो० ॥  
 रायपसेणी मांहि हीयामें पोवोतो सही ॥ पो० मे० त० ॥ १ ॥ ज्ञवदधिकी  
 तरणी सुखकरणी लेवोतो सही ॥ मे० ले० ॥ तुरुल्योरे अनंते काल अग्यांनी  
 वोवोतो सही ॥ वो० मे० ॥ तनें० ॥ २ ॥ सम कितकी करणी मन हरणी सेवो  
 तो सही ॥ म्हां० से० ॥ परहरमान गुमांन जगत जश लेवो तो सही ॥  
 ले० मे० ॥ तनें० ॥ ३ ॥ ज्ञविजनकी करणी जशजरणी वेवोतो सही ॥  
 मे० ॥ अजर अमर गुण होय करममल धोवोतो सही ॥ धो० मे० ॥  
 त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिन वरणी ज्ञावो तोसही ॥ मे० ज्ञा० ॥  
 गीत ग्यांन शुभ ज्ञाव हियामें ध्यावोतो सही ॥ ध्या० मे० त० ॥ ५ ॥  
 मुनिवरकी वरणी चितधरणी पावोतो सही ॥ मे० ॥ सुमति कहै गु  
 रग्यांन हियामें ल्यावोतो सही ॥ ल्या० मे० ॥ तनें० ॥ ६ ॥ उं झी पर  
 मा० सहसकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥ ११ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ वाजित्र गुणपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ताल मृदंग सजी करी । प्रभू पूजो धरज्ञाव । न  
 गत करी जिन राजनी । समकित शुद्ध उपाय ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥  
 जिन गुण गावत सुरसुंदरीरे ॥ जिन० सु० ॥ ( ए चाल ) ॥ निरत करै

मिल सुसुंदरीरे ॥ नि० सु० ॥ थेई ५ तान करै प्रभु आगै । गावत  
देवी सुर मधुरीरे ॥ नि० ॥ कंचू कसिया हरख उल्लसिया । ठमठम  
नाचत कवल करीरे ॥ नि० ॥ १ ॥ ताल कंशाल विशाल अनोपम । गा  
वत राग ठत्तीस करीरे ॥ नि० ॥ जिनगुण गावत हरख बधावत । पावत  
निजगुण हरख झरीरे ॥ नि० ॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन ।  
धरम धुरंधर तुंजिनरीरे ॥ नि० ॥ जब डख जंजन जन मन रंजन । अशर  
ण शरण आनंद करीरे ॥ नि० सु० ॥ ३ ॥ अनंत गुणाकर सब सुख सा  
गर । सेवत आपद दूरठरीरे ॥ नि० ॥ जगदीपक जगलोचन तुंही । तुंही  
जगत पिया महरीरे ॥ नि० सु० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभुआगल  
समकित सुख उपाय खरीरे ॥ नि० ॥ सुमति कहै जविजन जिन पूजो ।  
सफल जनम ए सफल घरीरे ॥ नि० सु० ॥ ५ ॥ ॐ झी परमाण सहस्र  
कूट जिनैद्राय नाटक पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ गुलाव जल ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) ॥ विविध सुगंध लेई करी । पूजन कर जिनराज ।  
सुजश सुगंधी विस्तरै । प्रगटै पुन्यसमाज ॥ ( चाल अंगरेजीवाजै  
की ) ॥ आनंद कंद पूजतां जिनंद चंदझं ( ए चाल ) ॥ पूज पूज जिन  
राज काजसारतुं । का० ॥ पू० ॥ जग जश धार सार सुखकारतुं । अनंत झां  
न तुंही ज्ञान हितकारतुं ॥ हि० ॥ पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाव फूल चाढ  
सारतुं । मोगरो अवीरलाल अविकारतुं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तुंही जगमात  
तात भरतारतुं । अत्तर सुगंध गंध जविदारतुं ॥ न० पू० ॥ ३ ॥ केवमो  
चंपेल बेल अवधारतुं । परम आनंद चंद जिनसारतुं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥  
जगत उधार सार किरतारतुं । मंतोजं आचारहीन मुनितारतुं ॥ मु० पू०  
॥ ५ ॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टारतुं । एहीहै जिनंद देव जवि धारतुं ॥  
न० पू० ॥ ६ ॥ तुंही है मुनीश ईश गुणकारतुं । सुमति आधारसार जय  
कारतुं ॥ ज० पू० ॥ ७ ॥ ॐ झी परमाण श्री सहस्रकूट जिनैद्राय सुगंध  
जलं यजामहेः ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दाल ) ॥ तेजरण मुखराजैहो प्रभु ॥ ( ए चाल ) ॥



तेज अधिक जगगाजैहो । प्रभु थारो ॥ ते० ॥ सहसकूट जिनवर सब पूजत ।  
 पुन्य अनंत सुकाजै । अतिशयवंत महंत जिनेसर । सुरतरु सम प्रभु गजै  
 हो ॥ ते० ॥ १ ॥ रूप अनूप करी सुर मोहै । देखत डख सज्ज गजै ।  
 खरतर गह्वरपति चंदसूरीसर । तेज अधिक गुरु गजैहो ॥ ते० ॥ २ ॥  
 प्रीतसागर गणी सिष्य सुवाचक । अमृत धरम सुराजै । शीश कृमा कल्याण  
 सुपाठक । अमृत सम गुणराजैहो ॥ ते० ॥ ३ ॥ धरमविशाल मुनि गुरुदीयो ।  
 तसुनंदन हितकाजै । सुमति कहै नवि जावधरीनै । पूजो श्री जिनराजैहो  
 ते० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । संघ सदा गुण राजै । प्रेमधरी पू  
 जन एकरियै । वंछित हितसुख काजैहो ॥ ते० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै  
 मिगसर । सुद पंचमी शुभराजै । सुगुण निधान मोहन मुनीगावै । निजगु  
 ण निरमल काजैहो ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति सहस कूटजी पूजा संपूर्ण ॥ ॥

### ॥ ॥ अथ सहसकूट स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ सहियांहे नेमीसर वनमैनै गिरना ॥  
 (ए चाल) ॥ ॥ सहियांहे सहसकूट महाराज वंदो सब जावसुंहे  
 माय । वंदो ॥ सहि ॥ तीस चौबीशी पूजीयै हे माय । स० । विहरमान  
 जगवान सेवो चित चाहसुं हेमाय ॥ से० ॥ स० ॥ १ ॥ एकसो साठ  
 जिनेसराहे माय । स० । उत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसुं हे माय नि०  
 स० ॥ २ ॥ एकसो बीस जिनंदना हे माय ॥ स० ॥ कल्याणक सब होय ।  
 सेवो नवि दावसुं हे माय ॥ से० ॥ स० ॥ ३ ॥ चार जिनेसर शाशता हेमा  
 य ॥ स० ॥ जयवंता जगदीस अधिक गुण गावसां हेमाय ॥ अ० । स० ।  
 ॥ ४ ॥ घणा दिनारो उमाहमो हे माय । स० । ते फलियो मुऊ आज जि  
 णंद पद सेवतां हे माय ॥ जि० ॥ स० ॥ ५ ॥ उहव अधिक सुहामणा हे मा  
 य । स० । खूबधया रंगरोल अधिक मन रंगसुं हेमाय । अ० ॥ स० ॥ ६ ॥  
 उगणीसै चालीशमै हे माय । स० । पोश माश सुखकार जगत कर जा  
 वसुं हे माय । न० ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ सहू हरषै करीहे माय । स० । पूज  
 रची चितचाह वंछित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम  
 विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दी  
 जीयै हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवन ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सहस्रकूट स्वरूप, विधि: ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पांचनरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत, अनागत, वर्तमान, तीनों कालकी अपेक्षाये ३० चौबीशी होय (अंके) ७२० ऊँचा । (तथा) ५ महाविदेहके एकसौ साठ विजयमें १६० जिन होय (८८०) । (तथा) २४ जगवानका १२० कल्याणक स्वरूप (अंके १०००) । (तथा) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन (एवं सर्व १०२४ जिन स्वरूप) । कों सहस्रकूट कहते हैं । सहस्रकूटजीको मंदर सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहर है । (इसकी) उत्कृष्टजागे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसे पूजन उत्तम करना होय (तो) आठदिन अठाई महोत्सव करै । रोकनाणो । नालेर, सुपारी, विदाम, वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चौबीस चढ़ावै । इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोत्सव साथ पूजा विधि गुरुके मुख से जानके करे ॥ ❀ ॥ इति सहस्रकूट पूजन विधि: ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज रुचुं जवि प्रेमसुं । सांजलजो उन्नंग ॥ १ ॥ पांचज्ञान जिनवर कसा । मति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल वमो । दिनकर जोत समान ॥ २ ॥ ज्ञानवमो संसारमें । गुरुविन ज्ञान न होय । ज्ञानसहित गुरु बंदियै । सुचिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीरजिणंद वखाणीयो । नंदीसूत्र मऊार । जव्य सदा अनुभव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक जरी । कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । जाव धरी जविसार ॥ ५ ॥ (चाल) ॥ चितहरखधरी अनुभवरेगै बीश परमपदसेवियै (ए चाल) ॥ मति अतिह जलो शकल विमल गुण आगर जविजन सेवियै । (आंकण) एमति, ज्ञान सदा नमियै । निजपाप सकल दूरै गमियै । मनशुद्धकरी निज गुण रमियै ॥ मति ० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजाणो । चउनेदकरी मनमें आणो । इमनाखै श्रीजिन जगजाणो ॥ मति ० ॥ २ ॥ अरथेकरी चेद जिणंद आखै । पणइंद्रिय मनकर प्रनुदाखै । मुनि मानस ते दिलमें रा

खै ॥ मति० ॥ ३ ॥ बलि षटविध जेद इहा कहियै । षटजेद अपाय करी  
 लहियै । षटविध धारण जवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमजेद अ  
 ठाईस जविधारो । इमजाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधा  
 रो ॥ मति० ॥ ४ ॥ बलिरतन जमित कंचन कलशौ । जविपूजन कर तन  
 मन उलसै । चिदरूप अनूप सदा बिलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञान दिवाक  
 र समकहियै । इम सुमति कहै दिलमै गहियै । एज्ञानथी अनुपम सुख ल  
 हियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ उँ झी परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति  
 ज्ञान धारकेज्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

### ॥ ✽ ॥ अथ ( २ ) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( दूहा ) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । जाव धरी मनरंग । उप  
 गारी शिरसेहरो । जावो जिन उठरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो  
 पूजै श्रुतअंग । अनुभव सुध प्रगटै सही । पामें सुरक अजंग ॥ २ ॥  
 ( ढाल ) ॥ नाजजीके नंदाजीसैं लग्यामेरा नेहरा । ना० ( ए चालमें ) ॥  
 श्रुतजाकी पूजा कर सीखो जवी सेहरा । श्रु० विनय सहित गुरुवंदन करकै  
 लुल२ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । ज  
 गतकरै जवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंमित बरसै ।  
 ज्युं पावस रुत बरसै मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशविध विनयकरै श्रुतगुरुको  
 सेवेज्युं अलिफूलनैं नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि रयण जस्यो श्रुतसागर ।  
 देख दरश हरखावै मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पूछन बायन बलि २ करियै ।  
 सीजै बंछित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥ गुरुजगती जैसी गणधरकी । बी  
 र कहै सुण गौतम सेहरा ॥ श्रु० ॥ ऐसैं गुरुजक्तीसैं सीखो । ए श्रुतज्ञान  
 सकल सुखदेहरा ॥ श्रु० ॥ ४ ॥ गुरुविन ओरन को उपगारी । गुरुदेव सदा  
 गुण मणि जेवरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसैं गुरुकी कीरत करकै । सुमति धरो दिलमें  
 गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ नितनमियै थिवर मुनीसरा नि० ( ए चालमें ) ॥ ✽ ॥ नितन  
 मियै श्रुतधर मुनिवरा ॥ नि० ॥ अरथै श्री जिनराज बखाणें । सुत्रै  
 श्री गुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेवधुनी जिम जविजन सुणकै । हरखै  
 ज्युं केकीवरा ॥ नि० ॥ अंग इग्यारै गुण मणि धारक । बारै उपांग उजाग

रा ॥ नि० ॥ २ ॥ जगत उधारण तुंपरमेश्वर । संकल विमल गुण आगरा  
 ॥ नि० ॥ छेद पयद्या नंदी सेवो । मूलसूत्र जवि गुण करा ॥ नि० ॥ ३ ॥  
 श्रुतधारी गोतम गुण दीवो । पूरव चन्द्र विद्याधरा ॥ नि० ॥ पहिलो  
 आचारंग वखांणै । चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ दूजो सुयग  
 मंग सुणजै । जेद तिशय तेसव्वरा ॥ नि० ॥ तीजो ठांणांगसूत्र विराजै ।  
 सुणतां पापमितैपरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथोसमवायांग सुहावै । अरथ अनेक  
 करीवरा ॥ नि० ॥ पंचमं जगवाई महिमा करियै । सहसठतीश प्रशान धरा ॥  
 नि० ॥ ६ ॥ ठगो ज्ञाता अंग सु ध्यावो । धरमकथा कहै जिनवरा ॥ नि० ॥  
 सातमो अंग उपाशक कहियै । दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि० ॥ ७ ॥ आठ  
 मंअंगै जिनवरदाखै । अंतगम केवलि मुनिवरा ॥ नि० ॥ नवमं अंगै जविज  
 नधारो । अनुत्तरवाई शुनकरा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रणविचार कक्षा जिन द  
 शमं । अंगुष्ठादिक शुनतरा ॥ नि० ॥ अंगइग्यारमं जिनवर दाखै । कर्मवि  
 पाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ बारमोअंग जिणंद वखांणै । अतिशय गु  
 ण विद्याधरा ॥ नि० ॥ अक्षरश्रुत वलिसली कहियै । सम्यकजेद अधि  
 कतरा ॥ नि० ॥ १० ॥ सादिजेद सपरजव लहियै । गम्यकजेद सुणोनरा ॥  
 नि० ॥ अंगप्रविष्ट कहै जिनवरजी । जेदचवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥  
 इमजो श्रीश्रुतज्ञान आराधो । जाव जगत कर वज्रपरा ॥ नि० ॥ सुमति  
 कहै गुरु ज्ञान आराधो । वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॥ ✽ ॥  
 उं ह्रीं परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञानधारकेज्यः चंदनं यजामहेस्वाहाः ॥ १३ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ (३) अवधिज्ञान धूपपूजा ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ (दूहा) ॥ ✽ ॥ अगर सेलहारस धूपसैं । पूजो अवधि उदा  
 र । वोधवीज निरमलजुवै । प्रगटै सुख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीनैं सारि  
 सो । ज्ञानवमो संसार । सुरनर पूजै जावसुं । महियल ज्ञानउदार ॥ २ ॥  
 (ढाल) ॥ निरमल जय जजलै प्रनुप्यारा । सबसंसार० (ए चाल) ॥ ✽ ॥

॥ अवधिज्ञानको पूजनकरलै । ज्युं पावै जवपार संलूणा ॥ अ० ॥ ज्ञानवमो  
 सुखदै न जगतमें । उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥ १ ॥ जेद असंखकहै  
 जिन वरजी । मूलजेद पट् सार ॥ स० ॥ बह्मान हीयमान वखांणै । सूत्रें  
 श्रीगणधार ॥ स० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सज्ज अवधि प्रमांणै । देखै द्रव्य

उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सज्जआवै । थाये जग जरतार ॥  
 स० ॥ ३ ॥ ज्ञान बिना नर मूढ कहावै । ढोरसमो अवतार ॥ स० ॥ ज्ञा  
 नी दीपक सम जगमांहै । पूजै सज्ज नर नार ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्ञानतणी  
 महिमा जग मांहै । दिन २ अधिकीसार ॥ स० ॥ मूलमंत्र जग वशकर  
 वाको । एहीज परम आधार ॥ स० ॥ ५ ॥ ज्ञाननीपूजा अहनिशि करियै ।  
 लीजै बंढित सार ॥ स० ॥ ज्ञाननै वंदी बोध उपावो । करम कलंक निवार  
 ॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा जविसुणकै । पूजो अवधि उदार ॥ स० ॥  
 सुमतिकहै जवि जाव धरीनै । सेवो ज्ञान अपार । सलूणा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं  
 श्रीपरमात्म ० । श्रीअवधिज्ञान धारकेऽन्यः । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ( ४ ) मनपर्यवज्ञान पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूहा ) ॥ ❀ ॥ केतकी दमणो मालती । अवर गुलाव सु  
 गंध । जावधरी पूजन करो । हरै कुमति डरगंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजाक  
 रो । विवध कुशम मनरंग । महिकै परमल चिजं दिशै । पामें गुजरा अ  
 जंग ॥ २ ॥ ( ढाल ) ॥ सेत्रुजानोवासीप्यारो लागै ॥ से ० ॥ ( एचाल ) ॥

॥ ❀ ॥ जिनजीरो ज्ञानसुहावै । म्हानैराजिंदा । ( जिनजीरो ज्ञान ० ) जिन  
 जीरो ज्ञान अनंतो सोहै । कहतां पारन आवै । म्हाराराजिंदा ॥ जि ० ॥  
 ॥ १ ॥ सन्नी नर मनपरजव जाणै । तेमुनि ज्ञान कहावै ॥ म्हारा ० ॥ जिन ०  
 विपुलमतीनै ज्ञजुमति कहियै । ए डयनेद लहावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ २ ॥  
 अंगुलअढीए ऊणो देखै । तेज्ञु नाम धरावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ ३ ॥ म  
 नगत जाव सकल ए जाखै । ते चोथो मनजावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ एह  
 नी महिमा नित नित कीजै । तिमजवि नामधरावै । म्हारा ० जि ० ॥ ४ ॥  
 जगजीवन जगलोचन कहियै । मुनिजन ए नितध्यावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ दि  
 ढाले जिनवर उपगारी । चोथो ज्ञान उपवै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ ५ ॥ मनका  
 शंसा दूर करतहै । सुणतां आण मनावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ तन मन शुचिकर  
 पूजन करलै । जनम जनम सुखपावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ ६ ॥ विविध कुशमसैं  
 पूजा करतां । बोधलता उपजावै ॥ म्हारा ० जिन ० ॥ सुमति कहै जवि ज्ञान  
 आराधो । श्री जिनदेव वतावै ॥ म्हारा ० जि ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म ०  
 श्री मनपर्यवज्ञानधारकेऽन्यः पुष्पयजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ( ५ ) केवल ज्ञानपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ प्रभुपूजा ए पंचमी । पंचम ज्ञान प्रधान । सकलजाव दीपक सदा । पूजो केवल ज्ञान ॥१॥ फल दीपक अक्षत धरी । नैवेद्य सुरजिउदार । जाव धरी पूजन करो । पावो ज्ञान अपार ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल ) तुमविन दीनानाथ दयानिध तु ० ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंचिदरूप अनूप जिनेसर । दरशणकी बलिहारीरे । तुं ० । (आं ०) निरमल केवल पूरण प्रगट्यो । लोका लोक बिहारीरे । केवलज्ञान अनंत विराजै । दायक जाव बिचारीरे ॥ तुंचिद ० ॥ १ ॥ जोत सरूपी जगदानंदी । अनुपम शिवसुख धारीरे । जगत जाव परकाशक जानूं । निजगुण रूप सुधारीरे ॥ तुंचि ० ॥ २ ॥ सकल बिमलगुण धारक जगमें । सेवत सब नरनारीरे । आतम शुद्ध सरूपी नविजन । गुण मणि रयण जंमारीरे ॥ तुंचिद ० ॥ ३ ॥ केवल केवल ज्ञान विराजै । दूजो जेदन धारीरे । आतम जावै नवि ज नसेवो । जगजीवन हितकारीरे ॥ तुंचि ० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञान सब देश क हावै । केवल सरव बिहारीरे । सरव प्रदेशी जिनवर जाखे । सारखै श्रीगण धारीरे ॥ तुंचि ० ॥ ५ ॥ नए अजोगी गुणके धारक । श्रेणचढी सुखकारीरे । अष्ट कर्म दल दूरकरीनें । परमात्म पद धारीरे ॥ तुंचि ० ॥ ६ ॥ औ सैं ज्ञानवमो जगमांहै । सेवोशुद्ध आचारीरे । सुमति कहै नविजन शुच जावै । पूजो कर इकतारीरे ॥ तुंचि ० ॥ ७ ॥ फल १ अक्षत २ दीपक ३ नैवेद्यसैं ४ । पूजो ज्ञान उदारीरे । पूजत अनुभव सत्ताप्रगटै । बिलसै सुख ब्रम्हचारीरे ॥ तुंचि ० ॥ ८ ॥ उंझी परमात्मने श्रीकेवलज्ञान धारकेन्यः फलं १ अक्षतं २ दीपं ३ नैवेद्यं ४ यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केशरियानें जांजको लोक तिरायो ० ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥ प्रभु थारो ग्यान अनंत सुहायो । प्रभु अशरण शरण कहायो ॥ प्रभु ० ॥ मतिश्रुति अवधि अनै मनपर्यव । केवल अधिक कहायो । नव्यसकल उपगार करतहै । श्रीजिनराज बतायो ॥ प्र ० ॥ १ ॥ खरतरगच्छ पति चंद्र सूरिसर । राजत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहै । देखत दिख कुलसा

यो ॥ १ ॥ प्रभु ० ॥ प्रीत सागरगणि शिष्य सुवाचक । अमृतधर्म सुपायो  
 शीश कृमाकल्याण सुपाठक । सदगुरु नाम धरायो ॥ प्रभु ० ॥ ३ ॥ धर्म  
 विशाल दयाल जगतमै । ज्ञान दिवाकर ध्यायो । ज्ञान क्रियानो  
 मूलजे कहियै । तत्वरमण मनजायो ॥ प्रभु ० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अति  
 सुंदर । संघ सकल सुखदायो । सुधमती जिन धर्म आराधक । जगतकरै  
 मुनिरायो ॥ प्र ० ॥ ५ ॥ उगणीसै चालीशै वरशै । आसूसुद वरदायो । ज्ञां  
 न विजयकारक सब जगमे । नित प्रति होत सहायो ॥ प्र ० ॥ ६ ॥ सुम  
 ति सदा जिनराज कृपासैं । ज्ञान अधिक जज्ञगायो । तत्त्वदीपक  
 मोहन मुनिजावै । ज्ञानतणो गुणगायो ॥ प्रभु ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जय जग सुखकारी । वारी जय शम पद धारी । आरती करूं  
 सारी ॥ जय ० ॥ अष्टा विंशति जेद करीनैं । मति ज्ञान राजे ॥ मति ० ॥  
 ध्यावत पूजत जविजनकेरा । जव संकट जाजे ॥ जय ० ॥ १ ॥ जेद चतुर्दश  
 अथवा विंशति । प्रवचन पति दाखे ॥ प्र ० ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिन  
 बर । स्वमुखथी जाखे ॥ जय ० ॥ २ ॥ रूपी द्रव्य विषयि मर्यादा । करि अव  
 धी सोहै ॥ क ० ॥ जेद षट्क् संख्याती तीवा । जविजन मनमोहे ॥ जय ० ॥  
 ॥ ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये । जेद युगम लहिये ॥ जेद ० ॥ कजुमति  
 विपुलमती सरदहियें । न्यूनाधिक गहियै ॥ जय ० ॥ ४ ॥ लोका लोकांत  
 गत वस्तु । गुण पर्यव जासी ॥ गु ० ॥ केवल एक सहाय अनंत । जए  
 निर्वृतिवासी ॥ जय ० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां । जव आरती गीजे  
 ज ० ॥ जिम वरदत्त कुमर गुण मंजरी । तिम जक्ती कीजै ॥ जय ॥ ६ ॥ बृह  
 त् जदारक खरतर पति जिन । हंससूर राया ॥ जि ० ॥ तत् पद कज मधु  
 कर कंचन निधि ॥ आनंद वरताया ॥ ज ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ मंगल दीवो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दीवोरे दीवो मंगलदीवो । जुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी ०  
 ॥ १ ॥ चंद्र सूर प्रभु तुम मुख केरा । लुंछण करता दैनित्पफेरा ॥ दी ० ॥  
 ॥ २ ॥ जिन तुऊ आगल सुरनी अमरी । मंगल दीप करी दिये जमरी ।

दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे । तिम तिम जवनां डरित दऊवै  
दी० ॥ ४ ॥ नीर अकृत कुसुमंजली चंदन । धूप दीप फल नैवेद्य वंदन ।  
दी० ॥ ५ ॥ इणपरै अष्ट प्रकारी कीजे । पूजा स्नात्र महोत्सव पनणीजै ॥ दी०

॥ ॥ अथ मंगल आरती ॥ ॥

॥ ✽ ॥ जविजन मंगल आरती करियै । जनम जनमकी आरति  
हरियै ॥ ज० ॥ १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी । दारुण विघन निवारण  
नीकी ॥ ज० ॥ दूजैपद श्रीसिद्ध दिणंदा । आरती करत मिटत जवफंदा  
ज० ॥ २ ॥ तीजे पद श्रीसूरि महंता । मारग शुद्ध प्रकाश करंता ॥ ज० ॥  
चौथै पद पाठक गुणवंता । आरती करत हरत जव चिंता ॥ ज० ॥ ३ ॥  
पंचमी आरती साधुन केरी । कुगति निवारण शुभगति शेरी ॥ ज० ॥ शिव  
सुखकारण श्री जिनवांणी । ठी आरती ज्ञान बखानी ॥ ज० ॥ ४ ॥ सा  
तमी आरती आनंदकारी । समकित व्रत गृहि प्रतिमा धारी । ज० यह  
विध मंगल आरती गावै । शुद्ध कृमा कल्याण ते पावै ॥ ज० ॥ ५ ॥ ५०

॥ ✽ ॥ अथ जगवंतके (ए) अंग पूजन दूहा ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ जलजरी संपुट पत्रनां । युगलक नरपूजंत । रिपज चरण अं  
गूठमे । दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं वलें कानसग रत्ना । विचखा  
देश विदेश । खमा (२) केवल लक्षा । पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक  
वचनं करी । वरस्या वरशी दान । करकंमै प्रभु पूजनां । पूजो जवि वज्र  
मानं ॥ ३ ॥ मानगयुं दोअंशयी । देखी वीर्य अनन्त । जुजावलें जवजल  
तखा । पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली । सकल सुगुण  
विशराम । नाभि कमलनी पूजना । करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय  
कमल उपशम वलें । वाल्यो रागनं रोप । हेम दहै वन खंमनं । हृदय तिल  
क संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना । कंठ विवर वर तूल । मधुर धु  
नी सुर नर सुणें । तिम गळे तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थकर पद पुन्य  
थी । त्रिजुवन जिन सेवंत । त्रिजुवन तिलक समा प्रभु । जाल तिलक ज  
यवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली । लोकांतिक जगवंत । वसियातिण  
कारण सही । शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना । तिम नव



अंग जिणंद । पूजो बज्रविध जाव थी । कहे सज्ज वीर मुण्डि ॥ १० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शिक्षाकारक दूहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीवन्ता जिन वर पूजिइ । पूजाना फल जोय । राजा नमें परजा नमें । आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे । जल विना कुंज न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥ १ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु वाणी वेगला । रम बमिया संसार ॥ १ ॥ जावे जिनवर पूजियें । जावे दीजै दान । जावे जावना जाविये । जावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रभू नामकी उषधी । शुद्ध चित्तसें खाय । रोग पीमा व्यापे नहीं । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोमलें फूलमे । पास्या देश अढार । कुमार पाल राजा अयो । वरस्यो जैजै कार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मित्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनन्द ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसें । सज्ज संकटमिटजाय । ईत उपद्रव जय टलै । मोहन गुण प्रगटाय ॥ १ ॥ इति दूहा ॥

॥ ❀ ॥ अथ लघु नवपद पूजा तत्र प्रथम अरिहंत पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी नर ध्यान ॥ अरिहंत पदपूजा करो । निज निज शक्ति प्रमाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उषन्न सन्नाणमहोमयाणं । सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सद्देस एणं दियसज्जणाणं । एमो एमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रधानं । प्रधानाय नव्यात्मने नास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यनाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म उर्मर्म च कचूर जेणें । नद्धा नव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना नव्य जावें त्रिकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म नदयें करीनें । दियै देशना नव्यनें हित धरीनें ॥ सदा आठ महापामिहारे समेता । सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म चारे अलग्गा । नवोपग्रही चार ठे जे विलगगा ॥ जगत् पंचकल्याणकै सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ बीजे जंत्र विधिसैं करी । वोश स्थानक तप करितैं  
रे ॥ गोत्र तीर्थकर वांधियु । समकित शुद्ध मन धरिनैरे ॥ १ ॥ अरिहंत पद  
नित बंदिषैं । करम कठिन जिम ठंभीये रे ॥ (ए आंकणी) ॥ जनम कल्याण  
कनैं दिनें । नारकी सुखिया थावैरे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता । जसु उप  
म कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुद्ध मनैं । मनःपर्यव आदरि  
धुरे ॥ तब करि कर्म खपाइनें । ततखिण केवल वरियुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ च  
उतीश अतिशय शोभता । वाणी गुण पैंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थई,  
पूरे संघजगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने । अरिहंत पद  
आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही । अरिहंत पदवी साधेरे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आवि  
र्भूत लसन्नोधा । नावतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेष दोषधनधूमकेतु,  
नपार संसार समुद्र सेतून् ॥ यजे समस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमङ्गिनानं  
बुजकर्णि कायाम् ॥ २ ॥ (उँझी अर्हदंज्यो नमः) ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । कीजैं दिल खुशियाल ॥ अशुद्ध कर्म  
दूर टले । फले मनोरथमाल ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । एमो एमो एतं चक्रयाणं ॥  
सम्पन्न कम्पकलय कारयाणं । जस्मं जरा डक्ख निवारयाणं ॥ १ ॥  
करी आठ कर्म क्यैं पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥  
निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ विज्ञा  
गोनदेहा वगाहात्मदेशा । रक्षा ज्ञानमय जात वणीदि लेशा ॥ सदानंति सौ  
ख्याश्रिता ज्योतिरूपा । अनावाध अपुनजंवादि स्वरूपा ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सकल करमनो क्य करी । सिद्ध अवस्था पाईरे ॥  
गुण इगतीस विराजता । उपम जसनही कांई रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्ध  
पद बंदिषैं ( ए आंकणी ) जनम माण डःख निर्गम्या । शुद्धातम चिदरू  
पी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता । अव्यावाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास  
ध्यान जौंगीसरू । करे अजप्पा जापे रे ॥ जंत्र जंत्र संख्यां जीवमे । कठिण  
करम तैं कापे रैं ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं । पूजंतां मन रागे रे ॥

अविचल पदवी पाईये । कसुं जिनवर वर जागें रे ॥ म० ॥ ए ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥  
निःश्रेयसपदं प्राप्तान् । विदधे नक्ति निर्जरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट,  
डष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतवोधान् । सिद्धान्यजे  
शांति करा न्नराणाम् ॥ २ ॥ ( उंझी सिद्धेज्योनमः ) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हिव आचारज पद तणी । पूजा करो विशेष ॥  
मोह तिमिर दूरें हरे । सूजे नाव अशेष ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सूरिण दूरीकय कुग्गहाणं । एमो एमो सूरसम प्पहाणं ॥  
सद्देशणा दाण समायराणं । अखंम ठत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं  
सूरिराजा सदा तत्त्वताजा । जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यनाजा ॥ षट्त्वर्ग व  
र्गितगुणें शोन्नमाना । पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ नवि प्राणिनें देशना  
देशकाले । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति  
कटपा । जग ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( ढाल ) ॥ गुणठत्तीशे दीपता । पाले पंच आचारो रे ॥ जिन  
मारग साचो कहे । युगप्रधान जयकारोरे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीये ।  
( आंकणी ) ॥ सारण वारण चोयणा । पन्निचोयण चौ शिद्धारे ॥ नव्यजी  
व समजायवा । देवानें ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथ  
म्या । परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल नाव परगट करे । ज्ञानमयी जसु दे  
हा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिगुं पूजा साचवे । ध्यावे निज हित जाणी रे ॥  
पावे लघुतर कालमां । आचारज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( श्लोक ) ॥ स्थापयामि ततः सूरिन् । दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥  
चरतः पंचधाचारं । षट्त्रिंशत् सज्जुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरिन् सदाचार रतांश्च  
सारा । नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गैक निवारणार्थं । मज्ज्यर्चया म्य  
क्षतं गंध धूपैः ॥ २ ॥ ( उंझी सूरिज्योनमः ) ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना । सुंदर शोन्नित गात्र ॥ उव  
आया पद अरचियें । अनुन्नव रसनं पात्र ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥॥॥ ॥ वंद ॥ सुत्तत्त्ववित्थारण तत्पराणं । एमो एमो वायग कुंजराणं ॥  
गणस्स संधारण सायराणं । सव प्पणा वज्जिय मत्तराणं ॥ १ ॥ नही  
सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका सक्त मदमोह. माया ॥ वली  
छादशांगदि सूत्रार्थ दाने, जिके सावधाने निरुद्धाभिमाने ॥ धरे पंचनें व  
र्ग वर्गित गुणौघाः । प्रवादि विपेच्छेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणी गजसंधारणे  
स्तंजन्नुता । उपाध्याय ते वंदिये चित्प्रज्जुता ॥ १ ॥ ॥॥ ॥

॥॥॥ ( ढाल ) ॥ छादशांगी वाणी वदे । सूत्र अरथ विस्तारे रे ॥  
पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारे रे ॥ १४ ॥ श्रीगजकाया  
वंदिये ( ए आंकणी ) ॥ दायक आगम वाचना, जेद जाव युत सारीरे ॥  
मूरखकूं पंम्ति करे, जगतजंतु हितकारीरे ॥ १५ ॥ श्री० शीतलचंद कि  
रण समी, वाणी जेहनी कहियेरे ॥ ते गजकाया पूजतां, अविचल सुखमा  
लहियेरे ॥ १६ ॥ इति ॥ ॥॥ ॥ ॥॥॥

॥॥॥ ॥ श्लोक ॥ छादशांगश्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवे  
श्याग्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रज्ञां  
त्यै । पठन्ति येऽन्यान्पि पाठयन्ति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता  
पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं उपाध्याये नमः ॥ ॥॥ ॥

॥॥॥ ॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥ ॥॥ ॥

॥॥॥ ॥ दोहा ॥ मोक्षमारग साधन जणी, सावधान थया जेह ॥ ते मु  
निवरपद बंदतां । निर्मल थाये देह ॥ १ ॥ ॥॥ ॥

॥॥॥ ॥ वंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं । एमो एमो सुद्ध दयादमाणं  
तिगुप्ति गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पयवियाणं ॥ १ ॥ करे  
सेवना सूरि वायग गणीनी । करूं वणंना तेहनोशी मुणीनी ॥ समेता सदा  
पंच समिति त्रिगुत्ता । त्रिगुप्ते नही काम जोगेपु लिता ॥ वली वाह्य अज्यं  
तरे ग्रंथि टाली । ऊये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ॥ शुनष्टांग योगे रमे  
चित्त वाली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥ ॥॥ ॥

॥॥॥ ( ढाल ) ॥ सकल विषय विष वारिनें, आतंमध्यानें रातारे ॥  
उपशम रसमां जीलता । निज गुण ज्ञानें मातारे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनि  
पद वंदिये ( ए आंकणी ) रतनत्रयी आराधतां । पट्काया प्रतिपालेरे ॥

पंचेंद्री जीपे सदा । जिन मारग अजुवालेरे ॥ हि० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावी  
श अलंकस्या । पंच महाव्रत धारीरे ॥ द्वादशविध तप आदरे । चिदानंद  
सुखकारीरे ॥ हि० ॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्मचरिज धरे । करम महा भट जी  
त्यारे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा । ते नर जगत विदीतारे ॥ हि० ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । शुभध्यानैक मानसान् ॥  
मुदक्पत्रगतानित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रशिक्षं  
सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदक्पत्र गतान् पवित्रान् । साधून् सदा  
तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ षष्ठदर्शन पदपूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ जिनवर ज्ञापित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते स  
म्यग्दर्शन सदा । आदरियें शुभरीत ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठंड ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्खणस्स । एमो एमो निम्मल दंसण  
स्स ॥ मिहत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महाडुमस्स ॥ १ ॥  
विपरियासहो वासनारूप मिथ्या । टले जे अनादी अठे जे कुपथ्या ॥  
जिनोक्ते ऊवे सहजथी सुध्व्यानं । कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना  
जेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं । चरित्रं विचित्रं नवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपश  
मक्षयें तेह होवे । तिहां आपरूपें सदा आप जावे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ ( ढाल ) ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी । सद्वहणा चित्त धरियें ॥ सात  
प्रकृतिनो क्य करी । क्वायिक समकित वरियें ॥ २१ ॥ दरशण पद नित  
वंदियें ( ए आंकणी ) इण विण ज्ञान निफल कह्युं । चारित्र निःफल जा  
येरे ॥ शिव सुख ए विण नां मीले, वज्र संसारी आयेरे ॥ द० ॥ २ ॥ सतसठि  
जेदें शोभतुं । अजरामर फल दातारे ॥ जे नर पूजे जावशुं । ते पामें सुख  
शातारे । दरशण पद ० ॥ २३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ जिनेन्द्रोक्तमतं श्रद्धा । लक्ष्णं दर्शनं यजे ॥ मिथ्यात्वमथ  
नं शुभं । न्यस्तमीशानसद्वले ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

### ॥❀॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननुं । सिद्धचक्रतप मांदि ॥ आराधी

जें शुभ मनें । दिन दिन अधिक उठाहि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ उंद ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्त । एमो एमो नाण दिवायरस्त ॥  
पंचप्यारस्तु वगारगस्त । सत्ताण सवत्य पया सगस्त ॥ १ ॥ ऊवे  
जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जा  
णीयें वस्तु पडद्रव्य ज्ञावा । न होवे वितृष्ठा निजेष्ठा स्वज्ञावा ॥ ऊवे पंच  
मत्यादि सुज्ञान जेदें । गुरूपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ बली ज्ञेय हेया उपा  
देय रूपें । लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( ढाल ) नक्क अन्नक्क विचारणा । पेय अपेय निर्धारोरे ॥ कृत्य  
अकृत्य ने जाणियें । ज्ञान महा जयकारोरे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥  
( ए आंकणी ) ॥ ज्ञान विना जयणा नही । जयणा विण नही धर्मोरे ॥ धर्म  
विना शिव सुख नही । ते विण न मिटे जर्मोरे ॥ ज्ञाण ॥ २५ ॥ पांच प्रकार  
ठे जेहना, जेद इकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजे सदा । ते लहे केवल  
खासोरे ॥ २६ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवावज्ञासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्र  
स्थं । पूजयामि हितावहम् ॥ इति ॥ ७ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं । पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुन्नव  
रस मिले । पातक होय उठेद ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ उंद ॥ आराध्याखंभिय सक्रियस्त । एमो एमो संयम वीरिय  
स्त ॥ सप्तावणा संग विवद्वियस्त । निद्याणदाणाइ समुज्जयस्त ॥ १ ॥  
बली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें । निराशंसता चारोइ असंगें ॥ जवां  
जोधिसंतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्रातमूल्यं ॥ १ ॥ ऊवें जास्त  
महिमाथकी रंक राजा । बली द्वादशांगी जणी होय ताजा ॥ बली पाप रू  
पोवि निःपाप थाये । थई सिद्ध ते कर्मने पार जाये ॥ २ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( ढाल ) सर्व विरति देशविरतिथी । अणागार सागारीरे ॥ जय  
वंतो थावो सदा । ते चारित्र गुण धारीरे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥  
( ए आंकणी ) पट्टखंड सुख तजि आदरे । संयमशिव सुखदायीरे ॥ सत्तर  
जेदें जिन कसो । ते आदरियें जाईरे ॥ चाण ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु

आन्नूषण पहरके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, चाई, बंधु (इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम द्रव्य हाथ में लेके । नव्यजीवोंको मोक्ष मार्ग दिखाता ऊआ, जिनशाशनकी प्रभाव ना करता ऊआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि शाचवन करै ( सो १० त्रिक लिखतेहै ) ( पहिला त्रिक ) ३ निस्सही ) कहैएँका ( जिसमें ) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै ( कहे पीठे ) संसार घर संबंधी कुठनी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ ( दूसरी ) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीठे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीककरानेकी सारसंज्ञाल रखीथी सोनीठेमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीठे, निकेवल जाव पूजा करै । पिण द्रव्य पूजा न करै ॥ ❀ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ ( दूसरा त्रिक ) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेको प्रभूके द क्षिणावर्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ❀ ॥ ( तीसरा त्रिक ) मूल नायकजीके बिंवको पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ ( चौथा त्रिक ) प्रभूकी अंग १ । अग्र २ । जाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ ( अब निस्सही किये पीठे । कृत्य, अकृत्य ( तथा ) पूजा विधि, संक्षिप्त लिखतेहैं ॥ निस्सही किये पीठे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै । पां चो इंद्रियांको बशमें रखै । गमनां गमनमें उपयोगी रहै । गीतादिक अन्य का सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे । कुठनी देव कार्यको ठोमके और कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि संपूर्ण विकथा ठोमै । जन्म ( और ) कर्मके, अनुगत वचन न बोले ( अर्थात् ) कोईके माता पितादिक का किया थका, खोटा कार्यको प्रगट न करै ( तथा ) कर्मानुगत वचन आंधेको आंधा, गोलैको गोला ( इत्यादि वचन ) नबोलै ॥ निस्सही किये पीठे, जिन मंदरमें धर्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बो लना चाहिये ॥ ( जिसने ) मन, वचन, कायाके, खोटै व्यापारोंका निखेध अपनी आत्मासें कियाहे ( उसके ) जावसें निस्सही होय ( और ) जिसने दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय ( इसवास्ते ) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उऊ

ल वस्त्रसें मुखकोश बांधे । धूपादिकसें अंग अपना सुद्ध करै । जावसें, दूसरी निस्सही कहते, मुलगुंजारैमें प्रवेश करै । जयणा संयुक्त पूजा करै । पूजा करते झुए, शरीरमें खाजन खुणें । खेल खंखार न करै । निकेवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै । सु कमाल अञ्जा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें जगवानका अंगलूहै । कपूर कस्तूरी, मिश्रित सुद्ध केशर चंदनका विलेपनकरै ॥ सुन्नवर्ण, सुन्नगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस । गुलाब, चंपा, चंपेली, केवला, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै । अष्टांग धूप अगरवती खेवै ॥ मंगलदीप करै । अखंभ उज्जल अक्षतांसं प्रज्ञूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै ॥ दर्पण १ । चद्रास २ । वर्धमान सरावसंपुट ३ । श्रीवत्स ४ । मञ्जुयुग ५ । कलश ६ । स्वस्तिक ७ । नंदावर्त्त ८ । ( ऐसा ) अष्ट मंगलकी रचना करै । पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजै । सुंदर कुंकुम मिश्रित चंदनसें हृत्पद्मेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अञ्जा खाद्य फल चढावै । ( इत्यादि ) पूजाकीविधि, आरती पर्यंत । राय प्रशेणी, ग्याताधर्म कथा, जीवाजिगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये मुजव करै ( पीठे ) अंतर्गंग जक्तीसें प्रज्ञूके सन्मुख नाटक करै ॥ ( जैसे ) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंन ( तथा ) उदाई राजाकी, राणी प्रजावतीनें द्रोपदीनें नाटक किया ( और ) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया ( तैसें ) प्रज्ञूके सन्मुख शंकारहित होके । उत्तम पुरष नाटक करै ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अब ) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै ( सो ) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रज्ञूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै ( सो ) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्रज्ञूके सन्मुख शकस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै ( सो ) जाव पूजा ॥ २ ॥ ( यह द्रव्य पूजाका विचार गव्जित चोथा त्रिक कहा ) ॥ ॐ ॥ ( अब पांचमा त्रिक ) ॥ ॐ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन जेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ ( और ) केवल अवस्थाको विचार करणा ( सो ) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार ( सो ) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ॐ ॥ ( अब ठगत्रिक )



तीन दिशा ठोमके प्रन्नूके सामनें निजर रखै । उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिर  
 ठी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिठाडी । निजर नहीं करै ॥ ॥ ( अब सातमा  
 त्रिक ) तीन बेर धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ॥  
 ( अब आठमा त्रिक ) ॥ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उ  
 च्चारण करै ( सो ) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रखै  
 ( सो ) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रखै ( सो )  
 मन शुद्धि ॥ ३ ॥ ॥ ( अब नवमात्रिक ) ॥ ॥ तीन मुद्रा  
 करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ ( इसमें )  
 जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगु  
 ली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ कानुसंग मुद्रा ( सो )  
 जिन मुद्रा २ ॥ ( और ) दोसीपका जोमा तिस आकार हाथ रखना । ( सो )  
 मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासैं प्रणिधान ( जय वीरराय ) इत्यादि करै  
 ( अब दशमात्रिक ) ॥ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥  
 मुनि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें ( जो ) जावंति चे  
 इयाइं ( इत्यादि ) इहसंतो तत्थ संताइं ( तक ) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥  
 जावंति केवि साज्ज ( इत्यादि ) तिविहेण तिमं विरियाणं ( इहां तक ) मु  
 नि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीररायसैं ( लेकें ) आन्रवम खंमा तक । प्रा  
 र्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ॥ ( ऐसैं दशत्रिकका पहला चार कहा ) ॥ ॥  
 ( अब पांच अग्निगमन साचवणेंका दूसरा चार कहते हैं ) ॥ ॥ सचित्त  
 द्रव्य कुशमादिक अपनेपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ ( और )  
 राज चिन्ह, मुगट, ठत्र, खड्ग, चामर, पाडुका, अचित्त वस्तू ठोमना । आ  
 न्नूषण प्रमुख पहस्या रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग  
 करना ४ ॥ जिन बिंब देखतेही ( नमो ज्ञवण वंधुणो ) ऐसैं नमस्कार करना  
 ॥ ५ ॥ ॥ ए दूसरा चार कहा ॥ ॥ ( अब तीसरा चार दो दिशीका )  
 पुरष दहणी दिशा बैठा । जगवंतकों वांदे ॥ स्त्री, वांइ दिशा बैठके जगवंत  
 कुं वांदे ॥ ॥ ( अब चौथा चार तीन अग्निग्रह ) ॥ ॥ अग्निग्रह देव  
 वांदणामें कहाहे ॥ ( जघन्य ) नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १ ॥ ( मध्यम )  
 नव हाथसैं उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ ( उत्कृष्ट ) ६० हाथ दूर बैठके

देव वाँदै ३॥ (अव पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥५॥ (सो) जघन्य १॥  
 मध्यम २॥ उत्कृष्ट ३॥ तीन जेद है (तिहां) एमो अरिहंताण (इत्या  
 दिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना  
 (ए जघन्य चैत्य वंदन १) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंमक ।  
 नमोत्थुणसैं (लेके) अरिहंत चेइयाण (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक  
 स्तुति कहै (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै ॥ पांच  
 दंमक सहित । थुई गाथा (४) कहै (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ (तथा)  
 विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीरराय पर्यंत । आठे थुई ए  
 देव वाँदै । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहियै ॥ ५॥ (अव ठग द्वार  
 पंचांग प्रणिपात करै । दो जानु । दो हाथ (और) मस्तक (ए) पांच  
 अंग मिलायके जमीनमें लगावै ॥ ५॥ (अव सातमा द्वार) ॥ ५॥ जघ  
 न्य एक गाथासैं लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसैं प्रजु  
 की स्तवना करै ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥

॥५॥ (अव स्तवना करनेके प्रशंगसैं प्रथम नव पदके (ए) चैत्यवंदन  
 (ए) स्तवन (ए) थुई लिखते हैं ॥ ५॥ ॥ ५॥

॥ ५॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन लि० ॥५॥

॥ ५॥ श्री इष्टदेवाय नमः ॥५॥ जय १ श्री अरिहंत जानु । नवि क  
 मल बिकाशी । लोकालोक अरूपि रूपि । समवस्तु प्रकाशी ॥ १॥ समुद्धा  
 त सुल केवलै । क्षय कृत मल राशी । शुक्ल चरम शुचि पादसैं । नयो वर  
 अविनाशी ॥ २॥ अंतरङ्ग रिपु गण हणीए । ऊय अप्या अरिहंत ।  
 तसु पद पंकजमें रहित । हीर धरम नित संत ॥ ३॥ इति अरिहंत पद  
 चैत्यवंदन ॥ जिंकिंचि० । नमोज्ञंत० ॥ ५॥ ॥ ५॥

॥५॥ अथ प्रथम पद स्तवन लि० ॥५॥

॥ ५॥ (पूजो मनरली, हां हो दादा कुशल सुरिंद पू० एदेशी) ॥  
 श्रीतेरमगुण वसिकै कंत । कर्मकुं जंजै श्री अरिहंत । (मन मानले) । अष्ट  
 समय में समय तीन । सर्व आहार थी होवें हीन ॥ (म०) वादर काये  
 मन वच जोग । तनु २ सैं फुन दढ तनु योग ॥ (म०) सुखम कायते मन

वच रोक । निज वीर्य ताकुं कर फोक ( मन० ) ॥ १ ॥ संझी मात्रके मत  
व्यापार । वेइंझीनें वाक्य प्रचार ( म० ) । आदि समय रह्यो पणक सुजी  
व । सुखम लख्यो तिण जोग अतीव ( म० ) एषां योग श्री समयें एक ।  
होना संख गुणो कर ठेक ( मनमा० ) । समया संखें जोग निरोध । कृत्वा  
जो लख्यो जोगी सोध ( मन० ) वेद समें ना हारता पाय । कुशल कहै  
ते श्री जिनराय । ( म० ) तेरमे गुणमें गुण समें देव । आपोसा जगकुं  
नितमेव ( म० ) ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनम् ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ थूई ) ॥ सकल द्रव्य पर्यायं प्ररूपक लोकालोक सरूपो  
जी । केवल ग्यान की ज्योति प्रकाशक अनंतगुणें करि पूरो जी । तीजै  
जव थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरोजी । वारै गुणांकरी एहवा अरिहंत  
आराधो गुण नूरोजी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शैलेसी पूर्वप्रांत । तनु हिंनत जागी । पुव पण्यपसंगसैं ।  
ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत । गये निगुण निरागी ।  
चेतन नूपैं आत्मरूप । सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाण थी  
ए । रूपातीत स्वप्नाव । सिद्ध जये तसु हीर धर्म । वंदे धरि सुज जाव ॥ ३ ॥  
इति सिद्धपद चैत्यवंदनं ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि० १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारै महिलां ऊपर मेह ऊरोखै बीजली ॥ ( ए चाल ) ॥ ❀ ॥  
अष्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें ( म्हाराबाल ही० ) । उत्कृष्टो  
करै वास सयोगी धाममे ( म्हा० स० ) ॥ अजोगी के अंत तजे जव जव्य  
ता ( म्हारा० त० ) । शैलेसीलहै कर्म दलै गुणश्रेणिता ( म्हा० द० ) ॥ १ ॥  
ऊस्वाद्धर पंच काल रहै ते योगमें । म्हा० १२० ) तेरस प्रकृतिनो अन्त करीनें  
अन्तमें ( म्हा० क० ) गमन करै नगरऊसैं । अक्रिय होयनें ( म्हा० अ० ) पुव  
पयोग असंग स्वप्नाव अवंधनें ( म्हा० स्व० ) इषु गुण नवपरमाण जोजन  
लहै कही ( म्हा० जो० ) वर्तुल बिसदा जाश निरालंवन सही ( म्हा० नि० )  
मध्ये जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें ( म्हा० घ० ) मझी पक्षथी हीन जणी  
सिद्धांतमें ( म्हा० ज० ) ॥ ३ ॥ तनुपञ्जारा नाम शिलासैं जोयनें ( म्हा० शि० )

लघु अंगुल वत्तीस प्रमाणऽवगाहना (म्हा० प्र०) यद्धिधनु शतपंच गुणसैं  
दीनता (म्हा०) मिलिया एकमें नंत अवाधा नालही (म्हा० अ०) अष्ट  
प्राणवरि रम्य सिरीही जो सही (म्हा० सि०) बीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन  
गेहमें (म्हा० धरो०) कुशलजये जगजीव मिलोगा तेहमें (म्हारा० मि०)  
॥ ५ ॥ ॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ ॥ अष्ट करमकुं धमन करीनं गमन कियो  
सिववाशी जी । अव्या बाध-सादि अनादि चिदानंद चिदराशी जी । पर  
मातम पद पूरण विलाशी अंध घन दाव विनाशी जी । अनंत चतुष्टमय  
शिवपद ध्यावो केवल ग्यानी ज्ञाशी जी ॥ ॥ ॥  
इति सिद्धपद स्तुतिः ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ॥

॥ ॥ जिन पदकुल मुखरस अनिल । मितरस गुण धारी । प्रवल  
सवल घन मोहकी । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्जादिक जिनराज गीत ।  
नयतन विस्तारी । जव कूपै पापें पमत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा  
चारी जीवके । आचारिज पदसार । तिनकुं वंदे हीर धर्म । अछेत्तर सो  
वार ॥ ३ ॥ इति आचार्य पद नमस्कारः ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ अथ आचार्यपद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ (नणदल बीदलीलै एचाल) ॥ ॥ खंती खमगधी जेणें ।  
दण्यो क्रोध सुजट सम देणेंहो । (गणपति गुणपेखी) । मान महागि  
रि वयरे । अति सोजन महव वयरें (होग०) दंजरूप विश बेली । वर  
अरुण कीलैं ठेलीहो (ग०) । मुठां बेलयी जरियो । लोह सागर मुत्तें  
तरियोहो (ग०) ॥ १ ॥ मदन नाग मद दीनो । जिण दम शम जंजे की  
नो हो (ग०) मोह महामल ताह्यो । पुण बैराग मुगर् पाड्यो हो (ग०)  
॥ ३ ॥ दोश गयंद वस कीनो । धरि उपशम अंकुस लीनो हो (ग०) अं  
तरंग रिपुनेया । सुर वर पिण जिण पिपेयाहो (ग०) रस कृति गुणधी  
लीनो । सुत्र अरथे आगम पीनोहो (ग०) आचारिज पद एह्यो । धरी  
जीव कुशलता सेवोहो (ग०) ॥ ५ ॥ इति आचार्य स्त० ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ पंचाचारकुं पाखै उजवाळै दोष रहित गुणधा

री जी । गुण ठतीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी जी । प्रबल स  
बल घनमोह हरणकुं अनिल समो गुणवाणी जी । कृपा सहत जे संयम  
पालै आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुति ॥ ३॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अथ चतुर्थपद नमस्कारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ धन धन श्री नवजाय राय । सठता घन मंजन । जिनवर दिसत  
डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण मंजण मण गयंद ।  
सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण २ ।  
महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसैं पद तुर्य । तिनपें अहि निश हीर  
धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्याय चैत्य ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन लि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शांवलिया अलगा रहोनें । (एचाल) ऊयनें ३ दूरी ऊयनें ।  
चेतन जाधै सठनें (दूरीहोयनें) तुं मुऊपास क्युं आवै (दू०) तुऊनें  
कुण वतलावे । (दू० आंकणी) तो संगै निज पंचेंद्रीनो । रचना चरम  
झुलाणो । नाणावरणी खय उपशमसैं । ज्ञावेंद्री मंमाणो (दू०) ॥ १ ॥  
द्रव्यै ते परजासैंकीना । जाति नाम व्यपदेश । एंवतो गो तुरग गजादिक  
क्रिण कर्मै उपदेश (दू०) इत्यादिक बज्ज मुऊकुं शंका । तेरे संगे ला  
गी । नीलवर्ण की शमतासेती । मंजयो तोसुं रागी (दू०) ॥ ३ ॥ उप क  
हीयें हणीयो जवियानो । अधियां लाजत आय । आधीनां मन पीमाना  
में । मायो येन बिलाय (दू०) ॥ ४ ॥ आधिक्यै स्मरीयै वर आगम । सुत्र  
सैं ते नवप्राय । तवसेवार्ते हणि सठताकुं । चेतन कुशलता पाय (दू०)  
॥ ५ ॥ इति चतुर्थ पद स्तवनम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (अथ थुई) ॥ अंग इग्यारै चतुद्वै पूरव गुण पचवीसना धा  
री जी । सूत्र अरथधर पाठक कहियै जोग समाधि विचारी जी । तप  
गुण सूरु आगमपूरा नय निक्षेपै तारी जी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी  
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ ॐ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दंशण नाण चरित्त करी । वर शिवपद गामी । धर्म शुक्लसु

चिं चक्रसैं । आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्ततैं । जये  
अंतरजामी । मानस इंदिय दमनजूत । शम दम अजिरामी ॥ २ ॥ चारुति  
घन गुण गण जखो ए । पंचम पद मुनिराज । तत्पद पंक्ज नमतहै ।  
होर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदन ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ साधु पद स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मालन मालन मति कहो ( एचाल ) निकषाया जगजन कहै ।  
धारे चनगति वसनसैं रोसहो ( मुनिंदजी ) राग हीन जय तुं करै । ( साहि  
वा ) शिव रमणीसैं हेतहो ( मुनिंदजी ) ॥ १ ॥ सर्वप्रमादतजीरहै ( सा०  
ठवैपूरव कोमहो ( मु० ) शत सोगम आगम करै ( सा० ) पामैं कर्म  
निकंद हो ( मु० ) प्रचला निद्रामैं रही ( सा० ) । वारम गुणनो वास  
हो ( मु० ) ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करै ( सा० ) जो गुण संख्या  
तीत हो ( मु० ) तो पिण तिण जगमें लही ( सा० ) त्रिक बन गुणनी  
ख्यात हो ( मु० ) ॥ ४ ॥ रयण त्रयसैं शिव पथें ( सा० ) साधन परवर  
जीव हो ( मु० ) । साधु ऊवइ तसु धर्ममें ( सा० ) कुशल जवतु जगती  
बहो ( मु० ) ॥ ५ ॥ इति साधु पद स्तवनम् ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ थुई ) ॥ सुमति गुप्तिकर संजम पालै दोष वयालीश  
टालैजी । पटकाया गोकल हख वालै नवविध ब्रह्मव्रत पालैजी । पंच म  
द्वाव्रत सूखा पालै धर्म शुल्क उजवाळै जी ॥ रूपक श्रेणिकरि कर्म खपा  
वै दमपद गुण उपजावै जी ॥ इति साधू पदस्तुति ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दर्शनपद नमस्कार लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ऊय पुगल परियट । अह परमित संसार । गंठिजेद तव क  
रिलहै । सब गुण आधार ॥ १ ॥ द्वायक वेदक शशि असंख । उवशम  
पण वार । विनाजेण चारित्र नाण । नही ऊवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदे  
व गुरु धर्मनीए । रुचि लहून अजिराम । दर्शनकुं गणि हीर धर्म । अह  
निश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति दर्शनपद नमस्कारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दर्शनपद स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ रामचंद्रके वाग आंवो मोह रक्षोरी ( ए चाल ) ॥ ॐ ॥

देव श्रीजिनराज । गुरुते साधु जणयोरी । धर्मजिनेश्वर प्रोक्त । लक्षण बोधि  
तणोरी ॥ १ ॥ बोधलाजके काज । सप्तम नरक जलोरी । तेण बिना सुर  
लोक । तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तत । बोधही बांहलहेरी ।  
उपशम ख्यायक वेद । ईश्वर तीन कहेरी ॥ ३ ॥ जव सायर हे अपार ।  
फुण अस्ताव कसोरी । जसु लाजै ते होय । गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥  
यदजावें अप्रमाण । नाण चारित्त जलारी । बोध धर्ममें जीव । लाजै कु  
शल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवनं ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ थुई ॥ जिनपन्नत्त तत्त्व सूधासरधै समकित गुण उज  
वालै जी । जेद ठेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी । प्रत्या  
ख्यानें समतुल्य जाण्यो गणधर अरिहंत सूरजी । ए दर्शण पद नित  
नित बंदो जवसागरको तीरा जी ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्षिप्रादिक रस राम बन्धि । मित आदम नाण । जाव मिला  
पसैं जिन जनित । सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ जवगुण पङ्कव उहि दोय ।  
मण लोचन नाण । लोकालोक सुरूप जाण । इक केवल जाण ॥ २ ॥  
नानावरणी नासथीए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें हीर धर्म । नित  
चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यारै अति उतरंगे ( ए चाल ) जिनवर जाषित आगम जणि  
या । तत्त्व यथास्थिति गमिया जी ( म्हारै जगजनतारू ) ते उत्तम  
वर नाण कहायै । जवि जन अहनिशि चाहै जी ( म्हा० ) ॥ १ ॥ ज  
क्षा जक्ष कुपंथ सुपंथा । पेयापेय अग्रंथाजी ( म्हा० ) देव कुदेव अहित  
हित धारी । जाणें जेण विचारी जी ( म्हा० ) ॥ २ ॥ श्रुति मति दोयठे ई  
द्री सारू । तेण परोक्ष विचारूजी । ( म्हा० ) उही मण केवल है वारू ।  
जीव प्रतक्ष सुधारू जी ( म्हा० ) ॥ ३ ॥ अयवि जस्स वलें जगजाणें ।  
लोकादिक अनुमानें जी । ( म्हा० ) त्रिभुवन पूजै जासु पसायें । धारी  
शुभ अवसायें जी ( म्हा० ) ॥ ४ ॥ नाणा वरणी उपशम क्यथी । चे  
तन नाणकुं विलसैजी ( म्हा० ) । सप्तम पदमें जविजन हरषै । निशदिन

कुशलता निरखै जी (स्था०) । इति नाणपद स्तवनं ॥ ७ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ (अथ थुई) ॥ मतिश्रुत इंद्रिजन्मित कहियै लहीये गुण गंजीरो  
 जी । आतमधारी गणधर विचारी दादश अंग विस्तारोजी । अवधि मनपर्यव  
 केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी । ए पांच ग्यानकुं वंदो पूजो जविजनन  
 सुखकारो जी ॥ ॥ ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जस्स पसायें साजु पाय । जुग २ समितेंद । नमन करै सुज  
 नावलाय । फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय । करि कर्म  
 निकंद । सुमति पंच तीनगुप्तियुत । दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इपु कृति मान  
 कपाय थीए । रहित लेस सुचिबंत । जीव चरत्तकुं हीरधर्म । नमन करत  
 नितसंत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चारित्र पद स्तवन लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी । चिदाज्ञास निस्संग (सुग्यानी सां  
 जलो) मूर्तिहीन चेतन करै । रूपी पुदगल रंग ॥ (सुग्यानी सां०)  
 ॥ १ ॥ स्पर्शक कारण वर्गणा ॥ कार्ये कारण ज्ञाव (सु०) कृत्वा जोग  
 सुधामता । लब्धा संखस्वज्ञाव (सु०) ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें । वृ  
 क्षि लहै जुगमान (सु०) मध्ये वसु समयें लहै । अंतें वौ तेजाण (सु०)  
 ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा । कारण रम्य बलेण (सु०) प्राप्ताधल प्र  
 कारता । सत प्रचृतका तेन (सु०) ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी जलो । चेतन  
 संयमधाम (सु०) कर धन मिल पद धर्ममें । कुशल जवतु अन्निराम  
 (सु०) ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ कर्म अपचय दूर खपावैं आतम ध्यान लगा  
 वैं जी । वारैं ज्ञावना सूधी जवि सागरपार उतारैं जी । पटखंम राजकुं दूर  
 तजीनैं चक्री संजमधारै जी । एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हि  
 तकारै जी ॥ इति चारित्र पद स्तुतिः ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ श्री कृष्णादिक तीर्थनाथ । तद्भव शिव जाण । विहिअंतै रपि



वाह्य । मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ वसु कर मित आमोसही । आदि  
क लब्धि निदान । जेदै समतायुत खिएँ । दग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नव  
मो श्रीतपपद जलोए । इच्छा रोध सरूप । वंदनसँ नित हीरधर्म । दूरजवतु  
जवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपद चैत्यवंदनं ॥ ए ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ वारश जेद जण्या जिनराजै । वाह्य मध्यतणा जगकाजैरे । (शि  
वपद श्रेणि) । तिण जव सिद्धितणा वरग्याता । जिनवर पिण तपना कर्ता  
रे ॥ १ ॥ (शि०) शमता सहिते जिनते जारी । जली कर्म चमु पिणहारी  
रे ( शि० ) जीव कनकसँ कर्म कचोरा । दहै तप पावनका जोरारे  
(शि०) ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुशमहै रुद्धि । देव नरनी फलते सिद्धी  
रे ( शि० ) पाप सकलहै तमनी राशी । तप जानूसँ जाये नाशीरे  
(शि०) ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहियै वारू । लब्धांसगली जगहित कारू  
रे ( शि० ) अति डकर फुण साध्यता हीना । काम तातें वारू कीनारे ।  
(शि०) ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै । तपपदही चेतन वहियैरे  
(शि०) ॥ ५ ॥ इति श्रीतपपद स्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (अथ थुई) ॥ इच्छारोधन तपते ज्ञाप्यो आगम तेहनो साखी  
जी । द्रव्य ज्ञावसँ द्वादश दाखी जोगसमाधि राखी जी । चेतन निजगुण  
परणित पेखी तेहीज तप गुण दाखी जी । लब्धि सकलनो कारण देखी  
ईश्वर सँ मुख ज्ञापी जी ॥ इति तपपदस्तुतिः ॥ ए ॥ ॥

॥ ॥ अथ २४ जिन चैत्यवंदन लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्री म वृषज सर्वज्ञ । वृषजांक सुवर्णरुक् । जय देवाधिदेवार्ह ।  
ज्ञानि राजेन्द्र नन्दन ॥ १ ॥ युगस्पादौ त्वयायेन । ज्ञान त्रय युतेन यत् ।  
जनन्या मरुदेवायाः । पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति वृषज स्तुतिः ॥ १ ॥

॥ ॥ अर्हता जितनाथेन । गजदांठन शालिना । जित शत्रू महीपाल ।  
पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षि रत्नेन । जगवंस्त्वयका जिनः ।  
जिता रागादयो येन । वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्य जितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ॥ जितारि नृपतेर्वर्ध्यात् । शंजवः शंजवाग्निधः । शेनायानंदनो हे

म । वणो गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्व सौख्यप्रदो मुख्य । ज्ञान दर्शन संयु  
तः । मुनीनां पुङ्गवो देवो । नित्यं दिशतुमांजिनः ॥ ६ ॥ इति शंभव स्तुतिः ॥ ३

॥ ॐ ॥ सिद्धार्थानंदनं सार्व । वीतरागं जगत्पतिं । श्री संवर समुत्पन्नं  
हृवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनन्दन नामानं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौ  
ति परयाजत्तया । सना लोकेजिनंयते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ मेघान्निध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । क्रौंच लक्षण नृधेम ।  
मरीचिर्मङ्गलांगजः ॥ ९ ॥ सत्यं सुमति नाथेश । सुमतिं तनुसत्तमां । जवि  
नां पुण्यकर्तृणां । स्वर्ग सौख्यावलिप्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ ५ ॥

॥ ॐ ॥ सुशीमा पुत्र सत्कोक । नदयुति धराधर । धरा निध नृपोद्भूत । पद्म  
लक्षण धारक ॥ ११ ॥ नवान्धौ नवसंकीर्णं । इस्तरे पततां नृणां । त्राणाय  
सततं देव । पद्मप्रज्ज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज्ज स्तुतिः ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीसुपार्श्वान्निधो देवः । पृथ्वीजः स्वस्तिकांकनृत् । प्रतिष्ठ नृप  
संजात । श्रामीकर करोजिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंजीरः । कर्मणां वेदने  
परः । यः सार्वः परमव्रह्मा । रतंगौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ ७ ॥

॥ ॐ ॥ चंद्रप्रज्ज प्रजोकांत । चंद्रलक्षण संयुत । स्तमापति षष्ठिज्ञान ।  
तमो व्यूह विनासनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेनाथ । महसेन नृपोद्भवः । लक्ष्म  
णा पुत्र मांस्वामि । तव केवल बोधनृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रज्ज स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ ॐ ॥ ( अत्रायन्नवबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तु तो वो ददत्वाशु । सुरासुर  
नरेश्वरैः । सुविधिर्वाहित शम्भु । सुग्रीव नृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी  
रामा । माननीया दिवौ कसां । मान मुक्तो वदातोयो । मायौ मकरलांठिनः  
॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ९ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( चामर बंधाविमौ ) ॥ श्रीमञ्जीतलनाथेश । नन्दा दृढरथात्मजा ।  
जास्वत्सुवर्णं वदेह । श्रीवत्सांक्षांक धारकः ॥ १९ ॥ त्वदीय चरणांभोजः ।  
सेवकानां वपुर्नृतां । प्राक् कृतं वृजनव्यूहं । उष्टं शंभोद्यहे विभौ ॥ २० ॥  
इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ २० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विष्णु वंशाकं वदेवो । विष्णु पुत्रो हिरण्यजः । श्रेयो वृद्धि करो  
जसं । स्रमगलांठिन नृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वा कर्म रिपून् सार्व । श्रेयांस श्रै  
यसैः सह । परज्ञान मयेतत्वं । महानन्दपदं परं । इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ २१ ॥

॥५॥ वरी वर्ति तरामीहा । ज्वतां ज्वतां यदि । ऊटिति ठेदितुं चि  
त्ते । ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुं महारं ॥ २३ ॥ तदाज्ञजध्व मेनेहि । वासुपूज्यं जया  
सुतं । वसुपूज्य कुलोत्तंसं । महिषां कंच रक्तज्ञं ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ २३ ॥

॥५॥ श्रीमद्विमलनाथेन्द्र । कृतवर्म समुद्भव । शूकरांक धर श्यामा ।  
पुत्रकल्याण दीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवद्विमल ज्ञान । त्वदीय स्मरणं विना । कु  
र्वन्नप्येतिनो ब्रह्म । प्रक्रियां नातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमलस्तुतिः ॥ २३ ॥

॥५॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य । सुयशः सिंह सेनयोः । देवस्य श्येनचिन्हस्य ।  
वर्ष्यान्त गुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं । गुणानां लेभिरे नहि ।  
अनन्तस्य गुणान्तस्य । क्षमोक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुति ॥ २४ ॥

॥५॥ सुव्रतापुत्र वज्रांक । ज्ञानुवंशार्कसन्निभ । कनकप्रभ सर्वज्ञ । ध  
र्मनाथान्निधेश्वर ॥ २९ ॥ तवागोपि पुरश्चारी । भूतले यात्यशोकतां । अनु  
त्तरफलाः संति । सतां संगत योपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ २५ ॥

॥५॥ विश्वसेन धराधीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचिरेयं सुवर्णांगं । क  
लायामि जिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तं श्रीमच्छांति नामानं । यस्याग्रे कुर्वते मुदा ।  
प्राज्यां सुमनसां वृष्टिं । विबुद्धा विबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ २६ ॥

॥५॥ श्रीयुतायाः श्रियपुत्र । श्रेयस्कर हिरण्यभ । सूरिभूपति संजात ।  
हृगिलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं  
पापसंदोहं । जवांतर कृतं घनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥ २७ ॥ ॥५॥

॥५॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्दावर्त्तांक संयुतं । अञ्जोज वन्निरालेपं ।  
देवीपुत्रं सुवर्णं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्व्वे । धुर्ध्यप्रभुतया जिनं । च  
रीकर्मि नमस्तस्मा । अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ २८ ॥

॥५॥ कुञ्ज प्रज्ञावती पुत्रौ । नीलवर्णौ घटांकभृत् । जगन्मित्र इव ध्वा  
न्त । नाशना विदितः सदा ॥ ३७ ॥ तत्र त्रय युतो ज्ञाति । देवयो विष्टपत्र  
ये । तस्य श्रीमद्विनाथस्य । स्मरणेन मुदा सखे ॥ ३८ ॥ इति मद्विनाथ स्तुतिः ॥ २९ ॥

॥५॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि पवित्रकृत् । कुर्म लक्षणं नृधर्म  
दायक श्यामलह्वे ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रत देवेन । क्षीणकर्म्मरि ममल । देहि  
त्वं मेव्ययीक्षावं । पदं तत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुतिः ॥ ३० ॥

॥५॥ श्रीमद्विजय भूपाल । कुलोत्तंस हिरण्यरुक् । वप्रासुत नमिना

ध । नीलोत्पन्न सदंकजृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंच जनोदेवः । निन्दाच्च कुस्तेष्व  
यं । स एति परमज्ञानं । कोपि न स्रव संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ।  
॥ ॐ ॥ शिवायास्तनयेव्ये । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंश हरौ शंजौ ।  
शंखाकं कमल प्रजे ॥ ४३ ॥ त्यक्त राजी मती स्नेहे । नेमनाथे जितस्मरे ।  
सिद्धि प्रमदयामाला । प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥  
॥ ॐ ॥ अश्वशेनाख्य जूपाल । सुतेन परमेष्ठिना । वामेयेन दितायेन ।  
कमठ स्याज्जिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय । नमोस्तु मामकं  
सदा । पवनासन चिन्हाय । नीलवर्णाय संजवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तु ॥  
॥ ॐ ॥ श्रीमत्सिद्धार्य वंशाक्षं । त्रिशलेय जगन्मणे । महा नाद ध्वजा  
हंत । कल्याणं कर सर्व्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थ रुक्षीर । मोहेनहनने मृ  
गात् । त्वंजक्ति दत्तचित्ताय । कमलां देहिमे जिनः ॥ ४८ ॥ इति स्तुः ॥ २४ ॥  
॥ ॐ ॥ इति श्रीकृष्ण कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तवना संपूर्णम् ॥

॥ ॐ ॥ अथ वृट्कर नमस्कार लि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ यत्र श्रीनरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्षुकमात् । तीर्थेशः  
किंल युग्मवर्णवस्तुदिक् संख्यान संख्यश्रियः । साधु स्थापयतिस्म विस्मित  
हृदा दृश्यं नगाधीश्वरं । तं चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं ॥ १ ॥  
इत्यष्टापद स्तुतिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ लसद्दि पंचाशदधीश्वरालयै । विराजिते श्रीमति शाश्वताश्रये ।  
नन्दीश्वरे क्षीपवरे जिनेश्वरान् । वंदे प्रमोदाज्यजीति शांतये ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति नन्दीश्वर स्तुतिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शकल कुशलवल्ली पुष्करावचं मेघो । डुरिततिमिर जानुः कल्प  
वह्मोपमानुः । जवजल निधिपोतः सर्वं संपत्ति हेतुः । स जवतु सततंबः श्रे  
यसे पार्श्व देवः ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दर्शनादुडरित ध्वंसी । वंदना चांठित प्रदः । पूजना स्फुरकः श्री  
णां । जिनसाक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुवर्ण वर्ण गजराजगामिनं । प्रखंड वाङ्म सुविशाल लोचनं ।  
नरा मरैत्रै स्तुतपादपंकजं । नमामि भक्त्या कृपयं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति आदिजिन स्तुतिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ नमस्कार समोमंत्रः । शत्रुं जय समोगिरिः । वीत राग समो  
 देवो । न झूतो न नविष्यति ॥ १ ॥ दिठे तुह मुहकमले । तिन्निविण्ठाइ  
 निरवसेसाइ । दारिदं दोहगं । जम्मंतर संचियं पावं ॥ १ ॥ पाताले यानि  
 बिंबानि । यानि बिंबानि झूतले । स्वर्गेपि यानि बिंबानि । तानि वंदे निर  
 न्तरं ॥ १ ॥ प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रशन्नं । वदनकमलमंकः कामिनीसं  
 गशून्यः । कर युग मपि यत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं । तदसि जगति देवो वीतराग  
 स्त्वमेव ॥ १ ॥ ❀ ॥ इति सर्व जिन स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हत्था जेह सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त । एकेण धम्मं वा  
 हिरा । परधर कम्मकरंत ॥ १ ॥ नव बीजांकुर जनना । रागाद्याः क्षय मु  
 प्रागता यस्य । ब्रह्मा वा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नमस्तस्मै ॥ १ ॥ इति ॥  
 ॥ ❀ ॥ अथ सदाके देववंदनमें ( तथा ) दशमें दिन । नली पारणकी  
 विधिमें कहणेंका ( चै० ) ( स्त० ) थुई लि० ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ नवपद चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदठ पीठिपइछिन् । सिद्धि सूरि उव  
 जाय साझ चिजंसाहगरिछिन् । दंसण नाण चरित्त तवहिं पमसाहें सुन्द  
 रू । तत्तक्खर सर वग्ग लद्धि गुरुपय दल मंवरू । दिशिवाल जक्ख जक्खणी  
 पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियन् । सो सिद्धचक्र गुरुकप्पतरु अह्म मम वंति  
 यदियन् ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः नवपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अरिहंत उदार कांति । अति सुन्दर रूप । सेवो सिद्ध अ  
 नन्तशांत । आतम गुण झूप ॥ १ ॥ आचारज उवजाय साधु । शमता रस  
 धाम । जिनजाषित सिद्धांतशुद्ध । अनुन्नव अन्निराम ॥ २ ॥ बोधबीज गुण  
 संपदाए । नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अवि  
 रुद्ध ॥ ३ ॥ इह परन्नव आनन्द कंद । जगमांहि प्रसिद्धौ । चिंतामणि  
 सम जास जोग । वज्र पुण्यै लद्धौ ॥ ४ ॥ तिज्ज अण सार अपार एह  
 महिमा मनधारो । परिहर परजंजाल जाल । नित एह संनारो ॥ ५ ॥  
 सिद्धचक्र पदसेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याण निधि ।

प्रगटे चेतन रूप ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नवपद वृक्षस्तवन लि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुरमणी समसज्ज मंत्रमां । नवपद अजिरामीरे लो० । (अहो नव०) करुणा सागर गुणनिधी । जग अंतरजामीरे लो० । (अहो जग०) ॥ १ ॥ त्रिभुवन जनपूजित सदा । लोकालोक प्रकासीरे । लो० (अहो लोका०) । एहवा श्री अरिहंत जी । नमुं चित्त उद्धासीरे लो० । (अ० न०) २ । अष्ट करम दलक्ष्य करी । थया सिद्ध सरूपीरे लो० । (अ० थ०) सिद्ध नमो जवि जावधी । जे अगम अरूपीरे लो० (अ० जे०) ॥ ३ ॥ गुण ठीसे सोजता । सुंदर सुखकारीरे लो० । (अ० सु०) आचारज तीजै पदै । बंडु अविकारीरे लो० । (अहोवं०) ॥ ४ ॥ आगम धारी उपशमी । तप डुविध आराधीरे लो० । (अ० त०) चौथै पद पाठ क नमो । संवेग समाधीरे लो० । (अ० सं०) ॥ ५ ॥ पंचाचार पादणपरा पंचाश्रव त्यागीरे लो० । (अहोपं०) गुण रागी मुनि पांचमें । प्रणमुं वरु नागीरे लो० । (अ० प्र०) ॥ ६ ॥ निज परगुणनै उलखै ॥ श्रुत श्रद्धा आवै रे लो० । (अ० श्रु०) ठै गुण दरशण नमो । आतम शुद्ध जावै रे । (लो० अ० आ०) ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमें । जे पंच प्रकारै रे लो० (अ० जे०) ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो । परजाव निवारीरे । (लो० अ० प०) । संत्यादिक दस धर्मनो । जेह ठै अधिकारीरे लो० । (अ० जे०) ॥ ९ ॥ नवमें बलि तपपद नमो । बाह्याभ्यंतर जेदैरे लो० । अ० बा०) बांध्या काल अनंतना । जे कर्म उज्जै रे लो० । (अ० जे०) ॥ १० ॥ ए नवपद वज्रमानथी । ध्यावै शुद्ध जावै रे लो० । (अ० ध्या०) नृप श्री पादतणी परै । मन बंठित पावैरे लो० । (अ० म०) ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक माशमां । नव आंखिल करियैरे लो० । (अ० न०) नवउन्नी विधियुत करी । शिव कमला वरियैरे लो० । (अ० शि०) ॥ १२ ॥ सिद्ध चक्रना वज्रपरै । वर महिमा कीजैरे लो० । (अ० व०) श्री जिनलान्न कहै सदां । अनुपम जश लीजैरे लो० । (अ० अ०) ॥ १३ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनःनवपद स्तवन लि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (राग मारु) ॥ तीरथनायक जिनवरु जी । अतिसय जास

अनूप । सिद्ध अनन्त महागुणी जी । परमानन्द सारूप । (नविक मन  
धारज्योरे) ॥ १ ॥ धारज्यो नवपदध्यान (न०) श्री आचारज गणधरूरे ।  
गुण ठत्तीश निवास । पाठक पदधर मुनिवरू जी । श्रुतदायक सुविलाश  
(न०) ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोन्नता जी । साधु शमतावंत । सम्यग्  
दर्शन सुंदरू जी । ज्ञान प्रकाश अनन्त । (न०) ॥ ३ ॥ संवर साधना  
चरण ठे रे । तप उत्तम विधि होय । ए नवपदना ध्यान थीरे । निरुपाधिक  
सुख होय । (न०) ॥ ४ ॥ अमृतसम जिनधर्मनोरे । मूलए नवपद जा  
ए । अविचल अनुभव कारणे जी । नित प्रति नमत कल्याण (न०)  
॥ ५ ॥ ॥ इति नवपद स्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ (राग प्रजाती) नवपद ध्यान धरोरे (नविका न०) । मन व  
च काया कर एकंते । विकथा दूर हरोरे (न०) ॥ १ ॥ मंत्रजमी अरुतंत्र  
घणैरा । इन सबकुं बिसरोरे । अरिहंतादिक नवपद जपने । पुण्य जंमार  
जरोरे ॥ २ ॥ (न०) अमसिध नव निध मंगल माला । संपति सहज व  
रोरे । लालचंद याकी बलिहारी । शिवतरु बीज खरोरे ॥ ३ ॥ (नव०) ॥  
इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ नवपद थुई लि० ॥ ॥

॥ ॥ नित प्रति जं प्रणमं सिद्धचक्र सुन्न जाव । हिवकारज सिद्धि  
नो लाधो एह उपाय । तुळ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय । इग तुळ  
अनुग्रहथी सुख संपति मुळ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमियै सिद्ध सूरि  
उवझाय । मुनिवर त्रिक करने दंशण नाण सुहाय । इगविधि चारितें बुध  
विध तप मन जाय । ये नवपद ध्यावतां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥  
विद्या परवादें जानो ए अधिकार । श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार । प्रवच  
न अनुसारें जाण्यो एह विचार । नविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार  
॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसर सुखकार । सेवकनें आपै सुख संपति  
परिवार । हिव निधि उदयकरि चारित्र नंदी मन जाय । जिनचंद सूरि सर  
खरतर पति सुपसाय ॥ ॥ इति नवपद स्तुतिः ॥ ॥

॥१॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपदमन्त्री करण विधि लि० ॥५॥

॥१॥ (प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ से मन्त्री स  
रू करै । (कदास) तिथि घटी ऊवे तो (६) से; बढ़ी होय तो, आठिम  
से सरू करै । (पिण) आंविल (ए) पूनिमताई करै । (तिहां) प्रथम नू  
मि शुद्ध करके । मांमणादिक से चित्रत करै । पीठे वाजोट ऊपरि सिद्ध  
चक्र थापे त्रिकाल पूजा करै । (सोलिखते हैं) प्रज्ञात समय राई पडिक्क  
माणो करिके । पीठे वस्त्र पम्बिलेहै । (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना हे (तहां)  
आयके पांच शक्रस्तवे देव वांदै । पीठे नव चैत्ये । (अथवा) नव प्रतिमा  
आसे । नव चैत्यवंदण करै । वास द्वेप पूजा करै । पीठे केसर चंदनसे पू  
जा करै । पीठे मध्यान्ह समय, पांचशक्र स्तवे देव वांदै । पीठे गुरु पास  
आयके । राई आलोवे । अब्जुविज्जि खमासके आंविलनो पचक्खाण करै ।  
प्रथम अरिहंत पदका वरण सपेद है । (इससे) आंविल में चावल (अने)  
गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं । औसो आंविल पचखै । (पीठे) अरिहंत  
पदके वारे गुण है सो चिंतविके वारै नमस्कार करै । सो लिखते हैं (प्रथम  
सर्व ठिकाणें) इत्थामिखमासमाणो । वं० इत्यादि कहिके नमस्कार करै ॥

॥ ५॥ अरिहंतके १२ गुणः ॥ ५॥

- १ ॥ अशोक वृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
- २ ॥ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ३ ॥ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ५ ॥ स्वर्ण सिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ६ ॥ नाममन्त्र प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ७ ॥ इंद्रनिप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ८ ॥ ठवत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
- ९ ॥ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
- १० ॥ पूजातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
- ११ ॥ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
- १२ ॥ अपाया पगमातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥



॥ ॐ ॥ इत्यादि नमस्कार करके । अन्नत्थू ससियेण । ( कहिके ) १२  
 वारे लोगस्सनो कान्तसग्ग करै । एकलोगस्स प्रगट कहै । पीठे स्वस्थान  
 क जाकें । चैत्यवंदन करै । पचक्खाण पारिके । आंबिल करै । पहले ज  
 ल पीवे ( जव ) चैत्यवंदन करिके पीवै । पीठे फेर चैत्यवंदन करिके तिवि  
 हार पचक्खाण करै । ( ॐ झी एमो अरिहंताण ) । इस पदको १०००  
 गुणनो करै । श्रीपालजीको चरित्र नवपद महिमा सुणें । पूण पहिर दिन  
 रहणेंसें ( तीसरीवेर ) पांच शक्रस्तवे देव बांदै । सामायिक लेके दिन ठे प  
 न्निक्कमणो करै । आरतीके समय, दीप, धूप, कुशम, पूजा करै । ( अथवा )  
 पहिले आरती प्रमुख करिके । पीठे पन्निक्कमणो करै । ( सोनैके समय ) इ  
 रिया वही पन्निक्कमके । चैत्यवंदन करिके । राई संधारा गाथागुणके  
 सोवै । निद्रा न आवे ( जहांतक ) नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ द्वितीय दिवश विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रजाति करणी सब करिके, सिद्धपदका  
 लाल वर्ण है । ( इसीसें ) गज्जंके रोटीको ( आंबिल करै ( ॐ झी एमो सि  
 द्धाण ) इसपदको गुणणो दो हज्जार करै । सिद्धपदके आठगुण है । सो  
 ( ८ ) गुणांको गुरु नमस्कार करावै ( सो लिखते हैं ) ।

॥ ॐ ॥ सिद्ध पदके ( ८ ) गुण ॥ ॐ ॥

१ ॥ अनन्त ज्ञान संयुताय श्रीसिधाय नमः ॥

२ ॥ अनन्त दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ ॥ अव्यावाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ ॥ अनन्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ ॥ अक्षय स्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ ॥ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ ॥ अगुरुलघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ ॥ अनन्त वीर्य गुण संयुताय श्रीसि० ॥

॥ ॐ ॥ यह आठे नमस्कार करिके । अन्नत्थूससि० आठ लोगस्सको  
 कान्तसग्ग करै । एक लोगस्स कहिके पारै । पीठे पूर्वोक्त करणी । अनुक्रमसें  
 करै ॥ ॐ ॥ इति द्वितीय दिवश विधिः ॥ २ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ तृतीय दिवश विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पूर्वोक्त विधिसं प्रज्ञात कर्त्तव्य करै । आचार्यपद पीले वर्ण है  
( इसीसं ) चिणाकी दाखका आविल करै । ( उंझी एमो आयरियाणं )  
इस पदको गुणनो दोहृकार करै । आचार्य पदके ( ३६ ) गुण याद कर  
के, ठत्तीस नमस्कार करै ( सो लिखते है ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आचार्य पदके ( ३६ ) गुण ॥ ॐ ॥

- १ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
- २ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
- ३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
- ४ ॥ मधुरवाक्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ५ ॥ गांजीर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ६ ॥ धैर्य गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ७ ॥ उपदेश गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ८ ॥ अपरिश्रायी गुण संयुताय श्रीआचा० ॥
- ९ ॥ सौम्य प्रकृति गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १० ॥ शील गुण संयुताय श्री० ॥
- ११ ॥ अविग्रह गुण संयुताय श्री० ॥
- १२ ॥ अविकथक गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १३ ॥ अचपल गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १५ ॥ क्रमा गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १६ ॥ कृजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १७ ॥ मृड गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १८ ॥ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १९ ॥ द्वादश विधि तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २० ॥ सतदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २१ ॥ सत्यवतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २२ ॥ शौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- २३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २५ ॥ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २६ ॥ अशरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २७ ॥ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २८ ॥ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २९ ॥ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३० ॥ अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३१ ॥ आश्रय ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३२ ॥ संवर ज्ञावना ज्ञाव काय श्रीआ० ॥  
 ३३ ॥ निर्झरा ज्ञावना ज्ञाव काय श्रीआ० ॥  
 ३४ ॥ लोक स्वरूप ज्ञावना ज्ञाव काय श्रीआ० ॥  
 ३५ ॥ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञाव काय श्रीआ० ॥  
 ३६ ॥ धर्म दुर्लभ ज्ञावना ज्ञाव काय श्रीआ० ॥

॥ॐ॥ यह ठत्तीस नमस्कार करिके । अन्नत्यू ससिएणं (इत्यादि) कहि  
 के । ठत्तीस (३६) लोगस्सको कानुसग्ग करै । एक लोगस्स ऊंचै स्वरसें  
 कहिके पारै । यथोक्त करणी । अनुक्रमसें करै ॥ ॐ ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अथ चतुर्थ दिवश विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( नै ज्जी एमो नवझायाणं ) इस पदको ( २ ) हजार गुणनो  
 करै । हस्या मूंगाकी दाढ़ प्रमुखका आंखिल करै । उपाध्याय पदके ( २५ )  
 गुण यादकरि के । नमस्कार करै ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ उपाध्यायके ( २५ ) गुण ॥ ॐ ॥

- १ ॥ आचारांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥  
 २ ॥ सुयगमांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥  
 ३ ॥ श्रीठाणांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउ० ॥  
 ४ ॥ श्रीसमवायांग सुत्र पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 ५ ॥ श्रीजगवती सुत्र पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 ६ ॥ श्रीज्ञाता सुत्र पठन गुण युक्ताय ० ॥

- ७ ॥ श्रीउपाशकदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 ८ ॥ श्रीअन्तगमदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 ९ ॥ श्रीअणुत्तरोववाई सुत्र पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 १० ॥ श्रीप्रश्न व्याकरण सुत्र पठन गुण यु ० ॥  
 ११ ॥ श्रीविपाक सुत्र पठन गुण यु ० ॥  
 १२ ॥ उत्पाद पूर्व पठन गुण यु ० ॥  
 १३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 १४ ॥ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 १५ ॥ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 १६ ॥ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ता ० ॥  
 १७ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु ० ॥  
 १८ ॥ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 १९ ॥ कर्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 २० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 २१ ॥ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय ० ॥  
 २२ ॥ अविध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु ० ॥  
 २३ ॥ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण यु ० ॥  
 २४ ॥ क्रिया विशाल पूर्व पठन गुण यु ० ॥  
 २५ ॥ लोक विंडुसार पूर्व पठन गुण यु ० ॥

॥५॥ इस रीतसे पंचवीश नमस्कार करै ( खमाहोके ) अन्तथूस ०  
 ( इत्यादि कहिके ) पंचवीश लोगस्सका काउत्सगग करै । एक लोगस्स क  
 हके पारे । ( पीठे ) पुर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवश विधिः ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अथ पंचम दिवश विधि लि ० ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ( उं झी णमोलोए सबसाहणं ) इस पदको ( १ ) हजार  
 गुणनो करै । साधु पद कालै वर्ण है ( इससे ) उमदका आंखिल करै । सर्व  
 साधु पदके सत्तावीश गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ५ ॥ ॥५॥

॥ ५ ॥ साधु पदके ( २७ ) गुण ॥ ५ ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणवत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥

- २ ॥ मृषावाद विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
- ३ ॥ अदत्तादान विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
- ४ ॥ मैथुन विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
- ५ ॥ परिग्रह विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
- ६ ॥ रात्रिभोजन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ॥
- ७ ॥ पृथ्वीकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- ८ ॥ अप्पकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- ९ ॥ तेजकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १० ॥ वाजकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- ११ ॥ वनस्पतिकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १२ ॥ व्रसकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १३ ॥ एकेंद्री जीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १४ ॥ वेइंद्रीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १५ ॥ तेइंद्री जीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १६ ॥ चौरिंद्रीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १७ ॥ पंचेंद्रीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १८ ॥ लोभ निग्रह काय श्रीसा० ॥
- १९ ॥ क्रमा गुण युक्ताय श्रीसा० ॥
- २० ॥ शुभ्र ज्ञावना ज्ञाव काय श्रीसा० ॥
- २१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
- २२ ॥ संयम योग युक्ताय श्रीसा० ॥
- २३ ॥ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
- २४ ॥ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
- २५ ॥ काय गुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
- २६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीशहसहण तत्पराय० ॥
- २७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें सातवीश नमस्कार करै । ( खमा होके ) अन्नत्यू  
स० ( इत्यादि कहिके ) सातवीश लोगस्सका कान्त्सग करै । एक लोग

स्स कहके पारे । (पीठे) पूर्वोक्त करणी करै । ( यह पंच परमेष्टि पदके सर्व गुण मिलाएँसँ (१०८) होय (इसीसँ) जैनमें मालाके दाणे (१०८) होते हैं ॥ इति पंचम दिवश विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्ठ दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उं झी णमो दंसणस्स ) इस पदको (१) हजार गुणनो करै । दर्शन पद सपेद वर्ण ( इससँ ) तंडुलका आंवल करै । सम्यक्के सतस ठि गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सम्यक्के सतसठि जेद लि० ॥ ❀ ॥

- १ ॥ परमार्थ संस्तवरूप श्री सददर्शनाय नमः ॥
- २ ॥ परमार्थ ज्ञातृसेवन रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जन रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ४ ॥ कुदर्शन वर्जन रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ५ ॥ शुश्रूषा रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ६ ॥ धर्म राग रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ७ ॥ वैयावृत्त रूप सददर्शनाय नमः ॥
- ८ ॥ अहं विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- ९ ॥ सिद्ध विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १० ॥ चैत्य विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- ११ ॥ श्रुत विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १२ ॥ धर्म विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १४ ॥ आचार्य विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १६ ॥ प्रवचन विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १७ ॥ दर्शन विनयरूप सददर्शनाय नमः ॥
- १८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सद० ॥
- १९ ॥ संसारे जिनमत्तिसार मिति चिंतनरूपस० ॥
- २० ॥ संसारे जिनमत्तिस्थित साध्वादिसार मिति चिंतनरूप सद० ॥

- २१ ॥ शंका दूषण रहिताय सदृशनाय नमः ॥  
 २२ ॥ कांक्षा दूषण रहिताय सदृशनाय नमः ॥  
 २३ ॥ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय ० ॥  
 २४ ॥ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय ० ॥  
 २५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय ० ॥  
 २६ ॥ प्रवचन प्रज्ञावकरूप स ० ॥  
 २७ ॥ धर्मकथा प्रज्ञावकरूप स ० ॥  
 २८ ॥ वादी प्रज्ञावकरूप स ० ॥  
 २९ ॥ नैमित्तिक प्रज्ञावकरूप स ० ॥  
 ३० ॥ तपस्वी प्रज्ञावकरूप सदृ ० ॥  
 ३१ ॥ प्रज्ञप्तयादि विद्या नृप्रज्ञावकरूप स ० ॥  
 ३२ ॥ चूर्ण जनादि सिद्धप्रज्ञावकरूप स ० ॥  
 ३३ ॥ कविप्रज्ञावकरूप सदृशनाय नमः ॥  
 ३४ ॥ जिनशाशने कौशलता नूषणरूप स ० ॥  
 ३५ ॥ प्रज्ञावना नूषणरूप स ० ॥  
 ३६ ॥ तीर्थसेवा नूषणरूप स ० ॥  
 ३७ ॥ थैर्यता नूषणरूप सदृशनाय नमः ॥  
 ३८ ॥ जिनशाशने नृक्ति नूषणरूप ० ॥  
 ३९ ॥ उपशम गुणरूप सदृशनाय नमः ॥  
 ४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस ० ॥  
 ४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्री सदृशनाय नमः ॥  
 ४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस ० ॥  
 ४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस ० ॥  
 ४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जनरूप श्रीस ० ॥  
 ४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीस ० ॥  
 ४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप श्रीस ० ॥  
 ४७ ॥ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप ॥  
 ४८ ॥ परतीर्थकादि अशनादि दानवर्जनरूप श्रीस ० ॥

४९ ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप श्रीस० ॥

५० ॥ राजाजियोगाकार युक्त श्रीस० ॥

५१ ॥ गणाजि योगाकार युक्त श्रीस० ॥

५२ ॥ बलाजि योगाकार युक्त श्रीस० ॥

५३ ॥ सुराजि योगाकार युक्त श्रीस० ॥

५४ ॥ कांतार वृत्याकार युक्त श्रीस० ॥

५५ ॥ गुरु निग्रहकार युक्त श्रीस० ॥

५६ ॥ सम्यक्त चारत्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्री० ॥

५७ ॥ चारत्र धर्म पुरस्य चार मिति चिंतन० श्रीस० ॥

५८ ॥ चारत्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ॥

५९ ॥ चारत्र धर्मस्याधार मिति चिंतन० श्रीस० ॥

६० ॥ चारत्र धर्मस्य नाजन मिति चिंतन० श्रीस० ॥

६१ ॥ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निध मिति चिं० श्रीस० ॥

६२ ॥ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ॥

६३ ॥ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥

६४ ॥ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान यु० श्री० ॥

६५ ॥ सचजीव कृत कर्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थान यु० ॥

६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ॥

६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥

॥ ॐ ॥ इस रीतसें सतसठि नमस्कार करै । ( खमाहोके ) अन्नत्यू ससि  
एणं० ( इत्यादि कहिके ) ( ६७ ) लोगस्स ( अथवा ) ७ लोगस्सको काव  
सग्य करै । एक लोगस्स कहके पारै । ( पीठे ) पूर्वोक्त करणी करै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( उं झी नमो नाणस्स ) इस पदको ( २ ) हज्जार गुणनो करै ।  
ज्ञान पद उज्जल वणं है ( इससें ) । तंडुलका आविज्ज करै । इक्कावन जेद  
ग्यान पदके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ज्ञानपदके ( ५१ ) जेद लि० ॥ ॐ ॥

१ ॥ स्पर्श नेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥



२ ॥ रसनैद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥

३ ॥ घ्राणैद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥

४ ॥ श्रोत्रैद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

५ ॥ स्पर्शनैद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

६ ॥ रसनैद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

७ ॥ घ्राणैद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥

८ ॥ चक्षुरिद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥

९ ॥ श्रोत्रैद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥

१० ॥ मनऽर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥

११ ॥ स्पर्शनैद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥

१२ ॥ रसनैद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥

१३ ॥ घ्राणैद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥

१४ ॥ चक्षुरिद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥

१५ ॥ श्रोत्रैद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥

१६ ॥ मनै करी ईहा मति ज्ञानाय नमः

१७ ॥ स्पर्शनैद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥

१८ ॥ रसनैद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥

१९ ॥ घ्राणैद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥

२० ॥ चक्षुरिद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥

२१ ॥ श्रोत्रैद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥

२२ ॥ मन करी अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥

२३ ॥ स्पर्शनैद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥

२४ ॥ रसनैद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥

२५ ॥ घ्राणैद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥

२६ ॥ चक्षुरिद्री धारणा मति ० ॥

२७ ॥ श्रोत्रैद्री धारणा मति ० ॥

२८ ॥ मनो धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥

२९ ॥ अक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥

- ३० ॥ अनक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥  
 ३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३७ ॥ सपर्यं वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३८ ॥ अपर्यं वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ३९ ॥ गमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥  
 ४१ ॥ अंग प्रविष्ट श्रुत ॥  
 ४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत ॥  
 ४३ ॥ अणुगामि अवधिग्यानाय नमः ॥  
 ४४ ॥ अणूणगामि अवधिग्यानाय नमः ॥  
 ४५ ॥ बहुमान अवधि ॥  
 ४६ ॥ हीयमान अवधि ॥  
 ४७ ॥ प्रतिपाती अवधि ॥  
 ४८ ॥ अप्रतिपाती अवधि ॥  
 ४९ ॥ ऊजुमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥  
 ५० ॥ विपुलमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥  
 ५१ ॥ लोका लोक प्रकाशक श्री केवलग्यानाय नमः ॥

॥ ✽ ॥ इस रीतसे ( ५१ ) नमस्कार करे । ( खम्हा होके ) अन्नत्थ ससिएणं ( इसादि कहे ) ( ५१ ) लोगस्सका कान्तसग्ग करिके । प्रगट लोगस्स कहे । पीठे सवें पूर्वोक्त करणी करे । इति सत्तम दिवश विधिः॥७

॥ ✽ ॥ अय अष्टम दिवश विधि लि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( उंझी एमो चारित्तस्स ) इस पदको ( १ ) हज्जार गुणनो

करै । चारित्र पदका नुज्वल वर्ण है । (इसीसैं) तंडुलका आंविदकरै । सि  
तर जेद चारित्र पदके । चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पदके ( ७० ) जेद लि० ॥ ❀ ॥

- १ ॥ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
- २ ॥ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
- ३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
- ४ ॥ मैथुन विरमण रूप चारित्राय ० ॥
- ५ ॥ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय ० ॥
- ६ ॥ क्षमा धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ॥
- ७ ॥ आर्यव धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ॥
- ८ ॥ मृडता धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ॥
- ९ ॥ सुक्तधर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ॥
- १० ॥ तपो धर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ॥
- ११ ॥ संयमधर्म रूप चारित्रेज्यो नमः ॥
- १२ ॥ सत्य धर्म रूप चारि ० ॥
- १३ ॥ शौच धर्म रूप चारि ० ॥
- १४ ॥ अकिंचन धर्म रूप चारि ० ॥
- १५ ॥ व्रत धर्म रूप चारि ० ॥
- १६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेज्यो नमः ॥
- १७ ॥ नुदग रक्षा संयम चारि ० ॥
- १८ ॥ तेज रक्षा संयम चारि ० ॥
- १९ ॥ वाज रक्षा संयम चारि ० ॥
- २० ॥ वनस्पति रक्षा संयम चारि ० ॥
- २१ ॥ वेइंद्री रक्षा संयम चारि ० ॥
- २२ ॥ तेइंद्री रक्षा संयम चारि ० ॥
- २३ ॥ चौरिंद्री रक्षा संयम चारि ० ॥
- २४ ॥ पंचेन्द्री रक्षा संयम चारि ० ॥
- २५ ॥ अजीव रक्षा संयम चारि ० ॥

- २६ ॥ प्रेक्षा संयम चारि० ॥  
 २७ ॥ उपेक्षा संयम चारि० ॥  
 २८ ॥ अतिरक्त वस्त्र नक्तादि परमण त्यागरूप संयम चारि० ॥  
 २९ ॥ प्रमार्जन रूप संयम चारि० ॥  
 ३० ॥ मनः संयम चारि० ॥  
 ३१ ॥ वाक्संयम चारि० ॥  
 ३२ ॥ काया संयम चारि० ॥  
 ३३ ॥ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥  
 ३४ ॥ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥  
 ३५ ॥ तपस्वी वैयावृत्य रूप चारि० ॥  
 ३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूप चारि० ॥  
 ३७ ॥ गिलाण साधु वैयावृत्यरूप चा० ॥  
 ३८ ॥ साधु वैयावृत्य रूप चारि० ॥  
 ३९ ॥ श्रमणो पाशक वैयावृत्यरूप चा० ॥  
 ४० ॥ संघ वैयावृत्यरूप चारि० ॥  
 ४१ ॥ कुल वैयावृत्य रूप चारित्रे० ॥  
 ४२ ॥ गण वैयावृत्य रूप चारि० ॥  
 ४३ ॥ पशुपंम्नादि सहित व्रशति वसण ब्रह्म गुप्त चारि० ॥  
 ४४ ॥ स्त्री दास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥  
 ४५ ॥ स्त्री आशान वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥  
 ४६ ॥ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म०  
 ४७ ॥ कुड्यंतर सहित स्त्री दाय जाव सुणन वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ४८ ॥ पूर्व स्त्री संजोग चिंतन वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ४९ ॥ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ५० ॥ अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ५१ ॥ अंग पिच्छा वर्जन ब्रह्म० ॥  
 ५२ ॥ अणशण तपोरूप चा० ॥  
 ५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ॥

५४ ॥ वित्ति संखेव तपो रूप चा० ॥

५५ ॥ रस त्याग तपो रूप चा० ॥

५६ ॥ कायकिलेस तपो रूप चा० ॥

५७ ॥ संलेखणा तपो रूप चा० ॥

५८ ॥ प्रायश्चित्त तपो रूप चा० ॥

५९ ॥ विनय तपो रूप चा० ॥

६० ॥ वेयावच्च तपो रूप चा० ॥

६१ ॥ सिञ्जाय तपो रूप चा० ॥

६२ ॥ ध्यानतपो रूप चा० ॥

६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ॥

६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ॥

६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ॥

६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ॥

६७ ॥ क्रोध निग्रह करण चा० ॥

६८ ॥ मान निग्रह करण चा० ॥

६९ ॥ माया निग्रह करण चा० ॥

७० ॥ लोभ निग्रह करण चारित्रेज्यो नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै । (खमा होके । अनन्त ससि एणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सका कानुसंग करिके । एक लोगस्स कहै (पीठे) पूर्वोक्त करणी सब करै । इति अष्टम दिवश विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (नै ऊँ एमो तवस्स) इस पदको (१) हजार गुणनो करै । तप पदका उज्ज्वल वर्ण है (इसीसें) तंडुलका आंविल करै । पचास जेद तप पदके चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तप पदके (५०) जेद लि० ॥ ❀ ॥

१ ॥ यावत कथक तपसे नमः ॥

२ ॥ इत्वर तप जेद तपसे नमः ॥

- ३ ॥ वाह्य ऊणोदरी तपजेद तपसे नमः ॥
- ४ ॥ अर्ज्यंतर ऊणोदरी तपजेद तपसे नमः ॥
- ५ ॥ द्रव्यतप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥
- ६ ॥ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥
- ७ ॥ कालतप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥
- ८ ॥ जाव तप वित्ती संखेप तपजेद तपसे नमः ॥
- ९ ॥ काय किलेस तपजेद तपसे नमः ॥
- १० ॥ रस त्याग तपसे नमः ॥
- ११ ॥ इंद्री कपाय जोग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
- १२ ॥ स्त्री पशु पंम्कादि वर्जितस्थान अवस्थित संलीण ता ॥
- १३ ॥ आलोयण प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- १४ ॥ पम्क्कमण प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- १५ ॥ मिश्र प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- १६ ॥ विवेक प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- १७ ॥ उपसर्ग प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- १८ ॥ तप प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- १९ ॥ जेद प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- २० ॥ मूल प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- २१ ॥ अणवस्थित प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- २२ ॥ पारंचिय प्रायत्ति तपसे नमः ॥
- २३ ॥ त्याग विनय रूप तपसे नमः ॥
- २४ ॥ दर्शन विनय रूप तपसे नमः ॥
- २५ ॥ चारित्र विनय रूप तपसे नमः ॥
- २६ ॥ गुर्वादिक मनविनय रूप तपसे नमः ॥
- २७ ॥ वचन विनयरूप तपसे नमः ॥
- २८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ॥
- २९ ॥ उपचारक विनयरूप तपसे नमः ॥
- ३० ॥ आचार्य वेयावच्च तपसे नमः ॥

- ३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३२ ॥ साधू वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३४ ॥ लघु सिख्यादि वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३६ ॥ श्रमणो पाशक वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३७ ॥ संघ वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः ॥  
 ४० ॥ वायणा तपसे नमः ॥  
 ४१ ॥ प्रह्णनातपसे नमः ॥  
 ४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः ॥  
 ४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥  
 ४४ ॥ धर्म कथा तपसे नमः ॥  
 ४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥  
 ४६ ॥ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥  
 ४७ ॥ धर्म ध्यान चिंतन तपसे नमः ॥  
 ४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ॥  
 ४९ ॥ वाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥  
 ५० ॥ अर्च्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें ( ५० ) नमस्कार करै । ( खडा होके ) अन्नत्थु ससि एणं ( इत्यादि कहै ) ( ५० ) लोगस्सका कानसग्ग करिके । एक लोगस्स कहै । ( पीठे ) पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरुकेपास जाणेकी विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुचि दिन, शुचि घनी देखके, अन्ना वस्त्र आभूषण पहरे । लिलामके तिलक करै ॥ दोव । सरसुं । मस्तकमें धारण करै । हाथके मो

ली बांधके । अद्भुत । सुपारी । श्रीफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोकनाणो लेके । नवकार गुणतोयको । गुरुके पास जावै । द्वादशावर्त्त बांधणा कर के । ग्यान पूजा करै । पीठे बज्रत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुखसँ उन्नी तप ग्रहण करै ( सो ) तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखेंगे ॥ इति तपस्याग्रहण करणेंको पोशाल जाणेकी विधि ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ संक्षेप ऊजमणा विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पंच वर्णके धान्यसँ सिद्धचक्रको मंनन करै । सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे । पहिलै गढ़माँहे । अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै । पद १ के वर्ण गुण प्रमाणें । रत्नादिक चढावे । ( और ) पंचवर्णके फल । पंचवर्णके धान्य । नवना खेरका गोटा रंगके । जिसपदका जैसा वर्ण होइ ( तैसे ही ) रंग का गोला चढावै । पंच वर्णी ( ए ) धजा चढावै ॥ दूसरै बलयमें । सोले श्रीफल ( अथवा ) पूंगी फल चढावै । तीसरै बलयमें ( ४८ ) तुहारा चढावै ॥ नव निधानके ठिकाणें ( ए ) नव वना फल चढावै ॥ दश दिग्पाल । नवग्रहको । पद्मान्न प्रमुख चढावै ॥ इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध चक्र स्थापना । घर देहरांतर आगे करै । ( और ) जिनमंदिर माँहे । बाह्य मंडप ५॥७ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै । विस्तारसँ सब विधि गुरुके वचनसँ करके । नवपदजीकी पूजा पढायके कलस ढालै । धवल मंगल गीतगान गावै । वाजित्र बजावै । ( इसीतरे ) महा महोत्सव । उदार चित्तसँ करै । मंगल दीप आरती प्रमुख करै । दूसरै दिन विसर्जन करै ॥ इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ सिद्धचक्र संक्षेप उपापन विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अब ( १० ) में दिन गुरुके पास आके उन्नी तपको पारें । तप पारण की विधि आगे लिखेंगे । ( तथा ) उपापनमें ग्यान जक्तिके कारण । ए पूगा । ए बीटांगणा । ए पुस्तक । ए लेखण । ए उवणी । ए जिल मिला । ए रुमाल । ए मोरा । ए मिजासणा । ए थापना । ए चंद्रआ । ए पूठि आ । ए आरती । ए कलश । ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा । ए



तिलक । ए मुगट । ( इत्यादिक ) अनेक नव नव चीज वणावै । शक्ति न होय तो यथाशक्ती रोकनाणो चढावै । देव पदको देवपदमें देवै । गुरु पद को गुरु पदमें देवे । ग्यानपदको ग्यानखाते लगावे । इत्यादिक यथाजोग्य शुभ क्षेत्रै खरच करै ॥ इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापन विधिः ॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादशमास सकल पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्र प्रथम चैत्रमास चतुर्पवाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चैत्रमास में । चैत्र सुद ७ सैं लेके, चैत्र सुद १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है । ( सो ) अति उत्तमता का कारण कहते है । वारै मासमें तीन अठाही महोत्सव आता है । ( जिसमें ) । चैत्र आसोज का ( १ ) अठाई महोत्सव साखता है । चैत्र सुद ८ ( सैं ) चैत्र सुद ( १५ ) आसोज सुद ८ ( सैं ) आसोज सुद १५ ( यह ) दोनुं मासके ( ८ ) दिनोंमें । निश्चै सेती । च्याखनिकाय के देवता इंद्र सब जेला होके । आठमा नंदीसर घीप जावै ( पुन्याहं १ ) कहते थके । अष्ट द्रव्यसैं पूजन करै । गीत गान नाटकादिकसैं अनेक तरेकी भक्ति करै । पीठे नवमें दिन । अपणें १ जन्मकुं सफल मानते ऊए । अपनैं १ । देवलोक जावै । ( इसी माफक ) तीसरी अठाई आसाठ चौमासैकी ( १४ ) पीठे । ( ४१ ) दिन जानेंसैं, संवत्तरी पर्व साचवणें को ( ८ ) दिन अठाई महोत्सव करै । अब यह ( ९ ) दिनोंमें । ( ४ ) पर्वसेवन करणे योग्य है ॥ ❀ ॥ प्रथम नवपद जीकी भली । इसी नव दिनुंमें विधिसंयुक्त करे । ( सो ) विधिपूर्व लिखी है । इससैं इहां न लिखी । यह सिद्ध चक्रमंजुल ( और ) नवपदजी की भलीका अधिकार ( दशमा विद्या प्रवाद पूर्वसैं ) उद्धारण करके । जव्य जीवोंके अनंत सुखप्राप्तिके कारण । चवदै पूर्वधारक श्री नंद्रबाहु स्वामी जीनैं प्रशिक्ष किया । ( इसीसैं ) सर्व जव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है । यह तपको अपणी कुयुक्ति लगायके । जो पुरुष खंमन करते है । उस का अनंत संसार । जगवानका बचनसैं मालुम होता है ( शास्त्रोंमें लिखा है ) हे गोतम । अपणी कुटलताईसैं ( जो ) सुत्रको एक हरफ उत्यापण करैगा ( सो ) अनंत संसार बढावेगा । ( सुत्र किसकुं कहते है ) स

तं गण हर रश्यं । तद्देव पतेप बुद्धि रश्यंच । सुय केवल्लिणा रश्यं । अ  
ग्निन दस पुष्टिणा रश्यं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणवरोंका रचाऊवा ( तेसैंही )  
प्रतेक बुद्धिका रचा ऊआ । श्रुतकेवली चवदै पुर्वधारी का रचा ऊवा ।  
संपूर्ण दश पुर्वधारीका रचा ऊआ । कों । जगवानने सुत्रकी संज्ञा कही  
है इसीसैं प्रमाण है ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ अष्टापदउत्तरीकरण विधि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ इसी चैत्रमासमें सुद ( ८ ) सैं लेके । पूर्णमासी तक । ( के  
ई जन्म जीव ) अष्टापदजीकी उत्तरी करते है ( जिसमें ) पम्कमणा ।  
देववन्दन । देवपूजा । इत्यादिक सर्व विधि नवपदजीकी उत्तरी तुल्य करै  
( इतना विशेष है ) श्रीअष्टापद तीर्थाय नमः । ( इसी पदको ) २०००  
गुणनो ( वा ) बीस जाप करै । अरिहंत पदके १२ गुणकों नमस्कार क  
रै । आंखिल ( वा ) एकासणेंको पञ्चदखाण करै । पीठे पूर्णमासीके दिन  
अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके । विधिसंयुक्त ( २४ ) जगवंतकी  
पूजा करै ( एसैं ) चैत्र । आसोज । ( २ ) उत्तरी करणेंसैं । ( ४ ) वर  
समें । एक उत्तरी करनेसैं ( ८ ) वरसमें संपूर्ण होय । पीठे जक्संयुक्त ऊं  
जमणो करै ( साहमी वज्रल करै ( इत्यादि ) विशेष विधि गुरूके मुखसैं  
जानके करै ) ॥ ✽ ॥ इति द्वितीय अष्टापद उत्तरी पद्माधिकारः कथितः ॥

॥ ✽ ॥ श्रीवीरजिन जन्म कल्याणक पर्वधिकारः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( अथ तीसरो पर्व ) चैत्र सुद १३ के दिन । श्रीमहावीरस्व  
ामी को जन्म कल्याण ज्यो है ( इसीसैं ) सर्व त्रिकाणें । धर्मरागी पुरप  
गुरूके मुखसैं समऊके जलवावादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकको महोष्ठ  
व करै । ( एसैंही ) ऊद्धिवंत श्रावककों, धर्मका उद्योत के खातर, सर्व ज  
गवंतके कल्याणकके दिन ( जो ) कल्याणक होय । उसीका महोष्ठव  
करना चाहियै । औसी शक्ति न होय ( तो ) शाशनके अधिपति । देवा  
धिदेव ( श्रीमहावीर स्वामी के ) स्मरण कल्याणकसैं लेके । निर्वाण क  
ल्याणक पर्यन्त । ( जिस दिन ) जो कल्याणक होय । उसीका महोष्ठव  
पूजन करणा चाहियै ( इसीसैं ) धर्मका उद्योत होय । श्रीसंवमें परम आ

नंद होय ॥ ❀ ॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्व्याधिकारः कथितः॥

॥ ❀ ॥ चैत्री पूनम पर्व्याधिकारः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चैत्री पूनम पर्वका अधिकार (समाचारी शतकानुसारे) लिखते है ॥ ❀ ॥ प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजय पर्वतकों स्थापन करै (तिसपर) पट्टा रखके । श्रीपुंमरीक गणधर (वा) श्रीज्ञबन् देव खामी का विंवस्थापन करै । अक्षत मोत्यां करके पर्वतकों बधावै । केशर चंदनसें पर्वतकों पूजे । सब श्रीसंघ इकठे होके । पर्वतके । चौफेर तीन प्रदक्षणा देवै । पीठे पूजन सुरू करै (यथा) ॥ ❀ ॥ दश (१०) वीश (२०) तीश (३०) चत्ता (४०) पन्ना (५०) पुष्पदामेण लहई । चन्त्य ठठ अठम दसम ड्वालसम फलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम (१०) प्रकारसें पूजनके अधिकार लिखते है ॥ ❀ ॥ एकाग्रचित्तसें । अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमा कों न्हवण करावै । पीठे श्रीसंघ खडा होके । (१०) नमस्कार उच्चार पूर्वक । १० फूल (तथा) १० फूलमाला चढा के । प्रतिमाके १० तिलक करै । (यथाशक्ति) सुपारी । नालेर (इत्यादि) सर्व चीज उत्कृष्टसें दश ९ ॥ जघन्ये नालेर १ सुपारी १० और फलफूल यथासंभव चढावै । धूप खेवै । कपूरकी आरती करै । पीठे सिद्ध गिरी गुणगर्जित चैत्यवंदन करके । पांचशक्र स्तवे देव वांदै । १० खमा समण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदकों १० वेर नमस्कार करै । पीठे (श्रीसेत्रुंजय पुंमरीक आराधनार्थ करेमि कान्तसंग) । अनत्थु ससि० कहके । १० लोगस्सका कावसग्ग करै । (इहां केई आचार्य कहै) वज्रत उह्व होय । बेला कम रहै । (तव) एक लोगस्स को कावसग्ग करै । १० जैतीके ठिकाणें १० गाथाको स्तवन कहै । पीठे अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ ❀ ॥ इति प्रथम पूजाविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अब इसी तरे) वीश । तीश । चालीश । पच्चास यह च्या रौपूजाके जेद जान लेना । (इतनाही विसेष है) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणें २० की विधिकरै ॥ तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें । ३० की विधि करै ॥ चोथी पूजामें १० ठिकाणें, सब विधि ३० की करै ॥ पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै ॥ (तथा) सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः ।

इस पदको १००० गुणनो करै । उत्कृष्टसैं पांचू पूजामें । जूदी १ धजा चढावै । जघन्यसैं पांच पूजा किये । पीठे १ धजा चढावै । यह तप । गुरूके मुखसैं लेके । जघन्यें १ वरस । ( वेसी होसकै तो ) ७ वरस । उ तत्कृष्टसैं ११ वरस । विधि संयुक्त तपस्या करै । गुरूके मुखसैं उपदेश सु ऐं । संपूर्ण तप ऊवांपीठै । सिद्ध गिरीकी यात्रा करै । ग्यान पूजा करै । गुरु नत्ती करै । साहमी वृत्तल करै । ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन । श्री कृपञ्ज देव स्वामीके । प्रथम गणधर श्री पुंमरीकजी । पांचकोमि साथ साथ अक्षय सुखकों प्राप्तनये ( इसीसैं ) प्रथम श्रीनरथ चक्रवर्ति । चैत्री पूनमको आराधन करके । श्री पुंमरीक गणधर की प्रतमा स्थापन करके । ( यह ) चैत्री पूनम पर्व प्रशिक्ष किया ॥ यह चैत्री पूनम आराधन करें सैं । इम जन्ममें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय । स्त्रियोंके पुत्र पुत्र्यादिक को बांठा पूरण होय । ( और ) आधि व्याधि सोग संताप सब दूर होय । परजन्ममें देवादिक ऊर्द्धिप्राप्त होय । क्लीण कर्मी होनसे अक्षय सुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चैत्री पूनम स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) पयप्रणमीरे जिन वरना सुपसान्धै । पुंमरगिररे गा इसजं सुज्ज जाउलै । मति सुरगिररे सहस जोज जो मुख ऊवै । किम ते नरे विमला चलना गुण तवै । ( उल्लाखो ) किम तवै गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा वज्ज । गिरायना गुणवे अनंता कहै जिणवर मुख सज्ज । निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण आपियै । तिर यंच नारक तणी गतिना डुःख दूरै राखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिन राजारे पहिलो आदि जिनेसरू । तसु नंदनरे चक्रवर्ति भरतेसरू । तसु अंगजरे पुंमरीक गुण गण निलो । शम दम रसरे विनय विवेक गुणे नलो ( उल्लाखो ) गुणनलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम सिवपुरी । पुंमरीक गणधर प्रथम बिहरै सुमति गुपतै संचरी । पण कोमि साथे विमल गिरवर मुगति पदवी पाव ए । सुदि चैत्र पूनम तेण ए गिरि पुंमरीक कहावण ॥ १ ॥ ( चाल ) द्वि. चैत्रीरे पूनम पर्व सुहामणो । सेजुं जैरे आराध्यां फल ऊवै धणो । मन सुद्धे आपणवै थानक रही । आ

राध्यारे यात्र पुन्य पामें सही ( उल्लाखो ) ते पुन्य पामें दान तप जप ध  
 र्म ध्यान मने धरै । वज्र जाव जत्तैं त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ।  
 जावना जावै तेण दिक्कौ पंच कोमि गुणो फलै । अनुक्रमें ते नर मुगति  
 पामी सिद्ध सुंदरनें मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दश बीशारे तीश चालीश पूजा  
 कही । पन्नासारे श्रावक निरती सरदही । चतुथ ठहरै अठम दसम डवा  
 लसै । पूजा फलरे अनुक्रम ए मुऊ मन वसै । ( उल्लाखो ) मनवसै पूज  
 कपूर धूवै मासखमण फले बली । सामन धूवे पक्खनो फल जे करै मननी  
 रली । हिव पूजनी विधि जेम गुरु मुख सुणीअठे परंपरा । ते मोहमाया कप  
 ठंमी सुणो जवीयण सादरा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ( ढाल ) तंडुल राशि विमल गिर  
 थापी । तसुऊपरि पटादिक आपी । प्रतिमा आदि जिणेंसर केरी । पुंमरी  
 कनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेतुंज गिरिनें मन चिंतीजै । करमतणा मल दूर  
 करीजै । मोती तंडुल करीय बधावो । तीन प्रदक्षिण पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंग  
 लीक पहिला तिहां आठ । करमबंध दूरै करि आठ । प्रतिमा मूल सनात्र  
 करेवा । जिनवरना गुणहीयमै धरेवा ॥ ७ ॥ ऊनाथई नवकार गुणंता ।  
 दश दश जैती तिलक करंता । माला पुष्प पुंगीफल ढोवो । मेरु जरण  
 वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल ) शक्र स्तव पांचे देववांदै । जघन्यना वंदण  
 पाप ठेदै । दशो नमस्कार करंत जैती । राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ९ ॥  
 आराधिवा कीजै कानुसंग । जिणें कीयै जाजै कर्म वग्ग । लोगस्स उ  
 ज्जोय दसे बखाणुं । वेला प्रमाणें अहि एगआणुं ॥ १० ॥ इणें प्रकारै धुर  
 पूज एह । इसी परै बीजी च्यार तेह । दशां तणी वृद्धि तिहां गिणीजै ।  
 एक चित्त सूधै सुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजा तणो रोप तिहां करीजै ।  
 एकेक पुठै अथवा गिणीजै मज्जुतरै आरति मंगलेवो । पठै प्रभु आगलि  
 ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथायोगै संघपूजा आद  
 रो । साहमी वज्जल करो जविका जव समुद्र लीलावरो । संपदा सोहग  
 तेह मानव रुद्धि वृद्धि वज्जलहै । श्री अमरमाणिक सीस सुपरै साधु की  
 रति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्रीचैत्री पुनिम स्तवनम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ अथ नंदीसर दीप स्तवन लि० ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ नंदीसर बावज जिनालै । शाश्वता चौमुखसोहरे । रुखजा

नन चंद्रानन वारुणेण । वरधमान मन मोहेरे (नं०) ॥ १ ॥ आठमो दीप  
 नंदीसर अदन्नुत । बलयाकार बिराजैरे । तेहनें मध्य चिज्जं दिश शोभत ।  
 अंजन गिरवरगजैरे ॥ २ ॥ (नं०) जोयण सहस चउरासी ऊंचा । ऊंच  
 पणें अन्निरामारे । मूलै पृथुल सहसदश जोयण । ऊवरि सहस इक रथा  
 मारे ॥ ३ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशाद प्रभुना । अति उत्तंग उदारारे । सा  
 धूर्जधा विद्याचारण । वादै विविध प्रकारारे ॥ ४ ॥ (नं०) चैत्ये चैत्यै एक  
 सो चोवीस । विंव संख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवो नविजन नक्तें । सुध  
 आगम करि साखीरे ॥ ५ ॥ (नं०) उंचपणें सज्ज जोयण वज्जत्तर । सो  
 जोयण आयामारे । पिज्जलपणें पंचास जोयणना । प्रभु प्राशाद सुगामारे  
 ॥ ६ ॥ (नं०) धनुष पांचसैं आयत प्रभुनी । विविध रतनमय कायारे । जि  
 न कल्याणक उन्नव करवा । सुरपति नगतें आयारे ॥ ७ ॥ (नं०) अंजन  
 अंजन चिज्जं गिरी उवरे । चौमुख बावि विशालारे । बावि बावि विच इक  
 इक पर्वत । राजतरंग रसालारे ॥ ८ ॥ (नं०) चौसठि सहस जोयण उत्तंगै ।  
 दश सहस सम पिज्जलारे । चिज्जंदिशि सोल सोहै दधिमुख गिर । तिहां प्रा  
 शाद सुविमलारे ॥ ९ ॥ (नं०) बावि बाविनें अंतर विदिशैं । रतिकर पर्व  
 त रूमारे । दोय दोय संख्या ए जगदीसैं । कक्षा नही एकूमारे ॥ १० ॥  
 (नं०) जोयणसहस मान दश ऊंचा । दश दश सहस विस्तारारे । ऊल्लरि स  
 म संगण जगदगुरु । निश्चय ए निरधारारे ॥ ११ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशा  
 द सतोरण । अंजनगिरि परि माणेंरे । जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज । श्रीजि  
 नराज वखाणेंरे ॥ १२ ॥ (नं०) इम प्राशाद प्रभूना वावन । नंदीसर वरची  
 पैरे । द्रव्य जाव विध पूज करंता । मोह महाजड जीपैरे ॥ १३ ॥ (नं०)  
 प्रवचन सार उदार प्रकरणें । जीवाजिगमैं जाणारे । इम अधिकार ठै ग्रंथ  
 अनेकैं । इहां संका मत आणारे ॥ १४ ॥ (नं०) जिम सुरपति विरचै ति  
 हां पूजा । ते अनुजव इहां ल्यावारे । ध्यावो जिम पावो परमात्म । जैन  
 चंद्र गुणगावारे ॥ १४ ॥ (नं०) इति नंदीसर दीप स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ नंदीश्वर तपस्याकरण विधि लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ शुभ दिनशुभ घनी गुरूके पास नंदीसर तप ग्रहण करै ।  
 नंदीसर दीपके चारूं दिश तरफ (५२) चैत्यकी अपेक्षावें । अमावसके अ

मावस (५२) उपवास करै । जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय । उसी नामको २००० गुणनो करै ( सो लिखते है ) ॥ ❀ ॥

॥१॥ ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥❀॥२॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥❀॥

॥ ३ ॥ श्रीवारषेणजी सर्व ० ॥ ४ ॥❀॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्व ० ॥ ❀ ॥

( यह ) चार नामकों ( ४ ) बेर सुलटा ( ४ ) बेर उलटा गिएँ । अनुक्रमें ( १३ ) उपवास करनेसेँ एक उली होय ॥ ( ४ ) बार उली करेँसेँ, यह तप संपूर्ण होय । पीठे शक्ति माफक ऊजमणो करै । नंदीसर दीप को मंमल बणावै । पूजा करावै । ( इत्यादि महामहोत्सव करके ) । ग्यान पूजा करै । साहमी बहल करै । मंमल पूजाकी विसेष विधि गुरूके वचनसेँ जाणके करै । इति नंदीसर तपस्याधिकारः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वैशाख मासमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाखके महिनेमें ( मिति ) वैशाख सुद ३ है ( सो ) अक्षय तृतीया नामसेँ पर्व प्रसिद्ध है ( इस दिन ) श्रीऋषभ देव स्वामीके । चारित्र ग्रहण कियां पीठे । वारै माशीका पारणा । सोमयश राजाके पुत्र । श्रीश्रेयांस कुमारजीके हाथसेँ । इक्षुरस सेती ऊवा ( उसी समय ) उत्तम दानके प्रज्ञावसेँ । सर्व देवगण प्रमोदवंत होके । सुगंध जलकी वर्षा ॥ १ ॥ सुगंध पुष्पोंकी वर्षा ॥ २ ॥ ( १२॥ ) कोम सोनइयोंकी वर्षा ॥ ३॥ आकास सेँ अहो दानं २ ऐसेँ उदघोषणा ॥ ४ ॥ देव उंडुजि वाजिज ॥ ५ ॥ ऐसे पांच द्रव्य प्रगट किये । श्रेयांस कुमारका जश तीन ज़ुवनमें विस्तरण ऊआ । इसी दिनसेँ ) आहार देणैकी विधि सबकों मालुम ऊई । इस दान के प्रज्ञावसेँ श्रेयांस कुमार अक्षय सुखकों प्राप्त ऊवा । ( इसीसेँ ) अक्षय तृतीया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है । इस पर्वके आणेसेँ । अठे वख आन्नूषण पहरके । जगवंतके मंदर जावै । अष्ट द्रव्यसेँ पूजन करै । स्नात्र । अष्ट प्रकारी । सत्तरजेदी ( इत्यादिक ) पूजा करावे ॥ पीठे गुरूके मुख सेँ, एकासणादिकके पञ्चक्खाण करके । पर्वकी महमा सुणै । अपने वरमें मंगलीक जोजन तैयार होनेसेँ । गुरूकों बहरायके । सब कुटंव इकठे होके जीमें । और ( जो ) मंगल कार्य करणा होय ( सो ) इसी दिन

करे । ( इस माफक ) इस पर्वकों जो नव्यजीव सेवन करेंगे । उसीके तप तेज सदा बढ़ते रहेंगे । अलं विस्तरेण । इति अक्षय तीज पर्वधिकारः

॥ ॐ ॥ अथ तृतीय ज्येष्ठमाशान्यंतर पर्वधिकारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी ( १३ ) के दिन । ( शोलमा ) श्रीशांति नाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणक है । ( इसीसे ) यह दिन वमा उत्तम है । सर्व त्रिकाणें श्रीसंघ इकठे होके । विधि संयुक्त शांति पूजाका महोत्सव करावै । शांति जल लेजाके । अपने घरमें ठीकै । इस शांति पूजाके करानेसे । मारी हेजा । ( इत्यादि समुदाइक रोग ) कच्ची श्री संघमें व्याप्त न होय ( अथवा ) कोई श्रावकके घरमें रोग चालो रहतो होय ( वा ) वज्रत चिंता रहती होय ( तो ) इसी दिन शांति पूजाका उत्सव कराणा चाहिये । ( इसीसे ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सर्व दूर होय । अनेक मंगल श्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठवद ( १३ ) पर्वधिकारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आपाढ माश मध्ये पर्वधिकार लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आपाढ सुद१४ के दिन । चौमाशी१४ इस नामसे पर्व प्रशिद्ध है ( सो ) लिखते हैं ॥ ( यथा ) सामायका वस्यकपोपधानि । देवार्चन स्नात्र विलेपनानि । ब्रह्मक्रिया दान तपो मुखानि । नव्या श्रतुर्मासक मन्मनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) नोनव्या एतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि । चतुर्मासकस्य मन्मनानि अलंकार भूतानि विद्यन्ते ॥ अहो नव्य प्राणी जीवो ( यह ) सामायक कों आदलेके ( जो ) धर्म कृत्यहै ( सो ) चौमासे के मन्मनहै । अलंकार समानहै । ( यथा शक्ति ) यह चौमासे पर्वमें । केइ जीव । सामायक । पम्किमणा । पोशा । करै । केइ जगवानके मंदरमें । नानाप्रकार की पूजा करै । केइ शीलव्रत पालै । केइ सुपात्र दान देवै । केइ नाना प्रकारकी तपस्या करै । जैसो धर्मकाम अपनी शक्तिसे वण आवै ( सो करै ) इसमें विरोध नहीं । कोई प्रकारसे धर्मका उद्योत करणा चाहियै ( जिससे ) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय । और चौमाशी ( १४ ) के दिन । सर्व मंदर दर्शन करनेकों जावै । पांच शक्र स्त



व देव वांदै । पीठे गुरूके पास जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणें ।  
सर्व चीजका प्रमाण करके । उपरांत सोगन लेवै । सांझको चौमाशी प  
मिक्रमणो करै । ( इसी माफक ) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैको  
पिण सेवन करै ॥ इति चतुर्माश पर्वधिकारः कथितः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्रावण मास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ॥

॥ ॥ श्रावण मासमें कई जव्य जीव । मन्माई आदिक खेत्रोंमें ।  
नाना प्रकारकी पूजा नाटकादिउत्तव, अंगी रचना करावके चौमाशै पर्व-  
का उद्योत करते हैं । ( इसी माफक ) सर्व ठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा  
कराणी चाहियै । और वहुत ठिकाणें की श्रावकण्यां । इस महिने में ।  
कई तरैकीतपस्या करै है । ( जिसमें ) उत्तम फलकी दें वाली कई  
तपस्या (विधि प्रपाक ग्रंथसैं) उद्धरण करके । संखेपविधिसे इहां लिखतेहैं ॥

॥ ॥ अथ ठुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ पुरिमह १ । एकासण १ । नीवी १ । आंविल १ । उपवास  
१ । ( यह १ उली ) इसी तरै पांच उली करै । तपो दिन १५ । ऊजमणें  
( १५ ) । लाडू चढावै ॥ ॥ इति इंद्रि जय तप ॥ १ ॥ ॥

॥ ॥ एकासण १ । नीवी १ । आंविल १ । उपवास १ । ( इसी  
तरै ) उली च्यार करै । तपो दिन १६ । ऊज मणें १६ । लाडू चढावै ॥ ॥

॥ ॥ इति कषाय जयतपः १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ नीवी १ । आंविल १ । उपवास १ । ( इसी तरै ) उली ३ ।  
करै । तपोदिन ९ । ऊजमणें ( ९ ) । लाडू चढावै ॥ ॥ ॥

इति योगशुद्धि तपः ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ इकसार उपवास ३ । ( अथवा ) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें  
ज्ञान पूजा करै ॥ ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥ ॥

॥ ॥ इकसार उपवास ३ । ( अथवा ) एकांतर उपवास ३ ।  
ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै इति दर्शन तपः ॥ ५ ॥ ॥

॥ ॥ इकसार उपवास ३ ( अथवा ) एकांतर उपवास ( ३ ) ऊजमणें ।  
गोतम स्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्र तप ॥ ६ ॥ ॥

॥५॥ अश्वि १ । अश्वि १ । उपवास १ । एकाश्रम १ । एकल गणो १ । दत्ति १ । नीवी १ । आंबिल १ । (यह एक उन्नी) इसी तरह, उन्नी आठ करै । तपोदिन (८८) ऊजमणें रूपानो वृद्ध । सोनानो कुहामो करायके । ग्या न खाते देवै ॥ इति आठ कर्म सूडण तपः ॥ ७ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ नाद्रवा बदि चतुर्थसें लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एका शणा (अथवा) विआशणा करै । घर देहरासर आंगे (अथवा) अठै ठिकाणें कलश स्थापन करै । एक मुठी चावल सदा कलशमें जरै । संव त्तरीके दिन कलश ऊपरि नालेर रखके । महोत्सव पूर्वक मंदर लाके, देव आंगे रखे । स्नात्र पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥५॥ ॥ ५ ॥

इति अक्षयनिधि तपः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्वक । रोहिणी नक्षत्र दिने । उपवास । (वा) नीवी । आंबिल । सात वरश, सात मास करै (श्रीवासु पुज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः) इस पदको २००० गुणनो करै । गुरुके पास स्तवन सुणें (सो) स्तवन आंगे लिखेंगे ॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगणसैं । ज्ञान नक्ति । गुरुनक्ति करै ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सुदपक्षके पांचमके दिन । श्रीनेमि । अंबिका, पूजा पूर्वक । पांच एकाशणादिक तप करै । अंबिका देवीकों वेस चढावै ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ इति अंबिका तपः ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सुद पक्षमें इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजापूर्वक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ इति श्रुत देवता तपः ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सुद पक्षमें । एकांतर । उपवास ८ । पारणें आंबिल ८ । एवंदिन (१६) ऊजमणें ग्यानपूजा करै । इति सर्वांग सुन्दरतपः ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ चैत्रमासे । एकांतर उपवास १५ ॥ एवंदिन (३०) ऊजमणें सो नेको (अथवा) रूपैको वृद्ध । अनेक फल सहित चढावै ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ इति सौजाग्य कल्पवृद्ध तपः ॥ १२ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ पमिवा । बीज । तीज । अनुक्रमसैं, पुनिम पर्यंत (१५) उपवास । जो तिथि भूलै । सोतिथि और करै । ऊजमणें एकसो बीज (१२०) लामू मंदर चढावै । स्नात्र करावै ॥ इति सर्व्व सुखसंपत्ति तपः ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ वरशातना चार मास (और) पोष । चैत्र । यह पट्मास ठाल

के । ठोटी पांचम तप सुरू करै । अंधारी, अजुआली पांचम, माश ५ लग । एका शणादिक तप करै । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ इति ठोटी पांचम तपः १५ ॥ ॥ ॥ सुद पांचमकों, पांच वरश, पांचमाश, उपवास करै । उपवासकै दिन देव बांदनादिक क्रिया करै । ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण । पकवान फल, कलशादिक, पांच ५ चढावै ॥ सत्तर जेदी पूजा करावै । साहमी वठल करै । इति ज्ञानपंचमी तपः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ आषाढ सुदि । पन्निवा । बीज । तीज । चौथ । पांचमें । एकाशणादिक तप करै । अशोग वृद्ध पूजा पूर्वक, देव आगै नेवेद्य चढावै । (इसी तरै) वरस १ । तपकरै । ऊजमणें चावलासैं । अशोग वृद्ध लिखके पूजा करै ॥

॥ ॥ इति अशोग वृद्ध तपः ॥ १७ ॥ ॥ आषाढ वदि ( ७ ) श्रीविमलनाथ पूजा पूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ( ७ ) श्रीअनन्तनाथ पूजा पूर्वक उपवास ॥ कार्ती वदि ( ७ ) श्रीआदिनाथ पूजा पूर्वक उपवास ॥ पोष वदि ( ७ ) श्रीपार्वनाथ पूजा पूर्वक उपवास करै । स्नात्र करै । ऊजमणें । चावलासैं लोकनाल बनाके, साते राज, सात पावडी करिके । तिस ऊपर सिद्धिक्तेत्र (तिसकों) सोनें रत्नोंको मुकट चढावै ॥ इति मुकट सप्तमीतपः १८ ॥

॥ ॥ आसोज सुदि ८ तांइ एका शणादि तप करै । आठ प्रकारकी पूजा करै । नेवेद्य चढावै । पहिलै वरश अष्टापदकी एक पावमी । इसी तरै आठे वरशे आठ पावमी । अष्टप्रकारी पूजा पूर्वक आराधियै । ऊजमणें अष्टापद पूजा करावै । पकवान फल सर्व चउवीश चढावै ॥ ॥ इति अष्टापद पावमीतपः ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुदपक्षके ८ आठमके दिन । उपवाश (अथवा) आंबिल ( ८ ) करै । ऊजमणें दूधका कटोरा जरके । आठ लामू, देव आगलि चढावै । इति अमृत आठमि तपः ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके दशमके दिन । दश उपवास (अथवा) बीश एकाशणा करै । ऊजमणें अखंभित घी धार पूर्वक तीन । प्रदक्षिणा देवै ॥ इति अखंभ दशमी तपः ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वदपक्ष (अथवा) सुद पक्षके ११ इग्यारसके दिन । सिधांत पूजा पूर्वक । एकाशण । नीवी । आंबिल । ( वा ) उपवास ११ करै ।

ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करै ॥ इति श्री इग्यारअंग तपः ॥ २२ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुद पक्षके १४ चउदस के दिन । एकास एादि (१४) तप करै

ऊजमणें ग्यानपूजा करै । चवदप्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ ॥ ॥

इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पांच अमृत तेला । मास ६ में करै । ( प्रथम तेलै ) सिखरण

पारणो । ( दूसरै तेलै ) सीरैको पारणो । ( तीसरे तेलै ) लापशीको पार

णो । ( चौथै तेलै ) लामूको पारणो । ( पांचमें तेलै ) खीरको पारणो ।

सर्व पारणें प्रथम साधूकों विहराके पारणो करै ॥ इति पंचामृत तेला तपः

॥ २४ ॥ अठम १ । एकाशणो १ ॥ अठम १ । एकाशणो १ ॥ अठम १ ।

एकाशणो १ ॥ ए मोटो रत्नोत्तर तपः ॥ २५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आंविल १२ करके । ऊजमणें रूपाको चक्र, मंदर चढावै ( तो ) सदा जय

होय । विणज व्यापारमें लाज होय । ऊगमै जीत होय ॥ ॥ ॥

इति धर्म चक्रतपः ॥ २६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ उपवास ५ व्याशणो ५ । एकांतरै करै । इति पांच महाव्रत तपः २७

॥ ॥ ॥ उपवाश १ एकाशणो १ । नीवी १ । आंविल १ । व्याशणो १ ॥

उपवास १ । एकाशणो १ । नीवी १ । आंविल १ व्याशणो १ । एवं दिन

१० । पूनमसें सरू करै । पारणें साधु पमिलानै । ग्यान पूजा करै ॥ ॥ ॥

इति दालिद्र हरण तपः ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ एकेंद्रियें उपवास १ । वेंद्रीयें ठठ १ । तेंद्रीयें अठम १ । चौरिंद्री

यें दशम १ । पंचेंद्रीयें द्वादशम १ । ठकायें चतुर्दशम १ । तप करै । ऊज

मणें, सुखमीसिं, स्त्री ६ जीमावै ॥ ॥ ॥ इति ठकाय आलोयण तपः ॥ २९ ॥

॥ ॥ ॥ नीवी ( आठ ) निरंतर करै । इति सासू सुखतपः ॥ ३० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ आंविल ( आठ ) निरंतर करै ॥ इति सुसरसुख तपः ॥ ३१ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ठठ ( पांच ) करै ॥ इति पुत्री सुख तपः ॥ ३२ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अठम ( पांच ) करै ॥ इति वेटां सुख तपः ॥ ३३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ उपवास ( आठ ) एकांतरकरै ॥ इति नत्तार सुख तपः ॥ ३४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ नीवी ( पांच ) निरंतर करै ॥ इति जेठ सुख तपः ॥ ३५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ एकाशणा ( पांच ) निरंतर करै ॥ इति देवर सुखतपः ॥ ३६ ॥ ॥ ॥

ठठ ५ । एकाशणा पांच । एकांतर करै ॥ इति पिता माता सुख तपः ॥ ३ ॥  
 ॥ ❀ ॥ इस्यादिक केई तरैकी तपस्या वहुत ठिकाणेंकी आविका करै  
 है । (इसीसैं) सर्व आविकाके उपगारार्थ शास्त्रोंसैं । उद्धरण करके । संखे  
 प विधिसें इहां लिखी है । वेसी शक्ति होय (तो) पूजा । साहमी वृत्तल  
 तीर्थ यात्रा । (इत्यादिक) सातुं शुभखेत्रोंमें । अपना धन खरच करै ।  
 धर्मका उद्योत करै । इस तपस्या के प्रज्ञावसें । (इस जन्ममें) संसार सं  
 बंधी दुखदालिद्र दूर होके । सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय । (परजन्ममें)  
 द्वादिक ऊँची प्राप्त होय । (किंवज्जना) इति ठुठकर तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ चाद्रवमाशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाद्रवमहिनेमें । मिती चाद्रवासुद ४ ( तथा ) केई मतके अ  
 पेक्षाये ५ तिथकों । संवत्तरी नामसें पर्वप्रशिद्ध है । ( प्रथम इस संवत्तरी  
 पर्वकी महमा कहते है ) (जेसें) जगत्रमें अनेक मंत्र है । पर नवकार  
 मंत्र समान कोई मंत्र नहीं ( १ ) । तीर्थोंमें सेतुंजय समान कोईतीर्थ  
 नहीं ( २ ) पांच दानमें । अन्नदान । सुपात्रदान । समान कोई दान  
 नहीं ( ३ ) गुणमांहे विनयगुण ( ४ ) । व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ( ५ ) । नियम  
 मांहे संतोष नियम ( ६ ) । तपमांहे उपशम तप ( ७ ) । दर्शनमांहे जैन  
 दर्शन ( ८ ) । जलमांहे गंगाजल ( ९ ) । अलंकारमांहे चूमामणि  
 ( १० ) । ज्योतिषी मांहे चंद्रमा ( ११ ) । तेजवंत मांहे सूर्य ( १२ ) । तुरंग  
 मांहे पंच वृद्धन किशोर ( १३ ) । नृत्यकलावंत मांहे मोर ( १४ ) गज मांहे  
 औरावण ( १५ ) दैत्यमांहे रावण ( १६ ) । वनमांहे नन्दनवन ( १७ ) । काष्ठ  
 मांहे चंदन ( १८ ) । साहसीक मांहे विक्रमादित्य ( १९ ) । न्यायवंत मांहे  
 श्रीराम ( २० ) । रूपवंत मांहे काम ( २१ ) । सती मांहे शीता ( २२ ) ।  
 सुगंध मांहे कस्तुरी ( २३ ) । वस्तु मांहे तेजनतूरी ( २४ ) । बाजित्रमांहे  
 ज्ञाना ( २५ ) । स्त्रीमांहे रंजा ( २६ ) । धातुमांहे स्वर्ण ( २७ ) । दातारमांहे  
 कर्ण ( २८ ) । गौ मांहे कामधेनु ( २९ ) । वृद्ध मांहे कल्पवृद्ध ( ३० ) ।  
 जलमांहे अमृत ( ३१ ) । स्नेहमांहे घृत ( ३२ ) । ( इत्यादिक ) सर्व वस्तु  
 में एक एक चीज उत्तम होती है । (इसी माफक) सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट रा

जाधिराज, श्री संवत्तरी पर्व (दशरो नाम) श्रीपर्युषणा पर्वकों । जगवंत श्री महावीर स्वामीजीनें उत्तम वर्णन कियो ॥ ५५ ॥ ( अब श्री पर्युषण पर्व आनेसें ) ( प्रथम ) श्रीसाधुके करवा योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥ ५६ ॥ संवत्तरी प्रतिक्रमण करै ॥ १ ॥ लोचकरावै २ ॥ तेलैका तप करै ३ ॥ सर्व मंदरोमें जगवंतकी जावस्तवना करै ४ । सर्व श्रीसंघसें खमावै ५ । यह पंचकारणके वास्ते, श्रीतीर्थकर गणधरोनें श्रीपर्युषणा पर्व प्रवर्तन किया ॥ ॥ ५७ ॥ अब शुद्धआवक संवत्तरी पर्व आराधन करनेकों, आठदिन अ ठही महोत्सव करै ( सो ) कल्पलता शास्त्रसें लिखतेहैं ॥ ५८ ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै । कल्पसुत्र जीकों विधि संयुक्त अपने घर लैजा वै । रात्री जागरण करावै । ( प्रजात समय ) नगरके सर्व श्रीसंघकों निमंत्रण करै । यथायोग्य सत्कार सन्मान करै । पीठे पुस्तक ग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहारै । मुगट, ठावर, चामर ( इत्यादिक सहित ) सा ख्यात इंद्र महाराजको रूप बनाके, हाथी ऊपर ( अथवा ) पालखी ऊपर बैठै । अष्टमंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके । अपने दोनुं हाथमें थाल रखे । दोनुं तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आभूषण पहारै । चमर ढालै । अनेक प्रकारके वाजिन्त्र वाजते झुपे । दानें देते झुपे, नाना प्रकारके श्रुत ज्ञानके गुण वर्णन करते झुपे । नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके । गुरुके पास आवै । गुरु पिण खमा होके । विनय संयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आ गै रखै । श्री संघके आज्ञासें वाचना पूर्वक वाचै ॥ १ ॥ नगरमें सब ठिकाणें अमारि पम्हो फेरावै । दशरो अपने वचनसें ( तथा ) द्रव्यसें । कसाई धोबी । जम्जुजा ( इत्यादिके ) सर्वके आरंभ होमावै ॥ २ ॥ सुपात्र दान देवै ॥ ३ ॥ विदाम, सुपारी, नालेरादिककी, परजावना करै ॥ ४ ॥ श्रीवीतराग देवकी उदार भक्तिसें पूजा करै । चौदसके दिन । संवत्तरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होके । सर्व मंदर दर्शण करनें को जावै ॥ ५ ॥ सचित्तका परिहार करै ॥ ६ ॥ ब्रह्मचर्य पालै ॥ ७ ॥ चन्द्रत्य । ठठ ॥ अठमादिक । तप करै ॥ ८ ॥ अपने २ वित्तके अनुसारै, जन्म कल्याणक को महोत्सव करै ॥ ९ ॥ अठ पहरी पोशो करै ॥ १० ॥ संवत्तरी प्रतिक्रमण करै ॥ ११ ॥ निशल्प होके सर्व श्रीसंघसें खमावै ॥ १२ ॥ पारणिके

दिन पोशह पञ्चक्रमणें वाले साधमी चाइयोंकी जक्ति करै ॥ १३ ॥ गुरु  
जक्ति करै ॥ १४ ॥ संवहरी दान देवै । साहमी बहल करै ॥ १५ ॥ इस  
विधि संयुक्त ( यह ) कल्पसुत्र एकचित्त सुणनेसैं, आराधन करनेसैं, आठ  
जवमें सिद्धि स्थानकों प्राप्त होय । ( और ) केई उत्तम जीव । अत्यंत  
शुद्ध ज्ञाव रखके । अठमादिक तप करिके युक्त, कल्प सुत्रजीकों वाचते है ।  
और सुणनें वाले, प्रमाद, निद्रा, विकथा, ठोमके । अठमादिक तप करके  
युक्त । इकचित्तसैं शुद्ध ज्ञाव रखके । इकवीश बेर सुणते है ( सो ) पुरप दे  
वगतिकों प्राप्त होके । तीशरै जव सिद्धि स्थानकों प्राप्त होते है ॥ ❀ ॥  
इस पर्यूषणा पर्वके महोत्तव ( जो ) जव्यजीव करते है । ( सो ) धन्य है ।  
धर्मके प्रज्ञावीक है । अपणें लक्ष्मीसैं धर्मका उद्योत करै है । उसी पुरषां  
कों नमस्कार है ॥ ❀ ॥ ( अब कल्प सुत्रजीका महात्म कहते है ॥ ❀ ॥  
यह कल्पसुत्र, नवमा पूर्वसैं उद्धरण किया ऊवा । दशाश्रुत स्कंधका आठमा  
अध्ययन है । सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण । श्रुतकेवली । श्रीनद्रवाङ्म  
स्वामी प्रसिद्ध किया है । यह कल्पसुत्रके अनंते विषय है । ( जेसैं ) सर्व  
नदीकी बालूके जितने कण होय ( तिससैं पिण ) एक सुत्रके अनंते विष  
य है । इस कल्पसुत्रके महात्म ( जो ) देवाचार्य । हज़ार जीन करके क  
है ( तो पिण ) महात्मका एक अंश कह सकता नही । ऐसा इस पर्व  
का महात्म जानके ( जो ) जव्यजीव शुद्ध ज्ञावसैं सेवन करेंगें ( सो ) अनेक  
तरसैं, ऊँची, वृद्धी, सुख, सौभाग्यकों, प्राप्त होंगे ( और ) परजवमें देवादिक  
ऊँची पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषण पर्वधिकारः ॥ ६ ॥

॥❀॥ अथ आश्विनमास मध्ये पर्वधिकार लि ॥❀॥

॥ ❀ ॥ आशोज महिनैं में । मिति आशोज सुद ७ सैं लेके । आशो  
ज सुद १५ तांइ । नवपद उली ( तथा ) अष्टा पद उली विधि संयुक्त करै ।  
सो सर्व विधि पूर्वे लिखी है । उसी माफक करै ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वधिकार लि ॥❀॥

॥ ❀ ॥ कार्तिक महिनैं में । मिति कार्तिकवद अमावस है ( सो ) दीप  
मालिका नामसैं पर्व प्रशिद्ध है । ( यह ) दीपमालिका पर्व कवसैं प्रशिद्ध

ऊआ (सो लिखते हैं) चोवीशमा तीर्थकर । श्रीमहावीर स्वामी । समस्त साधु, साध्वी, साथ विचरते थके । अंतकी चोमाशी पावापुरी आयके रहे ( उहां ) आगामी कालके सर्व जाव । जव्यजीवोंके आगे प्ररूपण किये । फेर आपणा अंतसमय जानके । हस्तिपाल राजाके शुक्लशालमें आयके रहे । ( अपने पर ) गौतम स्वामीका वज्रत स्नेह देखके । निजीक गाम में, एक देव शर्मा ब्राह्मणकों । प्रतिबोध देनेके लिये जेजा । ( पिठाडी ) प आशन धारन करके । सोलै पहर अखंम देशना देते ऊये । पूरण वज्रतर वरशको आऊखो पालके (इसी) अमावसके दिन । पिठली दो घन्ती रात्र रहनेसँ सिद्धि स्थानककों प्राप्त नए । जिस समय जगवंतका निर्वाण क ल्याणक ऊआ (उस समय) चौसठ इंद्र देवता गणके आनें जानेंसँ वना उद्योत ऊआ । और (जो) सर्व राजा, पोपधमें बैठे ऊए थे (सो) जाव उ द्योतका अस्तपणा देखके । सर्व ठिकाणें रत्न धरके द्रव्य उद्योत किया । एकमके, प्रातसमें देवतावोंके आते जाते वचन सुणके । श्रीगौतम स्वामी कों केवल ज्ञान उत्पन्न ऊवो । ( दूजके दिन ) सुदर्शना बैन । अपणें नाई नंद वर्द्धन राजाकों, घरमें बुलायके जिमाया । शोक दूर करायो । (जिस सँ) नाई वीज प्रवर्त्तन ऊई । (इसीसँ) यह दीवाली पर्व वना उत्तम हैं । इस दीवालीके रात ( जो ) गुणनो करै ( सो लिखते हैं ) ॥ ॥ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥

२ ॥ श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः ॥

३ ॥ श्री गौतम स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥

॥ ॥ ॥ इस एक १ पदको २००० गुणनो करै । उपवास करै । रात्री जागणें करै । निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसँ थालजरके मंदर जावैं । रोशनी करै । निर्वाण कल्याणकका आरती करै । स्तवन बोलै । निर्वाण कल्याणक अधिकार सुणें । गौतम रास सुणें । ( इत्यादिक ) उदार चित्त स, सर्व ठिकाणें दीवाली पर्वका उत्सव करना चाहियै ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥ ॥

॥ ॥ जय जगदीश्वर अति अलवेषार । वीर प्रचूराया ॥ पतित उधारण जव जयजंजण । बोधबीज दाया ॥ (जय १ जिनराया । आरति करुं मन



ज्ञाया । होय कंचनकाया) ॥ १ ( ज० ) ॥ क्वत्रीकुं नगर अति सुंदर ।  
 सिद्धारथ राया । सुदि आसाढ ठक्के दिवशै । त्रिशला कुक्ष्याया ( ज० )  
 ॥ १ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम ज्ञावै । अरथ भेद  
 सज्ज निश्चै करनै । जिन गुण रस चाखै ( ज० ) ॥ २ ॥ चैत्र सुदी तेरश  
 दिन उत्तम । सज्ज ग्रह उच्चपावै । जन्म लेई दिश कुमरी सज्जना । आशन  
 कंपावै ( ३ ॥ ( ज० ) उह्व कर जावै निज थानक । इंद्र सज्ज आवै ।  
 मेरु शिखरपर श्रात्र महोह्व । करि आनंद पावै ( ज० ) ॥ ४ ॥ वसु  
 धारा वृष्टीकर सज्ज सुर । निज थानक जावै । सिद्धारथ करै जन्म महो  
 ह्व । अचरज सज्ज पावै ( ज० ) ॥ ५ ॥ कंचन वरण तेज अति दीपत ।  
 हरिलंबन ठाजै । कुल इस्वागु अंग सहू लक्षण । शशिच्युं मुख राजै  
 ( ज० ) ॥ ६ ॥ दान संबह्वर दे प्रभु लेवै । चारित्र सुख दाई । मार्गसीख  
 दशमी बढ पकै । उत्तम तरु पाई ( ज० ) ॥ ७ ॥ वार वरश ठक्कस्थ प  
 णामै । उकर तप पालै । माधव सुद दशमी के दिनकुं । दोख सज्ज टालै  
 ( ज० ) ॥ ८ ॥ केवल पाय सबीसुर संगै । पावा पुर आवै । गुणगण  
 लंकुत देशना देकै । संघ सज्ज पावै ॥ ९ ॥ ज्ञानमूल विच वज्रतजीवकुं  
 अविचल सुख देवै । नर सुर इंद्र सबीमिल पूजै । जगमै जश लेवै ( ज० )  
 ॥ १० ॥ चरम चौमाश पावापुरि करकै । अंत समय जाणी । हस्तिपा  
 लकी शुक्ल शालमै । सोलै पहर वाणी ( ज० ) ॥ ११ ॥ पर्यकासन ठक्  
 तपस्था । इक चित गुणधामी । कार्तिक कृष्ण अमावसके दिन । शिवक  
 मला पामी ( ज० ) ॥ १२ ॥ इंद्रादिक निर्वाण महोह्व । करि प्रभु ग  
 ण गावै । देवमुखै गणधर गुरु गोतम । सुणनै पढतावै ( ज० ) ॥ १३ ॥  
 वीतराग गुण मनमै धारी । अनित्यज्ञाव ज्ञावै । केवल ग्यान प्रगट ज्ञय  
 ततखिण । सुर नर गुण गावै ( ज० ) ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक शाशन  
 पतिकी । आरति ज्यो गावै । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जव । मोहन  
 गुण पावै ( ज० ) ॥ १५ ॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ मारग देशक मोक्ष नोरे । केवल ग्यान निधान । ज्ञावदया सागर  
 प्रचूरे । पर उपगारी प्रधानोरे ॥ १ ॥ ( वीर प्रभु सिद्ध थया ) । संघ स

कल आधारेरे । हिव इण भरतमां । कुण करस्यै उपगारेरे ॥ १ ॥ (वीर प्रभु सिद्ध थया) । नाथ विहूणी सैन्य जूरे । वीर विहूणोरे संघ । साधे कुण आधार थीरे । परमानंद अजंगोरे ॥ ३ ॥ (वीर०) ॥ मात विहूणा वालज्युरे । अरहो परो अथमाय । वीरविहूणा जीवमारे । आकुल व्याकुल थायैरे ॥ ४ ॥ (वी०) ॥ शंसय ठेदक वीरनोरे । विरहते केम खमाय । जे दाठें सुख ऊपजैरे । ते बिण किम रहिवायोरे ॥ ५ ॥ (वी०) ॥ निर्यामक नव समुद्रनोरे । नव अटवी सत्यवाह । ते परमेश्वर विन मिल्यारे । किम बाधे उठाहोरे ॥ ६ ॥ (वी०) ॥ वीर थकां पिण श्रुततणोरे । ऊंतो परम आधार । हिवणा श्रुत आधारठेरे । एह जिन आगम सारोरे ॥ ७ ॥ (वी०) ॥ इण कालै सब जीवनेरे । आगमथी आनंद । ध्यावो सेवो नवि जनारे । जिन पन्निमा सुख कंदोरे ॥ ८ ॥ (वी०) ॥ गणधर आचारज मुनीरे । सज्जनै इणपरि सिद्ध । नव नव आगम संगथीरे । देवचंद्र पद लीधोरे ॥ ९ ॥ (वी०) ॥ इति-निर्व्याण कल्याणक स्तवनं ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमी पर्वधिकारः १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूसरो कार्तिक महिनेमें, कार्तिक सुद पंचमी । ( सो ) ग्या नपंचमी नामसँ पर्व प्रशिद्ध है । ( इस दिन ) सर्व जग्य जीवांको ज्ञानको विशेष आराधन करना चाहिये । ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कोईवी नहीं । सर्व तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नहीं । मोक्ष मार्ग साधनको ज्ञान समान कोई उपाय नहीं । इस ज्ञान पंचमीको आराधनसँ अनेक दुष्ट कर्म विच्छेद होय । गुंगापणो, मूर्ख पणो, वक्रपणो, ( और ) कोटादिकके रोग, सर्व दूर होय । ( अनुक्रम ) ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होनैसँ पांचों ज्ञान प्रगट होय ( जैसे ) वरदत्त गुणमंजरीके । रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके । मनोरथ पूर्णजए । उसी माफक ( जो ) ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा । उसीका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

## ॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमी देव वंदन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पवित्र स्थानकै । चौकी पट्टे उपर ग्यानको स्थापन करै । तिस आगे पांच साधिया करै । फल, फूल, प्रमुख चढावै । पांच वत्तीको दीपक चढावै । अगर कपूरको धूप खेवै । पूजा पढके । वास द्वेप, कपूर

सैं, ग्यान पूजा करै । यथा शक्ती । रोकनाणो चढावै । ( तथा ) पूठा, बिटां  
गणादि चढावै । ( ज्ञानपूजा लिखते हैं ) ॥ ❀ ॥ नमंति सामंत मही  
वनाहं । देवाय पूयं सुविहेय पुबिं । जत्तीय चित्तं मणिदामएहिं । मंदार पु  
प्फं पसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेव सद्धा मणि मुत्तिएहिं । सुगंधपुप्फेहि वरंसि  
एहिं । पूयंति वंदंति नमंति नाणं । नाणस्सलाञ्जाय जवक्खयाय ॥ २ ॥ यह  
पूजा पढके, ज्ञान पूजा करै । ( इसी तरै ) द्रव्य पूजा करके ( पीठै ) ज्ञानपूजा  
करै ( सो लिखते हैं ) । १ खमासमण देके । इरिया वही पम्किमें । लो  
गस्स कहै । ( बैठकै ) मुहपत्ती पम्किहै । अणुजाणह । मेमि उग्गहं  
( इत्यादिक ) दो वांदणा देवै । पीठे पांच खमा समण देके । ज्ञानको  
नमस्कार कहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञाश ज्ञानु निरमलसुख कारण । सम्यग्दर्श  
न पुष्टहेतु जव जलनिधि तारण । संयम तप आनंद कंद अन्नाण निवारण  
मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्यादवाद परिणाम  
धर्मपरणति पम्बिवोहण । साज्ज साज्जणी संघ सर्व आराधन सोहण । मो  
ह तिमर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण । आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभु  
ता परगासण ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध नाण मणपङ्कव केवल ।  
जेद पचास क्कायोपशमिक एक क्कायिक निरमल । दोय परोक्क प्रथम ति  
हां डुगपरतक्क दीसतः । सकल प्रतक्क प्रकाश ज्ञास ध्रुव केवल अपरमित  
॥ ३ ॥ धम्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञासै । बाहिर अंग प्रधान  
खंध गणधर सुप्रकाशै । शाखा श्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पम्बिशाखा दीपै । चूरण  
टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कश्चो जिन पंच  
म अंगे । नंदी अनुयोग द्वार शाख मानो मन रंगे । वीरपरंपर जीत अनु  
जव उपगारी । अज्ज्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोह  
पंकहर नीरसम सिद्धांत अवाधै । देव चंद्र आणासहित नय जंग अगाधै ।  
ए श्रुतज्ञान सोहामणो । सकल मोह सुखकंद । जगतै सेवो जविकजन ।  
पामो परमानंद ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ ❀ ॥ ( इत्यादि ) नमस्कार क  
हिक्के । एमोत्थुणं ॥ जावंति चेइयाइं ॥ जावंति केवि साहू ॥ नमोर्हत्ति ॥

( कहके ) प्रणमं श्रीगुरु पाय० ( इत्यादि ) ज्ञानके स्तवन बोलै । जय वीरपाय० कहै । वंदण० । अनंत्य० कहके । एक नवकारको काउसग करै । थुई कहै ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ थुई लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ देविंद वंदिय पण्हि पखुवियाणि । नाणाणि केवल मणोहि म इं सुयाणि । पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए । पूया तबो गुणरयाण जि याणदितु ॥ १ ॥ ॐ ॥ यहस्तुति कहके । ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करे मि काउसगं ) तस्तुत्तरी । अनंत्य० कहके । १ लोगस्सको काउसग करै ( पारके ) बोधा गाथ० ( इत्यादि गाथा पढके ) पीठै आनणि वो हियनाणं । सुयनाणं चैव उहिनाणंच । तह मणपल्लव नाणं । केवलनाणं च पंचमयं ॥ १ ॥ यह गाथा कहके । इत्तामि खमा० । श्रीमति ज्ञानाय नमः ॥ १ ॥ श्रीश्रुतिज्ञानाय नमः ॥ २ ॥ श्रीअवधिज्ञानाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीमनः पर्यव ज्ञानाय नमः ॥ ४ ॥ समस्त लोकालोक जास्कर श्री केवल ज्ञानाय नमः ॥ ५ ॥ ( इसी तरै ) पांच नमस्कार करै । थिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणांको नमस्कार करै ( सो ) पूर्वे नवपदजीकै गुणनेमें लिखा है । उसी माफक करै । पीठै ( उं ह्रीं एमो नाणस्स ) इस पदको २००० गुणनो करै । कम थिरता होय ( तो ) ५ जाप करै । ज्ञान पंचमीका व्याख्यान सुणै । थिरता होय ( तो ) इयारै अंगकी सिझायों पढै ( वा ) सुणै ( सो ) इयारै अंगकी सिझायों लिखतेहैं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ प्रथम आचारांग सिझाय लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( ढाल हठीजानी ) पहिलो अंग सुहामणोरे । अनुपम आचारांगेरे । ( सुगुण नर ) वीर जिनंदे जापियोरे लाल । उववाइं जास उवं गेरे ( सु० ) ॥ १ ॥ बलिहारीए अंगनीरे लाल । जुं जानं वारं वाररे ( सु० ) बिनयै गोचरी आदरैरे लाल । जिहां साधु तणो आचाररे ( सु० बलि० ) ॥ २ ॥ सुयवंध दोयठै जेहनारे । प्रवर अध्ययन पचवीशरे ( सु० ) उदेशादिक जाणियैरे लाल । पिच्याशी सुजमीसरे ( सु० व० ) ॥ ३ ॥ हेतु जुगतिकर सोजतारे । पद अद्वार दजाररे ( सु० ) । अद्वार पदनं वेदमरे लाल । संख्याता श्रीकाररे ( सु० व० ) ॥ ४ ॥ गमा अनंता जेहमांरे । बलि अ

नन्त पर्यायरे (सु०) । त्रस परित्ततोठै इहांरे लाल । थावर अनन्त कहा  
 यरे (सु० व०) ॥ ५ ॥ निवद्ध निकाचित सासतारे । जिनप्रणीतए जावरे  
 (सु०) सुणतां आतम ऊलसैरे लाल । प्रगटै सहिज स्वजावरे (सु० व०)  
 ॥ ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविकारे । अंगै धरीय उद्धासरे (सु०) विधि  
 पर्वक तुमे सांजलोरे लाल । गीतारथ गुरु पासरे (सु० व०) ॥ ७ ॥ ए सि  
 धांत महिमानिलोरे । ऊतरै जव पाररे (सु०) विनयचंद्र कहै माहरैरे ला  
 ल । ए हीज अंग आधाररे (सु० वलि०) ॥ ८ ॥ इति आचारांग सिंशाय ॥ १

॥ ❀ ॥ अथ सुयगमांग सुत्र सिंशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल रसीयानी ) । बीजोरे अंग तुमे सांजलो । मनोहर श्रीसु  
 गमांग ( मोरा साजन ) । त्रिणसै तेशठ पाखंडी तणो । मत खंड्यो धर रंग  
 (मो०) ॥ १ ॥ (मीठीरे लागै वाणी जिन तणी) जागै जेहथीरे ग्यांन ( मो  
 रा सा० ) । ए वाणी मन जाणी माहरै । मानुं सुधारे समान ( मोरा० ) (मी  
 ठी०) ॥ २ ॥ रायपसेणी नवांगठै जेहनो । एतो सुत्र गंजीर मो० । वज्रश्रु  
 त अरथ जाणें सज्ज । क्षीर नीर धनुर तीर ( मो० मी० ) ॥ ३ ॥ एहनारे  
 सुयखंध दोयठै । वलि अध्ययन तेवीश ( मो० ) ॥ उद्देशा समुद्देशा जिहां  
 जला । संख्यायैरे तेवीश (मो० मीठी०) ॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण जखा ।  
 पद ठत्तीश हजार (मो०) । संख्याता अक्षर पद मांहे । कुण लहे तेहनोरे  
 पार (मो० मीठी०) ॥ ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली । जेद अनन्त जिण  
 मांहि ( मो० ) । गुण अनन्त त्रस परित्त कहा । थावर अनन्त जेमांहि  
 (मो० मी०) ॥ ६ ॥ निवद्ध निकाचित जेसा सयकमा । जिनपन्नतारे जाव  
 (मो०) । जाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा । चरण करण नेरे जाव (मो० मीठी०)  
 ॥ ७ ॥ करीयै जगत जुगत ए सुत्रनी । निहश्चै लहीयैरे मुक्ति (मो०) । विनयचं  
 द्र कहै प्रगटै एह थी । आतम गुणनीरे शक्ति ( मो० मीठी० ) ॥ ८ ॥ ❀ ॥  
 इति श्रीसुयगडांग सिंशायः ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (३) गणांग सुत्र सिंशाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) आठ टकै कंकणो लीयोरी ( ए चाल ) ॥ त्रीजो अंग  
 जलो कछोरे । (जिनजी) नामें श्रीगणांग । (मोरो मन मगन थयो) ।  
 हंरे देखी १ जाव । हंरे जीवाजीव स्वजाव (मो०) ॥ १ ॥ सबद जगत

करी गजतारे । जि० । जीवाजिगम उपांग (मो०) । एह अंग मुज मन व  
 स्योरे । जि० ॥ जिम कोकिल दलअंब (मो०) ॥ १ ॥ गुहिर जाव कर  
 जागतोरे ॥ जि० ॥ आजतो एह आलंब (मो०) कूट शेल सिखरी सिलारे ।  
 जि० ॥ काननमें बलिकुंम (मो०) ॥ ३ ॥ गकर आगर द्रह नदीरे ॥ जि०  
 जेहमें अठै उदंम (मो०) दश गाणा अतिदीपतारे ॥ जि० ॥ गुण पर्याय प्र  
 योग ॥ मो० ॥ ४ ॥ परित जेहनी वाचनारे ॥ जि० ॥ संख्याता अनु  
 योग (मो०) । वेष्ट शिलोक निजुत्तसुरे ॥ जि० ॥ संगहणी पमि चि  
 त्त (मो०) ॥ ५ ॥ ए सज्ज संख्याता जिहारे ॥ जि० ॥ सुणतां उलसै  
 चित्त (मो०) । सुयखंध इक राजतारे ॥ जि० । दश अध्ययन उदार (मो०)  
 ॥ ६ ॥ उद्देशादिक वीशठैरे । (जि०) पद वज्जतर हज्जार (मो०) । रागी  
 जिन शासन तणोरे ॥ जि० ॥ सुणै सिद्धांत वषाण (मो०) । विनय चंद्र  
 कहै ते ज्वैरे ॥ जि० ॥ परमारथरा जाण (मो०) ॥ ७ ॥ ॥ ॥  
 इति श्रीगणांग सूत्र सिध्दायः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (४) समवायांग सूत्र सिध्दाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे कोयली (ए चाल)  
 ॥ ॥ चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ॥ सुणो ॥ पंचवणा  
 उपांग करी सोजावणी हो लाल ॥ करी सो ॥ अरध मागधी जापा साखा  
 सुरतणी हो लाल ॥ साखासु ॥ समकित जाव कुसुम परमल व्यापी घणो  
 हो लाल ॥ पर ॥ १ ॥ जीव अजीवनैं जीवाजीव समास थी हो लाल ॥  
 जीव ॥ लहीयै एहयी जाव विरोध कांइ नथी हो लाल ॥ वि ॥ जांगा  
 तीन स्वसमयादिकना जाणीयै हो लाल ॥ यादि ॥ लोक अलोकनैं लो  
 कालोक बखाणीयै हो ॥ लो ॥ एक यकी ठे सत समवाय प्ररूपणा हो ला  
 ल ॥ सम ॥ कोम कोम प्रमाणक जीव निरूपणा हो ॥ जी ॥ वारस  
 विह गणि पिठक तणी संख्या कहो हो ॥ त ॥ सासता अरथ अनंतकि  
 ठै एहना सही हो लाल ॥ ठै ॥ ३ ॥ सुय खंध अध्ययन उद्देशादिके ज  
 ला हो लाल ॥ उ ॥ संख्यायै एक एक प्रत्येकै गुणनिला हो ॥ प्रत्ये ॥  
 पद एक लाख चौमाल सहसते उत्तरा हो ॥ स ॥ पदनैं अथ उदय सं  
 क्ताता अक्षरा हो ॥ सं ॥ ४ ॥ जाप्य चूर्णि निर्धुक्ति करी सोहै सदा हो ॥

करी०॥ सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न होय कदा हो० ॥ त्रिप० ॥ जेहनमा  
वै अंगकि अन्तरगतिहसी हो० ॥ अन्त० ॥ जलवरसंते जोर कुणन ऊवै  
खुसी हो० ॥ कुण० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो हो० ।  
जिणं०॥ तजिया शास्त्र मिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो हो०॥ सु०॥ जिम मा  
लती लहीचंग करीनैं नविरहै हो०॥ करी०॥ ईश्वर शिर सुरंग तजी परि  
नवि बहै हो०॥ तजी०॥ ६ ॥ एप्रवचन निग्रंथ तणो जुगतै वमो हो० ॥  
तणो०॥ साकर सेलडी द्राप थकी पिण मीठमो हो०॥ थकी०॥ स्युं कही  
यै वज्रवात विनयचंद्र इम कहै हो०॥ वि०॥ एहना सुणनैं नाव श्रोता  
अति गहगहै हो० श्रोता० ॥ ७ ॥ इति श्रीसमवायांग सुत्रसिंहाय सं०॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) जगवती सुत्र सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल पंथीमानी) । पंचम अंग जगवती जाणीवैरे । जिहां जि  
नवरना वचन अथाहरे । हिमवंत परवत सेती नीकट्यारे । मानुं परतिख  
गंगप्रवाहरे ( पं० ) ॥ १ ॥ सूरपन्नती नामें परगडीरे । जेहनी ठै उदाम  
उवांगरे । सुत्र तणी रचना दरीया जिसीरे । मांहिला अरथ ते सजल तरं  
गरे ( पं० ) ॥ २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति जलोरे । एक सो एक  
अध्ययन उदाररे । दश हज्जार उद्देशा जेहनारे । जिहां किए प्रण ठत्तीश  
हज्जाररे ( पं० ) ॥ ३ ॥ पद तो दोयलाख अरथे नखारे । ऊपरि सहस  
अठ्यासी जाणरे । लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे । विवाह पन्नत्ती अधि  
क प्रमाणरे ( पं० ) ॥ ४ ॥ करियै पूजा अनैं परजावनारे । धरियै सदगुरु  
ऊपररागरे । सुणियै सुत्र जगवती रागसुरे । तो होय नव सागरनो त्यागरे  
( पं० ) गोतम नामें द्रव्य चढाइयैरे । सम्यक् ज्ञान उदय होय जेमेरे । कीजै  
साधु तथा साहमी तणीरे । जगति युगति मन आणो प्रेमेरे ( पं० ) ॥ ६ ॥  
इण विधिसुं एह सुत्र आराधतारे । इण नव सीऊैं वंठित काजरे । परनव  
विनय चंद्र कहै तेलहैरे । मोहन सुगति पुरीनो रांजरे ( पंच० ) ॥ ७ ॥  
इति श्री जगवती सुत्र सिंहाय सं० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ६ ) ज्ञातासुत्र सिंहाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) कितलख लागा राजाजीरै मालियै । ( एदेशी ) ।  
ठगे अंग ते ज्ञाता सुत्र वखाणियै जी । जेहना ठै अरथ अधिक उदम हो

(हारा सुणजो धरिनेह सिद्धांतनी वातनीजी) । श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊ  
पजै जी । मधुर तातर्जित जिम मधु खंम हो ( ह्रां० ) ॥ १ ॥ जंबुद्दीव  
पक्ष्ती उपांगठै जेहनो जी । इण मांदै जिन पूजानी विधि जोरहो ( ह्रां० ) ।  
अर्चिक सुणि परम शांतिरस अनुन्नवै जी । चर्चिक सुणि करै सम सौर  
हो ( ह्रां० ) ॥ २ ॥ नगर उद्यान चैस वनखंम सोहामणों जी । समवस  
रण राजाना मातनै तातहो ( ह्रां० ) । धरमाचारज धर्म कथा तिहां दा  
खवी जी । इहलोक परलोक कृषि विशेष सुहात हो ( ह्रां० ) ॥ ३ ॥ नो  
ग परित्याग प्रवज्या पर्यवाजी । सुत्र परित्यह वारू तप उपधान हो ( ह्रां० )  
संलेहण पचखाण पादपोष गमनताजी । स्वर्ग गमन शुचकुल उत्पत्ति  
हो ( ह्रां० ) ॥ ४ ॥ बोधिलान्न बलितंतते अंतकृपा कहीजी । धर्मकयाना  
दोयठै खंध हो ( ह्रां० ) । पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आजठै जी ।  
बीजाना दशवर्ग महा अनुबंध हो ( ह्रां० ) ॥ ५ ॥ ऊंठ कोमि तिहां स  
बल कथानक जापिया जी । जाप्याबलि उगणीस उदेश हो ( ह्रां० ) ।  
संख्याता हज्जार जला पद एहना जी । एह थकी जायै कुमति कलेश हो  
( ह्रां० ) ॥ ६ ॥ विनय करै जे गुरुनो वज्र परै जी । तेहनै श्रुत सुणतां  
वज्र फल होय हो ( ह्रां० ) । ते रसिया मन बसिया विनय चंद्रनै जी ।  
सो मांहें मिलै जोयां एक कै दोय हो ( ह्रां० ) ॥ ७ ॥ ॥ ॥

इति श्री ज्ञाता धर्म कथाङ्ग सिझायः ॥ ६ ॥ ॥

॥ ७ ॥

॥ ॥ अथ ( ७ ) उपाशकदशा सुत्रसिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( दाल वित्रिवानी ) । द्विर्वै सातमो अंग ते सांजलो । उपाशग  
दशानामें चंगरे । श्रमणो पाशकनी वर्णना । जसु चंदपक्ष्ती उपांगरे ॥ १ ॥  
मन लागो मोरो सुचयी । एतो जव बैराग तरंगरे । रसराता ज्ञाता गुण  
लहै । परमारथ सुबिहित संगरे ( म० ) ॥ २ ॥ इण अंगै नुबखंम एऊठै  
अध्ययन उदेश विचारै । दश संख्यायें दाखव्या । पद पिण संख्यात हजारै  
( म० ) ॥ ३ ॥ आणंदादिक श्रावक तणो । सुणतां अधिकार रसाज रे ।  
रस लागै जागै मोहनी । श्रोता जननै ततकाल रे ( म० ) ॥ ४ ॥ श्रोता  
आगलतो वाचतां । गीतारथ पामें रीऊरे । जे अहं दग्ध समझै नही । ते  
हसुं तो करवी धीज रे । ( म० ) ॥ ५ ॥ दश श्रावकतो इहां जापिया ।



पिण सुत्र जण्यो नही कोयरे । ते माटै शुद्ध श्रावक जणी । एक अरथ  
नी धारणा होय रे ( म० ) ॥ ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपीयै । निस्संकपणें  
सुजगीसरे । कवि विनय चंद्र कहै स्युं थयो । जो कुमती करस्यै रीसरे  
( म० ) ॥ ६ ॥ इति श्रीउपाशक दशांग सिश्यायः ॥ ७ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ (८) अंतगमदशांग सिश्याय लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) बीर वखाणी राणी चेलणाजी । इस चालमें ॥ ❀ ॥  
आठमो अंग अंतगम दशाजी । सुणी करो कान पवित्र । अंतगम केवली  
जे थया जी । तेहनारे इहां चरित्र ( आठ० ) ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल  
चूरता जी । पूरता जगतनी आस । जिनवर देव इहां आसताजी । सा  
सता अर्थ सुविलास (आ०) ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय जंग थीजी । अंग  
ना जाव अजंग । सहिज सुखरंगनी तल्पिकाजी । कल्पिका जासु उवंग  
( आ० ) ॥ ३ ॥ एक सुय खंध इण अंगनोजी । वर्ग ठै आठ अजिराम  
आठ उद्देशा ठै वलीजी । संख्याता सहस पद ठाम ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ आ  
ठमा अंगना पाठमें जी । एहवो अठैरे मीठास । सरस अनुभव रस ऊपजै  
जी । संपजै पुण्यनीरास (आ०) ॥ ५ ॥ विषय लंपट नर जे जुवै जी ।  
निरविषयी सुण्या थाय । जिम महाविष विषधर तणो जी । नागमंत्रे सुण्या  
जाय ( आ० ) ॥ ६ ॥ अमृत वचन मुख बरसती जी । सरस्वती करोरे पसा  
य । जिम विनय चंद्र इण सुत्रनाजी । तुरतलहै अजिप्राय ( आ० ) ॥ ७ ॥  
इति श्रीअंतगम दशांग सिश्यायः ॥ ८ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ (ए) अणुत्तरोवाई अंग सिश्याय लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल नणदल बिंदलीलै ए चाल ॥ ❀ ॥ नवमो अंग अणु  
त्तरो वाई । एहनीरुच मुऊनें आईहो ( श्रावक सुत्र सुणो ) सुत्र सुणो  
हित आणी । एतो बीतरागनी वाणी हो ( श्राव० ) ॥ १ ॥ जसु कल्पव  
तंसिकानामैं । सोहै उवांग प्रकामैं हो ( श्रा० ) एतो आगमनें अनुकूला ।  
मानुं मेरु शिखरनी चूला हो । ( श्रा० ) ॥ २ ॥ एतो सुत्रनो नाम सुणीजै ।  
तिम तिम अंतर गति जीजै हो ( श्रा० ) । प्रगटै नवलसनेहा । एहथी उ  
लसै मोरी देहा हो ( श्रा० ) ॥ ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया । तेहना गुण  
इणमें गाया हो ( श्रा० ) । नगरादिक जाव वखाण्या । तेतो ठै अंगै आ

एया हो (आ०) ॥ ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू । त्रिणवगं बली मनोहारू  
हो (आ०) । उदेशा त्रिणसनूरा । संख्यात सहस पद पूरा हो (आ०)  
॥ ५ ॥ सुत्र सुणावुं अमे तेहनें । साची श्रद्धा ऊय जेहनें हो (आ०)  
श्रोतायी प्रीत लगावुं । निंदकनें मुंह न लगावुं हो (आ०) ॥ ६ ॥ जे  
सुणतां करै वकोर । तेतो माणस नही पिण ढोरहो (आ०) । कवि वि  
नयचंद्र कहै साचो । श्रुत रंगै सज्जको राचोहो (आ०) ॥ ७ ॥ ॥ ॥  
इति श्री अणुत्तरोवाइ सिझायः ॥ ८ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ (१०) प्रणव्याकरण सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल) आधा आम पधारो पूज (एहनी) ॥ ॥ दशमो अं  
ग सुरंग सुहावै । प्रणव्याकरण नामें । सुत्र कटपतरु सेवै ते तो । चिदा  
नंद फल पामें । (आवो १ गुणना जाण । तुमनें सुत्र सुणावुं) । (टेक)  
॥ १ ॥ पुष्पकली ज्युं परिमल महकै । गुरु परागनें रागै । तिम उपांग पु  
ष्पिका एहनो । जोर जुगति करि जागै । (आवो०) ॥ २ ॥ अंगुष्ठा  
दिक जिहां प्रकास्या । प्रणवादिक अतिरुमा । तेतै अठोत्तर सत एतो ।  
सुत्र मध्य मणि चूमा (आ०) ॥ ३ ॥ आश्रव चार पांच इहां आण्यां ।  
पांचे संवर वारा । महा मंत्र वाणीमां लहीयै । लवधि जेद सुखकारा ।  
(आ०) ॥ ४ ॥ सुय खंध एकतै दशमैं अंगै । पणयालीस अझयणा ।  
पणयालीस उदेशवलीपद । सहस संख्यात नीरयणा (आ०) ॥ ५ ॥ जे  
नर सुत्रसुणें नही कानैं । केवल पोषै काया । मायामांहि रहै लपटाणा ।  
ते नर इम हीज आया । (आ०) ॥ ६ ॥ सुत्र मांहि तो मारग दोय  
तै । निश्चय नय व्यवहारा । विनय चंद्र कहै ते आदरियै । तजि मन मद  
न बिकारा । (आ०) ॥ ७ ॥ इति श्री प्रणव्याकरण सुत्रसिझायः ॥ १० ॥

॥ ॥ अथ (११) विपाकसुत्र सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल कम्बुखानी) ॥ ॥ सुणारे विपाक श्रुत अंग इग्यारमो ।  
तजो विक्रया दया जे अनेरी । ललित उवांग जसु प्रवर पुष्प चूलिका ।  
मूलिका पाप आतंक केरी (सु०) ॥ १ ॥ असुन किंपाक सम डुरुतफल  
जोगवी । नरकमां गरकयया जेह प्राणी । सुकृतफल जोगवी स्वर्गमां जे  
गया । तास वकव्यता इहां आणी (सु०) ॥ २ ॥ दोय श्रुत खंधनें बी

श अध्ययन बलि । वीश उद्देश इहां जिन प्रयुंजै । सहस संख्यात पद कुं  
 द मचकुंद जिम । वज्रल परिमल अमर चित्तगुंजै (सु०) ॥ ३ ॥ सरसचं  
 पकलता सुरजि सज्जनै रुचै । अन्य उपगारनी बुद्धि माटै । सुत्र उपगार तेह  
 थी सबल जाणियै । जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै (सु०) ॥ ४ ॥ बंधनै  
 मोक्षना बेनं कारण अठै । डकृतनै सुकृत जोवो बिचारी । डकृतनै पर हरी  
 सुकृतनै आदरी । जिन वचन धारियै गुणसंजारी (सु०) ॥ ५ ॥ मकरे  
 मकर निंदा निगुण पारकी । नारकी तणी गति कांई वांधै । नारकी प्रकृत  
 तजि सहज संतोष जज । लाग श्रुत सांजली धरम धंधै (सु०) ॥ ६ ॥  
 सुखनै दुख विपाक फल दाखव्या । अंग इग्यारमैं बीत रागै । चिरजयो  
 वीरशासन जिहां सुत्र थी । कवि विनय चंद्र गुण ज्योति जागै (सु०) ॥ ७ ॥  
 इति श्रीविपाकसुत्र सिंशायः ॥ ११ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लि० ॥ॐ॥

॥ॐ॥ (ढाल वधावानी) । अंग इग्यारह में थुएया । (सहेलीए) आज  
 थया रंगरोलकि (स०) नन्दीसुत्र मांहि एहनो (स०) । ज्ञाप्यो सर्व निचोल  
 कि ॥ १ ॥ (सहेलीए आज वधामणा) पसरी अंगइग्यारनी (स०) मुज्ज  
 मन मंमप बेलकि । सींचूते हरखै करी (स०) अनुजव रसनी रेलकि ॥ २ ॥  
 हेज धरी जे सांजलै (स०) । कुण बूढा कुण बालकि । तो ते फल लहै फूट  
 रा (स०) स्वादै अतिहि रसाल कि ॥ ३ ॥ हरख अपार धरी हीयै (स०)  
 अहम्मदावाद मऊारकि । नासकरी ए अंगनी (स०) वरया जय जय कार  
 कि ॥ ४ ॥ संवत सतर पचावनें (स०) । वरषा ऋतु नज माशकि । दशमी  
 दिन शुदि पद्ममां (सु०) पूरण थई मन आसकि ॥ ५ ॥ श्रीजिन धर्मसूरि  
 पाठवी (स०) । श्रीजिनचंद्र सूरिसकि । खरतर गह्वना राजीया (स०) त  
 सु राजै सुजगीसकि ॥ ६ ॥ पाठक हरख निधान जी । (सहे०) ज्ञान ति  
 लक सुपसायकि । विनय चंद्र कहै मैं करी (स०) । अंग इग्यार सिंशाय  
 यकि । (सहे०) ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारै अंग सिंशायः ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ज्ञानको स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग ठुमरी ॥ॐ॥ मेरैरे मनमांनी ज्ञानजरी । (मे०) परउप  
 गारी सुगुरु बताई । पांचुं जेदे करी । मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव ।

केवल बोधवरी । ( मे ) ॥ १ ॥ तपकर अग्नि मूस देशनकी । करमें धनलं  
करी । सक्रिय संयम करतासुं मिल । सिद्ध रसानधरी । ( मे० ) ॥ २ ॥  
पूरण पुन्य मिली मोय सजनी । सकला नन्ददरी । बालकहै अब विसरत  
नाहीं । पल तिन एकधरी । ( मे० ) ॥ ३ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः आगम स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रुत अतिहजलो । संवसकल आधार नमुं त्रिभुवन तिलो । (आं  
कणी ) अरथै श्री वीर जिणंद आख्यो । सुत्रें श्री गणधर गुरु ज्ञाप्यो ।  
तदुजय थी जे मुनिवर राख्यो ॥ १ ॥ ( श्रु० ) । जेह थी जगजाव सकल  
जाणें । नय एकांत मुनि जन नबिताणें । निश्चइ व्यवहार ते मन आणें ॥ २ ॥  
( श्रु० ) जिहां अङ्ग उपाङ्गवै अतिरूडा । ठठेद पइना नहिं कूडा । मू  
लसुत्र नन्दी अनुयोग चूमा ॥ ३ ॥ ( श्रु० ) जिहां निरयुगती सुत्रै संगी  
बलि ज्ञाप्य चूरणि टीका चङ्गी । पंचम अंगै कही पंचाङ्गी ॥ ४ ॥ ( श्रु० )  
जिहां साधु श्रावक मारग लहियै । संवेग पखी बलि सरदहियै । एत्रिण  
बिन भवमारग कहियै ॥ ५ ॥ ( श्रु० ) । जेहनी अनुपेहा नित करियै ।  
उपचारै रूपण परिहरियै । आराध्यां निज अनुजव बरियै ॥ ६ ॥ ( श्रु० )  
जिन आगमना जे गुणगावै । शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै । ते कृपा क  
दयाण सदा पावै ॥ ७ ॥ ( श्रु० ) ॥ इति आगम स्त० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ कार्तिक चौमाशाधिकार लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कार्तिक महिनेमें मिति कार्तिक सुद १४ कैदिन । सब मन्दर  
दर्शन करनेको जाना । व्याख्यान सुणना । सामायकादिक धर्मकृत्य कर  
ना (इत्यादिक) सर्व अधिकार पूर्वे, आसाढ चौमाशे तुल्य जानके, कार्ति  
क चौमाशैका सेवन करै ॥ इति कार्तिक चौमाशा सेवनविधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ कार्तिक पूर्णमाशीका अधिकार लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम कार्तिक वद १ सँ सेत्रुजरास सुणें । नित्री ( वा ) एका  
शणा, व्याशणादिक तप करै । दोनुं टंक पम्किमणो करै । देव वंदनादिक  
करै । ( उं झी श्रीसिद्धदेव अनन्तसिद्धाय नमः ) इसीको एक जाप स  
दा करै । शक्ति होय ( तो ) सिद्ध गिरी जात्रा करनेको जावै । काती

पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै । अठाही महोत्सव करै । विस्तारसँ देववन्दनादिक विधि करै ( ११ ) बेर सेतुंजरास सुणै । नैझी श्री सिद्धक्षेत्र अनन्त सिद्धाय नमः । इसी पदसँ ( ११ ) जेती देवै । ( कदास ) सिद्ध गिरी जाएँ की सक्तिन होय ( तो ) जहां सिद्ध गिरीका पटमंड्या होय । उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करनेको जावै । पूजा दिक सब विधि करै । ठठ नत्त करके ( वा ) चतुर्थ नत्त करके । इस पर्व को आराधन करै । गुरुनक्ति करै । साहमी वल्ल करै । ( इत्यादिक ) विधिसंयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करनेसँ । सर्व अशुभ कर्म विध्वंस होके मंगलमाला प्रवर्तन होय ॥ ॐ ॥ ( इस दिन ) श्री द्रावन् वारखिल प्रमुख दशकोमि साधु सिद्धस्थानक प्रात नए (जिससँ) इस दिन ( जो ) धर्मकृत्य किया ऊवा, निस्संदेह दशकोमि गुणा फलै । (इस) नरतक्षेत्रमें सिद्धगिरी के समान, कोई उत्तम तीर्थ नहिं । (में) पिण सन्) उगणीसै तीशमें । चैत्रीपून मकों जात्रा करता ऊवा । सब नगवंतकै विंवोंका दरशण करके गिणती किया ( सो ) वारै हज्जार । तीनसै । अठान १२३५७ विंव ऊवा । और वज्रत ठिकाणें चरणोंकी स्थापना है । अनन्ता साधु अणसण लेके परम पदकों प्रात नए हैं (इसीसँ) जो आसन नब्बी जीव होंगे (सो) सुधनावसँ इस तीर्थकों सेवन करेंगे । और जो सेवन करते हैं । उसी पुरुषोंकों नमस्कार है । उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सिद्धगिरीके स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( देशी गरवानी । तेदिन क्यारे आवसी हे । (जोरे वहिनी) । जासुं सिद्धाचलनी जात ( मोरी सहीयां हे ) । पाजै चढतां प्रेम सुंदे । (जोरे वहिनी) । गाइयै गुण अख्यात । (मोरी सहीयांहे । तेदि०) ॥ १ ॥ अदभुत ऊंचो देहरो हे । (जोरे वहिनी) मूल नायक आदिनाथ । (मोरी सहीयां हे) । जोली नगत नली परै हे । (जोरे०) निरख्यां होय सनाथ । (मोरी० ते०) ॥ २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे । (जोरे०) पहिर खीरोदक चीर । (मोरी०) केसर नरीय कचोलमी हे । (जोरे०) पूजसुं सुगुण सुधीर । (मोरी० ते०) ॥ ३ ॥ रूमी रायण बांहमीहे । ( जोरे० ) आदि जिणंद न दार । ( मोरी० ) तिहां जगनाथ समो सखा हे । ( जोरे० ) पूरव निनाणुं

वार । (मोरी० ते०) ॥४॥ इण गिर वरियै ऊपरा हे । (जोरे०) । सीधा साधु अनंत । (मोरी०) चौमाशे रक्षा दोय जिनवरा हे । (जोरे०) अजि व जिणेंसर शांति । (मोरी० ते०) ॥ ५ ॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिला हे । (जोरे०) अदंनुत नलका जोल । (मोरी०) सिद्धवम सेवुंजै नदी वहै । जोरे० करियै नित रंगरोल । (मोरी० ते०) ॥ ६ ॥ इण मूंगर दीठां थकां हे । (जोरे०) ऊपजे परमानंद । (मोरी०) गहिरी गिरवर ठांढी हे । (जोरे०) चाहै नित जिणचंद (मोरी० तेदि०) ॥७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥१॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिरजइयै ॥ सुणि वहनी ए गिरनी महिमा । आदिजिनंद इम जाखी । जरथादिक नरपतिनै आग ल । इंद्रादिक सज्ज साखीरि (आज०) ॥ १ ॥ इण गिरवरियै काल अनं ते । साधु अनन्ता सीधा । जनम मरणनां डख ठोमीनै । अमल अखय गुण लीधारे (आ०) ॥२॥ इण गिर संनमुख पगला जरतां । आतम सुध सुजावै । कोम जवांरा पातिक कीधा । एक पलकमें जावैरे (आ०) ॥३॥ सासतो तीरथ ए सेवुं जो । जोतां लागै मीठो । तीन जुवनमें इण गिर तोलै । बीजो कोइन दीठेरे (आ०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं नेह धरीनै । आगै उलंग करस्यां । अदंनुत आदि जिनेसर निरखी । प्रेम सुधारस पीत्यारे (आ०) ॥ ५ ॥ पुहसुगंधा लेइ पचरंगा । द्वार सुगंधा गूंथी । पहिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां । शिव मारगनी सूधीरे (आ०) ॥ ६ ॥ गहिर स्वरे जिन वर गुण गातां । जात्र निनाणूं करियै । मन गमती जमती विचजमतां । जव सायर निसतरियैरे (आ०) ॥ ७ ॥ पूरवनिनाणूं वार प्रथम जिन । राय एरूंखै आया । ते तीरथ सुज जावै फरसी । करियै निरमलकायारे (आज०) ॥ ८ ॥ लाज उदै ए गिरवर लहियै । कहै इम केवल नाणी । श्रीजिनचंद स दा हित बल्ल । प्रेम घणैं चित आणीरि (आ०) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥❀॥ पुनः ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (श्रीचंद्रा प्रभू प्राज्ञणैरे ए देखी) ॥ ❀ ॥ नमोरे नमो सेवुंज गिरीरि । त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे । पाप परुष दूरै टलैरे । तूटै करम जंजालरे । (नमो०) ॥ १ ॥ पूरव निनाणूं समोतस्यारे । प्रथम

जिनंद जगदीशरे । वावीशम जिनवर विनारे । समो सख्या तेवीशरे ।  
 ( नमो ० ) ॥ १ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रहीरे । सीधा एहीज ठोमरे ।  
 काल आगामी बलि सीऊस्यैरे । साधु अनन्ती कोमिरे ( नमो ० ) ॥ ३ ॥  
 अनंत कल्याणक भूमिकारे । महिमावंत महन्तरे । सासतो तीरथ ए सही  
 रे । अतिशय जास अनन्त रे ( न ० ) ॥ ४ ॥ कोमि भवंतर जेकियारे  
 पातिक विविध उपाय रे । सेत्रुंजै सनमुख चालतां रे । पग पग ते सऊ  
 जायरे । ( नमो ० ) ॥ ५ ॥ धनदिन तेहीज जाणसुरे । बहिस्सुं सेत्रुंज केरी वा  
 टरे । ठहरी यथाविध पालस्युरे । संघ सहित गहिगाटरे ( नमो ० ) ॥ ६ ॥  
 पगपग उन्नव अति घणारे । पग पग जाचक दानरे । प्रेम भगति साहमी  
 तणीरे । जीर्णोद्धार प्रधान रे ( नमो ० ) ॥ ७ ॥ धन ते गिर राय निरखसुरे ।  
 बढती मंगल मालरे । मणि मोतीयडे बधावस्युं रे । रजत सोवन नर थालरे  
 ( नमो ० ) ॥ ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युरे । करस्युं पावन मोरी का  
 यरे । भगति जुगति जुहारसुरे । नाभि नन्दन जिन रायरे ( नमो ० ) ॥ ९ ॥  
 द्रव्य जाव करसुं मुदारे । पूजा विविध प्रकाररे । जावै जावना जावसुं रे ।  
 करसुं सफल अवताररे ( नमो ० ) ॥ १० ॥ रतनत्रयी भ्रमती भली रे । देसुं  
 ते धर बुद्धिरे । भव भव भ्रमण निवारसुरे । लहिसुं आतम सुद्धिरे ॥ ( न  
 मो ० ) ॥ ११ ॥ विध फरसण मन माहरोरे । मोहि रह्यो दिन रातरे । पुन्य  
 प्रबल थीपामियो रे । उज्जलगिरी केरी जातरे ( नमो ० ) ॥ १२ ॥ नाथ धूलेवा  
 सु पसाय थीरे । कारज सगला सिद्धरे । कहै जिन हरष सूरि सदारै ।  
 होय जो मंगल वृद्धरे ( नमो ० ) ॥ १३ ॥ इति सिद्धा ० ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( देशी पंथीडानी ) ॥ अंग उमावो मोनें अतिघणो । नेटवा वि  
 मल गिरंदरे । ( पंथीमा ) । नाभिराया कुल चंदलो । जिहां वसै मरुदेवी नन्द  
 रे । ( पंथीमा ) । विहिलुं बोलैरे पंथी ह्यांरा बहिलुं बोलैरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजो  
 है कितनीक दूररे ( पंथीमा बहि ० ) । पाली ताणो नगर सुहामणो । रूमी  
 ललिता सरनी पालरे ( पंथीमा ) । जिहां अंबलारे वमला घणा । ठुक  
 रही चंपलारी मालरे ( पंथीमा ) बहि ० ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवमा ।  
 सेत्रुंज बसिया है सोररे ( पंथीमा ) । ऊमाहो करीनें जे घर रहै । माणस

नहीं ते ठोर रे । ( पंथीमा बहिलुं० ) ॥ ३ ॥ सेवुंज वाटैजी चालतां ।  
 जीणी जीणीऊमै खेहरे । ( पंथीमा ) । मैला थायै संघना कापमा । निरमल  
 यायै देहरे । ( पंथीमा बहिलुं० ) ॥ ३ ॥ ऊंचो देहरो आदि नाथ रो ।  
 आगल चौक बिसाल रे ( पंथीमा ) । जिहां मिलमिल घणा मानवी ।  
 गावै प्रभुगुण मालरे । ( पंथीमा बहिलुं० ) ॥ ५ ॥ घस केसर जरवाटका ।  
 पजै जिनवर अंगरे । ( पंथीमा ) । फूलाहंदो सौहै प्रभुसिर सेहरो । दि  
 बलानी जोति अजंगरे । ( पंथीमा व० ) ॥ ६ ॥ ए गिरवर दीगं माहरै ।  
 ऊपजै परम आनन्दरे । ( पंथीमा ) मोनै जेटणरोजी कोमठै । प्रेम घणै  
 जिनचंदरे । ( पंथीमा व० ) ॥ ७ ॥ इति सिद्धा चलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जात्रानिनाणुं करियै विमल गिर ( जात्रा० ) ॥ पूरवनिनाणुं  
 वार सेवुंज गिर । रूपजनिनंद समोसरियै ( विम० जा० ) । कोडि सहस  
 नव पातिक तूटै । सेवुज सामें मग जरियै । ( विमल० जा० ) ॥ १ ॥ चौ  
 थ ठव दोय अरुम तपस्या । करि चढियै गिरवरियै । ( वि० जा० ) पुंम  
 रीक पद जपियै हरखें । अध्यवसाय शुभ धरियै ( वि० जा० ) ॥ २ ॥  
 पापी अन्नही निजर न देखै । हिसक पिण ऊपरियै ( वि० जा० ) । भूमि  
 संधारीनै नारितणो संग । दूर थकी पर हसियै ( वि० जा० ) ॥ ३ ॥ अकल  
 आदारीनै सचित परि हारी । गुरु साथे पद चरियै ( वि० जा० ) पम्किम  
 णा दोय बिबसुं कीजै । पाप पमल विष हरियै ( वि० जा० ) ॥ ४ ॥ कलि  
 काले ए तीरथमोटो । प्रवहण सम अवदरियै ( वि० जा० ) । उत्तम ए गिर  
 वर सेवतां । पदम कहै अवतरियै । ( विम० जात्रा० ) ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आज बधाई म्हारै रंग बधाई । मोतीबन्धेण ए चाल ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ सिद्धगिरी जेटो जवि जावे । जुं सुखसंपति आनंद थावै ।  
 सि० ॥ ए गिरवरकै जेटणसेती । पूरव संचित अघ सज्ज जावै ॥ सि० ॥  
 ॥ १ ॥ रायणहंखे रिपज जिनेसर । पूरव निनाणुं आया स्वजावै ॥ सि० ॥  
 पुंमर गिरकी महमा जिननै । नरतादिक सब जनकुं सुणावै ॥ सि० ॥ २ ॥  
 सासतो तीरथ तीन नुवनमें । शिवपुरि पाज प्रत्यक्ष कदावै ॥ सि० ॥ को



मि अनंत साधू इण ऊपर । मुक्तिगये इण गिरके प्रजावै ॥ सि० ॥ ३ ॥  
 एकवार गिरकुं जेठणसैं । सहस कोमना पातक जावै ॥ सि० ॥ नाजिरा  
 य मरुदेवीके नन्दन । आदिजिनंद जेठ्यां सुखपावै ॥ सि० ॥ ४ ॥ अदनु  
 तविंव अनोपमसोजित । चौमुख जिनवर अति मनजावै ॥ सि० ॥ देशदे  
 शांतरसैं वज्र नरगण । आय जलीविध पूज रचावै ॥ सि० ॥ ५ ॥ कपूर क  
 स्तूरी केसर घोली । मनसुध प्रभुके चरणें चढावै ॥ सि० ॥ आज हमारै  
 सुरतरु प्रगट्यो । मनमें हरष आनन्द जरावै ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रवी  
 कंचनमइ ऊगो । विमलाचल जेठ्या सुजजावै ॥ सि० ॥ मकसुदावाद अ  
 जीमगंजमें । गोत्र दूधेड्या प्रगट कहावै ॥ सि० ॥ ७ ॥ मोहतिमर अघ  
 दूर करणकुं । बुध सिंह जात्राकरी सुजजावै ॥ सि० ॥ गगन जोग ग्रह  
 इंडु संवह्वर । चैत्रउज्ज्वल तेरस मन जावै ॥ सि० ॥ ८ ॥ आग्रहसैं श्रीअ  
 जयराजकुं । साथ जलीविध जात्रा करावै ॥ सि० ॥ संव साथ श्री लक्ष्मी  
 प्रधानना । शिष्य मोहन प्रभुना गुणगावै ॥ सि० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनःराग बेलानल प्रजाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज सकल मङ्गलमिले । आज परमाणंदा (इस चालमें) ॥ ❀ ॥  
 ॥ ❀ ॥ आज पुंनरगिरि जेठिया । प्रगट्यो परम आनन्दा । मोहतिमर  
 दूर जये । जागा जव जय फंदा ॥ आ० ॥ १ ॥ मरुदेवाजीके लामला । ना  
 जिरायके नंदा । रिपजजिनेसर सुख करू । दिनमणिज्पुं दीपंदा ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ पूरवनिनाणुं रायणतलै । आया प्रथम जिणंदा । नेम विनां सज्जजि  
 नवरै । इन गिरकुं सेवंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥ कलुकाळै इण जरतमें । तारण  
 ऊऊ समंदा । अनन्त जीव मुगतै गया । बीतराग जाषिंदा ॥ आ० ॥  
 ॥ ४ ॥ चौमुख जिननें आदले । नववसि विंव सोहंदा । आत्मागुण निरम  
 ल करी । मोहन सुख पावंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति सिद्धगिरि स्तवनं ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ लघुसेत्रुंजरास लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उहा ॥ आदिजिनंद दिनंदसम । ज्येति रूप जगतेय । आ  
 तम गुण परकास कर । जवियणकुं सुख देय ॥ १ ॥ वाग्देवी प्रणमी  
 करी । सद्गुरु सीस नमाय । सिद्ध क्षेत्रनां गुण कज्ज । सुमतानें सुपसाय ॥  
 २ ॥ सुमतावचने चालतां । सदा सुरंगी देह । सुरपति नरपति सज्जनमें ।

पामेशिवसुख तेह ॥३॥ सुमताजिम चेतन जणी । समजावे चित आय ।  
 प्रथम वात एही कऊ । सुणो जवी चितलाय ॥ ४ ॥ ॥४॥ ढाल १ मारू  
 जीकी ॥४॥ सुमता कहे चेतन जणी । साहिवजी । ठेमो मिथ्या जालहो ।  
 इक चित्ते एगिरि सेविये ॥ सा० ॥ ज्यो निज गुण नी चाहहो ॥ इक० ॥ १ ॥  
 काल अनादीसँ रह्यो ॥ सा० ॥ कुमति कथन बस होयहो । जवमांहे जमतां  
 डखसखा ॥ सा० ॥ २ ॥ जन्म मरणकरि नव नवा ॥ सा० ॥ नटज्युं वेश व  
 नां बहो । चन्मतिमें नाटक तुम कियो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरक निगोदमें  
 तुम रखा ॥ सा० ॥ कृण नहिं पाम्यो सुख हो । किम जूलो डख देखी  
 जिसा ॥ सा० ॥ ४ ॥ देव मनुष्य अवतार में ॥ सा० ॥ मोह विटवणाडः  
 ख हो । चित्तधरने डुज्जन ठाँविये ॥ सा० ॥ ५ ॥ बल अपणो फोखां वि  
 नां ॥ सा० ॥ डुज्जन नपमे पायहो । जशलीजे डुज्जन क्य करी ॥ सा० ॥  
 ६ ॥ मुऊकुं कदेय न संजरी ॥ सा० ॥ तोपिण अवसर देखहो । तुमआगे  
 वात सज्ज कही ॥ सा० ॥ ७ ॥ उत्तम नर जिणनें कस्यो ॥ सा० ॥ होय  
 गुण अवगुण जाणहो । बलि जाँणें मित्र कुमिज्जनें ॥ सा० ॥ ८ ॥ मुऊसँ  
 प्रेम धरी करी ॥ सा० ॥ कीजे वचन प्रमाण हो । जिन मारग उत्तम  
 आदरो ॥ सा० ॥ ९ ॥ चारित्र धर्मनी आगन्या ॥ सा० ॥ धारो शिर  
 पर आजहो । जिम पामो रंग वधामणा ॥ सा० ॥ १० ॥ सुध सरधा  
 जलकुं ग्रही ॥ सा० ॥ वोवो समकित बीज हो । नवपल्लव धर्म तरू ऊये ॥  
 सा० ॥ ११ ॥ उत्तम नर सुरपति पणो ॥ सा० ॥ पुष्प सुगंधी जाण हो ।  
 फलइणका शिव सुख पांमस्यो ॥ सा० ॥ १२ ॥ उत्तम ग्यान प्रकाशसँ ॥  
 सा० ॥ सज्ज देखे निजरूप हो । परमात्म पदकुं पिठाँणिये ॥ सा० ॥ १३ ॥  
 तुं मुऊ वल्लजहे सदा ॥ सा० ॥ ॥ तुम गुण अपरं पारहो । परमात्म पद  
 तुंही अठे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पिण निश्चे व्यवहार में ॥ सा० ॥ निश्चे नयकुं  
 जाणहो । व्यवहारे शुद्ध क्रिया करी ॥ सा० ॥ १५ ॥ निज निज शक्ति  
 अनुसरे ॥ सा० ॥ पालै ब्रत मन शुद्धहो । नव पदनो ध्यान हिये धरी ।  
 सा० ॥ १६ ॥ सिद्ध गिरी प्रवहण चढी ॥ सा० ॥ वेगै शिवपुर जायहो ।  
 जव सायर पार पामो सुखे ॥ सा० ॥ १७ ॥ इण परि सुमता आयके ॥  
 सा० ॥ समजावे नवि चित्तहो । सुखपांमे समजे नविजिके ॥ सा० ॥

॥३॥ (डहाः) ॥ इणपर सुमता वयणसुण । आसन नवी जीव । हरख धरी  
 व्रत आदरे । धर्म अमृत रस पीव ॥१॥ सिद्ध गिरी इक अवसरे । आयावीर  
 जिणंद । इन्द्रादिकसज्ज आयने । बांदा धर आणंद ॥२॥ सिद्ध गिरीना गु  
 णसहू । सुणवा नविचितधार । प्रभुपद पंकज नमण कर । वैठा करि इकतार  
 ॥ ३ ॥ जगवन् दीनी देशना । सिद्धगिरी सम आज । जगमें कोइ तीरथ  
 नही । परतिख शिवपुर पाज ॥४॥ काल अनादीसैं रह्यो । नाम ठाम पर सिद्ध  
 साधु अनंता इण गिरे । अणसण लही सिव लिख ॥५॥ नामलियां सज्ज न  
 यटले । डुख दालिद्र छये दूर । दिनदिन अधकीसंपदा । पांमे सुख नरपूर ॥६॥  
 ॥३॥ (ढाल१) ॥ जंबूद्वीप मांहे कक्षीरे लाल । दक्षिण नरत प्रमाणरे ।  
 (नविकनर) सज्ज देशां मांहे सिरैरे लाल । सौरठ देश बखांणरे ॥ न० ॥  
 इण गिरनी महमा वमीरे लाल । कहे न सके कोई पाररे ॥ न० ॥ (वीर  
 जिनंदै जाषियेरे लाल ) ॥ १ ॥ विमलाचल प्रणमुं सदारै लाल । श्राद्ध  
 गुणां समनांमरे ॥ न० ॥ घर वैठां शुभ जावथीरे लाल । ध्यान कीयां  
 सुख पांमरे ॥ न० ॥ वी० ॥ ३ ॥ प्रथम अनादी कालसैरे लाल ।  
 अनंत सीधा इहां आयरे ॥ न० ॥ अनंत साधु बलि सीधसीरेलाल । प्रण  
 मुं ए गिरिरायरे ॥ न० ॥ वी० ॥ ४ ॥ फागुण सुदि दशमी दिनैरे लाल ।  
 पुरव निनांणुं वाररे ॥ न० ॥ आदि जिणंद समोसखारे लाल । चरण नमुं सु  
 खकारे ॥ न० ॥ वी० ॥ ५ ॥ पुंमरीक गणधर नमुंरे लाल । पंचकोमि  
 मुनिसायरे ॥ न० ॥ चैत्री पूनम दिन आयनेरे लाल । जाली शिवपुर वा  
 थरे ॥ न० वी० ॥ ६ ॥ नमि विनमि दोदो कोमसैरे लाल । इणगिर कीनो  
 वासरे ॥ न० ॥ फागुण सुद दसमी दिनैरे लाल । अविचल ज्योति प्रका  
 शरे ॥ न० ॥ ७ ॥ नमि पुत्री चौसठ कह्यीरे लाल । अणशण लही शिव  
 पायरे ॥ न० ॥ द्रावड संग काती पूनमैरे लाल । दसकोडि सीधा इहां आ  
 यरे ॥ न० ॥ वी० ॥ ८ ॥ राम नरत पांमव कक्षीरे लाल । बलि नारद नव  
 आयरे ॥ न० ॥ थावचा सेलग मुनीरे लाल । जालि मयाली शिव पायरे ।  
 न० ॥ वी० ॥ ९ ॥ अजित शांति चौमासौ रह्यारे लाल । नविजीवां हित  
 काजरे ॥ न० ॥ नेम विना सब आवियारे लाल । एशिव पुरनी पाजरे ।  
 न० ॥ वी० ॥ १० ॥ साधु अनंता प्रतिकंकरे लाल । सीधा ध्यान लगायरे

ज०॥ मनमोहन गिरि सेवतां रे लाल । पातिक दूर पुलायरे ॥ ज०॥ वी०  
 ॥ ११ ॥ ( उहाः ) ॥ करजोमी नितप्रतिनमुं । सहू साधु मनजाय । सेवुं  
 ज महातम ग्रन्थसैं । जेद सुणो चितलाय ॥ १ ॥ जरता दिकसैं आजलग  
 सोले उधार कहाय । ग्रंथान्तर में जेहना । जेद कक्षा समजाय ॥ २ ॥ सं  
 प्रतिकाले एरह्यो । पोडसमो उधार । करमचंद मोसी तणो । जशरह्यो जग वि  
 स्तार ॥ ३ ॥ देव जुवन जिम सोजता । नववसि चैत्यना जाव । सुरपति नर  
 पति सज्जनमें । प्रगढ्यां आतमदाव ॥ ४ ॥ सज्ज विंवनी संख्या कज्ज । जेनव  
 वसिमें होय । मूलनायक वसिनाममें । प्रगट कज्ज ठुं जोय ॥ ५ ॥ ( ढाल ३ )  
 ॥ ॥ नमो रे नमो सेवुजगिरी रे । ( ए चाल ) ॥ ॥ प्रणमुं ए गिरिरायनै रे ।  
 धन्य दिवस थयो आजरे । सुमतानें सुपसायधी रे । मनवंछित फल्या काजरे  
 ॥ १ ॥ प्र० ॥ प्रथम विमल वसि आयनै रे । पूज्या जिनप्रति विंवरे । सज्ज  
 चैत्यामें सोजतारे । ठप्पनसैं ठप्पन विंवरे ॥ २ ॥ प्र० ॥ नाजिराय सुत जा  
 णियै रे । मूल नायक त्रिवि शांतिरे । मोतीवसीमें विंवरह्यारे । पचवीशसैं वया  
 लीस क्रांतिरे ॥ ३ ॥ प्र० ॥ वालावसिमें सोजतारे । च्यारसैं पट् विंवजाणरे ।  
 मूलनायक दोनुं वसीतणारे । आदिनाथ गुणखाणरे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अद्भुत  
 विंव मनोहररे । इग्यारै कर ऊंचो जाणरे । विस्तारमान नवहाथनोरे । मुज्जव  
 ल्लज जिम प्राणरे ॥ ५ ॥ प्र० ॥ चौथी प्रेमावसि ऊं नमुं रे । आदिनाथ जग  
 नाथरे । पांचसैं अमृतीश जिहां रह्यारे । विंव मिल्यां सज्ज साथरे ॥ प्र०  
 ॥ ६ ॥ अजितनाथ स्वामी तणी रे । पांचमी हेमावसि थायरे । अमृत  
 ऊपर तीनसैं रे । विंवनमुं गुण गायरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ उजमवसी ठवी जाणियै रे ।  
 पद्मप्रज्ज जगजाणरे । रिखजानन चंद्राननै रे । वारिखेण व्रधमानरे ॥ ८ ॥  
 प्र० ॥ वावन जिनांला सास्वतारे । चौमुख नंदीसर जावरे । च्यारसैं गुणती  
 श सोजतारे । विंव अनोपम रावरे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ मूलनायक पार्थ्व प्रज्जुत  
 णी रे । प्रतिमा साकरवसि मांयरे । और तयांसी विंवठै रे । नयणेदीठां सुख  
 पायरे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ आदिनाथ ठीपावसी रे । वीशविंव सुविसालरे । नव  
 मी खरतरवसि विंवनी रे । ओपमा रविजिम जालरे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ आदी  
 शर चौमुख तणी रे । प्रतिमा च्यार सुख दायरे । और विंव ते वीशसैं रे । पंच  
 दश देण्यां मनजायरे ॥ १२ ॥ प्र० ॥ चारै सहस त्रिणसैं ऊपरै रे । अठाव

न बलि होयरे । इम नववसि सज्ज विंवनीरे । संख्या कहीमें जौयरे ॥ १३ ॥  
 प्र० ॥ पांमव मंदर जाणियेरे । मरुदेवी टुंक सुखकारे । शाशनदेवीनी मंद  
 रीरे । नेमचवरी धर्मद्वारे ॥ १४ ॥ प्र० ॥ रायण तल पगलानमुंरे । गणधर  
 मंदर जायरे । चवदैसे बावन तणारे । नित नित प्रणमुं पायरे ॥ १५ ॥ पुं  
 मरीक ठविमोहनीरे । देण्यां मनवस थायरे । नीमकुंम सुचिजल नखोरे ।  
 सूर्यकुंम जलनायरे ॥ १६ ॥ प्र० ॥ त्रिण षट् वारै गाननीरे । नमती देउं  
 तीनरे । उलका जोल दरशण करीरे । सिद्धसिद्धा सिद्धचीणरे ॥ १७ ॥ प्र० ॥  
 चेलणा तलाई सोनतीरे । अजित शांति थुंन आतरे । नाडवामूंगर हस्त  
 गिरीरे । कदमगिरी कीनीजातरे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ इस्यादिक दरशण करीरे ।  
 सिद्धबड सेउं आयरे । अगिणत चरण प्रभुतणारे । नमणकरुं मन लायरे  
 ॥ १९ ॥ प्र० ॥ देवपुरी जिम सोनतीरे । मूंगर अतिहि विसालरे । सज्ज  
 नपदना जात्रवीरे । पूजै सहस मिल चालरे ॥ २० ॥ प्र० ॥ इम सिद्धगि  
 रि मन लायनेरे । विकरण नमुं त्रिजं कालरे । ओर नमुं सज्ज नव्यनेरे । जे  
 शुध आग्या पालरे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ प्रतिदिन एगिरवर चढीरे । अष्टद्रव्य  
 लेई हाथरे । द्रव्य नाव पूजा करैरे । मोहन सज्ज जगनाथरे ॥ २२ ॥ प्र० ॥  
 ॥ ॥ ( उहा ) ॥ इण परि संख्या विंवनी । करि आतम सुखदाय । अधि  
 क विंव कोइ थापसी । नमसुं चित्त लगाय ॥ १ ॥ मंदबुद्धि संयोगसें । रही  
 होय कबु नूल । तोपिण ओगुण ठामके । संघ जूवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल  
 पुन्य संयोगसें । मुऊ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग  
 जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप नावना । जेद धरमना ज्यार । नावविनां  
 सज्ज ठारसम । नाव सज्ज मुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । जग  
 वन वचन प्रमाण । नाव धरी प्रभु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥  
 शिव सुखसें वेमुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर  
 बांधे नवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे ऊगमें । मुऊ आवे शुभ नाव ।  
 मन वंठित सुख जव मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत  
 रुसमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकुंसमरके । पामुं नवजल पार ॥ ८ ॥  
 ( ढाल ) सेतुंजसाधु अनंतासीधा ( इस चालमे ) एतीरथनी अद्भुत महमा । धा  
 रो चित्तमऊारे । पंचप्रमाद विषय सुखठमी । जेटो गिरि सुखकारे । एती ० ॥ १ ॥

मनुषा जन्म पायके जेजवि । जेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरजावासै कहिये  
 पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए ॥ १ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उत्थापे निज  
 बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो जमसी । डुल्लेज पांमें सिद्धरे ॥ ए ॥ २ ॥ इम जां  
 णी मन जावधरीनैं । जवि मिल आवेधायरे । ठहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ  
 मन जायरे ॥ ए ॥ ३ ॥ इह जव परजव मांहेकीधा । जे नर पाप अधोरे । ते  
 इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सज्ज चोरे ॥ ए ॥ ४ ॥ रोग सोग स  
 ज्जनांमें नासे । तूटै करम कठोररे । डुष्ट देव देवी कामण सज्ज । जागे तीरथ जो  
 ररे ॥ ए ॥ ५ ॥ आलोयण लेई प्रजु साखे । पापमेल सज्ज धोयरे । क्षिणमें  
 निजगुण उज्ज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए ॥ ६ ॥ समकित धारी जे  
 सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रन्यै । पूजा करे स  
 ज्ज कोयरे ॥ ए ॥ ७ ॥ देव सहाये सज्ज संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत  
 उपद्रव जय नहिं व्यापे । डुख दालिद्र सज्ज खोयरे ॥ ए ॥ ८ ॥ तीरथ जावा  
 कर तीरथनी । जगति करो मन शुद्धरे । तिर्थकर पिण तीर्थनमीनैं । देवपदेश सुबु  
 द्धिरे ॥ ए ॥ ९ ॥ निज निज शक्ति प्रमाणे जेजवि । सेलखेत्र निज वित्तरे । ख  
 रचे निज मन जाव धरीनैं । पांमें सज्ज जगकित्तरे ॥ ए ॥ १० ॥ जिम ती  
 रथ गुण गुरु मुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध विंवचरण स  
 ज्ज वंदी । साखा आतम काजरे ॥ ए ॥ ११ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवसै  
 सन् उगणीसे तीशरे । धन्यधनी धन्यवेला एहीज । पांम्यां त्रिजुवन ईशरे ॥ ए ॥  
 १२ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिपजदेव जिनरायरे । एहीजदेवरहा  
 त्रिजुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए ॥ १३ ॥ (उहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरं  
 सुणोगरीवनिवाज । कर्म सवन दूरेकरी । दीजे त्रिजुवन राज ॥ १ ॥ मोसे  
 अधम संसारमें । कर्म सवन वस होय । तप जप संयम नहिं पले । किमपांमुं पद  
 तोय ॥ २ ॥ जेतुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रजु अचरज नहिं  
 अचरज मुक्तनें काज ॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सज्ज अपराध । तु  
 मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगसैं ।  
 रंगाणी मुक्तदेह । अवमिथ्यात पतंगको । रंगचढें नहिरेह ॥ ५ ॥ तुम  
 सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरं । तन मन व  
 चन लगाय ॥ ६ ॥ इम वीनति प्रजुनी करी । समकित निरमल काज । द्र

व्य क्षेत्र काल जाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥७॥ रत्न जडित सिंहा  
 सणें । रयण आचूषण सार । अद्भुत स्थ वैठे प्रभु । उज्ज्व करे नर नारा ॥८॥  
 (ढाल) ॥ आज महोत्सव रंगरलीरी (इस चालमे) । आज उज्जवदिन मुकुमन  
 जायो ॥आ०॥संघसज्ज मिल गावे वधाई । रथ वैठा सोहे जिन रायो ॥आ०॥  
 ॥१॥ वीणा मृदंग ताल कंसाळा । मधुर ध्वनी अंवर रहिगयो ॥आ०॥२॥  
 मकसुदावाद पूरव दिश ठाजे । अजीमगंज गंगापार बसायो ॥आ०॥३॥ बुध  
 सिंह विसनचंद मिलजाई । गोत्र डुधेझ्या मांय कहायो ॥आ०॥४॥ गिरि  
 महमासुण जाव धरीनें । विधसें जात्र करी सुखपायो ॥आ०॥५॥ पुन्य  
 संयोग मिल्यो मोय सजनी । आनंद दायक संव सवायो ॥आ०॥६॥ आ  
 ज अंगणमोय सुरतरु फलियो । डुखदालिद्र सज्ज दूरगमायो ॥आ०॥७॥  
 आजमनारेथ सज्ज मुक्त फलिया । आज आनंद मंगल वरतायो ॥आ०॥८॥  
 गुरु खरतर जिन आग्या पालक । सोहे हंससूरि महारायो ॥आ०॥९॥ पा  
 ठक पद लायक गुणसोजित । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥आ०॥१०॥  
 विद्या विशाल वाचक सुखदायक । पंक्ति लक्ष्मी प्रधान पसायो ॥आ०॥११॥  
 तासुशीश मोहन हित जाणी । उत्तम ए तीरथ गुणगायो ॥आ०॥१२॥

॥॥ पुनः ॥॥

॥ ॥ सिद्धाचल गिरि जेव्यारे । धन्य जाग हमारा । सिद्धा० ॥ (टेर )  
 ए गिरवरनी महमा मोटी । कहतां नावै पारा । रायण खुख समो सखा  
 स्वामी । पूरव निनाणूं वारारे ॥ ध० ॥ सि० ॥ १ ॥ मूल नायक श्री आदि  
 जिनेसर । चौमुख प्रतिमा चार । अष्टद्रव्य सुं पूजा जावै । समकित मूल  
 आधारारे ॥ ध० ॥ सि० ॥ २ ॥ जाव जगति सुं प्रभुगुण गावै । अपणा जनम  
 सुधारा । यात्राकरी जविजन शुभ जावै । निरय तिर्यच गति वारारे ॥ ध०  
 सि० ॥ ३ ॥ दूर देशांतरथी जुं आयो । श्रवण सुणी गुण ताहरा । पतित उधा  
 रण विरुध तुमारो । ए तीरथ जग सारारे ॥ धन्य० ॥ सि० ॥ ४ ॥ संवत अ  
 ठार वयांसी आषाढै । वदि आठम ज्योमवारा । प्रभुजीके चरण प्रतापसंघ  
 में । कुमारतन प्रभु प्यारारे ॥ ध० ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥॥

॥॥ पुनः ॥॥

॥॥ जावधर धन्य दिन आज सफलो गियो । आजमें सजनि आ

नद पायो ॥ जा० ॥ हर्ष धरि निजरि जरि विमलगिर निरखकर । रजत  
मणि कनक मोतिय वधायो ॥ जा० ॥ १ ॥ पग पगै उमगधर पंथनित  
पूछतां । धन्य दोय चरण जिहां तलक आयो । आज धनदीह जागी सु  
कृतकी दिशा । आज धनदीह दिन सुजश गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर डर  
गत टलिय यात्र विधसुं करी । पुन्य जंमार पोतै जरायो । वदत जिनराज  
मनरंग सुरगिरि सिखर । रिपज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥  
॥ इति सिद्धगिरी स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति कार्तिक मास चतु पर्वाधिकारः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मिगसर महिनेमें मिती मिगसर सुद ११ ( सो ) मोन इग्या  
रस नामसँ पर्व प्रसिद्ध है । इस दिन दैदसै कल्याणक ज्ञये ( सो लि  
खते हैं ) जन्म । दिक्षा । केवलज्ञान । यह । तीन कल्याणक । श्रीमल्लिनाथ  
स्वामीके ज्ञये । श्री अरनाथ स्वामीनें दिक्षा अंगीकार करी ॥ श्रीनमि  
नाथ स्वामीनें केवल ग्यान उत्तम ज्यो । ( ऐसे ) इस जगतक्षेत्रमें वर्त्त  
मान चौबीशीके पांच कल्याणक ज्ञए ( इसी माफक ) पांच जगत । पांच  
ऐरवतमें । चौबीशीके पांच कल्याणकमिलानेसँ । पचास कल्याणक ज्ञये  
अतीत । अनागत । वर्त्तमान । कालके अपेक्षायें । दैदसै कल्याणक ज्ञये ।  
इसीसँ यह दिन ब्रमा उत्तम है ( इस दिन ) मोन संयुक्त उपवास करै । अठ  
पहरी पोसो करके । मोन इग्यारसको गुणनो करै । पोशहकी शक्ति न हो  
य ( तो ) देशावगासी लेके गुणनो करै । ( ऐसे ) इग्यारै वरशमें, इग्यारै  
उपवास करै । और ( जो ) इग्यारस करनेकी इच्छा हो ( तो ) मासमें वद  
सुदकी । दोनुं एकादशी । इग्यारै वरश, इग्यारै महिनां करै । यह तपस्या  
करतां, इग्यारै अंग शुद्धनावसँ सुणें । इग्यारै अंग लिखायकै देवै । पढनें  
वालूँ का सहाय्य करै । तपस्या ग्रहण करनेको ( पारनेको ) गुरूके मुखसँ  
विधि करै । ( समवसरण बैठा जगवंत० ) इत्यादि इग्यारसको स्तवन  
पूर्व लिख्यो है । सो पढै ( वा ) सुणें । पीठै उद्यापनमें पेंतालीस आग  
मकी पूजा करै । यथाशक्ति साहमीवठल करै ॥ ❀ ॥ इति विधि ॥ ❀ ॥



॥ ॐ ॥ अथ मोन एकादशीको गुणनो लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे  
अतीत २४ जिनपंच कल्या  
एक नामः ॥ ॐ ॥ १ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम ॥ ॐ ॥

४ ॥ श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक ० ॥ ॐ ॥ २ ॥

२१ ॥ श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः ॥  
२९ ॥ श्री मल्लि अर्हते नमः ॥  
२९ ॥ श्री मल्लिनाथाय नमः ॥  
२९ ॥ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः ॥  
२८ ॥ श्री अरिनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक ० ॥ ॐ ॥ ३ ॥

४ ॥ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री उदय नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ धातकीखंमे पूर्वभरते  
अतीत २४ जिन पंचकल्या  
एक नामः ॥ ॐ ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ द्वितीय ॥ ॐ ॥

४ ॥ श्रीअकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीसुभंकर अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीसुभंकरनाथाय नमः  
६ ॥ श्रीसुभंकर सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीसप्तनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ धातकीखंमे पूर्वभरते  
वर्तमान २४ जिनपंच कल्या  
एक नामः ॥ ॐ ॥ ५ ॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
२९ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥  
२९ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥  
२९ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
२८ ॥ श्री गांगिलनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ धातकी खंडे पूर्वभरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ ॐ ॥ ६ ॥

४ श्री सांप्रति सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ पुष्करार्धपूर्वभरते  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ॐ॥७॥

॥ प्रथम ॥

- ४ ॥ श्रीमृडु सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ पुष्करार्ध पूर्वभरते  
वर्तमान २४ जिनपंच  
कल्याणक ॥ॐ॥७॥

- २१ ॥ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
१७ ॥ श्री अयोग नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ पुष्करार्ध पूर्वभरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ॐ॥९॥

- ४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ।  
६ ॥ श्री शुद्धार्ति अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री शुद्धार्ति नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री शुद्धार्ति सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ धातकीखंभे पश्चिमभरते  
अतीत २४ जिन पंच कल्याण  
क नामः ॥ॐ॥१०॥

॥ द्वितीय ॥

- ४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीहरिभद्र अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीहरिभद्र नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ धातकीखंभे पश्चिमभरते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥११॥

- २१ ॥ श्रीप्रियव्रत सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री अक्षोज अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री अक्षोज नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्रीअक्षोज सर्वज्ञाय नमः ॥  
१७ ॥ श्रीमल्लिसिंह नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ धातकीखंभे पश्चिमभरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ॐ॥१२॥

- ४ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री धनद अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री धनद नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री पौषनाथाय नमः

॥ ❀ ॥ पुष्करार्ध पश्चिमन्तरते  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ ❀ ॥ १२ ॥

॥ प्रथम ॥

- ४ ॥ श्री प्रलंबसर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री प्रशमजित नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्ध पश्चिमन्तरते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ ❀ ॥ १४ ॥

- २१ ॥ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री विपरीत अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री विपरीत नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री प्रसाद नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ पुष्करार्ध पश्चिमन्तरते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ ❀ ॥ १५ ॥

- ४ ॥ श्री अघटित सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीरिषभचन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ ❀ ॥ १६ ॥

॥ द्वितीय ॥

- ४ ॥ श्री दयांतसर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री अग्निनंदन अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री अग्निनंदन नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री अग्निनंदन सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री रत्नेश नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे  
वर्तमान २४ जिन पंच कल्या  
णक नामः ॥ ❀ ॥ १७ ॥

- २१ ॥ श्री शामकाट सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः ॥  
१८ ॥ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवत क्षेत्रे  
अनागत २४ जिन पंच क  
ल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १८ ॥

- ४ ॥ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री व्रतधर अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री व्रतधर नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री निर्वाण नाथाय नमः ॥

॥॥॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते  
अतीत २४ जिन पंच कल्या  
एक नामः ॥॥॥१८॥

॥ प्रथमः ॥

४ ॥ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नमः ॥

॥॥॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥॥॥१९॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री संतोषित अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री संतोषित नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री संतोषित सर्वज्ञाय नमः ॥  
२० ॥ श्री काम नाथाय नमः ॥

॥॥॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥॥॥२०॥

४ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री चंद्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री दिवादित्य नाथाय नमः ॥

॥॥॥ पुष्करार्ध पूर्व ऐरवते  
अतीत २४ जिन पंचकल्या  
एक नामः ॥॥॥२१॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री अष्टाहिकसर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री वणिक अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री वणिक नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

॥॥॥ पुष्करार्ध पूर्वऐरवते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥॥॥२२॥

२१ ॥ श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नमः  
१९ ॥ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥  
१९ ॥ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥  
१९ ॥ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः  
१९ ॥ श्री खेमन्त नाथाय नमः ॥

॥॥॥ पुष्करार्ध पूर्वऐरवते  
अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥२३॥

४ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री रविराज अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्री रविराज नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ धातकीखंमे पश्चिमऐर  
वते अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ॐ॥२२॥

॥ॐ॥ प्रथम ॥ॐ॥

- ४ ॥ श्रीपुरूरव सर्वज्ञाय नमः ॥  
३ ॥ श्रीअवबोध अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीअवबोध नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीअवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीविक्रमैंद्र नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ धातकीखंमे पश्चिम ऐर  
वते वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ॐ॥२६॥

- २२ ॥ श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः ॥  
२० ॥ श्रीहर अर्हते नमः ॥  
२ए ॥ श्रीहर नाथाय नमः ॥  
२ए ॥ श्रीहर सर्वज्ञाय नमः ॥  
२८ ॥ श्रीनन्दकेश नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ धातकीखंमे पश्चिमऐर  
वते अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥२७॥

- ४ ॥ श्रीमहामगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीअसौचित अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीअसौचित नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीअसौचित सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीधर्मेन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥ पुष्करार्ध पश्चिमऐरवते  
अतीत २४ जिन पंच  
कल्याणक नामः ॥ॐ॥२५॥

॥ॐ॥ द्वितीय ॥ॐ॥

- ४ ॥ श्रीअश्वत्थन्द सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्री कुटिल अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीकुटिल नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीवर्धमान नाथाय नमः ॥

॥ॐ॥पुष्करार्ध पश्चिम ऐरवते  
वर्तमान २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ॐ॥२६॥

- २२ ॥ श्रीनन्दिक् वर्धमानाय नमः ॥  
२ए ॥ श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ॥  
२ए ॥ श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥  
२ए ॥ श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥  
२ए ॥ श्रीविवेक नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्ध पश्चिमऐर  
वते अनागत २४ जिन पंच  
कल्याणक ॥ॐ॥३०॥

- ४ ॥ श्रीकलाप सर्वज्ञाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीविसोम अर्हते नमः ॥  
६ ॥ श्रीविसोम नाथाय नमः ॥  
६ ॥ श्रीविसोम सर्वज्ञाय नमः ॥  
७ ॥ श्रीआरण नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ इति श्रीमौन एकादशी गुणनो संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणनेंसें दैदसैं माला होय ( जो ) नव्यजीव शुद्ध चित्तसें गुणेंगे ( सो ) अल्प नवमें अनंत सुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास पर्वधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोप मास मध्ये पर्वधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोप महिनमें, मित्ती पोपवद १० ( सो ) पोप दसमी नामसें पर्व प्रशिद्ध है । इस दिन श्री पार्श्व नाथ स्वामीका जन्म कल्याणक है । इसी से यह दिन श्री संधमें परम आनंदकारी है । इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको अधिकार सुणें । एकाशणादिकको पञ्चक्खाण करै । जहां श्रीपार्श्व नाथ स्वामीके नामसें तीर्थ प्रशिद्ध होय । उहां यात्रा करणें को जावै । कदास यात्रा करनें को न जाय सकै ( तो ) जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की स्थापना होय । उहां महोत्सव संयुक्त दर्शण करनेंको जावै । जलयात्रा दिक महोत्सव करकै अष्टोत्तरी स्नात्र करावै ( अथवा ) पंचकल्याणकजी की ( वा ) सतर जेदी पूजा करावै । रात्री जागरण करावै । तोरण बांधै । गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरैं के उत्सव करै ( और ) जन्म कल्याण कादिक ॥ पाश जिनेसर जगति लोए ॥ बाणी महा वादनी ॥ इत्या दिक पार्श्वनाथ स्वामीके गुण गञ्जित स्तवन पढ़ै । ( वा ) सुणें । इसी तरैं इस पर्वको सेवन करनेंसें । आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे । अनेक तरैंसें इति वृद्धि सुख सौभाग्यको प्राप्त होंगे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीचंद्रा प्रभु जिनवर साद्व सुणियो ॥ ( इस चालमें ) । पोश दसम दिन पारश प्रभुको । जन्म जयो सुखदाई । ( में वारीजावुं ० ) । काशी देश वणारसी नगरी । अस्वशेन कुल आई । ( में ० ) बांमाउर अवतार लियो है ॥ सज्ज जीवन गुण दाई ॥ ( में १ ) ॥ एक सद्गुरु अवेत्तर लक्षण । अनुपम रूप सुदाई । ( में ० ) । नील वरण ठेपि तीन ग्यानयुत । पार्श्व प्रभु वरदाई । ( में या ० । २ । पो ० ) । नरक जीव पि

ए क्षिण सुख पावत । दिश कुमरी मिलआई । ( में ० ) सूतिका कर्म क  
री निजथानक । गई सज्ज हरष नराई ( मेंवा ० । ३ । पो ० ) ॥ आशन  
कंपित सज्ज सुरवरना । देख ग्यान जेद पाई । कोमा कोम देव देवांगना  
मिल सज्ज आगल धाई । ( में वा ० पोश ० ) ४ ॥ सुरपति सक्र पंम्ब  
रूपै कर । मेरु सिखर ले जाई । ( में ० ) । स्नात्र महोत्तव अधिक आ  
नंदसे । वसुविध पूज रचाई । ( मेंवा ० । ५ । पो ० ) । वत्तीसवद्ध ना  
टक प्रभु आगल । तत्तार्थेई तान सुणाई । ( में ० ) सात तीन इकवीश जे  
द कर । मिष्ट वचन गुण गाई । ( मेंवा ० । ६ । पो ० ) । इम उत्तवकर  
प्रभुकों लेई । माता पास वैठाई । ( में ० ) । रत्नकुक्षि धारक तू जगमें ।  
तूसज्ज सुर नर माई । ( मेंवा ० पो ० ) । ७ । हरखधरी धनधान्य बहूविध ।  
राजरिद्ध फैलाई । ( में ० ) नंदीशर अठाई महोत्तव । करि सज्ज थानक  
जाई । ( मेंवा ० ॥ ८ ॥ पोश ० ) । अश्वसेन कुलक्रम आचारै । जन्मउ  
त्तव अधकाई । ध्वजतोरण वाजित्र बहू विध । मंगलध्वनि बरताई । ( में  
वा ० पोश ० ) ॥ ९ ॥ इम प्रभु जन्म कल्याणक दिवसै । सज्ज संघ हरख  
बधाई । ( में ० ) लक्ष्मी प्रधान मोहन प्रभुसेवै । अहनिशि ध्यान लगाई ।  
( मेंवा ० पो ० ) । १० ॥ ❀ ॥ इति जन्म कल्याणक स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौमीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी । जागै जग विख्यात । पाशतणा गु  
णगावतां । मुऊ मुख वसड्योमात ॥ १ ॥ नारंगै अणहलपुरै । अहमदा वा  
दै पाश । गौमीनो धणी जागतो । सज्जनी पूरै आस ॥ २ ॥ शुन्न बेला  
शुन्नदिन घनी । मज्जरत एकमंमाण । प्रतिमा ते इह पाशनी । थई प्रतिष्ठा  
जाण ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ गुणहि विशाला मंगलीक माला ।  
वामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण मणि माणकदे । गौमीनो धणी  
जाचोजी ॥ ४ ॥ ( गु ० ) अणहलपुर पाटण मांहे प्रतिमा । तुरक तणै घर हूँतीजी ।  
अश्वनीनूमि अश्वनीपीडा । अश्वनी बालि विगूती जी ॥ ५ ॥ ( गु ० ) जागंतो ज  
हजेहनें कहियै । सुहणो तुरकनें आपैजी । पाश जिनेसर केरी प्रतिमा । से  
वक तुऊ संतापैजी ॥ ६ ॥ ( गु ० ) ग्रह कुठीनें परगट करजे । मेघा  
गोठीनें देजे जी । अधिको म लेजे उगो मलेजे । टक्का पांचसै लेजेजी

॥ ७ ॥ ( गु० ) नहिं आपिस तो मारीस मुरमीस । मोर बंध बंधास्यैजी ।  
 पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुऊ । लाठ घणी घर जास्यै जी ॥ ८ ॥ ( गु० ) मारग  
 पहिलो तुऊनें मिलस्यै । साहयवाह जे गोठीजी । निलवट टीलो चोखा चे  
 ढ्या । वस्तु वहै तसुपोठी जी ॥ ९ ॥ ( गु० ) ॥ ॥ ( दूहा ) ॥ ॥ ॥ मनसुं बीहनो तुरक  
 मो । मानें बचन प्रमाण । बीबीनें सुहणा तणो । संजलावै सहिनाण ॥ १० ॥  
 बीबी बोलै तुरकनें । बमा देव है कोइ । अवसताव परगटकरो । नही तर मारै  
 सोय ॥ ११ ॥ पाठलीरात परोमीयै । पहली बंधै पाज । सुहणा माहें से  
 ठनें । संजलावै यक्ष राज ॥ १२ ॥ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ ॥ एम कही यक्ष  
 आयो राते । सारथ बाऊनें सुहणै जी । पाशतणी प्रतिमा तुंलेजे । लेतो  
 शिरमत धुणे जी ॥ १३ ॥ ( एम० ) पांचशैटका तेहनें आपे । अधिको म  
 आपिस चारोजी । जतन करी पुहचामे थानकि । प्रतिमा गुण संचारो  
 जी ॥ १४ ॥ ( एम० ) तुऊनें होसी वज्र फलदायक । जाई गोठीनें सुण  
 जे जी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । प्रहउरीनें धुणजे जी ॥ १५ ॥ ( एम० )  
 सुहणो देईनें सुरचाल्यो । अपने थानक पज्जतो जी । पाटण माहें सारथवाज्ज ।  
 हींडै तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ ( ए० ) ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी । चो  
 खा तिलक लिलामै जी । संकेत पज्जतो साचोजाणी । बोलावै वज्जलामै  
 जी ॥ १७ ॥ ( ए० ) मुज घरि प्रतिमा तुऊनें आपुं । पाश जिणैसर केरी  
 जी । पांचसै टका जो मुऊ आपै । मोहन मांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ ( ए० )  
 नाणो देई प्रतिमा लेई । थानक पज्जतो रंगैजी । केशर चंदन मृगमद घोली  
 विधसुं पूजा रंगैजी ॥ १९ ॥ ( ए० ) गादी रूमी रूनी कीधी । ते मांहि  
 प्रतिमा राखैजी । अनुक्रम आव्या परिकरमाहै । श्री संघनें सुरसाखै जी  
 ॥ २० ॥ ( ए० ) उठव दिन २ अधिकाथावै । सत्तर जेद सनावोजी ।  
 ठाम २ ना दरशण करवा । आवै लोक प्रजातोजी ॥ २१ ॥ ( ए० ) ॥ ॥  
 ( दूहा ) ॥ इकदिन देखै अवधिसुं । परिकर पुरनो जंग । जतनकरुं प्रतिमा  
 तणो । तीरथ अठै अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठनें । थल अटवी  
 उज्जाम । महिमा थास्यै अति घणी । प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुश  
 ल खेम तिहां अठै । तुऊनें मुऊनें जाणि । संका ठोमी काम करि । कर  
 तो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ ॥ पाश मनोरथ पूरा करै ।



बाहण एक वषन्न जो तरै । परिकरथी परियाणो करै । इक थल चढ बीजै  
 ऊतरै ॥ २५ ॥ वारै कोस आव्या जेतलै । प्रतिमा नविचालै ते तलै ।  
 गोठी मनह विमासण थई । पास जुवन मंमावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी  
 किमकरुं प्रयाण । कुटको कोइ नदीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो  
 मंमावूं किम गरथै विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंघरहस्यै किहां । सिद्धा  
 बटो किम आवै इहां । चिंतातुर थयो निद्रालहै । यद्धराज आवीनैं कहै  
 ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां । गरथवणो जाणी जे तिहां । स्व  
 स्तिक सोपारीनैं ठाणि । पाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल  
 सजल तिहां किल जओ । अमृत जल नीसरसी कूओ । खाराकुआ तणो  
 इह सैनाण । झूमि पड्यो ठै नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सिद्धावटो सीरोही बसै ।  
 कोठपराजवियो किससिसै । तिहां थकी तूं इहां आण जे । सत्यवचन मा  
 हरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो । सिद्धावटैनें सुहणो दि  
 यो । रोगगमीनैं पूरुं आस । पाश तणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे  
 मान्यो तेवैण । हेम वरण देखाज्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ जुवा । सि  
 द्धावटैने गया तेमवा ॥ ३३ ॥ सिद्धा बटो आवै सूरमो । जीमें खीरखाम  
 घृत चूरमो । घमै घाट करै कोरणी । लगन जलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥  
 थंन ९ कीधी पूतली । नाटक कौतिक करती रली । रंग मंमप रलियाम  
 णो रसै । जोतां मानवनों मन बसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद । स्वर्गस  
 मो मंमे आवास । दिवश विचारी इमो घड्यो । ततखिण देवल ऊपर  
 चड्यो ॥ ३६ ॥ शुन्न लगन शुन्न वेलावास । पद्मासण वैठा श्रीपास । महिमा  
 मोटी मेरुसमान । एकल मिल बगमे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सां  
 जली । तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरीया अठै । यात्र करीनैं  
 परनें पठै ॥ ३८ ॥ ॐ ॥ ( दूहा ) ॥ विघन विमारण यद्ध जगि । तेहनो  
 अकल सरूप । प्रीत करै श्रीसंवनें । देखामै निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ  
 गौमी पाशजिन । आपै अरथजंमार । सानिध करे श्रीसंघनें । आस्या पूरण  
 हार ॥ ४० ॥ नील पलाणें नीलहय । नीलो थइ असवार । मारग चूका  
 मानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ॐ ॥ ( ढाल ) ॥ वरण अढार तणो  
 लहै जोग । विघन निवारै ठालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप । ठालै

सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ धरि धननो सुत । आपै अपुत्री  
यानें पुत्र । कायरनैं सूरूपण धरै । पार उतरै लह्नी वरै ॥ ४३ ॥ दो जा  
गीनैं दै सोजाग । पग बिहूणनैं आपै पग । ठाम नही तेहनैं दैठाम । मन  
वंतित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधाखनैं दो आधार । जवसायर ऊतरै  
पार । आरतीयानी आरत जंग । धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समख्यां  
साद दीयै यक्ष राज । तेहना मोटा अठै दिवाज । बुद्धि हीणनैं बुद्धि प्र  
कास । गुंगानैं दै वचन बिलास ॥ ४६ ॥ उखियानैं सुखनो दातार । जय  
भंजण रंजण अवतार । वंधन तूटै वेनी तणा । श्री पार्श्वनाम अक्षर सम  
रणा ॥ ४७ ॥ ( दूहा ) ॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपै । विश्वानर विक  
राल । हस्त यूथ दूरैटलै ॥ उधर सीह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा जयचूक  
वै । विप अमृत उमकार । विपधरनो विप ऊतरै । संग्रामें जय जय कारा ॥ ४९ ॥  
रोग सोग दालिद्र डख । दोहग दूर पुलाय । परमेशर श्री पाशनो ।  
महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ( कमखानी चाल ) २ ॥  
उंजितुं उंजितुं उंज उपशम धरी । उंझीं श्री पार्श्व अक्षर जपतै ॥ जूतनैं  
प्रेत जोटिंग ध्यंतर सुरा उपसमै । बार इकवीश गुणतै ॥ ५१ ॥ ( उं० ) उ  
धरा रोग सोगा जरा जंतनैं । ताव एकांतरा उत्पतै । गर्जबंधन व्रणं सर्प  
बिहू विपं । चालिका बालमेवा ऊखतै ॥ ५२ ॥ ( उं० ) साइणी माइणी रोहणी  
रंकणी । फोटका मोटका दोपजुनैं । दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी । स्वा  
न सीयाल विकरालदंते ॥ ५३ ॥ ( उं० ) धरणेंद्र प्रदमावती समरसोनावती ।  
वाट आचाट अटवी अटते । लंखमी लोडुं मिलै सुजश बेलारलै । सयल  
आस्या फलै मन हसतै ॥ ५४ ॥ ( उं० ) अष्ट महाजय हरै कान पीमाट  
ले । ऊतरै सुल सीसगजणतै । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू । श्री पार्श्व  
जिन नाम अजिराम मंतै ॥ ५५ ॥ ( उंजितुं ) ॥ इति श्रीगोमी पार्श्व  
नाथजी रहस्यवन सं० ॥ इति पोषमास पर्वधिकारः ॥

॥ ॥ अथ माघ मास मध्ये पर्वधिकार लि० ॥

॥ ॥ माघ महिनैमें, मिति माघ यदि २३ ( सो ) मेरु तेरस नाम  
सैं पर्व प्रसिद्ध है । ( इस दिन ) श्रीकृपण देव स्वामीको निर्वाण कल्या

एक है । ( इसीसे ) जगवंत महाराज इसदिनको उत्तम कहा है । ( इस दिन ) चौविहार उपवास करे । रत्नामई, पांचमेरू जगवानके आगे चढावै । बीचमें १ बमो मेरू । च्यारुं दिश ठोठामेरू । (ऐसें) पांच मेरू चढावै । ऐसी शक्ति न होय (तो) सोनेके । चांदीके (वा) धृतके । मेरू करके चढावै । आगै चारुं दिश तरफ चार चार नंदावर्त करै । अष्टप्रकारी । सत्तर जेदी । पूजा पढायके । अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ॐ ॥ पीठे ॥ १ ॥ श्रीरूपनदेव स्वामी पारंगताय नमः ) ॥ इसी पदको दो हज्जार गुणनो करै । और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै (तो) पूजादिक सब विधि पार ऐंके दिन करै । अतिथि संविज्ञाग करके पारणो करै । इसी विध संयुक्त १३ तेरै वरश ( अथवा ) १३ तेरै माश तपस्या करै । पीठे शक्ति माफ क वज्रत उज्जवसें उद्यापन करै । तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी वज्रल करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ ( जैसें ) अयोध्या नगरीमें । अनन्तवीर्य राजाको पुत्र । पिंगल राय कुमर । गांगिल मुनीके पास । इस पर्वका अधिकार सुनके । तपस्या करी । तपस्याके करनेसे । सर्व रोग दूर जये । तपस्या पूर्ण होनेसें । तेरै १३ मंदर बनवाया । १३ तेरै रत्नां मई । सुवर्ण मई । रूपै मई । प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ बेर, संव सहत तीर्थों की यात्रा करी । तेरै बेर साहमी वज्रल किया । वज्रत प्रकारसें ज्ञान शक्ति करी । अंतमें महसेन कुमरको राज्य देकै । श्रीसुब्रताचार्य समीपै दिक्षाग्रहण करी । अनुक्रमें चवदै पूर्वकों पढके । सर्व कर्मकों क्षय करके । अनंत सुखको प्राप्त जवा । इसी का विस्तार संबन्ध । मेरू तेरशका वखाण सुणनेसें मालुम होगा । जो ज्ञव्य जीव इस पर्वकों विधि संयुक्त सेवन करैगा । ( सो ) इस ज्ञवमें परज्वमें अनेक सुखको प्राप्त होगा ॥ ॐ ॥ इति माघ माश पर्वधिकारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ फाल्गुन माश मध्ये पर्वधिकार लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ फाल्गुन महिनेमें, मिति फाल्गुन सुद १४ ( सो ) तीसरै चौ माश की चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिनको सर्व कर्तव्य ) आ

प्राठ चौमासे तुल्य करै । सो पूर्वे लिख्यो है ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इहां विशेष होलीको अधिकार लिखते हैं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रमण जगवंत श्रीमहावीर स्वामी । वारै माशमें, ६ ठमोटका पर्व कहा । ३ तीन चौमाशा । २ दो उन्नी । १ पर्युपणा । एवं ६ । (जिसमें) २ उन्नी । १ पर्युपणा । यह ३ पर्वका अठाई महोत्सवतो सर्व ठिकाणें जव्य जीव करतेहैं । और कार्तिक चौमाशैका उत्सव प्रायें वज्रतठिकाणें होता है । (परंतु) कलकत्तै जैसा महोत्सव कोई ठिकाणें देखा नहीं । (और) फाल्गुन चौमाशैका उत्सव मुर्शिदाबादमें अत्ता होता है । पर कोई महोत्सव में आज्ञा विरुद्ध जो काम होय (सो) प्रशंसनीक नहीं । एकतो जगवंतके समोसरणके साथ । आज कालके । अमीर लोक । धूपकै मरसैं, खेह के मरसैं । आपतो जाते नहीं (निकबेल ) असमज पुरुषाकों नेज देतेहैं । पति वे पुरुष मदोन्मत्त हुए थके । कूदतां, नाचतां, जागतां, । सम वसरणकों उगला देते लेजाते हैं । (उसमें) जितनी आशातना होती है । जितना कर्मबंधता हैं । उसका जागी हम नहीं ॥ जगवंत को धर्म, विनय मूल १ । दया मूल २ । चारित्र मूल ३ है । ( इस सैं ) धन्य है जिसके माता, पिता, (सो) विनय विवेक संयुक्त शुद्धनावसैं । सर्व धर्मकार्य करके धर्मको उद्योग करैहैं । उसी पुरुषाकों नमस्कार है । उसी महोत्सवकी प्रशंसना है । ( इसीसैं ) आत्माथी धर्मज्ञ पुरुष है ( सोतो ) शेषका चौमाशा पर्व जानके । सर्व ठिकाणें । जगवंतकै धर्मको उद्योत करते थके । शुद्ध ध्यानरूप अग्नीसैं ( अष्टकर्म रूपी काष्ठकों जलाके होली करते हैं । (पीठें) सुबोध जलसैं स्नानकरके अत्यन्त सुन्दरता कों प्राप्त होते हैं ॥ अब द्रव्यै, जावै, दो प्रकारसैं, होलीका अधिकार कहणें की इत्थायें (प्रथम) द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

इस फाल्गुण माशमें, चौदश पूर्णमाशी के दिन (कई) अज्ञानी जीव, विवेकसैं, श्री जिनधर्मसैं, विकल हुए थके । नीच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके । लक्ष्म णादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलिका करै है । महा उत्तम चौमाशै पर्वका विराधन करै है । ( दूसरे दिन ) मन्त्रमुखा दिकसैं क्रीडा करै हैं । खोटा वचन बोलै है । रासज माथे चढ़ै हैं । अनेक

जीवांकों दुःख उत्पादन करै है। (ऐसे जीव) शुद्ध वीतराग देवकी आग्यागे मके। ज्ञान चरमा के कुल परंपराकों प्राप्त होते हैं। मिष्टान्न भोजनका खाणा भोमके। विष्टाको भोजन करते हैं। दूधका पीणा भोमके। जानते थके पिसाव पीते हैं। (ऐसे पुरुष) निकेवल कर्माके बंध सधन करके। नीच गतिकों उपार्जन करते हैं। अनर्थदंमसे अनन्त जव संसारकी स्थिति बांधते हैं। (इस वास्ते) आत्मार्थी जव्यजीवांकों। इस माफक। द्रव्य होली करनी उचित नहिं। (निकेवल) जव होली करनी उचित है॥ वसंतके स्तवन बोलै। रात्री जागर्ण करावै। जगवानके मंदरमें पूजा करावै। महोत्सव निकालै। नाना प्रकारके नाटक करै। साहमी बहल करै। साधमी जाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीमा करै। (आगे) राजा लोकजी, वसंत ऋतु आनेसे सज्जन संबंधी साथ। नाना प्रकारके। जल। चंदन। केशर। अवीर। गुलाल। इत्यादिकसे क्रीडाकरी (सोतो) फेरजी शास्त्रोंमें देखते हैं। (परंतु) यह मल मुत्रादिकसे खेलना। होली जलानी। पादत्राण खाणा। जंम चेष्टा करनी। अपने धर्मकी मर्यादा। अपने कुलकी मर्यादा। सर्व भोमके। जांड चरमाके गोदी बैठना। ज्ञान चरमा के कुलकी मर्यादा करनी। ऐसी क्रीमा उत्तम पुरुषोंके (और) जिनधर्म वाले जव्य जीवोंके। कोई ठिकाण करनी कही नहीं। यह क्रीमा निकेवल महामिथ्यात्वी नीच पुरुषोंने चलाई ही। उसी पुरुषोंके देखादेख प्राये अज्ञानी जीव, सबकोई करनेको लग गए। (देखो बड़ा आश्चर्य है)। जव मंदरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता है। उस वखत वज्रतकों फुरसत न होती है। (और जो केइ आते हैं)। उनोंको स्नात्रिया होनेमें। अगामी नाटक करने में। बनी लज्जा मालुम होती है। (और होलीके दिन) माता, पिता, जाई, बैन, सर्वकी लज्जा भोमके। वज्रत दिलमें खुसी होके। पागलके माफक। उपानत खाते फिरते हैं। मन आवै ज्युं बोलतेहैं। कोई वेश्यादिक का नाटक करायकै हज्जारं वगशीस कर देते हैं। मनमें जानें, हमने बड़ा नाम किया। पर अहो जाइयो। इसमें तुमारा कुछ नाम नहीं है। निकेवल महा अशुभ कर्म पैदा होता है। तुमारा कल्याण जबई होगा। ऐसी उमंगसे सर्व की लज्जा भोडके।

जगवानका उज्ज्व करो । रात्री जागण करो । नाटक करो । धर्मका उद्यो  
त करो । ( इसी तरै ) होली खेलो ( सो ) तुमारा इह जव वी सुधरेंगे ।  
परजववी सुधरेंगे । ( यह ) द्रव्यै, जावै, दोनुं होलीका, यथावस्थित स्वरूप  
लिखा है । इसको आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो देख करकै प्रसन्न होंगे । यह  
खोटे मारग को बंध करने की प्ररूपणा रखेंगे । ( और जो ) महामूर्ख  
अज्ञानी जीव होंगे ( सो ) अपने खेलनेके वास्ते । सबी बातकोंनी कुयु  
क्ती लगायके फूठ ठहरावेंगे । महारोस धारण करेंगे । ( जैसे ) कोइके  
पिताको गाली देंसे रोस उत्पन्न होय ( इसी तरै ) यह जंम चेष्टा की  
निंदना देखकै महारोस धारण करेंगे । ( और जो ) मध्यस्थ जीव होंगे  
( सो ) ऐसा बोलेंगे । यह बात सब है । किसका पर्व है । किसका खेलना  
है । निकेवल इसमें अनर्थ दंभ लगता है । ( परंतु ) हम इकेला क्या करें ।  
सर्व जाइ बंधको खेलते देखकै । हमसे रहा जाता नहीं । इससे खेलते  
हैं । ( पर ) यह पृथा बंध होयतो अन्वी है । ( इसीसे ) अहो देवानुप्रियो  
सर्व ठिकाणें यह नीच खेलको ठोमके । उत्तम खेल खेलनेकी प्रवर्तना क  
रो । जिससे तुमारा तप तेज सदा बढता रहै । सदा आनन्द रहै । यह  
वारै माश के सर्व कर्त्तव्य । मैंने अपनी बुद्धिसे न लिखा है । ( किंतु ) प्रा  
चीन आचार्योंके व्याख्यानकी पद्धति देखके । सर्व बालजनके उपगारार्थ  
संक्षिप्तसे शुद्ध भाषामें प्रगट किये हैं ( इसमें ) आगम विरुद्ध उग्र अधको क  
हनेमें आयो होय ( तो ) विकरण सुद्धे मित्रामि डक्कम देताऊं । ( और ) नी  
च कर्मके बंध ठोमानेको । कठोर वचननी बोला है ( सो ) वाचक । गु  
णको ग्रहण करना । परंतु रोस धारण न करना । मेरै तो शुद्ध नवकार  
मंत्र गुणने वाले है ( सो सर्व परम मित्र है । सर्वके तप तेज बढते देख  
कै, मेरा चित्तमें परम आनंद होता है । ( और ) विकरण शुद्धे सर्व जीवा  
जोनिसे बेर बेर खमाता ऊं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ खमिय खमाविय में खमिय । सद्यद् जीव निकाय । सिद्ध  
साख आलोपण । मझह वैर नचाय ॥ १ ॥ सबे जीवा कम्मवसु । चवदय  
राज जमत । तेमें सब खमाविआ । मझबितेह खमंतु ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति फाल्गुन माश पक्षाधिकारः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥२॥ अथ जाव होली खेलनके स्तवन लि० ॥ २॥

॥ ❀ ॥ ( रागधमाल ) ॥ होरी खेलियै नरवज्जरन ऐसोदाव । ( हो० )  
दयामिठाई अति नलीरे । तप मेवा परधान । सील अथाणो अति नलौ  
( वारी ) । संयम नागर पान । ( हो० ) ॥ १ ॥ लेस्या मादल जाव मफरे  
क्रोध मान दोय ताल । पांच सुमतिको अरगजो ( वारी ) । नवतत्व लेऊ  
गुलाल । ( हो० ) ॥ २ ॥ सुमता केसर घोलीयैरे । दमवाको ठिरकाव ।  
ग्यान पिचरको पकरकै ( वारी ) । मुगति बधू चितलाय । ( हो० ) ॥ ३ ॥  
ऐसा साज बनायकैरे । कृष्णदेव गुण गाय । श्री जिनचंद इम खेलतां  
( वारी ) नव नव पातिक जाय । ( हो० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥❀॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥❀॥

॥ ❀ ॥ जय बोलोरे पाश जिनेशरकी ॥ ( ज० ) ॥ मस्तक मुगटसोहै  
मनमोहन । अंगीया सोहै केशरकी । ( जै० ॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखं  
मित तनकी । स्याम घटा जैसी जलधरकी ॥ ( ज० ) ॥ २ ॥ बालपणैमै  
अदभुत ग्यानसुं । करुणा कीधी विषधरकी ॥ ( ज० ) ॥ ३ ॥ कमठ उमा  
य वायज्युं बादल । जीतकरी अपनै घरकी ॥ ( ज० ) ॥ ४ ॥ मात वामा  
उयेरे जिनजायो । राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ( ज० ) ॥ ५ ॥ अष्ट कर  
म दल सबल खपाए । श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ( जै० ) ॥ ६ ॥ कहै  
जिनचंद मेरे प्रभुपारस । जैसी ठाया सुरतरु की ॥ ( जै० ) ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥❀॥ मधुवनमें जाय मची होरी ॥ ( म० ) ॥ ग्यान गुलाल अवीर उ  
मावो । सुमता केशर रंगघोली ॥ ( म० ) ॥ १ ॥ अमृत रूप धरम जिन  
वरको । सुषक्तमा कहै करजोमी ॥ ( म० ) ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ २ ॥ पुनः वसंत होरी ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ यादव मनमेरो हरलीयोरे ॥ ( या० ) ॥ संजम दूतीकान लगा  
जब । शिवनारीपर चित्त दीयोरे ॥ ( या० ) ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चले  
हो । नवनव नेह अलग कीयोरे ॥ ( या० ) ॥ २ ॥ मोह बोम । गरनार  
सिधाए । नेमि जिणंदन कहा कीयोरे ॥ ( या० ) ॥ ३ ॥ तुमहो तीन चु

वनके साहिब । सुरनर कहै तुमे चिरंजीयोरे ॥ ( या० ) ॥ ४ ॥ बारवार  
मेरी बंदना जयज्यो । चंद कहै मन हरखीयोरे ॥ ( या० ) ॥ ५ ॥ इतिपदं  
॥ ५ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ एक सुणलै नाथ अरज मेरी ( इ० ) ॥ १ ॥ इह संसार गहर  
तर सिंधु । जमर पमत जिहां जवफेरी ( इ० ) ॥ २ ॥ क्रोधादिक बज्ज  
मगर मज्ज है । ग्रहत जंतु नकरत देरी ॥ ( इ० ) ॥ ३ ॥ ऐसे जलधिसें पा  
रकरो तो । तारण तरण विरुदतेरी ॥ ( इ० ) ॥ ४ ॥ धरम जिनेसर जग  
परमेश्वर । दूरकरो दुखकी वेरी ॥ ( इ० ) ॥ ५ ॥ परम कृमागुण दायक  
लायक । अनुपम कीरति जगतेरी ॥ ( इ० ) ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ ५ ॥ पुनः होरी ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सांवरो सुखदाई । जाकी ठवि वरणि न जाई । ( आंकनी ) ।  
श्री अश्वसेन वामानन्दनकी । कीरति विजुवन ठाई । समेत सिखर गिर  
मंमन प्रजुको । देख दरश हरखाई । हृदय मेरो अति जलसाई ( सांव० )  
॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । आज आनन्द वधाई । तीन जुवन  
को नायक निरख्यो । प्रगटी पूर्व पुण्याई । सफल मेरो जनम कहाई ॥  
( सांव० ) ॥ २ ॥ प्रजुके सरस दरश बिन पाये । जव जव नटययोमें जाई  
अव तेरो चरण शरण चित चाहत । बाल कहै गुण गाई । प्रजुजीसैं  
लगन लग्गाई ( सांव० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ पुनः रागिणी वसन्त ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ नैना हरखाइ । आज तेरी मूरत निरखी ॥ ( नै० ) ॥ जवजव  
संचित पाप करम सब । देखत दूर पुलाई । सुमति वधारण कुमति बिना  
रण । ज्ञान विमल जलसाइ ॥ ( आज० ) ॥ १ ॥ वामानन्दन अतिठवि  
सुन्दर । महिमा वरणी नजाई । दीन दयाल दया कर दीजै । आनन्दहरख  
सवाइ ॥ आ० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ पुनः होरी ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी । आज चंदी गिरनार कामिनी  
॥ ( म० ) ( आंकनी ) ॥ सुंदर रूप बनाय सखी सब । सिखरसेल जेसैं



चमके दामनी ॥ ( म० ) ॥ १ ॥ नेम प्रभुको व्याह मनायो । मोसैं प्रीत  
 लगाइ जामनी ॥ ( म० ) ॥ तोरण आय चले मोह ठोमी । कौन चूक  
 मोपे काढी जामनी ॥ ( म० ) ॥ २ ॥ मेंन तजूंगी नव नव कैरी । प्रीत  
 बनी जैसी इंडु दामनी ॥ ( म० ) ॥ ३ ॥ राजुल पहली प्रीतम सेती । वा  
 ल कहै नइ मुगति गामनी ॥ ( म० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान । होरी चेतन खेलै । ( रंग० ) शील सुरंगी  
 चीरमंगाये । पहिरे आप सुजान ॥ ( हो० ) ॥ पर मन्दिर तज अविचल  
 लीजै । धर्म दया धर ध्यान ॥ ( हो० ) ॥ हिल मिल आप परमरस चाखे  
 सुमत सखी पहिचान ॥ ( हो० ) ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे । सोनै  
 अदभुत वान ॥ ( हो० ) ॥ सुमति अवीर उडाय जगतमें । बैठे शिव पुर  
 थान ( हो० ) अनुभव राग मगन गुण गावै । तप जप सुन्दर तान ( हो० )  
 ऐसा खेल नविक जन धारै । बंठित पावै दान ( हो० ) इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः होरी ( ताल यत् ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिदानन्द खेलै फाग । हो हो होरी आई ॥ मन मृदङ्ग वजे त  
 न मांहि । गावत आगम राग ( हो० ) ॥ ज्ञान गुलाल सदा रङ्ग लागे  
 खेलत सुमत सुहाग ( हो० ) समकित केशर चीर रङ्गाउं । पहिरो मन  
 बेराग ( हो० ) ॥ लाख चौराशी रामत ठांमी । च्यारुं गतिसैं जाग ( हो० )  
 अविचल सुख पंचम गति पावै । योग यतन कर जाग ॥ ( हो० ) ऐसा  
 खेल नविक जन धारै । पावै नव दधि पार ( हो० ) । चेतनता शुध होय  
 जगत में । समकित के रङ्गलाग ( हो० ) ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ( पुनः होरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी आई, मेरो मन नयो, प्रसन्न प्रसन्न नयो, प्रसन न न न हे  
 ( हो० ) ब्रज वनिता मिल नेम कुमार सङ्ग । फाग रमत हियै हसन हसन  
 हसननन ननहे ( हो० ) ॥ १ ॥ बाजे तैताल मृदंग जाऊ मफ । बी  
 णा की धुनि जिम मेघ गरजन गरजन गरजन नन नहे ( हो० ॥ २ ॥  
 उन्त गुलाल लाल नए बादल । हरि हलधर हीयै हरखन हरखन हरखन

ननहे ( हो० ) ॥ ३ ॥ सबल आधार चरण जिनजीको । सेवक कों नित दीजीयै दरशन दरशन दरशन न न नहे ( हो० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( पुनः होरी ) ॥ ॥

॥ ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय धाय । डरजनकी लाज मेरी करै वलाय ( हो० ) ज्ञान गुलाब अवीर उमावो । कृपा करो रङ्ग लाय लाय ( ड० हो० ) ॥ १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरूङ्गीमें गाय गाय ( ड० हो० ) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह उमावो । ज्ञान हि येमें लाय लाय ( ड० हो० ) ॥ ३ ॥ जगत चन्द की अरज वीनती । शरण गहीमें तेरी जाय १ ( ड० हो० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ मेरै घटकी गगरया रङ्गसैं नरी । शिव पुरकी वात पूछु कवकी खरी । ( मे० ) परम जोत प्रभु सिद्ध सिला पर । परमात्म निज ध्यान धरी । ( शि० ) ॥ ११ ॥ मोहन रङ्गनरो रंग शिवपुर । अजर अमर पद सुखकरि ( शि० मे० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ मैं न देखी अनोखी होरीरे ( मे० ) सहसा वनकी कुंजगलिन में । अनुपम सोर मच्यो री ( अ० ) ॥ १ ॥ यादवपति श्रीनेमकुमरजी । सुमतासखी मिल गौरी ( अ० ) ॥ २ ॥ सुमता केशर नर पिचकारी । मारत हैं वर जोरी ॥ ( अ० ) ॥ ३ ॥ ज्ञानगुलाब उमै अतिनारी । अवीर उमै नरजोरी । ( अ० ) ॥ ४ ॥ कपूर कहै प्रभु मोकुं खेलावो । अरज सुणो इक मोरी ( अ० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ इकसुणलै नाथ अरज मेरी इस चालमें ॥ ॥ ॥ तुमे ध्यावोरे अंतरीक पारसकुं ॥ तु० ॥ अंतरीक प्रभुके ध्यावणसैं दूरकरे डख दाखिद्रकुं ॥ तु० ॥ अस्वसेन कुलमें चिंतामणि । जिमरवि ऊगो सरदक्रतुकुं ॥ तु० ॥ १ ॥ वामान अवतार लियोहै । नव्यजीवनैं तारणकुं ॥ तु० ॥ नील वरण तनज्योति अखंनित । लंन अहि सुखकारणकुं ॥ तु०

॥१॥ दक्षिणदिशमें सिरपुर नगरे । जिहां नेव्या जिनराजनकुं ॥ तु० ॥  
 पार्श्वप्रभुको दरशण पायो । दूर ऊआ नव नटकणसुं ॥ तु० ॥ ३ ॥ प्रगट  
 प्रभुको अतिशय पेख्यो । अधर रहत झूमि ऊपरकुं ॥ तु० ॥ कपूर कस्तूरी  
 केशर चंदन । अष्टद्रव्य लेके पूजनकुं ॥ तु० ॥ ४ ॥ अष्टकरम शत्रुकुं जीपके ।  
 ज्ञातुचढ्या राजशिवपुरकुं ॥ तु० ॥ दूधेड्या गोत्र उत्तम बुधसिंहपति । वि  
 श्वचंद्र हितकारणकुं तु० ॥ ५ ॥ नगणीसै गुणतीसै फागुण । जात्राकरी सुद  
 वेशकुं ॥ तु० ॥ श्री अजेराज ग्यानकुं चाहे । मुक्ति कमल इच्छा पूरणकुं  
 ॥ तु० ॥ ६ ॥ इति श्रीअंतरिक पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ॥

॥०॥ ॥॥ पुनः होरी राग काफी ॥ ॥

॥ ॥ वावो ऋषभ वेठे अलबेले । मारो गुलाल मुठी नरके ।  
 वावो ॥ मुठी नरके पसली नरके ॥ वावो ॥ चुआ चुआ चंदन और  
 अरगजा । केशरकी मटकी नरके ॥ वावो ॥ १ ॥ रतन जडित शिर  
 छत्र विराजे । अंगी जमाव जमी नरके ॥ वावो ॥ २ ॥ वाहें वाजूबंध  
 बहिरखा विराजे । फूलनके गजरे सरके ॥ वावो ॥ ३ ॥ नानिराया मरुदे  
 वीको नंदन । रमियें नवि आदेशरसें ॥ वावो ॥ आदिखान है दास तु  
 मारो ॥ तार लीओ अपनो करकें ॥ वावो ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ नेमन जाएं मोरी पीर । पीर पर रर ररर । नेमन जाएं ॥  
 तीरणथी रथ फेरवी चाल्या । दाऊचो हैयडा केरो हीर । हीर । अर रर ररर ॥  
 नेम ॥ १ ॥ चंदवदनी मृग लोयणीर । प्रेमनो माखो मुनें तीर । तीर तर  
 ररररर ॥ नेम ॥ २ ॥ आंशुमां ऊरती धरणी ढलीरे । जाए आशाढो  
 नीर । नीर ऊरररररर ॥ नेम ॥ ३ ॥ शिवराज कहे नेम राजुलैरे । कर्म  
 रूपीआं फाड्या चीर । चीर चरररररर ॥ नेम ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ ॥

॥ ॥ गिरिराज कूं हमारी बंदनारे । जिनराजकूं हमारी बंदनारे ॥  
 सुख वारण शिवसुख कारण । देखत नव नही फंदनारे ॥ गिरि ॥  
 ॥ ॥ नानिराया मरु देवीको नंदन । प्रणमं ऋषभ जिनंदनारे ॥ गिरि ॥

॥ १ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो । जिम चातक दल चंदनारे ॥  
 ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ चतुर कुशल कहे शरण तुमारो । सिद्धगिरि कर्मनिकंद  
 नारे ॥ गिरि० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः राग होरी ॥ ॥

॥ ॥ दरशन कीयो आज सिखरगिरिको ॥ दर० ॥ देख्यो माधो  
 वन शीत नालो । ताको नीर बहेछे अति नीको ॥ द० ॥ १ ॥ वीश को  
 शयी दरशन दीगे । जागो नरम सकल जियको ॥ द० ॥ २ ॥ वीशे टुंके  
 वीश गोमटनी । तामें चरण जिनेसरको ॥ द० ॥ ३ ॥ अब जिनवरके  
 शरण आयो । रसतो पायो मुगति पंदको ॥ द० ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ सिद्ध गिरि जीको दरशन करले ॥ संघ यात्रा । संवयात्रा  
 करनैंस पाप कटत है । सिद्ध० ॥ ( आंफणी ) कोटि अनंता इन गिरि  
 सिद्धा । ताकुं शीश नमय ले ॥ संघ० ॥ ॥ १ ॥ रिखन जिनेश्वरजीको  
 दरशन । शुद्ध आत्म पावन करले ॥ संघ० ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ  
 निरंजन । जब जबका डुःखहरले ॥ संघ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ मेरो चेतन खेले होरीरे । ऐसी होरी । आज बरजोर रही ॥  
 मेरो० ॥ मन कर भोज प्रेमकर पाणी । करुणा केशर घोरी ॥ ऐसी०  
 ॥ १ ॥ दया मिठाई तप बज्र मेवा । समस्त विमल कटोरी ॥ ऐ  
 सी० ॥ २ ॥ गुरुके वचन वारी मृदंग बजतहे । दे मफ ज्ञान कटोरी ॥  
 ऐसी० ॥ ३ ॥ दान कहे सुमता सखीयनसैं । चरण रहो जुग जुग जोरी ॥  
 ऐसी० ॥ ४ इति ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ अनंतानंत प्रभुजीनी वाणी । आशातना तजरे प्राणी ॥  
 अनंता० ॥ श्री शीतल जिन शीतल वचन । जाव दया चिन आणी  
 अनंता० ॥ १ ॥ जे जीव देश द्रव्यनैं खावे । थई लोचन बशे अघाणी ॥  
 अनंता० ॥ २ ॥ सागर दोह पारो दुःख । पानी । निरंजनी ।

अनंता ० ॥ ३ ॥ देवद्रव्य जे विधि ए वधारे । ते जिन थइ वरे शिवराणी ॥  
अनंता ० ॥ ४ ॥ धर्मचंदकर जोडी रागें । तारजो केवल नाणी ॥ अनंता ० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे ॥ मेरे साहेब । मेरे साहेब ।  
आदि जिणंद चंद ॥ मोहे ० ॥ ( आंकणी ) ॥ रंग तुंही रंग रेज तुंही  
हे । संजम रंग मोहे रंगदे ॥ मोहे ० ॥ १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे  
अनादि को । सो अब इनकुं खिनदे ॥ मो ० ॥ २ ॥ रत्नत्रयी रुद्रि तेरीमें  
देखी । सो अब मुजकुं सऊदे ॥ मो ० ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे ।  
वाविच केवल धरदे ॥ मोहे ० ॥ ४ ॥ कहत झूधरदास समकित पावे ।  
आप समाना करदे ॥ मोहे ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे पाश प्रभुजीके रंग मंमप मांहे । खेलत संत वशंत ॥  
ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा । विनय अवीर विलसंत ॥ मेरे ० ॥ १ ॥  
प्रभुगुण प्रेम पिचरकी बूटत । समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर  
फूली फूलवाडी । मुनिवर अमर गुंजंत ॥ मेरे ० ॥ २ ॥ अंग आभूषण  
पंचेंद्रिय वश । गुरु सेवा सलहंत ॥ वार जावना गहेर कसुंवा । पीवत मन  
हरखंत ॥ मेरे ० ॥ ३ ॥ अद्भुत पंचमहाव्रत वागा । पहिरै तन शोहंत ॥  
कहे जिन चंद्र प्रभुकी कृपासै । निरखे नवल वशंत ॥ मेरे ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग मच्यो जिन घर ॥ चालो खेली ए होरी ॥ पाशजीके  
दरवाररे ॥ चालो ० ॥ फागुनके दिनचार ॥ चालो ० ॥ रंग ० ॥ ( आंकणी )  
॥ कनक कचोली केसर घोली । पूजा विविध प्रकाररे ॥ चालो ० ॥ १ ॥  
कृष्णागस्को धूप घटत हे । परिमल महके अपाररे ॥ चालो ० ॥ २ ॥  
खाल गुलाल अवीर उभावत । पाशजीके दरवाररे ॥ चा ० ॥ ३ ॥ जर  
पिचकारी गुलालकी ठिको । वामा देवी कुमाररे ॥ चालो ० ॥ ४ ॥  
ताल मृदंग वीण रुफ वाजे । जेरी झुंगल रण काररे ॥ चालो ० ॥ ५ ॥  
सब सखीयन मिल नाटक करके । गावत मंगल साररे ॥ चालो ० ॥ ५ ॥

स्तनसागर प्रभु जावना जावे । मुख बोले जयकारे ॥ चालो ० ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी । शामरेसैं कहियो मोरी ॥ तोरण  
आए कीनैं नर माए । गेम चले अजिमाती ॥ अरे लाला ॥ गो  
म चले ॥ पशुवन के शिर दोष चढायो । तोमी प्रीत पुरानी ॥ दयादी  
लमें नही आनी ॥ ( शामरेसैं ० ) ॥ १ ॥ चूक पमी सो मुहसैं कहियो  
ऐसी ना करि ए शोधानी ॥ अरे ॥ आठ नवोंकी प्रीत बंधाणी । नवमे  
चले क्युं जानी ॥ शाम तेरी सुरत पिढानी (शामरेसैं ०) ॥ २ ॥ या जो  
री जुगमें पूर नेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ अरि ॥ वीनति सुन अ  
मर पद दीजे । रंग विजय सुखदानी ॥ आवा गमन बिदानी (शामरेसैं ० ३)

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ महाराज तोरे मंदिरमे वरसे रंग । हारे हो । श्री चिंतामणि पाश  
प्रभुजी ( तोरे मंदिरमें ० ) टेक ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा । सुमता  
नीर सुचंग ( हारे हो ० ) ॥ १ ॥ अनुचव लहर फूली फूलवानी । दिन  
दिन चढते रंग (हारे हो ०) ॥ २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम । शुक्ल  
ध्यानके संग (हारे हो ०) ॥ ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर । तुजशुं  
अबिहम रंग (हारे हो ०) ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ तोरी अंगीयां बनी है सुरंग । (हारे हो) श्री चिंतामणिपाश ॥  
प्रभुजी तोरी ॥ सुविवेकी आवक मिल आये । आणी जाव अजंग ॥ हारे  
हो श्री ॥ यह बंधीकी जांत जली है । बुंटीया नव नव रंग ॥ हारे हो श्री  
चिं ॥ १ ॥ जरकस जामो खूब बन्धो है । कोर केवमा संग ॥ हारे हो  
श्री चिं ॥ मस्तक मुकुट काने दोय कुंमल । वाजूबंध सुचंग ॥ हारे हो  
श्री चिं ॥ २ ॥ फूलनकी गलमाल सोजत है । सौरंग वास सुगंध ॥ हारे  
हो श्री चिं ॥ त्रिभुवन साहव तखत विराजे । महिरवान मन रंग ॥ हारे  
हो श्री चिं ॥ ३ ॥ सुर नर याकी सेवा करत है । रात दिवश धर रंग ॥  
हारे हो श्री चिं ॥ सुनिजर है साहेबकी सवपर । संघ है सकल सुरंग ॥

हारे हो श्री चिं०॥ जावना जावो जिन गुण गावो । अमर वणें उमंग ॥  
हारे हो ॥ श्री चिं० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनः होरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामणि चित्त ध्यावो रे । वंढित फल पावो ॥ सकल नविक  
जन मिलकर आवो । राग फाग गुण गावो रे ॥ वंढित ०॥१॥ अवीर गुलाल  
लाल संग लावो । जर जर मुठीया उमावो रे ॥ वं०॥ कुंकुम केशरकुं ठिका  
वो । जाव शुक्ल नल जावो रे ॥ वं० ॥ २ ॥ अंगी चंगी पुहप वनावो,  
दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वं०॥ दरस सरस करकें सुख पावो । पुण्य जंमार  
जरावो रे ॥ वं० ॥ ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो । नृत्य संगीत नचावो  
रे ॥ वं०॥ अमर सिंधुर आनंद वधावो । जिनजीसैं लय लावो रे ॥ वं०४॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत मारो पिचकारी रे । मैतो सगरी नीज गई ॥ म०॥ ताल  
मृदंग वजत मन मांहि । गावत आगम राग ॥ लाल । मैतो सगरी नीज गई  
॥ मत०॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे । खेलत सुमति सोहाग ॥ पी  
या मैतो सगरी नीज गई ॥२॥ समकित केशर चीर रंगान् । पहिरुं मन  
वैराग ॥ लाल मैतो० ॥ ३ ॥ लख चौराशी रामत ठोडुं । चारों गति सो  
हाग ॥ पिया मैतो० ॥ ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी । शिव सुंदरी ब  
रमांग । लाल मतो०॥५॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारें । इण विध खेले  
फाग ॥ लाल मैतो०॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हारे तुंतो जिन नज विलंब न कर हो । होरीके खेलइया ॥  
हां० ॥ (आंकणी) ॥ समता लहेर संयममां जीली । ममता लहेर परिहर  
हो ॥ हो०॥१॥ विनय संचारीमें जरि पिचकारी । हारे तुंतो, शिवरमणीकुं  
वरहो ॥ हो०॥ ज्ञान गुलाल जरी तिहां जोरी । हारे तुंतो, खेल वशंत घर  
घर हो ॥ हो० ॥२॥ शील सुगंध आनूषण अंगे । हारे तुंतो, आतम अ  
नुभव वर हो ॥ हो०॥ ज्ञान विज्ञान फूली फूल वारी । हारे तुंतो, गुंजत  
मनमधुकर हो ॥ हो०॥ ३ ॥ वामानंदन पाश जिनसेर ॥ हारे तुंतो, जगना

यक जग गुरहो ॥ हो० ॥ श्रीजिनलान कहै प्रभु संगे । हारे तुतो, समे  
तारस अनुसर हो ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः होरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेम मिलेतो वातां कीजीये ॥ होप्यारे ॥ नेम मि० ॥ टेक ॥  
मैंजुं तुमारी खिजमतगारी । प्रेमका प्याला पीजीए ॥ हो० ॥ ने० ॥ १ ॥  
हम है केतकी तुम हो जमरा । फिर फिर वासना लीजीये ॥ हो० ॥ ने० ॥  
मैंजुं धरती तुम हो मेझला । कबहुं तो मिलना कीजीये ॥ हो० ॥ ने० ॥ ३ ॥  
नेम राजुल मिल मुक्ति सिधाए । रूपचंद पद दीजीये ॥ हो० ॥ ने० ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः होरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आतमतत्व विचारो ज्ञानसैं । करम कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसैं ॥ आ०  
(आंकणी) ॥ पुद्गल जीव सरूप पिठान्यो । ममता मिट गइ सारी जानसैं ॥  
कर्म कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसैं ॥ आ० ॥ १ ॥ क्रोधादिक अरी अंधकार सम,  
नाश नयो सब ज्ञान जानसैं ॥ आ० ॥ २ ॥ परमात्म पद पावत सोई ।  
विनय नजत पद अचल थानसैं ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः होरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी ॥ एतो उपशम रसकी कयारी  
॥ लाल० ॥ (आंकणी) ॥ कामक्रोधादिक दोष रहित हे । नयन नये अ  
विकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिंयामें । दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥ १ ॥  
ओरनयनमें काम क्रोध हे । बज्रत जरी हे खुमारी ॥ परधन देख हरनकी  
इच्छा । यामें हैं झुशियारी ॥ लाल० ॥ २ ॥ ऐसा लज्जन हे नयनोमें । क्युं  
पामे नव पारी ॥ ओही विचार करो दिल अपनैं । होत कर्मसैं नारी ॥  
लाल० ॥ ३ ॥ धर्म बिना कोई सरनां नहिं हे । एसो निश्चे धारी ॥ विनय  
कहे प्रभु नजन करो नित । ओही तारन हारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ॐ ॥ पुनः होरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दर्शन बिन जीव संसार नम्यो ॥ दर्शन० ॥ चोराशी लख  
योनी नटकत । लहि मानव नव युंदि गम्यो ॥ द० ॥ १ ॥ पुन्यनुदय आ  
वक कुल पायो । घटमें ज्ञान उद्योत नयो ॥ द० ॥ २ ॥ माया ममता में



निशदिन तुं । विषय विकारशुं नहिं विरम्यो ॥ द० ॥ ३ ॥ सार विवेक तुं धार  
रे चेतन । जटकत भ्रममें क्युं जटक्यो ॥ द० ॥ ४ ॥ कहत कृमाकल्याण  
निरंतर । जज जगवंत तेरो पापशम्यो ॥ द० ॥ ६ ॥ ॥

## ॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ मत ठेमो हानिं युंहीरे । कोई चूक बतावो ॥ मत ० ॥ अवीर गुलाल  
जाव सब रमतां । हमशुं कदेय न खेलोरे ॥ को ० ॥ १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर  
आये । चढिया ठे गिरनारीरे ॥ को ० ॥ २ ॥ बज्जत हठाशुं व्याह रचायो,  
जीव देख दया आणीरे ॥ को ० ॥ ३ ॥ राजुल ऊनी अरज करत हे । एक  
वार फिर जोवोरे ॥ को ० ॥ ४ ॥ नेमि राजुल मिल मुक्ति सिधाए । पहेली  
राजुल नारीरे ॥ को ० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ ॥

## ॥ ॥ पुनः होरी ॥ ॥

॥ ॥ अटक्यो चित्त हमारोरी । जिन चरण कमलमें ॥ अट ० ॥ शीत  
लनाय जिनेसर साहिव । जिनवर प्राण आधारोरी ॥ जि ० ॥ १ ॥ माता  
नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारोरी ॥ जि ० ॥ २ ॥ श्रीवच्छ लंठन  
जनम नदिलपुर । कुल इक्वाग उदारोरी ॥ जि ० ॥ ३ ॥ नेवुं धनुष शरी  
र सुशोभित । कनक वरण अनुकारोरी ॥ जि ० ॥ ४ ॥ एक लक्ष पूरव आ  
यु कहिये । नाम लीआं निस्तारोरी ॥ जि ० ॥ ५ ॥ दीनदयाल ज  
गत प्रतिपालक । अब मोहे पार उतारोरी ॥ जि ० ॥ ६ ॥ हरखचंद का  
साहेव सच्चे । ऊंतो दास तुमारोरी ॥ जि ० ॥ ७ ॥ ॥

## ॥ ॥ मंगल स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ मंगल राजै गिरनार । नेम पद मंगल है ( देवा ० ) मंगल रा  
जिमती पद मंगल । मंगल रह नेमि राज ( ने ० ) मंगल गणपति मंगल  
पाठक । सब तपसी विचसार ( ने ० ) मंगल धन धन्या मुनि नायक । मं  
गल सब अनगार ( ने ० ) जय जय खेम कुशल गुरु जंपै । आनन्द धन  
अवतार ( ने ० ) । इति पदम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इम मास चादश मध्य जे सज्ज पर्व सेवन कारन । सज्ज वा  
लजन उपगार कारन शुद्ध जाषा सारन ॥ संवत् रसानलनंदवसुधा चाद्र

शित एकादशी । गुरु गन्त खरतर कलिकता पुर मोहन जाषा उपदिशी  
॥ १ ॥ ❀ ॥ इति द्वादशमास पर्व्वधिकारः ॥ १२ ॥ सं१ ए३६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादश मास मध्ये प्रसिद्ध पर्व्वधिकार कथनानंतर । सांप्र  
ति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप मुच्यते ॥ ❀ ॥



॥ ❀ ॥ जिस मासमें जितने दिन जंगवंतके कल्याणकके हैं । सो स  
र्व जन्मजीवोंके सेवन करने योग्य है । परंतुकोण तिथकों क्या कल्याण  
कहै । सो जाण्या बिना सेवन कर सकते नहीं । ( और विशेष में )  
पंच कल्याणक तपस्या करनेवाले जन्मजीवोंके अवस्य पंच कल्याणक टीप  
गुणनें बिना काम चलता नहीं । इसीसे गुणनो करने माफक विधि प्रपा  
कसें पंच कल्याणक टीप लिखते हैं ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंच कल्याणक टीप लि० ॥ ❀ ॥

( कार्तिक कृष्णपक्षे ) ॥ ५ ॥ ( कार्तिक शुक्लपक्षे ) ॥ २ ॥

५ ॥ श्रीसंजवनाथजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीसुविधिनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥

१२ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी अर्हते नमः ॥ १२ ॥ श्रीअरनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥

१२ ॥ श्रीनेमिनाथजी परमेष्ठि ० ॥ ( मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे ) ॥ १ ॥

१३ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी नाथाय ० ॥ १० ॥ श्रीअरनाथजी अर्हते नमः ॥

३० ॥ श्रीवर्द्धमानजी पारंगताय ० ॥ १० ॥ श्रीअरनाथजी पारंगताय ० ॥

( मार्गशीर्ष कृष्णपक्षे ) ॥ ४ ॥ ११ ॥ श्रीअरनाथजी नाथाय ० ॥

५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी अर्हते ० ॥ ११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी अर्हते ० ॥

६ ॥ श्रीसुविधिनाथजी नाथाय ० ॥ ११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी नाथाय ० ॥

१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी नाथाय नमः ॥ ११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥

११ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी पारंगताय ० ॥ ११ ॥ श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥

( पौष कृष्णपक्षे ) ॥ ५ ॥ १४ ॥ श्रीसंजवनाथजी अर्हते ० ॥

१० ॥ श्रीपार्श्व नाथजी अर्हते ० ॥ १५ ॥ श्रीसंजवनाथजी नाथाय ० ॥

११ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी नाथाय ० ॥ ( पौष शुक्लपक्षे ) ॥ ५ ॥

१२ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी अर्हते नमः ॥ ६ ॥ श्रीविमलनाथजी सर्व ० ॥

- १३ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी नाथाय ० ॥ ए ॥ श्रीशान्तिनाथजी सर्व ० ॥  
 १४ ॥ श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥ ११ ॥ श्रीअजितनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥  
 ( माघ कृष्णपक्षे ) ॥५॥ १४ ॥ श्रीअग्निनंदनजी सर्वज्ञाय ० ॥  
 ६ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी परमेष्ठिने ० ॥ १५ ॥ श्रीधर्म नाथजी सर्वज्ञाय ० ॥  
 १२ ॥ श्रीशीतलनाथजी अर्ह ० ॥ ( माघ शुक्लपक्षे ) ॥६॥  
 १२ ॥ श्रीशीतलनाथजी नाथाय ० ॥ १ ॥ श्रीअग्निनंदनजी अर्हते ० ॥  
 १३ ॥ श्रीऋषभदेवजी पारंगता ० ॥ २ ॥ श्रीवासुपुज्यजी सर्वज्ञाय ० ॥  
 ३० ॥ श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीविमलनाथजी अर्हते ० ॥  
 ( फाल्गुन कृष्णपक्षे ) ॥१०॥ ३ ॥ श्रीधर्म नाथजी अर्हते ० ॥  
 ६ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय ० ॥ ४ ॥ श्रीविमलनाथजी नाथाय ० ॥  
 ७ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी पारं ० ॥ ७ ॥ श्रीअजितनाथजी अर्हतेनमः ॥  
 ७ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी सर्वज्ञाय ० ॥ ए ॥ श्रीअजितनाथजी नाथाय ० ॥  
 ए ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्ठि ० ॥ १२ ॥ श्रीअग्निनंदनजी नाथाय ० ॥  
 ११ ॥ श्रीऋषभदेवजी सर्वज्ञाय ० ॥ १३ ॥ श्रीधर्म नाथजी नाथाय ० ॥  
 १२ ॥ श्रीश्रेयांसजी अर्हते नमः ॥ ( फाल्गुन शुक्लपक्षे ) ॥५॥  
 १२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी सर्वज्ञाय ० ॥ १ ॥ श्रीअरनाथजी परमेष्ठिने ० ॥  
 १३ ॥ श्रीश्रेयांसजी नाथाय ० ॥ ४ ॥ श्रीमल्लिनाथजी परमेष्ठि ० ॥  
 १४ ॥ श्रीवासुपुज्यजी अर्हते नमः ॥ ७ ॥ श्रीसंभवनाथजी परमेष्ठि ० ॥  
 ३० ॥ श्रीवासुपुज्यजी नाथाय ० ॥ १२ ॥ श्रीमल्लिनाथजी पारंगता ० ॥  
 ( चैत्र कृष्णपक्षे ) ॥ ५ ॥ १२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी नाथाय ० ॥  
 ४ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी परमेष्ठि ० ( चैत्र शुक्लपक्षे ) ॥७॥  
 ४ ॥ श्री पार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय ० ॥ ३ ॥ श्रीकुंथुनाथजी सर्व ज्ञाय ० ॥  
 ५ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी परमेष्ठि ० ॥ ५ ॥ श्रीअजितनाथजी पारंग ० ॥  
 ७ ॥ श्रीआदिनाथजी अर्हते ० ॥ ५ ॥ श्रीसंभवनाथजी पारंग ० ॥  
 ७ ॥ श्रीआदिनाथजी नाथाय ० ॥ ५ ॥ श्रीअनंतनाथजी पारंग ० ॥  
 ( वैशाख कृष्णपक्षे ) ॥६॥ ए ॥ श्रीसुमतिनाथजी पारंग ० ॥  
 १ ॥ कुंथुनाथजी पारंगताय ० ॥ ११ ॥ श्रीसुमतिनाथजी सर्वज्ञाय ० ॥

- २ ॥ श्रीशीतलनाथजी पारंग ० ॥ १३ ॥ श्रीविर्द्धमानजी अर्हते ० ॥  
 ५ ॥ श्रीकुंथुनाथजी नाथाय ० ॥ १५ ॥ श्रीप्रद्युम्नजी सर्वज्ञाय ० ॥  
 ६ ॥ श्रीशीतलनाथजी परमेष्ठिने ० ॥ ( वैशाख शुक्लपक्षे ) ॥ ७ ॥  
 १० ॥ श्रीनमिनाथजी पारंग ० ॥ ४ ॥ श्रीअग्निनंदनजी परमे ० ॥  
 १३ ॥ श्रीअनंतनाथजी अर्हते ० ॥ ७ ॥ श्रीधर्म नाथजी परमेष्ठि ० ॥  
 १४ ॥ श्रीअनंतनाथजी नाथा ० ॥ ८ ॥ श्रीअग्निनंदनजी पारंग ० ॥  
 १४ ॥ श्रीअनंतनाथजी सर्व ० ॥ ८ ॥ श्रीसुमतिनाथजी अर्हते ० ॥  
 १४ ॥ श्रीकुंथुनाथजी अर्हते ० ॥ १० ॥ श्रीविर्द्धमानजी सर्वज्ञाय ० ॥  
 ( ज्येष्ठ कृष्णपक्षे ) ॥ ७ ॥ १२ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग ० ॥  
 ८ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी अर्हते ० ॥ ( ज्येष्ठ शुक्लपक्षे ) ॥ ४ ॥  
 ९ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी पारंग ० ॥ ५ ॥ श्रीधर्मनाथजी पारंग ० ॥  
 १३ ॥ श्रीशान्तिनाथजी अर्हते ० ॥ ९ ॥ श्रीवासुपूज्यजी परमेष्ठिने ० ॥  
 १३ ॥ श्रीशान्तिनाथजी पारंग ० ॥ १२ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी अर्हते ० ॥  
 १४ ॥ श्रीशान्तिनाथजी नाथाय ० ॥ १३ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजीनाथाय ० ॥  
 ( आषाढ कृष्णपक्षे ) ॥ ३ ॥ ( आषाढ शुक्लपक्षे ) ॥ ३ ॥  
 ४ ॥ श्रीआदिनाथजी परमेष्ठि ० ॥ ६ ॥ श्रीविर्द्धमानजी परमेष्ठि ० ॥  
 ७ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग ० ॥ ८ ॥ श्रीनेमिनाथजी पारंग ० ॥  
 ९ ॥ श्रीनमिनाथजी नाथाय ० ॥ १४ ॥ श्रीवासुपूज्यजी पारंग ० ॥  
 ( श्रावण कृष्णपक्षे ) ॥ ४ ॥ ( श्रावण शुक्लपक्षे ) ॥ ५ ॥  
 ३ ॥ श्रीश्रेयांसजी पारंगताय ० ॥ २ ॥ श्रीसुमतिनाथजी परमेष्ठि ० ॥  
 ७ ॥ श्रीअनंत नाथजी परमेष्ठि ० ॥ ५ ॥ श्रीनेमिनाथजी अर्हते नमः ॥  
 ८ ॥ श्रीनमिनाथजी अर्हते नमः ॥ ६ ॥ श्रीनेमिनाथजी नाथाय ० ॥  
 ९ ॥ श्रीकुंथुनाथजी परमेष्ठिने नमः ॥ ८ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी पारंग ० ॥  
 ( भाद्रवा कृष्णपक्षे ) ॥ ५ ॥ १५ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी परमे ० ॥  
 ७ ॥ श्रीचंद्राप्रभूजी पारंगता ० ॥ ( भाद्रवा शुक्लपक्षे ) ॥ १ ॥  
 ७ ॥ श्रीशान्तिनाथजी परमे ० ॥ ९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी पारंग ० ॥  
 ८ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे ० ॥ ( आश्विन शुक्लपक्षे ) ॥ १ ॥

। आश्विन कृष्णपक्षे । ॥२॥ २५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्ठि० ॥  
 २३ ॥ श्रीमहावीरजी गवर्जाप० ॥ ॥॥॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥  
 ३० ॥ श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय नमः ॥॥॥ गवर्जापहार षष्ठमप्यस्तिः ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ पंचकल्याणक विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम शुभदिन शुभ वमी गुरूकै पास । पंचकल्याणक तप ग्र  
 हण करै । उपवास(वा)आंवल एकासणा दिकको पञ्चखवाण करै । तीन  
 टंक देव बंदन करै । पम्क्कमणो करै । ( जिस दिन ) जो माहाराजको  
 कल्याणक होय । उसीको १००० गुणनो करै । और ( पाश जिनेसर ज  
 गति लोए ० इत्यादि पंच कल्याणक जावगर्जित स्तवन पढै ( वा ) सुणै।  
 जहां जगवंत के कल्याणक भूमि होय । ( उहां ) वमे महोत्सवसें संघ  
 सहत यात्रा करनें कों जावै । विधिसंयुक्त यात्रा करै । और सर्व जगवंतों  
 कै पंच कल्याणकको उज्जव करै । ( जो ) शक्ति न हो ( तो ) शाश  
 नके अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के षट् कल्याणकका उज्जव जरूर क  
 रै ॥ ॐ ॥ अब २३ जगवंत की अपेक्षाये पांच, श्रीवीर प्रभूकीअपेक्षाये  
 षट् कल्याणक संक्षेप उज्जव विधि लि० ॥ ॐ ॥ १ ॥ चवन कल्याणक  
 कों ( परमेष्ठिनेनमः ) कहियै ( इस दिन ) चवद स्वभादिक की पूजा क  
 रायकै । चवन कल्याणकको उज्जव करै । हीरा चढावै ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ २ ॥ जन्म कल्याणक कों ( अर्हते नमः ) कहियै ( इस  
 दिन ) जलयात्रादिक महोत्सव करकै । अष्टोत्तरी स्नात्रादिक करावै । व  
 ख चढावै ॥ २ ॥ ॐ ॥ ३ ॥ दिक्षा कल्याणक कों ( नाथाय नमः )  
 कहियै ( इस दिन ) समोसरण निकालै । अशोकवृक्षादिकके नीचै स्था  
 पन करकै । दिक्षाको उज्जव करै । घृत गुग्गु बस्त्रादिक चढावै । शक्तिमा  
 फक दान देवै ॥ ३ ॥ ॐ ॥ ४ ॥ केवल ग्यान कल्याणककों ( सर्वज्ञा  
 य नमः ) कहियै । ( इस दिन ) समोसरणमें जगवंतकों स्थापन करकै ।  
 आठ प्रातिहार्य प्रगट करै । नाना प्रकारके उज्जव करै । वस्त्र आभूषण  
 चढावै । सपेदगोला चढावै ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों ( पारं  
 गताय नमः ) कहियै । ( इस दिन । ) निर्वाण कल्याणक के जावगर्जित

उठव करै लामूचढावै ॥ ५ ॥ ( और ठव गवर्जापहार कल्याणकका  
उठव करणा होय तो चवण कल्याणकके उठव समान करै ॥ ६ ॥ ( इसी  
तरै ) सर्व कल्याणकके उठव करै । तपस्या पूर्ण होनैं सैं । पंचकल्याण  
एक जीकी पूजा करावै । गुरुभक्ति करै । साहमी बल्ल करै । ( इस्या  
दिक ) विधि संयुक्त यह तपस्या ( जो ) नव्य जीव करेंगे ( सो ) अन  
न्त सुख कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्या धिकारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ परव वासैको स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सीमंधर करजो मया ( एदेशी ) जंबुद्वीप सोहामणो । दक्षि  
ण चरत उदार । राजग्रही नगरी जली । अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥  
( श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी । समरंता सुख थाय । मनवंछित फल पामी  
वै । दोहग दूरपुलाय ॥ २ ॥ ( श्री० ) राज करै तिहां राजियो । सुमित्र  
नरेसर नाम । पटराणी पद्मावती । शीलगुणें अजिराम ॥ ३ ॥ ( श्री० )  
श्रावण ऊजल पूनमै । श्रीजिनवर हरिवंश । माताकुक्षि सरोवरै । अवतरी  
यो रायहंस । ( श्री० ) ॥ ४ ॥ जेठपढम पक्ष अछमी । जायो श्री जिनरा  
य ॥ जनम महोत्तव सुरकरै । त्रिचुवन हरख नमाय ( श्री० ) ॥ ५ ॥  
शामल वरण सोहामणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंछन काठवो ।  
वीशधनुष तनुमान ( श्री० ) ॥ ६ ॥ परणी नार प्रजावती । जोगपुरंदर  
साम । राजलीला सुखजोगवै । पूरै वंछित काम ( श्री० ) ॥ ७ ॥ तव  
लोमांतिक देवता । आवि जंपै जयकार । प्रभु फागुणवदि वारसै । लीधो  
संजम नार ( श्री० ) ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवदि वारसै । मनधर निरमल  
ध्यान । च्यारकरम प्रभुचूरिया । पास्यो केवलग्यान ( श्री० ) ॥ ९ ॥  
( ढाल१ ) सुखकारण नवियण ( एहनी ) ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया  
सुरनर कोमि । प्रभुना पदपंकज प्रणवै वेकरजोमी । वेकरजोडी मत्तर ठोमी  
समवसरण विरतंत । माणक हेम रूपमय त्रिगडो ठव त्रय ऊलकंत । सिं  
हासन बैठा तिहां स्वामी चोविह् धर्मप्रकासै । वारै परखदा बैठी आगलि  
सुणै मन उल्हासै ॥ १४ ॥ तपनै अधिकारै पखवासो तपसार । पम्बिया  
थी कीजै पनरह तिथ ऊदार । पनरह तिथि कीजै गुरु मुख लीजै जिस

दिन जुवै उपवास । श्रीमुनिसुब्रत नाम जपीजै बांदी देव उल्लास । तप  
 कुजमणै रजत पादणो सोवन पूतलीचंग । मोदक थाल देहरै मूकी जि  
 नवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरन्तर अऊरव दर्शनी जेम ।  
 मनवंठित केरा सुखपामी जै तेम । पुत्र मित्र परिवार परं अति बल्लभ न  
 रतार । जस कीरत सोजाग वमाई महियल महिमा जाण । परन्नव मुग  
 ति फल लहीयै एतपनै प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संव तणो  
 अधिकार । नखवन्न प्रमुख नगरादिक करिया बिहार । बिहार करी प्रतिवो  
 धै खंदक पंचसयां परिवार । कार्तिकसेठ जितसत्रु तुरंगम सुब्रतनाम कु  
 मार । तीश सहस वरस आऊखो पावै जग दया सार । श्रीसम्मेत सिख  
 र परमेसर पुहता मुगति मऊार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रि  
 नुवन ताय । मुनिसुब्रत स्वामी वीशमो जिनवरराय । वीशमो जिनवर राय  
 जगत गुरु नयन्नंजण नगवंत । निराकार निरंजन निरुपम अजरामर अ  
 र्हित । श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकल चंद गणिसीस । वाचक सम  
 य सुन्दर इम पन्नणै पूरो मनह जगीस ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
 १ ॥ इति पखवासा स्तवन संपूर्णम् ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ अथ पखवासा तप विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभ दिन गुरूके पास तप ग्रहण करकै सुद ( १ )  
 पडिवासैं । पूर्णमासी तक । इकसार पनरै उपवास करै । जो शक्ति न हो  
 ( तो ) प्रथम सुद पक्षकी पडवा १ । द्वितीय सुद पक्षकी दूज २ ( ऐसैं ) अ  
 नुक्रमसैं पनरै सुदपक्षमें तपस्या पूर्ण करै । श्री मुनिसुब्रत स्वामीके पंच  
 कल्याणक जावगवर्जित स्तवन पढ़ै । गुरूको संयोग होय ( तो ) गुरूके  
 पास सुणैं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ श्रीमुनिसुब्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसीको ( १००० ) दो हज़ार गुणनो करै । और तपस्या  
 ग्रहण करनेकी ( तथा ) दैववंदनादिककी विधि । पूर्वे खुलासा लिख दी  
 नी है । उसी मुजब विवेकी जीव सब तपस्या की विधि करै । विधि संयु  
 क्त करने सैं उत्तम फल मिलता है ॥ ❀ ॥ इति पखवासा विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ अथ दश पञ्चखाण स्तवन लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( दूहाः ) ॥ सिद्धारय नंदन नमूं । महावीर भगवंत । त्रिगमै  
 वैठा जिनवरू । परपदवार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समें । पूठै  
 श्रीजिनराय । दश पचखाण कित्ता कंझा । कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥  
 ( ढाल ) ॥ १ ॥ सीमंघर करज्योमया ( एदेशी ) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिशै ।  
 सांजल गोयम स्वाम । दश पचखाण कियां थकां । लहीयें अविचल  
 वाम ॥ श्री० ॥ ३ ) ॥ नवकारसी १ । बीजी पोरसी २ ॥ साढ पोरसी  
 ३ । पुरमह ४ ॥ एकासण ५ ॥ नीबी ६ ॥ कही ॥ एकलठाण ७ ॥ देव  
 द्वि ॥ ( श्री ४ ) ॥ दात ८ । आंखिल ए । उपवास १० । ही ॥ एहीज दश  
 पञ्चखाण । एहना फल सुण गोयमा । जू जूवा करूं बखाण ॥ ( श्री ५ ) ॥  
 रतन प्रज्ञा १ । शर्कर प्रज्ञा २ ॥ बालुक ३ । तीजी जाण ॥ पंक प्रज्ञा  
 ४ । तिम धूम प्रज्ञा ५ ॥ तम प्रज्ञा ६ । तम तम ७ । वाम । ( श्री ६ ) ॥  
 नरक सात कही एसही । करम कठित करजोर । जीव करम वस  
 ते सही । उपजै तिण हीज ठोर ( श्री ७ ) ॥ जेदन जेदन तामना । जूख  
 त्रिपा बलिजास । रोम रोम पीना करै । परमाहम्मी तास ( श्री ८ ) ॥  
 रात दिवश खेववेदना । तिलजर नहीं जिहां सुख । किया करम जे भोग  
 धै । पामें जीव ब्रज्जडुख ( श्री ९ ) ॥ इकदिनरी नवकारसी । जे करै जाव  
 विशुद्ध । सो वरस नरकनो आऊखो । दूर करै ज्ञानबुद्धि ( श्री १० ) ॥ नित्य  
 करै नवकारसी । ते नर नरक न जाय । नरहै पापबलि पावला । निरमल होवै  
 जी काय ( श्री ११ ) ॥ ११ ॥ ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ( ए चाल ) ॥  
 सुण गोतम पोरसी कियां । महामोटी फलहोय । जावसुं जे पोरसी करै ।  
 उरगति ठेदै सोय ( सु १२ ) । नरक मांहें जे नारकी । वरशें एक हज्जार  
 र । करम खपावै नरकमें । करता ब्रज्जत पुकार ( सु १३ ) ॥ एक दिवश  
 नी पोरसी । जीव करै इकतार । करमहणें सहस एकना । निहचैसुं गण  
 धार ( सु १४ ) ॥ उरगति मांहें नारकी । दसहज्जार प्रमाण । नरक  
 आयु खिण एकमें । साढपोरसी करै हाण ( सु १५ ) ॥ पुरमह करै नित  
 जीवजे । नरकें ते नविजाय । लाख वरश करमनें दहै । पुरमह करम खपा  
 य ( सु १६ ) ॥ लाख वरश दश नारकी । पामें दुःख अनंत । इतरा



करम एकासणें । दूर करै मनखंत (सु०) १७॥ एककोमि वरसांलगे । कर  
 म खपावै जीव । नीवीय करतां जावसुं । डुरगति हणें सदीव (सु०) १८॥ दश  
 कोमी जीव नरकमें । जितरो करै कर्म दूर । तितरो एकलठांणही । करैसही  
 चकचूर (सु०) १९॥ दात करंतां प्राणीयो । सो कोमी परमाण ।  
 इतरा वरश डुरगति तणा । ठेदै चतुर सुजांण (सु०) २०॥ आंवि  
 लनो फल वज्ज कस्यो । कोमी एक हजार । करम खपावै इणपरै । जाव  
 आंविल अधिकार (सु०) २१॥ कोमि सहस दशवरशही । सहे दुःख  
 नरक मऊार । उपवास करै इक जावसुं । तो पामें मुगति मऊार (सु०)  
 २२॥ ढाल ३॥ केकेइ वरलाधो (एदेशी) ॥ लाख कोमी वरसां लगै ।  
 नरके करतां रीकरे । (गो० १३) ॥ नरकेवरश कोम लाखही । जीव लहै  
 तिहां दुःखरे । ते दुख अठम तप ऊंती । दूरकरी पामें सुखरे (गो०)  
 २४॥ ठेदन जेदन नारकी । कोमा कोमि वरसोइरे । कुगति कुमतिनें पर  
 हरो । दशमें एतो फल होइरे (गो० २५) ॥ नितफासू जल पीवतां । को  
 मा कोमी वरशनो पापरे । दूरकरै खिण एकमें । निश्चैहोय निः पापरे  
 (गो० २६) ॥ बलिय विशेषै फल कस्यो । पांचम करै उपवासरे । पामेंग्यां  
 न पांचेजला । करता विज्जुवन परकासरे (गो०) २७॥ चवदश तप वि  
 धसुं करै । चवदह पूरव होय धाररे । इम अनेक फल तपतणा । कहितां  
 बलि नावै पाररे (गो० २८) ॥ मन वचने काया करी । तप करै जेनर नार  
 रे । इग्यारै वरश एकादशी । करतां लहै जवपाररे (गो० २९) ॥ आठम तप  
 आराधतां । जीव न फिरै संसाररे । अनंत जवांना पापथी । ठूटै जीव निर  
 धाररे (गो० ३०) ॥ तप ऊंती पापी तह्या । निसतरीयो अरजुन मालरे  
 (गो० ३१) ॥ तपना फल सुत्रे कया । पच्चक्खाण तणा दश जेदरे । अ  
 वर जेद पिण्ठै घणा । करतां ठेदै त्रय वेदरे (गो० ३२) ॥ कलशः ॥ ❀ ॥  
 पच्चक्खाण दशविध फल प्ररूप्या महावीर जिण देवए । जे करै जविधण तप  
 अखंमि तासु सुरपय सेवए । संवत्त निधिगुण अभ्व शशि बलि पोशसुद  
 दशमी दिनें । पदम रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि जणें (गो०  
 ३३) ॥ इति दश पच्चक्खाण वृद्ध स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १० पञ्चखाण तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह दश १० पञ्चखाणके स्तवनमें । खुलासा दश पञ्चखाणके जेद (और) वेला । तेला । पांचम । आठम । चौदश । (इत्यादिक) तपस्या करनेके फल । जगवंत श्री महावीर स्वामीके । वंचन माफक । उत्तम पुरुषोंने रचना करी है । ( इसीसे ) धर्मरागी पुरुष । इसी स्तवनकों पढ़के । तपस्या करनेमें आदरवंत होता है । और कोईके दश पञ्चखाण तप करनेकी इज्ञा हो ( तो ) पहलै दिन । नवकारसी, दूसरे दिन पोरसी ( इसी तरै ) स्तवन मुजर्व १० पञ्चखाण तप । दश दिवशे सेवन करै । सदा स्तवन सुणें । गुरुको संयोग न हो ( तो ) आपपढै । अंतमें पूजाकरावै । शक्ति माफक उपापन करै ( इसी तपस्याके प्रसाद ) खोटी गतिकों दूर करै । अन्नी गतिके बंध बांधै । महा ऐश्वर्यवंत होय । जाग्य वंत होय ॥ ❀ ॥ इति दश पञ्चखाण तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसिद्धाचल जेटियै ( एदेशी ) ॥ वीश थानक तपसेवीयै । धर करि सुन्न परिणाम लाल रे । तीजै जव सेव्योथको । बांधै तीर्थ कर नाम लालरे । ( वी० ॥ १ ॥ तप रचना अधकी कही । ग्याता अंग म ऊार लालरे । सुणजो जवि तुमे जावसुं । चितसैं करियै उचार लालरे ( वी० ) ॥ २ ॥ सुबिहृत गुरु पासै ग्रहै । वीश थानक तप एह लाल रे । निरदूषण सुन्नमज्जरते । उचरीजै ससनेह लालरे ( वी० ) ॥ ३ ॥ अरिहंत १ । सिद्ध २ । प्रवचननमुं ३ ॥ सूरि ४ । धिवर ५ । उवझाय ६ । लालरे ॥ साधु ७ । नाण ८ । दंसण ९ । अरु ॥ विनय १० । नमुं उन्न साय लालरे ( वी० ) ॥ ४ ॥ चारित्र ११ । वंज १२ । क्रियापदे १३ ॥ तप १४ । गोयम १५ । जिण १६ । ईस लालरे ॥ चारित्र १७ । ग्यान नें १८ । श्रुत १९ । जणी ॥ नमुं तीर्थ २० । पदवीश लालरे ( वी० ) ॥ ५ ॥ वीश दिवशमें एकही । पद गुणनो करमेव लालरे । अथवा दिन वी शालगे । वीशे पद गुणमेव लालरे ( वी० ) ॥ ६ ॥ एकउली पट्माशमें । पूरीजो नविहोय लाल रे । फेरनवी करणी पमै । पिठली निष्फल जोय लाल रे ( वी० ) ॥ ७ ॥ ठठ अन्न उपवाससुं । अथवा देसी शक्ति

लालरे । पोसहकर आराधियै । देववांदै निज नक्तिलाल रे ( वी० ) ॥  
 ॥ ८ ॥ संपूरण पद सेवतां । पोसहरो नही जोग लालरे । तोही सात  
 पदसही । पोसह करिये संजोग लालरे ( वी० ) ॥ ९ ॥ सूरि, धिवर,  
 पाठक, पदै । साधु, चारित्र, सुजाण लालरे । गौतम, तीर्थपदे, सही ।  
 सात थानक मनमान लालरे ( वी० ) ॥ १० ॥ पद पद दीठ करै सदा  
 दोय दोय जाप हजार लालरे । पम्कमणो दोय टंकही । करियै पूजा  
 सार लालरे ( वी० ) ॥ ११ ॥ शक्ति मुजव तप कीजीयै । एक उली  
 करो वीश लालरे । वीशा वीशी च्यारसै । तप संख्या कही एम लालरे  
 ( वी० ) ॥ १२ ॥ जिसदिन जो पद तप करै । तिसके गुण चितधार  
 लालरे । काउसग पर दक्षणा । मुख नणियै नवकार लालरे ( वी० ) ॥  
 १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणें । कीजै जिन पद नक्ति लालरे ( वी० )  
 १४ ॥ मृतक जनम रितु कालमें । कविधाखो उपवास लालरे । सोलेखै  
 नहिं लेखवो । निकेवल तपजास लालरे । ( वी० ) ॥ १५ ॥ सावळ त्या  
 ग पणो करै । सोकन धारै चित लालरे । शील आनूषण आदरै । मुखसुं  
 बोलै सख लालरे ( वी० ) ॥ १६ ॥ जेठ आशाढ वैशाखमें । मिगसर फागु  
 ण मांह लालरे । एषट् मासे मांहिनैं । व्रत ग्रहीयै वम जाग लालरे ( वी० )  
 ॥ १७ ॥ तप पूरण ऊवां थकां । ऊजमणो निरधार लालरे । कीजै शक्ति  
 विचारनैं । उजव विवध प्रकार लालरे ( वी० ) ॥ १८ ॥ वीश वीश गिणती  
 तणा । पुस्तक पूठा आदि लालरे । ग्यान तणी पूजा करै । मुंकीजे हठ  
 वाद लालरे ( वी० ) ॥ १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका । कीधी विध चित  
 लाय लालरे । जनम सफल करवा नणी । ओहीज मोक्ष उपाय लालरे  
 ( वी० ) ॥ २० ॥ ( कलश ) ॥ ❀ ॥ इम वीर जिनवर तणी आग्या धार चित  
 मजारण । सज्जदेख आगम तणी रचना रची तप विधसारण । वसुनंद सि  
 धि चंद्र वरसे चेत्र मास सुहंकरू । मुनि केसरी शशि गज खरतर नणी  
 स्तवना मन हरू ॥ २१ ॥ इति वीश स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

❀ ॥ अथ वीश स्थानक तपकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहां प्रथम शुभ मङ्गलके दिन । नंदी स्थापना पूर्वक । सुवि  
 हित गुरुके समीप । वीश स्थानक तप । विधिपूर्वक उचरै । एक उली दो

माशसैं लेकै ( यावत् ) ठम्माशों पूरी करै । ( कदाचित् ) ठम्माश मध्ये पूरी नकर सकै ( तो ) वा उन्नी गिणती में नहैं । और नवी करणी पमै । एक उन्नीके वीश पद है ( तिहां ) कोई वीश-दिनमें । वीशों पद जूदा २ गिणें कोई वीशों दिनमें एकजपद गिणें । दूसरै वीशों दिनमें दूसरो पद । ( ऐसैं ) वीशों पदकी वीश उन्नी करै । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवन्त । अठम तप करिकै आराधै । वीश अठमें एकउन्नी होय ( ऐसैं ) वीश उन्नी ( ४०० ) अठमें आराधै । और तिससैं होनशक्ति ठठ तप करकै आराधै । तिससैं होनशक्ति चौविहार उपवास करकै आराधै । तिससैं हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करकै आराधै । तिससैं हीन शक्ति आविद्य ( तथा ) ति विहार एकाशणा करकै आराधै । तिहां शक्तिवान प्राणी । सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै । ( हीन शक्ति ) दिन पोसह करै । वीशों पद पोसह सेती आराधै ( जो ) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो ( तो ) आचार्य पदै १ उपाध्याय पदै २ धिवर पदै ३ साधू पदै ४ चारिघ पदै ५ गौतम पदै ६ तीर्थ पदै ७ यह सात धानकै तो पोसहज करकै आराधै । तथापि शक्ति न हो ( तो ) तिस दिन देशावगासिककरै । सावद्य व्यापार सजै । सो पिण नहोइ ( तो ) यथाशक्ति तप करी आराधै । अपणी ही नताजावै ( तथा ) मृतक जातक का सूतकमें उपवासादि तप न गिणें, न जावै । स्त्रीयां पिण क्तु समय का तप न गिणें ( तथा ) तपके दिन पोसह सहित करै ( तो ) बहोत श्रेयकारी है । सो न होसकै ( तो ) तपके दिन उनय टंक पम्किमण करै । तीन टंक देव वंदन करै । दो सहस्र ( २००० ) एक पदका जप करै । ब्रह्मचर्य पालै । जूमि शयन करै । तपकै दिन अ तिसावद्य आरंभ व्यापार न करै । असत्य न बोलै । सर्व दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै । ( तथा ) तपके दिन पोसह करै ( तो ) पारणिके दिन जिन नक्ति करके पारणो करै । ( जो ) तपके दिन पोसह नहो ( तो ) उ सी-दिन श्रीजिन नक्ति करै । करावै । जावना जावै । ( तथा ) तपकै दिन पदके गुण जेद प्रमाण संख्याइ काउसगग करै । ( तावन्मात्र ) तद्गुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदना करै । उस पदका गुण यादकरके उदात्त स्वरै स्तवना करै । दर्पित रहै ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥१॥ अथ वीश स्थानिक गुणनो और कानसग्गका प्रमाण  
लिखते हैं ॥१॥

॥१॥ ( एमो अरिहंताणं ) ( १००० ) गुणनो । लोगस्स १२ कानसग्ग ॥ १ ॥ ॥२॥ ( एमो सिद्धाणं ) ( १००० ) गुणनो । लोगस्स १५ कानसग्ग ॥ २ ॥ ॥३॥ ( एमो पवयणस्स ) ( १००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ कानसग्ग ॥ ३ ॥ ॥४॥ ( एमो आयरियाणं ) ( १००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ कानसग्ग ॥ ४ ॥ ॥५॥ ( नमो थेराणं ) ( १००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५ कानसग्ग ॥ ५ ॥ ॥६॥ ( एमो उवायप्पाणं ) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५ कानसग्ग ॥ ६ ॥ ॥७॥ ( एमो लोए सबसाज्जाणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १७ कानसग्ग ॥ ७ ॥ ॥८॥ ( एमो नाणस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स ५ कानसग्ग ॥ ८ ॥ ॥९॥ ( एमो दंसणस्स ) ( १००० ) गुणनो । लोगस्स १७ कानसग्ग ॥ ९ ॥ ॥१०॥ ( एमो विनयसंपणाणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १० कानसग्ग ॥ १० ॥ ॥११॥ ( एमो चारित्तस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स ६ कानसग्ग ॥ ११ ॥ ॥१२॥ ( एमो वंनवय धारीणं ) १००० गुणनो । लोगस्स ९ कानसग्ग ॥ १२ ॥ ॥१३॥ ( एमो किरिआणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १५ कानसग्ग ॥ १३ ॥ ॥१४॥ ( एमो तवस्सीणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १५ कानसग्ग ॥ १४ ॥ ॥१५॥ ( एमो गोयमस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स १७ कानसग्ग ॥ १५ ॥ ॥१६॥ ( एमो जिणाणं ) १००० गुणनो । लोगस्स १० कानसग्ग ॥ १६ ॥ ॥१७॥ ( एमो चरणस्स ) दो हजार गुणनो । लोगस्स १२ कानसग्ग ॥ १७ ॥ ॥१८॥ ( एमो नांणस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स ५ कानसग्ग ॥ १८ ॥ ॥१९॥ ( एमो सुअनाणस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स १० कानसग्ग ॥ १९ ॥ ॥२०॥ ( एमो तित्थस्स ) १००० गुणनो । लोगस्स ५ कानसग्ग करै ॥ २० ॥ ॥२१॥

इति वीश स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥२१॥

॥२१॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीशों उल्लेखमें सर्व पदके उल्लेख महोल्लेख प्रज्ञावना बना ऊजमणा पूर्वक करै । जिन शासन के उन्नतिके कारण करै । इतनी

शक्ति न हो (तो) एक नली तो विशेष उन्नवादि सहित करणी चाहिये ॥  
इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखी है  
(जो) गुरुको संयोग छय । तबतो विस्तारसें वीशों पदकी जूदी जूदी वि-  
धि । गुरुके मुखसें समझकै करै (जो) गुरुका जोग न हो (तो) विवेक सं-  
युक्त इस विधिकों देखकै वीश स्थानक तप सेवन करै । वीश स्थानक तवन  
पढै (वा) सुणै । वीश स्थानकजीकी पूजा करावै । अपनी शक्ति माफक  
वीश वीश ग्यानोपगरण करावै । देव पदको देव खाते लगावै । ग्यान पद  
को ग्यान खाते लगावै । गुरु पदको गुरु खाते लगावै । सर्व तीर्थोंकी यात्रा  
करै । साहमी वृत्तल करै (इत्यादिक) द्रव्यै, जावै, विधिसंयुक्त सुध जावसें  
(जो) जन्म जीव यह वीश स्थानक पदकों सेवन करेंगे (सो) जिन नाम  
कर्मकों उपाजन करकै । तीशरै नव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे । इत्यलंविस्त-  
रण ॥५॥ इति वीशस्थानक तपनली विधि संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ॥ अथ रोहणी तप स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ शाशण देवत सांमणीए । मुक्त सानिध कीजै ॥ नूलो अक्षर  
नगति नणी । समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणोए । जिणरा गु-  
ण गावुं ॥ जिम सुख सोदग संपदाए । बंठित फल पावुं ॥१॥ दक्षिण न-  
रते अङ्गदेस ठे चंपानयरी । मधवा राजा राज करै तिण जीता बैरी । पाठ  
तणी राणी रूमिण लखमी इण नामें । आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें  
सुख पांमैं ॥ २ ॥ रोहणी नामें पुत्रिकाए सबकुं सुखकारी । आठों पुत्रों  
ऊपराए तिणलगै प्यारी । बाधै चंद्र तणी कलाए जिम पल उजवालै ।  
तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरीरूपै रूमिण घर  
अङ्गण वैठी । दीठी राजा खेळतीए तिण चिंता पैठी । तीन भुवन विच  
एहवी ए नहीं दूजी नारी । रंजा पत्रमा गवर गंग इण आगल हारी ॥  
४ ॥ पुरुष न दीसै कोइ इसो जिणनें परणावुं । आख्यां आगल साल व  
धै तिण चयन न पावुं । देशर ना राजयीए ततखिण तेमाया । सबल  
सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजा तणोए ठे  
कुमर सोजागी । कन्या कैरी आंखमीए तिण सेती लागी । ऊजा देखै स

कल लोक चढीया केई पाला । चित्रसेन रै कंठ ठवी कुमरी वरमादा ॥  
 ६ ॥ देव अने देवांगनाए जपै जयश कार । रलियायत थयो देखने ए सारो  
 संसार । करजोमी कहै लोक बखत कन्यारो जामो । वीत शोकनो कुमर  
 थयो शिर ऊपर लामो ॥ ७ ॥ इम वीवाह थयो नलो ए दीया दान अधी  
 र । घर आया परणी करीए हरख्यो परिवार । वीतशोक निज पुत्रजणा  
 अपणो पाट दीधो । आपण संयम आदरी ए जगमें जश लीधो ॥ ८ ॥  
 ढाढ ॥ ॥ प्रनु प्रणमुरे पाशजिनेसर थंजणो (एदेशी) ॥ ॥ तिण नयरीरे  
 चित्रसेन राजा थयो । सुख मांहै रे केतलो काल बही गयो । इण  
 अवसररे आठ पुत्र ऊवा नला । चढतै पखरे चंद जिसी चढती कला  
 ( उछालो ) चढती कला हिव राय वैठो पास वैठी रोहणी । सातमी जूमें  
 कंत सेती करै क्रीमा अति धणी । आठमो बालक गोद ऊपर रंगसु राणी  
 लियो । पुत्रनें प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामणरे गोख चढी द्रष्टे पडी । शिर पीटैरे दीनस्वरे रोवै खमी । बूढा  
 पणरे मनगमतो बालक मुंओ । ऊं एकजेर तिण अधिकरो डुखऊवो (३०)  
 डुखऊवो देखी रोहणी हिव कहै इम प्रीतम नणी । एनार नाचै अने कूदै कहो  
 किम मोटा धणी । एहवो नाटक आजतांइ में कदे देख्यो नही । मुऊनें  
 तमासो अने हाशो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ॥ इण वचनेरे री  
 सांणो राजा कहै ॥ तूपापणीरे परतणी पीमा नवि लहै । ए डुखणीरे पुत्र  
 मुंए तम फम करै । जव बीतैरे वेदना जाणी जै तरै । ( ३० ) जाणै तरै  
 तुं वात डुखनी गरब गहली कामनी । इम कही राजा हाथ ऊढ्यो तेह  
 ना बालक नणी । सातमी जुंयथी तलै नाख्यो तिसे हाहारवथयो । रोहणी  
 हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजारे  
 पुत्र तणें शोकै करी । थयो मुरबितरे रोवै अति आंख्यां नरी । पमतो सु  
 तरे सासणदेवत जाणियो । कंचन मइरे सिंहासण बैसाणियो । ( उछालो )  
 बैसाणियो करजोम आगै करै नाटक देवता । गोदीखिलावै के हसावै पा  
 य पंकज सेवता । ऊपनो नूपतिनें अचंचो देखी ए कारण किसो । जो  
 कोई ग्यानी गुरुपधारै पूठियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ ( चाल ) चितवतारै चा  
 रितिया आया तिसै । राजा पिणरे पुहतो बांदणनें तिसै । सुण देशनारे

पूठै प्रश्न सुहामणो । कहो स्वामीरे, पूरव जव बालक तणो ॥ (उल्लाखो)  
 बालक तणो जवचूप पूठै कहै । इण पर केवली । रोहणी राणीरो जवांतर  
 अने राजानो बली । श्रीगुरु पासे पाठ्ये जव रोहणी तप आदख्यो । तप  
 तणें सगते साधु जगते तुम्ह जवसायर तख्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा  
 रे किम रोहणितप कीजीयै । विधि जापोरे जिम तुम पासे लीजीयै । तव  
 मुनिवररे विध रोहणरा तप तणी । इम जंपैरे चित्रसेन राजा जणी ॥  
 (चाल) राजा जणी विधएह जंपै चंद्र रोहण तप आवियै । उपवास कीजै  
 लान्न लीजै जली जावना जावियै । वारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजियै म  
 नरङ्गसुं । इम सात वरसां लगे कीजै तजी आलस अङ्गसुं ॥ १४ ॥  
 ॥५॥ (ढाल) ॥५॥ वीरसुणो मोरी वीनती (एचाल) ॥५॥ तप करियै रोहणि  
 तणो । बली करियैहो ऊजमणो एम । तप करतां पातिक टलै । तिण कीजै  
 होतपसेती प्रेम ॥ १५ (त०) ॥ देव जुहारी देहरै । तिण आगै हो कीजै  
 दृढ़ अशोक । गुणनो वारम जिन तणो । जला नेवज हो धरीयै सज्ज थो  
 क ॥ १६ त० ॥ केशर चन्दन चरचीयै । कीजै आगै हो आठे मङ्गलीक ।  
 विधसुं पुस्तक पूजीयै । ते पांमें हो शिवपुर तहतीक ॥ १७ (त०) ॥ सेवा  
 कीजै साधूनी । बलि दीजै हो मुंह मांग्यादान । संतोपी जै साहमी । मन  
 रङ्गे हो कर २ पकवान ॥ १८ (त०) पाटी पोथी पुंठणा । मिस लेखण  
 हो जिल मिल सुजगीस । नवकरवाली बीटणा । गुरु आगै हो धरो सत्ता  
 बीस ॥ १९ (त०) ॥ चोयो व्रत पिण तिणदीनै । इम पालै हो मन आण  
 विवेक । इण विध रोहणि आदरै । तेषांमें हो आनन्द अनेक ॥ २० ॥  
 ॥५॥ (ढाल ४ धरम करो जिनवर तणो) ॥५॥ इम महिमा रोहण तणी ।  
 श्रीग्यानी गुरु परकासैरे । चित्रसेनने रोहणी । वाशपूज्य तिर्थकर पासै रे ॥  
 २१ (इ०) ॥ इणपरि रोहणि आदरी । ऊपर ऊजमणो कीधोरे । चित्रसे  
 नने रोहणी । मनसूधै संजम लीधोरे ॥ २२ (इ०) ॥ आठे पुत्रे आदरी दि  
 ख्या धारम जिन आगैरे । बलि नानाविध तप तपे । धरम तणी मति जागैरे ॥  
 २३ (इ०) ॥ करि अणसण आराधना । लहि केवल शिवपद पायारे । जि  
 नवाणी आणी दीयै । प्रजु चरणां चितलायां रे ॥ २४ (इ०) ॥ मनमोहन  
 महिमानिखो । मंतवियो शिवपुर गामीरे । मनमान्या साहिव तणी । दिव



पुन्ये सेवा पामी रे ॥ २५ (६०) ॥ ❀ ॥ कलश ॥ ❀ ॥ इम गगन डग मु  
नि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुद जली । में कही रोहण तणी महि  
मा सुगुरु मुख जिम सांजली । वार पूज्य अमनें थया सुप्रशन चित्तनी चिं  
ता टली । श्रीसारजिन गुण गावतां हिव सकल मन आश्या फली ॥ २६ ॥  
इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन गुरूके पास रोहणी तप ग्रहण करै । रोहणी नक्ष  
त्रके दिन उपवास करै । वारमा श्री वार पूज्य स्वामीका पूजन करै । आ  
गै अष्ट मंगलीक रचना करे । अष्ट द्रव्य चढावै । देव वंदनादिक करकै  
धर्मोपदेश शुणै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## १ ॥ ❀ ॥ श्रीवार पूज्यस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी को ( २००० ) गुणनो करे । ऐसैं सात वरश ( यह )  
तप करनेसैं । सुख शौभाग्य वधैगा । विशेष अधिकार । यह रोहणी तप  
का स्तवन सुणनेसैं मालुम होगा ( अलं विस्तरेण ) इति रोहणीतपविधिः॥

## ॥ ❀ ॥ अथ ठम्माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय । म  
हावीर स्वामी जे जे तप कीया । तेहनो कहिसुं विचार ( बलि २ बांड  
वीरजी सुहामणा ) ॥ १ ॥ जावठ जंजण सेव्यां सुख करै । गातां नवनि  
धि थाय । वारैं वरसां वीरजी तपकीयो । दूरकरै सज्ज पाप ( व० )  
॥ २ ॥ वे करजोमी एज्जं वीनवुं । श्रीजिन शाशन राय । नाम लियांथी  
नव निधि संपजै । दरशण डरित पुलाय ( व० ) ॥ ३ ॥ नव चौमाशा जिन  
जीरा जांणियै । एक कियो ठम्माश । पांचे ऊणा ठ बलि जाणीयै । वार  
के को जी माश ( व० ) ॥ ४ ॥ बज्जतर माश खमण जग जीपता । ठ दो  
माशीरे जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशी वखाण ( व० )  
॥ ५ ॥ नद्र महानद्र शिवगति जाणीयै । उत्तम एहना प्रकार । विचमें पा  
रणो स्वामी नवि कीयो । नवि कीयो चौथो आहार ॥ ४ ॥ ( व० ) तिऊं  
उपवासे प्रतिमा वारमी । कीधा वारै जी माश । दोयसै वेढा जिनजीरा

जाणीयै । इम गुणतीस बिलास ( व० ) ॥ ६ ॥ तीनसै पारणा जिनजीरा-  
जाणीयै । तीन गुणतीस पचास । एहमें स्वामी केवल पामिया । पांम्या मु-  
गति आवास ( व० ) ॥ ६ ॥ ( कलशः ) इम वीर जिनवर सयल सुखकर  
अतही डुकर तप करी । संसम सुपाली कर्म टांली स्वामी शिवरमणी वरी ।  
सेवक पन्नणै वीर जिनवर चरण बंदित तुमतणा । संसार कूप पमंत राखो  
आपो स्वामी सुखघणा ॥ ७ ॥ ॥ ॥ इति ठम्माशीतप स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ठम्माशी तप विधिः ॥ ॥

॥ ॥ शाशनके अधिपति श्री महावीर स्वामी । सर्वसैं उरकष्ट ठम्माशी  
तप कियो । ( इसीसैं ) इस कालमें संघयण बल पराक्रमकै हीनपणासैं इ  
कसार ठम्माशी तप न कर सकै ( तोपिण ) ठम्माशीके ( १०० ) उपवास  
करनेसैं । जघन्य ठम्माशी तपकै फलकों प्राप्तहोय । और देववंदनादि  
सर्व क्रिया करै । ठम्माशी तपका स्तवन शुणै । इस ठम्माशी तपकै स्तव  
नमें । सर्व तपस्या की संख्या कही है ॥ ॥ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः ॥ ॥

इसी को ( १००० ) गुणनो करै । जंगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नाम  
सैं तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां यात्रा करनेकों जावै । अनेकतरेसैं शुद्धना  
वना जावै । शक्ति माफक उद्यापन करै । इस तपस्याके प्रसाद लघुकर्मों  
होके अनन्त सुखकों प्राप्त होय ॥ ॥ इति ठम्माशी तप विधिः ॥ ॥

॥ ॥ अथ बारै माशी तप स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ दान उल्लट धरी दीजीयै । ( एदेशी ) ॥ ॥ त्रिजुवन नायक तुं ध  
णी । आदि जिणैसर देवरे । चौसठइंद्र करै सदा । तुऊपद पंकज सेवरे  
( त्रिजु० ) ॥ १ ॥ प्रथम जूपाल प्रभु तुंथयो । इण अवसरपणी कालरे ।  
तुऊ सम अवरन को प्रभु । तुं प्रभु दीन दयालरे ( त्रि० ) ॥ २ ॥ प्रथम ती  
र्थ कर तुं सही । केवल ग्यान दिनंदरे । धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं । तूंही  
है प्रथम जिनंदरे । ( त्रि० ) ॥ ३ ॥ अंतर अरिजे आतम तणा । काल  
अनादि धितिजेहरे । ते तप शक्तिये तैहण्या । आत्म वीरज गुण  
गेहरे ( त्रि० ) ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै । जेहने अंत न

पाररे । द्वादश माशनो तप कखो । तेह अपानक साररे ( त्रि० ) ॥ ५ ॥  
 एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो । आगममें जिन राजरे । ते करवुं अति आकरं  
 तप विना किम सरै काजरे ( त्रि० ) ॥ ६ ॥ तीनशौ साठ उपवास ते । जे  
 इण पंचम कालरे । अवसर आदरै क्रम विना । ते पिण जवि सुविदासरे  
 ( त्रि० ) ॥ ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै । शास्त्र तणें अनुसाररे । पम्किम  
 णादिक जावथी । सुद्ध क्रिया मन धाररे ( त्रि० ) ॥ ८ ॥ चित्तसमाधि सुज  
 जाव थी । धरै ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तम फल लहै । बलिबहै उत्तम  
 ग्यानरे ( त्रि० ) ॥ ९ ॥ काल अनादि संसारमें । जन्म मरण तणा ड  
 कखरे । ते लक्ष्य धर्म पायांविनां । तप विनां किमज्जवै सुखरे ( त्रि० )  
 ॥ १० ॥ हिव लक्ष्यो नर जव पुन्यथी । बलिबह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्त्वनी  
 रुचिथईहे मुळे । हिव मिट्यो मन तणो जर्मरे ( त्रि० ) ॥ ११ ॥ जव २  
 एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख काररे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । में  
 कियो हिवै परिहाररे ( त्रि० ) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोक्ष  
 मारग सुविसालरे । जव २ जे मुक्त संपजै । तो फलै मंगल मालरे ( त्रि० )  
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कखो । ते तप सुरतरु कंदरे । धन २ जेनर आ  
 दरै । काटै ते करमनो फंदरे ( त्रि० ) ॥ १४ ॥ ( कलशः ) इम नाजि  
 नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मैथुण्यो धन दिन आजनो मुक्त  
 मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीबालूचरै  
 श्रीजिन सौजाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥ ✽ ॥  
 इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ बारै माशी तपविधिः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ प्रथमतिर्थकर श्री ऋषभदेव स्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तपस्या  
 करी ( इसीसैं ) जव्य जीव बारै माशी तपस्याका जाव लायके ( ३६० )  
 तीन सै साठ उपवास करै । जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया  
 करै । बारै माशी तपका स्तवन सुणें ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ १ ॥ श्री ऋषभदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

इसीको ( २००० ) गुणनो करै । तपस्या पूर्ण होनैसैं सिद्धगिरी यात्रा  
 करनेको जावै । शक्तिमाफक उद्यापन उज्जव करै । इस तपस्याके प्रशान्त

नव्य जीवोंके कनी दुख दौ प्राप्य प्राप्ती न होय । सदा तप तेज बढ़तो रहे । इति वारै मांशी तपस्याविधिः ॥ १० ॥ ॥ १० ॥ ॥ १० ॥

॥ १० ॥ अथ अष्टाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ १० ॥

॥ १० ॥ ( उहा ) प्रणमुं प्रथमं जिनसंरु । शुद्धमनै सुखकार । लब्धि अठावीस जिन कही । आगमनै अधिकार ॥ १ ॥ प्रण व्याकरणे प्रगट जगवती सुवमजार । पन्नवणा आवस्यके । वारु लब्धि विचार ॥ २ ॥ आबिल तप कर ऊपजै । लब्धां अठावीस । एहिब परगट अरयसुं । सां नलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ ( ढाल ) ॥ १० ॥ सफल संसारनी ॥ १० ॥ अनुक्रमे देव अधिकार गाथा तणै । लब्धिना नाम परिणाम सरिपा नणै । रोग सज्ज जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लब्धि ठै नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल मुत्र उपध समा जाणीयै । वीष वप्पोसही लब्धि बखाणीयै । श्लेपम उपध सारिखो जेहनो । तीजी खेलोसही नाम ठै तेह नो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरै ऊयै । चोधी जल्लोसही नाम तेह नो ठवै । केश नख रोम सज्ज अंग फरसै सही । रहै नही रोग सब्बोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा । नेद जाणै तिका नाम संनिघणा । वस्तु रूपी सज्ज जाणियै जिण करी । सातमी लब्धि ते अ वधि ग्यांनै करी ॥ ७ ॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर ( ए चाल ) ॥ १० ॥ हिव आंगुल अढीयै ऊणो मानुष द्वेव । संग्या पंचेंद्री तिहां जे वसय विचित्र । तसु मननो चिंतित जाणै थूल प्रकार । ते ऊजुमति नामें अठम लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष द्वेवे संज्ञावत । पंचेंद्रिय जे ठै तसु मन वातांत । सूखम परजायै जाणै सज्ज परिणाम । ए नवमी कहीयै विपुलमती सुन्न नाम ॥ ९ ॥ जिण लब्धि प्रज्ञावे उनी जाय आकाश । ते जंघा विज्ञाचारण लब्धि प्रकाश । जसु वचन सरापै खि एमें खेरुथाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥ १० ॥ सज्ज सूखम वादरदेखै लोकालोक । ते केवल लब्धी वारमियै सज्ज थोक । गणधर पद लहीयै तेरम लब्धि प्रमाण । चवदम लब्धे करी चव दै पुरव जाण ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पांमं पनरमी लब्धि । सोलम सु

खदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि । बलदेव तणो पद लहिये सतरमी सार । अ  
 हारमि आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत खीरै मेल्या जेह  
 सवाद । एहवी लहै वाणी जगणीसम परसाद । जणीयो नविझूलै सुत्र  
 अरथ सुविचार । ते कुष्टिक बुद्धी वीशम लवधि विचार ॥ १३ ॥ एकै प  
 द जणीयै आवै पद लख कोम । इक वीशमी लवधी पायाणु सारणी  
 जोम । एकै अरथै करी उपजै अरथ अनेक । बावीसम कहीयै बीज  
 बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ कपूर झुवै अति ऊजलो  
 रे ( एचाल ) ॥ ❀ ॥ सोलह देश तणी सहीरे । दाहक सगति वखाण ।  
 तेह लवधि तेवीसमीरे । तेजोलेश्या जाण ॥ १५ ॥ ( चतुरनर सुण ज्यो ए  
 सुविचार ) । आगममें अधिकार । वारू लवधि विचार ( च० ) ॥ चवदह  
 पूरव धर मुनिवरूरे । उपजन्ता संदेह । रूप नवो रचि मोकलै रे । लवधि  
 आहारक एह ( च० ) ॥ १६ ॥ तेजो लेश्या अगनिने रे । उपशम वा जल  
 धार । मोटी लवधि पचवीश मीरे । शीतो लेश्या जाण ( च० ) ॥ १७ ॥  
 जेण सगति सुं विकुरवैरे । विविध प्रकारै रूप । सदगुरु कहै ठावीसमीरे ।  
 वेक्रिय लवधि अनूप ( च० ) ॥ १८ ॥ एकणपात्रे आंदमीरे । जीमावै केई  
 लाख । तेह अक्षीण महाणसीरे । सत्तावीसमी साख ( च० ) ॥ १९ ॥  
 चूरै सेन चक्कीसनीरे । संघादिकनें काम । तेह पुलाक लवधि कहीरे ।  
 अठवीशमी नाम ( च० ) ॥ २० ॥ तेज शीत लेश्या बिझुरे । तेम पुलाक  
 विचार । जगवती सुत्रमें जाषियो रे । ए त्रिझंनो अधिकार ( च० ) ॥  
 २१ ॥ पन्नवणा आहारनीरे । कलपसुत्र गणधार । तीन तीन इक २ मिली  
 रे । वारू आठ विचार ( च० ) ॥ २२ ॥ प्रण व्याकरणे कही रे । बाकी  
 लवधां वीश । सांजलतां सुख ऊपजैरे । दोलत झुवै निशि दीश ( च० )  
 २४ ॥ ❀ ॥ ( कलशः ) ॥ ❀ ॥ संवत्त सतरैसै ठवीशै मेरु तेरस दिन  
 चलै । श्रीनगर सुख कर लूणकरणसर आदि जिन सुपसावलै । वाच  
 ना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए । श्रीधर्म वर्द्धन स्तवन ज  
 णतां प्रगट ग्यान प्रकाश ए ॥ २५ ॥ इति ( २८ ) लब्धि स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठईस लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( शुभदिन ) गुरुके पास । २८ लब्धि तप ग्रहण करै । अ

नुक्रमसे २८ उपवास करै । स्तवन सुणै । ( जिस दिन ) जो लब्धी को उपवास होय । उसी लब्धी के नामको गुणनो करै । तप पूर्ण होनेसे । शक्ति माफक उद्यापन करै । यह तपस्या करनेसे निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय । सदा आनंद रहे ॥ ❀ इति २८ लब्धि तप विधिः ॥ ❀

॥ ❀ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिपि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ वैकर जोमी ताम ( एचाल ) । जिनवर श्री ब्रधमान । चरम तीर्थकर । ग्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्रीगणधार । सूरि शिरोमणी । नमतां नवनिधि संपदाए ॥ १ ॥ चवदै पूरव नाम । सुत्रै जूजूवा । वीरजिणंदे जापीयाए ॥ तेहिब सुगुरुपसाय । वरणवस्युं इहां । आगममें जिम उपदिस्साए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १ । दूजो अत्रायणी २ । वीर्यवाद ३ तीजो नमुंए ॥ अस्ति नास्ति प्रवाद ४ । सत्ता जाणी यै । नारगरयण ५ पंचम गिणुंए ॥ ३ ॥ ठगे सत्यप्रवाद ६ । सत्तम आतम ७ । कर्म प्रवाद अठम गिणोए ८ ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९ । नाम नवम । विद्या प्रवाद दशमो कह्योए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११ । प्राणायु वारमो १२ । क्रिया विलास तेरम जणोए १३ ॥ बिडुसार इण नाम १४ । चवदै एकहा । सात्र थकी में संग्रहाए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ) श्रीविमलाचल सिरतिलो ( एदेशी ) ॥ उत्पादपूर्वसोहामणो । कोटी पद परिमाण । पटजाव प्रगटत्रै ते जिहां । त्रिपदी जायविनांण ॥ १ ॥ सर्वद्रव्य पर्यय तणो । जीव विशेष प्रमाण । दूजो पूर्व अत्रायणी । त्रिन्नु लख पद जांण ॥ २ ॥ पदलख सत्तर जेहनी । संख्या परगट एह । वीर्य प्रवल ता जीवनी । जापी तीजै तेह ॥ ३ ॥ चौथे पूर्वे जे कयो । अस्ति नास्ति प्रवाद । पदसंख्या साठ लाखनी । सत्त जंगी स्यादाद ॥ ४ ॥ ग्यानप्रवाद पद पंचमो । सुत्रे आण्यो जोरु । मत्पादिक पण जेदसुं । पद संख्या इक कोमि ॥ ५ ॥ सत्य प्रवाद ठगेकज्जं । जापुं सत्य स्वरूप । संख्यापद इग कोमनी । जापी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां । आतमद्रव्य सुजाव । ठहीस पद कोरु जेहना । सुत्रेआण्यां जाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवाद तणो हिबै । प्रगट पणुं अधिकार । लाख असी पद जेहना । कोडी इग

निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कज्जं हिवै । नामें प्रत्याख्यान । लाख चौराशी  
 जेहवा । पद संख्याचित्त आन ॥ ९ ॥ अतिसय गुणसंयुत जणी । साधन  
 साध्य निदांन । विद्या अनुपम सातशै । कोमी दस लाख जान ॥ १० ॥  
 कल्याण नाम इग्यारमो । ठवीस कोम प्रमाण । ज्योतिष शास्त्र विचारणा  
 चौबीह देवकल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद वारमो । ढप्पन्न लाख इग कोम ।  
 प्राण निरोधन जे क्रिया । शास्त्रै आण्यो जोम ॥ १२ ॥ ख्याधिक्यादिक जे  
 क्रीया । ठंद क्रिया सुविसाल । पद संख्या नव कोमनी । तेरमी किरिया  
 विशाल ॥ १३ ॥ लोकसार विंडु चवदमो । नामें अरथ निहाल । पद सं  
 ख्या इग कोडनी । लाख पचवीश संजाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण  
 जणी । संख्या गज परिमाण । सोलसहस अरु तीनशै । उर तयांसी जाण  
 ॥ १५ ॥ पूरव संख्या एकही । गुणमालार्थी देख । आगै बुधजन सोध  
 ज्यो । वाकी देशविशेष ॥ (ढाल ३) वीरजिणेंसर उपदिशै (ए चाल) ॥ सुत्रे  
 गुंथै गणधरा । अरथे अरिहंत जाषैरे । ते श्रुत ग्यान नमुं सदा । पाप तिमर  
 जिमनासैरे ॥ १ ॥ (वाणीरे जिनंदनी ) सुणज्यो चित हित आणीरे ।  
 तत्व रमणता अनुसरै । संपूरण गुण खाणीरे (वा०) ॥ २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी । ग्यान जगत उरधारीरे । विधि संयुत जिन मंदिरै । प्रभुमुखपा  
 श जुहारीरे (वा०) ॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी । श्रीश्रुत ग्यान निधा  
 नोरे । सदगुरु चरण नमी करी । संवर जोग प्रधानोरे (वा०) ॥ ४ ॥ अ  
 कृत लेई ऊजला । गुंहली सुंदर कीजैरे । नांण दंसण चारित्रनी । ढिगली  
 तीन धरीजैरे (वा०) ॥ ५ ॥ चवद पूर्व ब्रत इणपरै । सुगुरु संजोगै लेईरे ।  
 विधिसुं पुस्तक पूजीयै । चित अति आदर देईरे ॥ ६ ॥ (वां०) इम तप सं  
 पूरण थयां । ऊजमणो हिव कीजैरे । घरसारू धनखरचनें । नर नव लाहो  
 लीजैरे (वा०) ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा । पूरव नाम प्रमाणोरे । नवकर  
 वाली कोथली । लेखण ठवणी जाणोरे ॥ ८ ॥ देहरै देवजुहारनें । आरती मं  
 गल कीजैरे । सनात्र पूजा बलि साचवी । तत्वसुधारस पीजैरे ॥ ९ ॥  
 (वा०) इण पर तप आराधतां । इरगति कारण ठेदैरे । चवदह रज्जु  
 सिरोमणि । जीव अकृत्य गतिवैदैरे ॥ १० ॥ (वा०) तप आराधन विध  
 जणी । आगेम वचने जोईरे । नवियण पिणतुमे आदरो । ज्युं नव जम

ए न होईरे ॥११॥ (बा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गच्छ खरतर तपै  
रविजिम क्रांतए । सौजाग्य सूरि मुण्डि इण पर कसो पूर्ववत्तंत ए । सं  
वत अगारै वरश विनू नयर श्री बालूचरै । ए स्तवन नणतां श्रवणसुणता  
सयल मन वंठित फलै ॥१२॥ ❀ इति चवदै पूर्व स्तवनं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) पूरव तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके (१४) उपवास करै । (जिस दिन  
जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसे (१०००) गुणनो करै ।  
स्तवन सुणै । इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और विधि सर्व लिखी है ।  
उसी मुजव विवेकी जीव गुरुसें समझके करै । यह तपस्याके करनेसे  
ज्ञाना वरणादि कर्मका क्योपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय होय ॥❀॥  
इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सासण देवी सारदा । बांणी सुधारस वे  
ल । बालक हितजणी वगसियै । सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जि  
नपूजतां । मनलहि सुजपरिणाम । तप तिलके फल पामिये । दवदंती गु  
णधाम ॥ २ ॥ ❀ (ढाल) ॥ ❀ ॥ वीर जिणेश्वर उपदिसै (एदेशी) ॥  
कमला जिम कुंमण पुरै । जुज बल नरपतिजीमोरे । पदमनी पदम सु  
वासना । श्वेतगज स्वमैनीमोरे (पदम०) ॥ २ ॥ परतख्य फल ए पुन्य  
ना । प्रसवीसुता पूरै माझैरे । दवदंती नाम दीपतो । गुणमणि बुद्धि प्रका  
शैरे (प०) ॥ ३ ॥ चौसठ कला विचक्षण । रूप गुणै करी रंजारे ।  
देव गुरु धर्म दीपावती । व्रतधारी दृढ वंजारे (प०) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजै  
श्रीसांतीनी । देवे दीधी त्रिकाखो रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वर  
मालैरे । (पदमनी०) ॥ ४ ॥ उवऊया धिपश्री निपदनो । नल लिखी  
यो निलाँमैरे । आनन्दसुं पंथआवतां । पूरव पुन्य उवामै रे । (प०) ॥ ५ ॥  
मझमरयणी तमजरी । मधु ख कुंत इहां वनमैरे । मणि जाले तेज दिनमणी ।  
जाग्रत देखी अहो मनमैरे (प०) ॥ ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै । पूठियै  
एह प्रसन्नोरे । कर्मवलै मुनि आवीपा । परीसह जीत मदन्नैरे (प०) ॥ ७ ॥



पंच जीत पंच पालता । टालता डस्सह सबलारे । संजम शुध सं  
 जालता । उद्यम शिव सुख कमलारे ( प० ) ॥ ७ ॥ ( दूहा ) मणि तेजें  
 मुनि तरुठये । रथथकी स्त्री भरतार । देवै तीन प्रदक्षिणा । विधसुं चरण जुहार  
 ॥ ९ ॥ देशना सुण पावन थया । ग्यान सुधारस पाय । को तप परजव तिल  
 कहै । कहियै श्रीमुनिराय ॥ १० ॥ ( ढाल ) भरथनृपनावसुं ए ( एचाल ॥  
 मधुर स्वरै मुनिवर कहैए । नाणी गुरु सुपसाय । दीपक सज्ज लोकनाए ॥  
 कर्म सुजासुज परजवै ए । इह जव फल निपजाय । करम गति बांकमीए  
 ॥ ११ ॥ उहि नाण जव प्रांगनो ए । नृप सुणें निरमल नाव । समकित सा  
 हीयो ए ॥ धर्मवतीको नृप बधु ए । जांएयोहे तत्व प्रस्ताव । साची जिन वा  
 चनाए ॥ १२ ॥ चौथ प्रमुख नृप चूपसुं ए । किरिया शुद्ध करी एह । जलै  
 चित्त नावसुं ए ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए । चाढै जिन चौबीस । रयण  
 कंचण जड्याए ॥ १३ ॥ तिलक २ सैं पांमियो ए । समकित एह सती  
 स । जनम सफलो गिएँ ए ॥ जगवन तपविधि जाबीयै ए । नल कहै बोध  
 वरीस । पीहर षटकायनाए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतनाए । षट् उपवास क  
 हीस । त्री चौ बीहारस्युं ए ॥ चौथ दोय जिन वीरनाए । अजिता दिक् वा  
 बीस । आणा गुरु शिर वहीए ॥ १५ ॥ पोषध तीश त्रीनैं थयाए । पूजन ति  
 लक चढाय । तारक जगदीसनैं ए । उद्यापन संघ जक्तिसुं ए । जन्म सफ  
 ल नल राय । सूधैमन साधीयै ए ॥ १६ ॥ सुण वांणी सम कित ग्रहैए ।  
 पयप्रणमी गुरु वीर । चित्त उमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए । थायै  
 चरम शरीर । मूल सुख शाशतो ए ॥ १७ ॥ कलशः ॥ श्रीशांतिदाता विज  
 गत्राता जविक ध्याता सुखकरा । इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजश  
 बांध्यो शिव वरां । आगमे आखै सुरीय साखै सगुरु नाथै सुण यथा । सुद्ध  
 ध्यावै जविक नावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ ॥ ॐ ॥  
 इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तिलक तपस्या विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुभ दिन गुरुके पास । तिलक तपस्या ग्रहण करकै । तीश  
 ( ३० ) उपवास करै । ( प्रथम ) श्रीकृष्णदेव स्वामीके ( ६ ) ठ उप  
 वास करै ( जब ) ॥ ॐ ॥ श्रीकृष्णदेव स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥ ॐ ॥

॥५॥ १ ॥ श्रीकृष्ण देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥५॥

इस पदको ( १००० ) गुणनो करें । फेर श्रीमहावीर स्वामी के ( १ ) दो उपवास करें । ( जब ) ॥५॥ ॥५॥

१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥५॥

इस पदको ( १००० ) गुणनो करें । और श्रीअजितनाथ स्वामीको आदलेकें ( ११ ) वाइस जगवंतके ( ११ ) उपवास करें जब

१ ॥ श्रीअजितनाथ स्वामी सर्वज्ञाय नमः

इसी अनुक्रमसें वाइस जगवंतको गुणनो करें । ( जिस दिन ) जो महा राजके नाम को उपवास होय । उसी नामको १००० ) गुणनो करें । और सर्व विधि स्तवनमें लिखी है । उसी मुजब करें ॥ ५॥

इति तिलक तपस्या विधिः ॥ ॥५॥ ॥५॥

॥ ५॥ अथ शोलीयैको स्तवन लि० ॥ ५॥

॥ ५॥ वीर जिनेसर चापीयोरे लाल । सज्ज व्रतमें सिर ताज ( जयि प्राणीरे ) । कपाय गंजन तप आदरो रेला । इण्थी पातिक जाय ( ज० वी० ॥ १॥ कोम वरप तप आदरेरे लाल । क्रोध गमाय फलतास ( ज० ) । मान करें जे प्राणिवारे लाल । ते जगमें न सुहाय ( ज० ) ॥ २॥ व्रतमें माया आदरीरे लाल । नी पणो पायो महिनाथ ( ज० ) रूप परावन कीया घणारेला । आगाट जूति गणिका साथ ( ज० ३ वी० ) चार कपाय नै मूत्रगारे लाल । उत्तम सोलै जेद ( ज० ) इम जब १ ज मनो धकोर लाल । जीव पामें यज्ज सेद ( ज० ४ वी० ) एकाग्रण व्रत जे करै लाल । लाल गरस डुग हाणरे ( ज० ) नीवी मत दूजो कधारे लाल । एघारो जिन वर पाण ( ज० ५ ) आंखिलनो फल यज्ज फसोरे ला ल । उरलै लवधि अपार ( ज० ) उपवास करतां जायसुं रे लाल । पामें नवनो पार ( ज० वी० ६ ) इम दिन शोलै तप करैरे लाल । पूरण एघत माय ( ज० ) देव गुरु पूजा करैरे लाल । तिण्थी पातिक जाय ( ज० ७ ) ए तप आदरपी करै रे लाल । मन यंजित फल भाय ( ज० ) नर सुर रि दि पिण नोगैरे लाल । निजै मुगति जाय ( ज० वी० ) ॥ ८॥

इति १६ कपाय गंजन स्तवन संपूर्णम् ॥५॥ ॥५॥ ॥५॥

## ॥ ❀ ॥ अथ शोलियै तपकी विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्रोध १ । मान २ । माया ३ । लोभ ४ । ( यह ४ कषाय में ) । अनंतान बंधियो १ । अप्रत्याख्यानियो २ । प्रत्याख्यानियो ३ । संजलणो ४ । ( इस माफक ) एकेक कषायके चार चार जेद करनेसे १६ जेद ज्ञय (यह) १६ जेद कषायके दूर करने कों । प्रथम एकाशणो १ । निवी २ । आंबिल ३ । उपवास ४ । इसी अनुक्रमसे १६ दिन तप करै । स्तवन सुणें । तप पूर्ण होणेंसे । यथाशक्ति उद्यापन करै ॥ ❀ ॥  
इति शोलिया तपविधिः ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ (४५) पेंतालीस आगम तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुद्ध दिन गुरूके पास पेंतालीस आगम तप ग्रहण करै । १ दूज । ५ पांचम । ११ इग्यारस । ( इत्यादि ) ग्यान तिथिकै दिन । अनुक्रम से उपवास (वा) एकाशणा करै । (जिस दिन) जो आगमको तप होय । उसी आगमको गुणनो करै । सिद्धांत लिखावै । सिद्धांत सुणें । पढने वालुकों सहाज्य करै । अपने शक्तिमाफक । सर्व ठिकाणें ज्ञानकी वृद्धि करे । (प्रणमं श्रीगुरुपाय०) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणें । ऐसे (४५) दिन तपस्या पूर्ण होनेसे । पेंतालीस (४५) आगम की पूजा करावै । मंदर पोशालमें ग्यानका उपगरण चढावै । (इत्यादि) अत्यन्त खुशी होके (४५) आगमका आराधन करै । यह तपस्या के करनेसे । मूर्खपणा दूर होके । शुद्ध आत्म ज्ञानकी प्राप्ति होय ॥ ❀ ॥  
अब (४५) आगमके नामलिखते हैं ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ प्रथम इग्यारै अंगको गुणनो ॥ ❀ ॥

- १ ॥ श्रीआचाराङ्गजी सुत्राय नमः ॥ १ ॥
- २ ॥ श्रीसुयगङ्गाङ्ग जी सुत्राय नमः ॥ २ ॥
- ३ ॥ श्रीठाणाङ्ग जी सुत्राय नमः ॥ ३ ॥
- ४ ॥ श्रीसमवायाङ्गजी सुत्राय नमः ॥ ४ ॥
- ५ ॥ श्रीनगवतीजी सुत्राय नमः ॥ ५ ॥
- ६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सुत्राय नमः ॥ ६ ॥

- ७ ॥ श्रीउपाशग दसाजी सुत्राय नमः ॥ ७ ॥  
 ८ ॥ श्रीअन्तगम दसाजी सुत्राय नमः ॥ ८ ॥  
 ९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाइजी सुत्राय नमः ॥ ९ ॥  
 १० ॥ श्रीप्रश्नव्याकरणजी सुत्राय नमः ॥ १० ॥  
 ११ ॥ श्रीविपाकजी सुत्राय नमः ॥ ११ ॥

॥\*॥ अथ बारै उपांग नामः ॥\*॥

- १ ॥ श्रीउववाइजी सुत्राय नमः ॥ १२ ॥  
 २ ॥ श्रीरायपसेणीजी सुत्राय नमः ॥ १३ ॥  
 ३ ॥ श्रीजीवाग्निगमजी सुत्राय नमः ॥ १४ ॥  
 ४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सुत्राय नमः ॥ १५ ॥  
 ५ ॥ श्रीजंबुद्वीप पन्नतीजी सुत्राय नमः ॥ १६ ॥  
 ६ ॥ श्रीचंदपन्नतीजी सुत्राय नमः ॥ १७ ॥  
 ७ ॥ श्रीसूरपन्नतीजी सुत्राय नमः ॥ १८ ॥  
 ८ ॥ श्रीकप्पियाजी सुत्राय नमः ॥ १९ ॥  
 ९ ॥ श्रीकप्पवमंसियाजी सुत्राय नमः ॥ २० ॥  
 १० ॥ श्रीपुप्फियाजी सुत्राय नमः ॥ २१ ॥  
 ११ ॥ श्रीपुप्फचूलियाजी सुत्राय नमः ॥ २२ ॥  
 १२ ॥ श्रीबन्हीदसाजी सुत्राय नमः ॥ २३ ॥

॥\*॥ अथ ४ छेदको गुणनो ॥\*॥

- १ ॥ श्रीव्यवहार वेद सुत्राय नमः ॥ २४ ॥  
 २ ॥ श्रीवृहत्कल्पजी सुत्राय नमः ॥ २५ ॥  
 ३ ॥ श्रीदसाश्रुतस्कंधजी सुत्राय नमः ॥ २६ ॥  
 ४ ॥ श्रीनिशीथजी सुत्राय नमः ॥ २७ ॥  
 ५ ॥ श्रीमहानिशीथजी सुत्राय नमः ॥ २८ ॥  
 ६ ॥ श्रीजीतकल्पजी सुत्राय नमः ॥ २९ ॥

॥\*॥ अथ दश पयन्ना नामः ॥\*॥

- १ ॥ श्रीचोशरण पयन्नाजी सुत्राय नमः ॥

- १ ॥ श्रीसंधारपयन्नाजी सुत्राय नमः ॥ ३१ ॥  
 ३ ॥ श्रीतंडुलपयन्नाजी सुत्राय नमः ॥ ३२ ॥  
 ४ ॥ श्रीचंदाविज्जिया सुत्राय नमः ॥ ३३ ॥  
 ५ ॥ श्रीगणविज्जिया सुत्राय नमः ॥ ३४ ॥  
 ६ ॥ श्रीदेवविज्जिया सुत्राय नमः ॥ ३५ ॥  
 ७ ॥ श्रीवीरथुवोजी सुत्राय नमः ॥ ३६ ॥  
 ८ ॥ श्रीगङ्गाचारजी सुत्राय नमः ॥ ३७ ॥  
 ९ ॥ श्रीजोतिष्करंडजी सुत्राय नमः ॥ ३८ ॥  
 १० ॥ श्रीमहापञ्चक्खाणजी सुत्राय नमः ॥ ३९ ॥

### ॥ ❀ ॥ मूलसुत्रजी का नामको गुणनो ॥ ❀ ॥

- १ ॥ श्रीआवस्यकजी सुत्राय नमः ॥ ४० ॥  
 २ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सुत्राय नमः ॥ ४१ ॥  
 ३ ॥ श्रीउघनिर्युक्तिजी सुत्राय नमः ॥ ४२ ॥  
 ४ ॥ श्रीदशमीकालकजी सुत्राय नमः ॥ ४३ ॥  
 १ ॥ श्रीअनुयोगद्वारजी सुत्राय नमः ॥ ४४ ॥  
 २ ॥ श्रीनंदीसुत्रजी सुत्राय नमः ॥ ४५ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुक्ल दिन गुरूके पाश (११) गणधर तप ग्रहण करै (११) दिन उपवाश ( वा ) एकाशणा करै । ( जिस दिन ) जोगणधर महाराज को तप होय । उसी नामको ( १००० ) गुणनो करै ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ (११) गणधरोंका नाम लिखते हैं ॥ ❀ ॥

- १ ॥ श्रीइंद्रभूति गणधराय नमः ॥  
 २ ॥ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ॥  
 ३ ॥ श्रीवायुभूति गणधराय नमः ॥  
 ४ ॥ श्रीव्यक्तभूति गणधराय नमः ॥  
 ५ ॥ श्रीसुधर्मास्वामी गणधराय नमः ॥  
 ६ ॥ श्रीमंजित स्वामी गणधराय नमः ॥

७ ॥ श्रीमोक्षपुत्रजी गणधराय नमः ॥

८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ॥

९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ॥

१० ॥ श्रीमेतार्यजी गणधराय नमः ॥

११ ॥ श्रीप्रज्ञवजी गणधराय नमः ।

॥ यह ( ११ ) गणधर । जगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पास अर्थ शुणकै । सर्व सुत्रके रचना करने वाले जए । ( इसी से ) सर्व जग्यजी व । परम मङ्गल जानकै । यह तपस्या करै । शुद्ध जावसै गणधरपद आराधन करै । गोतमरास सुणै । पूर्ण होनैसै । गणधर महाराजकी पूजा करै । आचार्यादिककी भक्ति करै । ( यथाशक्ति ) परमात्म भोजनसै सा हमी वञ्चल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकार तपविधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुद्ध दिन गुरुके पास नवकार तप ग्रहण करै । जिस पदका जितना हरफ होय । इतनाई उपवास करै । उसी पदको ( १००० ) गुणनो करै । ( सो लिखते हैं ) ॥

१ ॥ एमो अरिहंताणं । उपवास ॥ ७ ॥

२ ॥ एमो सिद्धाणं । उपवास ॥ ५ ॥

३ ॥ एमो आयरियाणं । उपवास ॥ ७ ॥

४ ॥ एमो उवप्पायाणं । उपवास ॥ ७ ॥

५ ॥ एमो लोए सवसाहूणं । उपवास ॥ ९ ॥

६ ॥ एसो पंच एमुक्कारो । उपवास ॥ ८ ॥

७ ॥ सवपावप्पणासणो । उपवास ॥ ८ ॥

८ ॥ मङ्गलाणंच सव्वेसिं । उपवास ॥ ८ ॥

९ ॥ पढमंहुवइ मङ्गलं । उपवास ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसै नवकार मंत्रका । ६८ उपवास करै । ( किंक्रपत्तर रे अयाण० ) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्हित स्तवन सुणै ( सो ) पूर्वे लिख्यो है । तप पूर्ण होनैसै । यथाशक्ति नवपदको उठव करै । ( यह ) नवकार मंत्र १४ पूर्वको सार भूत है । जो जग्यजीव शुद्धजावसै सेवन

करेंगे ( सो ) अनेक सुखकों प्राप्त होंगे । इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥ ❀ ॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै ( सो ) विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रथम ) ५ साधिया करै । ( नमंत सामंत ० ) यह गाथा पढकै । शक्ति माफक ग्यान पूजा करै । इरियावही पम्किमें । एकलोगस्स को कानसग करै । ( पारकै ) प्रगट लोगस्स कहै । नीचा वैठकै । मुहपत्ती पम्किलेहै । दो वांदणा देवै । स्थापनाजीकों खमासमण देई ( न गवन् ) अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह । ( इसो कहकै ) चैत्य वंदन करै । एमोत्थुणं ( इत्यादि ) । अरिहंत चेइयाणं ( अन्नत्थुणं ) कहकै ( ४ ) थुई कहै । चोथीगाथा कहकै । नीचावैठै । एमोत्थुणं कहै । ( उन्ना होकै ) ( श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि कानसगं ) । अनत्थु कहकै १ लोगस्सको कानसग करै ( पारकै ) नमोऽर्हत्तु सिद्धा । कहकै ॥ श्रीमते शांतिनाथाय । नमः शांति विधायिने । खैलोक्य स्यामराधीस । मुकुटान्यर्चितां ह्ये ॥ १ ॥ यह थुई कहै ( शांतिदेवता आराधनार्थं करेमि कानसगं ) अनत्थुण कहै ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान् । शांतिं दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ १ ॥ यह थुई कहै । पीठे श्रुतदेवता । क्षेत्र देवता । नुवन देवताको कानसग अनुक्रम सैं करै । एक एक नवकारको कानसग करकै । अपणी २ थुई कहै । पीठे ( शासन देवताको कानसग १ नवकारको करै ॥ या पाति शासनं जैनं । सद्य प्रत्यूह नाशनी । सान्निप्रेत समृध्यर्थ । नूयाञ्छासनदेवता ॥ १ ॥ यह थुई कहकै ( समस्त वेयावृत्तिकर आराधनार्थं करेमि कानसगं ) अनत्थुण एक नवकारको कानसग करै । ( पारकै ) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः । जिनशासन संस्थिताः । देवान् देव्य स्तदन्येपि । संघरक्षत्वपायतः ॥ १ ॥ यह थुई कहकै । नीचावैसै । नमोत्थुणं कहकै । जयवीराराय तांइ । चैत्यवंदन करै । खमासमण देकै । नगवन् ( अमुक तप गहणत्थं करेमि कानसगं ) एक लोगस्सको कानसग करै ( पारकै ) लोगस्स कहै । खमासमण देकै । ३ नवकार गुणें । फेर खमासमण देकै ( इच्छकार नगवन् ( अमुक तप गहण दंभक उच्चरावो जी ) गुरु कहै उच्चरावेमो ( । ऐसा कहै ॥ अहण्हं

जंते । तुह्माणं समीवे । अमुकतवं ज्वसंपज्जत्ताणं विहरामि । ( तंजहा ) दव्वं  
 उ । खित्तं । कालं । जावणं । दव्वणं अमुकतवं । खित्तणं इत्थंवाअन्नत्थं  
 वा । कालवणं जावपरिमाणं । जावणं जावगहेणं नगहिज्जामि । वल्लेणं न  
 वल्लिज्जामि । सन्निवाणं नन्नविज्जामि । जाव अण्णंवा । केणइ रोगायंकादि प  
 रिणामवसेण । एसो मे परिणमोनपरिवज्जइ । तावमे एसतवो । ( अन्नत्थ ) राया  
 ज्ञियोगेणं । गणान्नियो गेणं । वल्लान्नियोगेणं देवान्नियोगेणं । गुरुनिगहेणं । वि  
 त्तीकंतारेणं । अन्नत्थणां जोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरांगारेणं । सव्वसमाहि  
 वत्तियागारेणं । बोसरामि ॥ जोतप ग्रहणं करै उसी तपका नाम लेके । गुरुके  
 पास ३ वेर यह पाठ सुणें ॥ गुरु न हो ( तो ) थापनाचार्यजी समझै । तीन  
 वर यह पाठ पढै ॥ ( पीठे गुरु कहै ) हत्थेणं । सुत्तेणं । अत्थेणं । तड्ढ  
 एणं । सम्मं धारिणीयं । गुरुगुणेहिं बुद्धाहि नित्यारगपारगाहोहि । ( एसो गुरु  
 कहै ) पीठे खमासमण देके ( गुरु मुखै ) पच्चख्खाण करै । ( अथवा )  
 गुरु न हो ( तो ) आपमुखै करै । इति सर्व तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम् ॥

॥ \* ॥ अथ सर्व तप पारण विधि लि० ॥ \* ॥

॥ ॐ प्रथमं ग्यानं पूजा करके । इरियावही पम्किमें । ( अमुक तप  
 पारिवा० मुहंपत्ती पम्किलेहैं । १ बांदणा देवै । इच्चाकारेण संदिसह  
 जगवन् तुप्पेअहं अमुक तप पारावेह ( गुरु कहै पारावेमो ) इच्चांमि  
 खमासमणो० । इच्चाकारेण संदिसह जगवन् । अमुक तप निख्खवणत्थं  
 काउसग्गं करावेह । ( गुरु कहै करावेमो ) पठि देववंदन करके । अमुकतप  
 पारणार्थं करेमि काउसग्गं । अन्नत्थु कहै । १२ नवकारको कावसग्ग करै ।  
 स्तुति गाथा कहै । पीठे एमोत्थुणं कहै । ( बैठकै ) जगवन् अमुक तप  
 करतां । अविधि आसातनायें करी । जो दूपण लागो होय । सोमन वचन  
 कायायें करी मिज्जामि डकमं । ( और ) ग्यान । जक्ति, द्रव्यसे, जावसैं,  
 किया होय ( सो ) प्रमाण फलदायक होजो । ( गुरु कहै नित्यारगपार  
 गाहोह ) । पीठे । पच्चख्खाण करै ( अमुक तप आलोचण निमित्तं करे  
 मि काउसग्गं ) अन्नत्थु कहै । ४ लोगस्सको काउसग्ग करै । प्रगट लो  
 गस्स कहै । पठि उपगारण पात्र जतपानादिकसैं साधु जक्ति करै । अपनैं  
 शक्ति माफक । जैन विद्याज्यास कराणें वाले । विद्यागुरुकी जक्ति करै ।



साहमी बल्ल करै । पहरावणी करै । पीठे जाचकांको दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि संपूरणम् ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥❀॥ अथ सूतक विचार लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ पुत्र जन्म होणेंसें १० दिन सूतक । पुत्री जन्म्यां दिन १२ सूतक । (और) जो स्त्रीकै पुत्र होय । उस स्त्रीकै एक मासको सूतक । पुत्र होते मरण पामें (तो) दिन १ सूतक ॥ परदेशे मृत्यु होइ (तो) दिन १ सूतक ॥ गाय । जैश । घोडी । सांढ । घर मांह व्यावै (तो) दिन १ सूतक । मरण जुवां कलेवर घर बाहर लेजाय । जहांतक सूतक । दाश दाशी अपनी नेष्टायें रहते । पुत्र पुत्रादिकका जन्म मरण हो (तो) दिन ३ सूतक ) और ) जितना महिनाको गर्भ गिरै । तितना दिन सूतक । (अब) कोईकै जन्म मरणका सूतक होणेंसें १२ दिन देवपूजा न करै । (जिसमें) मृतककै सूतकमें । घरका मूलकांधिया १० दिन देवपूजा न करै । नर घरका तीन दिन देव पूजा न करै । (और) मृतकनैं बूवा हो (तो) २४ पहर पडिक्कमण न करै (जो) सदाका अखंम नियम हो । ( तो ) समता आव रखके संवर पणामें रहै । पर मुखसें नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करै नहीं । स्थापना जी कै हाथ लगावै नहीं । और जो मृतक को बूवा न हो ( तो ) आठ पहर पडिक्कमण न करै ॥ जिसकै जब बच्चा होय । तब १५ दिन पीठै दूध पीणो कल्पै । गायकै बच्चा होय (तो) १७ दिन पीठै दूध पीणो कल्पै । बकरीको दूध दिन ८ पीठै पीणो कल्पै ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ ऋतुवंती स्त्री चारदिन जामादिकनैं न बूवै ॥

॥ २ ॥ चार दिन प्रतिक्रमण न करै ॥

॥ ३ ॥ पांचदिन देवपूजा न करै ॥

॥ ४ ॥ रोगादिकारणें तीन दिवश उपरांत कोईस्त्रीके

रक्त चलतादीसै जिसका विशेष दोष नहीं । सुध बिबेकसें पवित्र होकर दिन ५ पीठे थापना पुस्तक बूवै । जिन दर्शन करै । अग्रपूजा करै । परंतु । अंग पूजा न करै । साधुकों पमिलाजै । ऋतुवंती तपस्या करै सो तो सफल होय (परंतु) ऋतुदिनमें जिनपूजा, प्रतिक्रमणादिक, किया सफल न होय ॥ ऐसाचर्चरी ग्रंथमें कहाहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होय । उहां १२ दिन साधु  
आहार पाणी नवहरै ॥ सूतकवाले घरका जल अग्निसँ १२ दिन देव  
पूजा न करै ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ निशीथ सुत्रके १६ शोलमाउदेशामें जन्म मरण सूतक घर  
डुर्गठनीक कहाहै ॥ ✽ ॥ गायके मुत्रमें २४ पहरपीठै । नैशके मुत्रमें १६  
पहर पीठै । गामर, गधेडी, घोसीके, मुत्रमें ८ पहरपीठै । नरनारीके मुत्रमें  
चार पहर पीठै । समुच्चिम जीव उपजै ॥ ॥ ॥ ॥

( इत्यादि ) संक्षेप सतकका विचार इहां लिखा है । विशेष विचार  
शास्त्रांतरसँ जाणनां ॥ इति सतक विचार संपूर्णम् ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ॥ अथ दिनप्रतिश्रावक चवदै नियमका प्रमाण  
करै ( सो ) विचार लि० ॥ ॥

॥ ॥ सच्चित्त १ । द्रव्य २ । विगई ३ ॥ पाणहि ४ । तंबोल ५ ।  
वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ बाहण ८ । सयण ९ । विदेवण १० ॥ वंज ११ ।  
दिशि १२ । न्हाण १३ । जत्ते सु १४ । ( अर्थः ) ॥ श्रावक नितप्रति नि  
यम संजालै । दिनमें जो वस्तु अपने अंग खातै लगै । उसीका प्रमाण  
रक्खै । उपरांत त्याग करै । तहां प्रथम ( सच्चित्त वस्तुको परिमाण करै )  
मट्टी सर्व जाति । पाणी सर्व जाति । जल, अग्नि, वायु । वनस्पतीका जेदन  
जेदन । तरकारी सर्वजाति । फल सर्वजाति । परबल । तोरी । केला । इत्या  
दि सच्चित्तका परिमाण करै ॥ १ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ॥

॥ ✽ ॥ ( दूसरा द्रव्य परिमाण ) ॥ तहां धातु वस्तु की शली । ( तथा )  
अपणी आंगुली विनां । जो वस्तु मुखमें दीजै । सो सर्व द्रव्यकी गिण  
ती में आवै । नामांतर । स्वादांतर । स्वरूपांतर । परिणामांतर । द्रव्यांतर  
होणेंसँ द्रव्यांतर होइ । ( यथा ) गज्जं एक द्रव्य । तिसकी पतली रोटी । फी  
णां रोटी । बेढवा रोटी । वाटी । यह सर्व द्रव्य जूदा कहियै । ( इस प्रकारै )  
सर्व द्रव्य खाणैमें आवै । ज्ञात दालि । रोटी । मांमियो । पलेव । तरकारी  
सर्व जाति । पापम । खीचीया । लडू सर्व जाति । फिणी घेवर । हेसमी ।  
खाजा । ( इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करै ) इहां उत्कृष्ट द्रव्यको ना  
म ले रखे ( तो ) एकही द्रव्य कहियै । ( जैसें ) मेवैकी खीचडीका नाम

लेके रखे ( सो ) अनेक द्रव्य निष्पन्न है ( परंतु ) एक द्रव्य कहियै ।  
इति द्रव्य प्रमाण दुसरा नियमः ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तीसरा विगय परिमाण नियमः ) ॥ ❀ ॥ ( तहां ) दश विग  
यमें च्यार महाविगयका तो त्याग होताहै । ( और ६ विगय ) घृत १ । ते  
ल २ । मीठा ३ । दूध ४ । दही ५ । कमाह विगय ६ । धारणा प्रमाण रखै ।

॥ ❀ ॥ ( अथ चौथा पादत्राणनियमः । ) ॥ ❀ ॥ तहां । जूती । ख  
माऊ । मोजा । अपणा । इतना विराणा । ऐसैं दिन प्रतैं धारणाप्रमाण मो  
कलारख्वै ॥ इति पाणहि नियमः ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पांचमा तंबोल नियम मध्ये ) ॥ ❀ ॥ पांन ( तथा ) बीमा ।  
सुपारी । लवंग । इलायची । ठोटी, बनी । जायफल । जावंत्री प्रमुख सब  
स्वादिम वस्तु । किरयाणा प्रमुख सर्वजात धारणा प्रमाण रख्वै ॥

इति तंबोल नियमः ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ठठा वस्त्र नियम मध्ये ) ॥ ❀ ॥ पोसाक १ । तथा ४ । ठूठा  
वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रख्वै । पोसाक १ मध्ये । पघडी १ । जामो १ ।  
कमरबंधो १ । धोती १ । इकपटो उत्तरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक  
पोसाक कहियै । औसैं नही कर सकै ( तो ) ४० तथा ५० कपमा दि  
न मध्ये मोकला । पराया वस्त्र झूल चूकमें आवै ( तो ) जयणा ॥ ❀ ॥  
इति वस्त्र नियमः ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अथ सातमा फूल नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां गुलाब । चंपे  
ली । बेला । केवना । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजार । कमल  
( इत्यादि ) सर्व फूलका धारणा प्रमाणें परिमाण करै ॥ ❀ ॥

इति फूल नियमः ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आठमा वाहन नियमः ) ॥ ❀ ॥ तिहां रथ । गाम्नी । घुमव  
हिल । खमसल । कोच । पालकी । घोमा । हाथी । चोपाला स्याना ।  
( इत्यादिक ) सर्व थल वाहन जाती ॥ मोर पंखी । बतक । घुमदोम ।  
लचकार । मगर । पनसोई । पलवार । बजरा । ( इत्यादि ) सर्व नावजाति ।  
सर्व तिरता । फिरता । चरता । यह तीन प्रकारके वाहन धारणा प्रमाणें  
राखै ॥ ❀ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ शय्या नियमः ) ॥ ॐ ॥ तिहां पिलंग । खाट । तख  
त । चौकी । पद्म गद्दी । खुरसी । वनात । पद्मसुजनी । सेतुंजी । डलीचा ।  
चांदणी । सीतल पट्टी । सफ । चटाई सर्वजाति । दरखंतकी गलका । चम  
मैका । कांवला । मुखमल । कारचोपी ( इत्यादि ) धारणा प्रमाणें शय्या  
प्रमाण करै ॥ ॐ ॥ इति शय्यानियमः ए ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ दशमा विलेपननियमः ) ॥ ॐ ॥ तिहां । सरसोंका ।  
राईका । आठैका । तेल । फुलेल । सर्व जातिका । केशर । चंदन । कपूर ।  
कस्तूरी । रोली ( इत्यादि ) शरीर सुख वास्ते । ( तथा ) रोगादिकारणें  
जंघादिकका विलेपन फोमां ऊपरि मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन ( इ  
त्यादि ) अंगोपांगमें लगाणा ( सो विलेपन धारणा प्रमाणें परिमाण करै  
इति विलेपन नियमः १० ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ ब्रह्मचर्यनियमः ) ॥ ॐ ॥ तिहां रात्रिकों ( तथा ) दिन  
कों । सूईनोरैके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करै । स्वप्नकी, मन, वचनकी,  
जयणा ॥ ॐ ॥ इति ब्रह्मचर्य नियमः ॥ ११ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ दिशि नियमः ) ॥ ॐ ॥ तिहां । पूरव १ । पश्चिम २ ।  
उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैऋतकूण ६ । वायव्यकूण ७ । ईशान  
कूण ८ । अधोदिशि ९ । उर्ध्वदिशि १० । यह दश दिशिकों अपनै जा  
नैका प्रमाण करै । चिठी लिखणी । आदमी नेजणा । देशांतरकी चीठी  
वाचणी । तिसकी जयणा ॥ ॐ ॥ इति दिशि नियमः ) १२ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ तेरमा स्नान नियमः ) ॥ ॐ ॥ तिहां । आजदिन म  
ध्ये स्नान २ । तथा ४ । बेर मोकला । परंतु पाणीका तोल रखै ( तथा )  
घना प्रमुखका प्रमाण रखै । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करुं । अ  
धिक नदी ढोलुं ॥ ॐ ॥ इति स्नान नियमः १३ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अथ चौदमा ज्ञात नियमः ) ॥ ॐ ॥ दिनमध्ये ज्ञात सेर २  
तथा ४ । दो बेर ( तथा ) चारबेर खातें । उपरांत डविहार । ( तथा )  
चौविहार धारणा प्रमाणें रखै ( तथा ) दिनमध्ये जल पीणें में आ  
वै । तिसका प्रमाण रखै । तोलसैं तथा मापसैं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥  
इति चौदह नियम ज्ञापा ॥ १४ ॥ समाप्तम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनचुवन ( अथवा ) जिन प्रतिमा आगै शुद्ध सपे  
द बस्त्र पहिरकै । चंदन केशरको तिलक करै । चावल चाटै । पीठे । अ  
खंभ तंडुल मुठी ३ थाल मध्ये रखै । तिन ऊपर नालेर रोकनाणो  
धरै । तीन प्रदक्षिणा देकै । इरियावही पन्किमे । ( इच्छकार ० )  
सम्यक्त सामाई आरोहणार्थ चेइयाई वंदावेह ( गुरु कहै वंदावेमो )  
चैत्यवंदण करै । वाम पासै चावलांको साथियो करै । श्रीफल धरै ।  
पीठे गुरु वर्धमान विद्या अग्निमंत्रित श्रावक मस्तकै वास क्षेप करै ।  
वर्धमान स्तुतीसैं देववंदन करावै । पीठे सतरै थूईमें नवकार १ एकको का  
नुसग्न करै । पीठे शासन देवी निमत्तै लोगस्स ४ कानुसग्न करै । ( पार  
कै ) प्रगट लोगस्स कहै । पीठे नमस्कार ३ गुणकै । शक्रस्तव कहै ।  
नमोज्ञत् सिद्धा ० कहकै । वमो स्तवन कहै । पीठे जयवीराराय कहै ॥  
इति नंदी विधिः ॥ पीठे खमासमण देई । श्रुतसामायक । आरोहणार्थ  
कानुसग्नं करावेह ( गुरु कहै करावेमो ) पीठे सम्यक्त सामाई आरोपणा  
र्थ करेमि कानुसग्नं । च्यार ४ लोगस्सको कानुसग्न करै ( पारकै ) प्रग  
ट लोगस्स कहै । पीठे ३ वेर नवकार गुणकै । गुरुकै पास ३ वेर सम्यक्त  
दंभक उच्चरै ॥ ( गुरु ) पाठ बोलै । उरीकी मनमें धारणा रखै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( सुत्रं ) ( अहन्नं जंते ) तुह्माणं समीवे मिहत्तानं पन्किमा  
मि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । नोमेकप्पइ । अज्जप्पन्निइ अन्नतीत्थिएवा ।  
अन्नतीत्थि देवयाणिव । अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिव । वंदि  
त्तएवा । नमंसित्तएवा । पुब्बिं अणालित्तएणं आलवित्तएवा ( तेसिं ) असएणंवा ।  
पाएणंवा । खाइमंवा । साइमंवा दानंवा । अणप्पानंवा । तेसिं गंधमद्धाई पेसि  
नंवा । ( नन्नत्थ ) रायान्नियोगेणं । गणान्नियोगेणं । वलान्नियोगेणं । देवा  
न्नियोगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वित्ती कंतारेणं । तंचन्नविहं ( तंजहा ) दव्वउ ।  
खित्तउ । कालउ । जावउ । तत्थ ( दव्वउ ) दंसणदवाइ अहिगिच्च । ( खित्तउ )  
जाव जरह मप्पिमखंमे ( कालउ ) जावज्जीवाए । ( जावउ ) जाव ठलेणं  
न बल्लिज्जामि । जाव सन्निवाएणं नन्नविज्जामि । जाव केणइ उम्माइ वसेणं ।  
एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवमइ । तावमे एसो दंसणान्निग्गहो ।

अन्नत्थणा जोगेण । सहस्सागारेण । महत्तरागारेण । सवसमाहिवत्तिआ  
गारेण । वोसिरइ ॥ ( पीठे ) ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुकै  
पाश हाथमें लिखाकै । जिनप्रतिमाकों वाशक्षेप चढावै । नवकार पढतो  
थको ३ प्रदक्षिणा देकै ( देव गुरु प्रतें वांदै ) पीठे श्रुत सामायिक धिरी  
करणार्थे । सत्तावीश उत्साशप्रमाणें । एक लोगस्सको कान्तसंग करै । एक  
लोगस्स कहकै पारै । पीठे सम्यक्तरूपी कटपट्ट पायकै । अति आनंद  
सँ ऐसा अन्नग्रह वचन बोलै ॥ अरिहतो महदेवो । जावज्जीवं सुसाज्जणो  
गुरुणो । जिन पन्नतंतत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ पीठे गुरु धम्म  
देशना देवै । मिथ्यात्व वरजै । नित्य चैत्यवंदन इतनी बेर करुंगा । इतना  
नवकार नित्य गुणुंगा । केशरादि द्रव्य वर्षप्रतें इतना चढावुंगा । ग्यान, दर्शन  
चारित्रके, जक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचूंगा । शील व्रत, इतनी पध्दतिथि पा  
लुंगा । नित्य पञ्चक्खांण इस माफक करुंगा (दिनकों) नवकारस्यादि व्रत  
( तथा ) रात्रीकों चन्नविहार । त्रिविहार । डुविहार । प्रमुख । और । वा  
वीश अन्नक । वत्तीश अनंत काय । विदल प्रमुख सर्व ठेडुंगा । ( इत्या  
दि ) अपनी धारणा माफक सर्ववस्तुका प्रमाण । गुरुके सन्मुख करै ।  
१२ व्रत ग्रहण करै वारैव्रतकी टीप सुणें । जिसमें लिया ऊवा व्रतकों  
अतीचार नलगै । ऐसा उपियोग सदारक्खै ॥ इति सम्यक्कारोपण विधिः ॥ ॥ ॥

॥ \* ॥ प्राणातिपातव्रत दंमक लि० (१) ॥ \* ॥

॥ \* ॥ ( अहन्नं जंते । तुह्माणं समीवे । धूलग पाणाइ वायं संकप्पि  
उ निरवराहं पञ्चक्खामि । जावज्जीवाए । एग विहं । एगविहेणं ( अथवा )  
डुविहं । तिविहेणं । मण्णं । वायाए । काएणं । न करेमि । न कारवेमि ।  
तस्स जंते । पडिक्कमामि । निंदामि ॥ गरिहामि । अप्पाणं वोसरामि ॥  
यह पहला व्रतका दंमक वार ३ उचरावै ॥ १ ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ ( अहन्नं जंते । तुह्माणं समीवे । धूलगं मुसावायं । जीहा  
जेयाइहेउअं । कन्नालीयं । गोवालीयं । जूमालीयं । थापणमोसा । कूटसा  
खीयं । पंचविहं पञ्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसेए । दव्वउं । खित्तउं । काल  
उं । जावउं ॥ दव्वउणं मुसावायं । खित्तउणं इत्यवा अणत्थवा । कालउणं  
जावज्जीवाए । जावउणं जावगहेणं न गहिक्कामि । उल्लेणं न उल्लिज्जा

मि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवमइ । ताव अन्नि  
ग्गह । उविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा नोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्त  
रागारेणं । सब समाहिबत्तियागारेणं वोसरइ ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । अदिन्नादाणं । खत्तखण्णाइयं ।  
चोरं काकरं । रायनिग्गह कारयं । सच्चित्ता चित्तवत्थुविसयं पच्चक्खामि । द  
व्वत्तं । खित्तत्तं । कालत्तं । जावत्तं ॥ दव्वत्तं । अदिन्नादाणं । खित्तत्तं इत्थवा  
अणत्थवा । कालत्तं जावज्जीवं । जावत्तं जावगहेणं न गहिज्जामि ।  
व्वत्तं न व्वत्तज्जामि । अण्णेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परि  
वमइ । ताव अन्निग्गह । उविहं । तिविहेणं । अन्नत्थ ० सहस्सा ० मह  
त्त ० सब ० वोसरइ ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । उदारिय वैक्रियजेयं । धूळमेज्ज  
णं पच्चक्खामि । अहागहियजंगणं । दिव्वं । तिरित्थं । माणसियं । एगवि  
हं । एगविहेणं । पच्चक्खामि । दव्वत्तं । खित्तत्तं । कालत्तं । जावत्तं ॥ दव्व  
त्तं मेज्जणं । खित्तत्तं इत्थवा अणत्थवा । कालत्तं जावज्जीवाए । जाव  
त्तं । जावगहेणं न गहिज्जामि ० । व्वत्तं ० । अन्न ० । सह ० । मह ० ।  
सब ० वोसरइ ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे परिग्गहंपडुच्च । अपरिमियपरि  
ग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं । इच्छापरिमाणं उवसंप  
ज्जामि । अहागहियजंगणं । ( तंजहा ) दव्वत्तं । खित्तत्तं । कालत्तं । जा  
वत्तं । दव्वत्तं । नवविहपरिग्गहं । खित्तत्तं । इत्थवा अणत्थवा । कालत्तं  
णं जावज्जीवं । जावत्तं जावगहेणं । नगहिज्जामी ० । व्वत्तं ० । अन्न ० ।  
सह ० । मह ० । सब ० । वोसरइ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पच्चक्खामि ।  
( तंजहा ) दव्वत्तं । खित्तत्तं । कालत्तं । जावत्तं । दव्वत्तं । दिशिपरिमाणं ।  
खित्तत्तं धारणा परिमाणं । कालत्तं जावज्जीवाए । जावत्तं । जावगहेणं  
न गहिज्जामि । जाव व्वत्तं तावअन्निग्गह । अन्न ० । सह ० । मह ० । स  
ब ० । वोसरइ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । नोगोक्कनोगवयं ( नोयणत्तं ) अ

नंतकाय वज्रवीया रईनोयणाईं परिहरामि । ( कम्मओणं ) पत्तरस क  
म्मादाणाईं । इंगालकम्माइयाईं । वज्र सावक्काईं खरकम्माइयं । रायाच्चियो  
गंच परिहरामि । ( तंजहा ) दव्वठ । खित्तठ । कालठ । जावठ ॥ दव्वठणं  
जोगोवजोगवयं । खित्तठणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालठणं जावक्कीवाए ।  
जावठणं जावगहेणं नगहिज्जामि ० । ठ्लेणं ० अन्न ० । सह ० । मह ० ।  
सव्व ० वोसिरइ ॥ ७ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंमं पच्चक्खामि । अव  
प्पाण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदानं । प्रमाद चरितं । चउव्विहं अन्नत्थ  
दंमं । जहा सत्तीए परिहरामि ( तंजहा ) दव्वठ । खित्तठ । कालठ । जा  
वठ ॥ दव्वठणं अन्नत्थदंमं । खित्तठणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालठणं जा  
वक्कीवाए । जावठणं जावगहेणं नगहि ० ठ्लेणं ० अन्न ० सह ० मह ० ।  
सव्व ० । वोसिरइ ॥ ८ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( अहन्नं जंते ) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं ।  
देसावगासियं । अतिथिसंविज्जागवयं । जहा सत्तीए पम्मिवक्कामि । इच्चयं  
सम्मत्तमूलं । पंचाणुवयं । सत्तसिक्खवयं । ड्वालसव्विहं सावगधम्मं उव्वसं  
पक्कत्ताणं विहरामि ( तंजहा ) । दव्वठ ० अन्नत्थणाजोगेणं । सहस्सागारेणं ।  
महत्तरागारेणं । सव्वसमाहि वत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ पट्साख । ठे ठंडी ।  
च्यार आगार सहित पाळुं ए । १० । ११ । १२ ॥ ✽ ॥  
इति आवकको संक्षेप वारैव्रत उच्चावण विधिः ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ मुनिमालका लि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ कृपन् प्रमुख जिणपाय युग प्रणमुं । शिवसुख दायक मन उ  
ह्वास । पुंमरीक श्री गोतम आदिक । गणधरगुरु मन कमल विकास ॥  
॥ १ ॥ ( प्रहसम सूधा साधु नमुंनित । जावै श्रमण सुगुरु जगवंत । नाम  
ग्रहण कर पाप पखाळुं । परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ ( प्र० ) जरथ  
महामुनि प्रथम चक्कीसर । वाज्रवल् उपशम जंमार । सूरयसा दिक आठ  
मुनीसर । पाम्यो विमलाचल जव पार ॥ ३ ॥ ( प्र० ) रिखज वंस जे अनु  
क्रम ऊवा । मुनिवर कोमी लाख असंख । श्रीसिद्धेजै शिवपुर सीधा । क



ल मल कालक मुंकी कंख ॥ ४ ॥ ( प्र० ) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रव  
 र्त्ति । साधु महाबल संयम सीह । अचलादिक बलदेव अष्टमुनि । राम रिषी  
 सर नवम अबीह ॥ ५ ॥ ( प्र० ) श्रीप्रतिबुद्धि प्रमुह बह सुंदर । श्रीमल्लि  
 नाथ पूरबन्नव मित्र । पञ्जता परम यतीसर शिवपुर । पाली श्रीजिन आण प  
 वित्रा ॥ ६ ॥ ( प्र० ) बंडुं विश्व कुमार लवधि निधि । खंदग सूरना सीस सै पंच ।  
 कार्तिक सेठ सुसाधु कीर्त्त धर । श्रमण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥  
 ( प्र० ) श्रीयडुवंस अक्षोन्न सुसागर । प्रमुख आठ अणगार प्रधान । श्री  
 रहनेमि नेमि जिन बंधव । निरमल गुण गण रयण निधान ॥ ८ ॥ ( प्र० ) जा  
 ली मयालीनें उवयाली । पुरस सेण बारसेण प्रयुन्न । संव अनें अनिरुद्ध  
 रिषीसर । सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न ॥ ९ ॥ ( प्र० ) कुमार अनीकज सा  
 दिक षट्मुनि । गुणगिरुवो श्री गजसुकमाल । दंडण रिष श्रीथावच्चा सुत ।  
 सहस साधु संजम सुकृपाल ॥ १० ॥ ( प्र० ) ( राग धन्याश्री ) ॥ १० ॥  
 सहस श्रमणसुं सुक संयम धरो । पंचसयांसुं सेलग मुनिवरो । सिद्ध थया  
 श्री पुंमर गिरवरो । करुणाकर प्रणमुं संपद करो । ( उल्ला० ) संपदकरो शम  
 दम रिषीसर साधु सारण सोहए । अंतर प्रकासै तिमर नासै नविक जन  
 मन मोहए । प्रत्येक बुद्ध प्रबुद्ध नारद मुनि प्रमुख पैतालए । दमदंत महा  
 रिष कुंजवारै साधु नमुं त्रिजुं कालए ॥ ११ ॥ ( चाल ) रंग रिषन्नदत्त र  
 तन त्रय मुणी । समरुं देवानंदा साज्जणी । पांचे पांमव प्रणमुं मुनिपती ।  
 केशि पण्डी बोधक जिनमती । ( उल्ला० ) जिनमती कालक पुत्र मेहल  
 थिवर आणंद रक्खियो । अणगारका सब धर्म ज्ञाप्यो सोधि शिवपुर स  
 विखज्जो । कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपसमइ । श्रीपुंमरीक  
 महामुनीसर प्रणमीयै सुन्न संयमी ॥ १२ ॥ ( चाल ) बंडुंवलकल चीरी  
 केवली । श्रीअमैत्तो मुनिवर मनरली । श्रीकरकंडू डमह नमि निग्ग  
 या । निज २ देसे नरवर श्रीजुवा । ( उल्ला० ) श्रीजुवा एरिषणादि देखी  
 थया वर वइरागीया । संजम सिरी नजि मोह निद्रा तजीय जोगै जागी  
 या । प्रत्येक बुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें । सुप्रसन्न चंद मु  
 निंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रहसमैं ॥ १३ ॥ ( चाल ) खंतै खुल्ल कुमार सु  
 ध्याइयै । लोहच्चा मुनि चरणे लयलाइयै । कालज्जाई प्रमुख महामुणी । सं

जम सुख जयंती साङ्गणी ( उद्धांलो ) साङ्गणी जाणी जग वखाणी प  
रम पद सुख पामीया । श्री श्रमण नद्र सुनद्र सुंदर अचल आतम रामीया ।  
श्री सुप्रतिष्ठ यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो । चारित्र रिप गुणवंत गोन्नद्र  
गरुआ गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ ( चाल ) सिरीसिध राय रिषीसर वंदीयै । दशा  
रण नद्र नमुं डुख ठेदीयै । अर्जुन माली सुख संजम धरो । सुदृढ प्रहारी  
शिवरमणी बरो । ( ३० ) शिवरमणीबरो श्रीकुरगमू क्लमावंत प्रसिद्ध । बलि  
च्यार उग्रविहार तपसी सहत सुविहत सिद्ध । कोडिन्न दिन्न अनें सेवाली  
पनर शतक तिडोत्तरी । गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणा धरा  
॥ १५ ॥ ( चाल ) गरुआ श्रीगुणसागर गाईयै । प्रथवी चंद्र प्रणम्यां सुख पाईयै ।  
खंद कुमार सदा अजिनंदीयै । नमिह अरहमित्र मन आणंदीयै । ( ३० )  
आणंदीयै मेतार्य मुनिवर जगति सुं समरी करी । कृप इलापुत्र चिलापुत्र  
मृगापुत्र हीयै धरी । श्रीइंद्रनाम निग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मांगिरो । तेतली  
पुत्र सुबुद्धि बोधित सु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ ( चाल ) उदय १ कर  
जगि १ जस तणो । श्रमणसुदंशण शील सुहावणो । श्रीअन्नयसुत आद्रकु  
मारए । चित्त चतुरनरचित चमकारए । ( ३० ) चमकार सार सुजात रिपव  
रदेव सांनिध जश धणी । गंगेय गिरुवो गुणेंगाजै सु जिनपालत हित ध  
णी । श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव ए । श्रीकपिलरिपि ह  
रिकेश बलिमुनि नित नमुं निरलेवए ॥ १७ ॥ ( चाल ) जति जयघोष वि  
जयघोषै जुने । सेवुं श्रुतधर श्री देवलसुत । श्रीइखुकार नृपति कमलात्र  
ती । राणी नृगुसुत प्रोहित सुजमती । ( ३० ) सुजमती जेहनी जशा ना  
र्या पुत्र दोय वखाणीयै । ए ठज्जं लेई चारु चारित्र मुगति पुहता जाणीयै ।  
कृत्रिय मुनीसर साधु संजम धर्मरुचि सुमहाव्रती । निग्रंथ नाथ अनाथ वंडं  
समुद्रपालसु संयती ॥ १८ ॥ ( चाल ) कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्यौ । विध  
सुं शीतल शिवकमला मिल्यौ । धन १ धनो सुरगिर धीरए । वीरप्रशंश्या  
तपगुण वीरए । ( ३० ) श्रीवीर दिखित श्रीसुवाङ्ग नद्रनंद कुमारए । आ  
दिक दसेरिप चरिय जेहना सुख विपाक उदारए । श्रीचंमरुद्र सुशीस खंद  
ग खिमानिधि कह्यै इण कलै । कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिप नम्यां आ  
स्याफलै ॥ १९ ॥ ( चाल ० ) अंगप्रमुख रिपच्यारे आदरी । विधिसुं संजम

सिद्धि बधू बरी । अजै कुमार मुनि अन्नयं करो । हल्ल विहल्ल सु आतम  
 हितकरो । (३०) हितकरो दयाधर मेघमुनिवर नंदिषेण आराधीयै । सुनह  
 वनें सर्वानुज्जती शमर शिवसुख साधीयै । श्रीसीह साधु अने उदायन चरम  
 राज रिषीसरो । श्रीशालज्जद्र सुधन्न मुनिवर समरतां मंगल करो ॥ १० ॥  
 ( राग धन्यासरी ) ॥ वरु वैरागी वरनमुं । जुगवर जंबूसामि । प्रन्नव सि  
 द्ध्यं ज्व परगमौ । सुजश यशो ज्जद्र स्वामि ॥ ११ ॥ ( महामुनीसर नित  
 नमुं जी । नामें वर नवनिध । वाधै रिध समृध ) ॥ १२ ॥ ( म० ) ॥ जग  
 संज्जति विजै जयो । ज्जद्रवाज्ज कृतज्जद्र । जग जोगीसर जागतो । मुनिवर  
 श्रीथूलज्जद्र ॥ १३ ॥ ( म० ) ॥ ज्जद्रवाज्ज स्वामी तणा । च्यारि शिष्य मुनिराय  
 शीत परीसह जिण सत्था । सात्था १ आतम काज ॥ १४ ॥ ( म० ) ॥ अज्ज  
 महागिरि जांणीयै । अज्जसुहत्थि विशाल । संप्रति नृप पडि वोहीयो । श्री  
 अैवंती सुकमाल ॥ १५ ॥ ( म० ) ॥ आरिजसांमि प्रसंसीयो । अज्जसुज्जदमु  
 नीस । अज्जमंगु महिमानिलो । सीहगिरीस मुणीस ॥ १६ ॥ ( म० ) ॥ धन  
 गिरि थिवर महामुनी । श्रीवरस्वामि मुनिराय । अरहदिण मुनि अपह  
 खो । ज्जद्रगुप्त निरमाय ॥ १७ ॥ ( म० ) ॥ वरसेन विद्यावरू । श्रीरक्त  
 गुरु दक्क । पूसमित्र गुण गह गहै । प्रज्जु डुरवलका पक्क ॥ १८ ॥ ( म० ) ॥  
 विंजसाधु सुविधइ ज्जखो । श्री थंमिल सुमहिह । सुन्न अरथ रतनें ज्जखो ।  
 क्कमाश्रमण देवहि ॥ १९ ॥ ( म० ) ॥ पंचमकाल चरमामुनी । श्रीडुपसै शूर  
 दयाल । सुधक्किया खरतर सही । जिन आग्या प्रतिपाल ॥ २० ॥ ( म० ) ॥  
 इम पनर कर्मज्जमी जिके । ज्जज्जा ज्जस्यै अनंत । वर्त्तमान श्रीसाधुजी ।  
 रतनवई गुणवंत ॥ २१ ॥ ( म० ) ॥ ब्राह्मी सुंदरी राय मै । साज्जणी चंदन  
 बाल । आदिक शीलवती सती । त्रिकरण सुध त्रिकाल ॥ २२ ॥ ( म० ) ॥  
 संवत् सोल ठत्तीसए । श्रीविमलनाथ सुरसाल । दिक्का कल्याणक दिनें ।  
 गुंथी श्रीमुनि माल ॥ २३ ॥ ( म० ) ॥ रिणीपुरै रलीया मणो । श्रीशीतल  
 जिण चंद । सूरविजैराजे सदा । संघ अधिक आणंद ॥ २४ ॥ ( म० ) ॥ श्रीमति  
 ज्जद्र सुगुरु तणें । सुपसायै सुखकार । चारित संघ वखाणीयै । सदा १ जय  
 कार ॥ २५ ॥ ( म० ) ॥ मनहर श्रीमुनिमालका । गुणगण परमलपूर । कंठ  
 वइ उत्तम जिके । पामें सुखचरपूर ॥ २६ ॥ ( क० ) ॥ महामुनीसर गावतां

सुरतर सफल संमान । अष्ट महा सिद्धि धरफलै । सदाश् कल्याण ॥ ३७ ॥  
( म० ) ॥ इति मुनिमालिका संपूर्ण ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ वरतमान चौबीसीवडुं । मन सूधै नितमेवरी माई । रूपन अ.  
जित संजव अजिनंदन । सुमति पदम प्रभुसेवरी माई ॥ १ ॥ ( व० )  
श्रीसुपार्थ चंद्रप्रभु प्रणमुं । सुविध शीतल श्रेयांसरी माई । वाशपूज्य विम  
ल अनंत धरम जिन । शांति कुंथु परसंसरी माई ॥ २ ॥ ( व० ) अरजि  
नं मल्लि अने मुनि सुव्रत । नमि नेमि पाश जिणंदरी माई । चो वीशमा  
श्रीवीर जिणेशर । प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ ३ ॥ ( व० ) ॥ ढाल ॥  
प्रहंशम सूधा साधु नमुं नित ( एहंती ) । नित नित अतीत चौबीशी नमी  
यै । जेहना नाम प्रगट ए जाण । केवलन्यानीनें निरवाणी । सागर महा  
जश विमल वखाण ॥ ४ ॥ ( नि० ) ॥ सर्वानुचूति श्रीधर दत्त जिनवर ।  
दामोदर सुतजा श्री स्वामिं । मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन । श्री अ  
स्ताग नेमीसर नाम ॥ ५ ॥ ( नि० ) ॥ अनिल यशोधर तेम रु  
तारथ । श्री जिनेसर सुधमति सुजगीस । शिवकर स्वंदन संप्रतिनामै ।  
वंदीजै जिनवरचौबीश ॥ ६ ॥ ( नि० ) ( ढाल ३ ) सफल संसारनी ) ॥  
जे नविस्संति अनागए कालए । तेह चौबीश प्रणमीस त्रिजं कालए । प्र  
थम महाराज श्रेणक तणो जीवै । श्रीपदमनाज प्रणमीस सदीवए ॥ १ ॥  
वीरनो पितरीयो नाम सुपासए । ऊसी जिन वीय सुरदेव सुप्रकासए  
कोणिरु सुत उदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सि  
प्य श्रीवीरनो पोहलो साधए । चौथो स्वयंप्रभु नामआराधए । दढायुप जी  
व सिद्धांतमै जाणीयै । पंचम सर्वानुचूति प्रमाणीयै ॥ ३ ॥ कीर्ति इण ना  
म इक जीव कह्नीजीयै । देवश्रुत तेठगो स्वामि स लहीजीयै । शंपथावक  
ऊस्ये उदयजिण सातमो । आणंदनो जीव पेढाल जिण आठमो ॥ ४ ॥  
सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिण । शतक थावक शतकीर्ति दशमो ज  
ण । देवकी जीव मुनिसुव्रत इग्यारमो । सत्यकी जीव ते अमम जिण बा  
रमो ॥ ५ ॥ वासुदेव जीव निकपाय जिन तेरमो । बलदेव जीव निपुत्राक  
चवंदम नमो । पनरमो निरमम देव सुलसाकही । रोहणी जीव चित्रगुप्त  
सोदम सही ॥ ६ ॥ समाधि जिन सतरमो थावका रेवती । अठारमो शदा

ल जीव संवर जिनपती । दीपायन जीव यशोधर उगणीसमो । कृष्ण कोई जीव ते विजय जिनवीशमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीशमो जीवनारद तणो । देव वावीशमो अंवरु श्रावक जणो । तेवीशमो अमर जीव अनंत वीरज नमो । स्वाति बुध जीव ते नद्र चौवीशमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चौवीश जिण जाणीया । प्रवचन सार उधारथी आणीया । केई पर सिद्धनै केई अप्रसिद्ध कहा । शास्त्र अनुसारथी साच कर सरदहा ॥ ९ ॥ ॥ ( ढाल १ ) ॥ ॥ आज नहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ॥ विहर मान जिण वीशे वंदीयै । महा विदेह विख्यात । सीमंधर युगमंधर बाहुजी । श्रीसु बाहु सुजात ॥ ६ ॥ ( वि० ) स्वयंप्रभु रिषजानन अनंतवीरजी । सूर प्रभु तेमविशाल । वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी । नृजंग ईसर नेम जाल ॥ ७ ॥ ( वि० ) वैरसेन महान्नद्र नमुं बली । देवयशा यसो रिद्ध । अढी दी पमें विचरै आजए । नाम लीयै नव निद्ध ॥ ८ ॥ ( वि० ढाल ४ ) ॥ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीयै ॥ ॥ चार तीर्थकर शाश्वता । इणहीज अग्निधान । ऋषजानन चंद्रानन । वारिषेण वर्धमान ॥ ९ ॥ ( च्या० ) अठकोमि ठप्पन लाखसुं । सत्ताणुं हजार । चउसै अयासी देहरा । त्रिजं लोक मऊार ॥ १० ॥ ( च्या० ) नवसै पणवीश कोमीया । बिंव त्रैपन लाख । सहस्र अठावीश चारसै । अठ्यासी जाख ॥ ११ ॥ ( च्या० ) ठिन्नुं जिणवर नामए । समस्यां सुखदाय । प्रणम्यां पाप मिटै परा । सम कित सुद्ध थाय ॥ १२ ॥ ( च्या० ) ॥ कलशः ॥ इम त्रिण चौवीशी वीश विहरमान चौजिण शाश्वता । संथुण्यां सतरैसै त्रयांलै अधिक आणी आसता । जिन रतन चिंतामणि तणी परि प्रघल वंढित पूरए । प्रहसमै त्रि करण सुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूरए ॥ १३ ॥ ॥ इति श्रीत्रिण चौवीशी, वीस विहर मान, चौजिण शाश्वता, एवं ठिन्नुं जगवंत नाम स्तवनं ॥ ॥

॥ ॥ अथ उपधान तप स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्रीमहावीर धरम परगासै । वैठी परषदवारजी । अमृत वचन सुणी अति मीठा । पामें हरष अपारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधान बह्यां विन । किम सूजै नवकारजी । उत्तराध्ययन बज्रश्रुत अध्ययनै । एह जण्यो अधिकार जी ॥ २ ( सुणो ० ) ॥ महा निशीथ सिद्धांत मांहे पि

ए । उपधान तप विस्तार जी । अनुक्रम सुधपरंपर दीसइ । सुविहित ग  
 ञ्च आचार जी ॥ २ ( सु० ) ॥ तप उपधान वस्त्रां विन किरिया । तुल्य  
 अलप फल जाण जी । जे उपधान वस्त्रा नर नारी । तेहनो जनम प्रमाणजी  
 ॥ ४ ( सु० ) ॥ तप उपधान कस्यो सिद्धांते । जो नवि मानें जेहजी । अरिहं  
 त देवनी आण विराधै । जमस्यै जवइ तेह जी ॥ ५ ( सु० ) ॥ अघड्या  
 घाटसमां नर नारी । विण उपधाने होय जी । किरिया करतां आदेश निरदे  
 श । काम सरै नही कोइ जी ॥ ६ ( सु० ) ॥ एक धेवरनें खांमै जरियो । अति  
 घणो मीठो थाय जी । एक श्रावक उपधान वहैतो । धन २ ते कहवायजी ।  
 ॥ ७ ॥ ( सु० ) ॥ ( ढाल ) ॥ नवकार तणो तप पहिलो बीसम जाण । इरिया  
 बहीनो तप बीजो बीसम आण । इण विजुं उपधाने निश्चइ नाण मंमाण ।  
 वारै उपवासै गुरु मुख वेवे बांण ॥ ८ ॥ पेंत्रीसम बीजो एमोत्थुणं उप  
 धान । त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान । अरिहंत चेई तप चो  
 थो चोकम एह । उपवास अढाई बाणएक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोग  
 स्स तप अगबीसम नाम । साढापनरह उपवास वायण त्रिणठाम । पुखर  
 वरदी तप ठगो ठकड सार । साढात्रण उपवासे बांण एक सुविचार ॥ १० ॥  
 सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल । उपवास करै इक चौविहार ततका  
 ल । एक बाणिकरै बलि गुरुमुख सरसरसाल । गठनायक पाशै पह्रै  
 माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवशर आणी मनउत्तरंग । घर सारू  
 वारू खरचै धन वज्र जंग । अति उठव कीजै राती जोगो दिल खोल ।  
 गीतगान गवावै पावै अति रंग रोल ॥ १२ ॥ ( ढाल ) ॥ ए साते उपधा  
 न । विधसों जे वहै । ते सूधी किरिया करै ए । खिण न करै परमाद । जीव  
 जतन करइ । पुंजि २ पगला जरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कपाय ।  
 हर्म २ हसै नही । मरम केहनो नवि कहै ए । नाणैं घरनोमोह । उत्तुष्टी  
 करै । साधु तणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पञ्जरसीम सिध्दाय । करपोरशि न  
 ए । ऊंचै स्वर बोलै नही ए । मनमांहें जावै एम । धन २ ए दिन । नरजव  
 मांदि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जेसाते उपधान । विधसेती वहै । पहिरै  
 माल सोदावणीए । तेहनी किरिया शुद्ध । वज्र फलदायक । करम निर्ज  
 रा अति घणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामै रिह । देव तणा सुख । वनीस वद्ध

नाटक पडै ए । लाचै लील विलास । अनुक्रम शिव सुख । चढती पदवी  
जे चढै ए ॥ १७ ॥ ( कलशः ) ॥ इम वीरजिएवर जुवण दिणयर मात त्रि  
शला नंदणो । उपधानना फल कहै उत्तम नवियजण आणंदणो । जि  
एचंद जुग परधान सदगुरु सकल चंद मुनीसरो । तसुशीश वाचक समय  
सुंदर जणै बंढित सुख करो ॥ १८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति सात उपधान गव्जित श्रीमहावीर स्वामी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( इस ) स्तवनमें उपधान तप करनेकी सर्व विधि है । इसी  
मुजब विवेकी जीव करै । और उपधान तप ग्रहण ( तथा ) माला पहर  
ए विधि इहां न लिखी है ( सो ) सुद्ध गुरुकै पास । विधि प्रपाक ग्रंथसैं  
जाणकै करै ॥ ❀ ॥ इति तत्त्वं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राग रागणी स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग कल्याण ) ❀ ॥

॥ ❀ ॥ टुक निजर महरदी करणाहो ॥ टु० ॥ मैजं अधम पापकी मू  
रत । मेरा दोस न धरणा हो ॥ ( टु० ) ॥ १ ॥ अष्ट जवनकी प्रीत हमार  
री । नवमें जव निरवाहना हो ॥ ( टु० ॥ २ ॥ रूपचंद जंगतनकी बीन  
ती । आवागमण निवारणा हो ॥ ( टु० ) ३ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लोक चवदके पार किनारै । पूरण ब्रह्मका वासा है । ( लो० )  
पैंतालीस लाख जोजनकी सिद्धा । फिटक रतन उजासा है । निरमल जो  
त विराजै साहिब । ग्यान ध्यान परकासा है ॥ ( लो० ) १ ॥ पंच वर  
ण की धजा फरुकै । क्याकजं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम  
तुमारो । औरनकी क्या आसा है ॥ ( लो० ) २ ॥ चोशठ इन्द्र खमे वाके  
बारे । खिजमत बंदा खासा है ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन । चरण क  
मलका दासा है ॥ ( लो० ) ३ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सबी सखि वन ठन ( सबी० ) गाढे । नामि नृपत जुके बारे  
आगै । ( स० ) रिपज कुमरको जनम जयो है । मंगल मुख्य उचारैरी ॥  
( स० ) १ ॥ ताल मृदंग रबाव मधुरी धुनि । बीणा वाजै सुरतारे । नाचत  
हाव भाव करी राजत । तानलेत सुरतारेरी ( स० ) २ ॥ सुरवनिता मिल

गाइ बधाई । मोतीयन चौक सवारे । जगदधव जगपतिकुं निरखत । आ  
नंद हर्ष अपारेरी ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हो जिनतें मे दरस परवारीयां ( हो० ) तुम विन जवः में नट  
कंदा । अब मेंनी ओर निहारीयां ॥ ( हो० ) ॥ १ ॥ अष्ट करम में मे  
लार लगे है । उनकु वेग विमारीयां । चरण सरण गहे आण तुसाढे ।  
रुपचंद गुणगारीयां ॥ ( हो० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हारे हारा रिपजा जिणंदने गजरो चढाउरे ( ह्रां० ) चंबेली  
चंपा गुलाव ल्याउरे । जाइ जुई मोगरो मालती । विध गुंथाउरे ( ह्रां० )  
२ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाउरे । धूप दीप फलसुगंध पुण्य पावुरे  
( ह्रां० ) २ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ जाव जावुरे । रिपज दास पूरो आस  
गुण गावुरे ॥ ( ह्रां० ) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन लीनो हमारो जिन चरणारे । पोत जलधि नव तरणारे ॥  
( म० टेर ) ॥ आदि पुरश जगतारण नि शुण्यो । कर्म विकट धन हरना  
रे ॥ ( म० ) १ ॥ नाजि तात मरुदेवी माता ॥ नंद रूपन सुख करनारे ॥  
( म० ) २ ॥ सल्यादिक प्रगट न जग तत्पर । कुमतांगन दलटनारे ॥  
( म० ) ३ ॥ सारंग दृग शशिवंदन मनोहर । अंग कनक सम वरनारे  
( म० ) ४ ॥ श्रीजिन हंस सुरीसर जंपै । जिन शमरण दिल धरनारे ॥ ( म० )  
॥ ५ ॥ इति श्री रूपन देव स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग किंजोटी ) ( २ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित अजित जिन ध्यान । ( हारै मनरे ) ( अ० ) ( टेरः )  
जितशत्रु विजयाको नंदनरे । वंदन त्रय युत ग्यान । ( ह्रा० ) १ ॥ त्रिजं  
जग तारन टारन अब कोरे । वारुं तन धन ज्यांन ॥ ( ह्रा० अ० ) २ ॥  
जिन वचनामृत पान करीजैरे । केवल निरमल ग्यान ॥ ( ह्रा० ) ३ ॥ श्री  
जिन हंस सुरि प्रभु पाएरे । निवृत्ति पुरिंदरग्यान ॥ ( ह्रा० अ० ) ४ ॥



इति श्रीअजित नाथ स्तवनम् ॥५॥ ॥५॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारलो गह वहियां । (य०)  
मैं नाहि जानुं सहियां (य०) । मैं तारण तरण सुण्यो है । मैं यातैं शरणो  
गहीयां । इनतैं नवार लहियां ॥ (मो० य०) ॥ १ ॥ इन करमनकै बस  
होयकै । मैं नटक्यो चिजुं गति महियां । मैं नाहि जानुं सहियां ॥ (य०)  
२ ॥ हित करकै दास निहारै । कर जोडि पमिजुं पइयां । शिव देति क्युं  
न सहियां । (मो० य०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( राग काफी ) (५) ॥ ॥

॥ ॥ मुजरो मानी लीजै हो गोमीराय अरज सुणीनिं स्हारो (मु०)  
॥ १ ॥ किरपा काज करी सेवगनें । दिलनर दरशण दीजै हो (गो०) ३ ॥  
गुणनिधि गवडी दरशण दीजै । सकल कर्म दलठीजै हो (गो०) ॥ ४ ॥  
रूप विबुध कहै मो मन पनएँ । प्रह ऊठी प्रणमी जै हो (गो०) ५ ॥ इति

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ तुमेंमा प्रभु इण दिल बसणावे । तैंमा तो गुण सुर गावं  
दाहो ॥ (प्र०) ॥ १ ॥ संतके सागर गुणके आगर । जोही ध्यावै सो पावं  
दाहो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता । नविजन ताप मिटावं  
दाहो ॥ (प्र०) ॥ कहैं जिनचंद ऐसे प्रभुमेरे । चरणकमल चित लावंदाहो  
(प्र०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ हम जानतहै तुम तारोगे । (हम०) नाजिराय मरुदेवी को  
नंदन । मेरी और निहारोगे ॥ (हम०) ॥ १ ॥ आदि जिनेसर अन्तर  
जामी । खामी कबुन विचारोगे ॥ (ह०) ॥ २ ॥ जगजीवन जगतारक  
तुमहो । एही विरुद संनारोगे ॥ (ह०) ॥ ३ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सुरिंद  
कुं साहिव । नवजल पार उतारोगे ॥ (ह०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ पंथीमा पंथ चलैगो । प्रभु नजलै दिन ज्यार ॥ (पं०) ऊठी

काया कूटी माया । कूटो सब परवार ॥ ( पं० ) ॥ १ ॥ बालपणेंमें खेल  
गमायो । जीवन माया जाल ॥ ( पं० ) ॥ २ ॥ बूढापण आयो धरम न  
पायो । पीठे करत पुकार ॥ ( पं० ) ॥ ३ ॥ क्याले आयो क्याले जा  
सी । पापपुण्य दोय लार ॥ ( पं० ) ॥ ४ ॥ दया मया कर पाश ऐवेंती ।  
अब तेरोही आधार ॥ ( पं० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥

॥ ✽ ॥ पुनः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तेवीशमा जिनराज । जोमै थांहेरे कौन जुमै गो ( ते० ) ।  
अस्वसेन तात वामादेवी माता । तूं तारण संसार ॥ ( जो० ) ॥ १ ॥  
कमठ विमारण नागकुं तारण । संनलाव्यो नवकार ॥ जो० ॥ २ ॥ वि  
बुध कुशल कर जोमीनें दीनवै ॥ अब २ देज्यो दीदार ॥ ( जो० ) ॥ ३ ॥

॥ ✽ ॥ ( राग खंभायची ) ॥ ५ ॥

॥ ✽ ॥ कैसैं काज सरै महाराजा विन ( कैसैं० ) भ्रमत २ लख चौ  
रासीमें । सुख डुखसैं जीया रुलत फिरै ( म०कै० ) । ए रिपु कर्मवैरी न  
टकावै । जाहीसैं मेरो प्राण मरै ॥ ( म० कै० ) ॥ २ ॥ जो जीव सुखकी  
धंढा चाहै । प्रभु सेव्यां सैं सब काज सरै ॥ ( म० कै० ) ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ✽ ॥ पुनः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ राजरी बधाई वाजै ठै ( महा० ) । सरणाई सिरै नोवत वा  
जै । धनज्युं गाजैठै ॥ ( महा० ) ॥ १ ॥ इंद्राणी मिलमङ्गल गावै । मोतीयन  
चोक पुरावैठै ॥ ( महा० ) ॥ २ ॥ सेवग प्रभुजीसैं अरज करैठै । चरणारी  
सेवा प्यारी लागैठै ॥ ( महा० ) ॥ ३ ॥ इति ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( राग अमाणो ) ( १ ) ॥ ५ ॥

॥ ✽ ॥ मोतिनकी माला जिनगलसोहै । ( मोति० ) मस्तक सुगुट सोहै  
मनमोहन । कुंमल लागत वाला ॥ ( जि० १ ) ॥ नजोरी नजो तुम लो  
क सहिरके । नहीय नजै सो काला । माणकपर प्रभु सहिर करो तो ।  
अपणा विरुद संजाला ( जि० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥

॥ ✽ ॥ ( राग सोरठ ) ( १ ) ॥ ✽ ॥

॥ ५ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन डराय ॥ ( रहे० ) ॥ जीय जीवन

सखीयनमें प्यारी । हारी हाहा खाय ॥ (र०) ॥ १ ॥ अविरत घुंवट पट  
 उधारी । अनुन्नव मुख निरखाय । एते परन्नी मान न मेलै । मूलै व्याज  
 बढाय ॥ (रहे०) ॥ २ ॥ नव परणित परिपाक इतै पर । आई धाई मा  
 य । अति आग्रह सब ग्यान सारकुं । लीनें कंठ लगाय ॥ (रहे०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हेमाय वांकमी करमगति जायनां कही । चिंतत और वनत  
 कतु औरै । हौनहार सो होय रही ॥ (हेमाय वां०) ॥ १ ॥ सकल  
 साज सजीयौ व्याहनकुं । राजुलकों तव चाह नई । सुनी नेम गिरनार  
 सिधाए । वदन विलख मुरजाय रही ॥ (हेमाय वां०) ॥ २ ॥ शीता स  
 तीयोंही पति नगता । जानत सकल मही । ऊठो दोश दियो जव स्व  
 पति । पावक कुंममें धीज दही ॥ (हे० वां०) ॥ ३ ॥ द्वायक सुदृष्टी श्रे  
 णक राजा । निज सुत कोणक बंधठई । सुध बुध विसरगई नरपतकी  
 आपणकी अपघात लही ॥ (हे० वां०) ॥ ४ ॥ तिनमें रंक तिनकमें राजा ।  
 अकल कथा किम जाण कही । उलट पलट वाजी नटसीकी । नवल सब  
 में व्याप रही ॥ (हे माय वां०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यानु प्यारो लागै बै जी । थारो उपदेस । (ह्यानु०) ॥  
 ग्यान जगावण आगुण मेटण । संशय रहै न लेस ॥ (ह्या०) ॥ १ ॥  
 मोहतिमिर डुख दूर करनकुं । नगत बढावत हेत । चंद फतै नित एही चा  
 है । समकित सुखको खेत ॥ (ह्या०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो पीया परसंग रमत है । में केसैं मनावूरी (मे०) । सो  
 तन संग रैन दिन रमतां । माहि न बुलावैरी (मे०) ॥ १ ॥ हाहा कर  
 त सषी पईयां परतऊं । कोई पीया मिलावैरी । विरहानल अति डसह पी  
 या विन । कोन बुलावैरी (मे०) ॥ २ ॥ सुमता संग ले अनुन्नव आ  
 यो । सब परठ सुनावैरी । ग्यान सार प्यारी दोउं हिलमिल । सोरठ गावैरी  
 (मे०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ (राग सोरठ मलार ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वरपित वचन जरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) श्रीश्रुत ग्यांन  
गगन ते ऊमटी । ग्यांन घंटा गहरी हो (सुगुरु मेरे व०) ॥ स्याद वा  
द नय विजुरी चमकित । देखत कुमति मरी । अरथ विचार गुहर धुनि ग  
रजित । रहत न एक घरी हो ॥ (सुगुरु मेरे) ॥ १ ॥ श्रवणदी चढी  
अति जोरै । सुख सुजावधरी । सुनर जखो सुमता रससागर । समकित  
जूमि हरीहो ॥ (सुगुरु मेरे) ॥ ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकूरे चिजं दिस । पा  
प जवास जरी । चातक मोर पपइया जविजन । बोहत नक्तिनरी हो ॥  
(सुगुरु मेरे व०) ॥ ४ ॥ दया दान व्रत संयम लेती । नविक कसान  
करी । हरपचंद सुर नर शिव सुखकी । सहज सुजाव फली हो ॥ (सु०  
व०) ५ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ या घरी में रंग बन्यो है ह्यारे । (या०) तत्वारथकी चर  
चा पाई । साधमीको संग (व० या०) ॥ १ ॥ श्री जिनराज दयानिधि  
जेटे । हरप जयो अंग अंग । अँसी विध जवइ माँहें मिलीयो । धर्मप्र  
साद अजंग (व० या०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग मलार ॥ ॐ ॥ (१)

॥ ॐ ॥ चिजं उर वहरिया वसे (आलीरी) । अब घरर घरर घन ग  
रज ॥ (चि०) ॥ नेम प्रनु गिरनार सिधाए । देखणकुं जीया तरसै ॥ (चि०)  
॥ १ ॥ दाडर मोर सोर सुन श्रवणें । नयनजण घन जरसै ॥ (चि०) ॥ २ ॥  
हुँदत हुँद सकल वन वनमें । कवज पीयानां दरसै ॥ (चि० ॥ ३ ॥ सो  
इ सफल जाणेंगे सजनी । दिवस घरी जिन फरसै ॥ (चि०) ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मोरवा पपइया बोले पीउइ घनमें । नेम पीया रहे सहसाय  
नमें ॥ (मो०) ॥ निजि अंधीयारी कारी बीजुरी मरावें । दूजी विरह  
आकुल जइ तनमें ॥ (मो०) ॥ १ ॥ जियमिर वरपत गरजत दाडर ॥  
सोरकरत रहे नदीयां रनमें । (मो०) ॥ २ ॥ आणंद ए सम देखण चाहै ॥

राजुल नइ है वैरागण भिनमें ॥ ( मो० ) ॥ ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग विहाग ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समऊ नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो । ( स० ) ॥ पल२  
आयु घटत भिन ही । गलत जात जैसें उरो ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ या तनको  
तोही न चरोसो । भिन मासो भिन तोरो । जो कठु करै सो अवही करलै ।  
पुन परहो जिम मोरो ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री  
गरज २ वनघोरो । रूपचंद विसनाको बांध्यो । जान बूझ नयो चोरो ॥  
( स० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत कर मान गुमान । योवन धन ठगहै । ( म० ) बेलूकी  
जनीत उसको मोती । कोई घमी कोई पलहै ॥ ( यो० म० ) ॥ १ ॥ नदियां  
गहिरी नाव पुराणी । तारण हारा जिन है । रूपचंद कहै नाथ निरंजन  
आखर जंगल घर है ॥ ( यो० म० ) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग मारु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निसदिन जोनं थारी वाटनी घर आवोनी ढोला । ( नि० ) मुऊ  
सरिखा तुऊ लाख है । मेरे तूही अमोला । ( नि० ) ॥ १ ॥ जौहरी मो  
ल करै लालनका । मेरा लाल अमोला । जिसके पटंतर को नहीं । उसका  
क्या मोला ॥ ( नि० ) ॥ २ ॥ कोन सुनें किसपै कऊं । किसपे मांहु खो  
ला । तेरे मुखदीठे टलै । मेरे मनका जोला ॥ ( नि० ) ॥ ३ ॥ मीत बि  
वेक कहै हितकरतुं । सुमता सुन बोला । आणंदघन प्रभु आवसी । सेऊमी  
रंगरोला ॥ ( नि० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग जैवंती ( १ ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज तो हमारे जाग वीर प्रभु आए है । ( आ० ) चंदना  
खमी डुवार चित्तसैं करै विचार । देखत दीदार हीये हरष जराये है ॥  
( आ० ) ॥ १ ॥ आज मेरी आशफली । अली मेरे रंगरली । विकशी  
आतमकली । प्रभूपान पाएहै ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ धनदिन आजमेरो ग  
यो सब कर्म जेरो । सुकृत बज्जतेरो । जगवान दिल जाए है ॥ ( आ० )

॥ ३ ॥ सिद्धार्थ राय नंद सोहत सरद चंद । कहै जिनचंद चित आनंद  
बधाए है ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ राग परज ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वावरोरे आज मनवो मारो ॥ (वा०) ॥ आपरंगीला वाकी  
सेज रंगीली । ओर रंगीलो वाको सांवरोरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ आपन आ  
वै वारी न लिख जेजै । प्रीतकरनकुं उंतावरोरे ॥ २ ॥ आनंद घन पीया  
निजघर आवै । मिठगयो मोह संतावरोरे ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

### ॥ ❀ ॥ राग जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृपजबिहारी थारी तो ठवि न्यारी ॥ (रि०) ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथ  
म जिनेसर । प्रथम यती व्रत धारी हो ॥ (रि०) ॥ १ ॥ धनुष पांचसै मान  
मनोहर । काया कंचन बानी हो ॥ (रि०) ॥ २ ॥ नागिराय मरुदेवीको  
नंदन । वापरजीया कुरवानी हो ॥ (रि०) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण  
स्वामी । प्रभुवो पर उपगारी हो ॥ (रि०) ॥ ४ ॥ केवल पाय प्रभु मुक्ति  
सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ (रि०) ॥ ५ ॥ आनंद घन प्रभु एती  
वीनती । तुमपर जाउं बलिहारी हो ॥ (रि०) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण मन हो न हार नटैरे ॥ (सु०) ॥ चित कलु उर बिचारत है  
नर । उरही उरबनेरे ॥ (सु०) ॥ १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै । चिन्तियां कैसैं  
बचैरे ॥ (सु०) ॥ २ ॥ होनहार बस मस्योहै पारधी । शर सीचाण मरैरे ।  
(सु०) ॥ ३ ॥ होत पदारथ जाबी जइया । क्युं जगचाह धरैरे ॥ (सु०)  
॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की । जिनवर क्युं न जजैरे ॥ (सु०) ॥ ५ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहियोरी मित्खालो प्रभु पूजन काज ॥ (स०) ॥ समवशरन  
बिच आप विराजै । वीरनाथ महाराज ॥ (स०) ॥ १ ॥ श्रेणक रूप  
चेलणा राणी । नक्ति करत है आज ॥ (स०) ॥ २ ॥ निज निज द्रव्य  
लीयै पुरके जन । उमंग उमंग सुज साज ॥ (स०) ॥ ३ ॥ वे प्रभु दीन  
दयाल जगतके । हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग केहरवो) (१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०) ॥ याजिनजीके दरस सरस  
तैं । डुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०) ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मानले ।  
आतमसुं लय लायरे ॥ (म०) ॥ २ ॥ जब २ में तो कुं सुखदाई । आनंद  
बंठित पायरे ॥ (म०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव (चा०) वामानंदन पाशजिने  
सर । शिरपररे बाके चवर ढोलाय ॥ (चा०) ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर  
लखके । जेटै सज्ज जवि चित सुख पाय ॥ (चा०) ॥ २ ॥ गंगा दरश  
उमाहोलागो । कवफरसुं बाके मन वच काय ॥ (चा०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ (राग घाटो) (१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन वशकर लीनो । जिनवर प्रभुपाश (मे०) ॥ १ ॥  
अखीयां कमल पांखनीयां । मुख सुंदर जास । (मे०) ॥ २ ॥ काने कुंम  
ल दोय ऊलकै । शशि सूरज सम जास (मे०) ॥ नीलवरण तनु सोहै ।  
त्रिभुवन परकास ॥ (मे०) ॥ ३ ॥ प्रभु तुम शरण रहीनैं । समरुं सासोसा  
स ॥ (मे०) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनैं । पुरो बंठित आश ॥  
(मे०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राखुरे हमारा घटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ (रा०) ॥ जागै  
प्रज्ञाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । जागा जया उजेरा ॥ (रा०) ॥ १ ॥  
सूरति तेरी रागै । देख्यां विज्ञाव त्यागै । अध्यात्म रूप जागै ॥ (रा०) ॥ २ ॥  
मुद्रा प्रमोदकारी । ऋषज्जेसजू तिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ (रा०) ॥ ३ ॥  
त्रैलोक्यनाथ तुम ही । हम है अनाथ गुन ही । करियै सनाथ हम ही ॥  
(रा०) ॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै । जिन हर्ष सूरि जाखै । दिलमां  
ऊया ही राखै ॥ (रा०) ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हारे में खमी पुकारुं नेम तूही तूही ।

(सु०) ॥ अरज करत जुं मै पड्यां परतजुं । इतनी अरज मेरी मांनो  
सुजाण ( नेमजी हां० ) ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिव  
महिर निजर मोपै आणो सुजाण ( नेमजी ) ॥ २ ॥ हरख चंद ( नेमी )  
राजेसर । जुं नव २ की चेरी सुजाण ( नेमजी० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेरै दरसको चाह लग्यो । सखी स्याम वरण वत लाजारे  
( ते० ) । वनमै जाय प्रभु दिक्षा लीनी । हमकुं लार लगा जारे ( ते० ) ॥ १ ॥  
जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर । अब कैसें विसराजारे ( ते० ) ॥ २ ॥ चैन  
विजै कहै धन २ राजुल । प्रभु चरणं चित लायजारे ( ते० ) ॥ ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारै मुखमारीहो वारी राज । प्यारीबि वरणी न जाय ( थां० )  
सीस मुगट सौहै सिरटीको । काने थारै कुंडल सोजाय ( थां० ) ॥ १ ॥  
मोहन गारी सूरत सारी । देख्यां हारो मनमो लोजाय ( थां० ) उक्ति  
नैन नए निरखत ही । थांसुं प्रभु प्रीतमली लगाय ( थां० ) ॥ २ ॥ नव २  
पाश जिणंदजीकी सेवा । ऐसी हारै दिलमैमै चाव ( थां० ) । बालक है  
तुमही प्रभु मेरे । हारै प्रभु तुमही सहाय । ( थां० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ ( राग काफी कानमौ ) ॥ ❀ ॥

ऐसी विधतैनै पाईरे । कटु करणी करजा ( औ० ) उत्तम नर नव जैन  
धरम रुचि । सुगुरु सेवा सुख दाईरे । जसु पातक ऊरजा ( औ० ) ॥ १ ॥  
हिंसा जूआ फूट परत्रिया । परिग्रह मद फल चोरीरे । घट जायगा दरजा  
( औ० ) ॥ २ ॥ तप जप संयम शीलदान कर । आनंद सुमति सुहाईरे ।  
नव जलनिधि तरजा ( औ० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग कालंगमो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोहि अपनो कर जाणो प्रभुजी ॥ ( मो० ) ॥ मैं मतिहीण  
महा दृढवादी । सो तुमसैं नही गनो । राग वैष अरु मोह महामद ।  
बाधो खोट खजानो ॥ ( प्र० मो० ) ॥ १ ॥ ए रिपु कर्म पड्यो मुऊ के  
मै । किसविध ठूटै पानो । कुमति कदा ग्रह मांहि ऊलूऊयो । ज्युं मदपा



न वयानो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ ॐ नववाशी तूं शिववाशी । जानें सकल  
जिहांनो । विरुद लाखीणो सांम संनारो । तो हिव किम चित तांणो ॥  
(प्र०) ॥ ३ ॥ नक्ति सदाई शिवसुख दाता । संनवनाथ कहानो । श्रीजि  
न सौजाग्य सूरिनै निजवर । दीजै सुखप्रधानो ॥ ( प्र० ) ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ (राग भैरवी) (१) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम जिणंद जी सैं आखमली । मोरी रैन दिवस नित लग र  
हीरे ॥ ( मो० ने० ) ॥ पहली आय उन दोस्ती कीनी । ले पीठै ठिठका  
य दर्शे ॥ (ने०) ॥ १ ॥ पशुवन पर प्रभु दया करीनैं । शिवरमणीनैं वर  
लेईरे ॥ (ने०) ॥ २ ॥ केइ नविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद  
पाय लईरे ॥ (ने०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ आज प्रभु तोरै चरण लाग । मिथ्यात नीद में खोईरे ॥ (आ०) ॥  
दरशण कर परसण नयोमेरे । आनंद चित अव पोईरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥  
तुम बिन ओर न कोइ मेरै । देख्यो त्रिभुवन जोईरे ॥ आ०) ॥ २ ॥ दास  
तुमारो करत वीनती । तुम प्रभु नव नव होईरे ॥ (आ०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात गई अव प्रात होन नयो । क्या सोवे जिया जागरे  
(रा०) दोय घडी तमको अव रहीयो । ऊठ धरम में लागरे ॥ (रा०) ॥  
॥ १ ॥ जिनवाणी नर बीच धारलै । नर नरम सर्व त्यागरे ॥ (रा०) ॥ २ ॥  
आणंद सुगुरु वचन हित मानो । ए सूधो शिव मागरे ॥ (रा०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिध कोन खबरलै मेरी । (तु०) अम  
त फिख्यो संसार जगतमें । मेढो नवनी फेरी । (तु०) ॥ १ ॥ नव २ के  
प्रभु तुम जगनायक । राखो शरणें तेरी । उदय आसरो पकड्यो तेरो ।  
शरण ग्रहीमें तेरी ॥ (तु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग विभास) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जोरनयो अव जाग वाक्रे ॥ ( जो० ) कोउ पुन्यते नर नव

पायो । क्युं सूतो अव पाय दावरे ॥ ( जो० ) ॥ १ ॥ धन वनिता सुत  
तात आतकों । मोहमगन एह विकल जावरे । को इन तेरो तूं नहीं का  
को । इह संजोग अनाद सु जावरे ॥ १ ॥ ( जो० ) ॥ २ ॥ आरज देश  
उत्तम गुरु संगत । पाई तें वज्र पुन्य प्रजावरे । ग्यांनसार जिनमारग लांधो ।  
क्युं डूवै अव पाय नावरे ॥ ( जो० ) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥५॥

### ॥ ५ ॥ ( राग खट् ) ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ जागरे सब रेन बिहानी ( जा० ) उदयो उदयाचल रवि मंमल  
पुन्यकाल क्युं सोवै प्राणी ॥ ( जा० ) ॥ १ ॥ कमल खंन वन वन विकसा  
नी । अजुवन तेरी द्रग उघरानी । चेतन धर्म अनादि तुमारो । जम संग  
तसें सुध विसरानी । ( जा० ) ॥ २ ॥ तुम कुल दोष अवस्ता पड़्यै ।  
नीद सुपन एजम नीसानी । आतम रूप संचार आपणो । कव तुमारे  
घर कुमती घरानी ॥ ( जा० ) ॥ ३ ॥ सुध बुध जूली निरुपम रूपकी ।  
तातें घट वध होत कहांनी । निश्चै ग्यान स्वरूप तुमारो । ग्यांनसार पद  
निज रजधानी ॥ ( जा० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥

### ॥ ५ ॥ राग बेलौल ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन जावनो । रूप देखाय मेरो मन  
ललचावनो ॥ ( सां० ) ॥ १ ॥ तोरणसुं रथफेर चले पीया । ना जानुं ए  
काहिको रुसावनो ॥ ( सां० ) ॥ २ ॥ नव नव नेह निजाहो नेम तुम ।  
याहीतें कहा बदन डरावणो । आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी । ज्यो  
पीया मुगत सखीको पावनो ॥ ( सां० ) ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥

### ॥ ५ ॥ राग ललित ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ आज कृपन घर आवै ( देखो माई आ० ) ॥ रूप मनोहर ज  
गदानंदन । सबहीके मन जावै ( दे० ) ॥ १ ॥ केई मुगताफल थाल विशा  
ला । केईमणि माणक ल्यावै । ह्यगय रथ पायक केई कन्या । लेप्रजु  
वेग बधावै ॥ ( दे० ) ॥ २ ॥ श्रीश्रियांस कुमार दानेसर । इक्षुरस दान बहि  
रावै ॥ उत्तम दांन अधिक अमृत फल । साधुकीरत गुण गावै ॥ ( दे० )  
॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग रामकली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंगण कलप फल्योरी । हमारे माई (अं०) । ऊँचि वृद्धि  
सिद्धि सुख संपति दायक । श्रीशांतिनाथ मिल्योरी (ह०) ॥ १ ॥ केशर  
चंदन मृग मद घोली । माँहि वरास मिल्योरी । पूजित श्री शांतिनाथजी  
की प्रतिमा । अलग नदेग ठल्योरी ॥ (ह० अं०) ॥ २ ॥ शरणे राख  
रुपाकर साहिव । ज्युं पारेवो पल्योरी । समय सुंदर कहै तुह्यारी रुपासैं ।  
ऊँरहिसुं सोहिलोरी (ह० अं०) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऊँगेनै मोरा आतमराम । जिन मुख जोवा जइयैरे ॥ जिनजी  
नो दरसण ठै अति दोहिलो । ते किम सोहिलो जाणोरे । वार १ मानव  
जव एहवो । जुमवो मुसकल टाणोरे ॥ (ऊ०) ॥ १ ॥ च्यार दिक्शनो  
चटको मटको । देखीनैं मतराचोरे । बिनसी जातां वार न लागै । काया  
घटठै काचोरे ॥ (ऊ०) ॥ २ ॥ अनन्तगुणे जरियो हे जिनवर । पुरव  
पुण्यै पायोरे । एहनैं देखी दिलमें आनन्द । करतुं सदा सवायोरे ॥  
(ऊ०) ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोलक आयो । मूढ हिवै मति गमजोरे ।  
सहिज सलूणा पास जिणंद जीसुं । राजी ऊँच चित रमज्योरे ॥ (ऊ०)  
॥ ४ ॥ मन मां नीता माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे । लाज उदय  
जिनचंद्र लहीनैं । वरतूं सिद्ध वधाईरे । (ऊ०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

## ॥ ❀ ॥ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जज मन नाजि नन्दन देव (ज०) ॥ ध्यान मुनीजन अमि  
ग धारै । सुर नर करत है सेव ॥ (ज०) ॥ १ ॥ चक्री नूपति बने सुर  
पति । वासुदेव बलदेव । नमत ब्रह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥  
(ज०) अशरन शरनहै विरुद्ध जाको । जक्तिवहुल जेव । राजसिंह  
प्रभु कृष्ण शिरपर । नाथ है नित मेव ॥ (ज०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवोनेम रह जावो सदन । हम कौन संतावोरे (आ०)  
व्याहन आए सकुके सजन । पसुवनको सुन देख रुदन । गिरनारी चले

निज ठामि बतन । तकसीर बतावोरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ पुनम जैसे चं  
द्रवदन । मनमोहत मूरत स्याम वरन । मेरे नीकी लगी नव जबकी लगन  
मती ठेह दिखावोरे ॥ (आ०) ॥ २ ॥ संयम दूती लागी श्रवण । प्रभुके  
सिखाये नीके भ्रमन । सब छूटे प्रमंगे कोल बचन । रथ फेरी न जावोरे ॥  
(आ०) ॥ ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण । राजुल मन वैराग धरन ।  
लेजं दोड नेम जिनजीके शरण । शिवपुर तो बतावोरे ॥ (आ०) ॥ ४ ॥

॥ \* ॥ (खेमटा ताल दादरा) ॥ \* ॥

॥ १ ॥ अधम जगकाम जये आगीवान । हे ना निकला मुखसें क  
नी जगवान ॥ यार नही देखा समो सरणा । किया जबदधिमें उदर नर  
णा । दोमजो लेते प्रभुसरणा । दूर डख होते जनम मरणा । बैठ जब वरमें  
लगाया नही ध्यान । राज शिवपुरमें जवा अपमान । मरो अब दे  
खके काल खगवान ॥ हे० ॥ १ ॥ नाम जो जिनके दान देते । तो आ  
हुं मद तुमसें दूर रहते । यारजो जिनके चरण सेते । तो शपी सुमताकों  
तुमें देते । रहे तम जपमें सदा जोसूर । वरै वो जब जब अगम सुख नूर ।  
करै कपूर करम चकचूर । देखा जिन नूर जवे डख दूर । करो जब पार  
सुनो महरवान ॥ नाति० ॥ २ ॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ॥ \* ॥

॥ \* ॥ (राग पीलु) ॥ \* ॥

॥ \* ॥ आयो सही अब जाउं कहां शरणागतकों शरणागत तेरी ।  
(आ०) तोहू समान मिलयो नही कोई । ठूठ फिस्यो धरती सब हेरी ।  
(आ०) होय दयाल महा प्रभुजी अब । आन नई तुम सें नट नेरी ॥  
(आ०) ॥ १ ॥ दास कल्याण करै वीनती सुन । पारशनाथ सुपारस  
मेरी ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ \* ॥

॥ \* ॥ (राग खाम्बाज) ॥ \* ॥

॥ \* ॥ घनी २ पल २ तिन २ निश दिन । प्रभुको समरण करलैरे ।  
(घ०) प्रभु समरण सब पाप कटत है । अशुभ करम सब हरलैरे ॥ (घ०)  
॥ १ ॥ मन बच काय लगी चरण न नित । ज्ञान हियेमें धरलैरे ॥ (घ०)  
॥ २ ॥ दोलत राम प्रभु गुणगावै । मनवंति फल वरलैरे ॥ इति पदम् ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ शिखरगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमतो जले विराजो जी । शांवलिया महाराज शिखरपर ज  
ले विराजो जी ॥ तेरै घाटै चौकी लागै । श्रावक जाण न पावै । ऊकम  
कियो श्रीपाशजिनेसर । बांह पकम लेजावै ॥ ( तु० ) ॥ १ ॥ ऊंचा नीचा  
परवत सोहै । तलै जिलनका वासा । पैम पैम पर सिंह धमूकै । जिहां  
लिया तुल्य वासा ॥ ( तु० ) ॥ २ ॥ ठूंक ठूंकपर धजा विराजै । ऊलरकै  
ऊणकारै । ऊलरकै ऊणकारै सेती । वाजै अविचल वाजा ॥ ( तु० ) ॥  
दूर देशथी यात्री आवै । पूजा आण रचावै । अष्टद्रव्य पूजामें लावै ।  
मनवन्धित फलपावै ॥ ( तु० ) ॥ ४ ॥ सुर नर मुनिवर वंदन आवै । महा  
परम सुख पावै । चंदखुस्याल चरणको सेवक । हरष हरष गुण गावै ॥  
( तु० ) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शिखर गिरेंद्र जुहारो । निज पातिक दूर निवारोरे ॥ ( जवियां  
शि० ) ॥ इण सम तीर्थ न कोई । में देखा सज्ज जग जोईरे ॥ ( ज० सि० )  
॥ १ ॥ वीश जिनेसर आया । इहां मुक्ति पुरी सुख पायारे ॥ ( ज० ) ॥ कोमा  
कोमी मुनि सीधा । जिहां अजर अमरपद लीधारे । ( ज० ) वीश चरण  
जिन सोहै । जविजन चात्रक मनमोहैरे ॥ ( ज० ) ॥ २ ॥ ध्रुव मठ मंदिर  
गजै । जिहां पास प्रभु महाराजरे ॥ ( ज० ) ॥ ३ ॥ पावन तीर्थ एहवो ।  
इहां संसय धरवो न केहोरे ( ज० ) तीर्थ आसातन टालो । जविजन  
बहरीवत पालोरे ॥ ( ज० ) ॥ ४ ॥ नर जव लाहो लीजै । इण तीर्थ म  
हिमा कीजैरे ॥ ( ज० ) सय उगणीस ते तीसै । अगहन सुदि पंचमी दी  
सैरे ॥ ( ज० ) ॥ ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावै । जवि चंद गोविंद गुण गावैरे  
( ज० ) । जात्रा करी मनरंगै । चंदशिखर जणें अति चंगैरे ॥ ( ज० ) ॥ ६ ॥

## ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शांवरिया जैसें वणें तैसें तारो ॥ ( इस चालमें ) ॥ शांवरि  
यामें दीठो दरस तिहारो । मेरी जव जय बाधा ठारो ( शां० ) अश्वसेन न  
दन जगवंदन । जगबंधव जगप्यारो । नीलवरण युति श्रीजिनवरकी । वामा

उदर अवतारो ॥ (शां०) ॥ १ ॥ कमठ विमारण शिव सुखकारण । तारण  
तरण निहारो । अलख अगोचर अंगम अरूपी । निर्यामक सत्यवारो ॥  
(शां०) ॥ २ ॥ शिखर गिरी मंनन जिनवरजी । अदञ्चुत महिमा वारो ।  
करजोमी दोनं वीनती करत है । बुधसिंह अरजी धारो ॥ (शां०) ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ पावापुरी स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चरम प्रभु अरज हमारी धारो । मेरो आवागमन निवारो  
(च०) (आंकमी) सिधारथ कुल जनम लियोहै । तिसला उदर अवतारो ।  
सुरगण कोम मिली सुरगिर पर । स्नात्र महोन्नव सारो ॥ (च०) १ ॥ व  
सुविध पूज रचत जिनवरकी । सफल करत अवतारो । जय जय शब्द  
करत सुर नरवर । जय २ जगदाधारो ॥ (च०) २ ॥ बाल अवस्था अतु  
ल बली प्रभु । सहजा अतिसय चारो । दिक्षा ले प्रभु केवलपायो । श्री  
संध आनंदकारो ॥ (च०) ३ ॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत । नाथ निरंज  
न प्यारो । सीस मुगट सोहै अति सुंदर । गल मोतियनको हारो ॥ (च०)  
४ ॥ समवसरणकी अदञ्चुत महिमा । देखत नयना ठारो । नविजन चा  
त्रक अति हरपावै । स्वामी नाथ निहारो ॥ (च०) ५ ॥ चरम चौमाशी  
पावापुरिमें । कीधी जग हितकारो । शोलै पहर लग अमग देसना । प  
दनिरवाण पधारो ॥ (च०) ६ ॥ काल अनन्त जम्यो नव वनमें । कहत  
न आवै पारो । अब तो प्रभुको सरण ग्रहीमें । कवज न ठेडुं लारो ॥  
च०) ७ ॥ दूगम गौत्रे इन्द्र चन्द्र सुत । चंद्र गोविंद धमकारो । जात्रा  
कारी प्रभुकी उरंगै । जनम कृतारथ स्हारो (च०) ८ ॥ सय उगणीस ते  
तीस मनोहर । अगहन दशमी उजारो । सिपरचंद प्रभु शिवसुख दायक ।  
पूरव पुन्य जुहारो ॥ (च०) ९ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग कैरवो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मैं मुख देख्यो गोमी पारसको मेरो जनम सफल जयो  
आज ॥ आजरे मैं मुख देख्यो गोमी पारसको ॥ मेरो ० ॥ (टेक)  
अन्यदेवनकूं वञ्जत मैं ध्यायो । तोए न सखोजी मेरो काज ॥ आ  
जरे ० ॥ १ ॥ नव नव नटकत शरणे ऊं आयो । अब तो रखोजी मेरी  
लाज ॥ आजरे ० ॥ २ ॥ कमठ हरावन नागकूं तारन । संचलाव्यो नव

कार ॥ आजरे ० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । तारण तरण ऊहा  
ज ॥ ( नदां ० ) तारण तरण महाराज ॥ आ ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ किरपा करोरे गोमीपाश जिनेसर । तुम स्वामी अंतरजा  
मी ॥ टेक ॥ उंचे उंचे गढपर पासजी विराजे । चारे तरफ ज्ञानी ध्यानी  
किरपा ० ॥ १ ॥ नील वरण तोरो अंग विराजे । वदनोंकी जाऊं बलिहा  
री ॥ किर ० ॥ २ ॥ बांहे बाजुबंध बहेरखा विराजे । कुंमलकी ठवि हे  
न्यारी ॥ किर ० ॥ ३ ॥ ढूढत ढूढत में प्रभु पायो । पूरण पदवी अव पाई ॥  
किर ० ॥ ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमहं । रूपचंद पदवी पाई ॥ किर ० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब । साहेब मुजरा मेरारे ॥ टेक ॥  
साहेब सुविधि जिनेसर स्वामी । चरण पखालुं तेरारे ॥ मुजरा ० ॥ १ ॥  
केशर चंदन चरचूं अंगें । फूल चढावुं सेरारे । घंट बजावुं अगर उखेवुं ।  
करुं प्रदक्षिणा फेरारे ॥ मुजरा ० ॥ ३ ॥ पंच शब्द वाजित्र बजावुं । नृत्य  
करुं अधिकेरारे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखत । दास निरंजन तेरारे ।  
मुजरा ० ॥ ❀ ॥ इति ० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घंट बाजे घननननन । इंद्रलोक हरख जयो । जनमे वर्ध  
मान कुंवर । वीतराग तननननन ॥ घंट ० ॥ १ ॥ मृदंग ताल गुण विशाल ।  
ऊल्लरी नाद ऊननननन । घंट ० ॥ २ ॥ रूपचंद रागरंग । होत ध्यान  
मगनननन ॥ घं ० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरंजन सांझांरे । सांझ मेरा टुकसा मुजरालेत ॥ टेक ॥  
तुम हो तीरथका देवतारे । हम गिरिवरका मोर ॥ रुम रुम रुम रुम मे  
ऊला वरसे । कांझ ठम ठम नाचे मोर ॥ निरंजन ० ॥ १ ॥ हम गुण का  
ली कोयलीरे । प्रभु गुण आंवा मोहोर । मांजरके परसादसें कांझ । करने  
लागी सोर ॥ निरंजन ० ॥ २ ॥ तुमहो अमर देवतारे । हम केशरका  
गेम ॥ कनक कचोली हाथमां । कांझ पूजा करुं रंगरोल ॥ निरंजन ० ॥  
॥ ३ ॥ तुमहो मोतिनकी लरीरे । हमगुण उंमा जोर । रूपचंदकी येही  
अरज हे । दिलभर दरिशनदोर ॥ नि ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कल्याण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐसे सहेर बिच कौनसा दीवानहै ॥ टेक ॥ पानीके कोट

पवनके कांगरे । दश दरवाजे मंमान हे ॥ ऐसे ० ॥ १ ॥ पांच इंद्रीके  
ब्रवीश तस्कर । नगरकुं करत हैरान हे ॥ ऐसे ० ॥ २ ॥ प्रजा पुकार सु  
नी तब जाग्यो । चेतन राय सुजाण हे ॥ ऐसे ० ॥ ३ ॥ ज्ञानको बान  
वचन रस जेदे । हाथमें लाल कमान हे ॥ ऐसे ० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे  
तेनें वारो । दुशमन मान गुमान है ॥ ऐसे ० ॥ ५ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ आय रहो दिल वागमें । सुन प्यारे जिनजी ॥ ( आंकणी )  
चुन चुन कलीयों तोरे चरणे चढावुं । गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सुन ० ॥  
॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन आदि जिनेश्वर । खेल अनंता तोरा वागमें ॥ सुन ० ॥  
॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । जाते विकसित वन फागमें ( सुन ० ३ )

॥ ✽ ॥ रहो रहोरे यादव दोय घमियां । दोय घमीयारे अव चार  
घमीयां ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रेमका प्याला बोहोत मसाला । पीव  
त मधुरी सेलमीयां ॥ रहो ० ॥ १ ॥ हाथशुं हाथ मिलाइ दीयो सांइ । फु  
लमा बिगवुं सेजमीयां ॥ रहो ० ॥ २ ॥ राजुल ठोडी चले गिरनारे । दी  
पत मोहन बेलमीयां ॥ रहो ० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । मुक्ति  
वधू गुण बेलमीयां ॥ रहो ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ विराजो बंगलामें । विराजो मंदिरमें । प्रभु गोमीचा पारश  
नाथ ॥ वि ० ॥ ए टेक ॥ चुवा चुवा चंदन और अरगजा । केशर में  
गरकाव ॥ वि ० ॥ १ ॥ शिरसोनेको ठत्र विराजे । मोतियडां तपेरे लिलाड  
॥ वि ० ॥ २ ॥ जव सागरमें आइ पड्यो जूं । बांहे पकड मुऊ तार ॥  
वि ० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । आवागमन निवार ॥ वि ० ॥ ४ ॥

॥ ✽ ॥ कीनें देखा हमारा स्वामी । स्वामी अंतर जामीरे ॥ की  
नें ० ॥ टेक ॥ आठ जवनकी प्रीति प्रकाशी । नवमें गया शिवगामीरे ॥  
कीनें ० ॥ १ ॥ सहसावनके कुंज गलिनमें । मित्या मुने अंतरजामीरे ॥  
कीनें ० ॥ २ ॥ आप चले गिरनारकी ऊपर । नारी तारी केवल पामीरे ॥  
कीनें ० ॥ ३ ॥ कहे नथू प्रभू नेम नगीनो । कज्जं ठं आज शिर नामीरे ॥  
कीनें ० ॥ ४ ॥ ✽ ॥ इति ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ राग आशावरी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा । उस पदका करेरे निवेडा ॥



अवधू० ॥ टेक० ॥ तरुवर एक मूल बिन ठाया । बिन फूले फल  
 लागा । शाखा पत्र नहीं कर ननुकुं । अमृत गगन लागा ॥ अ०  
 ॥ १ ॥ तरुवर एक पंढी दोउ वेठे । एक गुरु एक चेला ॥ चेलें  
 जुग चुण चुण खाया । गुरु निरंतर खेला ॥ अ० ॥ २ ॥ गगन मंमलमें  
 अधविच कूवा । उहां हे अमीका वासा ॥ सुगुरा होवे सो जर जर पी  
 वे । नगुरा जावे प्यासा ॥ अ० ॥ ३ ॥ गगनमंमलमें गनुआं विहानी ।  
 धरती दूध जमाया ॥ माखन था सो बिरला पाया । ठाठ जगत जमाया  
 ॥ अ० ॥ ४ ॥ थड बिन पत्र पत्र बिन तुंबा । बिन जिज्या गुण गाया ॥  
 गावन बालेका रूप न रेखा । सुगुरु सोही बताया ॥ अ० ॥ ५ ॥ आत  
 म अनुभव बिन नहीं जानें । अंतर ज्योति जगावे । घट अंतर परखे  
 सोही मूरत । आनंदधन पद पावे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू ऐसो ज्ञान विचारी । वामें कोण पुरुष कोण नारी  
 ॥ अवधू० ( टेक ) बम्भनके धर न्हाती धोती । जोगीके घर चेली । कल  
 मा पढ पढ नईरे तुरकमी । आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥ १ ॥ सुस  
 रो हमारो बालो चोलो । सासू बाल कुंवारी । पिउजी हमारो प्होठे पाल  
 णीये । मैं जूं कुलावन हारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नहीं जूं परणी नहि जूं कुं  
 वारी । पुत्र जणावन हारी । काली दाढीको मैं कोइ नहीं ठोड्यो । ह  
 जुए जूं बाल कुंवारी ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ अढी बीपमें खाट खटूली । गगन  
 जेशीकुं तलाइ । धरतीको ठेडो आज्ञकी पिठोमी । तोए न सोड जराणी  
 ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ गगन मंमलमें गाय बीआणी । वसुधा दूध जमाई । स  
 जे सुनो जाइ विलोणां विलोवें । कोइ एक अमृत पाईरे ॥ अवधू ॥ ५ ॥  
 नहीं जाउं सासरीए नहीं जाउं पीयरीये । पीयुजीकी सेज बिठाइ ॥ आनं  
 दधन कहे सुनो जाइ साधो । ज्योतसें ज्योत मिलाइरे ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बेर बेर नहीं आवे । अवशर । बेर बेर नहीं आवे ( ए टेक )  
 ज्युं जाणे त्युं करले जलाइ । जनम जनम सुख पावे ॥ अवशर० ॥ १ ॥  
 तन धन जोवन सबही कूगो । प्राण पलकमें जावे ॥ अवशर० ॥ २ ॥

तन ठूटे धन कोण कामको । कायकूं रुपण कहावे ॥ अब० ॥ ३ ॥ जाके  
दिलमें साच वसत हे । ताकूं तूठ न जावे ॥ अब० ॥ ४ ॥ आनंदघन प्रजु  
चलत पंयमें । समरि समरि गुण गावे ॥ अब० ॥ ५ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ राग कैरवो ॥ ॥

॥ ॥ ए जिनके पाये लागरे । तुनें कहीमें केतो ॥ ए जिनकेपा० ॥  
( ए टेक ) ॥ आठेंड जाम फिरे मद मातो । मोह निंदरीयाशुं जागरे ॥  
तुने० ॥ १ ॥ प्रजुजी प्रीतम विन नही कोइ प्रीतम । प्रजुजीनी पूजा घ  
णी मागरे ॥ तुनें० ॥ २ ॥ जवका फेरा वारी करो (जिन चंदा । आनंदघन  
पाये लागरे ॥ तुनें० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ हारे चित्तमें धरोरे प्यारे चित्तमें धरो । एती शीख हमारी  
प्यारे चित्तमें धरो । ( ए आंकणी ) थोमासा जीवनकाज अरे नर ।  
कायेकूं ठळ परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ कूड कपट परद्रोह करो  
तुम । अरे नर परजवधी न मरो ॥ एती० ॥ २ ॥ चिदानंद जो ए  
नही मानो तो । जनम मरणके डःखमें परो ॥ एती० ॥ ३ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ राग गौमी ॥ ॥

॥ ॥ अबधू निरपद्ध विरला कोइ । देखा जग सब जोइ ॥ अबधू०  
॥ टेक ॥ समरस जाव जला चित्त जाके । थाप उरथाप न होइ ॥ अ  
विनाशीके घरकी वातां । जाणेंगे नर सोइ ॥ अबधू० ॥ १ ॥ राव रंकमें  
जेद न जाणे । फनक उपद्रव सम लेखे ॥ नारी नागणिको नही परिचय ।  
तो शिव मंदिर देखे ॥ अबधू० ॥ २ ॥ निंदा स्तुति अबणे सुणीनें । हयं  
शोक नवि आणें ॥ ते जगमें जोगीसर पूरा । नित चढते गुणठाणें ॥  
अबधू० ॥ ३ ॥ चंद्रसमान सौम्यता जाकी । सायर जेम गंजीरा ॥ अप्रमत्त  
चारुन परें नित्या । सुर गिरि सम शुचि धीरा ॥ अबधू० ॥ ४ ॥ पंकज  
नाम धराय पंकजुं । रहत कमल जिम न्यारा ॥ चिदानंद ऐसा जिन  
उत्तम । सो सादेवका प्यारा ॥ अबधू० ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग प्रभाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालणां जरूर जाकुं ताकुं कैसा सोवणां ( ए आंकणी ) नया  
जब प्रातकाल । माता धवरावे बाल । जगजन करत सकल मुख धोव  
णां ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरनिके बंध बूटे घूवम नये अपूठे ॥ ग्वाल बाल  
मिलके । विलोवत विलोवणां ॥ चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग तून्नि तेरे  
काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय । वृथा नही खोवणा ॥ चा० ॥ ३ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समऊ परी । मोहे समऊ परी । जग माया अब ऊठी मोहे ॥  
समज० ॥ ए आंकणी ॥ काल काल तुं क्या करे मूरख । नही नरोसा प  
ल एक घरी ॥ जग० ॥ १ ॥ गाफिल तिनजर नांही रहो तुम । शिरपर  
घुमे तेरे काल अरी ॥ जग० ॥ चिदानंद ए बात हमारी प्यारे । जाणो  
तुम चित मांहे खरी ॥ जग० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग गजल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजुल पुकारे नैम पिया । ऐसी क्या करी ॥ मुजे ठोमके चले हो  
चूक हमसें क्यापरी ॥ राजु० ॥ १ ॥ हुइ आशकी निराश । उदाशीनता घमी ॥  
प्यारा बस नही हमेरा । प्रीतम पीरमें पमी ॥ राजु० ॥ २ ॥ हमसें रखो न  
जाये । प्रीतम तुम विना घमी ॥ संयम लीजीये दयाल । दया धर्म आदरी ॥  
राजु० ॥ ३ ॥ निशदिन तुमेरा नाम । देते ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनिचंद विज  
य चरण कमल । चित्तमें धरी ॥ राजु० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ राग धन्याश्री ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कौन किसीको मित्त । जगतमें कौन किसीको मित्त ॥ ए आ  
कणी ॥ मात तात उरजात सजनसें । कांइ रहेत निचिंत ॥ ज० ॥ १ ॥  
सबही अपने स्वारथके है । परमारथ नहिं प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न  
होसी । मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० ॥ २ ॥ उठ चलैगो आप इकेलो ।  
तुंही सुं सुविदीत ॥ कोनहिं तेरो तुं नही किसको । एह अनादी रीत ॥  
ज० ॥ ३ ॥ तार्ते एक जगवान जजनकी । राखो मनमें नीत ॥ ग्यान  
सार कहे येह धन्याश्री । गायो आतम गीत ॥ ज० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वाजत रंग वधाई नगरमें ॥ वा० ॥ जय जयकार जयो जि  
नशासन । वीर जिणंदकी डहाइ ॥ न० ॥ वा० ॥ १ ॥ सब सखियन मिल  
मंगल गावै । मोतीअन चौक पुराइ ॥ न० ॥ वा० ॥ २ ॥ केशर चंदन  
जरीय कचोली । साहिव ज्योति सवाई ॥ न० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हरखचंद  
प्रभु दर्शन देखत । आवत नैन जराइ ॥ न० वा० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलांजी मेरो नेम चल्यो गिरनार । एकेली जानसैं ॥ मेरो०॥  
राजुल ऊनी अरज करे ठे । (जलांजी मेरी) अरज सुनो महाराज ॥ एके  
ली० ॥ १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी । (जलांजी उवांतो) पशुवनकी  
सुनी ठे पोकार ॥ एकेली० ॥ २ ॥ सहसावनकी कुंजगलिनमें । (जलांजी  
उवांतो) पंच महाव्रत धार ॥ एकेली० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल बिनये ।  
(जलांजी मेरो) होजो मुक्तिमें वास ॥ एके० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसुपाश जिनराज ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदीसर जिनराज । विजुवनके महाराज ॥ आजहो आयो  
रे में शरणें प्रभुजी तुम तणें जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ग्यान अंकूर । प्रगढ्यो  
पुण्य पटूर । आजहो जागीरे मुक्त मनमें तुमनी सेवना जी ॥ २ ॥  
लगन लागी जरपूर । दोष गये सब दूर । आजहो ठोडुं रे नंदी तुम प  
द सेवा सुखकरूजी ॥ ३ ॥ नाचिराय कुल चंद । मरुदेवीके नंद । आज  
हो राखोरे प्रभु मुक्तुं निज चरणे सदा जी ॥ ४ ॥ अमृत धर्म सुजाण ।  
शीश कृपा कल्याण । आज हो रागेंरे प्रभु आगें आ बिनती करेजी  
॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रसना सफल नई । मैं तो गुन गाये महाराज ॥ रसना०॥ (ए आ  
कणी) ॥ परम आनंद प्रगट जयो मेरे । जब देखे जिनराज ॥ रसना०  
॥ १ ॥ अति उज्ज्वल जश सुन जिनजीको । संच्यो सुकृत समाज ॥  
नाक नमन करतां प्रभुजीकूं । साखा आतम काज ॥ रसना० ॥ २ ॥

पदपंकज प्रभुके फरसतही । दूर गई दुःख दाऊ । कहत कृमाकल्याण  
सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोमी गाइयें मन रंग ॥ गो ० ॥ एक ध्यानै एक तानै ॥ कर केदा  
रो संग ॥ गोमी ० ॥ १ ॥ जात्रा कीजैं अमृत पीजैं । नीर वहेरी गंग ॥ रोग  
शोग कलेश नासे । आलस नावे अंग ॥ गो ० ॥ २ ॥ पोढतां प्रभु नाम  
लीजै । आणी मन नरंग ॥ अन्नय तेहने ऊंघ मांहे । कदिय न होवे  
चित्त जंग ॥ गो ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हारे ऊं तो मोह्योरे लाल । जिनमुखमानें मटके ॥ टेक ॥  
नयण रसाला ने वयण सुखाला । चित्तमुं लीधुं चटके ॥ प्रभुजी केरी न  
क्ति करंता । करम तणी कस तटके ॥ हारे ० ॥ १ ॥ मुऊ मन लोनी  
नमरतणी परें । जिनगुण कमलें अटके । रत्न चिंतामणि मुंकी राचे । क  
हो कोण काच तणे कटके ॥ हारे ० ॥ २ ॥ ए जिन थुणतां क्रोधादिक  
सऊ । आस पासथी हटके ॥ केवलनाणी वऊ सुखदाणी । कुमति कुग  
तिने पटके ॥ हारे ० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे । तेतो झूल्या  
नटके ॥ जाव नक्तिशुं उलग करतां । वंठित सुखमे सटके ॥ हारे ० ॥ ४ ॥  
मूरत संभव जिनेश्वर केरी । जोता हइडुं हटके । नित्य लाज कहे प्रभु ए  
मोहोढो । गुण गाऊं ऊं लटके ॥ हारे ० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ राग काफो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुजीसैं लागो हारो नेह सखीरी । अब कैसें कर बूटेरी ॥  
प्र ० ॥ टेक ॥ धिग धिग जगमें वाको जीयो । आपणा प्रभुजीसैं रूसेरी ॥  
प्र ० ॥ १ ॥ जो कोइ प्रभुजीसैं नेह करेगो । शिव पुरनां सुख लेहसेरी ॥  
प्र ० ॥ २ ॥ सेवा राम प्रभु गांठ रेशमकी । लगी प्रीत नही तूटेरी ॥ प्र ० ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ ॥ राग रामग्री ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीयै । धर्मनाचार प्रकार ॥ दान शीय  
ल तप जावना । जगमां एतंत सार ॥ रे जीव ० ॥ १ ॥ वरश दिवसनै

पारणें । आदीश्वर अणुगार ॥ इक्षुरस दान बहुरावीयो । श्री श्रेयांस कुमार ॥  
 रे जीव ० ॥ १ ॥ चंपा पोल उद्यामीयां । चालणीयें काढ्यो नीर ॥ शतीय  
 सुन्नद्रा यश थयो । शीयल मेरु गंजीर ॥ रे जीव ० ॥ ३ ॥ तप करी का  
 या शोषवी । अरस निरस आहार ॥ वीरजिणंद बखाणीयों । धन ध  
 नो अणुगार ॥ रे जीव ० ॥ ४ ॥ अनित्य जावना जावतो । धरतो निश्चल  
 ध्यान ॥ नरत आरीसा नुवनमें । पाम्यो केवल ज्ञान ॥ रे जीव ० ॥ ५ ॥  
 जैन धर्म सुरतरु समो । जेनी शीतल ठंय ॥ समय सुंदर कहे सेवतां ।  
 मन वंठित फल पाय ॥ रेजीव ० ॥ ६ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

### ॥ ✽ ॥ पुनः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । बेरन निद्रा तुं कहांसैं आई ॥  
 सोइ ० ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा कहे मेंतो वालीरे जोली । बने बने मुनि  
 जनकूं नाखुरे दोली ॥ सो ० ॥ १ ॥ निद्रा कहे में तो जमकी दासी । एक  
 हायमें मुकी उर डसरे हाथमें फासी ॥ सो ० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो  
 जाइ बनीयां । आप डुवे सारी डुव गइ डुनियां ॥ सो ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ चंद्रा प्रजुजीसैं ध्यानरे । मोरी लागी लगनवा ॥ चं ० ॥ लागील  
 गनवा ठोमी न बूटे । जबलग घटमें प्राणरे ॥ मोरी ० ॥ चं ० ॥ १ ॥ दान शीय  
 ल तप जावना जावो । जैन धर्म प्रतिपावरे ॥ मो ० ॥ चं ० ॥ २ ॥ हाथ जो  
 न कर अरज करत हैं । बंदत शेरखुशालरे ॥ मोरी ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ते मुक्त पुर गये रहेरे । वारी सकल करम दल खय कर ते ॥  
 मु ० ॥ ए टेक ॥ अविनाशी अविकार हे । परमात्म शिवधामरे ॥ समाधान  
 सरवंगे रूपी । मेरे मन बसे बसेरे ॥ वारी ० ॥ १ ॥ शुद्ध शुद्ध अविरुद्ध हे । वहे  
 अनादि अनंतरे ॥ वीर प्रजुके आगे गौतम । अमृत पद लहे लहेरे ॥ वारी ० ॥ ३ ॥

### ॥ ✽ ॥ राग काफी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ खतरा दूर करनां । दूर करनां । एक ध्यान प्रजुका धरनां ॥ खतरा  
 दूर करनां ॥ दू ० ॥ टेक ॥ जबलग पांचो निमंल करनां । तब लग जिन  
 अनुसरनां ॥ खतरा ० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरनां । सुमति गुनि  
 चित्त धरनां ॥ खतरा ० ॥ २ ॥ संवर जाव सदा मन धरनां । आत्म उर  
 गति हरनां ॥ खतरा ० ॥ ३ ॥ धन कण कंचन कुंम्या करनां । आपर एक

दिन मरनां ॥ खतरा ० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रज्जु पाए परनां । शिव सुंदरी  
सुख वरनां ॥ खतरा ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पानीमें मीन पियासीरे । सुन सुन आवत हांसीरे ॥ टेक ॥ सु  
खसागर सब ठोर जस्यो हे । तुं कां जयो उदासीरे ॥ पानी ० ॥ १ ॥ आ  
त्मज्ञान विन नर जठकत हे । क्या मथुरा क्या काशीरे ॥ पानी ० ॥ २ ॥  
मान मुनि कहे ए गुरु साचो । सहजे मिले अविनाशी रे ॥ पानी ० ॥ ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ गरवा चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन रे दीवाली ह्यारे आजुनीरे । मेंतो ठवी निरखी  
जिनराजनीरे ॥ धन धनरे दीवाली ह्यारे आजनीरे ॥ टेक ॥ पहेरी अंगी  
अलोकिक जातनीरे । मांही बुट्टी दीसे जांत जांतनीरे ॥ धन ० ॥ १ ॥  
मणी हीरा मुकुटमां जड्या वजरे । कानें कुंमलनी शोभा शी कजरे ॥  
धन ० ॥ २ ॥ मुने किरपा करी ते जं कजं कशीरे । मारे बाहाले मुज  
सामुं जोयुं हसीरे ॥ धन ० ॥ ३ ॥ प्रज्जु शांति जिणंद हृदये वस्यारे ।  
थई सूरशशीनी चढती दशारे ॥ धन ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन आजुनो दिन रलियामणोरे । सूरज सोनानो उग्यो  
सोहामणोरे ॥ धन ० ॥ टेक ॥ बाहणुं वातां प्रज्जुने चरणे नम्योरे । जिन  
राज ते माहरे मन गम्योरे ॥ धन ० ॥ १ ॥ नव ग्रह समा थया ह्यारे आ  
जथीरे । वली दशा ते श्री जिनराजथीरे ॥ धन ० ॥ २ ॥ मुख जोतां ते  
डुख सरवे गयुरे । बालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युरे ॥ धन ० ॥ ३ ॥ आपी  
सेवा ते शुद्ध मनथीखरीरे । सूर शशी ऊपरें करुणा करीरे ॥ धन ० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्यारे आज आनंद वधामणांरे । जं तो लेउरे बाह्वाजीना जा  
मणारे ॥ ह्या ० ॥ टेक ॥ मुनें दास पोतानो जाणीयोरे । आथमतां ठेकाणें  
आणियोरे ॥ ह्यारे ० ॥ १ ॥ आप्युं दरशन जें डुल्लज देवनेरे । मुने कीधुं तुं  
रहेजे मारी सेवमेरे ॥ ह्यारे ० ॥ २ ॥ एवो दीधो जरोसो साचा गुरूरे । प्र

जु बिना जगत् मिथ्या सहूरे ॥ ह्वारे ० ॥ ३ ॥ लहरे करीने महारा मन  
रम्यारे । सूर शशीने जिनराजजी गम्यारे ॥ मारे ० ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी ॥ स ० ॥ ए संसार जैसा  
सांजेलाना । घडपण आया घोडे चमी ॥ मांगी तुंगीने ठव धरायो । केनो  
कंदोरो केनी कडी ॥ सवा ० ॥ १ ॥ साधो चाई जिनने संजारो । जन्म  
दशा जेम आवी चडी । कहे लीवो नजतुं नगवतने । मोक्षजवानी ए वात  
खरी ॥ सवा ० ॥ २ ॥ इति ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ लावण्यां संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अगडडं अगमडं वाजे चौघडा । सवाइमंका साहेवका । ननं ठ  
ननं अवाज होता । महेल वनाया गगनोंका ॥ कल्याण पारशनाथ नाम  
का । नित नित वाजै चौघमा । तीन लोकमें सच्चा साहेव । पार्श्वनाथ अव  
तार वमा ॥ १ ॥ वणारशी नगरीमें तेरा जनमहे । माता वामाके तंदा ॥  
अश्वसेनके कुलमें शोभे । जैसा सरदपूनम चंदा ॥ स्वर्गलोकमें ज्वा आ  
नंदा । इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेवीश क्रोम देवता मिलकर । उज्जव करनेकूं  
आवे ॥ २ ॥ कोइ आवतां कोइ गावतां । कोइ नाम लेता देवा ॥ चोस  
ठ इंद्र अरज करता । चंद्र सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेवके  
आगे । अरज करता खमा खमा ॥ जिनके सरूपको पारन पावे । जिन  
का गुण हे सबसे वमा ॥ ३ ॥ दूर देशसँ आया जोगी । वमे जोर तपस्या  
करता ॥ नीचें लगाता ज्वाला जोगी । वमे वमे जोकें खाता ॥ वार वरस  
की उमर प्रभुकी । ठोटे पनमें बहोत कला ॥ वरोवरीके लीये सोवती ।  
तपशीकूं देखन चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसँ । ऐसी तपस्या क्युं  
करता ॥ उ जोगी तेरे वमे लकमें । वमा नाग इक अध जलता ॥ पारस  
नाथ जोगीशुं कहेता । तोवी जोगी नही सुनता ॥ लकडे दीये फैंक जंग  
लमें । लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमनें । वमा नाग  
कों जला दीया ॥ दिया सार नवकार नागकूं । धरणीधर पदवीपाया ॥ बडी  
उमेदसँ आया साहेव । संवत्सरीका दान दीया ॥ मात पिताकी आज्ञा ले  
कर । महाराजनें योग लीया ॥ ६ ॥ राज ठोमकै चले जंगलमें । जुगतीसँ



कानुसंग किया ॥ बने धीर गंज्जीर प्रज्जुने । तीन लोकमें नाम किया ॥  
 उष्ण कालकी बड़ी धूपमें । नीरंजन निरंकार खमा । कमठासुरने किया  
 कडाका । नम्रमंमल बादल चमा ॥ ७ ॥ उहि दिनको कमठासुरने । पीठ  
 ला दावा जगवाया ॥ मेघमालिकी सेना लेकर । जलकूँ जलदी बुलवाया ॥  
 बडा किया घमघोर जोरसें । पवन चलाया मतवाला ॥ कडक कडक कर  
 झुआं कमाका । चमक बीजका अजुवाला ॥ ८ ॥ मूसल धारा मेघ बरस  
 ता । गगन गाजता चौताला । सात खूमकी बनी ऊनीमें । प्रज्जु खमा हे  
 मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी । नाथ निरंजन धीर बमा । पराजय  
 नहि होय जिनुंका । ऐसा प्रज्जुका ध्यान चढा ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन  
 मोल्यो । हूवा घंटका अवाजा । अवधि ज्ञानसें इंद्र देख्या । धान धान  
 धरणी राजा । धरणीधर जलदीसें आया । पदमावतीकूँ संग लीया ।  
 पदमावतीने लीये शीशपर । शेषनागनें ठव्र किया ॥ १० ॥ कोम  
 नपाय कीये कमठनें । कुठ इलाज नही चलता । तरने वाला सा  
 हेव उनकूँ । ठलने वाला क्या करता । जीते श्री जिनराज हारके ।  
 कमठ हाथ दो जोम खमा । धरणीधर साहेबके आगै । अरजी करता  
 खमा खमा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिव पुरकूँ पहाँचे । पार्श्वनाथ गुप्त मत  
 वाला । लगी ज्योतमें ज्योत दीपकी । तपे तेजका अजुवाला । बीशनगर  
 में पार्श्वनाथका । देवल बनाया तेताला । बने देवलमें इंद्र सोहे । घंट  
 वाजता चौताला ॥ १२ ॥ बनी जुगतसें सिंघासन कर । कोट बनाया देव  
 लका । जगो जगोपर शिखर चढाया । दरवाजा गुप्त केवलका । नामंडलके  
 आगे सोजता । मूल गंजारा आरसका । पीठे पचीश देरीयां सोजित ।  
 सिरे काम सिंघासनका ॥ १३ ॥ मूलनायकके ऊपर सोहे । सहस्र फणा  
 प्रज्जु पारशका । चौमुखकी चतुराई बनी हे । बज्र काम है सारसका । अ  
 ढारसै पैसठ सवाई । सुहूर्त फागुणमाश चला । सुदि त्रीजकूँ तखतें बेठे ।  
 जगो जगोपर नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघ बज्र मिलकर । तेरे  
 दर्शनकुं आया । जगत गुरु जिनराज जगतमें । बनी तेरी अकल माया ।  
 धर्म चंद जोडता सवाईने । बमा सामी वात्सल्य किया । सकल संघकी  
 आज्ञा लेकर । बडा शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ कर्मचंदनें देवचं

दने । खेम चंदने खूब कीयां । पारसनाथकुं तखत वेठाके । जगो जगो पर  
नाम कीया । कीर्ति विजय गुरु राजकुं प्रणमुं । पायगुरुका राज वना ।  
गुलाबचंद साहेबके आगें । जिनशासनका काम वना ॥ १६ ॥ तेजा गा  
वत चंग रंगसैं । ग्यान ध्यानसैं खमा खमा ॥ हाथ जोड कर अरजी कर  
ता । पारसनाथजी तुंही वना ॥ वना काम तेरे हे साहेब । मुखसैं नहिं  
कहणैं आता ॥ शिव रमणीकुं वरी हे जिनजी ॥ जविजनकूं सुखके दाता ॥ १७ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजै । मैं ऊं दाशी चरनोकी । तोरन  
आइ फेर मत जाउ । तुमकुं सोगन यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ  
तुम व्याहन आए । लारे सेना माधवकी ॥ ठणन कोरु यादव मिल  
आये । ए अवसर नही फिरनैकी ॥ नेम० ॥ २ ॥ रथ फेरी गिरिवरकुं सि  
धाये । हमकुं ठांमी नव नवकी । मेरे सामरे श्याम सखूने । मैं इहां नही  
अव रैनैकी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ सुण जिनजी में तोकुं कउं ऊं । देखु सोना  
गिरिवरकी । मात पिता बंधव सब ठंडी । जाशु संगें यादवकी ॥ नेम० ॥  
॥ ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राजुल । वात सुनो पियु मुऊ घरकी । हमकुं  
ठोड चले निरधारी । अब हे प्रीतम सरणैकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नेम कहे  
तुम सुनो हो राजुल । विषया रस है विष सरिखी । ये संसार असार निरंतर ।  
कर करनी ए तरनैकी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ पियुजी पासैं संयम लीनो । जि  
नसैं कारज शरनैकी ॥ तपस्या करीनैं उत्तम कीनी । ए नव पार ऊतरनैकी  
नेम० ॥ ७ ॥ पीयुजी पहेलां राजुल नारी । पोहोतां सेज परमपदकी ॥  
केवल पामी नेम सिधाए । येही शोभाहे जिनकी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ चतुर  
कुशल ये कही लावनी । जिनसैं काया ऊधरनैकी । अरिहंत ध्यान धरे  
दिलमाहे । फिर फेरा नहिं फिरनैकी ॥ नेम० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिनदाशजी कृत १० घन लावण्यां ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार । सफल करले अपनो अवतार ।  
ध्यान तुम मनमें धरो नर नार । खाए दुःखकी ए हे संसार । करो प्रभु  
न्याल अजी जिनदाश । रखो प्रभु मुऊ चरणोंके पाश ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥  
॥ ॐ ॥ २ सरक जा कुमति नार काली । तेरी संगतसैं गई लाली ॥

सोवत समताकी में टाखी । आतमा तपमें नहिं वाली ॥ अनंत भव बीत  
गया खाली । वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदाश मांगे । सदा  
पद प्रभुजीकूं लागे ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ३ शीश नित नमं नाजिनंदन । चरण पर चढे केशर चंदन ।  
करत सब इंद्रादिक बंदन । कटत हे कर्मोका फंदन । साध्यो तैं शिवपुर  
को साधन । सर्व जीवनकुं सुख कंदन । जिनंद गुण जिनदाश गावे ।  
सीस चरणोंसैं नमावे ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ बोलत हैया मेरा हसकर । चढावुं चंदन चूवा धसकर । पैठा  
में धर्मोंमें धसकर । पाप दल दूर गया खसकर । चेतन ऊवा खमा कमर  
कसकर । हटाया कर्मोका लसकर । श्री जिनराज ऊहाज खासा । शर  
ण जिनदाश लीया वासा ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ समऊ मन मेरा मतवाला । तुजें नहिं कोइ हटकणवाला ।  
वस्या तेरे हृदये कुगुरु काला । दिया तैं सुरगतिकुं ताला । फेरतो ममता  
की माला । बालतो जगवंत पर जाला । दयासैं दे दिया ताला । देखो  
जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कीया मैं गणधर प्रेमपती । मुजे वरदायक हे सरसती । करी  
निर्मल निरर्थ मती । पूठ पर खमे जागता जती । मुजे बलवंत नई सो  
ल सती । मिटी मेरी दुर्गतकी सब गती । ऐसा घन जिनदाश गावे । अ  
चल पद भक्तिसैं पावे ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विकट घट दुर्गतका जारी । नीर ज्यां भरती कुमति नारी ।  
बरछी उन नैनोकी महारी । मुब्या केइ कामी संसारी । इनोंकी हो रही  
खूआरी । जीत्या कोइ सत्य धरमधारी । प्रभु तुम परमारथ पाया । शरण  
अब जिनदाश आया ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चेत नर निगोदका वासी । कराई जगमें तैं हांसी । कुमतिकी  
पत्नी गले फांसी । सुमतिसुं रखी हे ऊदासी । कुमतिकी बसी सेज खासी ।  
मान रक्षो ममताकुं मासी । हियो खोल अरिहंतकों परखो । करो जिनदा  
श आप सरखो ॥ ८ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ९ अफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सुत्रोंकी नहिं मानी ॥

क्रीया नहिं गुरु निग्रंथ ग्यानी । कानसैं खगी कुमति रानी । जगतमें उतर  
गया पानी । गति तेरी डुरगतिकी ठानी । सेवक तेरा जिनदाश वाजे ।  
सुधारोगे तुमही काजें ॥ ए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १० सफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सूत्रोंकी तैं मानी । कि  
या निज गुरु निग्रंथ ग्यानी । कानसैं खगी सुमति रानी । जगतमें अधिक  
चढ्यो पानी । गति तेरी सुरगतिकी ठानी । सेवक तेरा जिनदाश वाजे ।  
सुधारोगे तुमही काजें १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चल चेतन अब उठ कर अपने । जिनमंदिर जइये । कीसी  
की झूमी ना कहियें रे । कीसीकी झूमी ना कहियें ॥ चल ॥ ( ए आंक  
णी ) । चरन जिनवरजी का जेटो । चर ॥ जबजब संचित पाप करम स  
ब । तन मनका मेटो । सुकृत कीजें । महाराज । सुकृत ॥ जिनवरका गु  
ण भज लीजै । समकित अमृत रस पीजै । लाज जिननक्तीको लहियें रे ॥  
लाज ॥ चल ॥ १ ॥ करो मत मुखसैं वमाई ॥ करो ॥ तजतामस तन म  
नकी सुमतिसैं धरैनां जाई । रीतसैं बोलो । मेरी जान । रीत ॥ आतम स  
मतामें तोलो । मत जरम पारका खोलो । मौन कर तन मनसैं रहियें रे ॥  
मौन ॥ चल ॥ २ ॥ जोवन दिन चार तणो संगीरे ॥ जोवन ॥ अं  
त समय चेतन उठ चाले । काया पडी नंगी । प्रीत सब तूटी । मेरी जा  
न ॥ प्रीत ॥ आज्ञाखाकी खरची खूटी । चेतनसैं काया रूठी । सुख दुः  
ख आप किया सहियें रे । सुख ॥ चल ॥ ३ ॥ जगतसैं रहता ऊदा  
सी रे । जग ॥ परख्या में जिनराज हरो । मेरी डुरगतकी फासी । तजो  
सब धंदा । मेरी जान । तजो ॥ जिनवर मुख पूनम चंदा । जिनदास तुमा  
रा वंदा । मेरे एक जिन दर्शन चाहियें रे ॥ मेरे ॥ चल ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम भजो जिनेश्वर देव । मुगति पद पाईरे ॥ मुगति ॥ अब  
अचल अखंडित ज्योत । सदा सुखदाईरे ( ए आंकणी ) में रुट्यो चोराशी  
मांहे । झूट्योमें जरम । झूट्यो ॥ महारे उदये अनंतां दुःख । बांध्यां जब  
कर्म ॥ मैं कदियक हूँ रंक । फिखो तजि शरम ॥ फिखो ॥ अरु कदियक

करे जिनदाश अलष गुण गाया । अब बुरा कुगुरु उपदेश । सुणो मत  
जाया ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दे गया दगा दिलदार । सुनो मेरी माई । सु० । लग रही नेम  
दर्शनकी । सरस असनाई ( ए आंकणी ) । अब अजब अलीजो नेम । मे  
रे शिर ठाजे ॥ मेरे० ॥ जादवकी देखी जान । जगत सब लाजै । एसो नेम  
नवल एकबीद । अनोखो ठाजे । अनो० । सुर नर सब गावे गीत । गगन  
में गाजे । अब दोम दोम सब डुनीयां । देखन आई । दे० । ल० दे० ॥ १ ॥  
अब चढ्या नेम तोरनकुं आनंद दिल धर कर । आन० । सज आये सुरंगी  
साज । कीलोला कर कर । मैं पायो परमानंद हरख हियो नर कर । हर  
ख० ॥ ले गयो पति नेमनाथ । मेरो चित हर कर । सखि सुख संपत आ  
गनमें । आज चल आई ॥ आ० । ल० । दे० ॥ २ ॥ अब इण अवसरमें सुर  
त । श्यामकी लागी ॥ श्या० ॥ प्रशुअनकी सुनी पोकार । दया दिल  
जागी । जिन लही परवतकी बाट । तृणकुं त्यागी ॥ तृण० ॥ शिवर  
मणीके शिरविंद । बन्यो बैरागी । अब महेल चढी राजलकुं । खमी ठट  
काई ॥ खमी० ॥ दे० ॥ ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें । ठिके नही पानी ॥  
ठिके० ॥ जिन गुण गाया नहीं जाय । अलष जिंदगानी । अब कठण  
जीव डुरगतिको । बन्यो में दानी ॥ व० ॥ जिनदाश करो नव पार । दया  
दिल आनी । अब शरण सतीके बेठ । लावनी गाई । ला० । ल० । दे० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मगशी पार्श्वनाथकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुलक बिच मगशी पारशका । बाज रक्षा मंका । मुगतिगढ  
जीत लीया वंकारे । मुग० । मुलक० ( ए आंकणी ) करम दल बलकुं  
हय कीयारे । कर० । मुगति महेलमें केलि करे । अनुभव अमृत पीया ।  
शाशता जीया । महाराज । शा० । कल्याणक कारज कीया । अमरा पुर  
पदवी लीया । कमठ जशका कर गये फंका रे । क० । मुल० ॥ १ ॥ प्रजु  
पारश नजले आईरे । प्रजु० । जाव नरमका मेठ जीत । तेरी जगमें  
सवाई । टेककुं टालो । महाराज ॥ टेक० ॥ चंचल चित्तसें मत वालो ।  
गुमान गरवकुं गालो । गरवसें धूल मली लंका रे ॥ गर० ॥ मुलक० ॥

॥ २ ॥ मेरे शुभ जाग्य उदय आया रे ॥ मेरे ० ॥ इण पंचम आरामां हे  
प्रजु । मगशी पारश पाया ॥ पापसें मरता । महाराज ॥ पाप ० ॥ जवि जीव  
ध्यान दिल धरता । आवक नित समरण करता । मरण दुःख मिट्या मेरे  
अंगका रे ॥ मरण ० ॥ मुलक ० ॥ ३ ॥ महीमा मगशीकी अब जानी रे  
मही ० ॥ लही उधम मेरी आंख बिलोया । परब विना पानी । मैं जि  
नवर जाच्या । महाराज ॥ मैं जिन ० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या । मगशी  
पारश है साचा । करो मत मनमें कोइ शंका रे ॥ करो ० मुलक ० ॥ ४ ॥

॥ ✽ ॥ केशरीयानाथ लावणी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सुणजों वातां राव सदां शिव । मत चढ जानां धूलेवा ॥  
गढपति उनका वना अटका । मत ठेनो तुम उन देवा । ( ए आंकणी )  
सकतावत चंभावत बोले । हमही नोकर उनहीका । हीडपति वाकूं हा  
थ जोमे । तीन जुवन शिर है टीका ॥ सु ० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल  
सबेही ॥ सुर नर वाकूं ध्यावत है । इंद्र चंद्र सुनि दर्शन आवे । मन  
की मोजां पावत है ॥ सु ० ॥ २ ॥ गया राज उनहीसें आवै । निर्धनिया  
कूं धन देवे । वांऊ खिलवे सुंदर लमका । सदा सुखी जेप्रजु सेवे ॥ सु ०  
॥ ३ ॥ तारे जिहाज समुद्रयें जइनें । रोग निवारे जब जबका । नूप जुजं  
गम हरि करी नदीयां । चोरन बंधन अरि दक्का ॥ सु ० ॥ ४ ॥ धौं धौं  
धौं धौं धौंसा वाजे । दशो दिशामें है रुंका । जाउ तांतीया नही जलाइ ।  
मत बतलावो गढ वंका ॥ सु ० ॥ ५ ॥ रानाजीके ऊमरावकी । मानत  
नांही ये वातां । धारा किया थेहीज पावो । मैं नही आवुं थां सांथां ॥ सु ०  
॥ ६ ॥ मूठ मरोडे चढे अजिमानें । जहेर जत्या है निजरूमे । कृषजदेव  
है साहेब सच्चा । देख तमासा फजहमें ॥ सु ० ॥ ७ ॥ मयाराम सुत जणे  
मूलचंद । बडे सितांधर तुम देवा । फोज बिखरगइ धर धर घोडा । ल  
आराखो तुम देवा सु ० ॥ ८ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ वैराग्य लावणी लिख्यते ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती ॥ काया मंगलकी । सासो स्वा  
स समरलैं साहिव । आउ घटै दिलकी ॥ १ ॥ ( खबर नही है जुगमें प  
लकी । सुकृत करणा हो सोकरलैं । कुण जाणैं कलकी ) ( ख ० ) तारे

मंमल रवि चंद्रमा । सबही चलाचलकी । दिवस च्यारका चमत्कार है ।  
 वीजलियां जलकी ॥ ( ख० ) ॥ २ ॥ यो जग है सुपनै की माया । उस  
 बूंद जलकी । बिनस जावतां बेरन लागै । डनियां जाय खलकी ॥ (ख०)  
 ॥ ३ ॥ हंसाया देहीमें जब लग । खुसीहै मझल की । हंसा ठाम चल्या  
 जब देही । मिटिया जंगलकी ॥ (ख०) ॥ ४ ॥ मन मावत तन चंचल हस्ती  
 मस्ती है बलकी । सदगुरु अंकुश दीया आनकै । बातां नई सलकी ॥ (ख०)  
 ॥ ५ ॥ मात पिता सुत बंधव जाई । सब जन मुतलबकी । काया माया स  
 बे कारमी । ए तेरै कब की ॥ ( ख० ) ॥ ६ ॥ ऊठ कपट कर माया जो  
 नी । कर बातां छलकी । बोलकी गांठ बंधी शिर तेरै । कैसें होय हलकी  
 (ख०) ॥ ७ ॥ देवधरम साहिबको समरण । ऐ बातां थलकी । राग वेष  
 ऊपजै नही जिनकुं । बीनती अखैमलकी ॥ (ख०) ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरज हमारी सुणो दीनपति । कौन जाति तिरणां । हम ड  
 खी फिरत संसार चतुर गति । सो तुमसैं निरना ॥ ( अ० ) ॥ १ ॥ घोरा  
 घोर नरक कै नीतर । नाना डख भरना । मारन तामन छेदन जेदन । और  
 देह धरनां ॥ (अ०) ॥ २ ॥ कबज्जक तिरयंच योनि पायकै । गलै पास  
 परना । कुया तृषा अरु शीत नृणता । मार मारकरना ॥ (अ०) ॥ ३ ॥  
 देव विभूति पायकै सुंदर । देख देख कुरना । जब माला मुर जावण लागी ।  
 सोच किये मरना ॥ (अ०) ॥ ४ ॥ मनुषा जनम पायकै नटक्यो । कज्ज  
 नांही थिरनां । साहिब तुम सरणागत राखो । जनम मरण हरनां ॥ (अ०)  
 ॥ ५ ॥ इति लावणी सं० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ मुक्ति जाएंकी भिगरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) तीर्थकर महावीरनै । कौशल गणधर साज । कानून  
 प्ररूप्या है दया । सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप जावना ।  
 अशल खुलासा सार । जिणपुरषां धारण किया । पोहचा मुगति मजार  
 ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु ऊवा । आर्या ठत्तीस हजार । लाखों आवक आ  
 वका । पाया जब जल पार ॥ ३ ॥ ( चाल हीर रंजैका ख्यालकी ) ॥ ❀ ॥  
 मेरी अदालतप्रज्जुजी कीजियै । जिन सासन नायक मुगती जाएंकी भिगरी

दीजियै (जि० टेर) खुद चेतन मुदई बना है । आतुं करम मुदाला । दावा र  
स्ता मुगति मारगका । धोखा देजाय टालाजी (जि०) ॥ १ ॥ तप कागद इष्टांम ।  
लिया । तलवाणां लिमा विचारी । सिझाय ध्यान मजमुंन वताकर । अर  
जी आन गुजारी जी (जि०) ॥ २ ॥ मैं जाता था मुगति मारगमें । क  
रमुंन आधेरा । धोखा दे कर राह जुलाया । लुंठ लिया सब मेराजी (जि०)  
॥ ३ ॥ बोहत खराब किया करमुंन । चौरासीकै मांही । डक्ख अनंता पा  
या मेंन । अंत पार कठु नांही जी (जि०) ॥ ४ ॥ सचे मिले वकील  
कानूनी । पंच महाव्रत धारी । सुत्र देख मसोदा कीना । तवमें अरजी मा  
री जी (जि०) ॥ ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्तीए । आतुं गवा बुलावो ।  
शील असेसर बना चौधरी । उसकुं पूठ मंगावोजी (जि०) ॥ ६ ॥ अरजी  
गुजरी चेतन तेरी । ऊवा सफीना जारी । हाजर आवो जुवाव लिखा  
वो । लावो सायूती सारीजी (जि०) ॥ ७ ॥ आतुं मुदाले हाजर आए ।  
मोह मुगत्यार बुलाये । च्यार कपायर आठे मदकुं । साथ गवाई में लाए  
जी (जि०) ॥ ८ ॥ (टेर मुदालैकी) ॥ जिनसासन नायक । जूग दा  
वा है चेतनजीवका । (जि०) हमनें नहीं चखाया इसकुं । ए हमरै घर  
आया । करजा लेकर हमसें लाया । ऐसा फरेव मचायाजी (जि०) ॥ ९ ॥  
विप्रयज्ञोग में रमिया चेतन । घाटा नफा न जाना । करजदार जब लारै  
लागा । तब लागा पिस्तानाजी (जि० जू०) ॥ १० ॥ हाजर खमे गवांह  
हमारै । पूठियै हालंजु सारा । बिनां लियां करजा चेतनसें । कैसें करें  
किनाराजी (जि० जू०) ॥ ११ ॥ (टेर) ॥ चेतन कहै सतावी मांही ।  
सुन शाशन सिरदार । इमानदार है गवा हमारै । जाणें सब संसार जी ।  
(जि० मे०) ॥ १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रजूजी । करम फरेवी जारी । जीव  
अनंते राह चलतकुं । लुंठ चौरासीमें मारा जी (जि०) ॥ १३ ॥ वमे २  
पंक्ति इणलुंटे । ऐसा दम बतलाया । धरम कहा उर पाप कराया । ऐसा  
करज चढायाजी (जि० मे०) हिंसा मांही धरम बताया । तपस्या सेती  
डिगाया । इन्द्रिय सुखमें मगन करीनें । जूग जाल फैलाया जी (जि०  
मे०) ॥ १४ ॥ ऐसा करो इनसाफ प्रजूजी । अपील होन न पावै । हक्क  
रसी चेतनकी होवै । जनम मरण मिट जावैजी (जि०) । ग्यान दर्शन



करी मुनसफी । दोनुकुं समझाया । चेतनकी डिगरी करदीनी । करमुंका  
 करज बताया जी (जि०) ॥ १७ ॥ असल करज जोथा कर्मोका । चेत  
 नसेती दिलाया । सुध संजम जद करी जमानत । आगैका सूध मिटाया  
 जी (जि०) ॥ १८ ॥ आश्रव ठोड संवरकों धारो । तपस्यासैं चितलावो ।  
 जलदी करज अदाकर चेतन । सीधा मुगतिकों जावो जी ( जि० मे० )  
 ॥ १९ ॥ सुध संजम जदकरी जमानत । चेतन डिगरी पाई । फागुणसुद  
 दशमी दिन मंगल । सन् उगणीसै अठाई जी ( जि० मे० ) ॥ २० ॥ इति ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ अनुभव पद मिगरी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साहब अदालतपर बैठ । श्रीपारश प्रवीण अैन उत्तम चला  
 ए है । शील है सिरदार और दान है दरोगा जाकै दयारूपी वारण सत्त  
 श्रावण पर आए है । ग्यान है चपरासी ताको लग्योहैं मोहोसल ताकी  
 मालजामनीमें श्री जिनवरजी लिखाये है । रोसकी रसुम और कमीसन लगे  
 कर्मनकुं मोहकों म्याद इस तार लटकाए है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जी  
 वकी जुवानबंदी तबके कुठ स्वाल जबाब सत्तगुरनें बताए है । ठोम का  
 रसाजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको अनुभवपद पायवैकी मिगरी करा  
 य लाए है । अब तो दरकास मैंनें करी है तुमारे पास साहब जिनराज  
 अरज मेरी सुणलीजीयै ॥ अष्टकर्म आठुं जाम करत है कारसाजी साह  
 ब बुलाय इसकुं पिसे मान कीजीयै ॥ २ ॥ मैं तो ऊं गरीब मेरी करैगा  
 नकीली कोन । पारश प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयै । हारुं तो हाजर  
 हजूर हीमें रह्यां करुं । जीतू तो लगाय जुगल चरनमें लीजीयै । अबतो  
 फरीयाद नाथ करीहै तुमारेपास मेरी दाद दीजीयै तो रावरी बमाई है ।  
 मुनसबकी बात और मामलत अदालतकी अबतोमें अफिलमान अरजी  
 लगाई है । जूठ मूठ कारसाजी करत है पांच तीन साचो मत जैन जा  
 की अैन अधिकाई है । मेरे ही पांच लोक मोहीकों कुठावत है ॥ जातेमें  
 ग्वाही श्री जिनराजकी लिखाई है । ठोम कारसाजी पायो पकड्यो अ  
 रिहंत जीको अनुभव पद पायवैकी मिगरी कराय लाए है ॥ ❀ ॥  
 इति अनुभवपद पाणेंकी मिगरी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपदेशरूप लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुकृतको वात तेरे हाथ । रतीनां रहीरे ॥ रतीनां ० ॥ पुदग  
लमें मान्यो सुख । कलपना कहीरे ॥ सुकृत ० ॥ जुग मांहे जैन  
निज सार । संघातें आवे ॥ संघा ० ॥ इसकुं तज कर कयुं वेगो । विषय  
गुण गावे । अमृतकुं अलगो ढोल । विसन विपखावे ॥ विसन ० ॥ मुग  
तिको मारग मेठ । उवटमें जावे । थारी तुल्ल जिंदगानी माहे । विकल बुद्धि  
नईरे ॥ विकल ० ॥ पुदगल ० ॥ १ ॥ थारे धन दोलत नमर नखा हे  
मोती ॥ नखा ० ॥ शत्रु सज्जन सब बने । जगत होय गोती । कोई म  
सले तेल फुलेल । धोवे कोइ धोती ॥ धोवे ० ॥ सन्मुख उठ आवे अब  
ला । तेरो मुख जोती । ऐसी संपत एक गिनमाहे । सरब क्य नईरे ॥  
सरब ० ॥ पुदगल ० ॥ २ ॥ तैं खटरस खाया खूब खजाना खोया ॥ ख ० ॥  
निशिदिन सुखनर सुंदरि की । सेजमें सोया । सजिया सोल सणगार । नारि  
सैं मोह्या ॥ नार ० ॥ तैं अंतर घटका मेल । रती नही धोया । या नरक  
निगोदकी वाट । पकम कर लहीरे ॥ पकम ० ॥ पुदग ० ॥ ३ ॥ मन मा  
तो आव मदमांहे । गरवसैं बोले ॥ गर ० ॥ मैं सुख संपतको नाथ । मेरी  
कुण तोले । डबल करता पोकार । पलक नही खोले ॥ पल ० ॥ आकर  
होय रखा हजूर । चमर शिर ढोलै । अब अबसर आयो हाथ । चेत तुं  
सहीरे ॥ चेत ० ॥ पुदगल ० ॥ ४ ॥ कायासैं कीयो लाम । बनाई चंगी ॥  
बना ० ॥ पल नर पर बाखो पुन्य । तणो तिहां चंगी । पकमी पर नव  
की वाट होय कुण संगी ॥ होय ० ॥ तेरो हंस गयो आकाश । काया  
पमी नंगी । जिनदास कहे कर्मोसुं । जोर तेरो नहीरे ॥ जोर ० ॥ पुद  
गल में मान्यो ० ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ॥ तुम तजकर राजुलनार तज्या सब धररे ॥ तज्या ० ॥ मैं नमुं  
नेमके पाय । गया निरिधररे । मैं प्रीत पीपाकी कर कर पछे लागी ॥ पछे ० ॥  
तुम त्याग चले वन खंम । ज्ञावे धैरागी । अब राजुल सरखी सती । जावसैं  
त्यागी ॥ जाव ० ॥ थारे अंतर घटमें ज्योत । ग्यानकी जागी । युं रोती राजुल  
नार नयण नर नररे ॥ नय ० ॥ मैं नमुं ॥ १ ॥ मैं अरज करुं कर जोम ।

करो मन परसन ॥ करो ० ॥ मेरे शिरपर तुम शिरदार । देजो मोहे दरश  
न । अवसुख सखीयनका देख लग्यो मन तरसन ॥ लग्यो ० ॥ मेरे आयो  
नयणमें नीर । लग्यो नित्य वरसन । मेरे नेम मिलनकी आश । मिलुं  
किम करे ॥ मिलुं ० ॥ में ० ॥ १ ॥ में नहिं कीनी तकसीर । चले क्युं  
रूठे ॥ चले ० ॥ मेरे घरमे कुटुंब परिवार । चार दिश चूटे । में जो रज्ज  
घरके मांहे । जोवन सब लूटे ॥ जो ० ॥ में चलुं पियाके साथ । प्रीत  
क्युं तूटे । मेरे नेम बिना नहिं और । जगतमें वरे ॥ जग ० ॥ में ० ॥ ३ ॥  
तुम तारी राजुल नार । मुगतिमें मेली ॥ मुग ० ॥ पीठे नेम गये निखाण  
करम सब ठेली । मे नित जगे परजात । नमुं पद पहली ॥ न ० ॥ मेरे  
नेम बिना नहि और । जगतमें बेली । युं अरज करे जिनदाश । सु  
णो जिनवररे ॥ सुणो ० ॥ में ० ॥ ४ ॥ २१ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ आप समझका घर नहीं पाया । दूजैकुं क्या समझावे । वं  
का फिरे जिनदाश जगतमें । हीयो हाथमें नहीं आवे ( ए आंकणी )  
दरस सवाद चाहनकी चित्तमें । चानक अधिकी आय लगे । इंद्रीका पर  
वसमे पडियो । ग्यानकला कहो कैसें जगे । तृणानें जग लूट लीयो हे ।  
कपट करी परधनकुं ठगे । खाय खाय लोही मांस वधाख्यो । प्राणी किस  
विध चले पगे । विषय विपतकी करे चंथणी । चरचासुं चित्त नहीं लावे ॥ वं ०  
आ ० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकुं नहीं देखे । दूजाका अवगुण छाखे । हिंसाही  
में हूओ हजुरी । दया दूर दिलसैं नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन ।  
अवगुणके रसकुं चाखे ॥ तिनुही प्रणमे रागधरा में । सरणें जिनवर किम  
राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्याई । धन मीसैं इनकुं ध्यावे ॥ वं ० आ ० ॥ २ ॥  
अवगुणकी मेरी खान आतमा । अजान होयसो मोहेपूजे । नहीं गाममें  
रुख अंबको । एरंम अंब सरिखो सूजे । पारख नहीं हे हीये ग्यानकी ।  
गुण अवगुनकुं कुण बुजै । गामर देख कहे मुज घरमें । कामधेनु इतनी  
दूजे ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा । अवगुन किम गाया जावै ॥ आप ०  
॥ ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो । लोभ माहें लपट्यो रहतो । गरथ गु  
मानी गमको गरजी । पीन पारकी नहीं सैतो । जगति नहीं गुरु देव धर

मकी । कठण वचन मुखसैं केतो । अंतर आंठ न खुले हीयाकी । पृष्ठ परम पदकुं देतो । स्वांग सजी जिनदाश जैनको । माल मुलकको ठग खावे ॥ वंको ०॥ आप ० ॥ ४ ॥ १९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सुगुरुकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमुं नमुं में गुरु निग्रंथकुं । वेजिन मुद्राधारी हे । पुजल उपर प्रेम न करता । मनकी ममता मारी हे ॥ न० ॥ १ ॥ गरव गालकर गुपति गोपवे । गत निग्रंथकी न्यारी हे । कनक कामिनीके नहिं नोगी । वेपूरा ब्रह्मचारीहे ॥ न० ॥ २ ॥ ठकायाके जीव अनार्थी । उनके वेदित कारी हे । करम काटकर केवल पावे । ज्ञान गरथ गुण ज़ारी हे ॥ न० ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासैं सुमति सेवी । निज आत्मकुं तारी हे । जिनवरकुं जिनदाश बीनवे । उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ कुगुरुकी लावणी ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तजुं तजुं में उन कुगुरुकुं । कनक कामिनी धारी हे । ज्ञान ध्यानकी बात न जानैं । अष्ट करमसैं ज़ारी हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपा लैं वचन लपेठी । शिरपर जटा बधारी हे । कान फांकर मुद्रा पहरेता उसके घरमें नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोग लेई कर जीव विणासे । वे मद्य मांश आहारी हे । कूना पंथी जगतकुं करता । मुखसैं कहे आचारी हे ॥ त० ॥ ३ ॥ कज्ज ओगुण कुगुरुका कव लग । साध नही संसारी हे । आप डुवे औरनकुं डुवावे । दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ त० ॥ ४ ॥ समकि त श्रद्धा जैन धर्मकी । नहिं कुगुरुको प्यारी हे । जिनवरकुं जिनदाश बीनवे । कुगुरु संग खुबारी हे ॥ त० ॥ ५ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ श्री नवपद लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगतमें नव पद जयकारी । पूजतां रोग टले ज़ारी ( ए आं कणी ) प्रथम पद तीर्थ पती राजे । दोष अष्टादशकुं त्याजे । आठ प्रा तीहारज ठाजे । जगत प्रभु गुण वारे साजे ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दल जीतके । सकल सिद्ध ते थाय । सिद्ध अनंत नजो बीजे पद । एक सम य शिव जाय । प्रगट नयो निज स्वरूप ज़ारी ॥ जगत ० ॥ १ ॥ सूरि प

दमें गौतम केशी । उपमा चंद्र सूरज जैशी । उगाखो राजा परदेशी ।  
 एक जवमाहें शिव लेशी ॥ दोहा ॥ चोथे पद पाठक नमुं । श्रुत धारी उ  
 वझाय । सब साज पंचम पदें । धन धनो मुनिराय । बखाण्यो वीर प्रजु  
 नारी ॥ जगत ० ॥ २ ॥ ॥ द्रव्य खटकी श्रद्धा आवे । सम संवेगादिक पा  
 वे । बिना ए ज्ञान नहिं किरिया । जैन दरशनसैं सब तरिया ॥ दोहा ॥  
 ज्ञान पदारथ सातमें । पदमें आतमराम । रमतां रम्य अध्यातमें । निज  
 पद साधे काम । देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत ० ॥ ४ ॥ जोगकी  
 महिमा बज्ज जाणी । चक्रधर ठोमी सब राणी । यती दश धरम करी  
 सोहे । मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ दोहा ॥ कर्म निकाचित कापवा ।  
 तपकुठार करध्याय । क्लमायुत नवमुं पद धरे । कर्म मूल कट जाय । नजो  
 तुम नवपद सुखकारी ॥ पू० ज० ॥ ४ ॥ श्री सिद्धचक्र नजो नाई । अ  
 चामल तप विधिसैं थाई । पाप त्रिजुं जोगें परिहरजो । नाव श्रीपाल परें  
 करजो ॥ दोहा ॥ संवत उगणीस सत्तरा समें । जेपुर श्री जिन पाश ।  
 चईत्र धवल पूनम दिनें । सकल फली मुक्त आश । बाल कहे नव पद  
 ठबी प्यारी ॥ जगत ० ॥ ५ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री केशरीयानाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) आदिकरन आदिम जगत । आदि जिणंद जिनराज ॥

धूलेवनाथ जाचो धणी । वरनुं श्री महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ कास्यप गोत ईखाग वंशमें । मरुदेवा जननी जायो । नाभि  
 नरेसर वंश उजालन । आदि धर्म जश प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति  
 देव देवी मिल । मंदिर गिरपै न्हवरायो । इसो ऋषन निधि प्रगट कल्प  
 तरू । सुरनर मुनिजन नित्य ध्यायो ॥ २ ॥ खमग देशमें नगर धुलेवें ।  
 जास ददामा घुरता हैं । जाकी महिमा अपरंपारा । कविजन कीर्ति क  
 रता हे ॥ ३ ॥ आदौ मूरत काल असंख्यकी । पूजी सुरगण असुरिंदा ।  
 सुरपति नरपति वंदित पद जुग । बलि पूजित सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख  
 अग्यार हजार पंचाशी । वरश पांचशे पंचासा । इतनें वरश पर लंका  
 गढमें । पूजित रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लठमन । अ  
 मूरत पूजन ल्याए । नयरी अयोध्या जाते अधविच । नयर उजेणी ठह

राए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया । सुंदरि मयणां धरमनकी । वाप  
करम अरु आप करमकी । जई लडाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आप करमके  
ऊपर नृपनं । कुष्टी वरपे परणाई । मयणां चितें कांई नवाई । करम ल  
खी सो वनि आई ॥ ८ ॥ इकादिन जिन पूजन गुरुवंदन । आई श्री जिन  
मंदिरपे । वंदन पूजन करके इकाचित । ध्यान धरे मन कंदरपे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ✽ ॥ मोतिदाम ठंद ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तुंहि अरिहंत तुंहि जगवंत । तुंहि जिनराज तुंहि जगसंत ।  
तुंहि जगनाथ तुंहि प्रतिपाल । तुंहि मनमोहन तुंहि दयाल ॥ १ ॥ तुंहि  
जबजंजन जाव सरूप । तुंहि अरि गंजन रंजन भूप । तुंहि अविनासी तुं  
हि धीतराग । तुंहि महाराज तुंहि ब्रह्माग ॥ २ ॥ तुंहि गुणधाम तुंहि विस  
राम । तुंहि नवनिधि तुंहि बडनाम । तुंहि अघनाश तुंहि अविनाश । तुंहि  
मतिवंत तुंहि मतिवास ॥ ३ ॥ तुंहि गुन केवल रूप अनंत । तुंहि जगतारन  
तारन संत । तुंहि जगध्येय तुंहि जगध्यान । तुंहि चिद्रूप तुंहि जग जा  
न ॥ ४ ॥ तुंहि मम तात तुंहि मम मात । तुंहि मम आत तुंहि मम गत  
तुंहि सरणागत राखण हार । तुंहि डख दोहग टाखणहार ॥ ५ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ लावणी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति । कंत कुष्टसैं नहीं मरते ॥ पूरव  
करमके लिखित लेख जे । किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुजु शासन ज  
गत हेलना । जगत ढंढेरा वाजत हे । आप कम अरु जैन धर्मके । फल पाईयें  
यो लाजत हे ॥ २ ॥ यो डख मोसैं सखो जात नहीं । आदिनाथ जग रखपा  
ला । करुना करके रोग निवारन । गुन कीजें जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक्ष प्रस  
न्न होय फल बीजोरो । हाथ तणो फल तव दीनो । मयणा तव उल्लास  
जई मन । चिते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ तोदिन नमण नीर तनु फरसे  
कुष्ट रोग सब नास्त हे । कामदेव अरु अमर समोवम । नृप श्रीपाल  
सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल । प्रगट प्रवल हे जश  
सेरो । आसू चैव मासमें महिमा । देश देशमें प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागम  
वेश बडोद नगरमें । जगपर प्रभु करुना कीनी । कितने बरश लग महीमां  
महिमा । अविचल भूतल रिख दीनी ॥ ७ ॥ दिल्लीपर तुरकान भयो तव ।

पादशाह लडवा आयो । बूत चूत पथ्यरकी मूरत । जड मुह्लासैं उवरायो  
 ॥ ८ ॥ बज्रत दिनां लग कीवी लराइ । थाको यौ वाचा बोले । देव हिंदको  
 बनो जागतो । युं वोहत फिर फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो बात काजी मु  
 ह्लां तुम । एक बातसैं चासैंगा । गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई । गोवधसैं  
 ये नासैंगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब निजरैं । देख शके क्यों प्रति  
 पाला । करन जुधजव नये महावल । शस्त्र ऊनो ऊन विकराला ॥ ११ ॥  
 ॥ ॥ (दूहा) महा युध करनें लगे । घाव चोराशी अंग ॥  
 ॥ करी मलोखा गामली । आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

### ॥ ॥ लावणी ॥ ॥

॥ ॥ गाम धुलेवे वंश जालमें । गुप्त रहे हैं प्रजु धरती । गाय एक  
 कोमी बनीयनकी । आई वांहां चरती चरती ॥ १ ॥ स्रवे तिहां पयधारा  
 शिरपर । सांऊ समैं फिर नही दूजे । रीस करी तव गोपालन पर । गौ  
 पाल थरथर धूजे । डूजे दिन गौ लारैं आयो । लह्यो जेद कस्यो बनीयनपें  
 । शेर आय जव नजरैं देख्यो । चकित नयो हैं तन मन पें ॥ ३ ॥ मध्य  
 रातमें सुपनो दीनो । ऋषन नाथकी मूरत है । बहिर निकासो करो लाप  
 शी । नीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी । मत  
 काढे तुं नव दिनमें । कियो शेरनें ऊकुम प्रमाणें । आये संघ बज्रत दिन  
 मे ॥ ५ ॥ कै उपवासी कै व्रतधारी । कै आलुआणे पातंचले । कई लोक  
 कुं डुःकर बाधा । कव प्रजुको दरसन मिले ॥ ६ ॥ युं सब लोकां दरसत  
 रसकी । कहे लोक मूरत काढो । लाओ लाओ महाराजकी मूरत । संघ  
 सबे लीनो आमो ॥ ७ ॥ जबर दस्तसैं दिवस सातमें । लापशी बाहिर  
 तवकीने । अस असंजर वण रहा ए । संघ लोक दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर  
 सुपनेमें द्रव्य दिखायो । संघे मिल देवल कीनो । मध्य विराजे ऋषन तख  
 तपर । कलियुगमें यौ जश लीनो ॥ ९ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) संवत अठार त्रैसठमें । जान सदा शिवराय ॥

॥ कियो धंगानो डष्टनें । जाखुं बरन बनाय ॥ १ ॥

### ॥ ॥ मोतिदाम ठंदा ॥ ॥

॥ ॥ सदाशिवराय चिंते मन एह । लुंटे बज्रधाम जमीपर जेह । जि

झां पति नाथ धुलेव कहाय । लखो लग द्रव्य जंमार सुनाय ॥ १ ॥ जावां  
अव लुंटाण गाम धुलेव । यज्जं सब माल जई तत खेव । आयो निज फोज  
लेइ दलगाज । तोपां दोयसाथ लीया वज्ज साज ॥ २ ॥ कंपु दोय लार ली  
ए फीरंगाण । भंगां जर साथ लीये कोकवाण । तवां वज्ज लोक कहे महा  
राज । नही इह कारन रुख्य अकाज ॥ ३ ॥ ए तोवह जाजल देव कहाय ।  
रहे नही लाज तिहांरिय कांय । तवां फिर बोले सदाशिव नूप । यज्जं सब मा  
ल अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट करूर । कीयो नजराण  
ह नाथ हजूर । रख्यो नही नाथ तवां नजराण । जयो मन चकित मान गि  
लाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत जंमारी बुलाय । मीठे वच बोल सवे ललचाय  
लई संग आय मुकाम मजार । कियो तव कूच लई सब लार ॥ ६ ॥  
करे तव गाम पुकार पुकार । जंमारि सवेय पुकार पुकार । करो अव वा  
हर नाथ दयाल । गयो किहां आज गरीब निवाज । चढो अव बाहर रा  
खण लाज ॥ ७ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

### ॥ ✽ ॥ दूहा ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ उण समें कोऊ शेठको । वहाण तारण काज । गये अधि  
छायक नाथजी । जेरुं गए वहां गाज ॥ १ ॥ सुणो अरज प्रथ्वीनाथजी ।  
सहेर धुलेव मजार । किओ अकारज डुष्टने । शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥  
आए तुरत महाराजजी । करवा जन संजाल । दो घोमे दोनुं चढे । जेरुं  
अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिल्ल कोप आपें कियो । दश दिशि फोज हजार  
मार मार चो तरफते । नई लडाई त्यार ॥ ४ ॥ ॥ ✽ ॥

### ॥ ✽ ॥ जुजंगप्रयात ठंड ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ कुकू कुकू कुकू वहे कोक वाण । सणणं सणणं तीर तरकस्स  
वाण । धुवाके धमाके वहे नाल गोला । जिंसा कर्कसा जंमरा नयण  
मोला ॥ १ ॥ कितें अंगपें शंखरा घाव लागे । कितें मारयें कंपते दूर  
जागे । कितें दंतपें तिरण लेवें वराका । कितें थरथरे त्रास होवें निराका  
॥ २ ॥ कितें रसुद्धा इलद्धा पुकारे । किते दीन होके खुदापें संजारै ।  
किते नाथपें केशरां खुन माने । किते नाथकुं जागती जोत जाने ॥ ३ ॥  
सदाशीवने घाव लग्गो अटारे । पुनी जात जशवंत दोनुं संहारे । वनो को



प जानी सवे फोज चाजी । ऊइ केशरी नाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥ स  
दाशीवने आखडी अटक लीनो । सवापांचरौ रुकमरो खुन दीनो । इसो  
नाथ धुलेवरो मई गाजी । सदा केशरा नाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥ ॥॥

॥॥ (दूहा) या विध कलियुग जगजना । तास्या कै जिनराज ॥

दीप विजय कविराजकुं । सहेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥ ॥ तुंहि नवनिध तुंहि अमसिध । तुंहि मन वंछित वंछित रिध  
तुंहि सिरदार तुंहि किरतार । तुंहि सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंहि काम  
कुंज तुंहि कामधेन । तुंहि सुरवृक्ष तुंहि ममसेन । तुंहि दक्षणावर्त दायक  
देव । तुंहि विसराम तुंहि वरसेव ॥ २ ॥ तुंहि मम प्राण आधार जरूर । तुंहि  
मम इच्छित दायक नूर । तुंहि मम भूप तुंहि पतशाह । तुंहि मम रिध न  
मार अगाह ॥ ३ ॥ तुंहि मम मंत्र तुंहि मम यंत्र । तुंहि मम सत्य तुंहि मन तं  
त्र । तुंहि गठनायक तुंहि श्री पूज्य । तुंहि मम पुज्य तुंहि जग पूज्य ॥ ४ ॥

॥॥ लावणी चाल ॥॥

॥॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके । देश देश नृप आवत हे । केशरमें  
गरकाव रहेंतें । केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशावर  
फिरे डहाई नाथनकी । हिंडु मुसल बड राणा हाजर । पूरै इच्छित सब  
मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमैं । रण रावल दुःख दूर हरे ।  
एकचित्त ध्यानैं जे नित समरे । अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधि मप  
धिधिमप धमपधमप मप । ताल पखावज राजतहें । गरगड दौ गरगड दौ  
गडगड । धोंधों नोवत वाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर । नीमसिं  
हके राजनमें । एह लावणी खूब बनाई । सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥  
संवत अठार पच्चीतर वर्षे । फागुण सुदि तेरस दिवसौ । मंगलकेदिन दीप  
विजयकुं । दरशन परसन दो बलसे ॥ ६ ॥ ॥॥

॥॥ कलश ठप्य ठंड ॥॥

॥॥ समवसरन जग शरन । तीन लोक कलिमल हरन । धुनि  
बरसत जल धरन । जरन पोष पावन करन । जुगल धर्म नीती हरन । सब  
करम ओघ घन जरन । मोह मल्ल अरि दरन । सुकनु वरन शुद्ध चरन  
इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन । जगत विरुद्ध तारन तरन । दीप विजय कविरा

ज बहाडुर । कृष्ण नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कृष्ण नाथ महाराज । सबे दुःखदालिद्र चंजन । कृष्ण नाथ महाराज । सबे भूप मनरंजन । कृष्ण नाथ प्रथिनाथ । समस्तों वाहर धायें कृष्णनाथ पृथ्विनाथ । मंगल नाम गवायें । दीप विजय कविराज बहाडुर खलक मुलक हाजर रहे । कलि जुग जयो देवतुं । सुरनर सबकीरत कहे ॥ १ ॥

॥ \* ॥ श्री नेमनाथकी जान वर्णन लावणी ॥ \* ॥

॥ ॐ ॥ नेमकी जान बनी चारी । देखनकुं आये नर नारी ( ए आंकणी ) अनंता घोडा और हाथी । मनखरी गिनती नहीं आती । उंठ पर धजा जो फरराती । धमकसैं धिरती धरराती ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका लामला । नेम उनुंका नाम । राजुलदेकुं आये परणवा । उग्रसेन घर ठाम । प्रसन जई नगरी सब सारी । नेमकी जान बनी चारी ॥ १ ॥ क सुबल बाघा अति चारी । काने कुंमल ठविहे न्यारी । किलंगी तुररा सुख कारी । माल गले मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंमल ऊग मगे । शीश मुगट ऊलकार । कोमि जानुंकी करुं उपमा । शोना अधिक अपार बाज रखा बाजा ठंकसारी ॥ नेम ० ॥ १ ॥ ठूठ रही उनकी ठरराई । व्याहमें आये बडे जाई । ऊरोखे राजुलदे आई । जानकुं देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी देखकें । मनमें करे विचार । बहोत जीव करि एकठा । बामो नखो अपार । करी सब जोजनकी तयारी ॥ नेम ० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये । पशु जीव सबही कुरलाए । नेमजी वचन फरमाये । पशु जीव कायेकुं लाये ॥ दोहा ॥ याको जोजन होवसी । जान बासते एह । एह वचन सुनी नेमजी । थर थर कांपे देह । जावसैं चढगये गिर नारी ॥ नेम ० ॥ ४ ॥ पीठेसुं राजुलदे आई । हाथ जव पकड़्यो तिनमांहीं । कहां तुं जावे मेरी जाई । और वर हेरुं मुकताई ॥ दोहा ॥ मैरे तोवर अकही । होगया नेम कुमार । और जुवनमें वर नहीं । कोटी करो विचार । दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम ० ॥ ५ ॥ साहेल्यां सबही समजावे । हिये राजुलके नहीं आवे । जगत सब जूंगे दरसावे । मेरेमननेम कुमार जावे । दोहा ॥ तोड्या कंकण दोरमा । तोड्या नवसर हार । काजल टीकी पान सो पारी । त्याग्यो सब सणगार । सहेल्यां सबही बिलखाणी ॥ नेम ० ॥ ६ ॥

तज्या सब सोले सिणगारा । आञ्जुषण रत्नजडित सारा । लगे मोहे सबही  
सुख खारा । ठोम कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकुं । तज  
तां न लागी वार । विजोग कर चली आपशुं । जाय चढी गिरनार । ऊ  
रती ठोडी मा प्यारी ॥ नेम ० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकी आई । त्याग  
जब कीनो बिनमाई । नेमि जिन गिरनारे जाई । पशुके बंधन बुडवाई ॥  
दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपै । लीनो संजम दान । नवलराम करी ला  
वनी । उपन्यो केवल ज्ञान । जिनौकी किरिया बुद्धि सारी ॥ नेम ० ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वजिन आरती, लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी । जन्म बनारसी हे जिनका ।  
घननं घननं बाजे घंट घण । ऐसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ ० ॥ १ ॥  
जब कमठासुर कोप कियो तब । स्याम घटा विजुरी चमका । गिरुओ  
गाजजल मूशलधारा । धरम धरडका जन शंका ॥ आ ० ॥ २ ॥ थरर आ  
सन कंपे सुरको । तब धरणीधर चित्त चमका । फण विस्तार हजार किये  
तब । ऊमक जाय प्रभु तन ठंका ॥ आ ० ॥ ३ ॥ जब पद्मावति सब सि  
णगारे । ताथेइ नाचतले फिरका । ध्रमक ध्रमक धौं मादल बाजत । घननं  
घुग्घुरके घरका ॥ आ ० ॥ ४ ॥ धीधीधी कट नोवत बाजै । धौंधौं कट डुंद  
जि धौंका । याविधगीत संगीत वजन सब । गांधर्व गान करे जिनका ॥ आ ०  
॥ ५ ॥ तननं तरर तंत ताल सब । रुफ रौंनों करते मंका । जेरण फेर  
एके ऊणकारे । जागमदी जालरके ऊंका ॥ आ ० ॥ ६ ॥ सुरनरइंद्र सब  
जे जे करते । जीवत सफल जया जिनका । अमृत उदय तिणवेर जयो  
सुख । को विस्तार कहे तिनका ॥ आ ० ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर पारणो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर कियो पारणो । आ रस सेलडी ॥ आ ० ॥  
( टेक ) घमा एकसो आठ शेलमी । रस जरियाठे नीका । जलठ जाव  
श्रेयांस बहिरावै । मांमदिवी आ बूकारे ॥ आ ० ॥ १ ॥ देव डुंडुनी बाज  
रहीहे । सोनइयारी बरखा । वारे माशुं कियो पारणो । गइ नूख सब  
तिरखारे ॥ आ ० ॥ २ ॥ कृद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर घर मंग  
लाचार । डनियां हरख बधामणा सिरै । आखात्रीज तिवाररे ॥ आ ० ॥

॥ ३ ॥ संकट काटो विघन निवारो । राखो हमारी लाज । वे कर जोमी  
नान्हू कहिता । कृष्ण देव महाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिनाथ चौमासो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गई घटा गंगनमें कारी । राजुलकुं विरह डःख नारी ॥ रा०  
॥ टेक ॥ चौमासा लग्या रस चीना । अलि आपाढ रंग महीना । चारु  
तरफसें बादल पीना । वीजुलीनें चमकनां कीना । दिल होत धनकता सी  
ना । मैं अवला सखी पति हीना ( उढाना ) सरसरर चलत समीर । थर  
सरर करत सरीर । मररररर मरत समीर । अलि कैसी करुं तदवीर बुरी  
तकदीर । पीया बिन प्यारी । राजुलकुं विरह डःख नारी ॥ रा०  
॥ १ ॥ श्रावनमें श्याम घनघोर । जरजोर बोलते मोर । दाडर मिल  
करते दोर । पिऊ पिऊ पपैया सोर । ऊम लग्यो बुंद ऊकजोर । बिच  
चमके दामिनी कोर । ( उमावणी ) खडमममम रव घन माला । तडममडड ज  
ल परनाला । अडडडमम नाला खाला । मैं डःखी ऊइ वेहाल हीयेमें ।  
साल ऊई जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना । बादलमें धनु  
प रंगीना । जंगलमें नदी स्वरजीणा । ज्युं बाजे मनोहर वीणा । अवए  
सें कहो क्या जीना । प्रीतमनें मुजे डःखदीना । ( उढाना ) युं बिलपत मुख  
मुरजाई । सखीयन मिल दोड जगाई । युं बिलखत वचन सुनाई । सखी  
देखो पीयाकी रीत । तोमके प्रीत गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ आश्विनमें जरा  
नहीं धीर । याडु चंद जये वे पीर । उठ चली नेमके तीर । काटनकुं कर्म जं  
जीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर । व्रत संजम समकित हीर । ( उढाना ) शिव  
राजुल नेम सिधाये । इंद्रादिक जश गुण गाये । नबिजन मिल शीश नमा  
ये । मुनि कहे कपूराचंद प्रेमसें ठंद । जाऊं बलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराजकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराज । गरीबनिवाज । जरूर जिनवरजी ।  
सेवक शिरनामें तनें उच्चारें अरजी । कर माफी मारावांक । रमलीयो रांक ।  
अनंता नवमें ॥ १ ॥ आंव्यो हुं ताराशरण । बली डःख दवमें । क्रोधादिक  
धुकता चार । खरेखर खार । लग्या मुजकेमे ॥ २ ॥ बली पापी ह्यारो नाथ ।  
ठेक ठेमे । आ मुजरो मुज नगवान । करुं गुणंगान । ध्यानमां धरजी

॥ १ ॥ सेवक ॥ १ ॥ में पूरण कर्यो ठे पाप । सुणजो आप । कजं कर  
जोडी ॥ १ ॥ मुऊ जुंमामां जगवान । झूल नही थोमी । जीवहिंसा अ  
परंपार । करी किरतार । हवेशुं करवुं ॥ १ ॥ ऊवुं वज्ज बोली । साधनेशुं  
हरवुं । तुऊ खोलामां मुऊ शीश । जाण जगदीश । गमें ते करजी ॥ १ ॥  
सेवक ॥ १ ॥ में किया वज्जत कुकर्म । धरी नही धर्म पूर्ण ऊं पापी ॥ १ ॥  
अवलो थई तारी आण । मेंज उत्थापी । में मूरख निंदा घणी । मुनि पर  
तणी । करी हरखायो ॥ १ ॥ परदारा देखी लवाम । ऊं ललचायो । किं  
कर कहे केशवला । आणीने व्हाल । डःख तुं हरजी ॥ १ ॥ सेवक ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ श्रीकृष्ण जिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोढो पोढोजी कृष्ण विहारे । निद्रावश नयण तिहारे ॥ पो ॥  
प्रभुआलस अंग ऊलशाई । पूठे मरुदेवा माई ॥ पो ॥ १ ॥ प्रभु नंदा  
सुमंगलाराणी । उन रुच रुच सेज संजारी ॥ पो ॥ २ ॥ प्रभु नवलसुं  
नेह सनेहा । मनवंठित फल देहा ॥ पो ॥ ३ ॥ प्यारे सेवक हित कर  
गावे । मनवंठित फल पावे ॥ पो ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे । कर  
जोडी शीश नमावे ॥ पो ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ अथ दीवालीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन मंगल एरे सकल दिन । पूजी प्रजातें चालीरे ॥ ❀ ॥  
आज ह्वारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुने । मोतीने था  
ल पूरावो । चार चार आगे चतुर सुहागण । चरण कमल चित्त सारीरे ॥  
आज ॥ १ ॥ धन धुन धन तेरश दिवसै । काले काली चनुदश । पाप ह  
णीजे पोसो कीजै । कर्म मेलो सर्व टालीरे ॥ आज ह्वारे ॥ ३ ॥ अमावस  
की परव दीवाली । फरती जाक ऊमाली । घर घर तो दीवडीया ऊलके  
रात दीसे अजुवालीरे ॥ आज ह्वारे ॥ ४ ॥ अमावसकी पिठली राते ।  
आठ करम सज्ज टाली । श्री महावीर निरवाणे पोहोता । अजरामर सुख  
कारीरे ॥ आजह्वारे ॥ ५ ॥ पन्निवा नैं वली जुहार पटोलां । ए रत रूमी  
सारी ॥ गुरु गौतमनां चरण पखाली । रीऊ पामी रढीयालीरे ॥ आज  
ह्वारे ॥ ६ ॥ बीजें तो वली जावम बीज । बेनरमी अति वाहाली ॥  
ए पांचे दिन होय रे पनोता । एवे एवे हरखे गाई रे ॥ आज ह्वारे ॥ ७ ॥

हरखविजय पंमित इम बोले । करोसज्ज सेव सुंहाली ॥ रूपविजय पंमित  
गुणगावै । जय जय वाजे ताली रे ॥ आज ह्यारे ० ॥ ८ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः दीपमाला स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ ह्यारे दीवाली रे थई आज । प्रभु मुख जोवाने ॥ सत्खा सत्खारे से  
वकनां काज । जवडुख खोवाने ॥ टेक ॥ महावीर स्वामी मुगतें पढोता  
ने । गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धनदीवाली ह्यारे । वीर  
प्रभु निरवाण ॥ जिनमुख ० ॥ ह्यारे दीवाली ० ॥ १ ॥ चारित्र पाट्या नि  
मलाने । टाट्या ते विषय कपाय रे ॥ एवा प्रभुनै वांदिये तो । नतारे जव  
पार ॥ जिन ० ॥ मा ० ॥ २ ॥ बाकुला वोहोखा वीरजी ने । तारी चंदन  
वाला रे ॥ केवल लई प्रभु मुकतें पोहोता । पान्या जवनो पार ॥ जि  
न ० ॥ मा ० ३ ॥ एवा मुनिनै वांदियेंजे । पंचमज्ञानने धरतारे । समवसरण  
देई देशना रे । प्रभु ताखा नरने नार ॥ जिन ० मा ० ॥ ४ ॥ चौबीशमाजि  
नेसरु ने । मुकति तणा दातार रे ॥ कर जोमी कवियण एमनणे । मारो ज  
वनो फेरो टाल ॥ जिनमुख ० ॥ मा ० ॥ ५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ आत्मलघुता स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ यो जिनदास जूठो रे जूठो ॥ येने लेई लाकडी कूटो ॥ यो ० ॥  
सुकुत सामो पग नहिं भरतो । ग्यान हीयाको खूटो ॥ सुधाखो सुधरे न  
हिवडतां । जैसो लकडको ठूठो ॥ यो ० ॥ १ ॥ जणवा गुणवाका गुण  
नहिं आया । कोरोही पकडचो पूठो ॥ गपोडा सुण कर लोक पूजता ।  
ए अलग मालको ठूठो ॥ यो ० ॥ २ ॥ पंडित गुरुकी सोवत पाई । चेत्यो  
नहिं हीयाको फूटो । साचा नरको संग न करतो । कूड कपट नहिं ठूटो ।  
यो ० ॥ ३ ॥ जूठोहि बोले जूठोहि चाले । कपट करे एक मूठो ॥ साचो  
एह असार देखके । जिनदाश सवसूं रूठो ॥ यो ० ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ मंगल स्तवन राग सामेरी ॥ ॥

॥ ॥ कीजे मंगल चार । आज घरे नाथ पधाखा ॥ कीजे ० ॥  
(आंकणी) ॥ पहेलुं मंगल प्रभुजीकुं पूजूं । घसी केशर घनसार ॥ आज ०  
॥ १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं । कंठे ठवुं फुल हार ॥ आज ० ॥ २ ॥

त्रीजुं मंगल आरती उताहं । घंट बजावुं रणकार ॥ आजण ॥ ३ ॥ चौथुं  
मंगल प्रज्ञ गुण गावुं । नाचूं ते थैथैकार ॥ आजण ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे  
नाथ निरंजन । चरण कमल जानें वार ॥ आजण ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनेमनाथजीको नवरसो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहली, गर्वाकी देशीमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो । शामलियाजी । शिवादेवी मात  
मलार । वर पातलियाजी । एक दिन रमवा नीसत्या ॥ शाण ॥ आ  
व्या आयुधशाला मांहे ॥ वण ॥ १ ॥ सारंग धनुष चढावियुं ॥ शाण ॥  
तेणे मोल्या आकाशें इंद्र ॥ वण ॥ चक्र उपामीनें फेरव्युं ॥ शाण ॥ गदा  
लीधी करमांहे ॥ वण ॥ २ ॥ नेमें शंख बजामीयो ॥ शाण ॥ तेणे मो  
ल्या महिना मेर ॥ वण ॥ शेष नाग तिहां सल सल्या ॥ शाण ॥ खल न  
लीया सायर सर्व ॥ वण ॥ ३ ॥ गिरिवर टूंक तूटी पड्या ॥ शाण ॥ थरहर  
कंपे लोक ॥ वण ॥ कोइक वैरी ऊपनो ॥ शाण ॥ इम करता कृष्ण  
विचार ॥ वण ॥ ४ ॥ आव्या तिहां उंतावला ॥ शाण ॥ जिहां ठे नेम कुमार ॥  
वण ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शाण ॥ ताहसं बल जोवानी खंत ॥ वण ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल बीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्णें कर लंवावीयो ॥ हसी बोलोजी । तुमें वालो नेम कुमार ।  
अंतर खोलोजी । कमलनाल परें वालीयो ॥ हसीण ॥ कृष्ण नवि लागी वार  
॥ अंतण ॥ १ ॥ नेमें कर लंवावीयो ॥ हसीण ॥ कृष्णें नवि वाल्यो जाया ।  
अंतण ॥ हाथें कृष्ण हिंचोलिया ॥ हसीण ॥ तिहां हरि मन ऊंखो  
थाय ॥ अंतण ॥ २ ॥ नारी जो परणावीये ॥ हण ॥ तो बल उठेहं थाय ॥  
अंतण ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ हण ॥ निजअंतेउर समजाय ॥ अंतण ॥ ३ ॥  
नेम विवाह मनायवा ॥ हण ॥ सज्ज थाउं सगली नार ॥ अंतण ॥ रूपचंद रंगें  
मिल्या ॥ हण ॥ ताहसं अतुली बलअरिहंत ॥ अंतण ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राधाजी ने रुक्मणी । मोरा गिरवारी । सत्यनामा जांबुवती  
नार । मुकुटपर ऊं वारी । चंद्रावती शिणगारियें ॥ मोराण ॥ गोपी मली

वत्तीश हजार ॥ मुकुट ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी ।  
मने करवाना वज्र कोड । ए गुण तोराजी । नारी विनानुं आंगणुं ॥ देवर ॥  
॥ जेम अल्लूणो धान ॥ ए गुण ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वदे ॥ देवर ॥  
तो पामें प्राज्जणा मान ॥ ए गुण ॥ नारी विना नर हाली जिता ॥ देवर ॥  
वली वांढा कहेशे लोक ॥ ए गुण ॥ ३ ॥ ठोकरवाद न कीजीयें ॥ देव ॥  
॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर ॥  
हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### ॥ ॥ ॥ ढाल चोथी ॥ ॥ ॥

॥ ॥ नेम कहे तमे सांजलो ॥ मोरी ज्ञानी जी । ए किशो काम  
विकार । में गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी ॥ ते रमवनिया  
गति चार ॥ में ॥ १ ॥ रावण सरिखो रालव्यो ॥ मोरी ॥ जे लइ गयो  
शीता नार ॥ में ॥ नारी विपनी कूपली ॥ मोरी ॥ मायानी मोहन बेल ॥  
में ॥ २ ॥ ठपन कोमि जादव मिला ॥ मोरी ॥ इम कहे ते वारो वार  
॥ में ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी ॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में ॥ ३ ॥

### ॥ ॥ ॥ ढाल पांचमी ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अवला बोल न बोलियें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कु  
मार । मकरो दवाजाजी । एकवीश तीर्थकर थया ॥ वर ॥ ते तो सर्व  
परण्या नार ॥ मकरो ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर ॥ तेनुं मू  
ल्य केणें नवि थाय ॥ मकरो ॥ नारीमाहेथी नर नीपना ॥ वर ॥ तुम  
सरिखा श्रीजगवान । मकरो ॥ २ ॥ नेम न बोले मुखथकी ॥ वर ॥ मां  
म्यो वीवाह मंमाण ॥ मकरो ॥ उग्रसेन घर वेठमी ॥ वर ॥ ते  
नामें राजुल नार ॥ म करो ॥ ३ ॥ लीधुं लगन उतावळुं ॥ वर ॥ आ  
प्या लीला श्रीफल हाथ ॥ मकरो ॥ जीमण लाडू लापशी ॥ वर ॥  
वली सेवइयो कंसार ॥ म करो ॥ ४ ॥ आढी जलेवी पातली ॥ वर ॥  
वली माहे घेवरनो जग ॥ मकरो ॥ खारी पुरीने दहीधरा ॥ वर ॥ व  
ली खाजाने मगदल ॥ म करो ॥ ५ ॥ लाखण साईं रेशमी ॥ वर ॥  
माहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ म करो ॥ कूर रांध्यो कमोदनो ॥ वर ॥ मां  
हे मसूरनी दाद । सवल दीवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजुर नें टोपरा ॥



वर० ॥ बली चारोली ने द्राख ॥ सबल० ॥ लवंग सोपारी एलची ॥ वर० ॥  
 बली पानना बीमा चार ॥ सबल० ॥ ७ ॥ सऊन कुटुंब संतोषीया ॥  
 वर० ॥ वज्र कीधी पेरामणी सार ॥ सबल० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥  
 वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सबल० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥  
 वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सबल० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥  
 इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल० ॥ ९ ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते  
 ने निरखे राजुल नार ॥ सबल० ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ वर० ॥ ए जोवा  
 सरखी जान ॥ सबल० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल ठी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजुल नार ॥  
 हइहुं हीसे जी ॥ काला गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ बली कालो मेघ  
 मलार ॥ हइहुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखडी ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मूळ  
 केणे नवि थाय ॥ हइहुं० ॥ काली कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काला  
 रुष्णागरु केश ॥ हइहुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ ए दीसे जी ॥  
 सखि शामलीयो नरतार ॥ हइहुं० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल सातमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पशुअ पोकार सुणी करी । शुध लीधी जी । विचारे श्रीवीतरा  
 ग । तेणें दया कीधीजी । जो परणुं तो पशु मरे ॥ शु० ॥ मूकी अनुकंपा  
 जाल ॥ तेणें० ॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरवतां दीनदयाल  
 ॥ तेणें० ॥ पशुबंधन सर्व तोमीया ॥ शु० ॥ ते सर्व गया वनमांहे ॥ तेणें०  
 ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मढ्या ॥ शु० ॥ प्रभु दीधुं वरसीदान ॥ तेणें० ॥ ३ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल आठमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजिमती धरणी ढल्या ॥ मोरा वहालाजी ॥ अवगुण विण  
 दीनानाथ ॥ हाथ नऊाल्यो जी ॥ आंगण आवी पाठा बढ्या ॥ मोरा०  
 कत्री कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ० ॥ १ ॥ तमें पशु तणी करुणा  
 करी ॥ मोरा० ॥ तमने माणसनी नहिं मेर ॥ हाथ० ॥ आठ नव थया  
 एकठा ॥ मोरा० ॥ कीधा तुमशुं रंग रोल ॥ हाथ० ॥ २ ॥ नवमे नवें

तमें नेमजी ॥ मोरा० मुऊने कां मेली जात ॥ हाथ० ॥ मारी आशा अं  
वर जेवमी ॥ मोरा० ॥ तमें केम उपामी कंत ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूमा  
कलंक चढाविया ॥ मोरा० ॥ जाख्या अण दीठां आल ॥ हाथ० ॥ में  
पंखी घाट्या पांजरे ॥ मोरा० ॥ बली जलमां नाखी जाल ॥ हाथ० ॥  
॥ ४ ॥ में साधुने संतापीया । मोरा० । में माय विठोड्या वाल ॥ हाथ० ॥  
में कीमी दर उवाभियां ॥ मोरा० ॥ मरमना वोल्या बोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥  
अणगल पाणी में जख्वा ॥ मोरा० ॥ में गुरुनं दीधी गाल ॥ हाथ० ॥ में  
कठिण कर्म कीधा हरो ॥ मोरा० ॥ ते आवी लाग पाप ॥ हाथ० ॥  
॥ ६ ॥ इम करतां राजुल आविया ॥ मोरा० ॥ श्रीनेमीशरनी पास ॥ हाथ०  
॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरा० ॥ राजुल लियो संयम नार ॥ हाथ० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ढाल नवमी ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ श्रीनेम राजीमती एकठा ॥ साहेलमीयां ॥ जइ चढिया श्रीगिर  
नार । जिनगुण बेलमियां । पूठेथी राजुल आवियां ॥ सा० ॥ संजम बती  
राजकुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आझा लेइ राजुल एकली ॥ सा० ॥ गिरनार  
उपर गुफामांहे ॥ जिन० ॥ वाटें जातां वर्षा थई ॥ सा० ॥ जीजाणां रा  
जुलनांचीर ॥ जि० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जइ झूकव्या ॥ सा० ॥ लागुं ते  
काचुं नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोहामणुं ॥ सा० ॥ राणी राजीम  
तीनुं शरीर ॥ जिन० ॥ ३ ॥ रहनेमि तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखि राजिमती  
निचोवे चीर ॥ जिन० ॥ प्रगट थई ते बोलीयो ॥ सा० ॥ जानी म  
करो मन ऊदास ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो जलुं थयुं ॥ सा० ॥ आप  
णे करशुं जोग विलास ॥ जि० ॥ उत्तम कुलनो ऊपनो ॥ सा० ॥ तुं बोल वि  
चारी बोल ॥ जिन० ॥ ५ ॥ संयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ बली  
काधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमी तब बोलियो ॥ सा० ॥ माता रा  
जीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेमीसर कनं मोकल्या ॥ सा० ॥ फरी लो  
धो संयम नार ॥ जि० ॥ नेम राजुल केवल लई ॥ सा० ॥ पोहोता मु  
क्ति मजार ॥ जिन० ॥ ७ ॥ पीयु पहेली मुग्तें गर्वी ॥ सा० ॥ राजीम  
ती तेणि वार ॥ जि० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ सा० ॥ प्रभु उतारो जवपार ॥  
जिन० ॥ ८ ॥ ॥ इति नवरसो सं० ॥ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दान शील तप भाव चौ ढालियो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिणेंसर पाय नमी । पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शीय  
ल तप भावना । बोलिश बज्ज संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसखा । रा  
जगृही उद्यान । समवसरण देवें रच्युं । वेठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥ वेठीवारे  
परखदा । सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रभु जं वमो । मुऊने  
प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सज्जको तुमे । कुण ठै मुअ समान  
अरिहंत दीक्षा अवसरें । आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहोर दातारनुं ।  
लीये सज्ज कोई नाम । दीधारी देउल चढे । सीजे बंढित काम ॥ ५ ॥ ती  
र्थकरने पारणें । कुण करशे मुऊ होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी । साढी  
बारह कोम ॥ ६ ॥ जं जग सगलुं वश करुं । मुऊ मोहोटी ठे वात ॥ कु  
ण कुण दानथकी तस्या । ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहेली, ललना कीदेशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन सारथवाह साधुने । दीधुं घृतनुं दान । ललना । तीर्थकर  
पद में दीयुं । तिणें मुऊने अजिमान । ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग  
जं वमो । मुऊ सरिखुं नहिं कोय ॥ ललना ॥ रुद्धि समृद्धि सुख संपदा ।  
दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दाण ॥ २ ॥ सुमुख नामें गाथापति । पमिला  
ज्यो अणगार ॥ ललना ॥ कुमर सुवाज्ज सुख लह्युं । तेतो मुऊ उपगार  
॥ ललना ॥ दाण ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं । देतो वोहोरी आण ॥ ल  
लना ॥ नरत थयो चक्रवर्त्ति जलो । ते पण मुऊ फल जाण ॥ ललना ॥  
दाण ॥ ४ ॥ माश खमणने पारणें । पमिलाज्यो रुषिराय ॥ ललना ॥  
शालिज्जद्र सुख जोगवे । दान तणें सुपसाय ॥ ललना ॥ दाण ॥ ४ ॥ आप्या  
उमदना वाकुला । उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ सूत्रदेव राजा थयो ।  
दानतणां फल देख । ललना ॥ दाण ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेंसर पारणें । श्री  
श्रेयांस कुमार । ललना । सेलमीरस बहरावीयो । पाम्यो जवनो पार । ल  
लना ॥ दाण ॥ ७ ॥ चंदनवाला वाकुला । पमिलाज्या महावीर । ललना ।  
पंचदिव्य परगट थया । सुंदररूप शरीर ॥ ललना ॥ दाण ॥ ८ ॥ पूरव  
जव पारेवडुं । शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थकर चक्रवर्त्ति पणें । प्रगट्यो  
पुण्यपमूर । ललना ॥ दाण ॥ ९ ॥ गजजवें शशलो राखियो । करुणा

कीधी सार ॥ ललना ॥ श्रेणिकने घर अवतस्यो । अंगज मेघ कुमार ॥ दा०  
॥ १० ॥ एम अनेक में उदस्यो । कहतां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुं  
दर प्रभु वीरजी । मुऊ पहिलो अधिकार ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

॥ ॥ शील कहे सुण दान तुं । कियो करे अहंकार । आडंबर  
आठे पहोर । याचकसुं व्यवहार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरे । जोग  
करम संसार । जिनवर कर नीचा करे । तुऊने पडो धिक्कार ॥ २ ॥ गवं  
मकर रे दान तुं । मुऊ पुठै सज्ज कोय । चाकर चाले आगले । तो सुं  
राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं । नवुं निपावे कोय । सोवन को  
मी दान दिये । शील सभुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शीलें संकट सविटलें ।  
शीलें जश सोजाग ॥ शीलें सुर सानिध करे । शील बमो बैराग ॥  
५ ॥ शीलें सर्प न आजमे । शीलें शीतल आग । शीलें अरि करी  
केशरी । जय जाये सवि जाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जयथकी । में तो  
माव्या अनेक । नाम कजुं हवे तेहना । सांजलजो सुविधेक ॥ ७ ॥ ॥  
॥ ॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारिये ए देशी ॥ ॥ ॥

॥ ॥ शील कहे जग जुं बमो । मुऊ वात सुणो अति मीठीरे ॥  
लालच लावे लोकने । में दान तणी वात दीठीरे ॥ शी० ॥ १ ॥  
कलह कारण जग जाणीये । बली विरति नही पण कांडरे । ते नारद में  
सीऊन्या । मुऊ जुठ ए अधिकांडरे ॥ शी० ॥ २ ॥ वांहे पहेस्या वेरखा । शं  
खराजाये दूषण दीधेरे । काव्यो हाथ कलावतो । ते में नवपल्लव कीधेरे ॥  
शी० ॥ ३ ॥ रावण घर शीता रही । तो रामचंद्रें घर आणीरे । शीतानुं  
कलंक उतारीयुं । में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ चंपा वार उ  
घामवा । बली चालणीये काढ्युं नीरोरे । सतीय सुजद्रा जश थयो । में  
तस कीधी नीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांढियो । राणी अन्नयाये  
दूषण दाख्योरे । शूली सिंहासन में कीधो । में शेठ सुदर्शन राख्योरे ॥  
शी० ॥ ६ ॥ शील सम्राह मंत्रीसे । आयतां अरिदल धंन्योरे । तिहां पण  
सानिधमें करी । बली धरम कारज आरंभ्योरे ॥ शी० ॥ ७ ॥ पहिरण चीर  
प्रगट किया । में अगेतरगो वारोरे । पान्धव नारी द्रौपदी । में राखी माम

उदारो रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदन वालिका । बली शीलवती दमदंती  
रे । चेम्नानी साते सुता । राजिमती सुंदरी कुंतीरे ॥ शी० ॥ ९ ॥ इत्या  
दिक में उद्धस्या । नर नारीनां वंदोरे । समयसुंदर प्रभु वीरजी । पहिले मुऊ  
आणंदोरे ॥ शी० ॥ १० ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तप बोल्युं बटकी करी, दाननैं तुं अवहील ॥ पण मुऊ आग  
ल तुं किस्युं । सांजल रे तुं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन तैं तज्या । न  
गमे मीठा नाद । देह तणी शोभा तजी । तुऊमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ ना  
रीथकी मरतो रहे । कायर किस्युं बखाण । कूम कपट बज्ज केलवी । जि  
म तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को बिरलो तुऊ आदरे । ठंढी सज्ज संसार । आ  
प एक तुं ज्ञांजतो । बीजा ज्ञांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोडवा ।  
ज्ञांजुं जव जय जीम । अरिहंत मुऊनैं आदरे । वरश ठमाशी सीम ॥ ५ ॥  
रुचक नंदीसर ऊपरैं । मुऊ लब्धैं मुनि जाय । चैत्य जुहारे शाश्वता ।  
आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोयण लाखना । लघु कुंथ आका  
र । हय गय रथ पायक तणां । रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसे  
उपशमे । कुष्टा दिकना रोग । लब्धि अठवीश ऊपजे । उत्तम तप संजो  
ग ॥ ८ ॥ जे में तास्या ते कज्ज । सुणजो मन उल्लास । चमत्कार चित्त  
पामशो । देशो मुऊ शावास ॥ ९ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दृढप्रहार अति पापीयो । हत्या कीधी चार हो । सुंदर । ते  
पण तिण जव उद्धस्यो । मूक्यो मुक्तिमऊार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरि  
खुं जगको नही । तप करे कर्मनुं सून्हो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दो  
हिलुं । तपमां नहीको कूम हो ॥ सुंदर ॥ तप ० ॥ २ ॥ सात माणस नित  
मारतो । करतो पाप अधोर हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमाखीमें उद्धस्यो । ठेया  
कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप ० ॥ ३ ॥ नंदीपेणनैं में कियो । स्त्रीवल्लभ वसुदे  
व हो ॥ सुंदर ॥ वज्जतर सहस अंतेनरी । सुख जोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥  
तप ० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो वणों । हरिकेशी चंडाल हो ॥ सुंदर ॥  
सुर नर कोमी सेवा करे । ते में कीधी चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप ० ॥ ४ ॥

विष्णुकुमार लब्धे कियुं । लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे  
कारणें । ए मुऊ शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौ  
तम चढ्या । बांढ्या जिन चौबीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रतिबूझव्या  
तेणें मुऊ अधिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सहस अर्ण  
गारमां । श्री धन्नो अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो । ए पण  
मुऊ अधिकार हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै । डुकर  
कार कहाय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रशंसीयो । मुऊ महिमा सवि तेह  
हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ९ ॥ नंदीषेण बोहोरण गयो । गणिकायें कीधी  
हास हो ॥ सुंदर ॥ दृष्टि करी सोवन तणी । में तसु पूरी आश हो ॥ सुंदर ॥  
तप० ॥ १० ॥ एम बलनद्र प्रमुख बज्ज । तास्या तपसी जीव हो ॥  
सुंदर ॥ समय सुंदर प्रलु वीरजी । पहिलो मुऊ प्रस्तावहो ॥ सुंदर तप० ॥ ११

॥ ✽ ॥ ढाल चौथी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ज्ञाव कहे तप तुं किशुं । ठेड्युं करे कपाय । पूर्व कोमी जो  
तप तपे । कृष्णमां खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रते । तें वाल्यो  
सवि देश । अशुच नियाणुं तुं करे । कृमा नही लव लेश ॥ २ ॥ वीपाय  
न क्षपि दूहव्या । सांव प्रबुध्न सनाह । ते तव क्रोध करी तिहां । कीधो  
घारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो । मकरो ऊठ गुमान । लो  
क सज्जको साखदे । धर्म ज्ञाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठे वणे ।  
ये व्याकरण ते साख । काम सरे नहि कोइनुं । ज्ञाव ज्ञे में पाख ॥ ५ ॥  
रस विण कनक न नीपजे । जल विण तरुअर दधि । रसवति रस न  
हि लवण विण । तिम मुऊ विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औ  
पधी । देव धर्म गुरु सेव । ज्ञाव विना ते सवि वृथा । ज्ञाव फले नितमेव  
॥ ७ ॥ दान शील तप जे तुमें । निज निज कल्या वृत्तंत । तिहां जो ज्ञा  
वन जंत तो । कोइ सिद्धी नवि जंत ॥ ८ ॥ ज्ञाव कहे में एकले । तास्या  
बज्ज नर नार । सावधान थइ सांजलो । नाम कज्जं निरधार ॥ ९ ॥

॥ ✽ ॥ ढाल चौथी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ कानन मांहे काउसग रसोरे । प्रश्नचंद कृपिराय । ते में की  
धो केवलीरे । ततकृण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर । ज्ञाव वमो

संसार । ए तो बीजो मुक्त परिवार ॥ सो ० ॥ दानादिक विण एकलोरे ।  
 पोहोंचाहुं जवपार ॥ सो ० ॥ १ ॥ ( ए आंकणी ) वंश उपर चढी खेलतो  
 रे एलापुत्र अपार । केवल ज्ञानीमें कियोरे । प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो ०  
 ॥ ३ ॥ नूख तृषा खमें अति घणीरे । करतो कूर आहार । केवल महि  
 मा सुर करेरे । कूरगडू अणगार ॥ सो ० ॥ ४ ॥ लाजथी लोभ बाधे घ  
 णेरे । आयो मन वैराग । कपिल थयो मुनि केवलीरे । ते मुक्तनें सो  
 जाग ॥ सो ० ॥ ५ ॥ अणिका सुत गच्छनो धणीरे । क्षीणजंघा बलि जा  
 ण । कीधो अंतगम केवलीरे । गंगाजल गुणखाण ॥ सो ० ॥ ६ ॥ पन्न  
 रशें तापस जणीरे । दीधी गौतमें दिक्ख । ततक्खण कीधा केवलीरे । जा  
 मुक्त मानी शीख ॥ सो ० ॥ ७ ॥ पालक पापीयें पीलियारे । खंधक सूरि  
 ना शिष्य । जनम मरणथी ठोमव्यारे । आपे मुक्त आशीष ॥ सो ० ॥ ८ ॥  
 चंम रुद्रने चालतांरे । दीधो दंमप्रहार । नव दीक्षित थयो केवलीरे । ते गुरु  
 पण तेणी वार ॥ सो ० ॥ ९ ॥ धन रथ कारक साधुनेंरे । पडिलाज्यो उद्धास ।  
 मृगलो जावना जावतोरे । पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो ० ॥ १० ॥ निज  
 अपराध खमावर्तरे । मुंक्क्यो मनथी मान । मृगावतीने में दियुरे । निर्मल  
 केवल ज्ञान ॥ सो ० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरेंरे । देखी पुत्रनी रुद्र ।  
 मुक्तनें मनमाहे धस्योरे । ततक्खण पामी सिद्ध ॥ सो ० ॥ १२ ॥ वीर वंदन  
 चाल्यो मारगेंरे । चाप्यो चपल तुरंग । दर्डरनामें देवतारे । तेह थयो मुक्त  
 संग ॥ सो ० ॥ १३ ॥ प्रज्जुपाय पूजन नीसरीरे । डुर्गला नामें नार । काल  
 धर्म विचमां करीरे । पोहोती स्वर्ग मजार ॥ सो ० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा  
 कारिमीरे । रूप किसुं अजिमान । जरत आरीशा जुवनमांरे । पाम्यो केवल  
 ज्ञान ॥ सो ० ॥ १५ ॥ आषाढभूति कलानिलोरे । प्रगट्यो जरत सरूप  
 नाटक करतां पामियोरे । केवलज्ञान अनूप ॥ सो ० ॥ १६ ॥ दिक्का दिन  
 काउसग्ग रह्योरे । गजसुकुमाल मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियुरे । सिद्धि  
 गयो शुभ्र जाण ॥ सो ० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे । सांजली  
 पृथिवी चंद । पोतें केवल पामियोरे । सेवकरे सुर इंद्र ॥ सो ० ॥ १८ ॥  
 एम अनेकमें उद्धस्यारे । मुंक्क्या शिवपुर वास । समयसुंदर प्रज्जु वीरजीरे ।  
 मुक्तने प्रथम प्रकाश ॥ सो ० ॥ १९ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ दोहा ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ वीर कहे तुमे सांजलो । दान शीयल तप जाव । निंदा ठै अ  
ति पापिणी । धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां । पापें पिंम  
जराय । वेढ राढ बाधै घणी । डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो  
पापियो । जूंनो कोई न दिठ । बलि चंमाल समो कसो । निंदक बदन अ  
दिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी । करतो इंद नरिंद । लघुता पापें लो  
कमां । नासे निजगुण बृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे । निंदा ने अ  
हंकार । आप आपणे ठामें रहो । सज्जको जलो संसार ॥ ५ ॥ तो प  
ण अधिको जाव ठे । एकाकी समरत्य । दान शीयल तप त्रणे जलां । प  
ण जाय बिना अयकत्य ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां । अधिको आणी  
रेख । रजमांही तज काढतां । अधिको जाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ  
जंजण जणी । चारे समान गणंत । चार करी मुख आपणां । चत्रविध  
धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥

## ॥ ॐ ॥ ढाल पांचमी ॥ ॐ ॥

॥ ✽ ॥ वीर जिणेंतर एम जणें रे । वेठी परखदा वार । धर्म करो तु  
मे प्राणियारे । जिम पामो जव पाररे । धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चा  
र प्रकारो रे । जवियण सांजलो । धर्म मुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥  
(ए आंकणी) । धर्मयकी धन संपजे रे । धर्मथकी सुख होय । धर्मथकी  
आरति ठलै रे । धर्म समो नहिं कोय रे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ डुर्गति पडतां प्रा  
णीया रे । राखै श्री जिनधर्म । कुटुंब सज्जको कारिमुंरे । मत जूलो जवि  
जर्म रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हूआरे । बली होशे ठे जेह ।  
ते जिनवरना धर्मधी रे । मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
सोलहें ठासठ समेंरे । सांगानेर मळार ॥ पद्मप्रज्ज सुपसाजले रे । एह  
जणयो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे ।  
सरतर गह कुलचंद । युगप्रधान जग परगमो रे । श्री जिनचंद  
सूरीस रे ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे । विनय वंत  
जशवंत । आचारिज चढती कला रे । जिन सिंद सूरिमदंत रे ॥ धर्म०  
॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यना रे । सकलचंद तस शिष्य । समयसुंदर



वाचक जणें रे । संघ सदा सुजगीस रे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शील  
तप जावना रे । सरस रच्यो संवाद । जणतां गुणतां जावशुं रे । रुद्धि स  
मृद्धि सुप्रशादो रे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ॥

## ॥ १० ॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥ १० ॥

॥ ॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा । शत्रुंजय मंरण कृष्ण जिणं  
दा ॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी ॥ दूसरी आरती मरुदेवी नंदा ।  
जुगदा धरम निवार करंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ तीशरी आरती त्रिभुवन मो  
हे । रत्न सिंवासन मारा प्रभुजीनें सोहे ॥ जय० ॥ चोथी आरति नित्य  
नवी पूजा । देव कृष्ण देव अवर न दूजा ॥ जय० ॥ २ ॥ पांचमि आर  
ति प्रभुजीनें जावे । प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ १ ॥ ॥  
आरती कीजें प्रभु शांति जिणंदकी । मृगलंठनकी में जानें बलिहारी ।  
जय जय आरती शांति तुमारी । विश्वसेन अचिराजीको नंदा । शांति  
जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरति कीजें प्रभु नेम जिणंद  
की । शंख लंठनकी में जानें बलिहारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवा  
देवीको नंदा । नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति  
कीजें प्रभु पाश जिणंदकी । फणंदलंठनकी में जानें बलि हारी ॥ आ० ॥  
अश्वसेन वामा देवीको नंदा । पाश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०  
॥ ६ ॥ आरति कीजें महावीर जिणंदकी । सिंह लंठनकी में जानें ब  
लिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धार्थ त्रिशलाको नंदा । वीरजिणंद मुख पूनम  
चंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरति कीजें प्रभु चोवीश जिणंदकी । चोवीश  
जिणंदकी में जानें बलिहारी । चरणकमल नित सेवत इंदा । चोवीशे जिणं  
द मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोमी सेवक इम बोले । नहि  
कोइ महारा प्रभुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ चक्रेश्वरी देवी आरती ॥ ॥

॥ ॥ जय जय आरति देवी तुमारी । नित्य प्रणमं ऊं तुम चरणारी  
जय० ॥ १ ॥ श्री सिद्धाचलगिरि रखवाली । नाम चक्रेश्वरी जग सौख्या  
ली ॥ जय० ॥ २ ॥ सुविहृत गह्वनी शासन देवी । सकल श्री संघने  
सुख करेवी ॥ जय० ॥ ३ ॥ निलवट टीलडी रत्न विराजे । काने कुंमल

दोय रवि शशि गजे ॥ जय० ॥ बांहे वाजुबंध बेरखा सोहे । नीलवर्ण स  
ज्ज जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूडी खलके । पा  
ये घूघरमा घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ वाहन गरुड चडचा बज्ज प्रे  
में । तुज गुण पार न पांमुं केमें ॥ जय० ॥ ७ ॥ चुनडी जम्मां देह अति  
दीपे । नवसरा हारे जग सज्ज जीपें ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी  
आरती उतारे । रोग सोग नय दूर निवारे ॥ जय० ॥ ९ ॥ तस घर पुत्र  
पुत्रादिक गजे । मन बंठित सुख संपद राजे ॥ जय० ॥ १० ॥ देवचंद्र  
मुनि आरति गावे । जय जय मंगल नित्य बधावे ॥ जय० ॥ ११ ॥

॥ ॐ ॥ बीकानेर, श्रीकुंथुजिनचैत्यप्रतिष्ठा स्त० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दादा चिरंजीवो ॥ ( इस चालमें ) ॥ ॐ ॥ आज हर्ष  
जयो विजुवन नायक कुंथु जिनेसर नेटिया ॥ ( आ० ) प्रभु मस्तक  
मुगट विराजैतै । रविजिम कुंमलयुग गजै तै । गुणसगला अंग  
समाजै तै ॥ ( आ० ) ॥ १ ॥ प्रभु चौतीश अतिशय धारक तै ।  
वांणीना गुण विस्तारक तै । सज्ज देवेंद्र जिणना पायक तै ॥ ( आ० )  
॥ २ ॥ प्रभु सिंहासण पर सोहैतै । जसु ब्रचामर शिर होवै तै । नवि  
यणना मनकुं मोहै तै ( आ० ) ॥ ३ ॥ प्रभु ध्यानं जे होय रंग राता । ते  
पामें नवनिधि सुखशाता । अवसानें मुक्तिपुरी पाता ( आ० ) ॥ ४ ॥ प्रभु  
कुगुरु कुदेवकुं में ध्यायो । जब काल अनादी डखपायो । अवतो तुम  
शरणें जूं आयो ( आ० ॥ ५ ॥ प्रभु विरुध तुहारा चित धरनैं । जब जं  
य टालो सुनिजर करनैं । जिम जगमें सज्ज जश तुम वरनैं ( आ० )  
॥ ६ ॥ संवत् उगणीसै इकतीसै । जेठ उज्जल दशमी मन हीसै । करी  
चैत्य प्रतिष्ठा शुभ दीसै । ( आ० ) ॥ ७ ॥ प्रभु आज सफल जयो दि  
न मेरो । रवि जिम प्रगट्या बीकानेरो । सज्ज आनंदकारक संघ तेरो  
( आ० ) ॥ ८ ॥ जिन हंस सूरीश्वर महाराजा । थाप्या अतिशय धर  
जिनराजा । गुरु लक्ष्मीप्रधान सेवणकाजा ( आ० ) ॥ ९ ॥ ॐ ॥  
इति विक्रमपुर मध्ये श्री कुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्ठा स्तवनम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( श्रीशंखेसर पाशजिनेसर ) ॥ ( इस चालमें ) ॥ ॐ ॥

श्रीशीतल जिनचंद अनंत गुणाकरू । महा गोप महामाहण जगपति  
 सुख करू । जगगुरु जगदाधार शरण तोरै सदा । रहतां स्वपनमें डुक्ख  
 पांमुं नही ऊं कदा ॥ १ ॥ तूंही चिदानंद देव तूंही मुऊ गुरु अठै । तूंही तात  
 तूंही मात तूं ही वंधवअठै । कांस धेनुं चिंतामणि सुरतरु तुं सही । अक्षय  
 सुख दातार तुं ही पायो मही ॥ २ ॥ तुमनांमें अडसिद्ध नवेनिध पाइयै ।  
 दिन२ वढतो तेज कीरति जगजाइयै । इंद नरिंद सहू बस होय तुम सेव  
 तां । उहव आनंद होय सहूगुण कैवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम नार करू  
 नही वणसकै ॥ बज्रल कर्मकै जोर चित्त नहिं रहसकै । जो आतम गुण  
 ग्यान प्रगट होय माहरो । तो पांमुं सज्ज जेद बिनकमें ताहरो । ब्रह्मा  
 बिष्णु महेश जाणुं मुऊ सारषा । बीतरागतुं देव करीमें पारखा । दीनदया  
 ल दया निधि शिवसुख दीजियै । मोहन निजगुण पाय एही जश लीजियै  
 इति जगन्मंरण श्रीशीतलजिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( श्रीसंखेसर पाश ० ) ( और ) नदी जमुनाकै तीर उमै दो  
 य पेखिया । ( हारा लाल ३० ) इस चालमें ॥ ❀ दृढरथ नंदानंद पूरण  
 अतिशय धरू । वदन कमलको तेज देखी ठिपै दिन करू । अंग उ  
 पांग लक्षण दीसै सज्ज दीपता । रूपे सुर नर इंद सहूकुं जीपता ॥ १ ॥  
 मुगट कुंमल गलहार बाजूबंध सोहता । वक्षस्थल श्रीवह तिलक मनमो  
 हता । उत्र चामर चामंमल गुण सज्ज फरसता । अणियाला दोय नेत्र अ  
 मीरस वरसता ॥ २ ॥ देव भुवन जिम चैत्य वणयो बज्ज जावसैं । देखी प्र  
 फुल्लित होय सहू गुण दावसैं । अनुपम महमा देखि चित्त अति मोहि  
 यो । आनंद अधिक अपार हियामें सोहियो ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधमें  
 सेव्यो बज्जकालमें । मोह मिथ्यातकै जोर पड्यो बज्जजालमें । पूरण पु  
 न्य हिव जोग प्रभु दरशण मिल्यो । नवनय संकट डुक्ख सहू निश्चै ट  
 ल्यो ॥ ४ ॥ तारण नवजल मांहि शीतल प्रभु जाणियो । तुम गुण  
 अपरंपार हिया में पिठाणियो । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान सेवक वद्री जणी ।  
 मोहन प्रभु सुख कंद मिलै शीतल धणी ॥ ५ ॥ ❀ ॥  
 इति कलकत्तामंरण श्री शीतलनाथजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ॐ ॥ ताल तुमरी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीरप्रभु तेरी दोस्तीमें । मेरी सुमता सखी मेहरवान जईरे ॥  
 ( वी० ) आप नंही आवै बोधा पठावै । तेरी सुरत कुरबान जईरे ॥ ( वी० )  
 ॥ १ ॥ शासन नायक एही अरज है । दीजै दरश बनी वेर जईरे ( वी० )  
 आश दाशकी पूरन कीजै । चरण शरण लपटाइ रहीरे ( वी० ) ॥ ३ ॥  
 इति पदम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिन जीसैं मोरी० ( इस चालमें ) ॥ सदा सदाई शांति जिने  
 सर जबहुख दूर गमाय ( जलांजी जला जब० ) । विश्वशेनके कुलमें सुर  
 तरु । अचिराके नंद कहाय ( ज० ) । जनम जूमि हथिणा पुर जाके । मु  
 ग लंछन सुख दाय ( ज० ॥ १ ॥ स० ) ॥ तीश अधिक दश धनुष प्रमा  
 णैं । काया कंचन सोजाय ( ज० ) कुरुवंश कुल लाख वरश स्थित । केव  
 ल र्यान वरदाय ( ज० ) ॥ २ ॥ स० ) गर्ज थकां प्रभु शांति करी जब ।  
 शांतिनाथ पद पाय ( ज० ) जब जब जमतां शरणें आयो । अवतो करि  
 यै सहाय ( ज० ॥ ३ ॥ स० ) ज्युं पारेवा ऊपर तुमनें । करुणा अधिक  
 कराय ( ज० ) परतिख प्रभुपुर कलि कत्तामें । सज्ज जन बांछित दाय  
 ( ज० ॥ ४ ॥ स० ) मुक्तिकमल कहै शिवसुख दायक । संकट दूर पुलाय  
 ( ज० ॥ ५ ॥ स० ) इति कलिकत्ता मंमनश्री शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रभुजीकी महमा अजब बनीजी मारो मनमो लियोरे लोनाय  
 ( जलां जी प्रभु मनडोलियोरे लोनाय जी ) । विश्वशेन अचराजीके नं  
 दा । शांतिनाथ मन जाय ( ज० प्र० ) मस्तक मुगट काने युग कुंमल ।  
 उर अंगियां रही गाय ( जलां० प्र० ) ॥ १ ॥ मोहनी मूरत सोहनी सुरत  
 सज्ज जनकूं सुखदाय । नाम ग्रहण करतां जिनजीको । संगण पमै स  
 ज्ज पाय ( जलां० प्र० ) ॥ २ ॥ इत उपद्रव डख सज्ज टालै । नित प्रति  
 मंगल थाय ( ज० ) मुक्तिकमल कहै सुरतरु सरिखा । मनबांछित फल दा  
 य ( जलां० प्र० ॥ ३ ॥ इति त्रितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ काती महोत्सव वधाई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रथ चढ जाड नंदन आवत है । ( इस चालमें ) ॥ ❀ ॥

आज नगरमें हरख वधाई । समवसरण प्रभु आवत है । ( आ० ) धरम  
जिनेशर जग परमेशर । शांति सूरत मनभावत है ( आ० ) ॥ १ ॥ अ  
नुपम रयण जमी नर अंगियां । मुगट कुंडल चित्त चावत है ( आ० )  
॥ २ ॥ ठत्र चामर जामंडल दीपत । नवसर हार सुहावत है ( आ० )  
॥ ३ ॥ सरदशशि मुख कमल विराजत । रविजिम तेज फैलाव है ( आ० )  
॥ ४ ॥ नर नारी सज्ज अंग आभूषण । लुल लुल शीश नमावत है ( आ० )  
॥ ५ ॥ मणि मुगता फल अद्भुत श्रीफल । नर नर थाल वधावत है  
( आ० ) ॥ ६ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाळा । मधुर ध्वनी गुण गावत है  
॥ ७ ॥ सज्जपुर इंद्र धजा अति दीपत । विविध वाजित्र सुहावत है ॥ ८ ॥  
इत्यादिक आडंबर बज्जविध । कहतां पार न आवत है ॥ ९ ॥ ( आ० )  
कार्तिक सुद पूनम दिन उत्सव । देख सहू सुख पावत है ( आ० ) ॥ १० ॥  
धन्यभाग कलिकत्ता पुरमें । मोहन प्रभु गुण गावत है । ( आ० ) ॥ ११ ॥  
इति कलकत्ता कार्तिक महोत्सव वर्णन श्रीधरमनाथ स्वामी वधाई सं० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शासन नायक वधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( केशरियानें काजको लोक० इस चालमें ॥ ❀ ॥

हमारै आज आनंद वधाई । प्रभु वीरचरण सुखदाई । ( हमारै आज आनंद  
वधाई ) । सिद्धारथ नंदन जगवंदन । त्रिशला मात कहाई । क्वत्री कुंडमें ज  
न्म लियो है । सुर नर आवै धाई ( ह० आ० ) ॥ १ ॥ कंचन वरण अ  
धिक तन सौजित । लंछन व्याघ्र सुहाई । तीन ग्यान संयुत प्रभु कहियै ।  
नवियणकुं सुखदाई ( ह० आ० ) ॥ २ ॥ केवल पाय सवी सुरसंगै । पा  
वा पुरमें आई । समवसरण विच देशनादेतां । परखदा बार बनाई ( ह०  
आ० ) ॥ ३ ॥ भूमंमल विच बज्जत जीवकुं । नवजल पार लंघाई । च  
रम चौमाशि पावा पुरि करकै । शिवपुर पंथ सिधाई ( ह० आ० ॥ ४ ॥  
चौराशी लख जोनीमें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगै प्रभु  
तुम जेट्या । पातिक दूर पुलाई ( ह० आ० ) ॥ ५ ॥ तारण तरण जग  
तिजन बल्लल । सिवरमणी बरदाई । लक्ष्मी प्रधान सेवै कर जोनी । मोहन

कहै सुखपाई ( ह० ) ॥ इति बधाई संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रावककी करणी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक तूं ऊठे परजात । च्यारघमी ले पिठलीरात । मनमें स  
मरे श्री नवकार । जिम लानै नवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण  
गुरुधर्म । कवण हमारे ठै कुलकर्म । कवण हमारे ठै व्यवसाय । एहवो  
चिंतवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामायक लेजे मनशुद्धि । धरम तणी धरी हिं  
यमै बुद्धि । पम्कमणो कर रयणी तणो । पातक आलोए आपणो ॥ ३ ॥  
काया सगति करे पन्नखाण । सूधी पाले जिनवर आण । जण जे गुण  
जे तवन सिझाय । जिण जुंती निसतारो थाइ ॥ ४ ॥ चीतारे नित चउदै  
नेम । पाले दया जीवै तां सीम । देहरै जाय जुहारे देव । द्रव्यत नावित  
कर जे सेव ॥ ५ ॥ पोशाखे गुरु वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय  
निरदूपन सूऊतो आहार । साधानें दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी वृद्ध  
करि जे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । डलिया हीणा दीना देख ।  
करि जे तास दया सु विसेप ॥ ७ ॥ घर अनुसारै दीजे दान । मोटासूं  
मकरे अन्नमान । गुरुनैं मुख लेजे आखमी । धरम न मेव्है एका घडी  
॥ ८ ॥ वारूशुद्ध करे व्यापार । उंग अधिकानों परिहार । मन्ने केहनी  
कूमी साप । कूमासोंस कथन मत जाप ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहियै वत्तीस  
अन्नक वावीसे विसवां बीश । ते नकण न करी जै किमैं । काचा कवला  
फल मत जिमैं ॥ १० ॥ रात्री नोजननो वज्र दोष । जाणीनैं करिजे सं  
तोष । साजी साबू लोहने गुली । मधु धाहडी मवेचे बली ॥ ११ ॥ बलि  
मकरावे रंगण पास । दोषण घणा कहा ठै तास । पाणी गल जे वे वे  
वार । अणगल पीवां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन । पात  
क छोडी करिजे पुन । ठाणां इंधण चूल्है जोय । वावर जे जिम पाप न  
होइ ॥ १३ ॥ घृतनीपर वावर जे नीर । अणगल नीर मधोए चीर । वारै  
व्रत सूधा पाल जे । अतीचार सगला टाल जे ॥ १४ ॥ कहिया पनरै क  
रमा दान । पाप तणी पर हरि जे खान । शीश मलेजे अनरथ दंम । मि  
थ्या मैल मजरिजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हीयमै राख जे । बोल  
बिचारीनैं नाख जे । उत्तम ठामें खरचे वित्त । परउपगार करे शुचचित्त

॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधनै दही । उग्यामा मतमेले सही । पांचे तिथ  
मकरे आरंभ । पाले शील तजे मनदंभ ॥ १७ ॥ दिवश्चरम कीजे च  
उविहार । च्यारे आहार तणौ परिहार । दिवश तणा आलोए पाप । जि  
म जाजै सगला संताप ॥ १८ ॥ संध्या आवश्यक साचवे । जिनवर च  
रण शरण नव नवे । च्यारे शरणां दृढ करि रए । सागारी अणशण ले  
सुए ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा । जाऊं तीर्थ शेनुजै जेहवा । समे  
त शिखर आबू गिरनार । जेटीस कवज्जं धन अवतार ॥ २० ॥ श्राव  
ककी करनी ठै एह । एहथी थायै नवनो ठेह । आठे करम पमै पात  
ला । पापतणा बूटै आमला ॥ २१ ॥ वारू लहीये अमर विमान । अ  
नुक्रम पावै शिवपुर ध्यान । कहै जिन हर्ष घणें ससनेह । करणी डख  
हरणी ठै एह ॥ २२ ॥ इति श्रावककै अहनिशि कर्तव्य संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण अर दाशा सुगुण निवाशा । अमचीपूरो प्रभु आशा रा  
ज ( सु० ) देख उदाशा अपणा दाशा । दीजै कठुक दिदाशा राज  
॥ १ ॥ ( सु० ) ॥ चामी चटकी नव मांहे नटकी । नाच्यौ में विध न  
टकी राज ( सु० ) हिव मन हटकी आपसुं अटकी । लागुं प्रभुपाय  
लटकी राज ॥ २ ॥ ( सु० ) ॥ ते हम टाली मुगति संजाली । प्रीत अमे  
हीज पाली राज ( सु० ) एक हथाली वाजै ताली । वात अचंजा वाली  
राज ॥ ३ ॥ ( सु० ) ॥ ते उपगारी पाश तुह्यारी । सेवामें विध सारी  
राज ( सु० ) ॥ तत्व विचारी मन सुध धारी । श्रीधर्मशी सुख कारी राज  
॥ ४ ॥ ( सु० ) ॥ इति श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ चौपम खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठी) ॥ ❀ ॥ अरे माहरा प्राणीया ( चतुर नर ) चौ  
पम इणविध खेलरे । अशुभ करम मल ऊारकै ( च० ) । जाजम कर वै  
राग रे । वनीय विठायत वैसजो ( च० ) । जहां नही कुमतिको लागरे  
( अरे० ) ॥ १ ॥ दान शील तप जावना ( च० ) । चोपड एह पसाररे ।  
आठ दाव एक बोल में ( च० ) । आहुई करम निवाररे ॥ २ ॥ ( अरे० )  
देव गुरु धर्म तीनुं नला ( च० ) । पाशा एही जाणरे । अवशर कर हा

धे लीया ( च० ) । उज्जल लेख्या आएरे ॥ ३ ॥ दरशण ग्यान चारित्र  
जला ( च० ) तीतुई गुपती विचाररे । नव तत्व सात हिरदे धरो ( च० ) ।  
एसव शोला सारे ॥ ४ ॥ ( अ० ) पड्या अठा रै रहणदे ( च० ) पोवा  
रा व्रत धाररे । दस लक्षण दस धरमहै ( च० ) । हितकर हीयै विचाररे  
॥ ५ ॥ ( अ० ) पट्काया ठरुमीपनी ( च० ) हिरदै दया विचाररे । पु  
न्य नदै पंजडी पनी ( च० ) पंच महा व्रत धाररे ॥ ६ ॥ ( अ० ) च्यार  
तीन काणा पड्या ( च० ) । सातुई विसन निवाररे । जे डरगति दायक  
सही ( च० ) । बाधै अनंत संसाररे ॥ ७ ॥ ( अ० ) चिंज गति वाजी  
लग रही ( च० ) । डक्ख सखा जरूपरे । करमकटै सुख ऊपजै ( च० )  
स्तनसागर कहै सूररे ॥ ८ ॥ ( अ० ) ॥ ॥ ॥  
इति श्रीचौपड खेलन हित उपदेश सिध्दाय संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ॥ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ सेतुंज खेल खिलारी । सब समऊ देख सेतुंजकी घात । ल  
ख दोउं दल अपनै परायै की जात । काऊ विध कर मोह वादस्याहको  
मात । जब जाणुं तोय चतुर खेलन खिलार ( हे से० ) ॥ १ ॥ आहुं कर्म पिया  
दे आगै फूकतेही आवै । काम क्रोध गज चलत थंजत नहीं थंजै । लोच  
ऊठ चारुं खूंटकी मरोम चल ध्यावै । मान मायाके तुरंग चालचपल देखावे ।  
मिथ्या मत सो बजीर बीरबाकै ढंग ठामो । बाकै मारवैको दल अपनो संचार  
( हे से० ) ॥ २ ॥ तेरो ग्यान सो बजीर बीर तेरे ढंग ठामो । आठौं अंग समकि  
तके पियादे हलकारो । त्याग सांढिया सवार पर सांढियां को मारो । सख य  
चन तुरंगसु तुरंग निवारो । कृमा शील दोय फीज राखो दलकै अगामी । परद  
ल कर मारो ठिन में संहार ( हे से० ) । जप तप सत व्रत याकै घेरै चिंज उर  
जब बाकै चलनै की काइ रहै नई ठोर । जब तेरी होगी जीत दूजो हा  
रैगो खेलारी । जब सुजश को तेरैशिर बधैगो मोड । ठामे इंद्र धरणिंद्र  
तोरे छोलैगे चवर । तेरो जनन नजैगौ गुण अगाह ( हे से० ) ॥ ३ ॥  
इति सज्जनपुराणकै सेतुंज खेलन विचार संपूर्णम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीको पारणो लि० ॥ ॥

॥ ॥ ( डंहा ) ॥ श्रीअरिहंत अनन्त गुण । अतिशय पूरणगात्र ।



मुनि जे ज्ञानी संयमी । ते कह्यै उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमो  
 दना । करतो जीरणसेठ । श्रावक अच्युय गति लहै । नव ग्रैवेकां हेठ ॥ २ ॥  
 दश चनुमाशा बीरजी । विचरत संयम वास । वेशालापुर आवीया । इ  
 ग्यारमी चौमाश ॥ ३ ॥ ढाल । एकघर घोमा हाथीया जी ( एहनी ) ॥  
 चौमाशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर । वेशालापुर बाहिरै जी ।  
 आंव्या श्री महावीर ॥ १ ॥ ( जगत्गुरु त्रिशला नन्दनजी ) । जलैमें जे  
 व्या श्री जिनराय । सखीरी चौक पूरावो आय । मेरै जाग अनोपम थाय  
 ( ज० ) ॥ २ ॥ बलदेवनो ठै देहरोजी । तिहां प्रभु कावसग्ग लीध । पञ्च  
 क्खाण चनुमाशनो जी । स्वामी ए तप कीध ( जग० ) ॥ ३ ॥ जीरणसेठ  
 तिहां रहैजी । पालै श्रावक धर्म । आकारै तिण उलख्या जी । जाणै  
 श्री जिन मर्म ॥ ( ज० ) ॥ ४ ॥ आज अठै उपवासीया जी । स्वामी श्री  
 ब्रधमान । काल्हि सही प्रभु जीमस्थै जी । सैं हय देस्युं दान ॥ ( ज० )  
 ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवै जी । होसी सफल मुऊ आस । पक्ष माश  
 गिणतां थकां जी । पूरी थई चनुमाश ॥ ( ज० ) ॥ ६ ॥ सामग्री आहार  
 नी जी । जीरण कीध तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी । वैठो घरनें वार ॥  
 ( ज० ) ॥ ७ ॥ घरि आवै ठै प्राज्ञणा जी । निजुत्या एकणवार । प्रभुजी  
 कान पधारसी जी । में निजुत्या वारंवार ॥ ( ज० ) ॥ ८ ॥ पीठै करि  
 स्युं पारणो जी । जं प्रभुनै पडिलाज । होय मनोरथ एहवो जी । तो विन  
 वरसै आज्ञ ॥ ( ज० ) ॥ ९ ॥ अवसर कृप्या गोचरी जी । श्रीसिद्धारथ  
 पूत । वेशालापुर आवतां जी । पूरण घरेय पञ्च ॥ ( ज० ) ॥ १० ॥  
 मिथ्याखी जाणै नही जी । जंगम तीस्थ एह । चेडीनै कहै एहवो जी । कां  
 इक जिह्वा देह ॥ ( ज० ) ॥ ११ ॥ चाटूनरनै बाकुला जी । प्रभुनै आणी  
 दीध । नीरागी तेहीदीया जी । तिहांप्रभु पारणो कीध ॥ ( ज० ) ॥ १२ ॥  
 देव वजावै डंडनी जी । जय बोलै करजोमि । हेम बृष्टि ऊई तिहां जी ।  
 साढी वारह कोडि ॥ ( ज० ) ॥ १३ ॥ कहो सेठ तूह्येस्युं दीयो जी । की  
 यो पारणो वीर । लोकां प्रतैं इम कहै जी । में वैराई क्षीर ॥ ( ज० ) ॥  
 ॥ १४ ॥ राजादिक सज्ज ए कहै जी । धन धन पूरण सेठ । ऊंची करणी  
 तैं करी जी । अवर सहू तुऊ हेठ ॥ ( ज० ) ॥ १५ ॥ जीरण सेठ सुणै

तवैजी । वांजित्र डुंडुजी नाद । अनन्त कीयो किहां पारणोजी । मनमें  
थयो विखवाद ॥ ( ज० ) ॥ १६ ॥ ऊं जगमें अज्ञागीयो जी । मेरै नाया  
सांम । कल्पवृक्ष किम पामीयै जी । मारु मंमल ठाम ॥ ( ज० ) ॥ १७ ॥  
जेता मनोरथ में कीया जी । तेता रखा मनमांहि । निरधन जिम जिम चिं  
तवैजी । तिम तिम निरफल थाहि ॥ ( ज० ) ॥ १८ ॥ स्वामी तिहां कीयो  
पारणोजी । कीयो अनेथ बिहार । आया पाश संतानीया जी । तिहां मुनि  
केवल धार ॥ ( ज० ) ॥ वेशालापुर राजीया जी । लोकांसुं आणंद । राय  
प्रश्न पूछै तिहांजी । सुगुरु चरण अरविंद ॥ ( ज० ) ॥ १९ ॥ मेरै नगरमें  
को अठे जी । जीवपुन्य जशवंत । कहै केवली आजतो जी । जीरण सेठ म  
हंत ॥ ( ज० ) ॥ २० ॥ राय कहै किण कारणैजी । जीरण सेठ महंत ।  
दान दीयो जिनवीरनैजी । पूरण ते जसवंत ॥ ( ज० ) ॥ २१ ॥ रायप्रते  
कहै केवलीजी । पूरण दीनो दान । हेमवृष्टि फल तेहनै जी । अवरन कोई  
प्रमाण ॥ ( ज० ) ॥ २२ ॥ देवलोक तिण वारमैजी । जीरण घाटयोबंध ।  
बिना दान दीना लहो जी । उत्तम फल संबंध ॥ ( ज० ) ॥ २३ ॥ घमी  
एक सुर-डुंडुजी जी । जो न सुण तो फान । लहि तो जीरण तो सहीजी ।  
केवल अविचल ठाण ॥ ( ज० ) ॥ २४ ॥ राजा जीरणनै दीयोजी । अ  
धिक मान सन्मान । मुख्य नगरमें थापीयोजी । जोवो पुन्यप्रमाण ॥ ( ज० )  
॥ २५ ॥ दान दीयो सुपात्रनै जी । ते निष्फल नवि जाय । पात्रदान अनु  
मोदतांजी । जीरण जिम फल थाय ॥ ( ज० ) ॥ २६ ॥ इम जाणी अनु  
दनाजी । दान सुपात्र रसाल । दान देवै सुपात्रनै जी । तेहनै नमै मुनिमा  
ल ॥ ( ज० ) ॥ २७ ॥ इति श्री महावीर स्वामीको पारणो संपूर्णम् ॥

॥ २८ ॥ अथ सब पापादिक आलोचन स्तवन लि० ॥ २९ ॥

॥ ३० ॥ बेकरजोमी वीनवूजी । सुणि स्वामी सुविदीत । कूरु कपट मूकी  
करीजी । वात कज्ज आपवीत ॥ १ ॥ ( रुपानाथ मुऊ वीनती अवधार )  
तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी । मुऊनै उत्तर तार ॥ ( रु० ) ॥ २ ॥ नवसायर  
नमतं थकां जी । दीग दुःख अनन्त । जाग संयोगै नैटीयोजी । नय न  
जण नगवंत ॥ ( रु० ) ॥ ३ ॥ जे दुःख प्राजै आपणोजी । तेहनै कही  
यै दुःख । परदुःख नजण तूं सुण्यो जी । सेवकनै यो सुख ॥ ( रु० )

आलायण लीधां पखैजी । जीव रुलै संसार । रूपी लक्ष्मणा महासतीजी ।  
 एह सुणो अधिकार ॥ ( क० ) ॥ ५ ॥ दूषम कालै दोहिलोजी । सूधो  
 गुरु संयोग । परमारथ पीठै नही जी । गमर प्रवाही लोग ॥ ( क० ) ॥ ६ ॥  
 तिण तुऊ आगलि आपणाजी । पाप आलोऊं आज । माय बाप आग  
 लि बोलतां जी । बालक केही लाज ॥ ( क० ) ॥ ७ ॥ जिन धर्म श  
 सहू कहै जी । थापै अपणी बात । सामाचारी जूई जूई जी । संसय  
 पमुं मिथ्यात ॥ ( क० ) ॥ ८ ॥ जाण अजाण पाँ करी जी । बोल्या  
 उत्सुत्र बोल । रतने काग उभावतां जी । हास्यो जनम निटोल ॥  
 ( क० ) ॥ ९ ॥ जगवंत जाण्यो ते किहां जी । किहां मुऊ करणी एह ।  
 गजपाखर खर किम सहै जी । सबल विमासण तेह ॥ ( क० ) ॥ १० ॥  
 आप परूपुं आकरो जी । जाणै लोक महंत । पिण न करुं परमादीयो  
 जी । मासाहस दृष्टांत ॥ ( क० ) ॥ ११ ॥ काल अनंतै मैं लखा जी ।  
 तीन रतन श्रीकार । पिण परमादै पामिया जी । किहां जई करुं पुकार ॥  
 ( क० ) ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टी करुंजी । उद्यत करुंअ बिहार । धीरज  
 जीव धरै नही जी । पोतै बज्र संसार ॥ ( क० ) ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुऊ  
 आकरो जी । नगमें रूमीबात । परनंद्या करतां थकां जी । जायै दिननें  
 रात ॥ ( क० ) ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी । आलस आपै जीव ।  
 धरम पखै धंधे पड्योजी । नरगै करस्यैरीव ॥ ( क० ) ॥ १५ ॥ अण ऊंता  
 गुणको कहै जी । तो हरखुं निशि दीश । कोहितसीख जली कहै जी ।  
 तो मन आपुं रीश ॥ ( क० ) ॥ १६ ॥ वाद जणी विद्याजणी जी । पर रंजण  
 उपदेश । मन संवेग धस्यो नही जी । किम संसार तरेश ॥ ( क० ) ॥ १७ ॥ सु  
 त्र सिद्धांत बखाणतांजी । सुणतां करम विपाक । खिण एक मनमाहि ऊपजै  
 जी । मुऊ मरकट वैराग ॥ ( क० ) ॥ १८ ॥ त्रिविध श करिऊचरुं जी । ज  
 गवंत तुह दूजूर । बारवार जांजुं बलीजी । बूटकवारो दूर ॥ ( क० ) ॥ १९ ॥  
 आपकाज सुख राचितां जी । कीया आरंभ कोम । जयणा न करी जी  
 बनीजी । देव दयापर छेम ॥ ( क० ) ॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कखा  
 जी । दाख्या अनरथ दंभ । कूड कपट बज्र केलवी जी । ब्रत कीया शत  
 खंड ॥ ( क० ) ॥ २१ ॥ अण दीधो लीजै त्रिणो जी । तोही अदत्तादान ।

ते दूषण लागा घणाजी । गिणतां नावै ग्यान ॥ १२ ॥ ( रु० ) चंचल  
जीव रहै नही जी । राचै रमणी रूप । काम बिटवण सीकझं जी । ते तूं  
जाणें सरूप ॥ १३ ॥ ( रु० ) माया ममता में पड्योजी । कीधो अधिको  
लोचन । परग्रह मेल्यो कारमो जी । न चढी संयम सोचन ॥ १४ ॥ ( रु० )  
लागा मुऊनै लालचै जी । रात्री भोजन दोष । में मनमंख्यो माहरो जी ।  
न धख्यो धरम संतोष ॥ १५ ॥ ( रु० ) इण जव पर जव दूहव्याजी । जी  
व चौराशी लाख । ते मुऊ मिछामि डक्कडंजी । जगवंत तोरी साख ॥ १६ ॥  
( रु० ) करमा दान पनरै कल्याजी । प्रगट अढारै पाप । जेमें कीधा ते  
सहूजी । वगशः माई बाप ॥ १७ ॥ ( रु० ) मुऊ आधारै एतलो जी ।  
सरदहिणाठै सुख । जिन धरम मीठो जगतमें जी । जिम साकरनै दूध ॥  
॥ १८ ॥ ( रु० ) रिचनदेव तूं राजीवोजी । सेवुंजगिरि सिणगार । पाप  
आलोया आपणाजी । करप्रभु मोरी सार ॥ १९ ॥ ( रु० ) मरम एह जिन  
धरमनोजी । पाप आलोया जाय । मनसुं मिछामि डक्कमंजी । देतां दूर प  
लाय ॥ २० ॥ ( रु० ) तूं गति तूं मति तूं धणीजी । तूं साहिब तूं देव ।  
आणधरुं शिरताहरी जी । जव २ ताहरी सेव ॥ २१ ॥ ( कलशः ) ॥ इम  
चढीय सेवुंज चरण नेट्या नाजि नंदन जिनतणा । करजोमि आदि जि  
णंद आगै पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम  
शिष्य सुजश घणै । गणि सकलचंद सुसीत वाचक समयसुंदर गणि जणै  
॥ २२ ॥ ❀ इति आलोचनागर्हित स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः पद्मावती आलोचना सिद्धाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै राणी पद्मावती । जीवराशिखमावै । जाणपणुं जगदो  
हिलो । इणवेला आवै ॥ १ ॥ ( तेमुऊ मिछामि डक्कमं ) । अरिहंतनी सा  
ख । जेमें जीव विराधिया । चउरासी लाख ॥ २ ॥ ( ते० ) सात लाख प्रथ  
वीतणा । साते अप्पकाय । सातलाख तेऊकायना । सातेवली वाय ॥ ३ ॥  
( ते० ) दस प्रत्येकवनस्पती । चउदह साधारण । विति चउरिंद्री जीव  
ना । वेवेलाख विचार ॥ ४ ॥ ( ते० ) ॥ देवता तिरयंच नारकी । च्यारः  
प्रकासी । चउदह लाख मनुष्यना । एलाखचउरासी ॥ ५ ॥ ( ते० ) इण  
जव परजव सेविया । जे पाप अढार । भिविधः करि परिहरुं । डरगति

दातार ॥ ६ ॥ ( ते० ) हिंसा कीधी जीवनी । बोल्या मिरखावाद । दोष  
 अदत्तादानना । मैथुन उनमाद ॥ ७ ॥ ( ते० ) परिग्रह मेल्यो कारिमो ।  
 कीधो क्रोध विसेष । मान माया लोभमें कीया । बलि रागनें देष ॥ ८ ॥  
 ( ते० ) कलहकरी जीव दूहव्या । दीना कूडा कलंक । निन्दा कीधी पार  
 की । रति अरति निस्संक ॥ ९ ॥ ( ते० ) ॥ चाडी खाधी चौतरै । की  
 धो थापण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । जलो आयो जरोसो ॥ १० ॥  
 ( ते० ) ॥ पाठकीनें जवमें किया । जीवना वधघात । चिमीमार जव चि  
 डकला । मास्या दिनराति ॥ ११ ॥ ( ते० ) माढीगरजव माढला । जाल्या  
 जलवास । धीवर झील कोलीजवे । मृग मास्या पास ॥ १२ ॥ ( ते० ) ॥  
 काजी मुल्लानें जवै । पढी मंत्र कठोर । जीव अनेक जवै किया । कीधा पा  
 प अघोर ॥ १३ ॥ ( ते० ) ॥ कोटवालनें जवमें किया । अकराकर दं  
 म । बंदीवान मराविया । कोरमा ठनी मंम ॥ १४ ॥ ( ते० ) ॥ परमाधर  
 मीनई जवै । दीधा नारकी डुख्ख । ठेदन जेदन वेदना । तामणा अति ति  
 क्ख ॥ १५ ॥ ( ते० ) ॥ कुंजारनें जवमें किया । निम्माह पचाव्या । तेली  
 जव तिल पीलीया । पापी पेट जराय ॥ १६ ॥ ( ते० ) ॥ हालीनें जव ह  
 ल खड्या । फाम्या पृथवी पेट । सूम निदान घणा किया । दीधा बलध  
 चपेट ॥ १७ ॥ ( ते० ) ॥ मालीनें जव रोपिया । नानाविध वृक्ष । मूल प  
 त्र फल फूलना । लाग पापना लक्ष् ॥ १८ ॥ ( ते० ) ॥ अधोवाई  
 आंगमी । जस्या अधिकाजार । पोठी ऊंठ कीमा पम्या । दया नावीलि  
 गार ॥ ( ते० ) १९ ॥ ठीपानें जव ठेत्यो । कीधा संगणि पास । अग  
 नि आरंज कीया घणा । धातुरवाद अज्यास ॥ ( ते० ) ॥ २० ॥ सूरपणें  
 रण जूजतां । मास्या माणस वंद । मदिरा मांश जह्वा घणा । खाधा मूल  
 नें कंद ॥ ( ते० ) ॥ २१ ॥ खाण खणावो धातुनी । पाणी ऊलंज्या । आ  
 रंज कीधा अति घणा । पोतै पापज संज्या ॥ ( ते० ) ॥ २२ ॥ अंगार  
 कर्म कीया बली । धरमे दव दीधा । सुंसलेई बीतरागना । कूमा कोशज  
 पीधा ॥ ( ते० ) ॥ २३ ॥ विल्ली जव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी । मूढग  
 मार तणें जवै । में जूं लीख मारी ॥ ( ते० ) ॥ २४ ॥ जामजुंजातणें जवै ए  
 केंद्री जीव । ज्वारी चिणा गज्जं सेकिया । पामंता रीव ॥ ( ते० ) ॥ २५ ॥ खामण



एहतणा इहजव परजवना । आलोइयें अतीचाररे ॥ १ ॥ प्राणी  
 ज्ञान जणो गुणखाणी । वीरवदें इमवाणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुजलवीये नही  
 गुरु विनयें । कालै धरी वज्रमान । सुत्र अर्थ तडजय करी सूधा ।  
 जणीइं वही उपधान ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी । ठव  
 णी नोकरवाली । एहतणी कीधी आशातना । ज्ञान जक्ति नसंजालीरे  
 ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी । ज्ञान विराध्युंजेह । आज्ञव पर  
 जव वलिय जवो जव । मिच्छाडकम तेहरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ (समकितल्यो शुद्ध  
 जाणी) ॥ जिनवचनें शंका नविकीजें । नवि परमत अनिलाष । साधुत  
 णी निंदा परिहरजो । फल संदेह मराखिरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ स० ॥ मूढपणुं  
 ठमो परशंसा । गुणवंतनें आदरीइं । साहमीनें धर्मे करी थिरता । जगति प्र  
 ज्ञावना करीयैरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्राशाद तणोजे । अवर्ण  
 वाद मनलेख्यो । द्रव्य देवको जे विणसाख्यो । विणसंतां नवेख्योरे ॥ प्रा० ॥  
 ७ ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी । समकित खंड्युं जेह । आज्ञव ॥  
 प्रा० ॥ ८ ॥ (चारित्र्यलपौ चित्ताणी) पांचसुमति त्रिणगुपति विराधी । आ  
 ठे प्रवचनमाय । साधुतणें धर्मे प्रमादें । अशुद्ध वचन मन कायरे ॥ प्रा०  
 ॥ ९ ॥ चा० ॥ श्रावकनें धर्मे सामायक । पोसहमां मनवाली । जे जयणा  
 पूर्वक जे आठे । प्रवचन मायनपालीरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चा० ॥ इत्या  
 दिक विपरीतपणार्थी । चारित्र्यमहोत्पुंजेह । आज्ञव ॥ मिच्छामि ॥ ११ ॥  
 चा० ॥ वारें जेदें तप नवि कीधो । ठैं योगें निजशक्तें । धर्मे मन वच का  
 या वीरज । नविफोरविनं जगतेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चा० ॥ तप वीरज  
 आचारें इणपरें । विविध विराध्याजेह । आज्ञव ॥ मिच्छामि ॥ प्रा० ॥  
 ॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र्यकेरा । अतीचार आलोइयें । वीरजि  
 णेसर वयणसुंणीनें । पापमयल सविधोइयैरे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ १५ ॥ ढाल २ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ । बाउ वनस्पती । ए पांचे थावरकक्षा ए ।  
 करीकरसण आरंज । खेत्रजेखेमीयां । कूवा तलाव खणावीयाए ॥ १ ॥ घर  
 आरंजअनेक । टांकां जोइरां । मेडी माल चिणावियाए । लिंपण गुंण का  
 ज । एणिपरै परपरें । पृथ्वी काय विरावीयाए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी ।  
 जीलण अप्पकाय । भोति धोति करि दूहव्याए । जाठीगर कुंजार । लोह





तीचार । शिवगति आराधन तणोजी । एपहिलो अधिकाररे ॥ ६ ॥ जि० ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ४ ॥ साहेलडीनी देशीः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचमहाव्रत आदरो ॥ साहेलमीरे ॥ अथवा लपो व्रत  
बार तो सा० ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पाखो निरती चारतो ।  
व्रतलीधा संजारीये ॥ सा० ॥ हीयमै धरीय विचारतो । शिवगति आ  
राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकारतो । जीवसवे खमावीई ॥ सा० ॥  
योनि चौराशीलाखतो । मनशुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोईशुं रोष नरा  
खि तो । सर्वमित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रुतो । रागेद्वेष  
इम परीहरो ॥ सा० ॥ कीजै जन्म पवित्र तो । साहमी संघ खमावियै ॥ सा० ॥  
जेउपनी अप्रतीत तो । सज्जन कुंटुव करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशा  
सन रीततो ॥ १ ॥ खमीयें अनै खमावीयें ॥ सा० ॥ एहीज धर्मनो सारतो ।  
शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ एबीजो अधिकारतो । मृखावाद हिंसाचोरी  
॥ सा० ॥ धनमूर्छा मेथुनतो । क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेमद्वेष पैशू  
न्यतो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीई ॥ सा० ॥ कूडा न दीजे आलतो । रति  
अरती मिथ्यातजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजालतो ॥ ८ ॥ त्रिविध १ वोश  
रावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान अठारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥  
एचोथो अधिकारतो ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ हवैनिसुणो इहां आवीयाए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जनमजरा मरणें करीए ए । संसार असारतो । कस्याकर्म सज्ज  
अनुजवेंए । कोइन राखण हारतो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुए ।  
शरणसिद्ध जगवंत तो । शरणधर्म श्री जैननोए । साधुशरण गुणवंततो  
॥ २ ॥ अवरमोह सवि परिहरीए । चार शरण चित्तधारतो । शिवगति  
आराधनतणोए । ए पांचमो अधिकारतो ॥ ३ ॥ आज्ञाव परज्व जे कस्याए  
पापकर्म केई लाखतो । आत्मशाखें निंदीयैए । पम्किमीयें गुरु शाखितो  
॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्ताविआए । जे ज्ञाख्या नत्सूत्रतो । कुमति कदाय  
हनेवसैए ॥ बलि उत्थाप्या सुत्रतो । घड्या घडाव्या जे घणाए  
घरटी हल हथियार तो । जव १ मेली मुंकीआए । करतां जीव संहारतो  
॥ ६ ॥ पापकरीने पोषीआए । जनम १ परिवारतो । जनमांतर पुहतापठीए

कोइन कीधी सारतो ॥ ७ ॥ आज्ञव परज्ञव जे कस्याए । इम अधिकरण  
अनेकतो । त्रिविध १ वोसरावीइए । आणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ डःरुत  
निंदा इम करीए । पापकस्या परिहारतो । शिवगति आराधन तणोए । ए  
ठगे अधिकारतो ॥ ९ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ढाल ठगी ॥ आदितुं जोइनें आपणी ॥ ए चाल ॥ ॥ ॥  
धनेते दिन माहरो । जिहां कीधो धर्म । दान शीयल तप आदरी । ठाल्या  
डुक्कर्म ॥ १ ॥ धण ॥ शेवुंजादिक तीर्थनी । जे कीधी यात्र । युगतें जिनवर  
पूजीया । वलीपोण्या पात्र ॥ २ ॥ धण ॥ पुस्तक ज्ञान लिखावीया । जिणहर  
जिणचैत्य । संध चतुर्विध साचव्या । ए सातेखेत्र ॥ ३ ॥ धण ॥ पडिक्कमणां सुपरें  
कस्या । अनुकंपादान । साधू सूरि उवझायनें । दीधा वज्रमान ॥ ४ ॥ धण ॥ धर्मका  
रज अनुमोदिये । इम वारोवारि । शिवगति आराधन तणो । सातमो अधिकार  
॥ ५ ॥ धण ॥ जाव नलो मन आणीये । चित्त आणी गमि । समतानावे  
जावीयें । ए आतमसम ॥ ६ ॥ धण ॥ सुख डःख कारण जीवनें । कोई अ  
वर न होइ । कर्म आपजे आचस्या । जोगवीयें सोय ॥ ७ ॥ धण ॥ समता  
विणजे अनुसरे । प्राणी पुन्यकाम । ठारि ऊपरिते लीपणुं । जांखर चित्राम ॥ ८ ॥  
धण ॥ जाव नली परें जावीइ । ए धर्मनोसार । शिवगति आराधन तणो ॥  
आठमो अधिकार ॥ ९ ॥ धण ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ढाल सातमी रैवत गिरि ऊपरें ( एचाल ) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ हवेअवसर जांणी करीय संलेखण सार । अणशण आद  
रीयें पञ्चखी चारआहार । ललुता सवीमुंकी ठांडी ममताअंग । एआ  
तम खेलें समता ज्ञानतरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आहार अ  
नंत निःशंक । पण तृपतिनपाभ्यो जीव लालचीउ रंक । इसहो ए  
वलीवली । अणशणनो परिणाम । एहथी पामीजै शिवपद सुरपद  
गम ॥ २ ॥ धन धन शास्त्रिचंद्र खंधो मेघकुमार ॥ अणशण आराधी पा  
भ्यां नवनोपार । शिवमंदिर जास्यें करी एकअवतार । आराधन केरो ए नौमो  
अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारें महामंत्र नवकार । मनथी नवीमुंकी शिव  
सुख फलसहकार । एजपतां जायें दुर्गति दोषविकार । सुपरें ए समरो चउद  
पूरवनोसार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां जो पामें नवकार । तोपातिक गाली पामें

सुरअवतार । एनवपद सरिखो मंत्र न कोईसार । इहजवनै परजवै सुखसंपति  
दातार ॥५॥ जुन नील नीलणी राजा राणीथाय । नवपद महिमाथी राजसिं  
ह महाराय । राणीरतनवती वेज्जं पाम्याठें सुरभोग । इकजवथीलेस्यें सिद्धव  
धूसंयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनैं एवली मंत्रफलयो ततकाल । फणिधर फीठीनैं  
प्रगठथई फूलमाल । शिवकुमरें योगी सोवन पुरसो कीध । इम एणेंमंत्रें का  
ज घणांतां सिद्ध । एदश अधिकारें वीरजिणेंसर ज्ञाख्यो । आराधनकेरो ।  
विधिजिणें चित्तमाराख्यो । तिणेंपापपखाली जवजय दूरेंनाख्यो । जिनविनय  
करंतां सुमति अमृत रसचाख्यो ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमोजविजावशुंए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धारथराय कुलतिलोए । त्रिशला मात महहारतो । अव  
नीतलै तुह्मे अवतस्याए । करवा अह्मजपगार ॥ १ ॥ ( जयो जिन वीर  
जीए ) टेक ॥ में अपराध कस्याघणाए । कहतांनलज्जं पारतो । तुह्मचरणे  
आव्याजणीए । जोतारैतो तारि ॥ २ ॥ ज० ॥ आशकरीनैं आवीजण ।  
तुमचरणें महाराजतो । आव्यानैं उवेखशोए । तोकिमरहस्यें लाज ॥ ३ ॥ ज०  
करम अलूजण आकराए । जनममरण जंजालतो । ऊंठुंएहथी ऊंजग्योए ।  
ढोमविदेवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आजमनोरथ मुक्तफल्याए । नाठाडुःखदंदोल  
तो । तूठो जिनचोवीशमोए । प्रगट्या पुन्यकल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ जव२ वि  
नय तुह्मारमोए । जावजगति तुह्मपाय तो । देवदया करी दीजीयें । बोध  
बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलशः॥ इयतरणतारण सुगतिकारण दुःखनिवारण जगजयो ।  
श्री वीरजिणवर चरणथुणतां अधिकमन उल्लठथयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव  
सूरिंदपटधर । तीरथजंगम इणजगें । तपगच्छपति श्रीविजयप्रज्ञसूरि सूरितेजें  
ऊगमगें॥२॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्यवाचक । कीर्तिविजय सुरगुरुसमो । तस  
शिष्यवाचक विनय विजयें । थुण्योजिन चौवीशमों । सइसत्तर संवत उगणत्री  
सैं रही रानेर चौमाशए । विजयदशमी विजयकारण किउ गुण अज्यासए । नर  
जवआराधन सिद्धिसाधन । सुकतलील विलासए । निर्झराहेतें स्तवनरचियुं ।  
नामैं पुण्यप्रकाशए ॥५॥ इति श्रीवीरजिन पुन्यप्रकाश आराधना स्तवनं स०

## ॥ ❀ ॥ अथ नरहेसरनी सशाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नरहेसर वाज्रवली । अन्नय कुमारोअ ढंढण कुमारो । सि  
रिओ अणियान्तो । अयमन्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिज्जदो । वय  
ररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंमरिओ केसि कर  
कंठू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिज्जदोअ । न  
दोअ दसन्नज्जदो । पसन्नचंदोअ जसज्जदो ॥ ३ ॥ जंबू पज्ज वंकचूलो । गय  
सुकमालो अवंति सुकुमालो । धत्तो इलाइ पुत्तो । चिदाईपुत्तोअ वाज्रमुणी  
॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहत्थी उदायगो मणगो । कालयसू  
रिसंबो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पन्नवो विन्हुकुमारो । अहकुमारो दढ  
प्पहारीअ । सिज्जंस कूरगड्डुअ । सिज्जंनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ म  
हां सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपवं  
धा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन वाला । मणोरमा मयणरेहा दमयं  
ती । नमया सुंदरी सीया । नंदा नदा सुनदाय ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता ।  
पन्नमावई अंजणा सिरी देवी । जिठ सुजिठ मिगावई । पन्नावई चिल्लणा  
देवी ॥ ९ ॥ वंन्नी सुंदरी रुप्पिणी । रेवई कुंती सिवा जयंतीय । देवीई  
दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पन्नमावईय गोरी । गंधारी  
लप्पणा सुसीमाय । जंबूवई सच्चन्नामा । रुप्पिणी कन्हठ महिसीओ ॥  
॥ ११ ॥ जक्खाय जरुवदिन्ना । नूआ तह चेव नूअदिन्नाय । सेणा वेणा  
रेणा । नअणीओ थूलिज्जदस्स ॥ १२ ॥ इचाई महासईओ । जयंति अ  
कलंक सील कलिआओ । अज्जवि वज्जई जासिं । जस पडहो तिज्जअणे  
सयले ॥ १३ ॥ इति सता सतीओनी सिशाय ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिशाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिहं परिहरह धर सम्मत्तं । ठव्हिह  
आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं । दाणं  
शीलं तवोअ नावोअ । सशाय नमुक्कारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥  
जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरूथुअ साहम्मिआण वत्तल्लं । ववहारस्सय  
सुद्धी । रहयत्ता तिथ्यत्ताय ॥ ३ ॥ उवशम विवेक संवर । चासा समिई  
वज्जीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो

॥ ४ ॥ संघोवरि वज्रमाणो । पुथ्यय लिहणं पन्नावणा तित्थे । सट्ठाण  
किञ्च मेअं । निञ्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामैं मंगल कोम । प  
हेलैं स्वर्गें लाख वत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे ला  
ख अठावीश कह्या । बीजे वारलाख सदैव्या । चोथे स्वर्गे अरु लाख धार ।  
पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ छठें स्वर्गें सहस पचास । सातमें चालीश  
सहस प्रासाद । आठमें स्वर्गें ठ हज्जार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥  
अग्यार वारमें त्रणशे सार । नवग्रैवेयकें त्रणशे अठार । पांच अनुत्तर सर्वे  
मली । लाख चौराशी अधिका बली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रैवीश सार ॥  
जिनवर भुवन तणो अधिकार । लांवा शो जोजन विस्तार । पचास ऊंचा  
बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी विंव परिमाण । सत्तासहित एक चै  
लैं जाण । शो कोड बावन कोम संभाल । लाख चौराणुं सहस चौआल  
॥ ६ ॥ सातशौ ऊपर साठ विशाल । सवी विंव प्रणमुं त्रण काल । सात  
कोमनें बोहोत्तर लाख । भुवनपतीमां देवल ज्ञाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी  
विंव प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोम निव्याशी कोम  
साठ लाख वंदूं करजोम ॥ ८ ॥ बत्तीशैनें ओगणसाठ । तिर्गलोकमां चइ  
त्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशौ बीश ते विंव जुहार ॥ ९ ॥  
व्यंतर योतिषीमां बली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखज चंद्रानन  
वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत सिखर वंदूं जिनबीश । अ  
ष्टापद वंदूं चौबीश । विमलाचल नैं गढ गिरनार । आबूजपर जिनवर जुहा  
र ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक  
वरकाणो पाश । जीरावलोनैं थंजण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाठण  
जेह । जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन बीश । सिद्ध अ  
नंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी दीपमां जे अणगार । अठार सहस  
शीलांगना वार । पंच महाव्रत सुमती सार । पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥  
वाह्य अश्रितर तप उजमाल । ते मुनि वंदूं गुणमणि माल । नित नित ऊठी  
कीर्ति करूं । जीव कहे जव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ सकलार्हतं स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सकलार्हतं त्रप्रतिष्ठानं । मधिष्ठानं शिव श्रियः । नूर्नुवः स्वस्वयीशान ।  
 मारहत्यं प्रणिदमहे ॥२॥ नामाकृति द्रव्यभावैः । पुनत खिजगज्जनं । क्षेत्रे  
 कालेचं सर्वस्मिं । नर्हतः समुपास्महे ॥३॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं  
 निःपरिग्रह । मादिमं तीर्थनाथं च । रूपज्ञस्वामिनं स्तुमः ॥३॥ अर्हतं मजितं  
 विश्व । कमलोकरं नास्करं । अख्यान केवला दर्श । संक्रांतं जगतं स्तुवे ॥४॥  
 विश्वं ज्ञेयं जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः । देशना समये वाचः ।  
 श्रीसंज्ञं जगत्पतेः ॥५॥ अनेकांतं मतांजोधि । समुद्धासनं चंद्रमाः ।  
 दद्यां दमंदं मानंदं । जगवान् जिनंदनः ॥६॥ युसत्किरीट शाणायो । तेजि  
 तां हि नखावलिः । जगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वन्निमतां निवः ॥ ७ ॥  
 पञ्च प्रज्ञ प्रज्ञोर्देह । नासः पुष्पंतु वः श्रियं । अंतरंगारि मथने । कोपाटो  
 पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपाश्वजिनेन्द्राय । महेंद्र महितांजये । नमश्चतु  
 र्ण संघ । गगनाजोगं नास्यते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज्ञ प्रज्ञोर्देह । मरीचि नि  
 चियो ज्वला । मूर्त्तिं मूर्त्तिसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽस्तुवः ॥१०॥ कराम  
 लं कवद्विश्वं । कलयन् केवलश्रिया । अचिंत्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्वो  
 धयेऽस्तुवः ॥११॥ सत्त्वानां परमानंद । कंदो जेदनवांबुदः । स्यादादामृत  
 निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः ॥१२॥ जवरोगार्तं जंतूना । मगदंकार दर्शनः  
 निःश्रेयस श्रीस्मण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥१३॥ विश्वोपकारकी जूत । तीर्थ  
 कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥१४॥ विम  
 ल स्वामिनो वाचः । रुतकक्षोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जलनै  
 र्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभू रमणस्पृध्वि । करुणा रस वारिणा । अनंत  
 जिदंनंतांवः । प्रयत्नतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माण । मिष्टप्राप्तौ  
 शरीरिणां । चतुर्धा धर्मदेष्टारं । धर्मनाथं मुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर  
 वाग्ज्योत्स्ना । निर्मली रुत दिङ्मुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै । शांतिनाथ  
 जिनेस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुण्डुनाथो जगवान् । सनाथो त्रिशयध्विजिः । सुरा  
 सुर नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु जगवां । श्व  
 तुर्थारनजोरविः चतुर्थं पुरुषार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासु  
 र नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्मद्रुमूलने हस्ति । मल्लं मल्लि मजिष्टु

मः ॥ ११ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपमं । मुनि सुव्रत नाथस्य  
 देशना वचनं स्तुमः ॥ १२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि । निमंली कार कारिणं । वा  
 रि प्लुवा इवनमेः पातुं पादनखांशवः ॥ १३ ॥ यड वंश समुद्रेंडः । कर्म कद्द  
 ऊताशनः । अरिष्टनेमि र्जगवान् । नूयादोऽरिष्ट नाशनः ॥ १४ ॥ कमठे धर  
 णेंद्रेच । स्वोचितं कर्म कुर्वति । प्रजुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्श्व नाथः श्रियेऽ  
 स्तुवः ॥ १५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुतश्रिया । महानंद सरोरा  
 ज । मरालायाहर्हते नमः ॥ १६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः ।  
 ईषद्वाण्यार्दयोर्जद्र । श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥ १७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः ।  
 सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्त्रास विरहित । खिन्नुवन चूमामणि  
 र्जगवान् ॥ १८ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिताः ।  
 वीरेणान्हितः स्वकर्म निचयौ वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त  
 मतुलं वीरस्य घोरं तपो । वीरे श्री धृति कीर्ति कांति निचयः । श्रीवीररुद्रं  
 दिश ॥ १९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरज्जुवन गतानां  
 दिव्य वैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां । जिनवर ज्जुवना  
 नां ज्ञावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥

॥ ✽ ॥ अथ शान्तिकर स्तोत्र ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि  
 जत्त पालग । निवाणी गरूडकय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विण्णोसहि प  
 ताणं । संतिसामिपायाणं । जौं स्वाहा मंतेणं । सवाशिव इरिअ हरणाणं  
 ॥ २ ॥ नै संति नमुक्कारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं । सौं झी नमो स  
 वो सहि । पत्ताणं चंदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिज्जअण सामिणी । सिरि देवी  
 जख्खराय गणि पिमगा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रख्खंतु जिणजत्ते  
 ॥ ४ ॥ रख्खंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जसिंखला सया । वज्जंकुसि चक्केसरी  
 नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ  
 रुद्धा । अज्जुत्ता माणसिआ । महामाणसिआओ देवीओ ॥ ६ ॥ जख्खा गोमुह  
 महजख्खा । तिमुह जख्खेसु तुंवरू कुसुमो । मायंग विजय अजिओ । वंजो  
 माणुओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ ठम्मह पायाल किन्नर । गरुडो गंधव तहय  
 जख्खिंदो । कुवेर वरुणो जिन्नमी । गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ

चक्रेसरी । अजिआ डरिआरी कालि महा काली । अबुअ संता जाला । सु  
तारया सोअ सिखिआ ॥ १ ॥ चंन विजयंकुसि पन्नइति । निवाणि अबुआ  
धरणी । वईरुह तुत गंधारी । अंब पठमावई सिद्धा ॥ २० ॥ इअ तिथ्य  
रखण रया । अनेवि सुरासुरी चक्रहावि । व्यंतर जोइणि पमुहा । कुणंतु  
रखं सया अहं ॥ २१ ॥ एवं सुद्धि सिग्गण । सहिओ संघस्स संति जिण  
चंदो । मअवि करेऊ रखं । मुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा ॥ २२ ॥ इअ  
संतिनाह सम्मद्धि । रखं सरइ तिकालं जो । सबोवदव रहिओ । सलहइ  
सुह संपयं परमं ॥ २३ ॥ तव गच्छ गयण दिणयर । जुगवर सिरि सोम सुं  
दर गुरूणं । सुपसांय लक्ष गणहर । विज्जा सिद्धिं नणइ सीसो ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर परमात्मा । शिव सुखना दाता । पुरुखल वई विजये  
जयो । सर्व जीवना दाता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंमरीणिणी । नयरीयें शो  
हे । श्री श्रेयांसं राजा तिहां । नविअणनां मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन  
निमल लही । सत्यकी राणी मात । कुंथु अर जिन अंतरें । श्री सीमंधर  
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रभु जनमीया । बली यौवन पावे । मात पिता हरखें  
करी । रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ जोगवी सुख संसारनां । संजम मन ला  
वे । मुनिसुव्रत नमी अंतरें । दिक्का प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय  
करी । पाभ्या केवल नाण । वलज लंठवें शोजता । सर्व जावना जाण ॥  
॥ ६ ॥ चौराशी जस गणधरा । मुनिवर एक शो कोड । वण चुवनमां जोअ  
तां । नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कक्षा केवली । प्रभुजीनो  
परिवार । एक समय त्रएय कालना । जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढा  
ल जिनांतरे ए । थारो जिनवर सिद्ध । जश विजय गुरू प्रणमतां । शुच  
वंचित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जग धणी । आचरतें आवो । करुणावंत कर  
णा करी । अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल नक्त तुमे धणी ए । जो होवे अम  
नाथ । नवो नव ऊं ठू ताहरो । नही मेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग  
ठंकी करी ए । चारिख लेइशुं । पाय तुमारा सेविनें । शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥



ए अलजो मुजने घणो ए । पुरो सीमंधर देव । इहां थकी ऊं वीनवुं । अ  
वधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला । कलित त्रिभुवन हितकरं । सुर  
राज संस्तुत चरणपंकज । नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर  
शृंग मंमण प्रवर गुण गण भूधरं । सुर असुर किन्नर कोमि सेवित न  
मो ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं । निर्ज  
रावली नमें अहनिश ॥ नमो ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी । को  
मि पण मुनि मन हरं । श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो ॥ ४ ॥  
निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर । कोमिनंत ए गिरिवरं । मुक्ति रमणी व  
स्था रंगें ॥ नमो ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही । विमल गिरिवर तो  
परं । नहि अधिक तीरथ तीर्थ पति कहे ॥ नमो ॥ ६ ॥ इम विमल गि  
रिवर शिखर मंमण । डुःख विहंडण ध्याइ यें । निज शुद्ध सत्ता साधनार्थें  
परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विठोह निद्रा । परम पद स्थि  
ति जयकरं । गिरिराज सेवा करण तत्पर । पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शेत्रुंजय सिद्ध खेत्र । दीठे दुर्गति वारे । जाव धरीनें जे  
चढे । तेनें नवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम । सकल तीरथ  
नोराय । पूर्व नवाणुं रिखनदेव । ज्यां ठवीआ प्रभुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंम  
सोहा मणो । कवम जह्म अनिराम । नाजिरायां कुलमंमणो । जिनवर करूं  
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्य ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परमेसर परमात्मा । पावन परमिठ । जय जगगुरु देवाधि  
देव । नयणे में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार । करुणा रससिं  
धु । जगती जन आधार एक । निःकारण बंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभुता  
हरा ए । किम ही कल्याण जाय । राम प्रभु जिन ध्यानथी । चिदानंद सु  
ख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमात्म पासैं जावजो । मुऊ  
वीनतमी प्रेम धरीनैं इण परैं तुमे संजडावजो । ( ए आंकणी ) जे  
त्रण्य जुवननो नायकठे । जस चौशठ ईद्र पायकठे । नाण दरसण जेहनैं  
खायक ठै ॥ सुणो ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी कायाठे । जस  
धोरी लंठन पायाठे । पुंडरीगणी नगरीनो रायाठे ॥ सुणो ॥ २ ॥  
वार पर्पदा मांहि विराजे ठै । जस चौत्रीश अतिशय ठाजैठे । गुण  
पांत्रीश बाणीयें गाजे ठे ॥ सुणो ॥ ३ ॥ जविजननैं ते पमी वोहेठे । तु  
म अधिक शीतल गुण शोहेठे । रूप देखी जविजन मोहेठे ॥ सुणो ॥  
॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ हुं । पण नरतमां दूरें बसीओ हुं । महा  
मोह राय कर फसीओ हुं ॥ सुणो ॥ ५ ॥ पण साहिव चित्तमां धरीयोठे  
तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयोठे । तब कांइक मुऊथी डरीयोठे ॥ सुणो ॥  
॥ ६ ॥ जिन ज्तम पूठे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वा  
धे मुज मन अति नूरो ॥ सु ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आंखडीयें रे में आज । शेत्रुंजो दीठेरे । सवा लाख टकानो  
दहामेरे । लागे मुनैं मीठेरे ( ए आंकणी ) सफल थयो मारा मननो ऊ  
माहो ॥ बाला मारा ॥ जवनो संशय जाग्येरे । नरक तिर्यच गति दूर नि  
वारी । चरणे प्रभुजीनैं लाग्येरे ॥ शेत्रुं ॥ १ ॥ मानव जवनो लाहो लीधो  
वा ॥ देहमी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे बधावी । प्रेमें प्रदक्षिणा  
दीधीरे ॥ शेत्रुं ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनैं केशर घोली ॥ वा ॥ श्री आ  
दीश्वर पूज्यारे । श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप मेवासी धूज्यारे ॥ शेत्रुं ॥  
॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा ॥ वीरजिणंद इम वोहैरे ।  
त्रण जुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेत्रुंजा तोलेरे ॥ शेत्रुं ॥ ४ ॥ इंद्र  
सरीखा ए तीरथनी ॥ वा ॥ चाकरी चित्तमां चाहैरे । कायानी तो कासल  
टाले । सूरज कुंन्मां नाहैरे ॥ शेत्रुं ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रें  
वा ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उधार अनंता की  
धारे ॥ शेत्रुं ॥ ६ ॥ नाजिराया सुत नयणें जोतां ॥ वा ॥ मेह अमीरस

बूढ्यारे । उदयरतन कहे आज मारे पोते । श्री आदीश्वर तूढ्यारे ॥ शेरुं०

॥ ❀ ॥ पुनःसिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विमलाचल नित वंदियें । कीजै एहनी सेवा । मानुं हाथ ए  
धर्मनो । शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृह मंमली । ति  
हां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विन्नमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥  
२ ॥ कोइ अनेखुं जग नही । ए तीरथ तोले । इम श्रीमुख हरिआगलै  
श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ कस्यां । जात्रा फल  
लहीयें । तेहथी ए गिरि जेटतां । शत गुणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥  
जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लेहे ।  
तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नागिराजंगजं  
वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा । तारंगे अजितं जिनं नृ  
गुपुरे श्रीसुव्रतं स्थंजने । श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा  
॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प ज्वने ग्रैवेयके व्यंतरे । ज्यौतिष्का मर मंदरा  
द्रि वसतो स्तीर्थकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीधरे कुं  
डले । येचान्येपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमा ऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥  
श्री मद्गीरजिनास्य पद्मः ऊदतो निर्गम्यते गौतम । गंगा वर्तन मेत्य या प्र  
विज्जवे मिथ्यात्व वैताढ्यकं । उत्पत्ति स्थिति संहति त्रिपथगा ज्ञानां बुधा  
वृद्धिगा । सामे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीछादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्वं  
रवि ग्रहा श्व धरण ब्रह्मंद्र ज्ञात्यंविक्का । दिगपालाः सकपर्दिंगो मुखगणा  
श्वकेश्वरी नारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतिविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री  
संघस्य तुरा चतुर्विध सुरा स्ते संतु जड्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमराजुल सिंशाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊडे दोय पंखीया ( ए देशी ) पिनजी पि  
उजीरे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिनजी चाल्या परदेश । तपे मोरी  
गतीयां । पग पग जोती बाढ वालेसर कव मिले । नीर बिठोह्यां मीनके ।



॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे । मकरो मुनि ज्ञेयानुं अजिमानरे ।  
 ऋषि चोथमल सुत्र देखिनेरे । जोरु कीधी जालोर मजाररे ॥ आऊण ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज देव अरिहंत नमुं । समरूं तारूं नाम । ज्यां ज्यां प्रति  
 मा जिनतणी । त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेवुंजय श्रीआदिदेव । नेम  
 नमुं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ । आबू रिखन जुहार ॥ २ ॥ अ  
 ष्टापद गिरि ऊपरें । जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं । नरतें  
 नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वहुं । ज्यां वीशे जिन पाय । वै  
 नारंकगिरि ऊपरें । श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो राजियो ।  
 नामें देव सुपाश । रिखन कहै जिन समरतां । पोहोचै मननी आश ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ डविध धर्म जिणें उपदिश्यो । चोथा अजिनंदन । बीजें ज  
 न्म्यां ते प्रभु । अवडुख निकंदन ॥ १ ॥ डविध ध्यान तुह्मे परिहरो ।  
 आदरो दोयध्यान । एम प्रकाशुं सुमति जिन । ते चविया बीज दिन ।  
 ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष । तेहनै नवि तजियें । मुऊ परें शीतल जिन क  
 हे । बीज दिन शिव नजियें ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं । करोनाण सुजाण  
 बीज दिनें वासुपूज्य परें । लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार  
 दोय । एकांत न ग्रहीयें । अर जिन बीज दिनें चवी । एमजिन आगल क  
 हीयें ॥ ५ ॥ वर्तमान चौबीशीयें । एम जिन कल्याण । बीजदिनें केई पा  
 मीया । प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौबीशीयें । ऊआ वज्रत  
 कल्याण । जिन उत्तम पद पद्मनें । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ त्रिगुणे वेठा वीरजिन । नाखे नविजन आगें । त्रिकरणशुं त्रि  
 ऊं लोक जन । निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो नवि नावसें । पांच  
 म अजुवाली । ज्ञान आराधन कारणें । येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥  
 ज्ञान विना पशु सारिखा । जाणो इण संसार । ज्ञान आराधनथी लखुं ।  
 शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही । काश कुसुम नप

मान । लोका लोक प्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो  
सासमें । करे कर्मनो खेह । पूर्वं कोमी वरसां लगे । अज्ञानेंकरे तेह ॥ ५ ॥  
देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधक ज्ञान । ज्ञान तणो महिमा घ  
णो । अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी । जावजीव उ  
त्कृष्टी । पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुभदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही  
पंचनो ए । काउसग लोहस्स केरो । ऊजमणुं करो जावशुं । टाले नव  
फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी जाव अपार । वरदत्त  
गुण मंजरी परें । रंग विजय लहोसार ॥ ८ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ॥५॥

॥ ✽ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ महा शुदि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण  
शुदि आठमें । संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या  
रूपन जिणंद । दीक्षा पण ए दिन लही । ऊआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥  
माधवशुदि आठम दिनें । आठ कर्म कखा दूर । अग्निनंदन चौथा प्रजु ।  
पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली । जन्म्या सुमति जिणं  
द । आठजानि कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठवदि  
आठमें । मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आपाठ शुदि आठमें । पंचमी गति  
पामी ॥ ५ ॥ आवण वदनी आठमें । नमि जन्म्या जगन्नाण । तिम आव  
ण शुदि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठम दिनें ।  
चविया स्वामी सुपास । जिन उत्तम पदपद्मनें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ ✽ ॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ शाशन नायक. वीरजी । प्रजुकेवल पायो । संघ चतुर्विध थाप  
वा । महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी । सोमल विजयइ  
इंद्रभूति आदिं मल्या । एकादश विग्य ॥ २ ॥ एकादशसें चतुगुणा । तेह  
नो परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अग्निमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा  
दिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वरिं थाप्या वंदियें । जिन शासन  
जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पाश । वर चरण बिलाशी ॥ रूप  
न अजित सुमति नमी । मल्ली घनघाति बिनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिव  
वास पास । नवनवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । रुद्रि सगली जो

डी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिजं कालनां । दैदर्शें कल्याण । वरस अग्यार ए  
कादशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश  
पाठा । पूजणी ठवणी विंठणी । मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अगीयार अ  
व्रत ठाम्वा ए । वहो प्रमिमा अगियार । खिमाविजय जिन शासनें । सफ  
ल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव । अरिहंत सकलनी ।  
जाव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर ज्ञाखित वाणी । जयवंती  
आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
ए थुई चार वखत पण कहेवायठे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । मुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर  
जिन अंतर जनम्या तिज्जअण जश परशंसा जी । सुव्रत नमि अंतर वरदी  
क्षा शिक्षा जगत निरासैं जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु जाशे शिव  
बहू पासैं जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि  
जुक्किठा जी ॥ चउ अम अम मली मध्यम कालें वीश जिनेश्वर दिठा  
जी ॥ दो चउ चार जेधन्य दशजंबू धायई पुरुखर मऊारें जी ॥ पूजो  
अणमो आचारांगें प्रवचन सार उद्धारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पा  
मी जिनपद खवण निमित्तेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु  
णत विनीतेंजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकसिया  
जी । अपक्कवसिय जिनागम वंदो अह्वर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आ  
णा रंगी समकित संगी विविध अंग व्रतधारी जी । चउबिह संघ ती  
रथ रखवाली सज्ज उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी  
देती तस जश ऊधीजी । श्री गुजवीर कहे शिव साधन । कार्य शकलमां  
सिद्धीजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष । राय राणा प्र  
णमैं चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेह । ऊं  
बीज तणे दिन प्रणमूं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन शीतल शीतल

नाथ । अरनाथ सुमतिः जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर  
जन्म ज्ञान निखाण । ऊं बीज तणें दिन प्रणमूं ते सुविहाण ॥ १ ॥ पर  
काश्यो बीजें डुविध धर्म जगवंत । जेम विमला कमला विमल नयन  
विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । बीजें सवि  
कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोम  
ल चीर । चक्रेसरी केसरी सरस सुगंध शरीर । कर जोमी बीजें ऊं  
प्रणमूं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पुरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति  
॥ ❀ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुद्धि दिन पंचमी ए । जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम  
वरण तन शोभतो ए । मुख शारदको चंद तो । सहस वरस प्रभु आउखो  
ए । ब्रह्मचारी जगवंत तो । अष्ट करम हेळें हणीए । पोहोता मुक्ति मऊार  
तो । वासुपूज्य चंपापुरी ए । नेम मुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां व  
ली ए । श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत शिखर बीश सिद्ध ऊआ ए । शिर  
वड्ड तेहनी आण तो ॥ १ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी ऊवा ए । नाखे सार वचन  
तो ॥ जीवदया गुण वेळमी ए । कीजै तास जतन तो । मृपा न वोळो मा  
नवी ए । चोरी चित्त निवार तो । अनंत तीर्थकर इम कहे ए । परहरियें  
परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जक्क जलो ए । देवोश्री अंविका नाम तो । शा  
सन सान्निध्य जे करे ए । करै बलि धर्मनां काम तो । तपगढ नायक गुण नि  
लो ए । श्री विजय सैन सूरिराय तो । रिखन दास पाय सेवतां ए । सफ  
ल करै । अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल आठ करी जस आगल जाव धरी सुरराजाजी । आ  
ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म  
महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग  
ल कमला बाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरें व  
लीयाजी । आठमें आठ सुरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ  
ष्टमी गतिपरें पढोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनुं तप  
करतां अम घर नित्य नित्य बाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्राणीहारज आठ वि



राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमे आठ शो आगम जाखी । नवि  
मन संशय जाजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निरतीचारोजी ।  
आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी  
पूजा करीनें मानव नव फल लीजेंजी । सिद्धाई देवी जिनवर सेवी अ  
ष्टमहासिद्धि दीजेंजी । आठमनुं तप करतां लीजें निर्मल केवल ज्ञान  
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकल्याणजी ॥ ४ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥❀॥ एकादशी अति रूअमी । गोविंद पूठे नेम । कोण कारण ए प  
र्व मोहोटुं । कहो मुक्तशुं तेम । जिनवर कल्याणक अति घणां । एकशो  
ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ  
गिआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहै ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक  
सेवो । वन गजा जिमरेव । चौवीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं  
ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहवुं करो जिनसुं रंग । अगीआर अंग लखावियें ।  
अगीयार पाठांसार । अगीआर कवली विंटाणां ठवणी पूंजणी सार । चावखी  
चंगी विविध रंगी शास्त्रतणें अनुसार । एकादशी एम नजमो । जेम पामियें न  
वपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । नुजडं न  
चंम अखंम जेहनें समरतां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि  
हर्ष पंमित शीश । शासन देवी विघन निवारो संघ तणां निश दीश ॥ ४ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विजोः शैशवे । रूपा  
लोकन विस्मया हत रस आंत्या अमच्चक्षुषा । नन्मृष्टं नयन प्रज्ञा धवल  
तं क्षीरोदकाशंकया । वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्धमानो जिनः ॥  
॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मरेणु कपिश क्षीराणीवां जो नृतैः । कुंनै रप्सरसां प  
योधर नर प्रस्पध्विर्जिः कांचनैः । येषां मंदर स्तनशैल शिखरे जन्मान्निषे  
कः कृतः । सर्वैः सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हव  
क्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं बह्वर्थ युक्तं मुनिगण वृष  
नैर्ध्वारितं बुद्धिमद्भिः । मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रत चरण फलं ज्ञेयं नाव प्रदीपं ।  
नक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक

व्योमनील युतिमल सदृशं बालचंद्राज दंष्ट्रं । मत्तं घंटाखेण प्रसृत मदज  
लं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।  
यक्षः सर्वानुभूति दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ ॥ इति

॥ ॐ ॥ अथ कल्याण कंदं, सर्वदिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कल्याणकंदं पढमं जिणंदं । संतिं तओ नेमजिणं मुणिंदं । पा-  
सं पयासं सुगणिक ठाणं । नचीइ वंदे सिरि वज्रमाणं ॥ १ ॥ अपार सं  
सार समुद्वपारं । पत्ता सिवंदितु सुइक्षसारं । सवे जिणंदा सुरविंद वंदा । क  
ल्याण वल्लीण विशाल कंदा ॥ २ ॥ निवाण मग्गे वर जाणकम्पं । पणासि  
या शेश कुवाइ दप्पं । मयं जिणणं शरणं बुहाणं । नमामि निच्चं ति जग  
प्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदीडु गोख्खीर तुसार वन्ना । सरोज हत्था कमले निस  
च्चा । वाणसिरी पुत्थय वग्गहत्था । सुहाय सा अह्म सया पसत्था ॥ ४ ॥ इति

॥ ॐ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठा  
कुरराम अपार । मंत्र मांहे नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र बखाणुं ।  
जलधर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहे जिम  
ऋषन्नो वंश । नान्नि तणो जे अंश । क्कमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशू  
रा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषन्न अजित संजव  
अनिनंदा । सुमतिनाथ मुख पूनम चंदा । पद्म प्रन्न सुख कंदा । श्रीसुपा  
र्थ चंद्रप्रन्न सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो वज्र बुद्धी । वासुपूज्य मति सुद्धी  
विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अरमल्लि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत  
शुद्ध पंथी । नमी पाशने वीर चौबीश । नेम बिना ए जिन त्रेवीश । सि  
द्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ नरतराय जिन सारथे बोले । स्वामी शत्रुंजय गिरि  
कुण तोले । जिननुं वचन अमोले । ऋषन्न कहे सुणो नरतराय । ठहरो पा  
लंता जे नरजाय । पातिक नूको थाय । पशु पंखी जेइण गिरि आवे । नव  
त्रीजे ते सिद्धज थावे । अजरामर पद पावे । जिनमतमें शत्रुंजो बखाण्यो ।  
ते में आगम दिलमांहे आण्यो । सुणतां सुख नरआण्यो ॥ ३ ॥ संघ पति  
नरत नरेसर आवे । सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे । ना  
न्निराया मरुदेवी माता । ब्राह्मी सुंदरी बहेन बिरुयाता । मूर्ति नवाणुं आता

गोमुखनें चक्रेसरी देवी । श्रेत्रुंजय सार करे नित्य मेवी । तपगच्छ ऊपर हेवी  
श्रीविजय सेन सूरीश्वर राया । श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया । ऋषभ दास  
गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महाविदेहखेत्रे सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी । रूपानां  
कोशीशा विराजे रत्नना दीवां दीपेजी । कुंकुमवर्णी गङ्गाली विराजे मोती  
ना अद्भुत सारजी । त्यां वेठा सीमंधर स्वामी बोलै मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥  
केशर चंदन जरीरे कचोली । कस्तूरी वरासजी । पहलीरे पूजा अमारीरे  
होजो ऋगम ते परनातजी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पंचिंदिय संवरणो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचिंदिय संवरणो । तह नवविह वंजेचर गुत्ति धरो । चउवि  
ह कसाय मुक्को । इह अवारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महवय जुत्तो ।  
पंच विहायार पालण समथ्यो । पंचसमिई तिगुत्तो । व्तीस गुणेहिं गुरू  
मझ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सामायिअ वयजुत्तो । जाव मणे होइ नियम संजुत्तो । विनइ अ  
सुहं कम्मं । सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए । समणो  
इव सावओ हवइ जह्वा । एएण कारणेणं । वज्जसो सामाइअं कुळा ॥  
॥ २ ॥ सामायक विधे लीधुं । विधे पारीनं । विधि करतां जे कोई अवि  
धि ऊओ होय । ते सविज्जं मन वचन कायायें करी मिहामि उक्कमं ॥ दश  
मनना । दश वचनना । वारै कायाना ( एवं ) व्तीस दूषणा मांहे । जे कोई  
दूषण लागो होय । ते सहू मन वचन कायायें करी मिहामिउक्कडं ॥ १० ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ पौसह पारवानी गाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सागरचंदो कामो । चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो । जेसिं पौसह  
पन्निमा । अखंमिआ जीविअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिऊ । सुदसा  
आणंद कामदेवाय । जेसिं पसंसइ जयवं । दढवयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पौ  
सह विधे लीधुं । विधे पारीनं । विधि करतां जे कोई अविधि ऊओ होइ ।

तेसविजुं मन वचन कायायें करी-मिहामि-डुक्कडं ॥ इति ॥ ७० ॥ ... ॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥ इच्छा-कारेण संदिसह जगवन्-चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥ जग-  
चिंतामणि जगनाह । जग गुरु-जगरुखण । जग-बंधव जग सथ्यवाह ।  
जग भाव-विअरुखण । अठावय संठविअरुख । कम्मठ-विणासण । चन्वी  
संपि-जिणवर जयंतु । अप्पमिहय सासण ॥ १ ॥ कम्मजूमिहिं कम्मजु-  
मिहिं । पढम संघयणि । उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणवराण विहरंत-लअइ ।  
नवकोमिहिं केवल्लिण । कोडि-सहस्स नवसाज्ज गम्मई । संपइ जिणवर  
वीस मुणि । विज्ज-कोमिहिं वरणाण । समणह कोडी सहस दोअ । थुणि  
जअ निच्च-विहाणि ॥ २ ॥ जयउ-सामी जयउसामी । रिसह सत्तुंजि  
उक्कित पहू नेमि जिण । जयउ वीर-सच्चउरिमण । चरुअउहि मुणि  
सुवय । मज्जरिपास डह डुरिअ खंमण । अवर विदेहिं तिथ्यरा । चिज्जं  
दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअ । वंडुजिण सवेवी ॥ ३ ॥ स-  
चाणवइ सहस्सा । लख्खा अप्पन्न अठ कोमीओ । वत्तीसय वासीआइ । ति-  
अ लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नरस-कोडि-सयाइ । कोमी वायाल लख्ख अ-  
डवत्ता । वत्तीस सहस असिआइ । सासय-विवाइ-पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ५५ ॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥ नाणंमि-दंसणं-मिअ । चरणंमि तवेअ तहय विरियंसि । आयरणं  
आयारो । इअएसो पंचहा जणिओ ॥ १ ॥ काले-विणए वज्जमाणे । उव-  
हाणे तहय निन्हवणे । वंजण अय्य तडुअए । अठ विहो नाण मायारो  
॥ २ ॥ निस्संकिअ-निक्कंखिअ । निव्वित्तिगिह्ठा अमूढ-दिठीअ । उववूह धि-  
रीकरणे । वउल्ल पचावणै अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो । पंचहिं स-  
मईहिं तिहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥  
वारसविहंमिवि-तवे । अखितर-वाहिरे कुशल दिठे । अगिलाइ अणाजीवी  
नायवो सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्ती संखेवणं रस-  
आओ । काय किलेसो संलीणयाय । वओ तवो होइ ॥ ६ ॥ पायउत्तं  
विणओ । वेयावच्चं तहेव सप्पाओ । जाणं उत्सग्गोविय । अखितरओ त-  
वो होइ ॥ ७ ॥ अण-गूहिअ वल-विस्सिओ । परिकमइ जो जज्जत्त माऊ

तो । जुंजइ अजहाथामं । नायवों वीरिआयारो ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्य दंतांशु केशरं । प्रात वीरजिनें द्र  
स्य । मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषा मन्त्रिषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्षज  
रात् सुखं सुरेंद्राः । तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं । प्रातः संतु शिवायते जिनें  
द्राः ॥ २ ॥ कलंक निर्मुक्तममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राज्ञ यसनं सदोदयं ।  
अपूर्व चंद्रं जिनचंद्र चापितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३९

॥ ❀ ॥ अथ सुत्रदेवतानी स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुत्र देवयाए करेमि काउस्सगं ० । सुत्र देवया जगवई । नाणा  
वरणीअ कम्म संघायं । तेसिं खवेऊ सययं । जेसिं सुत्र सायरे जत्ती ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीसे खित्ते साहू । दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं । साहंति  
मुख मगं । सादेवी हरऊ डरिआइं ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सामायक लेवा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुंकीनैं । श्रावक, श्राविका, कटा  
सणुं । मुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध वस्त्रपहरी । जग्या पुंजी । कटासण ऊपर  
वेशी, मुहपत्ती मावा हाथमां मुख पासैं राखी । जमणो हाथ थापना जी सन्मु  
ख राखी । एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही । इच्छामि खमासमण देई । इरि  
या वहिया । तस्सउत्तरी । अन्नत्थ ऊससिएणं । कहै । एक लोगस्सनो (अथवा)  
चार नवकारनो काउसगग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै । खमासमण  
देई । इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निखेऊं ॥ इच्छं ॥  
इमकही । मुहपत्ती, तथा, अंगनी पन्निखेहणना पंचाश बोल कही । मुहपत्ती  
पन्निखेहीएँ । पढी खमासमण देई । इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक  
संदिस्सानं ॥ इच्छं ॥ बली खमासमण देई । इच्छाण॥ सामायक ठाउं ॥ इ  
च्छं ॥ एम कही । वे हाथ जोमी । एक नवकार गणी । इच्छाकार जगवन्  
पसाय करी सामायक दंमक उव्वरावोजी । पढी गुरू प्रमुख वमेल करेमि  
जंते कहे । पढी खमासमण देई । इच्छाण वैसणो संदिस्सानं ॥ खमाण

इष्टा० ॥ वैसणो गार्ध ॥ खमा० इष्टा० ॥ सिझाय सेंदिसां ॥ खमा०  
इष्टा० ॥ सझाय करं । इष्टं । एम कही । अण नवकार गणवा । पठी वे  
धनी सझाय धर्म ध्यान करवुं । इति सामायक लेखानी विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अय सामायिक पारवा विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ खमासमण देई । इरिया वही पडिक्रमाथी (यावत्) लोगस्स सधी  
कही ॥ खमा० ॥ इष्टा० ॥ मुहपत्ती पमिलेऊं (एम कही) मुहपत्ती पमिले  
ही । खमासमण देई ॥ इष्टा० ॥ सामायिक पारं । यथाशक्ति । वली खमास  
मण देई ॥ इष्टा० ॥ सामायिक पास्तुं तहत्ति कही । पठी जमणो हाथ  
चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाझ्य  
वयजुत्तो०) कहिए ॥ पठी जमणो हाथ थापना सामो सबलो राखीने एक  
नवकार गणीअं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पठी पाणी वावरचुं होय (तो) मुहप  
त्ती पडि लेहवी । अनें आहार वावखो होय (तो) वांदणां वेदेवा । तिहां वी  
जा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पठी यथा शक्ति पचखा  
ए करवुं । पठी खमासमण देई । इष्टा० कही । वमेरायें (अथवा) पोतें ।  
चैत्यवंदन कहेवुं । पठी जंकिंचि० नमोऽथ्युणं० कही । ऊजाथईने । अरिहंतचे  
इयाणं कही । एक नवकारनो काऊत्सग करी । नमोऽहंतू० कहीनें । प्रथम  
थुई कहेवी ॥ पठी । लोगस्स० सबलोए अरिहंत चेइयाणं कही । एक नवकार  
नो काऊत्सग पारीनें । बीजी थुई कहेवी ॥ पठी पुस्खरवरदी० कही । सु  
अस्स जगवओ करेमि काऊत्सगं । वंदण० कही । एक नवकारनो काऊ  
त्सग पारी । बीजी थुई कहेवी । पठी सिद्धाणं बुद्धाणं कही । वेयावध ग  
राणं० करेमि काऊत्सगं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काऊत्सग  
पारी । नमोऽहंतू० कही । चोयी थुई कहेवी ॥ पठी चेशीनें नमोऽथ्युणं कहे  
वुं (पठी) चार खमासमण देवापूर्वक । जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व सा  
धुन्यः । प्रतें थोन्न वंदन करीयें । पठी इष्टाकारेण० ॥ (दैवसिक प्रतिक्रमण  
गार्ध) एम कही । जमणो हाथ, चवत्ता अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इष्टं  
सद्धस्सवि देवसिअ० ॥ कहेवुं ॥ पठी उजा थई । करेमि जंते । इष्टामिठामि

कान्तसगं । जोमे देवसिञ्चो ॥ तस्स उत्तरी ० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ  
गाथानो कान्तसग करवो । आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो का  
न्तसग करवो ॥ ते कान्तसग पारीनें लोगस्स कहवो । पढी वेसीनें । बीजा  
आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा वे देवां ॥ पढी ज्ञाना थईनें । इच्छा  
करे ० ॥ देवसिञ्चं आलोउं ॥ इच्छं आलोएमि जोमे देवसिञ्चो ० ॥ कहीने  
सात लाख केहेवा । पढी अठार पापस्थानक आलोइनें । सबस्सवि देवसि  
ञ्च । कहीने वेसवुं । वेसीनें एक नवकार गणी । करेमिजंते । इच्छामि पमि  
क्कमिउं कहीने ॥ वंदित्तु केहेवुं ॥ पढी वांदणां वे देवा । पढी । अष्टुठिञ्चोदं ।  
अञ्चिंतर देवसिञ्चं खामीनें । वांदणां वे देवा । पढी ज्ञाना थई । आयसिय उ  
वझाए, कहीने । करेमि जंते ० ॥ इच्छामि ठामि ० जोमे देवसिञ्चो ० ॥ तस्स  
उत्तरी ० ॥ कही । वे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो कान्तसग करवो । ते  
पारीनें लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत चेइयाणं । वंदण ० कही । एक लोग  
स्स (अथवा) चार नवकारनो कान्तसग पारीनें । पुख्खवरदी ० ॥ सुअस्स  
जगवञ्चो करेमि ० ॥ वंदण ० कहीनें । एक लोगस्स (अथवा) चार नवका  
रनो कान्तसग करवो । ते पारीनें । सिद्धाणं बुद्धाणं ० कही । सुअ देवया  
ए करेमि कान्तसगं । अन्नत्थू ० कही । एक नवकारनो कान्तसग  
करवो । ते पारी । नमोऽर्हत् ० कही । ( पुरुषे ) सुय देवयानी पहेली  
थुई केहेवी ( अने ) स्त्रीयें, कमल दलनी पहेली थुई केहेवी । पढी  
खेत्र देवयाए करेमि कान्तसगं ० ॥ एक नवकारनो कान्तसग पारी ।  
नमोऽर्हत् ० कही । क्षेत्र देवतानी बीजी थुई । स्त्रीयें ( तथा ) पुरूषे वनेनें  
केहेवी । पढी एक नवकार प्रगट गुणी ( वेसीने ) ठवा आवश्यकनी मुह  
पत्ती पमिलेहीने । वे वांदणां दीजें ( पढी ) सामायक, चउवीसथो, वंदनक, प  
मिक्कमाणं, कान्तसग, अने पच्चखाण, कहुंज्जी । एम ए ठ आवश्यक संज्ञा  
खा । पढी इच्छामो अणुसट्ठिं । नमो खमासमणाणं ० । कही । नमोऽर्हत् ०  
कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्धमानाय । कहे । अने स्त्रीयां संसार दावानी थुई वण  
कहे । पढी नमोत्थुणं कही स्तवन केहेवुं ( पढी ) वरकनक कही जगवान् आदे  
वांदवा । पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी । अट्ठाइजेसु केहेवुं । पढी दे  
वसिञ्च पायच्चित्तनो कान्तसग, चार लोगस्स (अथवा) शौल नवकारनो क

वो । ते काउसग पारी । प्रगट लोगस्स कही । वेसीने । खमासमण देइ । इ  
 णा ॥ सिअाय संदिसाउं । वीजुं खमासमण देइ । इणा ॥ सिअाय जणुं । एम  
 सिअायनो आदेश मागी । एक नवकार गणी । सिअाय कहवी । पठी एक  
 नवकार गणी । खमासमण देइ दुःखखखओ कम्मखखओ नो काउसग ।  
 चार लोगस्सनो संपूणं (अथवा) शोल नवकारनो करवो । ते एक वमेरें  
 (अथवा) पोतें पारीने । नमीं उद्धत कही । लघुशांति कहीनें । प्रगट  
 लोगस्स कहै (पठी) इरिया वही ॥ तस्स उत्तरी ॥ कहै ॥ एक  
 लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग करी । प्रगट लोगस्स  
 कहवो । पठी चउकसाय ॥ नमुथ्युणं ॥ कहै ॥ जावंति, वे । क  
 हीने । उवसग हरं ॥ जयवीयराय ॥ कहै । मुहपती पडिलेहवी । पठी  
 इणामि ॥ इणा ॥ सामायिक पारं ॥ यथाशक्ति । इणामि ॥ इणा का ॥  
 सामायिक पारयुं, तहत्ति कही । पठी जमणो हाथ उपधी ऊपर स्थापी । ए  
 क नवकार गणीने । सामाअ वयजुत्तो ॥ कहवुं । पठी थापेली स्थापना  
 होय तो एक नवकार गणी ऊठे । ए देवसी प्रतिक्रमण विधि कसो । वा  
 की अंतरविधि मोहोटाथी समजवो । इति देवसी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥❀॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं । पठी । इणा ॥ इणा ॥ कहै  
 कुसुमिण इसमिणनो काउसग चार लोगस्सनो (अथवा) शोल नव  
 कारनो करी । पारी । प्रगट लोगस्स कहवो । पठी खमासमण देइ ।  
 जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन, जय वीयराय सुगी कहवुं । पठी चार खमा  
 सण पूर्वक । जगवान् । आचार्य । उपाध्याय । अनें सब सायु । प्रत्येकें  
 बांदवा । पठी खमासमण वे देइ । सअायनो आदेश मागी । एक नवकार  
 गणीनें । जरहे सरनी सअाय कहीने (फरी) एक नवकार गणवो । पठी इण  
 कार सुहराईनो पाठ कहवो । पठी इणाका ॥ राई प्रतिक्रमणे ठाऊं । क  
 हीने । जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने । पठी । इणं सवस्तवि राइय इ  
 शितिय ॥ कहै । नमोअ्युणं (तथा) करेमि जेते कही । इणामि ठामि काउ  
 सगं ॥ तस्स उत्तरी ॥ कहै ॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो का  
 उवसग । पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । सवल्लोए अरिद्धं ॥ कहै । एक



लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो कान्तसग्ग करवो । पढी । पुख्खर  
वरदी०॥ सुअस्स०॥ वंदण०॥ कही । अतीचारनीआठ गाथानो (अथवा)  
न आवमे तो । आठ नवकारनो कान्तस्सग्ग पारी । सिद्धाणं बुद्धाणं कही  
नें । त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पमिलेही । वांदणां वे देवा । ( तिहांथी  
लेनें ) अप्पुठिओ खामि । वांदणां वे दीजें ( तिहां सुधी ) देवसीनी रीतें  
जाणवुं । पण ( जे ) ठेकाणे देवसिअं आवे ( ते ) ठेकाणे राइयं कहेवुं ।  
पढी आयरिअ उवप्पाए० ॥ करेमि जंते० ॥ इत्तामि ठामि० ॥ तस्स उ  
त्तरी०कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवमे तो । चार लोगस्स (अथवा)  
शोल नवकारनो कान्तस्सग्ग करवो । ते पारी प्रगट लोगस्स कही । ठा  
आवश्यकनी मुहपत्ती पमिलेही । वांदणां वे देवा । (पढी) सकल तीर्थ वंदन  
करीनें । यथाशक्तियें पञ्चस्खाण करवुं । पढी इत्ताकारेण संदिसह जगवन् ।  
सामायिक, चनवीसत्थो, वंदनक, पम्किमण, कान्तसग्ग, पञ्चस्खाण, क  
रुं ठे जी । एम ठ आवश्यक संचारवा । पढी पञ्चस्खाण करुं होय तो  
करुं ठे जी ( अने ) धारुं होय तो धारुं ठेजी । एम कहेवुं । पढी इत्ता  
मो अणुसठिं० । नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्तं० कहीने । विशाल  
लोचन० ॥ नमुत्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही । एक नवकारनो  
कान्तसग्ग पारी । नमोऽर्हत्तं कही । कल्याणकंदनी प्रथम थोय कहेवी  
पढी लोगस्स० । पुख्खरवरदी० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं० कही ॥ अनुक्रमें चार  
थोयो कहीए ठीए ( तिहां सुधी ) सर्व कहेवुं । पढी नमुत्थुणं० कही । जग  
वान् आदि चारने । चार खमासमणेंवांदवा । पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर  
थापी । अट्ठाइक्केसु कहेवुं । (पढी) सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीय  
राय०॥ कान्तसग्ग, थोय, पर्यंत कहीये । तिहां सुधी करवुं ॥ पढी खमासमण  
पूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, कान्तसग्ग० ॥  
अने थोय कहीयें ठियें । तिहां सुधी करवुं । पढी सामायिक पारवाना विधि  
नीरीते सामायिक पारवुं ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पस्सि पत्तिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दैवसिक पत्तिक्रमणमां वंदितु कही रहियें ( तिहां सुधी )  
सर्व कहेवुं । पण चैत्यवंदन, सकलाऽर्हतनुं, कहेवुं । अने थोयो, स्नातस्यानी

कहेत्री । पठी खमासमण देईने । इत्ताकारेण संदिसह जगवान् । देवसिअं आ  
लोईअ पडिक्कंता । इत्ताकारेण ०॥ पक्खि मुहपत्ति पडिलेऊं । एम कही मुह  
पत्ती पमिलेहियें । पठी बांदणां वे दीजें । पठी इत्ताकारेण ०॥ संबुद्धा खामणे  
एणं अप्पुविओहं अप्पिंतर । पक्खिअं खामेऊं इत्तं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस  
दिवसाणं । पन्नरस राइआणं । जंकिंचि अपत्तियं ० कही । इत्ताकारेण सं ०॥  
पक्खिअं आलोएमि इत्तं आलोएमि । जो मे पक्खिओ अईआरोकओ  
कही । इत्ताकारेण सं ०॥ पक्खी अतीचार आलोऊं (एम कही) वृद्ध अतीचार  
कहियें । पठी एवंपरे श्रावकतणे धर्मे श्री समकित मूल वारवत । एकशो चो  
वीश अतीचार मांहे । जे कोई अतीचार । पद्ध दिवस मांहे । सूक्ष्म वादर  
जाणतां अजाणतां ऊओ होय । तेसवे ऊं मने वचने कायायं करीमिच्छामि  
इक्कमं ॥ सबस्सवि पक्खिअं । उच्चिंतिय । उच्चिसिय । उच्चिंठिय । इत्ताकारेण  
संदिसह जगवान् तस्स मिच्छामि इक्कमं ॥ इत्ताकारि जगवान् पसाओ करि प  
क्खि तप प्रसाद करोजी । एम उचार करीने आवी रीतें कहिए ॥ चउत्थेणं  
एक उपवास । वे आविल । त्रण नीवि । चार एकासणा । आठ वे आसणा  
वे हजार सप्पाय । यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कखो होय (तो) पइवी कहीए ।  
करवो होय (तो) तहत्ति कहियें । न करवो होय ( तो ) अण वोल्या रही  
अं । पठी बांदणा (वे) दीजे । पठी इत्ताका ० ॥ पत्तेअ खामणेणं अप्पुवि  
ओहं अप्पिंतर । पक्खिअं खामेऊं । इत्तं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं ।  
पन्नरस राइआणं । जंकिंचि अपत्तियं ०॥ पठी बांदणा (वे) दीजें । पठी दे  
वसिअं आलोईअ पमिक्कंता । इत्ताका ०॥ जगवान् ० पक्खिअं पमिक्कमुं । स  
म पमिक्कमामि ॥ इत्तं ॥ एम कही । करेमिजंते सामाइयं ० कही ॥ इत्तामि  
पमिक्कमिऊं । जोमे पक्खिओ ० कहेवो । पठी खमासमण देई । इत्ताकारेण  
संदि ०॥ पक्खिसुत्रपटुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो  
त्रण नवकार गणीने । श्रावक बंदिनु कहे । (पठी) सुअ देवयानी थुई कहेवी ॥  
पठी हेठा वेत्ती । जमणो ढिंचण ऊओ राखी । एक नवकार गणी । करेमि  
जंते ०॥ इत्तामि पमि ० कही ॥ बंदिनु कहेवुं ० ॥ पठी करेमिजंते ० इत्तामि  
गमि काउसगं । जोमे पक्खिओ ० ॥ तस्स उत्तरी ०॥ अन्नत्थ ० ॥ कहीने  
चार १२ लोगस्सतो काऊसगं करयो (ते लोगस्स) चंदेसु निम्मन्नयरा, सूधी

कहेवा ॥ ( अथवा ) अमृतालीश नवकारनो । कान्तसग्न करी पारवो ॥  
 पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । मुहपत्ति पम्पिलेहिनें । वांदणां वे दीजें । पढी  
 इच्छाका ॥ समाप्ति खामणेणं । अष्टुच्छिओहं अस्मिंतर ॥ पक्खिअं  
 खामेज्ज । इत्थं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइ  
 याणं । जिंकिंचि अपत्तिअं ० कही । पढी खमासमण देईनें । इच्छाका ॥  
 कही । पक्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पढी देव  
 सी प्रतिक्रमणामां वंदित्तु कह्या पढी । वे वांदणां देईनें ( तिहांथी ) ते सामा  
 यक पारीयें । तिहां सर्व सूधी देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी  
 थुईनें ठेकाणें, झानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं ।  
 सप्पायने ठिकाणे नवसग्नहरं ( तथा ) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥  
 अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ ॐ ॥ इति पक्खि प्रति ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ चउमाशी प्रतिक्रमण विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ये ऊपर कह्या मुजव पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) एटलुं  
 विशेष । जे वार लोगस्सना कान्तसग्नने ठेकाणे (वीश) लोगस्सनो कान्तस  
 ग्न करवो (अनें) पक्खिना आगारनें ठिकाणे । चउमाशीना कहेवा । यथा ।  
 तपने ठेकाणे । ठेवणं वे उपवास । चार आंविल । ४ निवी । आठ एकाश  
 णा । शोल वे आसणा । चार हजार सप्पाय । ए रीते कहीए ॥ इति ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ एपणऊपर लख्या मुजव । पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं  
 (पण) वार लोगस्सना कान्तसग्नने ठेकाणे । चालीश लोगस्स (अथवा) ए  
 कशौनें शाठ नवकारनो कान्तसग्न करवो (अने) तपनें ठेकाणे । अठम अत्तं  
 (एटले)वण उपवास । ४ आंविल । नवनीवि । वार एकासणां । चौवीस वेआस  
 णां । अने ४ हजार सप्पाय (ए रीते कहेवुं) अने पक्खिना आगारने ठेकाणें  
 संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति पंच प्रतिक्रमण विधिः संपूर्णः ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ अथ पम्पिलेहण करवानो विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नवकार पंचिंदिअ कही । इरियावही पम्पिक्रमवी । थापना होय  
 तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवुं । पढी तस्सनुत्तरी कही । एक लोगस्स (अथ

वा ) चार नवकारनो काउसग्ग करी । प्रगट लोगस्स कही । ऊजे पगें वेसी मुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीटं, कंदोरो, आदिनो पम्भिलेहण करवुं । पठी काजो काढी । जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं । पठी काजो काहाम्नार थापनाजी सन्मुख ऊजो रही । इरिया वही पम्भिकमें । पठी । का जो परठववा जग्गा शोधी । त्रणवार अणुजाणह जस्सग्गो कही । काजो परठवे । पठी त्रण वार, बोसिरे, कहे ॥ इति पम्भिलेहण करवानो विधि ॥५॥

॥ ५ ॥ अथ पञ्चखाण पारवानो विधि ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमीयें ( पठी ) जगचिंतामणिनुं चइस्यवंदन । जयवीराराय सुधी करवुं ( पठी ) मन्हजिणाणंणी सझाय कही मुहपत्ति पम्भिलेही । इत्तामि ० ॥ इत्ताका ० ॥ पञ्चखाण पारुं । यथाशक्ति इत्तामि ० ॥ इत्ताका ० ॥ पञ्चखाण पारुं । तहत्ति । एम कही । जमणो हाथ, कटासणां ( अथवा ) चरवला ऊपर थापी । एक नवकार गणी । पञ्चखाण करंछुं होय ते कहेवुं । ते लखीयें ठीयें ॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं । पोरिसिं साढपोरसिं । गंठिसहिअं । मुठिसहिअं । पञ्चखाण करंछुं । चण्डविहार । आंविह, नीवि, एकासणुं, वे आसणुं, करंछुं तिबिहार । पञ्चखाण फासि अं । पालिअं । सोहिअं । तीरिअं । किट्ठिअं । आराहिअं । जंच न आरा हिअं । तस्स मित्तामि डक्कमं । एमकही । एक नवकार गणवो ॥ इति ॥५॥

॥ ५ ॥ अथ श्रीमहावीरजिन ठंड ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सेवो वीरनं चित्तमां नित्यवारो । अरिक्कोधनं मत्तधी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग द्वेषयी दूर थाओ उत्ताहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी । मनु जन्म पामी वृथा कां गमोठो । जैन मार्ग ठंढी जुलाकां नमोठो ॥ २ ॥ अलो जी अमानी नीरागी तजोठो । सलोजी समानी सरागी नजोठो । हरि ह रादि अन्यथी शुं रमेठो । नदी गंग मूकी गलीमां पडोठो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुंम माला । केइ देव उत्संगें राखे ठे वामा । केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे ले ई जपमाला । केइ मांसनह्नी महाविकराला । केइ योगिणी जोगिणी जोग रागें । केइ रुद्रणी तंगनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश

राखे । तदा मुक्तिनां सुखनें केम चाखे । जदा लोचना थोकनो पार ना  
 व्यो । तदा मधनो विंडुओ मन्नाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आ  
 श राखे । तेह पिंननें मन्नुं लेअ चाखे । दीन हीननी नीम ते केम  
 नजे । फुटो ढोल होये कहो केम बाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ आता नजो  
 मोह दाता । अलोनी प्रभूने नजो विश्वख्याता । रत्न चिंता म  
 णि सारिखो एह साचो । कलंकी काचना पिंडुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद  
 बुद्धि जेह प्राणी कहेठे । सवि धर्म एकत्व भूलो नमेठे । कीहां सर्पवाने  
 कीहां मेरु धीरं । कीहां कायराने कीहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णधालं  
 कीहां कुंजखंडं । कीहां कौद्रवाने कीहां खीरमंडं । कीहां खीरसिंधु कीहां  
 क्षारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां ठागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की  
 हां कूडवाणी । कीहां रंकनारी कीहां रायराणी । कीहां नारकीनें कीहां  
 देवभोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती  
 कीहां कर्म धारी । नमो वीर स्वामी नजोअन्य वारी । जिसी सेजमां स्व  
 मथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अधिर सुख सं  
 सारमां मन्न माचै । जना मूढमां श्रेष्ठुं इष्ट ठाजे । तजो मोह माया ह  
 रो दंनरेशी । सजो पुण्य पोशी नजो ते अरेशी ॥ १३ ॥ गति चार सं  
 सार अपार पामी । आन्या आश धारी प्रभू पाय स्वामी । तुही तुही तु  
 हीं प्रभु पर्म रागी । नव फेरनी शृंखला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर  
 जी अर्जठे एक मोरी । दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी । पुण्य उदय ऊओ  
 गुरु आज मेरो । विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥॥॥

### ॥ ❀ ॥ अथ नवकारनो ठंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें । श्री जिन शासन सार । निश्चै  
 श्रीनवकार नित्य । जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक  
 फल । नव पद नवे निधान । वीतराग श्रीमुख वदे । पंच परमेष्टि प्रधान  
 ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त । समस्यां संपत्ति थाय । संचित सागर सा  
 तनां । पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि । सद्गुरु नाधि  
 त सार । सो नवियां मन शुद्धुं । नित्य जपीये नवकार ॥ ४ ॥ (ठंद हाटकी)  
 नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पास्यो राज्य प्रसिद्ध । समशान विषे शिव

नाम कुमारनं सोवन पुरिसो सिद्ध । नवलाख जपंता नरक निवारे पामें न  
वनो पार । सो नवियां नत्तें चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ वां  
धी वडशाखा ठीकें वेसी हेठल कुंम ऊताश । तस्करनं मंत्र समप्यो  
श्रावकें उद्यो ते आकाश । विधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले ढाले  
अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर डष्ट  
विरोध । जेणें नवकारें हस्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध । नवलाख जपं  
तां थाये जिनवर इस्योठे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पत्नीपति शीख्यो सु  
निवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परजव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो  
परिगल रिद्ध । ए मंत्रथकी अमरापुर पोहोंतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥  
॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले । दीठो श्रीपास कु  
मारे पन्नग अधवलतो ते टाले । संन्यास्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र  
जुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनुशुद्ध जपतां मयणासुंदरी पामी प्रि  
य संयोग । इण ध्यानं कुट टल्युं उंवरनुं रगत पित्तनो रोग । नि  
श्रेंशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आचार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांदि  
रुण्ण जुजंगम घाल्यो । घरणी करवा घात । परमेष्टि प्रजायें हार फूलनो  
वसुधा मांदि विख्यात । कमलावतीयें पिंगल कीथो पाप तणो परिहार  
॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी घाण प्रहार । पद  
पंच सुणंतां पांडुपति घर ते थड कुंतानार । ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर  
भवडुख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंचल संवलें कादय काढ्यां शकट  
पांचशें माल । दीधे नवकारें गया देवलोकें बिलसे अमर विमान । ए मं  
त्रथकी संपति वसुधामां लहो बिलसैं जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥  
आगें चोवीशी ऊड अंनंती । होशे वार अंनंत । नवकार तणी कोड आद  
ग जाणे एम जाखें अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समत्वांसंप  
तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क  
ठोर ॥ पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेर्यो मणिधरनं एकमोर । सह गुरु सन्मुख  
विधियें सनरंतां सफल जनम संसार सो० ॥ १५ ॥ सूत्रीकारोपण तरकर  
कीथो लोहरो परसिद्ध । तिहांसें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी कृपा  
गेठनं घर आवीधिन निवासी सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि

જ્ઞાનજ પંચહ પંચદાન ચારિત્ર ॥ પંચ સિદ્ધાચ મહા વ્રત પંચજ્ઞ પંચ સુમતિ  
સમક્તિ । પંચ પ્રમાદ વિષય તજો પંચહ પાલો પંચાચાર ॥ સો ૦ ॥  
॥ ૧૬ ॥ કલશ ( ઢપ્પય ) નિલ્લ જપીયે નવકાર સાર સંપત્તિ સુખદાય  
ક । સિદ્ધ મંત્ર એ શાશ્વતો એમ જંપેશ્રી જગનાયક । શ્રી અરિહંત સુસિદ્ધ  
શુદ્ધ આચાર્ય જાણીજે । શ્રી નવજ્ઞાચ સુસાધુ પંચ પરમેષ્ઠિ થુણીજે । નવ  
કાર સાર સંસારઠે કુશલ લાજવાચક કહે । એક ચિત્તે આરાધતાં વિધિ  
શુદ્ધિ વંઢિત લહે ॥ ૧૭ ॥ ઇતિ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ પુનઃ નવકાર ઠંદ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ સુખ કારણ જવિયણ સમરું શ્રીનવકાર । જિન શાસન આગમ  
ચનદૈ પૂરવસાર । ઇણ મંત્રની મહિમા કહિતાં નલજું પાર । સુરતરુ જિમ  
ચિંતિત વંઢિત ફલ દાતાર ॥ ૧ ॥ સુર દાનવ માનવ સેવ કરે કરજોડ । જુ  
ફ મંમલ વિચરે તારે જવિયણ કોમ । સુરઠંદૈ વિલસે અતિસય જાસ અનંત ।  
પહિલૈ પદ નમિયે અરિ ગંજન અરિહંત ॥ ૨ ॥ જે પનરે નેદૈ સિદ્ધ થયા  
જગવંત । પંચતિ ગતિ પુહતા અષ્ટ કરમ કરિહંત । કલ અકલ સરૂપી  
પંચા નંતક જેહ । જિનવર પાય પ્રણમું વીજેપદ વલિ એહ ॥ ૩ ॥ ગઢ  
જાર ધુરંધર સુંદર સસિહર સોમ । કરિ સારણ વારણ ગુણઠત્તીસે થોમ । શ્રુત  
જાણ શિરોમણિ સાગર જેમ ગંજીર । તીજે પદ નમિયે આચારજ ગુણધીર  
॥ ૪ ॥ શ્રુતધર ગુણ આગમ સુત્ર જાણાવૈસાર । તપ વિધ સંયોગે જાણે અર  
થ વિચાર । મુનિવર ગુણ યુક્તા તે કહિયે નવજ્ઞાય । ચૌથે પદ નમિયે અહ  
નિશ તેહના પાય ॥ ૫ ॥ પંચાશ્રવ ઠાલૈ પાલૈ પંચાચાર । તપશી ગુણ ધારી  
વારી વિષય વિકાર । તસ થાવર પીહર લોક માંહે જે સાધ । ત્રિવિધે તે  
પ્રણમું પરમારથ ગુણ લાધ ॥ ૬ ॥ અરિ કરિ હરિ સાયણ માયણ જૂત  
વેત્તાલ । સંવિ પાપપણાસે થાસ્યે મંગલ માલ । ઇણ સમસ્યાં સંકટ દૂરઠલૈ ત  
ત્કાલ । જંપૈ જિણ ગુણ હમ સુરવર સીસ રસાલ ॥ ૭ ॥ ઇતિ નવકાર સ્ત ૦

### ॥ ❀ ॥ અથ શ્રીનવકાર મંત્ર આત્મ રક્ષાઃ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ઝે પરમેષ્ઠી નમસ્કારં । સારં નવ પદાત્મકં । આત્મરક્ષા કરં વ  
જ । પંજરાન્નં સ્મરામ્યહં ॥ ૧ ॥ ઝે નમો અરિહંતાણં । શિરસ્કં શિર સિ  
સ્થિતં । ઝે નમો સર્વ સિદ્ધાણં । મુખે મુખ પઠંવરં ॥ ૨ ॥ ઝે નમો આયરિ

याणं । अंगारख्या तिराविनी । उ नमो उवप्रायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ।  
 उ नमोलोए सवसाङ्गणं । मोचके पादयो सुजे । एतो पंच नमुंकारो । शिला  
 वज्रमईतले । सव पाव पणसणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच स  
 वेसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं ।  
 वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे । महाप्रज्ञावा रक्षेयं । कुद्रो पद्रव नाशनी  
 परमेष्टि पदोद्भूता । कथिता पूर्व सूरिभिः । यथैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टी पदै  
 सदा । तस्यनस्या इयं व्याधी । राधिश्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ✽ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन ठंद ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सेवो पाश संखेश्वरो मन्न शुद्धे । नमो नाथ निश्चै करी एक बु  
 द्धे । देवी देवतां अन्यनें शुं नमो ठे । अहो नव्यलोको सुला कां  
 नमो ठे ॥ १ ॥ त्रैलोकना नाथने शुं तजो ठे । पड्या पाशमां नूतने कां  
 नजो ठे । सुरधेनु ठनी अजा शुं अजो ठे । महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो  
 ठे ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काचमाटे । ग्रहे कोण रासजने हस्ति  
 साटे । सुरद्रुम उपाड कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अंत पावे  
 ॥ ३ ॥ किहां कांकारो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं  
 किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तं प्रभु पाश सेवा ॥ ४ ॥  
 पूजो देव प्रज्ञावती प्राणनाथं । सहू जीवने जे करे ठे सनाथं । महा तत्व  
 जाणी सदा जेहू ध्यावे । तेनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मा  
 नुपोने वृथा कां गमो ठे । कुशीलं करी देहनें कां दमो ठे । नही मुक्तिवासं  
 बिना धीतरागं । नजो नगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न जाखे स  
 दा हेत आणी । दयाज्ञाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे  
 मेह बूढा । प्रभु पाश शंखेश्वरो आपतूढा ॥ ७ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक ठंद ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ वीर जिणेश्वर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो  
 कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर विघ्नशै नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गि  
 रिवर चढे । मनव्रंछित लोझा संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें  
 सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक्रमा । तस नामें नावे दूकमा । नूत  
 प्रेत नविमंमे प्राण । ते गौतमनां कहां यखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल



॥ ॐ ॥ अथ श्री शोख सतीनो ठंद ॥ ✽ ॥

॥ ॐ ॥ आदि नाथ आदि जिनवर बंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए ।  
प्रजातैं ऊठी मंगलिक कामें । शोल सतीतां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल  
कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी चरतनी बेहेनमी ए । घट घट व्यापक  
अक्षर रूपें । शोल सतीमांहि जे बनी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय  
शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषज्ञ सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिभुवन मांहि । जे  
ह अनोपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बालपणाथी । शीयलवती शुद्ध  
श्राविका ए । अमदना बाकुला वीर प्रतिलाज्या । केवल लही ब्रत जावि  
का ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम बल्लभा ए ।  
जोवन वेशें कामनैं जीत्यो । संजम लेइ देव डल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच चर  
तारी पांढव नारी । दुपद तनया बखाणीयें ए । एक शो आठे चीर पूराणां  
शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौ  
शल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सलूणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालि  
का ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए ।  
तस घर घरणी मृगावती सती । सुरभुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा  
साची शीयलें न काची । राची नहं विषयारसैं ए । मुखडुं जोतां पाप बु  
लाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । ज  
नकसुता शीता शती ए । जग सज्ज जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थ

यो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी । कूबाथकी जल  
काढीयुं ए । कलंक उतांखा सतीय सुनद्रा । चंपा वार उवाडीयुं ए ॥  
॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंभित । शिवा शिवपद गामिनी ए । जेह  
ने नामें निर्मल थड्यें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पां  
मुरायनी । कुंतानामें कामिनी ए । पांमव माता दशे दशारनी । वहेन पति  
व्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रिविधें  
तेहनें वंदीयें ए । नाम जपतां पातिक जाए । दरिशाण डरित निकंदियें ए  
॥ १४ ॥ निपधा नगरी नलहनरिंदनी । दमंदती तस गेहिनी ए । संकट पडतां  
शीयलज राखुं । त्रिजुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग  
जन पूजिता । पुष्पचूला नें प्रजावती ए । विश्व विख्याता कामितदाता । शो  
लमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें नाखी शाखें साखी । उदयरतन नाखे मु  
दा ए । बाहाणुं बातां जे नर नणशे । ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शेरुंजय रूपन समोसखा । जला गुण जखारे । सीधा साधु  
अनंत । तीरथ ते नमुरे । तीन कल्याणक तिहां थया । मुगलें गयारे । ने  
मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेहरोरे । नरतें  
नरान्या विंव ॥ ती० ॥ आयु चौमुख अतिजलो । त्रिजुवन तिलोरे । विम  
ल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रत्नीयामणोरे ।  
सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेंरे । सीधा  
श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी । ऊर्ध्व नरीरे । मुक्ति गया  
महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें । डःख वारीयेंरे । अरिहंत विंव अ  
नेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज वंदीयें । चिरनंदीयेंरे । अरिहंत देहरा आ  
ठ ॥ ती० ॥ सोरिस्ते शंखेश्वरो । पंचासरोरे । फलोधी थंजणपाश ॥  
ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीऊरोरे । जीरावलो जगनाथ ॥  
ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करोरे । राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥  
॥ ६ ॥ श्रीनामोलाई जादवो । गोमती स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती०  
नंदीश्वरतां देहरा । वावन जलोरे । रुचक कुंडले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥  
शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा ठतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा

फल तिहां । होजो मुज इहां रे । समयसुंदर कहे एम ॥ती०॥इति॥॥

॥ ॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ श्रीराणपुरो रत्नीयामणुरे लाळ । श्री आदीसर देव । मन मो  
हुरे । उत्तंग तोरण देहरे ला ० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ च  
नवीश मंमप चिज्जं दिशेरे ला ० ॥ चनुमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुव  
नदीपक देहरैरे ला ० ॥ समोवम नही संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥  
देहरी चोराशी दीपतीरे ला ० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलै  
जुहास्या चौयरांरे ला ० ॥ सूतां ऊठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥  
॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरे ला ० ॥ मोटो देश मेवाम ॥ म० ॥ लख  
नवाणुं लगावीयारे ला ० ॥ धन धनो पोरवाम ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ख  
स्तर वसई खांतशुरे ला ० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद वी  
जा वलीरे ला ० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृता  
स्थ जं थयोरे ला ० ॥ आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर  
तणीरे ला ० ॥ दूरें गयुं डुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोल  
ठियंतरैरे ला ० ॥ मागशिर माश मऊार ॥ म० ॥ राण पुरें यात्रा करीरे  
ला ० ॥ समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ॥ ईमर आंबा  
आंबलीरे ॥ ए चाल ॥ ॥

॥ ॥ पुक्खलवइ विजयें जयो रे । नयरी पुंमरीगणी सार । श्री  
सीमंधर साहिबारे । राय श्रेयांस कुमार । (जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह)  
॥ १ ॥ (आंकणी) ॥ मोहोटा न्हाना अंतरोरे । गिरुआ नवि  
दाखंत । शशि दरिशाण सायर वधैरे । कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥  
गाम कुठाम न लेखवैरे । जग वरसंत जलधार । करदोय कुसुमें वासियैरे ।  
जया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नैं रंक सरिखा गणें रे । नव्योतें श  
शि सूर । गंगाजल ते विज्जं तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥  
सरिखा सज्जने तारवा रे । तिम तुमे ठो महाराज । मुजशुं अंतर किम क  
रो रे । बाह् प्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीळुं करेरे । ते न

बि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिब तेह सुजाण ॥ जि०  
॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे । नंदन रुक्मणी कंत । वाचक जश  
इम वीनवे रे । जयनंजन जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ माता त्रिशला कृपावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालरुवानां  
गीत । सोना रूपानें बली रत्न जमिउं पालणुं । रेशम दोरी घूघरी बागे तुम  
तुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदन ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्व प्रभुथी  
वरस अढीशें अंतरें । होशे चोवीशमो तीर्थकर जिन परमाण । केशी स्वा  
मी मुखथी एवी बाणी सांचली । साची साची ऊइ ते मारे अमृत वाण ।  
हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवै चक्रीके जिनराज । वीता वारे चक्री नहि  
ऊवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रभुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें  
जाण्या चोवीशमा जिनराज । मारी कूखें आव्या तारण तरण जिहाज ।  
मारी कूखें आव्या त्रय जुवन शिर ताज । मारी कूखें आव्या संघ तीर  
थनी लाज । ऊंतो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ मुऊनें डो  
होखो उपन्यो जे वेसुं गज अंवाभीयें । सिंहासन पर वेसुं चामर ठव ध  
राय । ए सज्ज लक्षण मुजने नंदन ताहरा तेजनां । तेदिन संजारांने आनं  
द अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारनें आ  
ठ ठे । तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगें  
लंछन सिंह विराजतो । में पहले सुपने दीगे विशावा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥  
नंदन नवला वंधव नंदीवर्द्धनना तमे । नंदन नोजाइयोना देवरठो सुकुमाल  
हसशे नोजाइयो कहीदेवर माहरा लाडका । हसशे रमशेनें बली चुंटी  
खणशे गाल । हसशे रमशे नैं बली ठुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥  
नंदन नवला चेमा राजाना जाणेज ठो । नंदन नवला पांचशें मामीना जाणे  
ज ठो । नंदन मामलिआना जाणेजा सुकुमाल । हसशे हाथे उ  
छाली कहनि नाहना जाणेजा । आंख्यो आंजी ने बली टवकुं करशे  
गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां ।  
रतने जमीआ जालर मोती कशवी कोर । नीला पीलानें बली राता स  
रवे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन

मामा मामी सुखमली सज्ज लावशे । नंदन गजुवे जरशे लामू मोती  
 चूर । नंदन मुखमां जोइने लेशे मामी जामणां । नंदन मामी कहेशे जीवो  
 सुख जरपूर ॥ हा० ॥ ए ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती । मा  
 री जत्रीजीने वेन तमारी नंद । ते पण गुंजे जरवा लाखणसाई लावशे ।  
 तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें  
 लावशे लाख टकानो घूघरो । वली शूमा मेनां पोपट ने गजराज । सार  
 स हंस कोयल तीतरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे का  
 ज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ ।  
 नंदन तमने अमनें केलीवरनी मांहे । फूलनी दृष्टि कीधी योजन एकने  
 मंमलें । वज्र चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तम  
 ने मेरू गिरिवर सुरपतियें नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ।  
 मुखडा ऊपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा । वली तनपर वारुं ग्रह गणनो स  
 मुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशालें पण मूंकशुं । गजपर  
 अंबाडी बेसामी मोहोटे साज । पसली जरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं ।  
 सुखमली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहो  
 टा थाशोने परणावशुं । बहूवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार । सरखा  
 वेवाइ वेवाणुंने पथरावशुं । वर बहू पौखी लेशुं जोइ जोइने दीदार ॥ हा० ॥  
 ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा वेज्ज पक्क नंदन ऊजला । माहरी कुलें  
 आव्या तात पनोता नंद । माहरे आंगण वूठा अमृत दूधै मेज्जला । मा  
 हरे आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गा  
 युं माता विशला सुतनुं पालणुं । जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ।  
 बलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं । जय जय मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निंदावारक सभाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकीरे । निंदानां वोल्या महा पापरे  
 वयर विरोध वाधे घणोरे । निंदा करतां न गणे माय वापरे ॥ निं० ॥ १ ॥  
 दूर वलंती कां देखो तुझेरे । पगमां बलती देखो सज्ज कोयरे । परना मैत्रा  
 मै धोयां लूगमांरे । कहो केस ऊजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप स

जालो सज्जको आपणोरे । निंदानी मूको परी टेवरे । थोडे घणे अवगुणे  
सज्ज नस्यारे । केहनां नलिया चुए कहैनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे  
ते थाये नारकीरे । तप जप कीधुं सज्ज जायरे । निंदा करो तो करजो आ  
पणीरे । जेम बूठकवारो थायरे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सज्जको  
तणोरे । जेहमां देखो एक विचाररे । रुक्णपरें सुख पामशो रे । समयसुं  
दर सुखकारे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आनंदधनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृपञ्जजिनेश्वर प्रीतम माहरेरे । ङर न चाङ्गरे कंत । रीज्यो  
साहेव संग न परिहरेरे । जंगे सादि अनंत ॥ कृपञ्ज० ॥ १ ॥ प्रीत स  
गाईरे जगमां सज्ज करेरे । प्रीत सगाई न कोय । प्रीत सगाईरे निरुपाधि  
क फहीरे । सोपाधिक धन खोय ॥ कृपञ्ज० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण  
काष्ट नक्षण करैरे । मिलसुं कंतने धाय । ए मेलो नवि कहिये संजवेरे ।  
मेलो ठाम न ठाम ॥ कृपञ्ज० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति घणो तप  
कैरे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धस्युंरे । रंजन  
धानु मिलाप ॥ कृपञ्ज० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीलारे अलख अलख तणीरे ।  
लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि बटेरे । लीला दोष वि  
लास ॥ कृपञ्ज० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नैरे पूजन फल कसुंरे । पूज अखंमिंत  
एह । कपट रहित थई आतम अरपणारे । आनंद धन पद रेह ॥ कृपञ्ज० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मार्ग मन मोहुरे श्रीविमलाचलैरे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंथडो निहालुं बीजा जिनतणोरे । अजित गुण धाम । जे तें जीत्यारे  
तेणे ऊं जीतियोरे । पुरुष किर्युं मुऊ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी  
मारग जोवतारे । झूलो सयल संसार । जेणे नयणे करी मारगजोइयरे । नयण  
ते दिव्य विचार ॥ पंथ ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुजव जोवतांरे । अंधो अंध पु  
लाय । वस्तु विचारैरे जो आगमें करीरे । तोचरण धरण नही ठाय ॥ पंथ०  
॥ ३ ॥ तर्क विचारैरे वाद परं परारे । पार न पहोचे कोय । अजिमते वस्तु  
वस्तुगतें कहेरे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारैरे दिव्य

नयण तणोरे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनारे । वा  
सित बोध आधार ॥ पंथ ० ॥ ५ ॥ काल लवधि लहो पंथ निहालसुरे ।  
ए आस्या अविलंब । ए जन जीवैरे जिनजी जाणजेरे । आनंद घन मत  
अंब ॥ पंथ ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ श्री संज्ञवजिन स्तवन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ रातडी रमिनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ संज्ञवदेव ते धुर सेवो सवेरे । लहि प्रभु सेवन जेद । सेवन का  
रण पहेली जूमिकारे । अज्ञय अदेष अखेद ॥ संज्ञव ० ॥ १ ॥ जयचंच  
लताहो जे परिणामनी रे । दोष अरोचक जाव । खेद प्रवृत्तीहो करतां  
थाकीयें रे । दोष अवोध लखाव ॥ संज्ञव ० ॥ २ ॥ चरमावर्तहो चरम  
करण तयारे । जव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुले जलारे  
प्रापति प्रवचन वाक ॥ संज्ञव ० ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधसू  
रे । अकुशल अपचय चेत । ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे । परिशी  
लन नय हेत ॥ संज्ञव ० ॥ ४ ॥ कारण जोगेंहो कारज नीपजेरे । एमां  
कोइ न बाद । पण कारण विण कारज साधीयेंरे । ए जिन मत उनमाद ॥  
संज्ञव ० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदेरे । सेवन अगम अनूप ।  
देजो कदाचित सेवक याचनारे । आनंदघन रस रूप ॥ संज्ञव ० ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ श्री अग्निनंदन जिन स्तवन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ आज निहेजेरे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अग्निनंदन जिन दरिशाण तरसीये । दरशाण डुलंजदेव । मत मत जेदेरे जो  
जई पूढीयें । सज्ज थापे अहमेव ॥ अग्नि ० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरशाण दोह  
लूं । निरणय सकल विशेष । मदमें धेस्योरे अधो किम करे । रवि शशि रूप  
विलेख । अग्नि ० ॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चित्त धरि जोइयें । अति डुरगम नय  
वाद । आगमवादेंहो गुरुगमको नही । ए जवलो विषवाद ॥ अग्नि ० ॥ ३ ॥  
घाती डुंगर आमा अतिघणा । तुळ दरिशाण जगनाथ । धीगई करी मार  
ग संचरूं । सैगू कोई न साथ ॥ अग्नि ० ॥ ४ ॥ दरिशाण रटतो जो फरूं  
तो रण रोक समान । जेहने पीपासा हो अमृत पाननी । किम जाजे विष  
पान ॥ अग्नि ० ॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो । सीजे जो

दर्शण काज । दर्शण डल्लेन सुल्लेन कृपा थकी । आनंदधन महाराज  
॥ अजिण ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत (तथा) केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा । दरपण जिम अविचार ।  
सुग्यानी ॥ मति तरपण वज्ज समंत जाणियें । परितरपण सुविचार ॥ सु  
ग्यानी ॥ सुमति ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा । वहिरात  
म धुरि जेद ॥ सु ॥ वीजो अंतर आतम तीसरो । परमातम अविच्छेद ॥  
सु ॥ सुमति ॥ २ ॥ आतम दुखें हो कायादिक ग्रहो । वहिरातम अ  
घरूप । सुग्यानी । कायादिकनो हो साखी धर रह्यो । अंतर आतम रू  
प ॥ सुग्यानी ॥ सुमति ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदेहो पूरण पावनो । वरजित सकल  
उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू । इय परमातम  
साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति ॥ ४ ॥ वहिरातम तज अंतर आतमा । रूप थई  
थिर जाव ॥ सु ॥ परमातमनुं हो आतम जावूं । आतम अरपण दाव  
सु ॥ सुमति ॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां । नरमटले मति  
दोष ॥ सु ॥ परम पदारथ संपति संपजे । आनंदधन रस पोष सु ॥  
सुमति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुणह विताला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी । विविध जंगी मन मो  
हैरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता । उदाशीनता सोहैरे ॥ शी ॥ १ ॥  
सर्व जंतु हित करणी करुणा । कर्म बिंदारण तीक्ष्णारे ॥ दाना दाना रहि  
त परणामी । उदाशीनता विक्ष्णारे ॥ शी ॥ २ ॥ परडुख वेदन इच्छा  
करुणा, तीक्ष्ण पर डल रीजेरे । उदाशीनता उन्नय विलक्षण । एक ठामें  
केम सीजेरे ॥ शी ॥ ३ ॥ अन्नयदान ते मलक्षय करुणा । तीक्ष्णता  
गुण जावेरे । प्रेरण विणु रूत उदाशीनता । इम विरोध मति नावेरे ॥ शी ॥  
॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता । निग्रंथता संयोगेरे । योगी जोगी व



का मौनी । अनुपयोगि उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक वज्र जंग त्रि  
जंगी । चमत्कार चित्त देतीरे । अचरिजकारी चित्र विचित्रा । आनंदघन  
पद लेतीरे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागगुर्जरी अंवरदेहो मुरारी हमारो० ए चाल ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ मनहुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम ज  
तन करीनें राखुं । तिम तिम अलगुं बाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वास  
र बसती कज्जु । गयण पायालें जाय । साप खायने मुखहुं थोथुं । एह  
उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगतितणा अजिलाषी तपीया । ज्ञानने  
ध्यान अज्यासैं । वयरीहुं कांड एहवुं चिंते । नाखे अवलें पासैं हो ॥ कुं०  
॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें । नावे किएविध आंकुं । किहां कणे  
जो हठकरी हठकुं । तो व्याल तणी परें वांकुं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग  
कज्जु तो ठगतो न देखुं । साज्जकार पण नाही । सर्व मांहेने सज्जथी अल  
गुं । ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कज्जु ते कान न धारे ।  
आपमतें रहे कालो ॥ सुर नर पंमित जन समजावे । समजे न माहरो  
सालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ मैं जायुं ए लिंग नपुंसक । सकल मरदनें ठेलै ।  
बीजी बातें समरथ ठे नर । एहनें कोइन जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन  
साध्युं तेणें सगलुं साध्युं । एह बात नही खोटी । एम कहे साध्युं ते नवी  
मानुं । ए कहिवतठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनहुं डुराराध्य ते वस आ  
णुं । ते आगमथी मतिआणुं । आनंदघन प्रभु माहरुं आणो । तो साचुं  
करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांमीनें (यावत्) लोगस्स कही ।  
पढी उत्तरासण करी । चैत्यवंदन । नमुत्थुणं कही, अडधुं जयवीअराय ।  
आज्जव मखंमा सूधी हाथ जोडी कहे । (वली) चैत्यवंदन, कहीने । नमुत्थु  
णं । कही, (यावत्) चार थोयो कहीये तीये तिहां सूधी वधुं कहेवुं । पढी नमु  
त्थुणं कही । (वली) चार थोयो कहीये तां सुधी वधुं कहेवुं । पढी नमुत्थुणं,  
(तथा) वे जावंती कही । स्तवन कही । अमधुं जयवीअराय आज्जवमखं

ना सूधी कही । पत्नी चैत्यवंदन कही । नमुत्थुणं कही । (आखो) जय बीय  
राय कहेवो ॥ इहां सवारें देव वांदवा । (तेमां) मन्ह जिणाणं नी सप्पाय  
कहेवी । अने मध्यान्हे (तथा) सांजे देव वांदवामां सप्पाय न कहेवी ॥  
इति देव वांदवानो विधि ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्ञान विमलजी कृत, चनुमाशी देववंदन विधि: ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावही पडिक्की काउसगग करी । लोगस्त० कही  
एक खमासमण देई । इत्ताका० श्री कृपञ्जिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करं ।  
एम कही चैत्यव० करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदि जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिनेसर कृपञ्ज देव । सबव्धी चविया । वदि चउथें  
आपाठनी । शक्कें संस्तविया । अठमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रजुजा  
या । दिक्षा पण तिणहीज दिने । चउ नाणी थाया । फागण वदि इग्या  
रसी ए । ज्ञान लहे शुच ध्यान । महा वदि तेरें शिव लह्या । परमानंद  
निधान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां नमुत्थुणं० । अरिहंत चेइयाणं० । वंदण वत्तिया कही ।  
एक नवकारनो कावसगग पारी । ४ थुई क्रमसें कहियें । ते लिखियै ठीयें ॥

॥ ❀ ॥ अयं थोय जोमो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृपञ्ज जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण का  
या मंगला जासजाया । वृषञ्ज लंठन पाया देवनर नारी गाया । पण  
सय धनु जया ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवी  
श उदार । एक नेम विना सवि समवसखा निरधार । गिरि कमणें आ  
वी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥  
ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गम सुत्र मजार । सिखा चलें सीधा बोल्या  
वज्र अणगार । ते माटें ए गिरि सवितीरथ शिरदार । जिन जेटे थावे ।  
सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चंक्केश्वरी शासननी रखवाल । ए ती  
रथ केरी सांनिध करे संजाल । गिरुओ जस महिमा संप्रति कालें  
जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां । नमुत्थुणं, जावंती ( वे ) कही नमोर्हत् ० कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( ललनानी देशी ) आदि करन अरिहंतजी । उलगमी अवधार  
ललना ॥ प्रथम जिणसर प्रणमीयें । वंछित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥  
आदिकरण अरिहंतजी ( ए आंकणी ) उपगारी अवनी तले । गुण अनं  
त जगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥  
ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ल  
लना । ते अमृत फलनें लहै । ए जुगतुं निरधारं ॥ ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश ५  
काग ठे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ जस्तादिक थया केवली ।  
अनुजव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुल मंमणो  
मरु देवी सर हंस ॥ ललना ॥ ऋषजदेव नित वंदियें । ज्ञान विमल अवत  
स ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषज जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पढी जय वीरराय अर्धो कहवुं । एक खमासमण देई । इच्छा ०  
श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुदि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुदि आठमे  
जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुदि नवमें मुनि थया । पोषी इग्यार  
स । उज्वल उज्वल केवली । थया अक्षय कृपारस । वैशाख शुक्ल पंचमी  
दिने ए । पंचम गति लह्याजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी  
नेह ॥ १ ॥ इति ॥ पढी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको  
कावसग्ग करके । थुईकी गाथा कहै ( इसी तरै सब ठिकाणें विध करवो ) ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारब्धते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । जविकजन नगीनो  
जेहथी मोहलीनो । ऊं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय  
ते दीनो । ताहरे ध्यानै पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री संजवनाथ चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी । चविया श्री संजव । फागुण शुदि आ

तम दिनें । शुद्धि चउदसी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासैं जनमीया । त  
णी पूनम संजम । कार्तिक वदी पंचमी दिनें । लहे केवल निरूपम । पंच  
मी चैत्रनी ऊजली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रभु प्रणम  
तां । सीकें सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन संजववार । लंठेन अश्वधार । जवजलनिधि तारु । काम  
गद तीव्र दारु । सुरतरु परिवारु । दूसमाकाल मारु । शिवसुख किरता  
रु । तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजिनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयंत विमान थकी चव्या । अजिनंदन राया । वैशाख शुद्धि चौथें  
माघ सुद्धि बीजे जाया । माहाशुद्धि वारशें ग्रहिय दिरुख । पोपशुद्धि चउदस ।  
केवल शुद्धि वैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चउथा जिनवरनें नमी ए ॥  
चउगति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पार ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजिनंदन वंदो । सांम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । घ  
पिंता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंठेन वानरिंदो । जस आगल  
मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुद्धि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाप  
क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुद्धि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं  
जम । शुद्धि नवमी वैशाखनी । निरूपम जस शमदम । चैत्र इग्यारश ऊज  
ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीयें । नय कहे करो तस  
सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोमि कापे । सुमति मुजन  
ध्यापे । बोधिनु बीज व्यापे । अविचल पद यापे । जाप दीप प्रतापें ।  
कुमति कदही नावें । जो प्रभु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन ०५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पद्म प्रज्ञ चैत्यवन्दन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या । साहावदि ठठ दिवसें । कातीवदि वा  
रसें जनम । सुर नर सवि हरषे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रज्ञ स्वामी  
चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगशिर वदि इग्यारसें । रक्त  
कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पद्मप्रज्ञ सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । मुगति वधु मनावे ।  
रक्त तनु कांति फावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रज्ञ  
गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठठा ग्रैवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । ज्ञादरवा वदि आठ  
मे । अवतरिया खास । जेठ शुक्ल वारसी जण्या । तस तेरसे संजम । फा  
गुण वदि ठठे केवली । शिव लहे तस सत्तमि । सत्तम जिनवर नामथी ए ।  
साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि नितु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सा  
तमा श्री सुपासें । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय नवि गुणरास  
जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चंद्र प्रज्ञजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आठमा । चंद्रप्रज्ञ सम देह । अवतरीया विजयं  
तथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि वारसें जनमीया । तस तेरसे साध  
फागुण वदिनी सातमे । केवल निरावाध । ज्ञाद्रव सातम शिव लह्या ए ।  
पूरी पूरण ध्यान । अठ महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अग्निधान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुद्ध नरगति पामी उद्यमें धर्मधामी । जिन नमो शिरनामी  
चंद्र प्रज्ञ नाम स्वामी । मुक्त अंतरजामी जेहमां नहिय खामी । शिवगति  
वरगामी सेवना पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवन्दन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम । बीजुं पुष्प दंत । फागुण वदि नव  
में चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जण्या । तस ठें  
दिक्षा । काती शुदि बीजं केवली । दिखे वज्र परें शिखा । शुदि नवमी जा  
द्रवा तणी ए । अजर अमर पद दोय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां  
सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवनं ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ थोय प्रारब्धे ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सुविधि जिन अदंत । नाम बली पुष्प दंत । सुमति तरुणि  
कंत । संतथी जेह संत । कीयो कर्मइरंत । लखि लीला वरंत । अब ज  
लधि तरंत । तेनमीजे महांत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ✽ ॥ ए ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवन्दन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या । शीतल जिन दशमा । वदि बैशा  
नी ठे । जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ महावदि वारस जनम दिख्या । तस  
वारसं लीध । वदि पोप चन्द्रश दिने । केवली परसिद्ध । वदि बीजे धै  
शाखनी ए । मोक्ष गया जिनराज । ज्ञान विमल जिनराजधी । सीजे स  
गला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ थोय प्रारब्धते ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सुण शीतल देवा बालही तुअ सेवा । जेम गज मन रेवा ।  
तुंही देवाधि देवा । पर आण वदेवा शमठे नित्यमेवा । सुख सुगति लहे  
वा हेतु डःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ✽ ॥ १० ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवन्दन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या । श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दि  
वस ठें । करत वज्र आनंद । फागुण वदि वारसं जनम । दीक्षा तस ते  
रस । केवली माझ अमावसि । देसन चंदन रस । वदि श्रावण बीजे ल  
सा ए । शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए  
जगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ॐ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सविजिन अवतंस । जास इख्याग वंश । विजित मदन कंस  
शुद्ध चारित्रहंस । कृत जय विध्वंस । तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषज ककुद अ  
श । ते नमुं पुण्य वंश ॥ १ ॥ ॐ ॥ ११ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुदी नवम । जनम्या फागु  
ए चौदशी । अमावसी संजम । माह शुदि बीजे केवली । चौदशि आया  
ढी । शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट । सवि दूरे काढी । वासुपूज्य जिन वारमा  
ए । विद्रुम रंगें काय । श्री नयविमल कहे इस्युं । जिन नमतां सुख थाय ॥

॥ ॐ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वंसुदेव नृप तात । श्री जयादेवी मात । अरुण कमलगात ।  
महिष लंठन विख्यात । जसगुण अवदात । शीत जाणे निवात । होय नित  
सुखशात । ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॐ ॥ १२ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अठम कल्पथकी चव्या । माधव शुदि वारस । शुदि महात्रीजें  
जण्या । तस चोथे व्रत रस । शुदि पोष ठेठे लह्या । वर निर्मल केवल ।  
वदि सातमि आषाढनी । पाम्या पद अविचल । विमल जिणेसर वंदिअें  
ए । ज्ञान विमल करी चित्त । तेरसमो जिन नितु दिये । पुण्य परिघल  
वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॐ ॥ १३ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विमल विमल जावे वंदतां दुःख जावे । नव निधि घर आ  
वै विश्वमां मान पावे । सुयर लंठन कावे जोमिजर स्वेद थावे । मनु  
विनति जणावे । स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति विमलनाथ स्तुति ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्राणत थकी चविया इहां । आवणवदि सातम । वैशाखवदि  
तेरसी । जनम्या चउदसें व्रत । वदि वैशाखे चउदसि । केवल पुण्य पा  
म्या । चैत्रशुदि पंचमीदिने । शिववनिता काम्या । अनंतजिनेश्वर चउदमा

ए। कीधा डम्न अंत । ज्ञानविमल कहेंनामथी । तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥

॥ ✽ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॥ ॥

॥ ✽ ॥ अनंत जिन नमीजें कर्मनी कोट ठीजें । शिव सुख फल ली  
जें सिद्धि लीला वरीजें । बोधि बीज मोह दीजें एटलुं काज कीजें । मुज  
मन अति रीकें स्वामिनुं कार्य सीकें ॥ १ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिनचैत्यवन्दन ॥ ॥

॥ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मास  
नी । शुदि बीजें जनम । तेरस माहिं ऊजली । लीये संजम चार । पोषि  
पूनमे केवली । गुणना चंडार । जेठी पांचमी ऊजलि ए । शिवपद पाग्या  
जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । बाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ॥

॥ ✽ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहे जीनो । वरमण शचीनो ।  
जेहने वर्ण लीनो । विजुवन सुख कीनो लंठने वज्र दीनो । नवि होय ते  
दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ✽ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ॥ अथ श्री शान्तिनाथ चैत्यवन्दन ॥ ॥

॥ ✽ ॥ चाद्रवा वदि सातमें । दिने सव्वथी चविया । वदि तेरस जेठें  
जण्या । डःख दोहग समीया । जेठि चउदस वदि दीने । लीये संजमवेम ।  
केवल उऊल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चक्री परवडा ए । शोल  
मा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लखां । नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॥

॥ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । विजुवन सुखकारी सप्त  
जय इतिवारी । सहस चउसठनारी चउद रत्नाधिकारी । जिन शान्ति जीतारी  
मोहे हरित मृगारी ॥ १ ॥ शुज केशर बोली मांहे कपूर चोली । पेहरी सीत  
पटोली वासियें गंधधूली । नरी पुष्पपटोली टालीयें डःख होली । सवि  
जिनवर टोली पूजीयें नाव लोली ॥ २ ॥ शुज अंग इग्यार तेम उपांग  
वार । बलि मूल सुत्र चार नंदी अनुयोगवार । दशपयत्त उदार वेदखट व्रति  
सार । प्रवचन विस्तार चाप्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन



दृष्टी सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखवंदा । ज्ञानविमल सूरिंदा साम्य  
माकंद कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानार्थी नित्य जंदा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ॥

॥ ॥ ( मोतीमानी देशी ) सकल समीहित सुरतरु कंदा । शांति कर  
ए श्री शांति जिणंदा । साहिवा जिनराज हमारा । मोहना जिनराज हमारा ॥ सा ॥ ( ए आंकणी ) त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो । पलक मा  
त्र न रज्जु हिवे अलगो ॥ सा ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । ठं  
छ्यो पण तुहें नवि ठंडाशे ॥ सा ॥ प्रभु तुहें कोइशुं नेह न लावो । वी  
तराग कही सवि समजावो ॥ सा ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समजे  
पण ठोरु दीधारी रीजे ॥ सा ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे  
ते मावित्र आले ॥ सा ॥ ३ ॥ नृत्तिखांची मन मांहे आय्यो । सहज  
स्वजावें पण में जाय्यो ॥ सा ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची । तुम पदसे  
वा अंकें जाची ॥ सा ॥ ४ ॥ कवजे आव्यातो बूटीजें । जेह मुह मांगे  
तेहज दीजें ॥ सा ॥ अजेद पणें जो मनमां मलशो । कवजेथी प्रभु तो  
नीकलशो ॥ सा ॥ ५ ॥ अखखय जाव निधी तुम पास । आपी दासने  
पूरो आश । ज्ञान विमल समंकित प्रभुताई । दीधी साहेव एह बडाई ॥ सा ॥

॥ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सव्वथी चविया । वदि चउदश वैशा  
खनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वैशाखनी लीये संजम नार । शुदि  
त्रीजें चैत्रहतणी लहे केवल सार । पडवा दिन वैशाखनीए पास्या अ  
विचल ठाण । ठा चक्री जयकरु ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ॥ अथ श्रौय प्रारंभ्यते ॥ ॥

॥ ॥ जिन कुंथु दयाला ठाग लंठन सुहाला । जस गुण शुभ मा  
ला कंठे पेहरो विशाला । नमति नवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिभुव  
न तेजाला ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ सरवारथी आविया फागुण शुदि बीजें । मृगशिर शुदि द

शमी जण्या अरदेव नमीजे । मृगशिर शुदि एकादशी संजम आदरीयो ।  
काती उज्जल वारसें । केवल गुण वरीओ । शुदि दशमी मृगशिर तणी ए  
शिवपद लहे जिननाथ । सत्तम चक्रीनं नमुं नय कहे जोमी हाथ ॥ १८ ॥

॥ ॐ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अरंजिन ए जुहारूं कर्मनो छेश वारूं । अहनिश संचारूं ताह  
रूं नाम धारूं । कृत जय जय कारूं प्राप्त संसार सारूं । नविहोय ते सारूं  
आपणो आप तारूं ॥ १८ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चव्वां जयंत विमानथी फागुण शुदि चव्थें । मृगशिर शुदि  
इग्यारसें जनस्या निग्रथे । ज्ञान लक्षा एकणदिनें कल्याणक तीन । फागु  
ण सुदि वारसें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेंसर नीलमाए । उगणी  
शमा जिनराज । अणपरण्या अणनूप पद । नवजल तरण जहाज ॥ १९ ॥

॥ ॐ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिन मल्ली सहिला वानठे जेहनीला । ए अचरिज लीला खी  
तणें नाम पीला । इशमन सवि पील्या स्वामि जोठे वसीला । अविचल  
सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ  
अंधारमी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि वारसें व्रत वदि वारसें ज्ञान  
फागुणनी तेम जेठ नवमी । कृष्णें निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उज्जला । ति  
ज्यण करे प्रकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास ॥ २० ॥

॥ ॐ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी जे नमुं शीश नामी । मुऊ अंतर जामी का  
मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा  
रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आशी शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया श्रावण वदि आ

उम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आषाढनी थया तिहां अणगा  
र । मृगशिर शुदिं इग्यारसैं वर केवल धार । वदि दशमी वैशाखनी ए अ  
खय अनंता सुख । नय कहें श्री जिननामथी नासे दोहग डुख ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नही विश्वगानो । सुत वप्रा मानो  
पुण्य केरो खजानो । कनक कमल वानो कुंज ठे जे कृपानो । सविजुवन  
प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपराजितथी आविया । काती वदि वारस । श्रावण शुदि पं  
चमी जएया । यादव अवतंस । श्रावण सुदि ठे संजमी । आसौज अ  
मावस नाण । शुदि आषाढनी आठमे । शिवसुख लहे प्रमाण । अरिठ ने  
मि अणपरणीया ए । राजिमतीना कंत । ज्ञान विमल गुण एहना । लो  
कोत्तर व्रतंत ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ योय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गया शस्त्रागारैं शंख निज हाथ धारैं । कियो शब्द प्रचारैं वि  
श्व कंण्यो तिवारैं । हरि संशय धारे एहनी कोइ सारे । जयो नेम कुमारे ।  
बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू दीपैं विचरंता जिन देव । अमघात  
की खंमे सुरनर सारे सेव । अड पुष्कर अरधैं इणपरैं वीस जिनेश । संप्र  
तिए सोहे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम ज्वजल नि  
धिने तारे । कोहादिक मोटा मज्जतणा जय वारैं । जिहां जीवदया रस स  
रस सुधारस दाख्यो । जवि जाव धरीनैं चित्त करीनैं चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन  
शासन सान्निध्य कारी विघनविमारे । समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे  
शैत्रुंज गिरि सेवो जिम पामो जवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे  
सुखकार ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दो घन्टीयां । दोघन्टीयां दोचार घडीयां । रहो  
रहोरे यादव ॥ (ए आंकणी) । मोज महिराण शिवादेवी जाया । तुमें ठे

आधार अमवडीयां ॥१॥ रहो०॥ नाह विवाह चाह करीआए । क्युं जावत  
फिर रथ चमीयां ॥ रहो० ॥ पशुपं पोकार सुणीय किय करुणा । ठोमीदी  
ए पशुपंखी चमीयां ॥ रहो०॥ २ ॥ गोद विठाउं में वली जाउं । करुं वीन  
ति चरंणे पमीयां ॥ रहो० ॥ पीयुविण दीहाते वरिस समोवड । न गमै  
स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन । वामी  
वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टजवांतर नेह निवाहत । नवमे जवते बीठ  
डीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनै । राजुल रैवत गिरि  
चडीयां ॥ रहो०॥ पीयुकरे निजशिरें हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां॥  
रहो०॥५॥ जादववंश विज्जुषण नेमजी । राजुल मीठी बेलडीयां ॥रहो०॥  
ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंखमीयां ॥रहो०॥६॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुण्ण चोथ चैत्रदतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी ज  
नम त्रिजुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर  
उपसर्गनो टाढ्यो पलीमंथ । चैत्ररुण्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण  
नूर । श्रावण शुदि आठमें लखा । अविजल सुख नरपूर ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । रुत सुकृत संचारे वि  
घननै जे विमारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडिं वारे । मुक्त प्राणाधारे  
मात वामा मल्हारे ॥१॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुजव  
लयलावे केवल ज्ञान पावे । पटजे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सविजिन वर  
जाण श्री निवांसाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार ।  
दश सत्य प्रकार पञ्चखाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेजया जिहां  
उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला  
जे महा लोग पाला । सुरनर महिमाला शुद्ध दृष्टी रुपाला । नय विमल  
विशाला ज्ञान लठी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुखाला ॥४॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थारे माथे पचंगी पाच सोनेरी जेगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ ✽ ॥ प्रज्जुपासजिणेसर जुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिवजी ॥ ली  
ला अलवेसर धीरम मंदर भूधरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर रुत  
शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुं ठवि निरमल जलधरो ।  
सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे  
जोगी तुमगुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी  
निजमते ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥ सा० ॥  
॥ २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति, निरासे शासने ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशा  
लें सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने आतम ध्याने आत  
मा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥  
एक अनेके वज्जत विवेकें देखिये ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अ  
कामी लेखिये ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी ठे वज्ज नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥  
अपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयत चारी नि  
यन विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम वज्ज फेली आगमे ॥  
सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणें ॥ सा० ॥ मोहारि विना  
शी तुं जित काशी कविजणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी  
लायक नाथ ठे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ ठे ॥  
सा० ॥ जित मन मथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकां  
ति एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगें पुदगल ज्ञो  
गें तें दक्षा ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नकिरक्षा ॥ सा० ॥  
तुंहेतु समीयो सुखर नमियो सज्जकहे ॥ सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र  
तुमारो कुणलहे ॥ सा० ॥ ७ ॥ इम तुम गुण थुणीयें कर्मनें हणीये पलक  
मां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणिये सेवक गणीयें ललकमां ॥ सा० ॥ वामा  
चे नंदा त्रिजुवन इंदा संथुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुमपय बंदा  
गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ शुद्धि आषाढ ठठ दिवसें प्राणतथी चवीया । तेरस चैत्रह शुद्धि  
दिने त्रिशलायें जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिनें आपे संजम आराधे  
शुद्धि दशमी वैशाखनी वर केवल साधे । काती कृष्ण अमावसीए शिव

गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे । पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लहो ज्वजल तीर धर्म कोटीर हीर । डरित रज समीर मोह  
मूसार सीर । डरित दहन नीर मेरुधी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर  
चरण कल्पद्रु कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग  
जंतु दयाला धर्मनी शाख शाला । रुत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला  
सुरनर महिपाला वंदता ठे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी द्वादशांगी  
रचाणी । सुगुण रयण लाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि  
सुखनी निशाणी । डह पीलण घाणी सांजलोनाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत  
रखवाला जे बली लोग पाला । समकित गुण वाला देव देवी कृपाला । करो मं  
गल माला टालीने मोह हाला । सहज सुख रसाला बोध दीजें विशाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज गईधी ऊं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदो वीर जिणसरराया । त्रिशला माता जायाजी । हरि लंठन कंचन  
धनकाया । मुऊ मन मंदिर आयाजी ॥ वंदो वीर ॥ १ ॥ उपम समये शासन जे  
दना । शीतल चंदन ठायाजी । जे सेवतां नविजन मधुकर । दिन दिन होत स  
वायाजी ॥ वंदो ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन  
आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी ॥ वंदो ॥ ३ ॥ कर्म  
कठिन जेदन बलवनर । वीर विरुद्ध जिन पायाजी । ए कल मल अतुली बल  
अरिहा । डशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो ॥ ४ ॥ वंठित पूरण संकट चूरण  
तुं मात पिता तुं सहायाजी । सिंहपरें चारित्र आराधी । सुजश निशान व  
जायाजी ॥ वंदो ॥ ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजे । बध्धमान जिनराया ।  
जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥ वंदो ॥  
॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीरराय कहेवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयवाण । स्यादाद सा  
धन पद एही अध्यातम गुणवाण ॥ १ ॥ (संहीए नमो जिणाणं) ॥ २ ॥ ए

(आंकणी) ॥ विजुं तेरलख सग्न कोमि जवणवई । सासय जिणहरमाणं ।  
 तेरशें नव्याशी कोमी । सग्नसठि विंवह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही ० ॥ मेरु  
 वैताढ्य वखारा कंचन । यमक कुंमद्रह जाणुं । एकत्रीश ओगण्यासी जि  
 नवर । मानवलोके वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख इक्यासी सहस चारसो  
 च्याशी अधिक विंव जाणुं । रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें । सुंदर अशी चेईया  
 णुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अम्रशत सय सहसा चालीसा । विंवतणुं परिमाणं । स  
 र्वाले वत्रीशसैं गुण सठी । तिर्यक् लोके चेईयाणुं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा  
 त्रण लख सहस एकाणुं । चउसय तेवीस परिमाणं । साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा । रुचक कुंड नंदीठाणुं ॥ स० ॥ वार देवलोके नवग्रैवेयके । अ  
 नुत्तर पंच विमाणं । लाख चोराशी सहस सत्ताणुं । त्रेवीश चेई जाणुं  
 ॥ ७ ॥ स० ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं । सहस चुमालीस आ  
 णुं । सातशें साठ ऊपर उर्ध्व लोके । जिन पद्मिमा मन आणुं ॥ ८ ॥  
 ॥ स० ॥ त्रिजुवन मांहे सासय जिनहर । सगवन्न लख वसैं व्याशी । आठ  
 कोमि अथ प्रतिमा संख्या । सुणजो सम कित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पत्त  
 रशें कोडी, वेंतालीश कोमी । तेम अठावन्न लखवा । ठत्रीश सहस अशी व  
 लि साधिक । सासय विंवनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिवारें  
 प्रतिमा । चोमुखें शत चौवीश । पांच सत्ता तिहां साठ वधारो । एकशत  
 अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ ऊषन्न चंद्रानननै वध्वमान । वारिखेण च  
 न्नामैं । व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या । जिन घर पडिमा मानें ॥ १३ ॥  
 स० ॥ सकल सुरासुर जावना जावे । समकित गुण दीपावे । परित्त संसार  
 करी शिव जावे । कुमति तेम न जावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पातालेनैं तिर्यक  
 लोके । पणसय धणु परिमाण । कर्पे सग्नकर पणसय धणु माणुं । सासय  
 असासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वलो शासय विणु । शेनुंजा  
 दिक वज्रला । ते सविहूने त्रिविधें नमतां । पातक जाये सगला ॥ १६ ॥  
 स० ॥ ज्ञानविमल प्रभुनाम जपंता । लहीये कोडि कट्याण । मनह म  
 नोरथ सगला सीजे । जनम सफल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ जयहर  
 जगवंताण जयतुर । नमो जिणाण सहीए । नमो अविचल आदि गराण ।  
 सहीए नमो अरिहंताण ॥ १८ ॥ सही ० ॥ इति श्री सर्वजिन नमस्कारः ॥

(इहां) एक लोगरसनो काउरसग "चंदेसु निम्नलपरा" तूथी एक जण करे ते काउरसग पारी । पत्री चार थोवां फदेवी ( ते लमीयं ठीयें.) ॥ ॥५॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ज्ञानदेव नमं गुण निर्मला । दूध मांहे जिम जेला सीनोपला ।  
विमल शील तणा सिणगारो । जयजय मुऊनंचिते रुच्ये ॥१॥ जेह अनंत  
धया जिनकेवली । जेह हसे विचरंतां जेवली । जेह असासय सासय विऊ  
जगं । जिन पन्निमा प्रणमुं नित ऊगमगे ॥२॥ सरस आगम क्षीर महोदधी  
त्रिपदी गंग तरंग करी वधी । जपिक देह सदा पावन करे । डरित ताप  
रजो मल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनप ज्ञासन ज्ञासन कारिका । सुर सुरी जिन  
आणा धारिका । ज्ञान विमल प्रभुतायें दीपता । डरित डट तणा जय जीप  
ता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन स्तुति ॥ २५ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इहां एकजण मोटी ज्ञानि कहे ( अने ) बीजा सवं काउ  
सगमां सान्तै । पत्री सर्वे जणा काउसग पारीने । प्रगट एक लोगरस  
पूगे कहे । पत्री वेसीनं, एकबीश नरकार, प्रगटपणे सर्व जण गणे ( पत्री )  
सर्वजण, मुग भकी आभी रीनं कहेः—श्रीगुरुंजायनमः ॥ १ ॥ श्रीपुंमरीकाय  
नमः ॥ २ ॥ श्री सिद्ध कृपाय नमः ॥ ३ ॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥  
श्री सुगिरये नमः ॥ ५ ॥ श्री महागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्री पुण्यरात्रये न  
मः ॥ ७ ॥ श्रीपर्वताय नमः ॥ ८ ॥ श्री पर्वतेश्वराय नमः ॥ ९ ॥ श्री महा  
तीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्रीशाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्रीदृढशक्ताय नमः  
॥ १२ ॥ श्री मुनिनिज्जवाय नमः ॥ १३ ॥ श्रीपुण्यदेवताय नमः ॥ १४ ॥  
श्री महापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्री पुष्पीरीशाय नमः ॥ १६ ॥ श्री सुग्न  
द गिरये नमः ॥ १७ ॥ श्री कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालानु  
लाय नमः ॥ १९ ॥ श्री परमंरुद्राय नमः ॥ २० ॥ श्री नरकामपू  
णाय नमः ॥ २१ ॥ ॥ अथ सिद्ध गिरीना (२१) नाम नयनं मुगं प्रगट कही  
ने ( पत्री ) पाप बीजिता शोच रक्षण फदेवी ते लमीयं ठीयें ॥ ॐ ॥



॥ ❀ ॥ प्रथम श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साहेलमीयानी ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीलडी रायण तरूतले । साहेलडीयां । पीत्रमा प्रभुजीना पाय  
गुण मंजरीयां । ऊजले ध्यान ध्याइयें ॥ सा० ॥ अहेहीज मुगति उपाय ।  
गुण० ॥ १ ॥ शीतडी ठायें वैसीयें ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गु  
ण० ॥ नाही थोई निर्मल थई ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण० ॥  
॥ २ ॥ पूजीयें सोवन फूलमे ॥ सा० ॥ नेह धरीनें अहे ॥ गु० ॥ ते त्री  
जे जवे शिवलहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्र  
दक्षिणा ॥ सा० ॥ दीअे अहेनें जे सार ॥ गुण० ॥ अन्नंग प्रीति होअे  
जेहने ॥ सा० ॥ जवजव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल  
मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थमने मूल ॥ गुण० ॥ देवतणा वासा अठे ॥ सा० ॥  
तीरथनें अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें ॥ सा० ॥ सेवो  
एहने उठाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु नाखियो ॥ सा० ॥ शत्रुंजा  
महातम मांहि ॥ गुण० ॥ इति श्री शत्रुंजा स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री गिरनार तीर्थस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी कामनी दोयके कामें व्यापीयो हो०के का० ॥ ए चाल ॥  
॥ ❀ ॥ नेमनिरंजन देवके सेव सदा करूं हो लालके ॥ से० ॥ अहनिश  
ताहरूं ध्यानके दिल माहे धरूं हो लाल ॥ दिल० ॥ शंख लंठन गुणखाणके  
अंजन वानठे हो० के ॥ अं० ॥ राजिमतीना कंतके परण्या विणु अठे हो० ॥  
पर० ॥ १ ॥ तुंहीज जीवन प्राणके आतमरामठेहो०के ॥ आत० ॥ माहरे परमा  
धारके ताहरूं नामठे हो०के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना नंदन नितुनित वंदतां  
हो०के ॥ नित० ॥ कीजीयें करुणा वंतके कर्म निकंदना हो०के ॥ कर्म० ॥  
२ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढऊपरै हो० के ॥ रही० ॥ पहरी शील स  
चाह उदास ऐसी धरै हो० ॥ ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुझे अ  
धिकूं कर्युहो० ॥ तुझे० ॥ कुमरपणें धरी धीर महाव्रत उचखा हो० के ॥  
महा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेहजे तेह ऊवखीनें होला० ॥ तेह० ॥ कर  
णा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज  
नारनेहो० ॥ वली० ॥ आपी संजम नार पोहोंचामी पारनें हो० ॥ पो० ॥ ४ ॥

जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन् वणाहो०॥ करे०॥ निखाहे धरी नेहके ते  
 बिरला सुण्या हो०॥ ते वि० ॥ राजिमतीने कंत बखाणे, कविजना हो०॥  
 बखा ॥ तुझे तो दीधो ठेहके तेहना धिरमनां हो० के ॥ तेहना०॥ ५ ॥ जादव  
 नाथ सनाथ करो मुऊने सदाहो०॥ करो०॥ दिओ मुऊ शिर हाथ होवे जेम  
 संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मेरे पतंग, दीवानें मन नही हो० ॥  
 दीवा०॥ नाणें मन असवार, घोडों दोमैं सहीहो० ॥ घोडो०॥ ६ ॥ सबला  
 साथे प्रीत, निवलन नवि कही हो०॥ निवल०॥ पण लागीजे थोमी, किहां  
 जाओ वही हो०॥ किहां०॥ जे सज्जनशुं होय ते नीम न मंजीयेहो० के॥  
 नीम० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होओ तो, कर्मनें मंजीयेहो० के ॥ कर्म०॥ ७ ॥  
 तो डुशमन होय दूर, कोणे नवि मंजीयेहो०॥ कोणे०॥ प्राणाधार पवित्रके, द  
 रशन दीजीयेहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीये हो०  
 म०॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ श्री आबूतीर्थ स्तवन० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें ( एं चाल ) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिधर जइयें ॥ श्री जिनवर  
 नीं चित्ति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल व  
 सहीना प्रथम जिणेसर । मुख निखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख  
 कुसुम वर । कंठे टोमर ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पोसे लुणग वसही  
 श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखी । डुख दोहग सवि गमी  
 यें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री कृपज जिणेसर । रेंवत नेम समरी  
 यें । ओ दो वसिनी यात्रा करता । बिजुं तीर्थ चित्त धरीयें ॥ आवो० ॥ ३ ॥  
 मंमप मंमप विविध कोरणी । निरखी हियडें ठरियें । श्री जिन वरना विं  
 व निहाली । नरजव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ  
 आदीश्वर प्रणमी । अशुभ करम सवि दरीयें । पाश शांति निरखी जव  
 नयणें । मन मोसो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम  
 वाधे । जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि  
 दरीयें ॥ आवो० ॥ ६ ॥ ओकण ध्यानं प्रजुने ध्यातां । मनमाहि नवि मरीयें  
 ज्ञान विमल कहे प्रजु सुपसार्यें । सकल संव सुख करियें ॥ आवो० ॥ ७ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्प  
 क नामें विमानें वेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल ।  
 समकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरन्नव सफलो कीजें ।  
 हीयमे हरखी लाल । समता संग करीजें । (आंकणी) चनुमुख चनुगति ह  
 रण प्रसादें । चनुवीसे जिनवैठा । चनुदिशि सिंहासन समनासा । पूरवदिशि  
 दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संचव आदें दक्षिण चारे । पश्चिमे आठ सुपासा ।  
 धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो । एवं जिनचनुवीशा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वैठा सिंह  
 तणें आकारै । जिन हर भरते कीधा । रघुण विंव मूरति थापीनैं । जगजश  
 वाद प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक । रावण तांत वजावे । मादल वी  
 णा ताल तंबूरो । पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नक्ति जावें एम नाटक  
 करतां । तूटी तंती विचालें । सांधी आप नसा निज करनी । लघु कलाशुं  
 ततकालें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य जावशुं नक्ति न खंडी । तो अक्षय पद साध्युं  
 समकित सुरतरु फल पामीनैं । तीर्थकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि  
 परें नविजन जे जिन आगें । वज्रपरें जावना जावे । ज्ञान विमल गुण तेह  
 ना अह निश । सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समेत शिखर गिरि जेटीयैरे । मेटवा नवना पास । आत  
 म सुख वरवा नणीरे । ए तीरथ गुण निवासरे ॥ १ ॥ नवियां से  
 वो तीरथ अह । समेत शिखर गुण मेहरे ॥ नवि० ॥ से० ॥ ( ए आं  
 कणी ) ॥ समेत शिखर कलपें कह्योरे । वीश टुंक अधिकार । वीश तीर्थकर  
 शिव बखारे । वज्र मुनिनैं परिवाररे ॥ न० ॥ २ ॥ से० ॥ सिद्ध खेत्र मांहे व  
 स्यारे । जाखे नय व्यवहार । निश्चय निज स्वरूपमारे । दोय नय प्रजुजीना  
 सार ॥ न० ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतांरे । अति दुर्ग  
 मनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयैरे । ते आगम स्यादवादरे ॥ न० ॥ ४ ॥  
 से० ॥ स० ॥ जय रथ रायतणी परेंरे । जात्रा करो मनरंग । नव दुःखने  
 देइ अंजलीरे । थाये सिद्धि बधूनों संगेरे ॥ न० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत  
 जात्रा करैरे । तो शिव हेतु थाय । नव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण

प्रगटायरे ॥ ज० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेहू समयें सम कित थयोरे । तेहू समयें  
होय नाण । ज्ञान विमल गुरु ज्ञाखीयोरे । आवश्यक ज्ञाप्यनी पाणरे ॥  
ज० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववन्दन विधिः ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अथ श्री पर्युपणपर्व स्तुतिः ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनै रत्नात्रमहोत्सव कीजैजी । ढोल द  
मामा जेरी नफेरी ऊल्लरिनाद सुणीजैजी । वीरजिन आगल जावना जावी  
मानवजव फल लीजैजी । परव पजूसण पूर्व पुण्यें आव्या इम जाणी  
जैजी ॥ १ ॥ मास पास बन्नी दशम डयालस चत्तारी अठ कीजै  
जी । ऊपर बलि दशदोष करीनै जिन चौबीश पूजीजैजी । वमा कल्पनो  
ठक्करीनै वीरवखाण सुणीजैजी । पम्बानें दिन जन्म महोत्सव धवल मं  
गल बरतीजैजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अठमनुं तप कीजै  
जी । नागकेतुनी परै केवल लहियै जो सुनजावें रहियैजी । तेलाधर दिन  
त्रय कल्याणक गणधर वाद बदीजैजी । पास नेमीसर अंतर वीजै ऊपच च  
रित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ चारशौं सुवनें सामाचारी संवत्सरी पम्किर्मियैजी ।  
धैत्यप्रवाडी विधिसुंकीजै सकल जंतुनै खामीजैजी । पारणानें दिन सामीव  
त्सल कीजै अधिक बमाइंजी । मान विजय कहै सकल मनोरथ पुरो देवी  
सिन्हाइंजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अथ श्री नेम राजीमती वारमाशो ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ सीपालै साटू जलीर लाल ( ए चाल ) ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ तोरणधी रथ फेरीयोरे लाल । नीतुर नेम कुमार । प्रेमविलूधी प  
दमणी हो लाल । धीनयें राजुलनार ॥ १ ॥ (हो रंगीला नेम, सुणमांद्दरी अर  
दास) । सह्यापासु राजुल कहै हो लाल । मगसिर नापो पीउ । प्रीतम पिण  
द्विमाद्दरो हो लाल । धीरज न धरें जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ  
धीयो हो लाल । आयो मोडप देण । तो सूरतनै सांक्लाहो लाल । देखण  
तरसैनेण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माद्दमहीनो सीयमहो लाल । प्रीउसंग पोढै नारि  
प्रीतम पिणजं एकली हो लाल । केमरजं निरधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली  
सेलै हेतसुरे लाल । पागुणमं नग्नारि । ऊंकिणसुं खेदुं हिये हो लाल । पास  
नही नरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चैतमहीनै चांदणीरे लाल । संजोगण सुव

दैण । विरहणनै बालम विनारे लाल । रोवत जावै रेण ॥ ६ ॥ होण ॥ वन  
 हरीया वैसाखमेरे लाल । मांजरही महकाय । अरजसुणी अवला तणी हो  
 लाल । तपत मिठावो आई ॥ ७ ॥ होण ॥ जेठ तपै लू आकरो हो लाल ।  
 दाऊँ कोमल गात । ससनेही साहिब विनारे लाल । कुण पूठै मुऊवात ॥ ८ ॥  
 होण ॥ आसाढै काली घटा हो लाल । उनमि आयो मेह । कंत मित्या नि  
 ज नारसुरे लाल । धरती मिलीया मेह ॥ ९ ॥ होण ॥ श्रावण चमकै दाम  
 नी हो लाल । वनवरसै ऊडलाइ । इण रत सूतां एकली हो लाल । कयुं क  
 रि रेण विहाइ ॥ १० ॥ होण ॥ काली कालाहण मिली हो लाल । चाद्र  
 वडै बरखंत । अरज सुणीनै साहिवा हो लाल । पूरो मोमेन खंत ॥ ११ ॥  
 होण ॥ आशोजै आंसूऊरै हो लाल । नाह बिना निसि दीस । सारन पूठी  
 साहिबे हो लाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ होण ॥ काती द्रिढ जती  
 करीरे लाल । जाइ मिली गिरनार । देखी मुख निज नाहनो हो लाल । सफ  
 ल गिएँ अवतार ॥ १३ ॥ होण ॥ संयमले पीठ सें हथै होलाल । पांमै न  
 वनो पार । इणपर पालै प्रीतडीहो लाल । धनधन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे  
 कीवी पसुऊपरे हो लाल । मां परिकरिज्यो देव । चंदनणी द्योकरि दयाहो  
 लाल । प्रभुचरणारी सेव ॥ १५ ॥ होण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 इति श्री नेमिराजुल वारै मासो संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अजीमगंजे नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्त ॥ ॥

॥ ॥ केशरियानें ऊयाजकोण ( इस चालमें ) ॥ ॥

॥ ॥ आज सखि प्रभु दरशण में पायो । मेरो रोम रोम झलसायो  
 आण ॥ अनंत काल जब जल मांह नमतां । मिथ्या मत नरमायो । कुमति  
 नारसंग इत नत मोलत । चैतन वज्र दुःख पायो ॥ आण ॥ १ ॥ पुन्य संयो  
 गै नरनवपामी । सुमति नार संग चायो । हीनपुण्यतें मोह पकरकै । विषय क  
 षाय रमायो ॥ आण ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादै प्रभुगुण महमा । श्रवण सुणी  
 हरपायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुनायो ॥ आण  
 ॥ ३ ॥ समुद्र विजै सिवादेवी के नंदन । सज्ज सुरनर दिल नायो । इंद्र इं  
 द्राणा मंगल गावत । मोतियन चोक्र पुरायो ॥ आण ॥ ४ ॥ धन्य  
 घडी धन्यजाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण बाल ब्रह्मचारी

नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरव देश अजीमगंजमें । श्री संघ  
चित्त ऊमायो । स्थापन चैत्य विंव की करने । जिनधर्म जगदीपायो ॥ आ०  
॥ ६ ॥ सिख सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद मुनि जायो । श्री जिनचं  
द सुरिंदके श्री वर । हितप्रिय मोहन गायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ १९४३, वै । सु । ७  
अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ नवपद स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद  
महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे ॥ जी० ॥ १ ॥ करम निकाचित  
दूर करणकों । सुंदर सुख उगायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां  
अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिनजए अगामी होयगे । नवप  
द संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम कृपा शिव रमणी वरके । शमर श  
मर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ इतिपदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त० ॥ ॥

॥ ॥ सज्जत्तया देवलोके रवि शशि जुवने व्यंतराणां निकाये । नक्ष  
त्राणां निवासे यद्गण पटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्पुष्टिक  
मणिकणे ध्वस्तसांद्रां धिकारे । श्री मत्तीर्थ कराणां प्रति दिवस महं तत्र चै  
त्यानिवंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंभले हस्तिदंते । वक्त्रा  
रे कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नैषधे नीलवंते । चित्रेशैले विचित्रे यमक गिरवरे  
चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ २ ॥ श्री० ॥ श्री शैले बंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्बुदे पाव  
के वा । सम्मते तारकेवा कुलगिरि शिखरे ष्ठापदे स्वर्ण शैले । सहाद्रौ चोऊ  
यंते विपुल गिरवरे गुर्जर रोहणाद्रौ ॥ ३ ॥ श्री० ॥ आपाढे मेदपाटे क्लित  
तट मुकटे चित्रकोटे त्रिकोटे । लाटे नाटेच धाटे विट घन तटे देवकूटे  
विराटे । कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकूटेच जौटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥  
श्री माले मालवेवा मलयपति निखले मेखले पिन्धलेवा । नेपाले नाह  
लेवा कुवल्लय तिलके सिंधले मेखलेवा । माहले कोशलेवा विगलित  
सलिले जंगलेवा तवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अंगे बंगे कलिंगे सुगत जनपदे  
सुप्रियांगे तिलंगे । गौडे चौडे मुर्द्रे वर तर द्रविमे उद्रीयाणे पुरंद्रे । आ  
द्रे माद्रे पुरंद्रे द्रवियल कुवले कर्त्ति कुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पन्नने चोज्जयिन्यां । कौशल्यां कौशला  
 यां कनक पुरवरे देवगिर्यां सकाश्यां । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे चद्वले  
 तामलिप्त्यां ॥ ७ ॥ श्री० ॥ स्वर्गे मर्त्यत रक्षे गिरि शिखर ऊदे स्वर्नदी  
 नीरतीरे । शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने ब्रूहाणां निकुंजे । ग्रामे र  
 एये वनेवा स्थल जल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इत्थं  
 श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा चक्तिआजां प्रसिद्धात् । प्रोद्यत्कल्याण  
 हेतुः कलि मलि हरणे ये पठंते विशिष्टं । तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति  
 मतुलं जायते मानवानां । कार्यं सिद्धि स्तवोच्चै प्रभवति सततां चित्त मा  
 नंद कारी ॥ ९ ॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अपञ्चरा करती आरती जिन आगै । हारे जिन आगैरे जिन  
 आगै । हारे एतो अविचल सुखमा मांगे । हारे नाज्जीनंदन पाश ॥ अप  
 ञ्चरा ० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमके । हारे दोयचरणे ऊंऊर  
 ऊमकै । हारे सोवन घूघरी घमके । हारे लेती फूदमी वाल ॥ अप ०  
 ॥ २ ॥ तालमृदंगने वांशली मफवीणा । हारे रूडा गावंती स्वरजीणा ।  
 हारे मधुर सुरा सुर नयणां । हारे जोती मुखमुं निहाल ॥ अप ० ॥ ३ ॥  
 धन्य मरुदेवी मातनें प्रज्जुजाया । हारे तोरी कंचन वरणी काया । हारे मेंतो  
 पूरवपुन्ये पाया । हारे तोरो देख्यो दीदार ॥ अप ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन  
 परमेश्वर प्रज्जुप्यारो । हारे प्रज्जु सेवक ऊं हुं तारो । हारे जवो जवना डख  
 डा वारो । हारे तुमे दीनदयाल ॥ अप ० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त  
 धरजो । हारे मोरी आपदा सगली हरजो । हारे मुनि माणक सुखीउं क  
 रजो । हारे जाणी पोतानुं वाल ॥ अप ० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ श्री नेमि राजीमती सिंहाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देशी ऊमादे चटियाणीरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहिली तो समरूं हो सिद्ध बुधरी दाता सारदा । लागुं गुरांरे  
 पाय । प्रज्जु गुण गास्यां हो नेमीसर साहिव जिन तणा । सुजमत आपेमोरी  
 माय ॥ १ ॥ सोरी पुरज्जंती हो नेमीसरसाहिव थेचढ्या । जानकरी यादुगय ।  
 हसतीतो सिणगाखाहो नेमीसर साहिव थेजला । घोरुदारी गिणती नकाय

बाजातो अधकाहो नेमीसरसाहिव बाजता ॥ आया तोरणवार । महिल चढी  
 नेंहो राजुल जोवें हरखसुं । मनमांहे हरेख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरुकै हो  
 सहेली मांरी जीमणी । फिरताई दीसैठै चरतार । वामो तो चरीयोहो नेमीसर  
 साहिव जीवनी । पसुवानी सुणीरे पुकार ॥ ४ ॥ ऊजो तो रथनेहो नेमीसर  
 साहिव राखीयो ॥ अपगुवांध्याठै किणकाज । गोरो तो होसीहो नेमीसर  
 साहिव तुमतणो ॥ सारथी कहैठै महाराज ॥ ५ ॥ थोडां तो सुखनेहो इ  
 ण राजुल नारीरै कारणें । होसीहो जीवानोसंहार । जीव वंध्यानेहो नेमीसर  
 साहिव ठोडिया । जीवसंवैतिणवार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुलहो नेमीसरसा  
 हिव ठोमनें । जायंचढ्या गिरनार । आठेतो करमांसुहो, नेमीसरसाहिव  
 जीतया । लीधो संयम चार ॥ ७ ॥ राजुल तो ऊरहो नेमीसरसाहिव एकली ।  
 जलविनमठली जेम । नवचंवारीहो नेमीसरसाहिव ठोमनें । नेमविन जीवुंकेम  
 ॥ ८ ॥ सहीयां तो समजावैहो राजुल दुःख मत करो । एतो काळोठे चरतार  
 पाठेतो राजुल जापैहो सहेलीमारी थेसुणो । इणचव ए चरतार ॥ ९ ॥ रा  
 जुलतो चालीहो नेमीसरसाहिव बांदवा । साथे तो घणुरे परवार । गिरनार  
 चढतांहो सब आगै पाठे नीकल्या । एकली रहीठै राजुलनार ॥ १० ॥ मेहा  
 तोवरस्याहो नेमीसरसाहिव अतिवणा । नीज्याठै सब सिणगार । गुफातो दे  
 खीहो राजुलनारी अतिजली । चीरनिचोवें राजुलनार ॥ ११ ॥ गहणा तो वा  
 ज्यां हो राजुल नारीरें अंगना । घूवरना ऊणकार । ऊणकातो सुणिचाहो  
 रह नेम वैठे ध्यानमें । खोलीठै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूप तो मोहो हो  
 रहनेमि वैठो ध्यानमें । कहै सुंदर करो मोसुं प्यार । बोलीतो सुणकरहो राजुल  
 अंगडांकीयो । मांनै ठोमीठै नेमचरतार ॥ १३ ॥ जोजनतो जीम्योहो रहने  
 मि खीरखामनो । उज्जटी करी नाखै तेम । वैनंतो माणसहो रहनेम पाठो नही  
 जखै । जखसी कागकुत्ताजेम ॥ १४ ॥ ऊं तो माताहो रहनेम थारै सारखी ।  
 ऊंवमा जाईनी नार । पापतो धरस्योहो रहनेम मारै ऊपरा । तो पमस्यो  
 धेनरक मत्तार ॥ १५ ॥ एहवा वचनें हो रहनेम राजुल पाए नम्यो । पापख  
 मावै थारवार । कपमा तो पदस्या हो राजुल नारी आपणां । पुद्दतीठै प्रभु  
 दरवार ॥ १६ ॥ राजुलतोहरखैहो नेमीसरसाहिव बांदीयां । बांदीनै लीधो सं  
 यम चार । केषलतो पालीहो नेमीसरसाहिव निरमलो । पुद्दतीठै मुगति



मऊार ॥ १७ ॥ केवल पालीहो नेमीसरसाहिव आगलै । मिलीयाठै मु  
गति मऊार । माणक्य रंगैहो नेमीसरसाहिव गाईयो । ह्वारा आवागम  
ए निवार ॥ १८ ॥ इति श्रीनेमि राजीमती सिम्नाय संपूर्ण ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री शालिन्द्रको शिलोको लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सरसत सांमण समरुं सुखदाई । ब्रधमानस्वामी प्रणमूं वरदाई । कुंवर  
शालिन्द्रो कज्जं सिलोको । एक मनांथे सांचलज्यो लोको ॥ १ ॥ राज  
गृही नगरी जिनध्रम राजा । श्रेणक नांमैं मोटो महाराजा । राणी चेलणा  
चोखी पटराणी । शील संतोषै साची वखांणी ॥ २ ॥ मंत्रीसरकहियै अन्नै  
कुमारो । सगली सन्नामैं ते हीज सिरदारो । सेठ गोन्नद्र नगरीमें सोहै । न  
द्रा सेठांणी ते मन मोहै ॥ ३ ॥ सुख सेती रहता कितरे के दिवसे । सुत  
साल नद्र जन्म्यो शुन्न दिवसै । बहिन सुन्नद्रा वीरो रमावै । मनमारै कोडै  
माता झलरावै ॥ ४ ॥ इण विध वधतां हुवो जुवांनो । पिता परणावै मोटी  
कर जांनो । बत्रीस गोस्यारो बालम कहीजै । सातमी नूमैं सुखसेती रही  
जै ॥ ५ ॥ बिहार करंता वन मांहै स्वांमी । आय ऊतरीया अंतर जांमी ।  
गोन्नद्र शेठ बांदणनैं वैठो । समकित धारी श्रावकसेठो ॥ ६ ॥ महावीर स्वा  
मी देशना दीधी । समऊयो श्रावकते दीख्याजीलीधी । व्रत लेईनैं विधसुं वि  
चारै । अंतकाल आयां अणशण उचारै ॥ ७ ॥ वैमानिकवासी देवता  
वदीतो । साधु गोन्नद्र झुवो सुवदीतो । अविध प्रयुंजी जाणैं विरतं तो ।  
नोगी सालनद्रनूं देखै एकांतो ॥ ८ ॥ नवपूरवरी बात संजालै । नयणे आप  
रो बेटो निहालै । मन मांहै देवता इसमो विमासै । आई निसहं आगै जी  
पासै ॥ ९ ॥ आगै तो लक्ष्मी इधकेरी ऊंती । देवतानी दीधी हुई अनं  
ती । पेई तेत्रीसे देवता पुज्जचावै । सोनै में ग्रहणा जमीया शऊ आवै  
॥ १० ॥ तेत्रीसमी पेटी तिणमांहै नीकलै । सूरज चंदा ज्युं तेजै ऊल हल्ले ।  
माणकनै हीरा सोनांमैं जडीया । घाट सुघाटै देवतारां घमीया ॥ ११ ॥  
सेहरो साहूनें साल नद्र जोगो । लाखां कोडारा आंके बेलोको । शाठां  
घडीयांरी अंतै शगलाई । नाखे आनूषण निरमायल खाई ॥ १२ ॥ दिन २  
पेई देवता ते ल्यावै । शोनईया हीरा माणक लावै । उत्तरीया ग्रहणा  
निरमायल थावै । बलती पेयारी शार नकरावै ॥ १३ ॥ राजा चक्रवर्ति

शुद्धणे न देखे । एहवा आलूपण पहरनें नाखै । केशर कस्तूरी मलया गि  
 र वासै । चोवाने चंदन फुलवाढ वासै ॥ १४ ॥ आठ पोहरनें, वत्रीशे  
 घडिया । पात्रांतो नाचे मुह आगै खमीयां । अपठरा शरिखी उपमा  
 पावै । जामनि वत्रीशे ते मन जावै ॥ १५ ॥ सुकलीणी सुंदर वत्रीशे राणी  
 पुन्य जोगे शेती एक दिन आणी । दिन २ वध ते हेतशुं निरखै । नारी  
 पत जगती हितशुंजी परखै ॥ १६ ॥ एक दिन व्यापारी परदेशी आ  
 या । वशत अमोलक विध २ री ल्याया । व्यापारी चोहटे वशतां देखालै ।  
 नगरीरा लोक आर्वीनेंहालै ॥ १७ ॥ रतन मै कांवल शोलै निरखीनें । बां  
 णी या देखै विधशुं परखीनें । बांणीया पूठै मोलवता वो । सवा लाख शोनइय  
 नगद दीरावो ॥ १८ ॥ मोल शुणीनें शाहाजी शलकै । कर २ नें वातां माहो-  
 मांमुलकै । बलता बांणीया नेमानही आवै । कूमी शुण गह्वां कुशले घर  
 जावै ॥ १९ ॥ इण विध व्यापारी नगरीमे जमीया । जावै राजाकै चणैजी  
 नमीया । व्यापारी बोलै शुणो महाराजा । शोलैई कांवल शहूठै ताजा ॥  
 ॥ २० ॥ इण कांवल में गुणठै एक मोटो । आपरे आगे न बोलुं खोटो ।  
 आगमै घोयां मेलज ठंठै । मोल कांवलनो इधको तिणमांठै ॥ २१ ॥ गुण  
 शुणीनें राजां गह गहीयो । कांवल एक लेवा घणु ऊमहीयो । नगद शोनई  
 या नही जंमारो । महीनारीमोलतकरो उवारो ॥ २२ ॥ बलता व्योपारी बोलै  
 इमबांणी । रावलीबांणी शाचीमें जांणी । शुणो महाराजा एक अरदाशो ।  
 पइशाखरचीरा नही अह्न पाशो ॥ २३ ॥ खरची दिवरावो कांवल रखवावो  
 दूर देशांतर अह्ननेंठै जावो । परदेशी किम कर आपै ऊधार । नगद  
 सोनइया कांवलल्योसार ॥ २४ ॥ इम कहि व्यापारी मेरैजी आया ।  
 आप मेरैनें घणुं पिठताया । माहोमां मिलनें मित्रांणो कीधो । आपणो  
 एको कारिज नसीधो ॥ २५ ॥ अवै अठासुं आघेरा चालो । सहिर सख  
 रोसो नयणे निहालो । किरीयांणो बेची कारज सारीजै । सुंवारी मासी इण  
 परि मारीजै ॥ २६ ॥ मुखसूं इम कहिता परदेशी आवै । मनमें इधकेरो उ  
 चाट थावै । बांणी सुण इसमी जद्राबोलावै । बद्धता व्यापारी ऊजारखावै  
 ॥ २७ ॥ सूर व्यापारी दीसोठो वीरा । बोलोठो इम किम बोल अधीरा ।  
 वसतां देखावो मोल वतावो । आखता ऊयनें परामतजावो ॥ २८ ॥ व्यापा

री कहै बनी विणयाणी । सही या लेसी वस्त अह्माणी । फोकटणीवातां  
 कहि १ नें फेरै । एवमोही मोल कठासुं अरै ॥ १९ ॥ जाई कहीने नद्रा  
 समजावै । इण घर ऊचीरो अंतन आवै । जोलै जूलागे किरण जिम  
 काया । दीसोगे जोलांतणा दडकाया ॥ २० ॥ नद्रा तुंसांनल जोली विण  
 याणी । लीधी नही कांवल राजारीराणी । फूटरा घणुं फूंदालासाहो । पै  
 ढीयां वैठा दीसे पतिसाहो ॥ २१ ॥ कांवल देखीनें ऊमाहो कीधो । मो  
 लसुणीनें विलखो मुंह कीधो । संवालांख सोनइया एकणरा लागै । इस  
 नी नविजायै लीधी तुऊ आगै ॥ २२ ॥ बलती सेठाणी वाणी इम जावै ।  
 वीरा व्यापारी इम किम दाखै । कांवलसोलेने कामण वत्रीसो । सरचावुं किम  
 कर वज्रअर वत्रीसो ॥ २३ ॥ वैत विचारी ठूकाकरावो । ठीक कहीनें मोल ठह  
 रावो । व्यापारी बोलै सुणो सेठाणी । लाख वीशरी आणो हिमाणी ॥  
 २४ ॥ जंमारी तेनीनें नद्रा इम जावै । रती एकरो अंतर मतराखै ।  
 व्यापारी एठै बोलरासूरा । दामगिणीनें देज्यो थे पूरा ॥ २५ ॥ खोलै जंमारी  
 मोटो नखारो । तीजो गिणवाने साथे ऊवो त्यारो । व्यापारी मोटो इक ला  
 रैजी लेवै । दाम गिणीनें जिणनें सऊ देवै ॥ २६ ॥ पुखतो व्यापारी को  
 ठार जोवै । अहिनांणे इंद्रपुर एहीज होवै । मोती परवाला मांणक मन  
 मोहै । हीरासोनइया सखरा ते सोहै ॥ २७ ॥ पांचरनांरो पारन पेखै । रोकरो  
 पइया दह दिश देखै । विधिशरो नांणो व्यापारी निरखै । पुखतो व्यापारी  
 ले लेनें परखे ॥ २८ ॥ चितमें व्यापारी एहवोज चिंतै । रहीऊं देखु सुहणो  
 सुनरीतै । चकचूंदी आख्यां आवीनै चमकै । ठीकसेती चालै पगल्यारै ठ  
 मकै ॥ २९ ॥ अरुवमतो पडतो आखडतो अरकै । बरु हडतो खिसतो  
 खूणांसुं खरकै । तितरै जंमारी तडकनें बोलै । ल्यो बेगोनांणो घालां थां खोलै  
 ॥ ३० ॥ मालहमालांमाथे दिरावै । व्यापारीपाठा मेरै ते आवै । तिण बेला  
 श्रेणक राजातेडावै । व्यापारी प्रते आदर दिवरावै ॥ ३१ ॥ राजाजी कहै  
 सुणो परदेश्यां । कांवल तुह्मारी एक ह्ये लेश्यां । मोटी महाराणी हठनमूकै ।  
 कांवल लेदीयां सऊ धंध चूकै ॥ ३२ ॥ जिम तिम करीने जिनसां ह्ये देवां ।  
 लाखसवारो लेखो जरदेवां । मानो व्यापारी कांवल ले आवो । नहिं अवथे  
 माहरो वचन फिरावो ॥ ३३ ॥ व्यापारी मुखसुंएहवो प्रकासै । सोले ईज

कांवल ज़ंता अह्नपासै । सेठाणी नद्रा ते सज्ज लीया । दाम गिणीने अह्न  
 नें तिण दीया ॥ ४४ ॥ अचरज पांमीनें राजा इम दाखै । सोदागर इसडो  
 कूमो काई जाखै । एहवो कुणठै नगरीमें आज । लाखांवीशारो काढैते काज  
 ॥ ४५ ॥ सोदागर जंपै सुणो महाराजा । सोवनमें घर नें रतनारा गजा ।  
 माल अलेखै तिणरे ह्ये दीगो । शालिजद्र नामें मोटोठै, सेगो ॥ ४६ ॥ ऊंगो  
 आथमीयो तेनवी जाणै । मानवरी देह सुर सुख माणै । दरसण तो तेहनो दी  
 ठां जाणीजै । महाराजा मनमें सांसो नांणीजै ॥ ४७ ॥ सोदागिर मुखसुंवात  
 सुणनिं । दिवरावै सीखसिरपाव देनं । ततखिणं तिण वेला राजा तेडाधै । अन्नै  
 कुमार हजूर आवै ॥ ४८ ॥ कुंवरजी आवै मुजरोजी कीधो । महाराजा मोटो सन  
 मानदीधो । जापै इमराजा सांजल कुमार । वेगाजिहां जावो नद्राघरवारा ॥ ४९ ॥  
 नद्रानो वेठो शालिजद्रसाह । अह्ननें देखणरो इधको ऊछाह । तुरत कुंवरनें  
 तेडीनें ल्यावो । वेगाज्जइ जावो वारमल्यावो ॥ ५० ॥ कांवल एकलावो  
 मोलकरीनें । सेठाणी प्रतै शनमानदेनं । आया कुंवरजी शेठाणी आंगै । वि  
 धि शेती कांवल एकजमांगै ॥ ५१ ॥ बोलै इम कुंवर सुणौ शेठाणी । ह  
 ठि करनं वैठी मोटी महाराणी । महाराजा कांवल एक मंगावै । परवारो  
 मोल पूरो दिरावै ॥ ५२ ॥ इण बातै तिलनूर कूडम जाणो । ऊगे घरमै शुं  
 कांवल एक आणो । शालि कुंवरनै मेलो मो शाय । बोलावै वैगो श्रेणक नर  
 नाथ ॥ ५३ ॥ अन्नै कुमाररा मुखशुं ए बात । सुणी शेठाणी जंपै इम बात ।  
 आया थेन्नलै कुमरजी आप । दरसण तो दीठां सज्जपुलीयाजी पाप ॥ ५४ ॥  
 तुह्न शरिखा पुन्धवंत घरांगण आया । डुख दोहग टलिया शज्ज शुख  
 पाया । अरज अह्नारी एक अवधारो । सेवक मनरा सज्ज कारंज सारो  
 ॥ ५५ ॥ शोलैमें कांवल शंगलाईलीया । तिके वधारी वत्तीशकीया । कांवल  
 एकेको वज्जअरनै दीधो । ऊपर नविरहियो कांवल कोई वीयो ॥ ५६ ॥  
 देवता दीधा आन्नूपण आवै । तिके पहिरंता तनसुख पावै । वज्जअर किम  
 उठै कांवल ते करमा । खरखरा लागै अंगै ते खरडा ॥ ५७ ॥ मैलेइ मुक्या  
 न्तम जाणैनें । न्तंनो दीधो वज्जअर आणैनें । शाशुजी एशु महिमांनी  
 कीधी । एहवी अलविध शुं आणीनै दीधी ॥ ५८ ॥ ऊवटणो करनं बहूवां  
 पगलूहै । नाख्या ते परहा निरमायल कूवै । कहोनें निरमायल किमकर

दिरावै । निरमायल देऊं तो दूषण मुऊआवै ॥ ५९ ॥ मोलायक बीजो का  
 रिज फुरमावै । महाराजा कुमरस्यानै तेमावै । नान्हडीयो माहरो लीलानो  
 लामो । गहन्नरीयो शोन्नै गणकेरो गामो ॥ ६० ॥ सातमी नूमें शुखशेती पोढै ।  
 नाटकीया नाचै अहिनिशि गोढै । काया मानवरी कुमर ते दीशै । सोनां सुरायां  
 इधको ते दीसे ॥ ६१ ॥ दरसण तो कोई देखण न पावै । लखगानैं लोक आवै  
 न जावै । चालो ऊंचालुं महाराजापासै । नद्रा इम जावै मनरेंउल्हासै ॥ ६२ ॥  
 दरवार आवै नद्रा मन चोली । शाये शोगानैं सही यारी टोली । वे कर  
 जोडी नद्रा इमबोलै । प्रथवीपति राजा शमकुण तोलै ॥ ६३ ॥ अरज  
 अमारी एक अवधारो । महाराजा आंगण ह्वाहरै पधारो । सेवकरै ऊपर  
 सुनिजर कीजै । शाल कुमरनैं दरशण दीजै ॥ ६४ ॥ वयणशुणीनैं बोलै महा  
 राज । तूठा तुऊ उपर आवां घर आज । जायै आगैनें जुक्त करावो । शा  
 ल कुमरनैं सन्मुख ल्यावो ॥ ६५ ॥ अशवारी करनैं राजाजी आया । मिल २  
 नै सुहव मोतीयां वधाया । सिंघासण आशण सोवनरा देवै । आरतीयां कर  
 न्वारणा लेवै ॥ ६६ ॥ राजारै आगै नद्रा ते आवै । नोजनरी नक्ती मुऊनैं फु  
 रमावै । राजाजी कहै युक्त करावो । महल तुमारा अमनैं देखावो ॥ ६७ ॥  
 आलश ठोडीनैं नद्रा ते आवे । ऊकमति होदा जल ऊनो दिवरावै । पीठी उ  
 गटणा प्रथम करावै । शायी शगलानैं शिनांन करावै ॥ ६८ ॥ कीडा पांणीरी  
 करता तिण वेला । मंत्री महाराजा सगला शमेला । उत्तम अंगूठी राजाजी  
 पारी । विलखाऊय जोवै शगली गोवारी ॥ ६९ ॥ राजाजी श्रेणक मनमें  
 विचारै । शगली रिद्धरो शारथो मारै । चिंता करीनै मनमांहे शोचै । पठ  
 तावै पनीयां ऊचाआलोचै ॥ ७० ॥ सेठाणी नद्रा तुरतज शमधी । बाणीयां  
 होवै आगल बुद्धी । जल कल उघाडी ऊन्नी जोवावै । पाणी बीठरीयां अंगूठी  
 पावै ॥ ७१ ॥ मुंद्रमली लेई घरमांहे आवै । केई अंगूठी अवर निकलावै । त्यां  
 जेली करनैं नद्रा ते ल्यावै । उलखनैं राजा मनमें उमावै ॥ ७२ ॥ स्नान  
 करीनै शऊकोई शाय । शालकुवरनी देखे सऊ आथ । पुन्यरो पूरो ए दीशै अ  
 कूरो । शाहां शिरशोहै परतख्यशूरो ॥ ७३ ॥ शोनाराथाल रूपारी चोकी । मुख  
 मलरी गाढी दीधी एकोकी । रतनारा ऊारा पाणीरा नरया । खाशा गंगोदक  
 पसवोवे करिया ॥ ७४ ॥ सेवानैं साकर सेलमील्यावै । खारक खजुरां पासै

पुरशावै । खोपरा खासा खुरमाणी आवै । दाखानें निमजा दाममजावै ॥ ७५ ॥  
 अखरोट आंवा केला नारंगी । पिसता सदाफल जंवेरी चंगी । रायण बीजो  
 रा खरबूजा खासा । ककडी साकरीयां जेला पतासा ॥ ७६ ॥ सरदा अंजीर  
 अंगूर सखरा । वोर विदाम पुरसै ले सखरा । इण विधरामेवानें आणीनें पुरसै  
 सगला आरोगै मनरै ते हरसै ॥ ७७ ॥ सीरा सावूनी सखरीसुहाली । लाडू वि  
 धंशर ल्यावै नरथाली । लाडू सेवीया खासा गुलावी । सिंवकेशरीया ल्यावै  
 सतावी ॥ ७८ ॥ वाजणा लामू गाजणा ल्यावै । कीटीरालामू केशरिया  
 आवै । नाजणालाडू मिरचाला नावै । लाजणालामू वाजणानावै ॥ ७९ ॥  
 मगदरालाडू दाळीया मुगता । लामू कस्तूरिया ल्यावै ते गलता । मोतीजीचूर  
 मिश्रीरालाडू । दीसैते मोटा देहरारा गाडू ॥ ८० ॥ ऊगरीया लाडू गुंदीयां  
 जांखै । सऊकोपुरसंता जीजी मुख नापै । पुरंश की मुरकी गुप चुप आवै ।  
 गुंदवमा घेवर जलेवी ल्यावै ॥ ८१ ॥ पूरी कचोरी पेमा हेसमीयां । खुरमा  
 नें दोठा पाजा मनगमीया । दरजिस्त फीणा इंदरसारूडा । आठी अकव  
 री दहीथरा पूरा ॥ ८२ ॥ सकर पारानें लापशी आवै । सगला तिनसेती  
 धोकरनें थावै । तरकांखां आवै ततखिणताजी । वालोर वथवो चिणारी ना  
 जी ॥ ८३ ॥ सोवानें मेथी सरशु सांगरिया । कैर कारेला पापर मोगरियां  
 कचनार कलीयां केवळानें फोग । आरोग्यां जाये तिणशुं सऊरोग ॥ ८४ ॥  
 वरीयांनै मोमी नीलावरी वोर । करूदा कोठ करपटा जोर । चवळानी फलि  
 यां घेघराकाचा । आलन पेठा अद्रक साचा ॥ ८५ ॥ अरबी वावलीयां  
 खासी काचरीयां । मिरचानें शुंठ मुखसुं आचरीया । हलदीनें लूण ह्रींगसुं ना  
 जी । तोरू लुंगनं टीडसी ताजी ॥ ८६ ॥ आंवलीया आंवा नीबू आचार । रा  
 इरै जेला राईता त्यार । खाटो मिरचरो खासोपलेव । होसो पुरसावै हितकर  
 नें हेव ॥ ८७ ॥ वासमतीचावळ मुंगारी दाल । सुरहावी ऊपर पुरसे रसाल । सि  
 खरणेयुक्त बूरो सिरावै । पाणी परघलसुं चलुआं करावै ॥ ८८ ॥ बीमापानारा  
 लुंग सुपारी । तिलक करे देसूहव नारी । आन्नूपण वागा पंचमाआवै । सिर  
 दार देखी सऊनें पहरावै ॥ ८९ ॥ राजा श्रेणक इणविध फुरमावै । इणघर  
 रो स्वामी निजर न आवै । अस्त्रीयां ऊजी ऊकम हलावै । ह्यां घरआयां मु  
 जरो क्युं नावै ॥ ९० ॥ आवीनें नद्रा एम पयंपै । एकवार देखो घररी सऊस

पै । महल महिपति शूं ऊपर जोवो । आराम करने शाइतइक शोवो ॥९१॥  
 पहलीज जूंम प्रथवी पति चढीया । पूरा पुरषोत्तम शास्त्रै जे पढीया । मंमाण  
 घररो मनशुं आलोचै । रचीयो जाणै कर शास्त्रनें शोचै ॥९२॥ ऊपरली वी  
 जी जूंमते आवै । ज्यौतिजिंगामिग निजरे देखावै । नद्रा कहै सुणीयै मोटा नू  
 पालो । ताजी देखावुं तीजी है मालो ॥९३॥ तीशरी पोल चढीया तिण  
 बेला । रत्नारी जोत दीपै अतिकेला । आंख्यारै आगै अंधाली आवै ।  
 मन मांहे जाणै नद्रा नरमावै ॥९४॥ चौवारै चोथै चढीया तिण शेती ।  
 हाथे कर जालै नद्रा हित शेती । निजर करीनें निरखै ते जूम । धडै आ  
 वै धक्का करधूम ॥९५॥ श्रेणक राजा एम विचारै । फरीया फंदमाहे आ  
 वी इयारै । कुशलै घर जावां किणही प्रकार । दिन ऊगै करशी कवण दरवार  
 ॥९६॥ आवीनें नद्रा एम पयंपै । प्रथवीपति मोटा क्युंमन कंपै । सुख से  
 ती कीजै इहां विशराम । तेमीऊं ल्यावुं ताहरो गुलाम ॥९७॥ शाल कु  
 मरनें सुखमै बतलायो । घर आंगण बेगो श्रेणक आयो । बखतावर मोटा लेख  
 बिया राजा । आप चढीनें आयो महाराजा ॥९८॥ ऊगो सिज्यासुं आलश ठोमो  
 राजा मिलनेरो राखै अतिकोमो । पूतपधारो राजारै पावै । तसलीम करनें तु  
 रत तुंआवै ॥९९॥ मातारा मुख सुं बाणी गुणबोलै । किरीयाणो श्रेणक ना  
 खो ले खोलै । माताजी पूगे काशूं इण मोलै । नार चलायो घररो शऊ तोनें  
 ॥१००॥ इतरा दिन थेई काम चलायो । मन मान्यो माता ऊकम हलायो  
 अमकाणा काम रहोने अवै । नमारनरीया मणिमाणक सबै ॥१०१॥ नाणा  
 रीतोठ ह्वारे घरनाही । मुंहमांग्यो देई नाखो घरमाही । किरियाणो कोई पा  
 गो मत फेरो । कहोने कासुंथे पूगेगो एरो ॥१०२॥ सतवंती नद्रा बाणी इम  
 बोलै । सुणइहो वेटा नू लोमतजोलै । पृथवीपति राजा श्रेणक सलहीजै । आ  
 पणरोस्वामी एह कहीजे ॥१०३॥ रूठोए राजा विषरूप जाणो । तूठोए  
 राजा सुरतरु सुपीयाणो । इणरी सुनजरसुं अपनीरिद्धओपै । करै निरधनीया  
 कहीये जो कोपै ॥१०४॥ आशइणारी वेटा बऊ कीजै । पिण आसंगो  
 पूरो नबिकीजै । राजा बेसनर सरिखा जाणीजे । इण बातें कोई शांसो ना  
 णीजें ॥१०५॥ मातारा ऊकम माने तेसेगो । पावै लागै नआवै फिरऊगो ।  
 श्रेणक राजारो सजावऊगो । खिणमांहे रूठो खिणमांहे तूठो ॥१०६॥ जा

ऐरो बिलंब वेठा नज्जकीजे । जाए राजारो दरशण कीजे । तो सूरत  
 दीगं राजाजी रीऊँ । अण चिंत्या कारज इण वातै सीऊँ ॥ १०७ ॥  
 मातारा वचन मीठा सुणकानें । विपधर वज्ज कोपै जुं पयपानें । मनमाहे  
 कुंवर वैराग आणें । नवसागर माया काची सज्ज जाणें ॥ १०८ ॥ पूर्वले  
 नवमें उठो पुन्य कीधो । सांधानें फाडु अशान नवि दीधो । धीतराग  
 वचनें शांशोमें धरीयो । दरशण देवारो में नवि करियो ॥ १०९ ॥ सामा  
 यक पोशो अवसर नवि कीधो । साधारै मुखसैं शमकित नविलीधो ।  
 उठो पुण्य कारण इण नव अवतरीयो । नारी शिषरमणी मुऊने नवि वरि  
 यो ॥ ११० ॥ परवश जेती पर शेवा करणी । मातारी शीख मन माहे ध  
 रणी । एहवो विचारी आयो मन जंगै । नरपति ले वैठो आपण उठंगै ॥  
 ॥ १११ ॥ शाल कुमररी शोभा सराहैं । मुखडो देखीनें राजा ऊमाहैं । सुर  
 गारो वाशी सुरपति जुं ओपे । काया कुंवररी अधकीज उंपै ॥ ११२ ॥  
 मोटो महीपत मनमें विचारै । ए दीशै पुन्य एणसंसारै । माया घर मुंकी  
 महला मतवंती । काया कंचण जुं उत्तम दीपंती ॥ ११३ ॥ मांखणसम काया  
 कोमलठै इणरी । राग राखी नें राजा कर फेरी । कुमररी काया परसेवो व  
 लीयो । कर फरसै ततखिण मील पर घलीयो ॥ ११४ ॥ नद्रा तिण वेला राजा  
 प्रति जावै । सीख कुमरनें द्यो शज्जशाखै । जाये जनमंतर इण ९ काया ।  
 परसेवा करनें फरिस्थानज्ज पाया ॥ ११५ ॥ स्वच्छंदाचारी सुख माहे रहीयो  
 आगम राजरो आजमें कहीयो । ऊठै सिध्यासुं जोलो भावडियो । अवसर  
 राजरो इण नव लहीयो ॥ ११६ ॥ राजी होय राजा सीख समापी । रि  
 क्षी अविचल सालनें आपी । कठ पंजर बंधन सुं सुक छूटे । पलतो फिर  
 नावै वेगो तिण खूटे ॥ ११७ ॥ उत्तरी फांचलीये अहिसं जिमवासैं । पा  
 जे नवि जोये परहो ते नासैं । कुंवरजी चितरे उचाट वेठा । आवीने पोढ  
 एरीखाट जे सेंठा ॥ ११८ ॥ सज्ज धीया आवी शानमुख ऊनी । मुख सेती  
 उत्तर नवि दीर्घ मोनी । माहो माहि पूत्र महिला मन जोली । रीक्षाणो सा  
 हव ना रंगरोली ॥ ११९ ॥ दोय चार घमीयां परलीनें दोगो । नाहरे चित  
 सुं नेहमलो नीगो । सासू सुं बोझें सरम खोलीनें । मुलकंती अंचल मुख  
 ऊपर देन ॥ १२० ॥ रावलो जायो राजी नही आज । मन खांचीयो दी



सै सहीय आज । आप कुमरनै समजावो आप । गुण अवगुण गुनो  
 करावो माफ ॥ १२१ ॥ पूत पनोती पारकी जाई । बिन अवगुण कां ना  
 खो धसकाई । नेहडलै जीनी गुणवंती गोरी । तिणसेती कीजै कांइ चित  
 चोरी ॥ १२२ ॥ साता इतरा दिन ऊं नवि समधो । सुज करमी होइने सम  
 कित सही लखे । कायानै माया काची सज जाणी । गोरी ए दीसै डरग  
 त सहिनाणी ॥ १२३ ॥ माताजी मोनै अनुमति आपो । सदगुरु पस  
 वामे दिक्का समापो । रहि पूरे वेटा एहवो कांइ दाखै । शाइत जर नसै  
 हारै तो पाखै ॥ १२४ ॥ सुहणैही वेटा इसनो मति सोचे । वैत विचारी  
 जंडो आलोचे । जरमायै किरणै वेटा नवि जमीवै । आपणा घररो कांइ  
 नवि गमीवै ॥ १२५ ॥ सज वाते पूत तूतै सधीरो । वाई सुजद्रा तणै इक  
 बीरो । नान्हमीया तो विण हारै नवि सरसी । कुटंवरी सार वेटा कुणकर  
 सी ॥ १२६ ॥ कितराई वचन मोजीनै कहीया । मनमै कुमरै ते नवि र  
 हीया । जीनो रंग चोल जगवंत धर्मै । मायारा जाल मूक्या सुज कर्म ॥  
 ॥ १२७ ॥ हठकर माता हठ करी राखै । तपस्या चरित्र नजुवै तो पाखै  
 हल फलीयो द्विषणं वालक बुध करिनै । सही ऊं जासुं जव सागर तरिनै  
 ॥ १२८ ॥ पंडित ऊइने वेटा सुणि वात । ऊं जानुं ताहरी सगली  
 अंगधात । तो सेती चरित्र न पलै तिलमात । सुणरे वेटातुं वातरी वात ॥  
 ॥ १२९ ॥ माता ए जांएयो ऊकम करि राखुं । दिन दस आमा जिम ति  
 मऊं नाखुं । इतरामें इणरी बुद्धी फिरजासी । ललचाणो कामणि लोनी  
 योथासी ॥ १३० ॥ पोतारी काया पहिली वसि कांजे । कामणि एकेकी दिन  
 प्रति ठोमीजै । वसि करि इंद्री घर बांस वसीजै । करि तपस्यानै काया वसि  
 कीजै ॥ १३१ ॥ सूधी सुण वात हियकामे धारे । कामणि एकेकी दिन  
 प्रतिवारै । निरलोनी ऊइने लूखो मन राखे । चितसेती वेगो चरित्र रस  
 चाखै ॥ १३२ ॥ सातमें दिन संजचारी वेला । धनोजी धर्मी आवै एकेला ।  
 सालानें सीख दें इम ज्ञाखै । ऊंनो तूसोच इवडो कांइ राखै ॥ १३३ ॥  
 थिर मन करिनै चालोथे आगै । पूठ पूरव सुं ऊं मन रागै । आपे मिल  
 दोऊं करणी आदरस्यां । वेगा जव सायर पार उतरस्यां ॥ १३४ ॥  
 एक मन दोनुं होइ नीसरीया । सिंह पाखरीया जाणै केशरिया । सांजल स्वा

मोरी देशना सुधी । समजा मन माहे तुरत सुबुद्धी ॥ १३५ ॥ आयाघर पू  
ठा आग्या ते मांगै । लुलि २ मातानें पाए ते लागै । वंधन संकट सुं माता  
मुंकावो । कल्याण माहरो कोई जो चावो ॥ १३६ ॥ कुडो कथन अव कीजै  
नवि माता । महावीर वचनें अहो रंग राता । चारधिया होसां चित्तमाहे  
चोंका । धर्म करणी करनें ठोमां नव धोका ॥ १३७ ॥ आजूणा वचन नद्रा  
ते आवै । संजम लेसी ए सहू साखै । आमी अंतराय ऊंस्यानें होऊं । व  
हिनोई सालो वतलो थे दोऊं ॥ १३८ ॥ सामग्री मेले सऊ साथे आ  
वै । गीत गुणवंती गुण वऊ गावै । ढोल नगारा ढमके वजावै ।  
प्रह ऊठी दरशण इण विधि पावै ॥ १३९ ॥ इरियावहि पडिकम पाप  
आलोवै । मेल करमरा लांगा सवधोवै । महावीर स्वामी माथे कर दीधा  
साल धनारा कारज सऊं सीधा ॥ १४० ॥ जोलामण देई नद्रा घरि  
आवै । सुज सति देनें गोखां समजावै । तिन दिन सेती तपस्या ते साधे ।  
मास खमणादिक करे मन वाधे ॥ १४१ ॥ करमांरी गोठ काटे वेजाई ।  
किरीयारी कमणा राखे नही काई । अणसण करीनें आऊखो पावै । सर्वा  
रथ सिधे घासो सुख पावै ॥ १४२ ॥ महाविदेह मानव नव लहिंसी ।  
करणी कर अठि करम ते दहसी । सुपसा ए दान सऊ कारज सरसी । सालो  
वहिनोई दोनुं शिव वरसी ॥ १४३ ॥ शालनद्र धनो साधु कहाया । प्रहसम  
ऊठे प्रणमुं ते पाया । गुण तिणारा नवि जन गाया । मन सुध समखां मुक्ति  
दे माया ॥ १४४ ॥ मुंहता महाजन मोटा मति धारी । देवी घर दीपे गांव  
गुण कारी । मोठी महमाई ध्यान विराजै । ठाया तिणरी इधकी ते ठाजै ॥  
॥ १४५ ॥ संवत सतरै इक्यासी वरसै । चौमासौ कीधो चितचूंप हरखै । खे  
मकीरतरी साख सवाई । तिणरा संतानिक वाचक वरदाई ॥ १४६ ॥ सो  
म हरखनामै श्रमण कहीजै । लक्ष्मी समुद्र पाटे स लहीजै । गणी कनक  
प्रिय गुरु सुपसाया । गुण तिणरा में सिंहा मुनि गाया ॥ १४७ ॥ इति ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री शान्तिजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सारद मात नमुं शिरनामी । ऊंगाउं त्रिजुवनके स्वामी । शान्तिज  
शान्ति जपै सवकोई । त्यां घर शान्ति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शान्ति जपीनें  
कीजै कामा । सोही काम ऊवै अन्निरामा । शान्ति जपी परदेश सिधावै । ते

कुशले कमला लेई आवै ॥ २ ॥ गरज थकी प्रजु मार निवारी । शांतिज  
 नाम दियो महतारी । जेनर शांतितणा गुण गावै । रिद्धि अचिंती जेनर  
 पावे ॥ ३ ॥ ज्यांनरकों प्रजुशांति सहाई । त्यां नरकों काई आरत नाई । जो  
 कठु वंठे सोई पूरे । दालिद्र डष्ट मिथ्या मति चूरै ॥ ४ ॥ अलख निरंजन  
 जोत प्रकाशी । घट घट जीतरके प्रजु वासी । स्वामि स्वरूप कस्यो नहिं  
 जावै । कहतां मोमन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मारदिये सबही हथियारा ।  
 जीता मोहतणा दलसारा । नारतजी शिवसुं रंगराचे । राजतजी पिण सा-  
 हिवं साचे ॥ ६ ॥ महाबल वंतज कहिये देवा । कायर कुंथुन एक हणेवा ।  
 रुद्रिसयल प्रजु पाश कहीजे । जिह्वा आहारी नाम जणीजै ॥ ७ ॥ निं  
 दक पूजक है समजायक । पिण सेवकही कों है सुखदायक । तज्यो परित्र  
 हतें जगनायक । नाम अतीत सेवे विधलायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र समचित  
 जणीजै । नामदेव अरिहंत जणीजै । सयलजीव हितवंत कहीजै । सेवक  
 जाण महापद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा । दोष नही इक मां  
 ह सरीरा । मेरुअचल जिम अंतर जामी । पिण न रहै प्रजु एकण ठामी ॥  
 १० ॥ लोक कहै जिनजी सज्ज देखे । पिण सुपनो कवज नविपेखे । री  
 सविना बावीश परीसह । सेन्याजीती ते जगदीसह ॥ ११ ॥ मानं विना  
 जग आण मनायो । माया विना सबसुं लय लाई । लोचन विना गुण राशि  
 ग्रहीजै । जिहु जण त्रिगमो सेवीजै । निग्रंथपणें शिर ठव धरावै । नाम  
 जती पिण चवर ढोलावै । अन्नयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र च  
 लै अरिद्वारण ॥ १२ ॥ श्री जिनराज दयाल जणीजै । करम सेवे कोही  
 मूलखणीजै । चोवीह संघज तीरथ थापै । लह्वघणी देखै प्रजु आपै ॥ १३ ॥  
 विनयवंत जगवंत कहावै ॥ नांकाऊकों शीश नमावै । अकिंचनको विरुध  
 धरावै । सोपद पंकज आतम ठावै ॥ १४ ॥ तजतरुणी निज गुणकों ध्या  
 वै । शिवरमणीकों साथ चलावै । रागनही पिण सेवकों तारै । द्वेष नही नि  
 गुणा संगवारे ॥ १५ ॥ तेरी महमा अद नुत कहियै । तेरा गुणको पार  
 न लहियै । तूं प्रजु समरथ साहिव मेरा । ऊं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १६ ॥  
 तूरे त्रिलोक तणो प्रतिपाला । ऊंरे अनाथ अठुरे दयाला । तूं सरणांगत रा  
 खण धीरा । तूवल तारक है बडवीरा ॥ १७ ॥ तूही जिसो वम जागज

पायो । तो मेरो कामचड्योरे सवायो । करजोडी प्रभु वीनवुं तो सुं । करो  
रुपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारण वारो । जवसायरथी  
पारउतारो । सारंग ह्यणा पुर मंण सोहै । तिहां श्री शांति सदा मनमोहै  
॥ २० ॥ पदम सागर गुरु पाय पसाया । श्री गुण सागर के मन जाया । जे  
नरनारी इक चित्तगावै । ते मन वंछित शिवसुख पावै ॥ २१ ॥ ॥ ॥  
इति श्री शांतिजिन स्तवनं शान्तिकरणार्थ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ श्री दादाजी पूजा स्तवन संग्रह ॥ ॥

॥ ॥ सकल गुणगुरिष्ठान् सत्तपोजि वरिष्ठान् । शम, दमय मनुष्यांश्चा  
रुचारित्र निष्ठान् । निखिलं जगति पीठे दशितात्म प्रजावान् । मुनिप कुश  
लसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरि  
गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आवाहनं ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन  
कुशलसूरि अत्र तिष्ठ तः तः स्वाहा ॥ ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं  
श्री श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो जव वपट् ॥ ॥  
इति सन्निधि कारणं ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ( दूहा ) गंगाजल तिम नूवलवलि । तीर्थार्दक जरपूर । कल  
शमरी गुरु चरणपर । ढालै तस डखदूर ॥ १ ॥ ॥ ( ढाल ) देशी सूर  
ती महीनांनी ॥ ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसु कमलें पूर । खीरा  
दधि पंदधि ज्यौं उज्जल जल जरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर जरि कलश  
सनूर । गुरुचरणे जे ढालै ढालै डुरुतदूर ॥ १ ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन  
कुशल सूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्घंपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

## ॥ ॥ चंदन पूजा ॥ ॥

॥ ॥ वाचना चंदन अगर । घस केसर घन सार । चरचै जे गुरु  
चरणे । पांमें जै जैकार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ॥ मलयागर तिम अगर चं  
दन बलिकेसर सार । फस्तूरी अतिगंधै पूरी घस घनसार । कुशल सूरि  
गुरुचरणे घरचै चढतै जाव । सकल रोग तन सोग हरै बलि जमता जाय

॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चंदनं  
निर्वपामिते स्वाहा ॥ १ ॥ इति चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुष्पं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ केतकि चंपक फूलथी । पूजै जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदै  
झुवै । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ चंपक केतकि मरुवो  
दमन सेवती फूल । जाई जूई मोगरो मालती तेम नडूल । कमल गुलाब  
चंबेली बेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवै होवे जस ज्युं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥  
इति पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अक्षतं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण । खंडित नही विशाल । अक्षत गु  
रुचरणे ठवै । तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ सरल सुगंधित  
तंडुल उज्जल जल उत्पन्न । ज्युंवर मोती आजा झंती उज्जलवत्त । जलधोई  
ससमोई सोई अक्षत नव्य । स्वस्तिक कुशल वधावै पावै मंगल नव्य ॥ २ ॥  
॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः । अक्षतं निर्व  
पामि ते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति अक्षतपूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दीपं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर । वाती मौली सूत  
धर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ कंचन घटित जटित गति  
नानाविध नवरत्न । दीवी अतिकारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृतपूरी सस  
नूरी मौली वाती जोय । दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥  
॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्व  
पामि ते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति दीपपूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धूपं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावना चंदन अगर । सेल्लारस घनसार । धूपै जे गुरु धूपथी  
तस घर रिध बिसतार ॥ १ ॥ ( ढाल ) ॥ ❀ ॥ अगर चंदन सेल्लारस गम  
गमीलो मेल । कपूर काचरी बलि घनसारै मृगमद जेल । धूप अडंग करी

गुरु धूपै चढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पामै नव नव नित्त ॥ १ ॥ ❀ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेज्यः धूप निर्व्वपामिते  
 स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति धूपपूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैवेद्यं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साल दाख पकवान घन । व्यंजन नव नव जांत । नेवज गुरु  
 आगल ठवै । कुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ पेमा मगद  
 सेवइया लाडू मोतीचूर । खाजा ताजा लापसी दोगने घृतपूर । पिस्ता  
 दाख विदाम बुहारा पिंडखजूर । गुरुचरणे जे ढोवै जोग लहै नरपूर ॥ २ ॥  
 ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेज्यः नैवेद्यं निर्व्व  
 पामिते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फलं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीफल शीताफल सदा । फल पूंगीफल लेय । ढोवै जे गुरु  
 चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ श्रीफल शी  
 ताफल नारंगी दामम दाख । खरबूजा तरबूज जंजेरी पाकी साख । करुणा  
 कबला केला नीबू फनस सफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामै श्रीका  
 र ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेज्यः । फलं  
 निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अर्घ्यं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ फलश) दूहा ॥ ❀ ॥ इम जिन कुशल सुरिदने । पूजै  
 अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजै । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ नद्वारक  
 खरतर गवै । श्रीजिन लाजसुरिद । रत्नराजमुनि नमरपर । सेवै पद अरवि  
 द ॥ २ ॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यान सार बुद्धिमंद । श्रीसदगुरु पूजा  
 रची । सोधोकविजन वंद ॥ ३ ॥ ❀ ॥  
 इति श्रीजिनकुशल सुगुरूणां अष्ट प्रकारी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रवल डफ़ूत दाघ निवारया ।  
 सकल मङ्गल वंशित दायक । कुशल सूरि गुरोश्वरणांयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं

श्री श्रीजिन कुशल सूरिः । चरण कमलेभ्यो जलं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाड्यरुजा तप हारिणा ।  
सकल ॥ १ ॥ नैऋती श्री श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चं ॥

॥ ❀ ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हत पट् पद वृंदकैः ॥  
सकल ॥ ३ ॥ नैऋती श्री श्री जिन कुशल सूरि गुरुः ॥ पुष्पं यया ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरल तंडुल कैरित निर्मलैः । प्रवर मोक्तिक पुंजवडुज्वलैः ।  
सकल मङ्गल ॥ नैऋती श्री ॥ अक्षतं यया महे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वज्र विधौ श्वरुनिर्वटकेय कैः । प्रवर मोदक पुंज सु खर्जकैः ।  
सकल मङ्गल ॥ नैऋती श्री ॥ नैवेद्यं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दीप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अति सुदीप्तमयै खलु दीपकैः । विमल कंचन ज्ञाजन संस्थिते ।  
सकल मङ्गल ॥ नैऋती श्री ॥ दीपं यया महे स्वाहा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै । प्रसरिता खिल दिक्षु सुधुम्भकैः ।  
सकल मङ्गल ॥ नैऋती श्री ॥ धूपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पनशमोच सदा फलकर्कटैः । सुसुखदैः किल श्रीफल चिर्नटैः ।  
सकल मङ्गल ॥ नैऋती श्री ॥ फलं यया महे स्वाहाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलैः । श्वरु प्रदीपक धूप फलादिभिः ।  
सकल ॥ नैऋती श्री श्रीजिन कुशल सूरि ॥ अर्घ्यं स्वाहा ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सद्गुरूणां आरती लिपि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै । डखदोहग सब दूर हरीजै ।  
(जैजै सद्गुरु आरती कीजै) । श्रीजिन कुशल सूरि समरीजै । (जै जै ॥)

॥ १ ॥ बीजी बीज पमंती धारा । जयवारण तूंदी सुखकारा ( जै० ) ॥  
 २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी । दूर हरो सब डमंति मेरी ( जै० ) ॥ ३ ॥  
 चौथी मुगलपूत जिय दायक । सुखर झकम धरै ज्युं पायक ॥ ( जै० ) ॥  
 ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी । संघ सकलनो संकट वारी ॥ ( जै० ) ॥  
 ५ ॥ ठी थांजो वज्र विदारी । विद्या पोथी परगट कारी ॥ ( जै० ) ॥  
 ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी । सूरमंत्र सुरन आराधी ॥ ( जै० ) ॥  
 ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै । मनवंति संपति फल लीजै ॥ ( जै० ) ॥  
 ८ ॥ जैन लान्न खरतर गणधारी । सदगुरु चरण कमल बलिहारी ॥  
 ( जै० ) ॥ ९ ॥ इति श्री दादाजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ श्रीदादाजीको स्तवन लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ विलशैऋद्धि समृद्धि मिली । शुनयोगै पुण्यदशा सफली । जि  
 न कुशलसूरि गुरु अतुल बली । मनवंति आपै दादो रङ्गरली ॥ १ ॥ मङ्गल  
 लील समे विपुला । नव नवय महोन्नव राजयला । सुपसायै गुरु चढतीक  
 ला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायै सबला । सद  
 वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बज्जला । किछोल करै मंदिर क  
 मला ॥ ३ ॥ बीजै चमर निसाण धुरै । नरवै दरवार खमा पुहरै । जय जय  
 फरजोडी उचरै । सांनिध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पांन  
 सदा । डखरोग डकाल न होय कदा । अविचल ऊलट अंग मुदा । गुरु  
 कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ धम धम मादल नाद घुमें । वत्तीसे नाटक  
 रङ्ग रमें । प्रगत्यो पुण्य प्रताप हमें । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥  
 तन सुख मन सुख चीर तने । पहिरै बेलाउल होय रने । ध्यावो कुसल गु  
 रु एक मनै । जूनक सुरमंदिर जरै धने ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आ  
 वै । करि स्यामघटा मेह बरसावै । तिसीयां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रि  
 जग सुजस गावै ॥ ८ ॥ लहिखां जल कछोल करै । प्रवहण नवसायर  
 मझिरै । बूमंता बाहण जे समरै । ते आपद निश्रै सुं उवरै ॥ ९ ॥ खम  
 खम खमग प्रहार बहै । सोदामनि जिम सम सेल सहै । कुशल २ गुरुनाम  
 कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥ १० ॥ धुंन सकल परचापरै । श्री  
 नागपुरै संकट चूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥



बारमपुर बाने सुधरै । खंजाइतपुर विक्रम नयरै । जिणचंद सूरि पाटै पवरे ।  
 जसु कीरति महिमंडल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम दक्षिण आगै ।  
 उत्तर गुरु दीपै सौजागै । दह दिशि जन सेवा मांगै । श्रीखरतर गह्वनी म  
 हिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद ठामै । गाईजै कुशल नयर गामै ।  
 पूजै जे नर हितकामै । ते चक्रवर्ति पदवीपामै ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि  
 साखै । सेवकजननै सुखिया राखै । समस्यां गुरुदरसण दाखै । श्रीसाधु कीर  
 त पाठक ज्ञाखै ॥ विल० ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री जिन दत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिन दत्तसूरि । बंदिसु खर  
 तर गढरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । वत्तीसै जसु  
 जन्म । बाणिग मंत्रि पिता जणण । बाह्मि देव सुरम्भ ॥ २ ॥ इकतालै  
 जिणवइ गहिय । गुणहत्तरै जसु पाट । वइसाखां वदि ठठि दिन । पइ  
 प्रणमै सुरथाट ॥ ३ ॥ अंबन सावइ करलिहिय । सोवन अक्षर अंब ।  
 जुगप्रधान जगपयमियोए । सिरि सोहै पमि बिंब ॥ ४ ॥ जिण चनुसठि  
 जोगिण जणिय । खित्तपाल बावन । साइण माइण विज्जुलिय । पुहविह  
 नामनयन ॥ ५ ॥ सूरिमंत वलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावइ  
 साविय लकख इग । पमि वोहिय जिण बिंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि  
 डुढदल । चनुविह देव निकाय । आण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमै नर  
 राय ॥ ७ ॥ संवत वार इग्यारसमै । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारसि आसा  
 ठ सुदि । सगपत्तन सुह जाण ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिन  
 दत्त मुणिंद । विवहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ ❀ ॥  
 इति श्री जिनदत्त सूरि ज्यष्टकं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रिसह जिणैसर सोजयो । मंगलकेलि निवास । वासव बंदिय  
 पय कमल । जगसङ्ग पूरै आस ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( चौपई ) ॥ ❀ ॥ चंदकुलं  
 वर पूनिम चंद । बंदो श्री जिन कुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम नि  
 वास । जो समरै तसुपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गाम । धण कण  
 कंचण अति अनिराम । जिहां वसै जिल्हागर मंत्र । जैतसिरी तसु धरणी

कलत्र ॥ ३ ॥ जस तेरैसैं तीसैं जन्म । सैतालै सिर संयम रश्म । पाटण  
सतहत्तरै जसु पाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ जूममल सरगै पा  
याल । अचिराचिरजुग इण कलिकाल । प्रजु प्रताप नविमानै सोय । मै  
नविनयणे दावो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहै धन धन सुवन्न । पुनहीण पांमैं  
बंज पुन । असुखी पांमैं सुखसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥  
प्रजु समरण आपद सज्ज ठलै । सयल सांति सुखसंपत्ति मिले । आधि व्याधी  
चिंता संताप । ते ठनी नवि मैमै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां ।  
प्रजु दरसन उत्कंठा जिहां । सेवतां सुरतरुनी ठांहि । निश्चै दालिद्र मेढै वांहि  
॥ ८ ॥ विस हर विस नर विस नरनाह । जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह । प्रजु नामैं  
जे नकरै पीन । जाजै जावठ जव जय जीड ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासै  
दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटी पंमिंत थाय । प्रजुपसाय डल ड  
रिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अठै जव सा  
यर पोत । सो सदगुरु मै जेव्यौ आज । रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥  
( ढाल ) आज घर अंगण सुरतरु फलियो । चिंतामणि कर कमलै मिलि  
यौ । उद्यो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धने गिणियौ । जुगपव  
रागम जोमैं थुणियौ । चंद्रगड महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी  
पतिसेवा । कांई मनावो देवी देवा । चिंता आणो कांई मने ॥ १४ ॥ बार  
बार ए कवत जणीजै । श्रीजिन कुशलसूरि समरीजै । सरै काज आयास वि  
णे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै । मुलक वाहणपुरमें मन हरसै ।  
अजिय जिणैसर वरजवणैं ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन  
हरण सज्ज पाप निवारण । कोई मत संसो धरो मने ॥ १७ ॥ जिम ५ से  
धै सुर नर राया । श्रीजिन कुशल मुनीसर पाया । जयसागर उवझाय थुणे ॥  
१८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अजिनंदै । क्वि समृद्धै सो चिरनंदै । मन  
बंक्ति फलमुक्त जवो ए ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति विचारगर्जित स्तो ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ श्रीजिन कुशल सूरिजीको ठंढ लि ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ समरुं माता सरसती । कुमारी करजोड । कवि माता कवियण  
तणा । पूरैं बंठित कोड ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु । दायक बंठित

देव । अहनिसि तो उलंग करै । सुर नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर पढ़ए गांमैं  
 प्रगट । जग सगलै जस वास । पुरावदी तौ पालियै । वसैसु दादो वास  
 ॥ ६ ॥ ( उंद मोतीदांम ) ॥ दादो वासदियै दौलत । वधै ठव ठाया सेवक  
 वित्त । वधारै मांम दिसो दिसवान । धरै इक चित्त जिके गुरुध्यान ॥  
 ॥ ४ ॥ पूनम पूनम पूजै पाय । नवा नवा नैवज बार निपाय । चंपाबलि  
 केतकि फूल चरच्च । अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै घरि सुंदर  
 लछि अठेह । सऊंती सोल वधंती नेह । लहै घर नारी लोयण वाण । ल  
 है घरपूत सपूत सुजाण ॥ ६ ॥ लहै नलगांम सुगांम नूवाल । लहै ढिग  
 मीत नला ढीचाल । लहै घर मंदिर घोडा जोमि । लहै नट सेव करै कर  
 जोडि ॥ ७ ॥ लहै घर मंगल मद्द मसत्त । लहै घर चीर अनोपम सत्त ।  
 लहै घर साजण हल्ल किलोल । लहै नितलीला ठका ठोल ॥ ८ ॥ लहै  
 घरकुरदा कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर । लहै मनवंछित भोग वि  
 शाल । लहै घर साल कचोला थाल ॥ ९ ॥ घुरै नित गीत तणा गह गढ  
 नणे नित जय २ चारण नट । फलै पूत सपूतां बांछि फलंति । विठोहा  
 वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेकानेक विरुद्ध अपार । दीगो इक का  
 लहां तूं दातार । जीहां सहस्स ऊवै जो मुख । कऊं इक जीहां केई रु  
 क्ख ॥ ११ ॥ वमा विरुद्ध ताहरा विख्यात । नर नारी सऊं आवै जात ।  
 गुणै कर गिरुवो समुद्र सरीस । कस्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ ( दूहा )  
 रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिलार । कहीयो जगमें कुसल गुरु  
 खरतर गठ सिणगार ॥ १३ ॥ ( उंद नाराच ) सिणगार हार सोहए । सुकांमधे  
 नु दोहए । धरंत ध्यान जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो  
 देरानुरै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंन जागतो । सुदिठ संघ सावतो ॥  
 ॥ १५ ॥ मुलतान मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हरै फतै पुरै ।  
 गुरू सदा उदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थान मूलगो । एकांत चित्त उलंगो ।  
 वीकांण वान वाधतो । सुथान थान सावतो ॥ १७ ॥ प्रजावना रिणीपुरै । नीसा  
 ण वाजता घुरै । नागोर नाम दीपतो । दाणव देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण  
 तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेमतै सही । अपार लछी जां लही  
 ॥ १९ ॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर डक्ख चूरतो । कला अनेक आगरै । ठ्ठीस

नतूत्रै ॥ २० ॥ दादारी करंत सेव । हिंडुआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा  
नेर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरशरै अनेक । राखतो जु ठेमै टेक  
मात्रपुरै मझिमान । खान खान सेवै थान ॥ २२ ॥ ब्राह्मणपुरै राजरीत । जे  
तारणै जगत्रजीत । सोऊत सुख सदयं । वेनातटै विरुदयं ॥ २३ ॥ खे  
जमलै खरो सदा । बांहरु-मेरु संपदा । जोधाण जुग जातरा । जुमंत  
देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिममरी । करंत नृत्य अमरी । जालोर जैत  
सिंघरी । खंजायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट आप पाठणै । सूरत सुक्ख  
सांघणै । अनन्त तेज अहम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर जु  
ऊ सासतो । तुरत शत्रु वासतो । उदैपुरै जु इमरै । सेत्रावे कोटले गुरै ॥ २७ ॥  
गुरु सदा उदो करै । एकांत ध्यान जो धरै । जमंत जाण जेतली । कीरत  
कोम तेतली ॥ २८ ॥ (दूहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समखां होय  
हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारै सूर ॥ २९ ॥ (कलश) सूर  
तेज जिम नूर । दूर आपद जय टालै । माधीतां ज्युं मयाकरी । सेवक नित  
प्रतिपालै । मनवैठित मावाप । कुशल गुरु कामित दाता । पूनिम पूजै पा  
य । रहै जे ध्यान राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुंर । अन्नय सोम उन्नग  
करी । प्रगटियो थुन्न पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ३१ ॥ अथ श्री दादाजी वृक्षस्तवन ॥ ॥

॥ ३१ ॥ सद्गुरुजी थे सांजलो । श्रीजिन दत्त सुरीसहो । सेवकने सांनिध क  
रो । पूरो मनहजगीसहो ॥ १ ॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो) दोलतदो गुरु  
माहरा । थांदरा विरुद अनेकहो । तोसेव्यां संकट टलै । एहीज दादा ताहरी  
टेकहो ॥ २ ॥ दौणाजीती चांसठ जोगिणी । बसकीया बावन बीरहो । सिंध  
माहें तें साधीया । पंचनदी पंच पीरहो ॥ ३ ॥ दौणा पम्किमणां मांहे बीजली ।  
बलीय बली ऊत्र कायहो । थे मंत्री राखी तिका । तूठी वरदेजायहो ॥ ४ ॥  
दौणा उठव करतां उर्वेम । मूंओ मुगलरो पूतहो । जापकरी जीवामीयो ।  
संघ माहें राख्यो दादें सूतहो ॥ ५ ॥ दौणा वरु नगररे ब्राह्मण । देहरं ध  
री मृत्यु गायहो । पंच परमेष्टि विद्यावलै । पिसुण लगाया दादें पायहो ॥ ६ ॥  
दौणा विक्रम पुर ध्यापी मरी । तें दूरफीया सज्ज उखहो । परवार पिण पोतें  
कीयो । सज्जन दीधो दादें सुखहो ॥ ७ ॥ दौणा अंवन हाथे अखरें । थे

प्रगट्या तत खेवहो । जुग प्रधान जग तुं जयो । आखै अंविका देवहो ॥  
 ॥ ७ ॥ दो० ॥ थानो वज्र विदारन । पोथी परगट कीधहो । विद्या सोवन  
 अहरें । उज्जेणी मांहै लीधहो ॥ ८ ॥ दो० ॥ इम विरुद घणाठै ताहरा  
 कहितां नावै पारहो । जग संजोगै दादौ जेटीयो । अमवमीयां आधारहो ॥  
 ॥ १० ॥ दो० ॥ जुंठुं सेवक ताहरौ । थे आपो धनरिंहहो । जुवन कीरति सु  
 प सावलै । लाज नदै सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दो० ॥ इति श्री दादाजी गीतां ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनः ) राग जैतसरी ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ सहाई मेरै श्रीजिन कुशल गुरु ॥ कुशल करण कलि मांहै प्रग  
 व्यो । खरतर गह्वरू ( स० ) वावनो चंदन मृगमद मेली । पूजो प्रेमजरू ॥  
 ( स० ) ॥ २ ॥ चिंता चूरण विघ्न विमारण । दालिद्र दूर हरू ॥ ( स० )  
 ॥ ३ ॥ दिन दिन साहिव चढितै वानें । ध्यावो ग्यान धरू ( स० ) वाजै  
 जेहना जशना वाजा । ठावी ठामै जरू ॥ ( स० ) ॥ ४ ॥ संवत् अ  
 ढार समें अमसवै । मिगसर मास थिरू ( स० ) संघ सहित श्री सदगुरु  
 जेठे । श्रीजिन हर्ष सरू ॥ ( स० ) ॥ ५ ॥ गांव गडालै चरण नमंता ।  
 तूगो कल्पतरू ( स० ) पाठक श्रीविद्याहेम गणीनै । नदय रतन करू ॥  
 ( स० ) ॥ ६ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( पुनः ) देशीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ ( दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशण सदा देवो ।  
 दादौ दीनदयाल सदा दाता । दादो समस्यां आपै सुखसाता । दादौ जगना  
 यक जगगुरु आता ( दा० ) ॥ २ ॥ दादो परचा जगसगलै पूरै । दादौ  
 सेवकना संकट चूरै । दादौ डरित हरै सज्जनी दूरै ॥ ( दा० ) ॥ ३ ॥ दादा  
 अलगांथी जात्री आवै । दादौ देखीनै ते सुख पावै । ह्वारा दादाजीनी जोडै  
 कोई नावै ( दा० ) ॥ ४ ॥ दादौ राज नगर मांहै राजै । जिहां सुजश  
 नगारा नितवाजै । दादौ ठेगालां सेहर ठाजै ॥ ५ ॥ ( दा० ) दादा घस केशर  
 सूकम घोली । हाथे लेई सोवन कचोली । पूजो दादाजीनै मिल १ टोली  
 ( दा० ) ॥ ६ ॥ दादौ आरतियां आरति ठालै । दादौ सेवगजननै प्रति  
 पालै । दादौ जिनशासन नित नजवालै ॥ ७ ॥ ( दा० ) दादौ महिमावंत  
 महाराजा । दादौ राजै खरतर गह्वराजा । दादौ समस्यां सफल करै काजा

( दा० ) ॥ ७ ॥ दादौ कुसल सुख सुखिंद वज्रगुण धारी । दादौ परतिख सुख  
तरु अवतारी । जाऊं दादाजीनी ऊं बलिहारी ॥ ७ ॥ ( दा० ) दादौ श्री  
जिन चंद सुखिंद पाटै । दादौ गाजै गुणियण गहगाटै । जसु थान सोहै  
जगधिर थाटै ( दा० ) ॥ ८ ॥ दादा महिर निजर मुऊ परिकरियै । दा  
दा आरतिपीमा डख हरियै । दादा जिम जग जय कमलावरियै ( दा० )  
॥ ९ ॥ दादा सेवगनें सांनिध करज्यो । दादा डसमणनें दूर हरज्यो । जि  
एचंदना मन बंठित फलज्यो ( दा० ) ॥ १० ॥ इति दादाजी स्तवनं ॥

### ॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( आपाटै चैरु आवै इस चालमें ) । गाजै जिन कुशल गमा  
लै । सेवकनां संकट ठालैहो गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै । सेव  
कनी चिंता चूरै हो ( गा० ) ॥ २ ॥ उतरी नितरी ठविठाजै । विचमें थि  
र-थुंन विराजै हो ( गा० ) ॥ ३ ॥ फुल्लरे यात्री मिल आवै । दादौ जी  
दीगं सुखपावै हो ( गा० ) ॥ ४ ॥ केशर घस जरिय कचोली । मांहें य  
लि मृगमद घोली हो ( गा० ) ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली । गावो गुण  
गीत रसाली हो ( गा० ) ॥ ६ ॥ दादौजी डखियां सुख देवै । निरधनियां  
नित धन देवै हो ( गा० ) ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति वज्रला । गुरु  
नामैं पामैं कमला हो ( गा० ) ॥ ८ ॥ सकजासुत सुंदर नारी । पामैं परि  
कर सुखकारी हो ( गा० ) ॥ ९ ॥ अलगांधी रोगं गमावै । गुरु पज्यां वं  
न्ति पावै हो ( गा० ) ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी । तिणवैला ज  
लधर आणी हो ( गा० ) ॥ ११ ॥ ग्रहगोचर जोर जंजालै । पीमा ऊवै  
आलै मालै हो ( गा० ) ॥ १२ ॥ वाजै जगजशना वाजा । राजै खरतरग  
छ राजा हो ( गा० ) ॥ १३ ॥ जसु जैत सिरी वरमाता । जिल्हागर मं  
त्रि विख्याता हो ( गा० ) ॥ १४ ॥ संवत सतरैसै इक्यासी । काती पूनि  
म परकासी हो ( गा० ) ॥ १५ ॥ सऊ संघ सहित सुबिलासै । अधिके  
हर हेत उल्हासै हो ( गा० ) ॥ १६ ॥ इम यात्र करी आणंदै । जिन  
नक्ति जती सर बंदै हो ( गा० ) ॥ १७ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

### ॥ ॐ ॥ पुनः ( राग धन्यासरी ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आयो आयो जी समरंता दादो जी आया । संकट देख सेव

कं कुं सदगुरु । देरावरतें ध्यायो जी समरंतां ( दा० ) दादा वरसै मेहनें रात  
अंधेरी । वायपिण सबलौ वायौ । पंच नदी हम बैठे बेनी । दरीयै हो दा  
दा दरीयै चित्त करायो जी ॥ ( स० दा० ) ॥ २ ॥ दादा उब जणी पो  
हचावण आयो । खरतर संव सवायो । समय सुंदर कहै कुशल २ गुरु । प  
रमानन्द सुख पायो जी । समरंतां दादोजी आया ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ ( राग लझरी ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाया जक्तिसुं पूर रहोरे । डरजन सब दूरहोरे ( जा० ) मैरे  
मनमें जक्ति बैरागी । चित्त परणित लगनसुं लागी । मोरी जाग्यदसा अब  
जागी ॥ ( जीया हो ) ॥ ( जा० ) ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो ।  
गुरु चरणे चोक पुरावो । बलि अकृत धवल बधावो ( जीया हो ) ॥ ( जा० )  
॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई । गुरु नाम सदा सुखदाई । गुरु सेव्यां पाप  
पुलाई ( जीया हो ) ॥ ( जा० ) ॥ ३ ॥ घस केशर नरकै कचोली । मां  
है मृगमद कुंकम घोली । गुरु पूज रचो नरकोली ( जीया हो ) ॥ ( जा० )  
॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष सूरी सर राजा । बाजै जग जशना बाजा । सत्य  
रत्न करै सुज काजा ( जीया हो ) ॥ ( जा० ) ॥ ५ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ ❀ ॥ ( राग केरवो ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो नवि हितसुं ( कुश० ) केशर चंदन  
कपूर अरगजा । जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ ( कु० ) ॥ १ ॥ मोगरा  
लालगुलाव मालती । मनसुध माल करै नवि रुचिसुं ( कु० ) ॥ २ ॥ अशरण  
शरण परम गुरु सेवो । धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ॥ ( कु० ) ॥ ३ ॥  
सेवक जन प्रतिपाल जगत् गुरु । आसापुरै गुरु घणु दत्तसुं ॥ ( कु० ) ॥ ४ ॥  
ध्यान सुधारै ग्यानवधारै । रूप रंग देवै चित हित मतसुं ॥ ( कु० ) ॥ ५ ॥  
कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी । परतिख परचापूरै सतसुं ॥ ( कु० ) ॥ ६ ॥  
श्री जिनहर्ष सदा सुबिलासी । सत्यरतन सुख एही ठतसुं ॥ ( कु० ) ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ ( राग देवश्री चलत ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज करोरे उहाह । श्री जिनकुशल सुरिंद आगै । ( आ० )  
आ आगी बेलानै उ आगे दाव । इण आगी बेल कयूं करो लाज ॥ ( आ० )

॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग । हिल मिल गावो साजन संग (आ०)  
 धूप दीप करो नैवेद्य सार । फुल बारीनो नही जिहां पार ॥ (आ०) ॥ २ ॥  
 अकृत श्रीफल होवै जेह । पुत्र कलत्र-पांमें संपदा तेह ॥ (आ०) ॥ ३ ॥  
 सुर नर नारी कृपा करै जोड । कौण करै हारा दादाजीनी होड ॥ (आ०)  
 ॥ ४ ॥ श्रीखरतर गजपति सिरदार । राजा राणा सेवै इकतार ॥ (आ०)  
 ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंद गुरु गरीब निवाज  
 (आ०) ॥ ६ ॥ श्री जिन हर्ष करै उत्तरंग । सत्य रतन मन ग्यान उर्म  
 ग ॥ (आ०) ॥ ७ ॥ इति स्तवनम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( राग बंगालो घाटो ) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ मैं निरख्या गुरु महाराज । ठतीयां हर्षनरी (मैं०) अमल  
 अनंत गुण आगरूरे । समता रसनो धाम । परम परम परमात्मारे । बंठित  
 दायक स्वाम ॥ (ठ० मैं०) ॥ १ ॥ करुणा निध गुरु दोलतीरे । सेवक  
 जन प्रतिपाल । जविजन जैत जावसुरे । ल्यावै जर जर थाल ॥ (ठ०  
 मैं०) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकुमारे । जरीय कचोली हाथ । पदमण आवै  
 मलपतीरे । पूजै सहीधर साय ॥ (ठ० मैं०) ॥ ३ ॥ कुशल सुरीसर सा  
 हिवारे । श्रीजिनचंद सुरि पाट । बलिहारी जिन कुशलनीरे । गाजै घणुं गहि  
 गाट ॥ (ठ० मैं०) ॥ ४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करैरे । सुखसंपूरण सार । श्री  
 जिन हर्ष सूरि सरूरे । सत्यरतन सुखकार ॥ (ठ० मैं०) ॥ ५ ॥ ॥ ॥  
 इति स्तवनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( राग प्रभांती ) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । बारी जाउं गुरु राय चरणकी  
 (वा०) श्रीजिनदत्त सूरिसर सद्गुरु । सफल घमो सेवा चरणकी ॥ (वा)  
 ॥ १ ॥ प्रथम भंगल गुरुंरायकी सेवा । अशुच करम सब हरणकी ॥  
 (वा०) ॥ २ ॥ दालिद्रजंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी ॥  
 (वा०) ॥ ३ ॥ मोह नही पखाह अनेरी । शरनग्रही इन चरणकी ॥  
 (वा०) ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष तुम चरणां को दासा । आशापूरो सुख  
 करणकी ॥ (वा०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ॥ ॥



॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशलगुरु अव मोहि दरशण दीजै । ( अ० ) ऐसी ज्ञांति करो मेरे सदगुरु । ज्युं मन मूढपती जै ( कु० ) ॥ १ ॥ जलदातार विरुद्ध अमृत रस । श्रवण अंजलि जर पीजै । सुरतरु सम दरशण बिन देख्यां । कहो नयण किमरीजै ( कु० ) ॥ २ ॥ परमदयाल रूपाल रूपानिधि । इतनी अरज सुणीजै । परम जगत जिनराज तुमारो । अपनो कर जाणीजै ( कु० ) ॥ ३ ॥ इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु कुशल करो जरपूर । सेवक जन मन बंढित पूरण । समस्यां होय हजूर ( कु० ) ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण । असुख हरण नये दूर । संघ उदोकर सदगुरु मेरा । वीनवै श्रीजिन चंदसूर ( कु० ) ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ ( देशीकी चालमें ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गास्यां हे माय ( स० ) । श्रीफल जेट चढावस्यां । म्हेतो चरणारी पूज रचास्यां हे माय ( स० ) ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता । नगर बीकाणै राजै हेमाय । गांम गमालै दीपता । ज्यांरी महीयल महिमा ठाजै हे माय ( स० ) ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता । कुशल करण अवतारी हे माय । सुखदायक श्रीसंघनें । खरतर गढ अधिकारी हे माय ( स० ) ॥ ३ ॥ दूर देशांतर थी घणा । हिल मित्र यात्री आवै हे माय । लुल ९ सीस नमावता । संत सुजस मिल गावै हे माय ( स० ) ॥ ४ ॥ सऊ सिणगार मनोहेरू । ठम ९ पाय ठम कावै हे माय ( स० ) । तन मन प्राण लोनावती । गौरी मंगल गावै हे माय ( स० ) ॥ ५ ॥ विबुज्यां साजन मेलवै । अनमी पाय नमावै हे माय । मनरा मनोरथ परवै । पर बल लखमी ल्यावै हे माय ( स० ) ॥ ६ ॥ विषमी वेला वाठमै । समस्यां सांनिध आवै हे माय । झूखां जोजन मेलवै । तिसियां नीर मिलावै हे माय ( ७ ) यात्री आवै नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै गुण गहगाट हे माय ( स० ) ॥ ८ ॥ कुशल सूरिंद गुरु आगलै । जविमिल जावना जावै हे माय । चंदफतै मुनि

नित नमैं । परमानंद सुख पावै हे माय ( स० ) ॥ ए ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो सज्ज श्रीसंघ आसधरे । गुरु मौन गक्षां कहो केम सरे  
दरशण बहिलो सदगुरु दाखो । निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इ  
ह विपमी वेला आयवणी । केहवी करीयै तुमं अरज घणी । अलगावो तो  
वेगा आवो । हिव ढील घमी जर न करावो ॥ २ ॥ तूं सदगुरु खरतर गज  
साचो । कोई न जाणै तुमनं काचो । इण संफटमें आलस न करो । दा  
दा इशमणनै दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक पमी सदगुरु हमसुं । तो जिम  
कहिस्यो तिणपरि खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहश्चै पो  
तानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सज्ज मिलकर अठां लगे । पाठा किम  
जावां इणें पगे । इणपरि गुरु सुणीयै अरज इसी । हिव सबकां मेलो क  
रीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरिसर जगचावो । अपणावतकर वेगा  
आवो । अगला विरुद ते अजुवालो । परघल निज ठेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥  
गुणगाम गमालै एंगायो । सुणतां सदगुरु वेगो आयो । राजी ज्ञय सग  
ला रंगरली । जिनचंद्रनी आस्या संफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ ताल ठुमरी ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरु रायजी (सदा०)  
खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन२ वधैं सवाय जी (स०) ॥ १ ॥ स  
कजा सुत ऊर सुंदर नारी । सुज परिकर सुख दायजी (स०) । मित्र स  
मागम सुजशवधारण । नित प्रति हंरप उवाहजी (स०) ॥ २ ॥ राजा प  
रजा पायनमैं सहू । गुरु संमरण सुपसाय जी (स०) दोखी इशमण नृप  
ज्ञय पनियां । सदगुरु करय सहाय जी (स०) ॥ ३ ॥ विपमी विरियां सं  
कट पडियां । समस्त आबै धायजी (स०) जूखां जोजन तिशियां पाणी ।  
निरधनियां धनदाय जी (स०) ॥ ४ ॥ संघ सकलनैं द्यो सुख शाता ।  
जिम कीरत जग थाय जी (स०) । थांनक धिरता पर घल जोजन ।  
पग पग कुशल सहाय जी (स०) ॥ ५ ॥ अजय महा सुखदाई सद  
गुरु । नवनिधि वंरित थाय जी (स०) । सुमति सवाई नितवर संपद ।  
दान विशाल लहायजी (स०) ॥ ६ ॥ इति ० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिन कुशल सूरिंद गुरु सदा नमो (जि०) ॥ सुख संपत्ति रि  
द्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांई नमो ॥ जि० ॥ १ ॥ बाट घांट  
अरु विषमी विरयां । विघन बुराई दूर गमो ( जि० ) ॥ २ ॥ अह निशि नां  
म मंत्र उरधारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो ( जि० ) ॥ ३ ॥ इक मन ध्या  
वो बंठित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो ( जि० ) ॥ ४ ॥ अन्नय महा  
सुख संपत्ति पावो । सुथिर थानक थिति जमो जमो । ( जि० ) ॥ ५ ॥ इति

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ठवपती थारै पायनमें जी । सुर नर सारे सेव । ज्योति थारी ज  
ग जागती जी । डुनियामें परतिख देव ॥ १ ॥ झं तो मोहि रह्यो जी ह्मां  
रा राज । दादरै दरवार ( झं० ) केशर अंबर केवमो जी । करतूरी करपूर ।  
चांपो चंदन राय चंवेली । जक्ति करूं जरपूर ( झं० ) ॥ २ ॥ पांगुलियां  
नै पाव समापै । आंधलीयानें आंख । रूपहीणानें रूप देवै दादो । पंख ही  
णानें पांख ( झं० ) ॥ ३ ॥ चंदपाटोवर साहिवो जी । श्री जिनकुशल  
सूरिंद । आठ पोहर थाने उलगै जी । रंग घणै राजिंद ( झं० ) ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सदगुरु जी सुणों मोरी अरजी (स०) पहिली काम कीये बझ  
तेरे । अपणा विरुद विचारी । पल पल चूक परी सदगुरु जी । मैं मुत  
लवका गरजी ॥ ( स० ) ॥ १ ॥ ध्यान तुमारो कबझ न ध्यायो । पूजा क  
री नही तेरी । तोई सेवक बंठित पूछा । आही थारी मरजी ॥ (स०) ॥ २ ॥  
निश्चै सेती तुम गुण गावै । तुरत कटत डुख वेनी । जक्त उवार कहावत  
जगमें । ताहै करत झं अरजी (स०) ॥ ३ ॥ और देव कुं मैं नही ध्यानं  
शरण ग्रहीमें तेरी । दूर थकीमें जेटण आयो । विपत दिशा सब तरजी ॥  
(स०) ॥ ४ ॥ कुशल गुरुका मैं हूं सेवक । लोक जाणै सब कोई । कृमा  
रतनकी बीनती सुणकै । दरशण दीयो । सदगुरु जी ॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति

॥ ॐ ॥ होरीकी चालमें ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ होरी खेलो नेमसै धाय २ ( इस चालमें ) ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरुके चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरु करोरे  
सहाय । (सद०) बावन वीर अनै बलि चौसठ । जोगणि वसकीनी हर्ष  
लाय । विद्या पुस्तक सोवन अक्षर । थांजो वज्र विमार पाय (सद०) ॥  
॥ १ ॥ मुलतानमें पंच प्रीर महाबल । पंच नदी साधो चितलाय । इत्या  
दिक वज्र परचा पूरक । गुरु समस्यां सब डकख जाय (सद०) ॥ २ ॥  
गुरुके नामसें अमसिद्धि नव निधि । गुरु गुण गावो सबही धाय । श्रीजिन  
शौजाग्य सूरि सुगुरु पर । महिर करो गुरु सुख दाय (सद०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम श्यामसें कहियौ मोरी (इस चा०)

॥ ❀ ॥ गुरु पूज रचोरे सुग्यानी । जली दीयै नक्ति जरानी (गुरु०) श्री  
जिन कुशल सूरिसर साहिव । खरतर गज राजानी । देश देश में थानक  
गुरुका । सोना जग पहिचानी । सदा रवि तेज समानी (गुरु०) ॥ १ ॥ के  
शर चंदन मृगमद जेखी । चरणोंरी पूजरचानी । धूप दीप बलि आगल दोषी ।  
बज्रविध पुष्प चढानी । जला फल जेट वरानी । (गुरु०) ॥ २ ॥ बाट घाटमें  
परचा पूरक । हाजर होत सहानी । श्रीजिन शौजाग्य सूरिके साहिव ।  
बंक्ति काज करानी । सदा गुरु महिर लखानी (गुरु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रज्ञाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी । (कैसे०) मो  
कुं सबल जरोसा तेरा । चंदसूरि पटधारी । (कैसे०) ॥ १ ॥ तुम बिन और  
न कोई मेरे । या जंगमें हित कारी । मेरा जीवन हाथ तुमारे । देखो आप  
विचारी । (कैसे०) ॥ २ ॥ आगै तो केई बेर हमारी । चिंता दूर निवारी । अ  
बकी बिरियां जूल मती जावो । सदगुरु परउपगारी (कैसे०) ॥ ३ ॥ अबकै  
आप लाज गूजरकी । रखीयै गुरु जशधारी । मेरै कुशल सूरिंद गुरु तेरा ।  
वमा जरोसा जारी (कैसे०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रज्ञाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन कुशल सूरिसर साहिव । तुमदो पर उपगारी (श्री  
जि०) । खरतर गज नायक गुणलायक । जिनचंदसूरि पटधारी (श्री०)

॥ १ ॥ संत उधारण सुजश बधारण । जीड जंजन अति जारी । नाम तु  
मारो कुशल करण जग । वारी जानें वार हजारि ( श्री० ) ॥ २ ॥ जगव  
छल तुमही हो जगद्गुरु । करुणानिधि करतारी । कहै जिनचंद मेरेहो  
सदगुरु । हमहै शरण तुमारी ( श्री० ) ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ श्री गणधर गुरु कुशलसूरिंद कै । चरण कमल परिवारी ।  
( श्री० ) केशर चंदन अकृत कुंकुम । जलनर कंचन जारी । देवक आगे  
मंगल दीपक । फूल धरं फूल वारी । ( श्री० ) ॥ १ ॥ ऐसी जांति करुं  
विध पूजा । आनकै चित्त इकतारी । राज कहत मेरे परम गुरुकी । बेर  
बेर बलिहारी ( श्री० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ रेखता ॥ ॥

॥ ॥ कुशल गुरु देखकै दरसन । मेरा दिल होत है परसन । जग  
तमें या समो कोई । न देखा नयननर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंमलै ठाजै ।  
फरसतां पाप सज्ज जाजै । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लहि घरआवै  
॥ २ ॥ इकै मुख गुण कज्ज केता । मुजै विज्ञान नही एता । लालचंदकी  
अरज सुन दीजै । चरण की सरण मोहि दीजै ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ ( राग कहरवो ) ॥ ॥

॥ ॥ कुशल गुरु दरशण दीजै हो ( कु० ) खरतर गह्वपति कुशल  
सूरिंद गुरु । मुऊपर महिर धरीजै हो ( कु० ) ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद  
तुहारो । इतनी अरज सुणीजै हो ( कु० ) ॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दो  
खी डुशमण । ए सब दूर हरीजै हो ( कु० ) ॥ ३ ॥ खेम रतन सेवक कुं  
निस दिन । सदगुरु सानिध कीजै हो ( कु० ) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ वंशी हमारी दीजै ( इस चालमें ) पूजो नजोरे नाई । गुरु म  
हिमा योत सवाई ( पू० ) । मृगमद केशर चंदन अरचो । सुंदर पुष्प च  
ढाई ( पू० ) ॥ १ ॥ नविक जीव मिल गुरु गुण गावे । वाकै सदगुरु हो  
त सहाई । ( पू० ) ॥ ४ ॥ श्री जिन सौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे । निशि दिन

दर्प वधाई (पू०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ ( डाल ) ॥ मालण ल्यावै फुलमा- ( ए चाल ) ॥ ॥

॥ ॥ जुं तो अरज करुं करजोमनै जी । ह्यारी अरज सुणो महारा  
ज । ( सदगुरु ) विरुंद घण्टै राजराजी । सूरि सकल सिरताज ( स० )  
( सुनिजर जोय जो साहिवा ) । थारै रावल राणा राजबीजी । थारा पुनिम  
पूजै पाय ( स० ) ॥ १ ॥ केशर अरज कुंकुमांजी । कांई मृगमद रही म  
हिकाय ( स० ) ( सुनिजर जोय जो साहिवा ) ॥ २ ॥ थारै घुमलारै आ  
गल घूवराजी । दुलत चमर गजदाल ( स० ) कारण सेवै कामनी जी ।  
कांई निरख करै जी निहाल ( स० ) ( सुनिजर० ) ॥ ३ ॥ थारी ठावी ठोमै  
थापना जी । कांई उदयापुर आवेर ( स० ) महिमा नली गुरु मेमतै जी  
कांई सालूमै वाली सांगानेर ॥ ( सदगुरु सु० ) ॥ ४ ॥ थारी ज्योति घणी  
गुरु किगमिमै जी । कांई बधती गढ बीकाण ( स० ) आशा पूरण आव  
ज्यो । धेतो देरावररा दीवाण ॥ ( स० सु० ) ॥ ५ ॥ ह्यारी बीनतमी नलै  
मानिज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल ( स० ) कुशल सदा कविराजरै ।  
कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ ( स० सु० ) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( लावणीकी चालमें ) ॥ ॥

॥ ॥ सदगुरुजी ह्यारा सरणै आथां की लज्या राखज्यो ( स० )  
पतित उधारण विरुद सुणीनै । आयो तुमरै पास । अब मनचंति पूरो माह  
रा । ए हीज दिलकी आश जी ॥ ( स० ) ॥ १ काम क्रोध मद लोभ तजी  
नै । तज दियो सब संसार । नवपदनो इक ध्यान धरीनै । पाया सज्ज गुण  
पार जी ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ देश देशमें थुंन विराजै । परचा जग विह्वलत ।  
इण कलु मांझै सुरतरु सरिखा । प्रगट रह्या सारुयात जी ॥ ( स० ) ॥ ३ ॥  
चिंतामणि और कामधेनु सम । माह्रै तुंदीज देव । आण धन शिर ताहरी  
( शिरै ) करुं तुमारी सेवजी ॥ ( स० ) ॥ ४ ॥ मात पिता बंधव तुं जगमें ।  
हितकारी गुरुराय । राजा राणा सज्ज जग मांझै । सेवै तुमरा पाय जी ॥  
( स० ) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण पसार्यै । सीधा वंजित काज । लक्ष्मी  
प्रधान नुमारा दरशण । मोहन गुणका राजजी ॥ ( स० ) ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ ॐ ॥ वधाई ( राग कहरवो ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ आजकी घडी हारै हरष वधाई । गुरु दरशण पायो सुखदाई  
 ( आ० ) ॥ १ ॥ गुरु जग नायक बंठित दायक । गुण गण लंकृत सज्ज  
 मन जाई ॥ ( आ० ) ॥ २ ॥ उत्तम धर्म प्रज्ञाव करीनै । जैनी कुलकी रीत  
 देखाई ॥ ( आ० ) ॥ ३ ॥ गुरु परतक सज्ज संघ सुखदायक । देश देशमें  
 प्रगट रहाई ॥ ( आ० ) ॥ ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै । सुर  
 तरु सम मिलियो फलदाई ॥ ( आ० ) ॥ ५ ॥ बंठित पूरण संकट चूरण ।  
 सज्ज जनि मात पिता वरदाई ॥ ( आ० ) ॥ ६ ॥ कलिकत्तापुर मंडन साहि  
 व । कुशल करो मोहन गुणदाई ॥ ( आ० ) ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वीरजीदीयेठै देशनारे । त्रिभुवन जन हितकाज । परपद वारनै  
 आगलेरे । जगजीवन हितकाज ॥ वी० १ ॥ प्रभू मुख पद्म मनोहरैरे । जि  
 हां बांणी मकरंद । जव्यमधुरतो लावथीरे । पांनकरै आनंद ॥ वी० २०२ ॥  
 अजर पणुं जगसंपजैरे । अमृतध्यान पसाय । प्रभू वचनामृत पांनथीरे । अ  
 जर अमर पद थाय ॥ वी० २०३ ॥ मधुर पणे मनमोहनीरे । अनुपम बांणि  
 उदार । सांजले जव्यलहै सहीरे । जिन परज्ञाव विचार ॥ वी० २०४ ॥  
 जिहां षट्द्रव्य विचारणारे । नय निक्षेप अजंग । चोविह धर्म प्ररूपणारे । स  
 तजंगी अतिचंग ॥ वी० २२५ ॥ शासननायक जिन वरुरे । अनुपम अमृत  
 धार । जलधर नी पर वरशतारे । जविचातिक हितकार ॥ वी० २०६ ॥ श्रीजिन  
 लाज पसायथीरे । जिन आतम हितजाण । वाचक अमृत धर्मनारे । शीश  
 जणै कल्याण ॥ वी० २०७ ॥ इति देशना ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ पुनः देशना लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ गुणनिधि श्री जिनचंद मुणिंदा । मुखसोहै पूनमचंदा । मोह्या सब  
 सुरनरवृंदा ॥ १ ॥ सुगुरु हारा देशना हिवदीजै । थारी देशना सुण मनरीजै ।  
 सु० ॥ दिनकर परकास सवायो । भूमंमल ऊपर ठायो । कमलादि सकल मन  
 जायो ॥ २ ॥ सु० ॥ बेलानल देव गंधार । बलि जैख राग मजार । गायन  
 गावै सुखकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पंचसवद गहिर ध्वनि गाजै । जिनवर घर

जालर वाजै । सज्ज सज्ज थया धर्म काजै ॥ सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पा  
ट पधारो । श्री संवना कारज सारो । मधुरै स्वर वचन उचारो ॥ सु० ॥  
५ ॥ सुण वीनती वचन विशेष । गुरु आपे धर्म उपदेश । टालो नविकोमि  
कलेश ॥ सु० ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी । उपदेश सुणों नविप्राणी । सुण  
तां मन अतिहि सुहाणी ॥ सु० ॥ ७ ॥ गुरुप्रतपौ ज्युं शशि सूर । दिन २ प्रति  
वधतै नूर । हरो संघ सकल डखदूर ॥ सु० ॥ ८ ॥ गोरीमल मंगल गावै । जर  
मोत्यांथाल वधावै । वा लावएय कमल सुख पावै ॥ सु० ॥ ९ ॥ ॥ ॥  
इति देशना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ वधावो ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ मृगापुत्र गोखै रतन जडावहो ( ए चाल ) ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ श्रीजिनचंद सूरीसरू । सुगुरु ह्यारा । श्री खरतर गठ रायहो । श्री  
जिनलान पाटो धरू । सुगुरुह्यारा । दिन २ सोन सवायहो ॥ १ ॥ ह्यारा सहजसो  
चागी । ह्यारा सुन गुणरागी । ह्याराहितधरू । सुगुरु ह्यारा देशनायो मनरंग  
हो । संघ सज्ज उठक थयो ॥ सु० ॥ सुणवा अमृत वाणहो । वहिला वंजित  
पूरहो ॥ सुगु० ॥ धेठो अवरसर जाणहो ॥ २ ॥ ह्यारा ० ॥ सूर किरण धर संचखा  
सु० ॥ विकस्या कमल कलापहो । राग विजास प्रमुख तणा ॥ सुगु० ॥ हो  
य रखा आलापहो ॥ ३ ॥ ह्यारा ० ॥ पंच सवद जालरतणा ॥ सु० ॥ मं  
गलनाद उचारहो । इम वज्ज विध भू मंमलै ॥ सु० ॥ वरत्या जय २ कार  
हो ॥ ह्यारा ॥ ४ ॥ संघसंकल जगतै करी ॥ सु० ॥ जौवै थारी बाटहो । नी  
चेपधारो गठ पति ॥ सु० ॥ थो दरसण गहगाटहो ॥ ह्यारा ० ॥ ५ ॥ तिण  
अवसर सिंघासणें ॥ सु० ॥ पांव धारै उलसंतहो । जलधरज्युं गहरैस्वरै ॥ सु०  
वांचै सुत्र सिंघांतहो ॥ ह्यारा ० ॥ ६ ॥ वज्जनविषण प्रति बूझवै ॥ सु०  
वयणसुधारस योग हो । उत्तम धरम प्रकाशता ॥ सु० ॥ टालै नव डख जोग  
हो ॥ ह्यारा ० ॥ ७ ॥ तेज तरुणी जिम दिन मण ॥ सु० ॥ गुण ठत्तीस निवा  
शहो । मोहन मुद्रा तुम तणी ॥ सु० ॥ निरख्यांमन उल्लासहो ॥ ह्यारा ० ॥ ८ ॥  
थेचिर जीवो गठ पति ॥ सु० ॥ राज करो इक आणहो । इम वौलै मुनि  
सुधसदा ॥ सु० ॥ वाणी क्षमा कल्याणहो ॥ ह्यारा ० ॥ ९ ॥ ॥ ॥  
इति दशना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



॥ ॐ ॥ पुनः देशना ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जात्रा निवाणू करीये ए चाल ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ एहवा सदगुरु बांदीयै । जविकजन (एहवा०) आपतरै अव  
 स्नकुं तारै । शरण तिहारी गहीयै ॥ १ ॥ जवि० ॥ जिमसारथ पति साथी  
 जनकुं । वंछित देशे बहीयै ॥ २ ॥ जवि० ॥ तिम सदगुरु अमृत उपदेशे ।  
 लहै जविक सुख कहीये ॥ ३ ॥ जविक० ॥ गोपसमा गुरु गुण नित धा  
 रै । राखै गोजन महीये ॥ जवि० ॥ ४ ॥ बलिनिर्यामक उंपमधारै । जिमनावि  
 क नौ तरीयै ॥ ५ ॥ ज० ॥ एक असंजम दोयविधि बंधन । त्रिविधि दंभ प  
 रिहरीयै ॥ जवि० ॥ ६ ॥ च्यार कषाय निवारक तारक । पंच महाव्रत ध  
 रीयै ॥ ज० ॥ ७ ॥ षट्काय रक्त महा जय जीपक । अशरण शरण  
 कहीजियै ॥ ज० ॥ ८ ॥ एहवा सदगुरु नी बलिहारी । शरण गृही निसतरी  
 यै ॥ जवि० ॥ ९ ॥ गौतमस्वामि समा मुनि उत्तम । सर्व जीव सम धरियै । ज  
 वि० ॥ १० ॥ रियकमल नितप्रति राखीजै । आनंद शिवपद लहीयै ॥ ज  
 वि० ए० ॥ ११ ॥ इति देशना ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ वधावो लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जवि तुहो वंदोरे शीतल जिन पतीरे ए चाल ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थ करूरे । वरधमान जिनराज । दरशण  
 जेहनोरे दरपण ज्युं दीपैरे । शोभत तेज समाज । (जवि जन वंदोरे भावै ग  
 ह पतीरे) ॥ १ ॥ तसु पट राजैरे सुधरम गण धरूरे । ज्ञाता द्वादश अंग  
 जंबू स्वामीरे शिष्य सोहामणोरे । चक्रद पूरव धरचंग ॥ २ ॥ जवि० ॥ प्र  
 जव सज्यंजव जगमें परगमारै । श्री जशोन्नद्र मुणिंद । श्री संनूतवि  
 जय नद्रबाहुजीरे । श्री धूलन्नद्र दिणंद ॥ ३ ॥ जवि० ॥ एम अनुक्रम दश पूर  
 व धरूरे । ज्वा वयर मुणीस । श्री जिनमत दीपायो नूतलेरे । सुर नर ना  
 मत सीस ॥ ४ ॥ जवि० ॥ तास परंपर चंद्रकुले नलारे । श्री कोटिक ग  
 ण धार । श्री उद्योतन सूरि सुहामणारे । वयरीसाख मऊार ॥ ५ ॥ ज  
 वि० ॥ वरधमान परमुख सिख्य जेहनारे । चार अशी परमाण । गठ चौ  
 राशी प्रगट्या त्यांथकीरे । जाणै चतुर सुजाण ॥ ६ ॥ जवि० ॥ ताससीस  
 जिनेश्वर सूरिजीरे । डुल्लज राय समह । खरतर विरुद लह्यो ते रूबनोरे । म

उपति जीतप्रतंक ॥ ७ ॥ जवि० ॥ नवअंगी वृत्ति कारक दीपतारे । श्री  
अनय देव सूरि राय । श्री जिनवल्लभ जिनदत्त गणपतीरे । श्री जिन  
कुशल अमाय ॥ ८ ॥ जवि० ॥ परम प्रभावक इण गणमें थयारे । आचारि  
ज गुणवंत । शुद्ध समाचारी जगतेहनीरे । सुणि हरखित होय संत ॥ ९ ॥  
जवि० ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमेरे । श्री जिनलाज सूरिशा । तास  
पंढोधर जगमां परगमारे । श्री जिनचंद मुणीश ॥ १० ॥ जवि० ॥  
तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणीरे । सोम्यपणें विजपति । गंजीर  
गुण सागरने जीतिपोरे । सुर सेवें दिन रति ॥ ११ ॥ जवि० ॥ स्या  
दुवाद जिन धर्म वखाणतारे । नय निक्षेप विचार । जंगपदारथ अति  
विस्तारसोरे । जापे जवि हितकार ॥ १२ ॥ जवि० ॥ ग्यान पूरव क्रि  
या साधें जलीरे । जिन वाणी अनुसार । एहनें सेवोरे क्युंनूला जमोरे ।  
धाय सफल अवतार ॥ १३ ॥ जवि० ॥ सुरतरु ठांसी वांवल आदरैरे । कोइ  
नर मूढ गिमार । ए उखाणो साचो मत करोरे । लहि एहवो गणधार ॥ १४ ॥  
जवि० ॥ नामधारक आचारजठे वणारे । पंचम काल मऊार । पिण इण  
सरिखो जगमा को नहीरे । स्व पर तारण द्वार ॥ १५ ॥ जवि० ॥ वाचक  
लावण्य कमल पसायधीरे । कमल सुंदरनी एवांण । जे मानसी ते सुख नित  
पामसीरे । पातिकनी करि हांण ॥ १६ ॥ जवि० ॥ इति वधावो ॥ ॥५॥

॥ १७ ॥ पुनः वधावो ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ श्रावण पावस ऋतयो (ए चाल) ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ मोतियमे मेहवरसीयो सखि । आजऊवो आणंद । पूजपधास्या  
बिहरता । नामें शौचाग्य सूरिंदरे । जिनहर्ष सूरिदनों नंदरे । सदगुरु सुरत  
रुनो कंदरे । मुखसोहें पूनमचंदरे ॥ सखि मोतीडें मेहण ॥ १ ॥ क्वांति गु  
णें करी सोजता । सखि पंच महावत धार । वर ठ्ठीस गुणें सदा । विचरै जे  
निरनीचारे । रशीया जे पर उपगाररे । उपशमरतना जंमाररे । पालें पंचा  
चाररे ॥ सखी मोतीण ॥ २ ॥ मेंवतणी पर गाजता । सखिमोती जेहनी वांण ।  
आपतरें परतारता । गुण गण रतनारी खाणरे । सज्ज आगमना जे जाणरे ।  
प्रतपे जिम जलदल जाणरे । जेहनो अतिशय विद्याणरे ॥ सखिमोण ॥ ३ ॥  
परतिव सुरतरु सारसा । सखि इण पंचम काल । साथे जेहनें शौजता । मु

नवर जिम मोतीमालरे । केई थिवरनें केई वालरे । बंदीजै तेह त्रिकालरे । स  
खि मोती० ॥ ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो । सखि खरतर गढ सिणगार ।  
जैन धरम दीपावता । महिमा जेहनी अणपाररे । सज्ज संघतणा सिरदाररे ।  
सखीसुमतितणा नरताररे । जेहनें प्रणमें नरनाररे ॥ सखि० ॥ ५ ॥ सुत्र अर  
थ विसतारता । सखि देता धर्मो पदेश । दान शीयल तप जावना । वारै जाव  
न सुविशेषरे । द्रव्यादिक अर्थ निशेषरे । गुण अरु पर्याय प्रदेशरे ॥ सखि० ॥  
६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना । सखि अमृत वचन विलास । कृणमे कर्म समूह  
नो । सखि निश्चै होवै नाशरे । आयै निजग्यान प्रकाशरे । कहै वाल सुगुरु  
सहवासरे । करतां निजरूप सुजापरे ॥ सखिमो० ॥ ७ ॥ इति वधावो ॥ ॥

॥ ॥ अथ गुहली लि० ॥ ॥

॥ ॥ नणदल बिंदलीदे ( ए चाल ) ॥ ॥

॥ ॥ जिनसाशन जयकारी । जगगुरु गोतम गणधारीरे । सहीयांगुह  
ली करो । गुहली करो गुरुसंगे । श्रुत जगति तएँ उतरंगेरे ॥ सही० ॥ विचरंतां  
मुनिराया । राजग्रही नगरी आयारे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी  
नवविध ब्रह्मव्रत धारीरे ॥ सही० ॥ चार कषाय कुं टाले । पंचमहाव्रत सूधा  
पालैरे ॥ सही० ॥ २ ॥ सेवै पंचाचार । धरै पंचसुमति मनुहाररे ॥ सही० ॥  
त्रिणगुप्ती बलि ठाजै । इम ठत्रीश गुणें गुरुसजैरे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण  
करण गुणसंगी । शुद्धातम अनुभव रंगीरे ॥ सही० ॥ उतसर्गने अपवादी ।  
बहु नयगम जंग प्रवादीरे ॥ सही० ॥ ४ ॥ मोक्ष मारग उपदेशी । धरे ध  
रम ध्यान शुद्धलेसीरे ॥ सही० ॥ ५ ॥ रत्नत्रय अज्यासी । नविजन चि  
तकमल विकाशीरे ॥ सही० ॥ ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै । गणधर बंदन  
शुद्ध जावैहे ॥ स० ॥ चेखणा स्वस्तिक पूर । मोहतिमर नरमनें चूरैरे ॥  
सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरु मुख बांणी । समकित निरमल करै शाणीरे ॥  
स० ॥ श्रुत सेवा जेकरस्ये । तेकीर्तिसागर पद वरस्यैरे ॥ सही० ॥ इति ॥

॥ ॥ अथ खरतर गढ शुद्ध समाचारी ॥ ॥

॥ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो ( तो ) प्रतिपदा १ का, पञ्च  
खाण व्रत । पिठली अमावस्या ( ३० ) तिथीको करै । ८ अष्टमी कम

हो ( तो ) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७ को करै । और ( जो ) १४ चौदस कम हो ( तो ) १४ का उपवास । अमावस ( वा ) पूनम को करै ( इस का कारण ) यह दोनुं तिथी समान है । ( जेसैं ) चौदस वंसी तिथि है । ( तेसैं ) अमावस पूनमजी चिरंतन पक्षीका दिन है । इसी सैं यह दो दिन वने है । यह दो दिन में उत्तम ज्ञव्यजीव यथाशक्ति पोशह पंक्तिमणा दि धर्मकृत्य करै । पारणें उत्तर पारणें धर्मका उद्योत करै । ( इहां विशेष कहते हैं ) इस समय में जैनी पत्रा प्रसिद्ध नहीं । मिथ्यात्वी के पत्रों सैं देखकै सब तिथी गिणनेमें आती है । ( और ) इस पत्रैका कुठ प्रमाण नही । हर कोई तिथि कम हो जाती है । इसीसैं ( जो ) चौदश कम हो ( तो ) उपवास ( तथा ) पक्षवी पंक्तिमण ( निस्संदेह ) पूनम १५ ( तथा ) अमावसकै दिन करै ( परंतु ) तेरश चौदश के वितत्यैकों न करै । और जो बेला करै । तथा हरी ठोहै ( तो ) यह दोनुं दिनमानें ॥५॥ ( अब ) कोई बेर संबहरी की ४ चौथ कम हो ( तो ) पंचमी ५ के दिन, संबहरी पंक्तिमण करै । ( परंतु ) तीज ३ के दिन कदापि कालै न करै ( और ) जो चौथ ४ दो होय ( तो ) पहली चौथ संबहरी करै । औरनी कोई तिथि दो होय ( तो ) पहली तिथि मान्यनी कहै । दूसरी लून तिथी रही । ( दूसरी यह प्रमाण है ) साठ ६ ० बड़ी की अखंड तिथी ठोमकै । घमी अथ घमीकी ( दूसरी ) तिथी कोण मानें ( इहां कोई कहै ) अपणें उदय तिथी मानें है । सूर्य ऊगै इहां तक कोई तिथी हो ( तो ) उस दिन उसी तिथि का मानें है ( इसीसैं ) जो दूसरी तिथि अथ घडीजी हो ( तो ) मानणें में क्या दोष है । ( इसका उत्तर ) हे ज्ञव्य जो पहलै दिन तीज मानी है ( और ) तीज ३ के दिन चौथ वज्रत घडी जुगतैगा । पण उस दिन तीज मानीजैगा । ( इसी तरै ) चौथकै दिन सूर्य ऊगै ( इहां तक ) घमी अथ घडी जी चौथ होगा ( तो ) चौथ ४ मानीजै गा । ( पर ) जो तिथी दो होय । उसमें तो पहली तिथि सूर्य उदय अस्त दोनुंमें रही ( इसीसैं ) पहली तिथि ठोडकै, दूसरी तिथि करणा युक्त नही । ( और ) कार्तिक माश बढे ( तो ) पहले कार्तिक चौमाशो करै ॥ फाल्गुण बढे ( तो ) दूसरें फाल्गुण चौमाशो करै । आशाढ बढे ( तो ) दूसरें आशाढ चौमाशो करै । आशाढ चौमाशो की १४ चौदशसैं । पचासे दिने चौथका संबहरी पर्व करै ।

चौथ कम हो (तो) ५ पांचमकै दिन संवहरी करै । श्रावण । माद्रवो ।  
 आसोज । बढै (तो) पंचमाशी चौमाशो करै (जो) श्रावण माश बढै (तो)  
 दूशरै, श्रावण शुद्ध ४ कों संवहरी करै (पर) चौमाशौ की चौदशसैं पंचास  
 दिन उल्लंघकै, संवहरी पर्व कदापि कालै न हो, यह कल्पसुत्र जीकै पह  
 ली समाचारीमें प्रसिद्ध पाठ है, (और) चौमाशौ में, श्रावण । माद्रवो ।  
 आसोज । यह तीन माश बढै तो पंचमाशी चौमाशो करै । (और) जो माश  
 दोहोय (उसमें) पहला माशका कृष्णपक्ष । (दूशरै माशका शुक्ल पक्ष ।  
 (ऐसैं) एक माश में जो कल्याणक तिथी हो । उसीका व्रत पञ्चक्खाण  
 करै । बीचका ३० दिन लुप्त जाणना । यह तीस दिनमें कल्याणकादि  
 क के व्रत पञ्चक्खाण न हो सकै ( इसीसैं) विवेकी जीव सब तिथीका वि  
 चार समझकै व्रत पञ्चक्खाण करै (तो) व्रत जंग कच्ची नहो ॥ ❀ ॥  
 यह तिथीका परमाण श्रीहरिचन्द्र सूरजी महाराजकै किया ऊवा । तब  
 तरंगणी ग्रंथमें प्रशिद्धहै (तो) इहां किंचित् लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तिहि पन्णे पुब तिही । कायवा जुत्त धम्म कळेय । चान्दसी  
 विलोवे । पुन्नमिय पक्खि पम्पिमणं ॥ १ ॥ तत्थेव पोसह विही । कायवा  
 सबगेहि सुह देऊ । नऊ तेरसीइ कीरई । जह्मा नाणाइणो दोसा ॥ २ ॥  
 सूरोंदय पडियावि । तेरसी ऊंति न पक्खियं कुज्जा । चान्मासिय करणे ।  
 एसविही देसिउ समणा ॥ ३ ॥ तिहि बुढीए पुवा । गहिया पम्पि पुत्त जोग सं  
 जुत्ता । इयरावि माणणिज्जा । परं थोवत्ति तत्तुल्ला ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तथा ) ज्योतिषकरंड पाऊमके इदं कथितमस्ती ॥ ❀ ॥  
 ठठ सहिया न अठमी । तेरसि सहिया न पक्खिया होई । पडिवै सहिया न  
 कयावि । इइ जणिया वीयरणेण ॥ १ ॥ अठमि दिनंमि पायं । कायवा अठ  
 मीय पाएण । कइयावि सत्तमंमि । नवमी ठठी न कायवा ॥ २ ॥ पनरस  
 मिय दिवसे । कायव्वं पक्खियं तु पाएण । चान्दसेवि कइया । नऊ तेरसि  
 सोलसमे कहवि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तथा ) श्रावक सामायक करै ( तब ) प्रथम सामायक  
 दंम ३ वेर उचरके ( पीठे ) इरियावही पम्पिकमें (क्युंकि) आत्माथी आचा  
 यों के किये ऊए कितनेही ग्रंथमें प्रसिद्ध पाठ है (और) सामायका धिकारे

प्रथम इरियावही पडिकमके ( पीठे ) करेमि जंत कहणा । ऐसा पाठ खु  
लासा कोई ठिकाण देखनें में न आताहै ॥ ॐ ॥ तथा श्री महावीर स्वामी  
का ठ कल्याणक मान्य करणा चाहिये ( क्युंकि ) कल्पसुत्रादि अनेक  
ग्रंथोंमें शाखहै ( और ) वने वडे, संवेगी गीतार्थ, खरतर गुह, तप गुह्यादिक  
के, आचार्योंनें ग्रंथोंमें प्रगट पणें ठ कल्याणक वर्ण न कियेहै ( जो ) आ  
श्चर्य कारी संबंध जाणके ठा कल्याणक नमानते हैं. ( उनोंको ) मिगंवरवत्  
मल्लिनाथ स्वामीकोंनी स्त्री पणें मानणा न चाहिये ( क्युंकि ) आश्चर्यकारी  
संबंध समानत्व है ( दूसरो ) न मानणें में अपने ही गुरुवादिककी आग्या लो  
पन होती है ॥ ॐ ॥ ( तथा ) सर्वे पोषध, अष्टमी, चतुर्दशी, कल्याणकादि,  
पर्व तिथीको करै. ( परंतु ) सदैव करनेका कथन नहीं ॥ ॐ ॥ ( तथा )  
कल्पसुत्र वाचनामें । नववाचनाको बंधाएनहिं । अधकीनी वाचना  
करै ॥ ॐ ॥ ( तथा ) आंबिल मांहै एक अन्नद्रव्य ( दूसरो ) उश्न जल  
द्रव्य, यह दौद्रव्य ग्रहण करनेका कथन है ( इससें ) रसनाका लोलुपी  
पणासें अधिक द्रव्य ग्रहण न करणा चाहिये ॥ ॐ ॥ ( तथा ) तरुणीस्त्रीकुं  
मूल नायकजीकी पूजा करनी प्रमाणीक आचार्योंनें निषेध करीहै ( क्युंकी )  
इस कालमें प्रायें स्त्रीयोंमें अविवेकत्व पणा ( तथा ) अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगटो  
ना दीख रहाहै ॥ ॐ ॥ ( तथा ) श्रावकानें, पाणस्स लेवाका पाठ कहणा युक्त नहीं ।  
यह साधुका पाठहै ॥ ॐ ॥ ( तथा ) दिनप्रति एक उपवास पंचकखावै । जो अधिकतप  
की इच्छाहोय तो अपने दिलमें धारना रखे । परंतु पञ्चक्राण नित्यसूर्योदये क  
रणा चाहिये ॥ ॐ ॥ ( तथा ) जिसधान्यकी दोफामहोय सो सर्व विदलकी गिण  
तीमेंहै ॥ इस विदलधान्यको गोरस दध्यादिकके साथ अक्षण नकरना चाहिये  
॥ ॐ ॥ ( तथा ) मुंवे जायैरा सूतक मानणा चाहिये । जिसके घरमें सूत  
क होय । उसी घरको आहार पाणी साधुवर्जन करै ( परंतु ) संपूर्ण कुलगो  
त्रको सूतक नगिणें ॥ ॐ ॥ ( इत्यादि ) इहां नाममात्र खरतर गुहकी समाचारी  
लिखनेमें आई है ( यद्यपि ) समाचारी ग्रंथ अनेकहै ( तथापि ) श्रीसमयसुं  
दरंजी महाराजकै बनाया हुआ । समाचारी शतक ग्रंथ है ( जिसमें ) पंचांगी  
सुत्रोंका आलावा प्रमाणयुक्त । समाचारीका निर्णय किया है ( जो )  
अनेकांती विशेषज्ञ होय सो आत्माधी गुरुसें निश्चैकरै ॥ और जे कोई

मूंगामें कौरडू जैसा एकांती, दृष्टिरागी, अजिमांनी, अपने गह्वका पूछा पकमके । धर्मसागर निन्नवकी तरै । खरतर गह्वकों मतपक्षमें कहतेहै (और) १२०४ शालमें जुवा लिखते है (सो) साफ अपनी अग्याता (तथा) वेष सूचन करते हैं ॥ ग्रंथोंमें प्रत्यक्ष पाएँ साबित होताहै (कि) कोटिक गह्व, चंद्र कुल, वयरी शाखा वाले, श्री जिनेश्वर सूरजी महाराजे, अणहल पुर पदणमें । सं१०८०, चैत्यवासियों कों, शास्त्र विवादसें जीते (इससें) पाट एके डुल्लेन राजानें, खरतर विरुद दिया । तवसें खरतर गह्व प्रशिध जुवा ( तथा ) यही, श्री जिनेश्वर सूरजीके दो शिष्य हुए । श्रीमालगोत्र थाप क, श्रीजिनचंद्र सूरि ( तथा ) नवांगीवृत्तिकारक श्री अन्नयदेवसूरिजी हुए (तथा) इनोंके शिष्य मट्टधारी जिन वल्लभ सूरजी हुए । (तत्पदे) युगप्रधान सवालाख श्रावक प्रतिबोधक, श्री जिनदत्त सूरिजी हुए । इस माफक बज्जत ग्रंथोंकी प्रशस्तियोंमें अधिकार है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( इससेती ) अहो नव्यो मूलतत्त्व इसकालमें इतनाही है जो तत्व नसमजो ( तो ) अपनी अपनी समाचारी करते जावो (परंतु) एकेक गह्वकी निंदा मतकरो । एक धर्ममें वेष मत रखवो, मत करो । श्री नवकार, जिन प्रतिमा पूजक, सर्व जैनी चाई आपसमें एक्यता करके धर्मवृद्धी ( तथा ) उत्कृष्टसें ग्यानवृद्धी करते रहो । जिससेती अपने धर्मकी (तथा) अपने जैनी चाइयोंकी दिन२ वृद्धी होय सदा आनंद होय ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ किंवज्जना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ स्वकुल प्रकाशणम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिव कही माहरो कुल प्रकासुं अहो नवियण तुम सुणो । गुरु गह्व कोटिक चंद्रकुल अरु वयरी शाखा चित्तणो । गुण गण जिनेसर सूरि गुज्जर विरुद पायो गुणकरी । सोजयउ खरतर गह्व मोहण प्रगट स ज नवि हित धरी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु गह्व खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिनहंस सूरिसर तणे पद चंदसूरी जिन मही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक मोहन मन उल्लास ए । बज्ज रत्नसंग्रह कलिकत्ता पुर किया मुंबइ चासए ॥ २ ॥

॥॥॥ कलकत्ता ॥ \* ॥ श्री जैनपाठशाला ॥ \* ॥ मुंबई ॥॥॥

॥ \* ॥ ( जाहरखवर ) ॥ \* ॥

॥॥॥ सर्व जैनी-सज्जन-पुरुषांको मालुम रहे। जगत्रमें वांछित सुखदायक, तत्त्वज्ञत, संपूर्ण प्राणियोंके ( ज्ञान ) उत्तम पदार्थ है ( क्योंकि ) सद्-ज्ञानसेही, जीवकों। दर्शन, चारित्रादिक, मोटा गुणकी प्राप्ती होती है (और) यही, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुधगुण पानेसें। थोमै कालमें जीवकों, अवश्य मोक्षका, अक्षय-सुख मिलता है (तो) जिस ज्ञानके प्रशान्त, अनादि जब भ्रमण दुःख दूर होके। अंतमें मोक्षफल मिलै (ऐसा) उत्तम ग्यान पदार्थको। मुख्य, मिथ्यात्वी, अज्ञानी टाल (कोई) विवेकी, उत्तम पुरुष, अनादर न करेगा (अपितु) बुद्धिमान, धर्मज्ञ जीवतो। अपनी शक्ति मुजब। तन, मन, धनसें, ज्ञानवृद्धि, विद्यादान, करैगा, करावैगा, अनुमोदैगा ( इसीकारणसें ) अंतरंगप्रीतिसें अपनेको ( तथा ) अपना शिष्यादिक ( संपूर्ण ) पाठक गण को। विद्या दान मिलनें निमत। कलकत्ता। मुंबईमें,, जैन शाला,, स्थापन करी है (और) पाठशालाके उत्तेजन अर्थ, सर्वोपयोगी (यह) रत्नसागर पुस्तक, भाग प्रवर्तन किया है। (और) पढनें वालोंके पास (कुठनी) माश खरच, लेनेंमें न आता है। दोनुं पाठशालाओंके खरचका निन्नाव (तथा) उत्तेजन होता परोपकारी। गुणग्राही। संघके हाथ है ( जो ) भर्मरागी संघ। तन, मन, धनसें, मदत देते रहेंगे (तो) यह दोनुं पाठशाला स्थाई नूत रहैगा (और) कमसें विद्या वृद्धी होनेका, वज्रतसा प्रयत्न करनेमें आवैगा ॥॥॥

॥॥॥ रत्नसागर प्रथम भाग (तथा) दूसरा भाग ॥॥॥

॥ \* ॥ सर्वोपयोगी, वारमाशी, धर्मकृत्य पुस्तक, लेनेकी इच्छा होय ( तो ) लिख्यै मुजब ठिकारें ( नामदारोंके पास ) रोकडी नित्रावल देके लेजावे (वा) देशावरोंसें मंगावे (तथा) देशावरोंसें मंगानेवाला ( जो कोई ) प्रथम नित्रावल न भेजैगा (और) रत्नसागर आदि पुस्तक मंगावैगा ( उस को ) माक मारफत, पुस्तक भेजणेंमें आवैगा। माक मारफत, रुपियादेके पुस्तक लेशकेगा। नाटपेट पत्र लेनेंमें न आवैगा ॥ \* ॥

॥ \* ॥ (तथा) इसी नकलका। मोटा, ठोटा, अक्षरोंमें (जो कोई) पुस्तक ठपाने निमत भेजैगा ( तो ) जल्दी ठपाकर भेजा देनेमें आवैगा ॥॥॥



## ॥ ❀ ॥ पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥ ❀ ॥

- ॥ १ ॥ सु। वीकानेर। वि। बड़े उपाशरै पासे (जैन लक्ष्मीशाला) पुज्य उपा  
ध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी गणिः पं। रावत मन्त्र मुनिः पासे ॥ ❀ ॥
- ॥ २ ॥ सु। कलकत्ता। वि। अफीमचौरस्तै। ६२ नं। जैन विद्या शाला,  
अध्यक्ष पंक्ति मोहन लाल जयचंद मुनिः पासे ॥ ❀ ॥
- ॥ ३ ॥ सु। मुंबई। वि। पांचवोणी। जैन पाठ शाला अध्यक्ष ॥ ❀ ॥
- ॥ ❀ ॥ पंक्ति श्री मुक्ति कमल मुनिः कल्याणचंद पासे ॥ ❀ ॥
- ॥ ४ ॥ (तथा) मुंबई, पांचवोणीके। पांचमंदरोंके मढ़ता पासे। खबर भेज  
एँसे पुस्तक मिलेगा ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ पुस्तक नाम ॥ ❀ ॥

	रु०	आ०	ट०
॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग	५	०	६
॥ २ ॥ प्रथम भाग बहियागत्ता	६	४	०
॥ ३ ॥ रत्नसागर दूसरा भाग	२	८	४
॥ ४ ॥ खरतरगह पांच प्रतिक्रमण विधिः	१	०	२
॥ ५ ॥ तपगह पांच प्रतिक्रमण विधिः	१	४	२
॥ ६ ॥ राई, देवसी, प्रतिक्रमण विधिः	०	४	॥
॥ ७ ॥ प्राचीन स्तवन माला	०	८	॥
॥ ८ ॥ आनंद धन चिदानंद वज्रतरी।	०	८	॥
॥ ९ ॥ संगीत कमलोदय	०	६	॥
॥ १० ॥ स्तवन माला गुजराती	०	१॥	॥
॥ ११ ॥ योग रत्नाकर वैद्यकशास्त्र	०	६	॥

॥ ❀ ॥ इसपुस्तकों सवाय। चारे खंरुका अर्थ सहित, श्रीपादराज्ञा  
(आदि) वज्रत तरहकेराश (तथा) भक्तामर, कल्याण मंदर, जीवचार,  
नक्षत्र, दंरुकर, पांचुं प्रतिक्रमण, वारमाशी बखान, (आदि) अर्थ सहित  
वज्रत पुस्तक (पाठशालामे) तैयार मिलेगा ॥ चाहिये सो लेजावे (वा) मंगल  
वे ॥ ❀ ॥ (तथा) रत्नसागर, दोनुभागका (१०) पुस्तक। जो एकठी लेवेगा  
(उसको) ग्यानके मदतखाते एक पुस्तक ज्यादा मिलेगा। सही ॥ ❀ ॥

